

হেম্চন্দ্রের গ্রন্থাবলী

হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় প্রণীত



ডপেন্দ্ৰনাথ মুখোপীয়ায় প্ৰতিষ্ঠিত লংস্ক্ৰমতী-সাহিত্য-সন্দিৰ হ**ই**তে শ্ৰীসতীশচন্দ্ৰ মুখোপাখ্যায় প্ৰকাশিত

[পঞ্চদশ সংস্করণ]

কাজা, ১৬৬ নং বহুবাজার ট্রীট, "বস্থয়তী-বৈদ্যাতিক-মোটারী-মুক্ত শ্রীপূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায় দারা মুক্তিত

[युगा अ: जीवरि अ: हान्स

শ্বভীপত্ত

> I	হিছেতি বৃদ্ধি · · ·	*	***	>
રા	বীৰধাৰ কাব্য ···			, >
• 1	'বুৱসংহার [১ম]			લ્લ
8 i	वृद्धनः होत्र (२व)			96
e !	আশাক্ষিদ্	,	***	১৩৪
અ (ছারামরী ···		***	>99
9 1	চিত্ৰবিকাশ		•••	₹•७
۲ ا	দশমহাবিষ্ঠা · · ·	,	***	2 24
2 (ক্বিভাবলী [ভারত বিষয়ক	·]		₹8>
۱ • د	বহস্তৰিষয়ক কবিভাৰণী	••		૨৮৮
55 [অ-পূর্ব-প্ল াশিত কবিতা			399
) }	বিবিধ কৃবিতা		•• , ,	७१२
31	নানা বিশ্বক কবিতা 🕢 🛆	 		৩২৫

চিন্তা তরঙ্গিণী

লৈ বাভাস বয় জলের কলোল। क्ष उवि-छवि गर्म (बनाम हिस्सान ॥ त बीरन পाजा कारण, भाशी करत्र गान । শহিত বরণ ভার অন্তাচলে । । চিত্র গগনময় কিরণের ঘটা। দ্রা, পাটল, শীল, লোহিতের ছটা। বিধা ভাৰের শোভা জড়ায় নয়ন ্ল শরার সেবি মৃল্য-পর্ন t म मन्त्राकारण युवा श्रव नवीन । য়ে নদীৰ কলে একা এক দিন। টের আয়তন স্থচার বরণ। চনের আভা ভার মুখের কিবণ ॥ থলে মাতুষ ধলি মনে নাহি লয়। গুরবাসী বলি মনে ভ্রমে হয়। পতে পডি**খা বেন ধরাব ভিতরে** । i-কথা আলোচনা করিছে কাতবে।। भुट्डे जक भिटक अहि कडका। হতে লাগিল যুৱা প্ৰকাৰি ভখন। বের অসাধ্য রোগ চিন্তার বিকার। নকার নাহি ভার বুঝিলাম সার। ্লে এখনো কেন অস্তর আমার। থত হতেছে এত দহনে ভাষার। রদিকে এই মব কগতের পোভা। চুট আমার কাছে নহে মনোলোভা। বে অলক্তময় ভাতুর মণ্ডল। স্ব সেব যেন অবস্ত অনল । ्रवं रंगरंत्रज्ञ गार्थ पिराक्त्रक्रिं। नाथ भाषांच त्यन निवृत्तव चंग्रा । क्रीय मुक्तायन करे नशी सम : 🤋 स्माबिक कृति किन्द्रम मक्स । PIN STATE STATE OF STATE AND A

মনের আমনের অই পাখী করে গাল। জানায় জগত-২নে ববি অভ থান a উদ্ধাসক গাভী ওই পাইরা গোধলি। যাইতেচে ঘঃমথে উডাইগা খলি ৷ ক্যক, রাখাল, আর গহী বত জন। সেবিয়া শীতল বায় পুলকিত মন। প্রিবীর যত জীব প্রকৃষ্ণ সকল। অভাগা যানৰ আনি অহুণী কেবল ৷ তাজি গৃহ-কারাগার এম নদীভটে। দেখিতে ভবের শোভা আকাশের পটে॥ ভাবিছ শীতৰ বাৰ প্ৰশিলে গায়। চিন্তার ভিষের জাল। নিবারিকে ভাষা। চিন্তা-বিধে মন গার জরে একবার। নিকপায় সেই ভন ব্যিলাম সার ॥ এ ছার"-এমন কালে, প্রিয়দথা তার। মাদি, পালে দাড়াইয়া করে নম্ভার। 'একাকা এখনো হেথা কিসেব কারণ 🕬 বলিয়া স্থায় তায়, সেই বন্ধজন॥ "এস এস এস ভাই প্রাণের কমল। দেখ বকে হাত দিয়ে হলো কি শীতল ॥ ভেবেছি আমি হে সার নরক সংসার। 🐎 প্রাণী ধবিবার খোর কল বিধাভার। লাধু পুৰুষেৰ নয় খহিবার স্থান। **छोर**न नदक-कुछ करभन्न म**शान**॥ দৌরাত্ম, নিষ্ট্রাচার, ধ্যা-অবস্থার। বেৰ, পরহিংসা, আর ভূশংস আচার u नक. अरुकांद, मिथा।, চूबि, भटनात । व्यकात्रमा, अखिदिश्मा. दकाल व्यक्तिका নরহত্যা, শনিবার্যা সংগ্রাম চুরুত্র ্বত পুৰ নাম ভার নাহি বাহ আছে। श्रीवर्धक अञ्चलकाः वर्षे अप श्राप्त

जीकार किएन को पन दानिकार । क्टिंदिय नेनेक्टन और विट्ड यह ॥" **এই क्या विन जारेंद्र आनिकन क**दि। Cकटल ह्यूब मनम्बा, मधा बाटब धनि । "ছি ছি ভাই পাগলের মত কত বল। कां शूक्य नेथा दकन गृत्य क मकन । এ কথা ওনিলে তব পিতা কি ভাবিবে। ্র কথা ওনিলে 'কৃগভারা' কি বলিবে। ্রিল যে এ জগত ভার। বমণীর মণি। ্ৰভোষা বই জানে না হে, সৱলা কামিনী। भाग कर पारे निनि धरे नहीं बाल । স্ভানে ভরী, তার'পরি ঘুমার সকলে। ় প্রয়ত তটিনী করে শূলী আলিখন। তারকা-মালায় ঘেরা বিমল গগন ৷ व भू करत ठातिनिक् अन्त करन क्षान। নার পারে নাবিকেরা করে গারিগান। ভূতন আকাৰ্ণ আর তর্গিণী-খন। তক, বাযু, তারারাজী, চানের মণ্ডল। हरक दिया यात्र कात्र काटन खना यात्र। Late स्त्र ८ श्रम- युधा-भाषा ममूलाव ॥ कृषि कारह छत्त्र. कन नाहि नाहि रत्। অঞ্জলে ভিজি রামা এইব্লপে বঙ্গে। পতিকোলে বিশ্বহিণী. "आप्ति नात्रो जडाशिनो. না জানি করেছি কত পাপ। ত্যজিলাম তার তরে, ८म ८७८म हत्रत्व करत জননী ভগিনী ভাই বাপ। মূল ৰাব প্ৰেমালয়. क्षा यात्र मध्यत्, সে কেন আমারে করে হেলা। বৰ কি সে দেৰে না, ভেবেও কি সে ভাবে না, चाडुक श्रूकरवर्त्ते (थना ॥ পুৰুষের শত টান. বা হইবে আন. শস্ত্ৰ, শাস্ত্ৰ, সংগ্ৰাম, ত্ৰমণ ৷ आवगा, कवि, विठात, লোভি, ৰাল্ধাৰ, ্যুড়কীড়া ব্যক্তিকান । भूक्य माजी विख्य गर्द विभि अपूर्ण विकर

Set 1981 ् अटक केटक रचारत का करता है NO COLE MENTE দাক্ষী করে চক্র তারা. মর-দর বিগণিত হয়। वत्ना नत्व व्यक्तिका "অভাগী পরাবে মরে. এ ৰাতনা আর নাহি সন্ন ॥" भूव मृष्टि द्यांगा शाः এত ব্যি তোমা পানে. শ্বাস ত্যক্তি ঝাঁপ দিতে বার। **ट्यांबाद्य स्मार्थेह** मिः তাড়াতাড়ি ছুটে গিয়ে. কত ক'রে নিবারিম তার॥ এখনো নয়নে বারি ঝরে বুঝি তাব। এই সে কাঁদিতেছিল নিকটে আমার। पूरे कर करत धित मध्य नम्रत्न । · वत्न स्मारत भीरत भीरत कक्व-वहरूम ॥ 'সুধাইও, ওছে ভাই জোমার স্থারে। কি কারণ অ্যতন করেন আমারে॥ দানী প্ৰতি প্ৰতিকৃল এত কেন হন ? বাবেক তুলিয়া মূধ কথা নাহি কন। কোন্ অপরাধে আনি আছি অপরাধী। घरतर ভावि छोडे, भिवानिमि कामि॥ বল তিনি কোন দোস দেখেন আমার। কি করিলে পরিভোষ হইবে ভাঁহার ?' ভেবে দেখ, ভারে তুমি কত ছাথ দাঁও ভাল ক'রে সাঞ্জা বুঝি এবে দিতে চাও महाम-विशैना, अहि, ब्रम्ती खबना। সংসার-সাগর-মাথে খানী মাত্র ভেলা। একে ও নারীর স্বাতি পরেয় অধীনা। তাহাতে অভাগা দেশে দাসী-মত কেন পৃথিবী-ভিতরে জানে পরিবার অন। রন্ধনশালার সীমা ভিতরে শ্রমণ। সে বদি পতির প্রেমে ইইল বিমুপ ! এর চেরে তার ভবে আছে কি সমুখ वन दम्माठाव-दमाद्य भटक्क मस्त्रिकी কি কারণ অকারণ হুমধের ভাগিনী मछा वर्छ, ट्यांचा द्वार विश्वत व्यार मका कार्य गरन गांचा सकारनंत्र देश पुनि वह त्यह तथा यम तथा महित world division only wife Co freiffel en

for with the site cas minais अधिकति सर्वश्रम सम् दर्गन सन । এই **নাই শিক্ষাি**হের করিয়া বতন । महोनिया (क त्रशास जार। अधिक मर्थ कि बनिरंद दुवि रह मक्न । द्याहिएक मात्रि कार्रे मर्गरेव दक्वन ॥ (कप्रति अपन स्वय भावन कविन। ক্ষেত্ৰ সংসাত্ৰ-পাৰ্টে ভূবিয়া রচিব এ 'আমার আমার' করি সকলে পাগ**ল**। হার রে আপন পর জানে না কমল ii মনের মতন লোক মেলে নারে ভাই। বল বল সাধুক্তন কোথা গেলে পাই 🛭 ধর্মশীকু অকৃটিল আছে কয় জনা। किमो विश्रा रहा दक में। करत खेकांत्रणां। रेक्श करत्र अक्रवात পृथियी पूजिया। ন্তন মানব-ছাতি আননি হে গড়িরা। কেন জগবান হেন পৃথিবী রচিল। ক**নু**র-পংথারে পরে কেন ড্যাইল। মাটীর শিকলে কেন আত্মা মন বাঁধা। আলো আধাবিধা কবি কেন দেন ধাঁধা। মনে হয় জেদ কবি দেচেব পিওর। विङ्क-भारम शिक्ष स्वाप् कवि प्रहे कर ॥ प्रशहे अ नवरमांक स्थम कांद्रनः আর আহ লোক সৰ করি দরশন # স্ক্রিক বলেছি তোষা না করি গোপন। **এफ हिम (कान कारण क्तारे**ख उन। ভগুদেই অভাগিনী তোষা কর জন। প**হুলাল-**ভূর ভাবি, পিডার কারণ ॥" নদী হ'তে কত দূরে আইলা চলিয়া ট

নিষ্টিক বলেছি তোমা না করি গোপন।

বন্ধ দিন কোন্ কালে ক্রাইত রণ॥

বন্ধ সেই অভাগিনী তোমা কর জন।

বন্ধান-জর ভাবি, পিতার কারণ॥

বলিতে বলিতে দোহে কথার ভূনিরা।

ননী হ'তে কত পুরে মাইলা চলিরা।

বির্দ্ধান-কর জ্তল গনন।

নির্দ্ধান-কর জ্তল গনন।

নির্দ্ধান-কর কর ভাকে দিবস ভাবিরা।

বক্রী-রন্ধান হাসে রন্ধান দেবিরা॥

বিক্রান্ধান হাসে রন্ধান করিয়া।

বিক্রান্ধান হাসে রিক্রান্ধান না

নিল্মতে বের বেত অর্থের না

নিল্মতে বের বেত অর্থের না

নিল্মতে বের বেত অর্থের না

নিল্মতে বের বিত অর্থিনা

বিহালি বার্থিনা বি

त्वाक कर कार्य स्टब्स म्लिम मंदिन । जबनि अधिक मास्य राजि । पुणिस् लाफ इंदर अवनेना कमरन प्रश्रीत "এখন কিলের তবে বাজনা বাজার 🏻 क्षन रिवल 'आदि मश्रमी बननी हैं। অধীর চ্ট্রানর কহিছে তথনি চ "ছৰ্মান মানব-মন সৈট সে কার'। भूटक अवरमर कवि । श्राह्म गाउँन ॥ সাকার-মরূপে তাই নিরাকার ভাবে। মাটী পুৰা করি ভাবে মোক্ষ্মী পাবে ঃ একবার এরা বাদ পার্রতি মন্দির। প্রবেশি ডাকিতে পারে কগজ-বর্তর : भित पूर्वा कांशी नाब ज़ानत्व भकता। প্রব্রক নাম মাজ বাপিবে কেবল। কি ছার অমর পুর কীবে পুর-কাঞ্ Cकाशांत्र (मटवंत्र कुंश और अटिह कार् কি প্রতিমা দশভূদা করেছে গঠন। দে কি জীর রূপ গার এলাংশ ক্ষন। হৃত বে শতন গ্রেকথার প্রশাস। मन्द्रकः अञ्चीकान **उ**र्तिस कि मासका। किया करा विकास पृथित ्न एस । भू त्ता भूनं करल करण करण क्रांच (न क्रांस l কিবাপু। দীণ পদ্ধ, তার খোগ্য দান। ८यहे यस मृत्रम्मान्कसुद्रीनिमान ॥ कि भीनार १ छोत्र पृष्टि कतिर व वात्र । স্বাগ্রা কিভি ব্যোম মীহার এচন। দাব মন্ত্ৰ জানি এক প্ৰব্ৰহ্ম নাম। মৃক্তিপদ স্থানি সেই পরব্রক্ষাম দ" এक निव शैरव शैरत कुलिया नम्म কুতৃহলে গৌহে মিলে করে বিভূগান,॥ गां अ दब विश्व षानत्म मिना । जान, ক্ষ জগণীশ বল নল (ভাল রে অনিতা খেলা, ভল রে তাঁহার জীচরণ। विश्वार निर्देश ক্ষতিমার ধ্রকালরে,

চারিদিকে জারাগণ গরে । সাজিরা কোন্স সাচে, বসিষ্ট পুন্ধর উর্বাহ ওপুর্বাহ বিব্যু ইউলে পরে,

ঁ ব্যোম, বাহু, মহীওল, क्षीरेय क्या कर. 'তাৰ গুণ গাহিছে কেবল 🛭 খোঁজ রে ভাঁহার ধাম. ভ্ৰম বে ভাঁচাৰ নাম. সেই ক্লন ভবের ভাওারী। সেই প্রভ ভরকর. यत्य योद्य कृद्य खत्र. সেই জন ভবের কাণ্ডারী। ক্ষরেছি অনেক পাপ. সহিব অনেক তাপ. मद्यायव नश्च करवा नरव । ্ঠেশ না চরণে ক'রে. দেখা খেন পাই পরে. এই নিবেদন পাপী করে।" शिवन्या प्रहे बन. পার করি সমাপন, किছ পরে ঘরে দেখা দিল। मधाकत करत शति. कमन विमय कति. এই কথা তথন বলিল। **"ৰুখা চিন্তা কর** দূব, কি কারণে এত ভয় পাও। ৰিপদে বে ভন্ন পান, লোকে দেখে হাসে ভাষ. পুরুষের প্রভাপ দেখাও॥ रवात निमित्रस वाहे. এখন বিদায় চাই. দেখো ভাই থাকে যেন মনে। পাধী না কাকলী গায়, चक्रण मां (प्रश्नी यात्र)

> ভোৱে উঠি গুটি গুটি চলিল কমল। লব লব পাড়াস্ব করে দল্মল।। ছুই চারি ভারা ধরি প্রহরীর বেশ। **ধিকি-ধি**কি ঝিকি-মিকি, করে নিশি শেষ॥ भाव भाव, ज्या यांव, नदम्यावारम । **মনোহরা, জ**গতারা, দেখে পতিপাশে ॥ भाषा हाएड. क्षांननारथ, कविरह स्ववन। পারা নিশি, কাছে বসি, অলস নয়ন । देश बद्धन, दश वहन, दश नवन हुन । দে বলন, সে চরণ, বরণ হিন্দুল। क्रिन क्रिन, विभनित, एकारेश योह । चार्वद्रंद्रव, बद्रामतम, वित्रत्र (प्रथात्र ॥ ছৰ তার, রূপ-ছার, হেরিলে নয়ন। ক্ষুত্র ক্লার, ভোলা ভার, জনম মতন । शिक्षात्र, काटक यात्र, कमन ख्रीते । क्षेत्रमञ्जूल, टंबर व क्रम, त्यारक स्व विज्ञ ॥ (बारे क्रम, करत नविकास)

কেলকালে মিলিব জল্পনে #

मुथकांकि विद्रारकांकि, जन्म केन्स्स । প্রসারিত, সৃষ্টিত, ললাটের হল ॥ 🔧 ওঠাধর গর-গর, কাঁপে খন-খন। (यम (कान, अवशन, कात प्रत्रमन ह (थरक रथरक, এरक धरक, श्रम्म नक्तः) ৰাসাকৰ, গণ্ড-বৰ্ণ হয় সমুম্বল । অপরূপ, দেই রূপ, ছেরি পতিরতা। ভাবে দেব, কোন দেবসনে কন **কথা** । मर्थ पृष्टे, काल वरे, नद्रम्था कार्रा। **(मृद्ध मृडी, এकमृडि, व'रम मिरतान्डारम !** ছাইমতি, ক্রতগতি, প্রিয়া-কর ধরে। চমকিত, পুলকিত, কয় জ্রুতম্বরে। 'মরি কি দেখিত. কোনখানে ছি এখন কোথায় রই। কোথা নির্মণ. (म भारत भूती करे॥ ममंत्रिक-त्मा **टकालाश्वरनाटना**खा. অতুলিত আভা কই। এ আলো দে নয়, এ বাভাস এ যে পাৰী ডাকে অই। श्रुती बटना সেরপ সুন্দর, নাজি ভমগুল-মানে। विश्व-विटनांगन, বিমল কি তাপহীৰ শোভা সাকে। तलकानी ভান্ন মহাবল, मृद्र निक्ष्यन प्रमः। শোভিতেছে ড বোর ঘটা আল. ভাহে পুরীশোভা হর। গীত সুমধুহ, তাদশ নাহিক আর। कछ दी किनिशी. বছে গন্ধ চমৎকার। জরামৃত্যু নাই. চির-আনন্দিত লোক। रेवत्रि नाहि ৰাহি অনাচার, नाहि क्षांत कह लोक। মোহন ম্রতি, व्यानीनं द्वनीय शहरा

চিম্বাভরঙ্গিণী

সাধু যতজন. থাব মরে প্র**পিগাত।** দেহ স্তক্ষিত ক্রেম-রোমাঞ্ছিত প্রভিল ভকত জন। বলীত ভনিল ভক্তি প্রিল, পাৰৰ মানৰ-মন ৷ কি দেখিত আহা. পুন কি নে ভাহা, কভ দেখিবারে পাব। ७ भारभ मा इद. ত্বায় সেধানে যাব # ভাহে পাপ নাই. নির্মণ ঠাই. সে যে সাধজন-ধাম। অই গীত গায়, অই শনা দায়, ভাকে মহাপ্রভ-নাম ॥ 'লৱে যাব ভোৱে' যেন কেহ মোরে. বলিছে কানেব কাছে। স্থানাম পাব. তার সনে যাব. আর কি জেমন আছে ?" বলিতে বলিতে. কথানা থামিতে, দংবিৎ হারার **তেঁ**হ। ছরা বারি আমি কমলকামিনী, সুশীভল করে দেই। চেতন পাইয়া যুবা কাঁপিতে লাগিল। আঁথিজলে যুবতীর বদন ভাসিল। তৰন কমল একা বিপাকে পড়িয়া। কহিতে গাগিল তারে সান্তনা করিয়া। "সুবোধ হইয়া কেন ক্ষবোধ হইলে। কি দেখি এতেক সধি আতন্ত ভাবিলে। দামাক হয়েছে জর কত দিন রবে। ভার ভারে এত বল ভাবিলৈ কি হবে ॥ ব্যান্ত বাতে বোগ যায় করহ উপার। আমি সদা কাছে রব ভর কিবা তার।" छनिया चुलवी वाविधावा निवातिम । ু একমনে সামিসেবা করিতে লাগিল। ভালর জালর ব্যেগী নীরোগ হইল। इस्रीम नहीं प्रज्य नवन नहिन ॥ ज्ञात्मरह अग्रेमत्न-वाष्ट्रिय क्लान । প্ৰতি কাৰি প্ৰিয়ত বাইৰ হতাৰ।

निरुक्तम এङ प्रिम छाकियां कम्टन। চল-চল নেত্রে কল জগতারা বলে । "কপানে কি আছে মোর বৃষ্কিতে না পর্যন্তি কেহ আর নাই থোব আমি এফা নাবী। দেখি দিন দিন তিনি ওকটিয়া থান। উদাসীনভাব সদা অল্স নয়ান॥ হয় হ'ল নয় নেই, ধেতে নাহি চান। বখন তথন দেখি বিহল্প বয়ান ॥ ছই চারি কথাকুন স্নাই নীরব। বল কিছু স্থির হয়ে শুনিবেন সব॥ বুঝেছি অভাগী আমি বিধাতা বিমুধ : কত স্থা **আশে আ**গে নাচিত হে বুক। কত দিন কতমত স্তেবেছি হে ভাই। এবে বৃদ্ধি হ'ল ভোৱ আর আশা নাই। এমন কি মহাপাপ কবেছি হে আমি। কে দিন আমারে শাপ তাই হেন **আমী** ॥ উপকথা ছেলেবেল। শ্ৰেছির ভাই। ক্ৰমাগত দিবানিশি মনে পড়ে তাই॥ অপরপ পাধী পেয়ে নারী এক জন। সোনার খাঁচায় গুরে করিত ব্তন ॥ ভাবি সেবা আট প্র সঙ্জ করিত। পদাত থাওয়াত, হাচে ্লিড পাঞ্চিত। এক দিন কাঁকি দিয়া পাথী উদ্দি যার। কেহ কোথা ভাৱে আর যুঁজিয়া না পার। অন্ত বোগ নছে, ৩ যে চিন্তারোগ কাল । कि इत्त दल (इ मर्ल विश्रम खश्चाल। একবার তাঁরে তুমি বল ভাল ক'রে। অই দেখ আসিছেন, ঘাড় টেট ক'য়ে 🗗 "কেমন অ।ছ হে আজি ? নিক্তর কেন 🕫 অভিশয় মান ভাব দেখি কেন হেন ৮ "আমার দংসাবে আর থাকি কিবা দল। कि इत्व बाकिस (६वां क्षांत्वत कश्या। দেশাচার রাক্ষ্মীন্তে বধিতে নারিছ। খদেশের ছঃখভার ঘুচাতে নারিছ 📢 · জনমদাভার ধার শোধিতে নারি**হ** । দিন দিন মলাপালে ভূবিতে কালিছার মনের বাসনা কই প্রাতে পারিছা: मानव-मधनो कहे भवित्र कतिछ। श्रीजिवाति मभारबट्ड देन्हे हिलाम करें। चार्व, ८६व, श्रद्धिःमा मालियाम वर्वे 📸

्रमध्यक अक्रमणी

वॉर्भनाय पन नित्रमञ्जूष्टिक् िश्रान्तिराज्य यस रिक्र देश विस्ता **্রিও** ব্যাসে চত পাপ করিয়াম। 😘 ছালিলাম কত মিখ্যা বলিলাম।। **ब्रोट्डे** सिन क्रिम क्रीन इब दुक्ति-दन। ইমিবীর তাও দিল বাড়াই কেবল। শিক্ত প্ৰসাও হয়ে কড কাল বৰ ? বিষ্ঠাপ-শিখা জার কত কাল সব। শাহা কি স্থবেতে কাল শিশুরা কাটায়। স্মার্ট দেখ নাতি নাতি কর জনা ধার। ইনের সায়েতে খেলা কব এই বেলা। **এমি হই**তে সন্ধা ভাসাইবে ভেলা ৷ ক্ষিক ক্ষত থাক আহি জানিবে তথন। 📲 🚉 দের ধাম এই পুথিবী কেমন।। 诸 বেলা কত থেলা সাসিও থেলেছি। কৈ বেল। কত আশা মামিও করেছি। क्षेत्र बृटबंहि गांद ष्यमान मःभाव। ক্লিছেট আলো পরে বার অরকার। 🙇 ভাবের নাট্যশালা ছারাবাদী প্রায়। শিষ্ক প্রই ধ্যধান পরেতে ফ্লার 🛭 মুদ্দির শিশুকাল কত দিন রয়: কৌৰম-দেবিজ দিন চাবি বই নয়। বিবরী লোকের মান, আজি আর কালি। ব্ৰিক প্ৰনে খেন উত্তে মক্ত-বালি।। दिवंद शैद्रप्रधन त्यलम व्यथम । ব্ৰিক্তাব্ৰিভ দশদিকে চাঁপাগদ্ধ সম। 🍑 🛊 মেন খণ্যাফের প্রথর মিছির। ৰিষ্ণালে দুকার আড়ে মেব স্থগভী য়। 🚲 হৈবার আধারময় এ ভব-ভিতরে। শ্ব বাহা দেশ তাহা মুহুর্তের ভারে।। শ্রানেশা, ভাতে,মেঘ, কালিম বরণ क्रीह कार्य (यम मिलाविमी प्रवर्गन । প্রীধার্ম নিশাতে ধেন ভাছার পতন। শ্ৰিণ ক্লণে যেন জনেতে মগন। ্রিভর মের বেন বুল মন ভাকে। ্ল্লাড়বর উড়ে বার কাঁকে টাকে। ষ্ট টাইবল্ড ,থেন বালিয় নিশাণ। क्षेत्र शद्ध ना बादक निमान ॥"

সাগ্রের মাত্রে বিন সক্র অচল বুথার প্রীয়ারে এড় ভরত্বের দল।। সেইবল সাধুক্ষন সংসার-ভিক্তরে। বন্ধ্যাল স্থির-ভাব আপনার ভরে ॥ কিছুকানু কট পাৰ ধাৰ্ণিক প্ৰজন। অনম্ভ কালের তবে মুখের ভাজন ॥, কে ভোগারে ধলিল হে অকর্মণ্য তমি। তোমা মত লোক আছে ভাই আছে ভ্ৰি। সাধু মহাজন-গুণে আছে ধরাতন। নহিলে সে কোনু কালে যেত রসাত্ল ॥" "কি করিব আর আমি সদা বল ভাই। দেখ দেখি মনে ভেবে কিছু কর নাই। এত জ্বে নীঠিত শিকা কে করিল দান। পাপ হ'তে এত জনে কে কবিল জাণ " "সভা বটে, যা বলিলে বৃধি**ত্ব ক**মল। আজি আর থাক কালি বলিব সকল " िमा हेका चाकि किছ इएउट प्रकारन । ৰত পার বলো, সংখ, কাল প্রাক্তঃকালে।" नम्बन हिन्दा गांद्र, बद-मथा क्या ভার দেবী করা যোর পরামর্শ নয়। क्षारियत क्यन स्थित मकरण कि करव। কি করি থাকিতে আর নাছি পারি ভবে। ঘাই দেখি একধার বাহিরে বাভালে। (मृद्ध चात्रि कमन फितिया नांकि चांटम ॥" এজ বলি অবিলয়ে বাছিরে মাদিল। निष्ठवि श्रान-(माजा कहिएक माशिन ॥ "थाक, बांक मनश्त, विदास बाकारम। ্ৰভূমি না খাকিলে কেৱা তিমিয়ে বিনাশে॥ মাদে মাদে তুমি ত হে কত দেশে ৰাও। ভাল মন্দ্ৰ কত লোক দেবিবারে পাও #. অপট্ট আমার মত দেখেছ কি কারে। আরি আরু শাক দ্ব বলে কিবা ভারে:॥ ষ্ঠাহে ও ভারকারুক, আ্ফান্সের রাজি। সক গক যোজনেতে প্রকাশিছ ভারিএ (काषां अकाली दरन स्मर्थक कि माह रमर्थ बाक वक्त फरन किया नाम जोड़ ह वर्षाच्या, दर्शा क्षेत्र का क्ष्म स्था

POINTE.

देकीया बाद नेनेवर्व वह वक्त नर्ज । বারেক মনের সাধে হেরিফ ভুজন ॥" বলিতে ৰলিতে শনী প্ৰক্ৰিমে ডুবিল। স্বাস ত্যক্তি নরস্থা গেছেতে পশিল। ষেরি নিজ্ঞা-অভিভত দেখিল সকলে। আপন মন্দিরে তবে ধীরে বীরে চলে u रमस्य रहस्य बाटि खरंब स्मानांत्र भूजुली। য়ানজাঁৰে যেন তবু হাসিছে বিজ্লী॥ **জাগরণে অ**ঠৈতক নিদা যায় সতী। একদুয়ে দাওাইয়া রহে তার পতি 🛭 भूमिकनधना-मूथ ८६८४ वात वात । কড় **বারু,** কড় আনে, কড় পাশে ভার॥ কড় পুত্রের মন্ত ভিরত্ব রয়। ष्परान्ध्य शीद्र भीद्र मृष्युद्ध क्या "विनाय कनमरमाथ माछ खनविनि । রাণিতে না পারি আর এ পাপ পরাণী। এই বেলা সকালে সকালে ভল দিব। পলাব ভবের বৃহে আব না রহিব ৷ অভেদ পাষাণে মোর মন বাধা প্রিয়ে। আগে চ'লে যাই আমি ভোমারে ফেণ্রে॥ আমাবই জান নারে তমিরে অবলা। ভেবেছ উন্মান পতি হার রে সরবা।। ক্ষাকর প্রেম্মরি। আমি অভার্মন। কপালে থাকে ভ *হ*বে পরেতে মিলন ॥* এত বাল ঘন ঘন করি দরশন। নিঃশক্ষ-চরণে হুবা করিল গমন। চকিত-নরনে সদা চারিদিকে চার। সম্বা ভরু জাগি পাছে কেই টের পায় ৷ পায় পার উপনীত নিজ্পিত ঘরে ৷ ধ্বত ধ্বত পড়ে বৃক মধের ত্রাবে ॥ সাহসে করিয়া ভর প্রবেশিল ভায়। সাংখাতিক রজ্জু ঝোলে দেখিবারে পার। भागाम-मछक मिथि भन्ननि मिहत्त्र। পরকাল-ভর আক্রমণ তবে করে ৪ र्मनांब, कतिव, कि सानि कि रूप्त भारत। ন্তুবা, এ ভবে আর রহিব পি ক'রে ঃ আইবাভাসিয়া ভাসিয়া "মিলিবে কুল।-ৰীৰ বাবে ভূবে বাই ভবে ভ প্ৰভুল a क्रिक ब'रक शनिदगरक मानिवाहि गर्द । क्षित्रिक्षणाच्या अक्षारम् किया एटव ॥

এখনে উল্লেখ বড় প্রাণ ক্লান না ৰানি তখন তবে হটুৰ ৰত টীৰুটা সে পথে যে কটি৷ নাই শ্লানিব কেম্বেন ডাই বলি এ নহকে পচিব কেমনে । থায় কিবা ভার কীট আমি হীন अब । কোটি কোট জাব আছে বিশ্বের জিলা ! অথবা জন্তব্যামী জালেন সকল। তবে ড ভণিতে হবে সমূচিত ফল'।। কিন্দু ডিনি দ্যাময় পাত্তী-ভারণ i. অবশ্র ৯বেটার হবে দ্রু-নিবারণ ঃ দয়া না কবিলে ভিনি কেবা রকা পাবে। আমল মানব্জাতি নবকেতে বাবে ৮ অবক সময় ডিনি কাত্র দেখিলে। অবশু নিজার পাব ভাপ নিবেদিলে।" এত वाल भौति भौति कीम अफारिण। গালে তলি কাৰবার ভয়ে ছার্কি দিল।। ৵ভাব অগতারা মনেতে গড়িল। কতবার বৃদ্ধ পিড়া স্থাবন ছইল 🕯 অবশ্বে প্রবর্গ নিধান ভাগে করি। ে মুদি দৃঢ় কবি রজ্ হলে ধরি। "সমাক্র ক্রেপিড পাতকীর স্থা।" বলিতে বলিভে **প্রা**ণ ভাভে নরস্থা।

নাক হয়ে অহে নর কুমার্গে পশিলে।
কেমন ক্রাণ পরকাল না ব্যিলে।
থাতনা এডাব ব'লে পরাণ করিলে।
থার কি হইবে সেই আশা না প্রিলে।
ভার দেগবান ভোগা প্রতি ক্ষমাবান্।
না ব্যিলে জানাতত্ব নিগৃত সন্ধান ।
কোটি কোটি পালী তথা, কুডাফালি করে।
ক্রাট কোটি পালী তথা, কুডাফালি করে।
ক্রাট কোটি পালী তথা, কুডাফালি করে।
ক্রাট কোটি বালী করে।
ক্রাটি বালী করিলা
ক

পরদিন মহা গোল করে, পরিজন্ধ। অগতারা উই-তারা জ্বততে পরিজন। কমল আসিয়া নেকি জালি আপিকলে। অধীর করবা ধরি কালি কামি বলে।

(इम्हासंत्र वाष्ट्रापनी

e কাতিয়া কৰু ধলাৰ পড়িয়া বৰু	अरव दकन अका प्राप्ति, जिनाहरण निवा कंकि.		
শ কালিকা থকা, ত্রালি বিভাগ বিজ ক্ষেম্য প্রতিষার মত।	কে তোমারে দিল হেন মন্তি ৷		
्म द्शिष्ट् दान, वहत्त ना मृद्ध छोत,	এ পাপ করিলে কেন, কুম্ভি ২ইল হেন,		
কপালে প্রছার-চিক্ত কন্ত গ	বৃদ্ধ পিতা কেন হে কাদালে।		
৵পল হিব নয়, কভু আঁথি শ্দি রয়,	প্তিপ্রাণ্ড সভী নারী, গরাণে মারিলে ভারি,		
कच्च दूरे शंक योष्ट्रीया ।	ব ন্ধনে শেহি তত ভাসালে।"		
हत्र वमरन डांब , हिन कोंब हिंची शाब,	না কুরাতে কথা, পুবর্ণের ল্ডা,		
भारम करन दाथित धविश्रोध	धौरत्र फाॅाबिला का म्पिन ।		
म (र ात्पन्न मथा, अकवान दाख तस्था,	রাজায় তবন, বিজ্ঞন কানন,		
এবে ভূমি ছাড়িলে কেমন।	পিজাপুস বধু মবিল।		
फिट्टन द्रक्मन क 'ट्रव मु३६व कम्रहरूद्रव,	ণ্ড পরিজন, অতি কুণ মন.		
for method was for a 22-1 a	আধ্বাম-শক্ত গৃহ ন্যান্দ্রা।		
ন কেরে প্রতিবাদ, কালা ডোমা ছাডিলাম,	वश्रुक्रमण्डल, निवासमाध्यान,		
confirmation may grant 1	६१ ३ १ वर्ष । यस्य भाषण ॥		
क्षामा मान किल, व्याक्यादा स्त्राहिन,	ছাভিয়া নিমাস, তাজি রিপুতাস,		
এফা ব্যবিভাগে গোলে চ'লে ॥	क्याक्र(वान्त्रवान्त्रवाका ।		
মলে পানিতে ভাক, কাছে বাথি চিরকাল,	निम ध्रे थि, जाहा कवि.		
্লন সংগ্ৰাসলৈ খেলিছা।	পুন দেহধাণে পাৰ্গ ৷		
ক কৰিছেল্পাৰ ভবিলাম কভৰাৰ.	হাসি-কাল ভরা, এই বস্ত্রন্তা,		
AND PROPERTY AND	י וייטוא שיטפוסוורסו		
क्यांत्र धकांत्रस्य. । नगरक मिनि मरकांत्रस्य.	স্তানাম ভার, জনিতা দংসার,		
পৃশিকাম জগতের পতি।	ৰুচ্যিতা সাব ভাবিশ দ		

বীরবাহু কাব্য

আর কি সে দিন হবে, জগৎ জুডিবে যাব. करव कवि काकिमाम. यत्य ८ वह-अवस्म. ভারতের পুনর্গার,

শুনায়ে মধ্ব ভাষ, র্ঘু-কুরু-পাতৃবংশ, সে শোভা হবে কি আর,

ভারতের জয়কেত ভারতবাদীর হন ষ্বনে ফ্রিয়াধ্বংস অযোগ্যা-হস্তিনাপাটে মহাতেকে উড়িত। নানার সে তুবিতা। ধরাতল শানিত ! হিন্দু মধ্যে ৰসিভ 🛭

ভ্যা পরি উধা ধার. यामिनी (भारात्य गांव. च्चार्य अर्थ कुरहे शिख् श्य-मञ्जा कविष्ठ । अकृत्व कतितम् मत्त्र. অবজ বেশিশ অঙ্গে. তুই ধারে রাঙা রাঙ! ঘন গুলি খুটছে ৭ ধেত সাটী দিয়া ধীরি. রধাকরে কোলে করি. মধুমাথ। মূথ ভার ভাল ক'রে ঢাকিছে। চন্দ্ৰের খেলনাতান, তারাপুঞ্জ ডলি গুলি. ष्यकृत्वद्व त्ययात्रं अत्क अत्क वैश्वित्व ॥ ভাল ভাল মূকা মালা, ত্ৰিতে দিবাৰ রাজা. খ্যাম ধরা তল-বুকে সারি সারি বাঁথিছে। প্রমোরিত পুষ্পাবন, রঞ্জিতে তীগারি মন, ভরুপরে ধরে ধরে ফুলমালা ব।ধিছে। विदाकत्र-छन शाय. বিহুগ গায়ক তার. তার সমে তালে তালে সমীরণ মাডিছে। উद्धमान भुडेश्वन, 'अम्र मियोकत्र' वनि. পূর্কাননে বিজ্ঞাণ তবংবনি করিছে।। ংন গ্রীম প্রাতঃকালে. কাজকুজ মহীপালে, करनारकत प्रताक चानि शरा निमन। श्रीय-छे नवदन बाहे", 'াদি অন্তৰ্যতি পাই, **এই क्यां** वीत्रवाह नमञ्जल कहिन ॥ क्ष्यदर निर्द्धाञ्चान निर्देश. अनि चालिश्रम मिर्देश. इनदीत महाताम सामीकान कतिन। अत्रोद चानिया त्यस्य, निर्वात जारमण रनरत, रम्मुलाका-महिषारम छेनमी छ बहेन। ू ' शिव शीय-छेभवत्म, 'शन क्षिद्ध हुई सदन, , মিৰুক্ত্ৰম্পতি সম বলে, বনে ভ্ৰমিব।

মালভীর মালা পরি, পদ্মপাতে ছত্ত কৰি, ্দ।তে মিলি ্লকুল-পরিমল লুটিব।। প্রোভাক্রে দ্বেহে মিলি.. করিব দ্বিল-কেলি, বাপতে বাহতে বাধি স্রোল্যোধারা ধরিব। -योगहःम शिष्ट शिएए. याव वाति भिंदछ भिंदछ. পঁল্যবন-খাকে গিয়া স্বোধনে জাসিব। মুণাল আনিয়া তৃলে, ব্দিয়া তক্তর মূলে, इदिनी मानरक रकारम कार्ट स्मारह थां अधाव। মার্দে আনিন্ধরে, রজক শংমালা ক'রে. कुठे अन भ्याक्टन अ**ल्टार्थ श्रांच** ॥ अक लिएक कमलिमी. এক দিকে কেত্ৰিনী, ছুই ধারে বাশি কবি ভ্রমরায়ে কেপার। তোমার জ্ঞল দিয়ে, दर्शकिलारत नुका**रेरत.** যাকল কৰিয়া পিকে ভালে ভালে ডাকাৰ। গত গ্রীম্মে কড় থেলা, ক্ৰিমা কেটেছে বেলা. সে সৰু অৰণ প্ৰিষ্টেম হয় কি তে **মনেত**ে। বিহরিব খুজনার, চল গিমে পুনরায়, বিষম গ্রীখের ডাপ জড়াইব ধনেতে # अभिधा भागीत दया, হর্ষিতা হেম্বুজা, প্রীতিভবে পতিকর করতলে চাপিয়া। বলে "এ কি নররায় त्म कि कड़ कुना बान. এ জগতে এই প্রাণ এ নেহেতে ধরিয়া। (म म्द ब्हेरल याज. ভূগি **सर्ग-निरहामस्त्र**ः ভিলেক থালিতে হেখা চিডে আর লছ না। त ্ৰেই সৰ দীম্ভিটী উপন্ন-বিশাসিনী, त्रक्ष विक्रियाल वटन स्थाद द्वारी नव ना

र्भामविद्याः मन्त्रीयः, गर्न (महे वर्ग श्राप्त, ভাবি সেই ভাবে আছি জ⊹তলে বসিয়া। হেনকালে বনবালা. भवकृत्स शीचि माना. कृति शीम अन्यतम् त्या त्या व्यामिया॥ त्महे खाद कम्र खटन. বৃদিয়াকুয়য়াদনে, কামিনী হকর ডালে পপদোলা দোলারে। কেশে ফল সাজাইয়ে करत कराजानि मिरम. नीरत धीरव रक्षारण तरन अधुरवः ल वाकारम । প্রতিক্ষে করে ধরে. কড় ভ্ৰহ্ম করে. চাপিয়া হবিশীপরে বনহাবে বিহরে। কভ মোবা রূথি মাঝে, সাজ করি নানা সাজে, ৰাতি ৰাত্তি কথজনে ভাবিদিকে বিচরে॥ চল নাথ সেই জানে বিলখ সতে না প্রাবে. বিষা বনক্সাগণে গা**লিখনে তৃধি**ব। ভবিতে ভোমার ঘন, नानाविव जारबाकन, मार्ग छ। इर बाग बरम माना दबना दक्षनिय 🗗 खनि इश्वमीय छातः বীরবাত মনোলাস, লেহতবৈ প্রমদানে আধিদন করিল। च्यारशिका शैवरव. পত্নে তাকি জন্তচন, काम नागौ काकि मान कालाखान माखिल ॥ मगरत हैं के दलान. ्नमादम वादश्य द्वाल. एटर्न एटर्न भन्नदर्शिष्ट मटलाट भ्या कविन । वर्गन्छ निरत्नांभरतः রজনীল বর্ণ ধরে. থাৱে খাৰে ধাৰে হাবে পাতাকাৰ ছাইল।। চলিল নুপাণ্ড-স্থত, शक्त की अर्थ यथ. বাজে।ভন কোণ হলে জিভ্ৰন প্ৰিয়া। शर्काम (मिनिनी हैतन. व्याजिन दश्म वर्ण. ভীষণ কোমও ছিলা রন রণ করিয়া। পুরোভাগে ন্বরাক, শিরে পরি বীর্ণাঞ্জ. এইরূপ প্রথা দেই কালে ওথা আছিল। শাণিত গৌহের তাল, শাণিত গৌহের দাৰ, वाङ छेक निर्दादकः शृष्टरमं हाकिन ॥ इशीर्च नवनकाब, সি হগ্ৰীৰ লাজ পাছ, কাজাতুলখিত বাত বিপ্ৰগ্-দলন । পুৰন্দাভি দ্ববি বৈষা, লগাটে অভর লেখা. গভীর বৃদ্ধির চিহ্নধরা **তুই ন**খন । , বেন ডড়িতের লডা, ৰামে লাণ হেমলতা. ইদ্র-ভয়ে আসি পাৰে অন্তগতা হইল। अंतिमिटक कानाइन. न'द्र निस्म मनदन, 🌇 करमान प्रानीत श्रुष्ट जेल्द्रस्य हिल्ला 🗀 😘 💉

र्गयान श्रेत्र. রথবাজিগ পলকে বোজন পঁথ এড়ার। ध्द्री विश्वादन. ठटल कानवादन क्रिक कारन कथन् क्रांथांत्र यात्र॥ কেত মাঠ মজ. গিরি বারি তর প্রৌভোধারা-মত বহিষা মাষ। গ্রহর-ভিত্তরে, নানা শোভা ধরে গ্রীম-উপবন প্রক:শ পার। বিশাল ভমাল. প্রসারিল ডাল জানাইছে নাম বিপিন-মাঝে। তারা দলে দলে. উঠি নান: বংগ जान नातिरकन अनाक मारक। কোন ভাগে জাব, শিহরে কদম দাভিম পাশে। অংশাক দেখিয়া. কোৰা বা বেহায়া শিমূল হালে ৷ মুক্লে পুরিত. শ'পঃ ভারন্ত কোণা বহে চত গ্রবে ভবা। কোথা তরুর)জ वाउँव विद्राह দেখেতে প্রাচীন পল্লবপর। !! কোৰা মূথ তুলে, তেজে বৃক্ খুলে ত্র্যামুখী চায় ভাত্মর করে। কামিনীর বন কোণা মুৰোভন, पुरम रम्ब यम रमोबल-सर्व ॥ কোথা বা শেকালি, রুদে দেহ ঢা আবেশে ধরণী উর্বে পড়ে। করিতে আলা दर्भाषी वा श्लीकांत्र. প্রকৃত্ব মার্কি-শাখীতে চড়ে ॥ কোণা কেডকিনী. আলু-থালু বেশে পড়িয়া বয়। অবকাশ পেয়ে, धीरत धीरत दथर সেইখানে আসি সমীর বর। ক্রমে স্বিধান, इतिरम् प्रकान आवर्ण वान। যত ভক্পল. ब्रह्मकुष्ट्र । কুমুম বরিষে হরিষ মনে ৪ যত পা্ৰীগণ, कतिश आ ে নুপত্মতা কড থাদেন ভাল। কুলার ত্যজিরা. कांक्जी सिक्स एंक्जि क्रांग 🖟 💥

तन मात्रमा. भिशासे भवनि. পশ্চাতে চলিল মবালদরে । া প্রিছরি. ' अक्लको कवि. হরিণী ধাইল হরিষ মনে 🛭 ীরপে খড, যত অভগ্ন থবে ক্যাগত জটিল **আ**সি। . यम नमरत्र. ফৰ্মাৰ: লয়ে. বৰবালা-দল আমাসিল হাসি # ो भटकावस्त. প্রাত জনে জনে. व्यानिश्रम नात्म ुवि भवात्र । ला वावना. • নিক্র ভি**ভরে** স্করে হয়ে। ভোরমা শম-শোভা বস্তুল্লবা মালে। % इंश्टर्श्ट्सट्व खड्य वांश्रीनंत मारक ॥ াজবাৰ। বনমাল। স্থী কয় জন। पट्ट देकल अ**मद्रल** उम्म ७४न ॥ ভেষ্বলি কেন্তের বাস র হলের দায়। অরণ্য ক্রওমে বেশ কৈল আছিবছে। सतीन वकत शति जोच्च मस्दिति।।। বনিল বিভিত্ত বেশ সভাম পৰিছা # ষক্তামাল বৈনিময়ে বনমালা-ধলে। मयाज्यस कर्षः दि स्विद्यम भटन ॥ কর্ণবাল, করবালা করি ভিরোটিত। क्षेत्रिम्दल कृषका-कृत टेबल विद्रातिक ॥ কপালেব সীতিশো গ আভাল্কাইল। কুঞ্চভা কেশমলে আসি নেখা দিল 1 নিত্তের মেবলা ঘুচে লোহিভ গোলাপ। নাভিপদ্ম মনে আসি করি**ই** আলাগ ॥ **७तरण नृभूतभत्ति आत्र ना राक्तिण** । বক্তজবা অরুণের আভা প্রকাশিল। এইক্রপে ব্রুবাদ পূপ্প-আভিরণ। एरत वीमा टामी आपि कतिश शावन ॥ গলিল যথাৰ চক্ত কাভৰ-হৃদয়। মাণবী তুলিতে কোলে অধোমুথে রয়। निकटि व्यानिश वीना दानी वाखाहेश। মাধ্**বী-লতার** চুয়া চন্দন ঢালিয়া॥ পুকুলিত চুয়াশাখা লোগাইয়া করে। তত-মাধবীতে বিষ্ণা দিল সমাদরে ॥ **पहेंबरण कछ देवना दिशास्त्र नाशिन।** ^{গড়} শুলী আদি দৰে হয়িয়ে ভাগিল 🛭

হীনবল প্রালাক বেলেনে হইল। বিপেন লমিয়। তুপত্ন। কিরিল। ত্রপ্রেমে কর্জনে বাদ্যা ভ্রম। ভোওন করিয়া ক্রণ, কবি নিবারণ॥ পুনরায় বনশীলা আরম্ভ করিল। বাছপুত্র এইবার সংহতি চলিল। ৰেতটে নালীগণ আংসিয়া ভগন। বলৈ "চল বাবিপয়ে কৰি জে দুম্ব ঃ বলি প্ৰভূপে পাঁথা ভেন্যৰ উপৰে। ব। জবালা বনবালা উঠে প্রে পরে।। धादत्र धादत माति माति विभाग क्यम। অবশ্বে বাববাত হৈল অনুবাহণ ৷ काषांत्रीय द्वारम् शहक दक्वर पश्चिम् । **নীলঞ্চল প**্ৰভে**ল চলিল ব**্ডিয়া।। बीन नगोद्रण वादि-हिटलांन विट्रह । ८७२५भारन जामि धीटर काक्षान करिएक ॥ বাবিবাৰ হিলোলেতে গুল্ফিত কাৰ। वैश्वि छरर वाशोशन भातिभान शहरा ভাচে দে ২০৮র শেভে। পারব লয়িত। চাবিদিকে ভয় খাট পাটিক বড়িত। শেত-পাষ্ট্রেড তার বান্ধা গবিষ্ট্র। भवतः **फाहर**ा त्यन अलान-मक्षादः। পশ্চিম জনেকে শোভে বন বার্ল্যম। বিশাল ভ্যাফ শাল দেখিতে সুঠাম ৷ পুষকুলে সুর্বাল ফলভক্স। দাড়িধ এজন আন খাত সমূলছ। मिक्ति कुर्धभवटन युटलब मोहरू। জানাইতে জীবলোকে কান্ম-বৈভৱ ॥ উত্তরেদে অটালিকা বিভিন্ন গঠন। चात्र ध्यमः रिया योग् करत्र व्याद्माहण ॥ সমোৰঃ নধ্য লাগে ছাতি মনোহর। কুরকার খীপ এক রতে বারিপর। सवन्की पत्रिश्र्व शास्त्रवत्त्व। নিৰ্দাণ গণালে যেল ফেলের ফলন ন ভাষাতে নিঝবিবারি সিম্বভ নির্ণাও। যেন বিন্দু বিন্দু বুটি গড়েড অবিরস্ত ॥ নুপত্নত বিনোদিনী যহ ভা**দে হুলে**। হেৰি ভাছ খব। বরি নিজ্ঞানে চলে। বিশাল শালের জাতে গুরুষ্টল রাব। कारम भूर्ट्स (मर्थ) निम म्मरक हिन ॥

्रमहात्म्य वादावनी

देश्तिया कुमुनी करल प्रेयब शानिल। , खेबारमञ्जू छाइन छारम का किन ॥ वाबिनदा मन्त्राकारन्दिनस-मगोरतः ্রসিল শরীর মন সেছারি স্থীবে॥ ী বিনোদ শয়নে তত্ত্ জুড়াবার তার। **বীরস্কৃত্ন** পদ্মভেলা ফিরালেন হরে। (इसकारल (याशिमीय द्वरण अक कर) शांटित केश्रांत यात्रि निम एउनन । শাচর্ম পরিধান, মুখে শিবগুণপান, করতলে জিশুলের ফলা। মহালোগিনীর বেশ. াধিত ছটিনকেশ, কল্লাক্ষের মালাময় গলা h **ल्च-८**योशानव स्टब्स् (मह एम अम करब, 🞢 🕟 অজমান ভাগ্নর তুলনা। क्ष्मश्रीता अक्यतन, রত,ভীর্থ-দরশদে, পরিহার বিষয়-বান্না ॥ **চ্ছিড নয়**নতারা, ्वम भूती मूलहोड़ा, CD के को वाद्य भरे वहना আগিনন করি ধীরে, था। मिहा इत्पद्र जीत्त. চবণ কালন কৈল এলে ১৯৯১ भाषान-(मानान वि. दिनि व्यथ मृद्र करि, অহহাসি হাসিহা উঠিছে ৷ विभाग-मीतिष्ट गरन. क्षामिनीशन महन, যোগিনীরে কুমার পুর্জিল। শ্ৰে**ষ**্টে বিনয়ৰাণী, 🙀 युष्टिशा यूगल गानि, বীরবাহ অভয় সঞ্জিল । द्भिन देवना जेनहाम, कि लाख मुखिछ नाम," ु धहे कथा रशि सुशारेग । करह उर्ल चन मरत, नि श्रोमी त्यांत्र इत्त, "এ ভবে নাহিক সুথলে।। नि केलि दिन (चना, মিছামিছিরার বেলা, ় দেখিতে থাকে লাকিছু শেষ॥ व किंद्र रमिश्द आधि. সকলি সে ভোজবাজি. **রা'ল আ**র পাবে না সে স**্ত্রে**ঞ हिम पदाश्रिक ८वरे. কা'ব দীনহীন সেই, এই ভাবে যার দিন ভবে। ৰে স্থাপতিমূতা, কভক্প-গুণযুতা, ্ বিপাকে পড়িয়া ভোগে কত।. हिरान पाकि, बहे तक पाहि गाँकि, अद्भ संदर्भ वर्षि अविश्वक्रम

(यमध्य नीह बद्द, প্রথর ভারুর করে, শীতে দেহ কণ্টকিত নয়। किश कांत्रे में जिक् এবে থোর দকলি ত সর। ভক্তলে নিজা ঘাই. শয়নের কেশ নাই, 😼 একাকিনী বিখেপ ধামিলী। ভূগিয়াছি দৈশ খ্র, ক্ষীর নবদীত সর্ ভূলিয়াছি ভনক জননী।।" वर्श्वरम्दम् मान देवाद्य. বলিষ্টেড বলিতে জোধে, विक्रिक्ता महत्म खिला। करवरल विभव-करें।. দ্বিতে লাগ্নিল কটা. খন ধন বাঁপিণ উঠিল॥ टेक्ट्रेटी निमास करते, **ख्यम टि**ष्ठब्रथप्रहरू. **"শোন রে পালিই মুস্ফলান** । बारला विवासिक पति, ्रपंत्र ८० लि. बहे गोष्ट भम बाकी मा हरेरन शाम ॥ हे 'है**दा' श**ुष्टाप्र चल, 刘舜, 家民作 有斯(西哥 বাৰ্ট লিভে হ'ৰ লগত ৰ''' দেশের হাম প্রকা নায় <u>ध्रुष्ठ विक्रिक्त र १</u> हेकार कारा साहिकदर में दिन द्यार कष्णान. 10 T कोशो मुख्यित দে, বার ব্লার ছাডিল। খনি সেই গ্রহণ, क्षामहीम सार्थान ় দেবি ৰামানীরেব ছটন। কোপানল চাশি বাহি श्रातक भौत्रात थाकि, ছোন্নীয় বাক্-সোত পুনঃ বেগে বহিন। আশনার পরিছে, পুর্বাপর সমূদ আহি ক্লাজন রামা বহিষ্ণ করিজন। मर्भभ(य भूदी आए "बाद्रका मंगदी कृ।टह, তার অণীখন নাজা দর্শেখন স্পাঁছিল। নির্মাণ ক্ষান্তয়বংশ, তঃহাতেই অবতঃ कुक्र (इ. कोइ) त घटत मन कम दहेगा। ম্ম ম:নাম্ভ প্ৰ কুক্ষণে স্থাপি-পতি, थानिशास्त्र वदःवदां উপक्रम कदिन। করি তাঁরে বিলোফ কুক্ষণে ভাষার মন, **অম্বরের ভূগতির প্রেমডোরে পড়িল।** चत्रःवत्रां स्टब्स् (माटर, যাইতে পতির ধ্যে পথিনীরে তুর বিবনের হাতে পঞ্জি। ভূমূল দংগ্রাম ক্রি, প্তিবাদ পর্যপু दरीन विषठांचा १८६. अप्रिमास समितान :

- वारतं एक्टानी

win can durit, with which vis. वंतरत्व कृष्यादव भेटक चाहि त्वविष्ट । (बहर्ष महत्र मिल्मीय, के निकास प्रशानात, नीमा मध्य नामा सूरण महाश्रम पुनिस् त बित दर्गाना करि, (सरे शांत कान रति, শহরিত প্রথাইরা ভিগারিক হইছ। नदक्तिहरूरण निश्ना. গৈক্ষা বসন নিয়া, **এইরণ ধো**রিনীর বোপরেশ ধরিত ॥ ण्यवि^{क्ष}रंपरन रमरम्, ं ^कः सिदिर्टिश अ**हे** त्रस्म. বারাণসী, বন্ধারন হয়িপ্তার ভ্রমিত। मान-मद्यावत होत. वानाम्थी शक्तम. কৈলাস: পর্কভোপরি অবশেষে উঠিতু॥ হেরিলমি বৃহভেতে. শিব-শিবা আনক্ষেতে. পাবাণ-মাকৃতি ধরি বিরাজিত রবে'ছ। ত্ত্বের কৈলাস-ধ্যে, क्विन ब्रह्मक नोम. ষ্টেবের বিভব খত সমূলেতে ভূচেছে। দগতে পবিত্র স্থাস, 'গিয়াছে তাহায়ো নাম. সে পুণীও মেছপুদ অপবিত্র করেছে i বেধানৈ পিনাক্ষারী, পিনাকে সন্ধান করি. অমরের রিপুক্ল অক্তিরে বথেছে। तिरेवारम बरामरक. चारकाहिका किमनरथ. অভর-জনরে পার্বভীয় অলা বথেছে। দালি সেই শুরুময়, কৈলাগ নীরব রর, ष्ट्रं श्रृष्टे मेरूव एक्ष्माटक माटिक बाजिटहा। **হডবার ক্রন্ত নাম.** গালবাতে ভাকিলাম. আনীগাত তবু ভখা-নয়নে না দেখিছ। চৰ্থন উদ্বেশ ধরি 🔑 💢 শিবমৃতি পূজা করি. वर्षमः जानीदा जामि वादानमी ठनिछ ॥ नेवार्ष्यानरसञ्ज्ञाल्यः, १८१विव व्यनानियदः, माति व्यवसूर्व शूरत केनमी उ व्हेस । দৰি শ্বন্ধি হত হারা, 🕠 চল্লে কলকের পারা, वाधीन अवस्थित किटल नेवना ने था रम्भिष्ट । गोपणस्य विरुक्षकः, ে : দেখিলাম স্থানাত্তর, শক্ত পুরী নিশ্ববৈধা ওপ্তভাবে আগিছে। ाहि देत द्वानांक काली, शाव देवन वातांवती, गोबर्द सोर्निक र'टइ महित्यारक कागिए। विदय अध्यक्ष के देश FREE PROPERTY OF THE PERSON OF

બાળિક વર્ષેય **નો**મ. FRC MOLE পাত পুত मात्र पति कडहे देवे के किए। ं ना चारण दकाम वस नव देशन चकारत. তুবৈছে ভারতভাগ্য তবে সভা আজিই 🕏 ত্তারতে কেছু সা তখন বৃহিত্ব সার, ক্ষরতুল মহাধর্ম নাহি কিছু লভেছেঞ্জী व्यक्तिनाम वीव्रवस्म. कुरुक्ताक है दर्द सार्थ বীর নাম ৰমশোধ কুমগুলে মুচেট্রে 🖡 আজি বুঁঝিলাম মর্ম, কোন কলিবের ধর্ম ভারত-ভিতরে আর দরশন হয় না। (कन वी ववनमन, शरत थक वास्त्र কেন হিন্দু-মহিলার কুলমান রয় না। ভারতৈ কনোৰধাম, প্রসিদ্ধ পবিত্র নাম তুমি সেই কলোজের বংশধর হইরা। এই ডাবে স্বকারণে. वुथा कोन दरन स्टन, অপচয় করিভেছ রামাগণে লইয়া॥ আসিতেছে কত দু'র, बनरवरम जून भूद्धः পাঠান হুৱস্ত ধল মনে ভা ভ ভাৰ না 🤄 কৃহিলীমি স্মাচার, त्मादा द्वन शुनक्ति। चारे काश्रिमीरत हत्थी स्मात बड करता मा **एति व्यागिनीत क्या द्वामाकिए काइ**क्ट र्विमाइ इटेबो श्रीव करनार्द्याट बाह्न॥ র্থানলশিখনে হেবন ধাতুর প্রবাহ । **भग्न छद्दान (यन माहन क्हाइ ।** छार्यना अनत्म अपि अधिक ८७वनि । বনিতা, বিশিন 🗱 জুলিল তথনি 🛚 व्यक्ति विकास निया श्रुवत छिड्टर । ভূত ভূৰিবাৎ ভৰে,জাগিল ভাৰকে 🖫 🍴 ৰে ভারিতে:দেবগণ মানবনীবায় । অরপুরী পরিহরি করিও আলর 🛭 বে ভারতে সহবেল দিছুলের দল 🗗 🦈 সুরেশয়াঘাত জালা করিত নীতন 🛭 বৈ ভারতে সৌরস্ক্র-মহাবীরগণ। রাক্ষ্যভানবে রবে করিত দখন্য मिनीत, ननव. वयू, मनवथ बीव । বৈ ভারতে রিপুদান করিত কবিনার र्दर कारटर -वी श्वम नवन देकोसुनी ं दर्शिक विकास ता विकास समाव

এইরপ বিষমর চিস্তার মগন। বাহজান বীরবাত হারায় তথন। বিচিত্র স্বপনে দেখে গগন ভিতরে। বিপরীত নানা ছবি শৃষ্ঠ আলো করে॥ একধারে নারী এক রহে তরুতলে। তারে হেরি রাক্ষসেরা অধোম্থে চলে। অফুপাশে এক জন যবন-ভূপতি। শত হিন্দুনারী ধরি করয়ে তুর্গতি॥ একপাশে আথগুল সহ বিজ্ঞাণ। গাঙীব-নিনাদে দুরে করে পলায়ন॥ স্মার পাশে ডানি হাতে তরবারি ধবি। কোৱাণ ধবিষা বামে বতে এক পৰী॥ তাহারে হেরিয়া যত ক্ষপ্রিয়-তন্ম। করপুটে পদতলে হেঁটমুখে রয়॥ একধারে যথাতির পুদ্র কয় জন। इत्तर्रम पूत्र-दम्रम तरह मःरशांश्रेन॥ স্থানাম্বরে ম্রেচ্ছদূত করিয়া গর্জন। হিন্দুরে সৎকারকার্য্যে করে নিবার্ণ॥ দেখিয়া হৰ্জয় কোপ জলিয়া উঠিল ॥ ঘন দেহ চমকিয়া উঠিতে লাগিল। অস্তরের কোপ ভবে অস্তরে চাপিয়া। থাকিয়া থাকিয়া বীর উঠিল কাঁপিয়া॥ যেন গগনের দর্প বাযুর নিঃখন। শুনি ধরা ক্রোধভরে করয়ে কম্পন ॥ किश्वा (यन (चात्र (यच मागत-गर्ब्हान। জানায় আপন দৰ্প ডাকিয়া সহনে। সেই ভাবে থীরবাছ ছছস্কার ধ্বনি। করি দেখা নিলা আসি ষধা নরমণি॥ হেনকালে মহাবেগে দৃত এক জন। ভূপত্তি-সমীপে আদি করে নিবেদন। "মহারাজ সর্কানাশ বৈরিপক্ষ এল। কর রক্ষা নৈলে রাজ্য রসাতলে গেল। তুরস্ত পাঠান-দৈর চতুংক দলে। কালান্ত কালের দৃত সাঞ্জি এল বলে। निक्रवाका- (भवजारा काव्रवाद रम्भ। ভাহার নুপতি নাম স্থলতান বকেশ। তাঁর দেনাপতি নাম আংলি মহমদ। দেখাইয়া দিল্লীরাজে নিল রাজপদ॥ সূটিল মধুরাপুরী কুলী কলিঞ্র। কার্যুক্ত স্টিবারে ভালে অভঃপর ।

এथरना ममन्न আहि तिथु आहि मृदत्र। व्यविनय सम्बद्धानना तस्था नित्व श्रुद्ध ॥

শুনি নরপতি মনে বিপদ গণিল। বুরিহারা মন্ত্রিগণ মন্ত্রণা ভূলিল। ক্রোধেতে কম্পিত দেহ যুবরাজ কয়। "এ কি কাজ মহারাজ ক্ষত্র হ'য়ে ভয়।। জনম সফল ভার ধরু বীব সেই। विकास देववित्र मुख थण करत स्वरे॥ কিবা হবে মাংস্পিত এ দেহ ধরিয়া। বৈরি যদি মশোনিধি লইল হরিয়া॥

অশীতি বয়স প্রাণে জীয়ে কি হইবে। যুগে যুগে মহীতলে স্কীর্ত্তি ঘূরিবে ॥ ববনে করিব জয় রণে মহাশয়। माहरम कक्रन खद्र नाहिक मः नद्र॥ মহাবলী রিপুদল সত্য বটে মানি। কালের কৃটিল গতি তাও ভাল জানি॥ কিন্তু পুরাতন কথা গাঁথা আছে মনে। এক। বীর কত বৈরি বিনাশিল রণে॥ একা ইন্দ্র দৈত্যবংশ করিল দলন। একারঘুবসুদ্ধরা করিল শাসন। একা দশানন করে ত্রিভূবন জয়। একা রাম-বাবে দশানন-কুলক্ষ্ম। একাকুর ভমগুলে একছেতাকৈল। একা পার্থ লক্ষ্য-ভেদি পাঞ্চালী লঙ্কিল। বীর্য্য ষার ধরা ভাষ বিধির নির্ণয়। कारन इब्र कारन वृद्धि कारन भाव क्या তুৰ্জন্ন পাঠান বড় ছুরম্ভ হইল। **অটল সৌ**ভাগ্য বলি অস্তবে ভাবি**ল**। হস্তিনামথুরাকুলী আংদি কলিজর। नृष्या करनाव-नाष्ड चारम च्याः भर ॥ (कन ८४ कतिम म्रष्ठ द्राय नां थ मिन। বিপ্রহরে মেঘে সুর্য্য কথন্ মলিন॥ कथन প্রবল নদ শুকাইয়া যায়। ৰুভু উচ্চ গিরিচ্ড়া ভূতলে লুটায়॥ শতগিরি অবলম্ব ভূমিকম্পে কভু। শতমূল বটবুক ছিন্নমূল কভু॥ ব্দলবিন্দু পাষাণে কথন করে ভেদ। মহাপরাক্রান্ত রাজ্য কথন উচ্ছেদ॥ পবিত্র কনোজপুরী ক্ষত্রিয়ের বাস। ভাছারে সুটিবি বলি করিলি বে আশ 🛭

তবে ত পুরুষ আমি বীরবাছ নাম। তবে ত প্রদিদ্ধ পুরী কনোলেতে ধাম। তবে মম রণবীর-ঔরসে জনম। তবে ধরি বাছবল বীর্যা পরাক্রম। महात्राक बीहत्रत थहे निर्वान। প্রিজ্ঞন স্কলেরে করুন পালন ॥ রণক্ষেত্রে গিয়া শক্ত করিব নিধন। সভা সভা—এই স্কাকরিলাম প্ৰ_॥" হেরি বীরবাত দর্প প্রফল্ল সকলে। तांक-च्यांका (शरह वीत त्रशरवर्ग तरना সেনাপতি পদে বীর হইল বছণ। শুনি 'জয় ধ্বরাজ' নাদে দেনাগণ॥ নাহিক ভয়ের লেখ. করিয়া সমর্বেশ, বাজস্ত হেমলতা-ববে গিয়া ভেটিল। "ट्रांबरिन विनाय ठाडे. সমর জিনিতে যাই." বলি বীরবর প্রমন্তর কর ধরিল 🛭 পতি রণমাঝে যান. আকলারমণী-প্রাণ. কতই বিষম ভাব উথলিল জদয়ে। শ্কাইল ভরুলভা, শোকভারে অবনতা, শশধর লীন যেন হয় রা**ত** উদয়ে॥ ধরিয়া পতির হাত. "কি কৰ হাদঃ-নাথ, কঠিন ক্ষত্রিয়কুলে নারীজন্ম ধরেছি। মায়া মোচ পরিণয়, উদ্যাপন সমৃদ্র, ক্ষত্রিয়-ধর্মের লাগি জন্মশোধ করেছি। ষ্বনে নাশিতে যাবে. জগতে স্বৰণ পাবে. এমন সময়ে নাথ কি বলিব তোমারে। মন বোঝে নাত তবু. ल्यान (केंद्रम डिटर्ड कड़. কভু তব সনে ধেতে বলিতেছে আমারে। গত মিশি ডঃৰপন. করিয়াছি দরশন. তাই প্ৰাণনাথ, প্ৰাণ আকুলিত হয়েছে। তাই নাথ এতক্ষণ, নাকরিয়া আলিখন, অবশ হইয়ামম বাত্যুগ রয়েছে॥ গত মিশি শেষবাম. অলকণ দেখিলাম. ভাবিলে শোণিতবিন্দু দেহে আর রয় না ! **िंगरेटन अन्टर्स म**ेटन. জলনিধি পার হ'রে. পলাডে বাসনা যেন কেহ দেখা পার না॥ मिथिष्ट मधुत्री ट्राउन, ম্যুর ধেমনি ফেরে, অমনি নিদর ব্যাধ থর শর মারিল। টোইতে কুগ-কলি, (तथा निन रमहे चिनि, **अमनि धालब-बाबूहरू क'टब वरिन।**

(यह 'बादि वादि' क'दत. চাতকী কাতরখরে. উঠিল গগনোপরে অমনি দে মারিল। বিনামেখে বজ্ঞাখাত. হ'রে শিরে অকন্মাৎ, সেই পাথী ভূমিতলে লুটাইয়া পড়িল # বিশাল তক্তর পাশে, তরুলতা ধেয়ে আংসে. হেনকালে কাঠরিয়া সেই তক্ত কাটিল। কমলিনী বারিপরে. (वह श्यात्म त्रविकरत. জমনি সে কাল-মেহ আসি ভাতু ঢাকিল। আবো কত অলকণ. দেখিলাম অগণন. না জানি কপালে বিধি কিবা লিপি লিখেছে। বুঝি লীকা সমাপন, ত্ৰত হলো উদ্ধাপন. মোর প্রতি কোন দেব বুঝি কোপ করেছে॥ ৰা হবার হবে ভাই. আজা দেহ সঙ্গে ধাই. তৰ অমুগামী হয়ে রিপুকুলে নাশিব। অথবা তোমার সনে, মরিয়া সমূধ-রূপে. ছই জনে একেবারে গুরুলোকে পশিব॥" ভনি থেদে মহাবীর. ভাবিয়া করিয়া ভির. অ্বশেষে অঙ্গুলীব অঙ্গুরীয় খুলিয়া। "কি জানি কি হবে রণে. দেখো প্রিয়ে রেখোমনে. প্রাইল প্রমদারে এই কথা বলিয়া॥ সময় বহিয়া যায়. দিনের সংক্ষেপ তায়, নিরুপায়ে যুবরাঞ্জ রণমুখে চলিল। কার্চপুতলীর স্থার, যেই দিকে স্বামী ৰায়. হেমলতা একদৃষ্টে সেই দিকে রহিল। সেনা ল'য়ে বীরধাত হ'য়ে অগ্রসর। নেপালের পথে আসি রহিল স্তার॥ প্রদিন অপ্রাফে রিপু দেখা দিল। সম্প্ৰীন সম্পায় মেদিনী চাকিল ॥ অর্থ-চন্দ্র-শোভা নীল পতাকা উভিল। যোজন ব্যাপিয়া শক্ত শিবিরে ছাইল। ক্রমে দিবা অবসান সূর্য্য লুকাইল। আঁধার বিছারে নিশি আকাশে বসিল। अभव-आगरा निका निका। निम शरत। অমনি তারার আংলা ধিকি ধিকি করে॥ বিভীয়ার চন্দ্রকলা ঈবৎ হালিল। क्यां प्यां व्यात्मा (शर्म मर्ग मिक खेकां निका। বীরবাছ বৈগী-পক্ষ করিতে বীক্ষণ। হিমগিরি শৃকোপরে কৈল আরোহণ॥ প্রকাও-প্রকৃতি দেখে যবদের দেনা। শিরেতে ধবল বাস বেন ভাসে ফেনা।

ঠেকে শিক্ষা করে বেই. সার গ্রহ করে সেই পরাণ ধরিতে. এ ষমপুরীতে. তাদৃশ না পারে অক্ত পরে॥ নারিব থাকিতে, রাখিব ধনে। কিবা শোভা দিল তায়. বাক্যে নাহি বলা বায় ভাবিয়া কান্তর, ওতে শশধর. কোকনদে শ্বেতপদ্ম যেন। বল হে সন্থর কোথার বাই। ঘেরিয়া গগনটাম অথবা চপলা-ছাঁদ. কিছা বহিং জলে. অরণো ভতলে. দেহ যুক্তি ব'লে, কোথায় পলাই। অন্তৰ্ভ ইয়ার্ছে বেন॥ একটি তাব শুকারেছে ডটি ফল কাছে কাছে. मिट्य वः मध्य. অহে লিপিকর, একটি উৰ্দ্ধ একটি অধোভাগে। (भारत विवधत चारक में निरम। ছায়া পড়ি দুটি কালো. তার মাঝে কিছু স্বালো ধর্ম নাহি আর. অতি ত্রাচার. পডিয়াছে একটি অগ্রভাগে॥ হাতে দিয়ে ভার প্রাণে বধিলে। এক কোলে অক্সঞ্জন সেইরূপে ছই এন. शिष्य मत्नोद्यारम. কোথা দশ মাসে. কতক্ষণ সমভাবে যায়। বসি পতিপাশে চাঁদে দেখাব। शीरत शीरत कुटि रहर (मध्मां भा है। ए दयन. একাদনে বসি. कांश किया-निर्म. হেমলতা সেই ভাষে চায়॥ লয়ে স্তশনী, দৌহে খেলাব॥ অচেতনা জনেক নাবী (मर्थ हरक वरह वावि. বুকে ক'রে নিষে. কোৰা অন্ন দিয়ে. কোলে করি অনিমেষে রয়। পতি-কোলে থুৱে হদি কুড়াব। চিনিতে না পারি তারে. চেয়ে দেখে বারে বার্ল ভাহে সাধে বাদ. করি অতিবাদ, মন ব্রি সেই নারী কয়। হায় সেই সাধ কিলে পুরাব॥. আমমিভিয়ন "স্থি, নাহি ভয়, তোৱে করি নতি. ওরে প্রজাপতি. ত্তব ভগ্নীসমা জেনো আমারে। আর এ হুর্গতি মোরে দিদ্ নে। পিতা রাজ্যেশ্র. **पिल्ली-म**हीश নে রে জান হ'রে द्धमानिनी क'रत. আমামি ভাগাফলে ভঞ্জি ইহারে 🛭 আর এত ক'রে জালাইস নে॥" মোরে ধরি গ খাসা টাবখানি পারা. বাণ কবি জয়. এন্ত বলি চিতহারা. এই তুরাশয় মোরে ছলিল। হ'য়ে হেমলতা ভূমে পড়ে। করি জাতির গৰ্ম কবি নষ্ট, चत्रना कांन कांमिनी, (इसकारन मोनांशिनी, শেষে দাসীভাবে ঘরে রাথিল। ক্রোড়ে করে আসি উভরড়ে॥ রাজাকরি ছা শুনি আবেবার. नविशास्त्र पत्रन्त. ষেন কোন রাহীশ্রন. কোন রাজক্তা পুনঃ হরিল। করি মণি স্বত্তে শ্রা তাই এম ধে वारम वैधि ब्राप्थ जुलि, মনে ব্যথা পেষে. (सएए फिनि वृत्तिश्वनि, ভাবি কার ভাগ্য পুনঃ ভাঙ্গিল 🛭 बाद्य यात्र श्रुनः नित्रथत्र । বিদরিল বি মুছায়ে নয়ন-বারি. পরে দেখি মুখ, त्रहेक्रल त्रहे नावी. পুর্বাকথা যত মনে পড়িল। অনিমেৰে মুখপানে চায় ৷ ভাচে চমৎকার. নেএে না পলক পড়ে, नाहि नए नाहि हर्ष, দেখি কুতৃহল আরো বাড়িল। একভাবে ব'লে রহে ঠার। (महे इही क्ति उथा कि कांत्रन, তমি যতকণ, (महे नादी कान बन, कारक कत्रयाङ कति कांमिरन। কি জন্ত দে এত শোকময়। कछ मिया मिला, इरव চুরি-করা মণি. ভাবে বুঝি সেই ধনী, শেষে 'আমাজি' ক্ষম বলি বাচিলে॥ हेरव किছू नाहिक मः नम्र ॥ হয়ে ভাগ আমি ভতক্ৰ. এত সে मनिनमूषी, मा ह'रम इः (वत इवी, त्रह्मात्य थाकि नव (मर्थिष्ट । - হবে কি কারণ তার তরে।

বে ধোগ পেরে. व्यानिशक्ति (भरत्र. অন্তরালে থাকি সব শুনেচি। গ্যে কোলে করি. এই আছি ধরি. আবি হ'তে স্থি, ত্ব হয়েছি। ∤মি ভাগাবতী. কারে বলে সভী. অহাবধি তাহা ভাল জেনেছি॥" বিজন অরণো যেন স্বজন মিলিল। বালুকাবিকীর্ণ ভ্রে সরসী জটিল ॥ তাদশ প্রসন্নমতি তেরাগি ভতল। উঠে देवटम टब्मलका टमटक ट्रिया वन ॥ জুডিয়া যুগলপাণি সঞ্জ-নয়নে। হেমলতা কয় কথা কাতর-বচনে॥ "দরাময়ি, তব কাছে এই ভিকা চাই। কি উপায়ে বল তার কাছে রক্ষা পাই॥" অনি দিল্লী-মহীপাল তন্য়া কহিল। অশ্নীবে তনয়ন ভাগিতে লাগিল। বলে "স্থি. কল্মান গিয়াছে স্কল। ভিজিয়া ধবন-রাজে থেয়েছি গবল ॥ আজি দেই তাপ, দখি, শীতল করিব। দিয়াছি আমাব পর্ম তোমার রাখিব॥ মম বাক্যে অনাদ্ব বুঝি বা না হবে। চুরি-করাধন বলি বুঝি বাক্য ববে 🛭 যাই দেখি একবাব মেচ্ছবাজ-পাশে। বুঝিৰ আমার ভালবাদে কি না বাদে॥" এত বলি দিল্লীপতি ছহিতা চলিল। আসি মেছ-মহাপত্তি-কাছে দেখা দিল। তে আদিছে হেবি আৰু নাস্তিল দেৱী. শশব্যন্ত পাতশাহ পথিমধ্যে ভেটিল। কি ভাগ্য আজি মোর, নিজে ধরা দিল চোর". বলি বসবতী-হাত রসভাবে ধরিল। া চোর সাধু ষেই. মনে মনে জানে সেই. क्ति भिर्छ नाती जावि कब स्मादि हनना। া ভানি অপরপ্, ওহে চতুরের ভূপ, পরেছ নবীনা নারী মোরে না कि চাহ না! ा (होक वल तम्बि. উদাৰ হয়েছ হে কি. ংন মতি কি কারণ ভূলিতে কি পার না ? म्वामानी दश्र. তবু তাহে নাহি হয়, কেন পরনারী তরে কর এত বাসনা 🕈 পিজা-মাতা-মনে পীড়া দাও প্রিয়ক্তনে, किन এड मडी नांदी मत्न मांड (वहनां ?

কেন দাও এত তাপ. কেন কর এত পাপ. নারীৰণ কভ পাপ মনে কি ভা জান না ? হেম্লতা নামে ৰাৱে. রাবিয়াছ কারাগারে. বিষপানে মরে সেই মনেতে কি ভাব না গ একে অভি সভী নারী, তাতে গর্বভরে ভারী. তবু সে রমণী তরে কিছু দ্রাহয় না ? বা পেষেছ রাথ তাই. অতি লোভে কাৰ নাই: पि**ही तांक्र भारते व देश क्रमब्राग** एक व ना । আমার বচন ধর, ভাহাতে মোচন কর'. অভিশয় কোন কৰা কোন কালে ভাল না ঃ" স্থপ্ত ব্যাদ্র যেন আমিষের গন্ধ পেলে। कालमर्थ-भिद्र (यन भाषां कित्ल ॥ প্তঙ্গ বেমন শোডা করি দর্শন। ভোলাকথামনে হ'লে উন্নৱ যেমন। শুনিয়া পাঠানৱাজ চমকি তেম্ভি। আকল-নয়নে চার কামাত্রমতি॥ বলে "কোথা আন তারে দেখিবারে চাই। পেরেছি নবীনা নারী ছাড়ি দিব নাই।। মক ক বাঁচক আবাৰ যাইছোক কক। পেরেছি স্থার ভাও নিবারিব ভুক । জানে না সুলতান আমি বিজয়ী জগতে। তিলার্দ্ধ রাখিতে স্থান এই ভূভারতে । আমি ভাবে কভ ক'রে আপনি সাধিছ। অবশেষে হাতে ধরা স্বীকার করিছ ঃ মম বাকো অবহেলা করে সেই জন। দেৰিব কেমনে তারে রাথে কোন জন॥ অনেক সাধিয়া শেষে সাভনা করিল। তথাপি আস্ত্রি-কোপ ঘূচাতে নারিল। বিশুর কাঁশিয়া করি বিশুব সাধনা। অবশেষে একমাত্র পরিল কামনা। বে অবধি হেমলতা প্রদব না হবে। দে অবধি দাসীভাবে প্রপোহানে রবে॥ এ দিকেতে ৰীরবর. . • মহ। অবণ্য-ভিতর, চেত্ৰা পাইয়া চকু চাৰ। অতিভীম-দরশন. বিজ্ঞান গছন বন. हातिमिटक रमिश्वादत शाम ॥ শোণিতে লেপিত বাস. নয়নের জোভি: ব্রাস. শরাঘাতে দেহ অবসাদ। ভাতিয়া পড়েছে শল: श्रुपाय वार्षत्र कना, ভবু বীর ভাবে না বিষাদ।

नाहिक खारमद राम. ধরিয়া শরের শেষ, টান দিয়া তুলিরা ফেলিল। কোথার বিপক্ষল. কোথা আপনার বল, কেন তথা, ভাবিতে লাগিল। **(इनकारन (मर्च ८५८४.** निक अर्थ जारम (धरम. সংগ্রামের সাঞ্চ পরিধান। শরীরে শোণিত বর্ম. হেরিয়া বুঝিল মর্থা, এই মোরে কৈলা পরিত্রাণ। রণ্ডমি পরিহরি. আমাবে পর্চেতে করি. অশ্বর আসিয়াতে বনে। এই কথাবীরবর. স্থির করি তার পর. ভাবিতে লাগিলা মনে মনে। কোন পক হৈল জয়. কোন্পকে পরাজ্য, সমাচার কিছই না পাই। বলি অংশ করি ভব, हिल्लिन व्यावित. দেখেন সংগ্ৰামে কেছ নাই। তখন কাত্র মন. বেন জভ সমীরণ, চলিলেন ধাইয়া নগরে। দেখে যত গৃহ-দার. हरेबाटह 'हात्रशाब, অগ্লিক ও জলে ধৃধ্মরে। অসহ শোকের ভাব. সহিতে না পারি আব. বীরবর কহিলা কুপিয়া। "ভাল আশাকরিলাম. ভাল দেখা পাইলাম, বড দাধ মিটিল আদিয়া # করিয়াবিপক্ষ-নাশ. यात्रिव (श्रेत्रती-भान, পুরাব পিতার মনস্বাম। যুচিল দে অভিলাব, লাভে হৈল বনবাদ. লাভে হ'তে ভার্য্য হারালাম। **এ** के कि कि त्यारा. প্রবেশিয়া এই দেশে, मम পতी यवटन हविन। করীতে হেলার শুণ্ড. উপাডিয়া তরুকাও. म्भरनाउ निक्ति शहिन **॥ অ**রে নিদারণ চোর,∙ , সে জন কি করে তোর, त्म (य नात्री अवना ननना। দে যে অতি নির্মল, (क†मन कमननन. তারে কেন দিলি রে বেদনা। দিলী কর ক'রে তোর, এত কি বাড়িল কোর, মোর প্রিয়া করিলি হরণ। ষ্ট্ৰে ক্ষন্ত হই. সভা সভা সভা কই. এবে তোর নিক্ট মুর্ণ ৷

অন্তি মাংস বভাদন, (मटक ब्रुट्व खळ कि. ভোর মন্দ ক্লরিব সাধন। श्रमात विस्माहन. য্বনকুল-নিগ্ অপ্তাবধি এই মম পণ। किया बरन किया छरन. किया वरन कि रकोशत. এই ব্রত সকল আমার। আজি কিবা পরদিন, কিংবা অন্ত কোন দিন পরিচয় পাবি বে ভাহার॥ খদেশ করিলি জয়. তাতে আর থাকা নয় তাহে প্রিয়া বন্ধ তোর ধরে। এই দেখ অস্থাবধি, ভূমিৰ গিয়া জ্লাদি দেশত্যাগী হব তোর তরে॥ অল্ল দিনে পাবি টেব. কোন কৰ্মে কিবা ফেব্ कांनिवि (त्र भूक्ष (कमन। থাক নিয়ে ধরাতল. আছে রে বারিধি-জন তাহে তথ্নী কবিব চালন ॥ লক তবী ভাষাইব. <u>(अफ़्रुट्सभ सक्तारेक</u> বাণিজ্য করিব ভারথার। তোর সিংহাসনপাত, (মুদ্ধকুল ভক্ষা প্রেরদীরে করিব উদ্ধার ॥" থেদ কবি বীবৰৰ উঠিলাভৱণী। কলিকরাজেব রাজ্যে চলিলা তথনি॥ শশুরের দৈজ লয়ে পুনঃ যাব রণে। कनिक উদ্দেশে চলিলেন এই মনে ॥ গঙ্গানীরে তরীখানি ভাগিয়া ভাগিয়া। গঙ্গাগারের জনে পডিল আসিয়া। মোচা-খোলাখানি যেন ভাষে সেই ভরী। ভাহে চাপি বীরবর নত শির করি॥ চৰ্কণা কণী যেন ভগ্ৰচড়া শিখা। অধঃশির হয়ে বীর তেমতি রহিলা॥ কভক্ষণে লকাইয়া সদয়ের ভার। প্রকাশি কাতরে শেবে কছেন কুমার॥ "এই কি কপালে ছিল কগমাত ভূমি। व्यामि देश्य (मन्डांगी वनी देवरन जुमि। রত্বগর্ভা ভূমি তুমি জগতের সার। কত নদ হদ গিরি তব অলম্বার॥ উচ্চ হিমগিরিচ্ড। হিমানী-মণ্ডিত। গর্বা করি স্থির বায়ু করিছে থণ্ডিড। चक्रावत तथरत्राधकात्री विकाशिति । অগন্তা খবিরে শির নোমাইছে থীরি।

বীরবাক্ত কাব্য

গোমুখী-বাহিনী গলা বমুনাতে মেলি। দিবা-রাতি কলনাদে করিতেছে কেলি॥ ৰব[্]অংশে জনা যেই রাম নাভায়ণ। তোমারে জননী-ভাবে কবিল পালন ॥ তোমার সেবার পঞ্চপাও ছিল বত। পজিল ভোমার রাজা বিক্রম-আদিতা। অমর বাল্মীকি ঋষি সুমধুব পরে। রাথিয়াছে তব বশ ত্রিভবন ভ'রে॥ বেদব্যাস মহাঋণি ভারত রচিয়া। প্রচারিল তব নাম জ্বগৎ জুডিয়া॥ সরস্থা-বরপত কবি কালিদাস। ত্ৰ য়শ ৱঘৰংশে কবিল প্ৰকাশ ॥ ভৰভতি তৰ নাম অনাগ্য অক্ষরে। পাঁথিয়া গ্রন্ধা গেছে মানব-অন্তরে ॥ এবে দেই দেশমান্ত ভারত বক্ষেতে। ম্রেক্সকল পদে দলে নির্থি চক্ষেতে॥ ঘচিল মনের সাধ জনম মতন। ভাঙ্গিল নিজার বোর ভাঙ্গিল স্থপন ১ ষবনে করিয়া ছিল্ল তোমার মোচন। কত দিন মনে মনে করিতাম পণ॥ পুনশচ হিন্দর রাজা, স্থাপন করিব। পুনর্কার অলফাবে তোমারে তবিব # পুৰ: নিৰ্মাইব পুৱী যত হৈল গত। গঞ্চা-ধ্যনার ভীরে ছিল বত যত। विकाय-प्रमुखि भूनः इदिया वाकाव। ভারত জাগিল বলি ভতলে জানাব॥ হার আশা ফুরাইল জনম মতন। অদটে আছিল শেষে জলধি-ভ্ৰমণ॥ मत्नोहर नवपृक्षा-त्कामण जामतन । বসি আহার নাদেখিব শোভিত গগনে ॥ তরলতরকা কলনাদিনীর তীরে। আবে নাজভাব চকুত্রমিব নাফিরে॥ নবীন পল্লৱ ছায়া-তলেতে বসিয়া। আরে নাভনিব গান হরিষে ভাসিয়া। বিদায় জনমভুমি জনম মতন। বিদায় ভারতবাদী ক্লাতীয়গণ ৷ বিলার জননী তাত পুরবাসী জন। বিদার জনম শোধ প্রাণের রতন। জীবিত আছ কি প্রিরে ভাব কি আমারে। क्लिन् क्लार्य कांत्र कारक द्वरथटक कांनाद्य।

ধিক ক্ষত্ৰকলে ধিক ধিক মম নাম। পতি হয়ে নারী-রক্ষা কার্যা নারিলাম ॥ একে শক্র তাহে মেস্ক তাহে প্রাণপ্রিয়া। কেমনে ধৰিব কাষা জানিয়া ক্ৰিয়া॥ তে বজন কেন মোৰে পাড়ালে নালছ। জীবিত বাধিয়া কেন দহন কবছ ॥° কোথায় লকালে বজ্র অহে সুরপতি। নবাধম-শিবে হানি বিনাশ ছগতি॥ দেব হ রে মাংসপিও, চর্চ রে হাড়। অব্যবাস্কাস দেহ হয়ে যা পাছডে।" বলিতে বলিতে বীর চলিয়া পডিল। যেন বজাবাতে দীর্ঘ তরু বিদারিল। একাকী জলধি-জলে তরীতে শুইরা। জনক্স-বেল্ডেজ জবী চলিল ভাসিয়া। সমক্তরজনীজনে ভাসিয়াভাসিয়া। জ্ঞকণ-উদয়ে জলে লাগিল আমসিয়া॥ কলে উঠি বীরবর পান সমাচার। সেই ত কলি**জদেশ কলিল বাজার** ॥ সমাচার পেয়ে তবে চলিলেন বীর। বেন রাভগ গভার ক্রোধেতে অধীর। গিষা খলেবের পদে করি নমস্কার। নিবেদিলা পর্কাপর যত সমাচার ॥ ভনি কোধে কম্পমান কলিক-ভপাল। জ্ঞলিয়া উঠিল যেন কালাস্তের কাল।। তখনি অমাতাগণে একত করিয়া। সমরে সাঞ্চ বলি ক্রেন ক্ষিয়া॥ সংগ্ৰামে সাজিল সেনা দেখিতে বিকট। जाकिल तांदन तांकी **मःशांग-भक्**छे॥ ছেরিয়া প্রফল্লমনে ভপতি-নন্দন। শশুরের পদযগে করিয়াবন্দন ॥ ক্রেন, "আমারে পান দেহ মহামতি। বিনাশিব রিপুদল ঘূচাব অখ্যাতি॥ मरेमरक रचित्र पिक्षीतारक पिक्षीभूरत । यम वटन विश्वर्द्ध भनाहेत्व पृत्त ॥ নিক্ষেপে মহারাজ থাকুন আলয়ে। করুন আশিদ রিপু যাবে **ব্যালয়ে** ॥" এজ বলি বীরবাত বন্দিয়ারাজায়। শিবিতে আসিয়া পরে বার দিল। রার । রাজপুত্রে নেহারিয়া আনন্দিত মনে। बहारकानाहरन हकांत्रिम रेम्क्र**ा**र्थ ॥ 106363

वीववाह ब्राप शन, ছপতি দিলেন পান. কলিক-রাজার দৈক্ত চতুরকে চলিল। একত্ৰেতে ষত বীর. গিয়া সাগরের তীব, সহ**ন্দ্র ত**রণী-পূর্মে সকলেতে উঠিল ॥ ষেন জলে ভাসি যায়. ক্তবা শোড়া দিল তায়, স্থশোভিত একখানি দাক্ষয় নগরী। সুচঞ্চল তুনয়ন, মহাবাকৈলিত মন. উঠিলেন বীরবব শ্রেষ্ঠ-তরী উপরি॥ **हिंगल डेखत्रमृत्थ.** গলাসাগরের দিকে. উৎকল প্রভৃতি দেশ বামভাগে রহিল। নিক্ৎপাতে হয় গত. এইরূপে দিন কত. এক দিন অকমাৎ বিন্নপাত হইল। কালিমা জলদ-দ্ৰেখা. बायुटकारन मिल दिन्था. ঢাকিল রবির কর নভোদেশ ব্যাপিল। যেন প্রলম্বের কাল. शिक्ति क्लमकाल. সহস্ৰ কেশরি-নাদে জলদ নাদিল। হল হল কুলকুল. গতিল ভরক্কল, ডাক ছাড়ি লক্ষ্য দিয়া শূক্তমার্গে উঠিল। ন্তৰ বসমতী কাঁপে. প্ৰলয়-প্ৰন হাঁকে. তক্ষণতা গুলাল'য়ে দিগস্তর ছুটিল।। বাতাদের হন্হ্নি, ৰজ্বে চিচিচড ধ্বনি. সমুদ্র মেথের নাদে ত্রিভূবন চমকে। • উন্ধাপাত শিলাব্রঙ্গি. "বিনাশ করিতে সৃষ্টি. ष्यविटिष्ट्रिम् मृष्टलय शांचा वटर्ग समारक ॥ শৃক্ত জল একাকাব. দশলিক সন্ধকাব. হই হই রব মাত্র শুনা যায় আইবণে। जारह मारक यात्र (नथा, हमरक हिकुत-(वर्श. জলধিতর্গ্ধ-রঙ্গ চমকিত নয়নে। 'উथल हिल्लान डेफ. ধর্মত করিয়া তছে. হলসূল চাবি কুল ব্ৰদ্ধভিম ফ্টিছে। কবি ভীম গরজন. য়েজ সহফ্রন. আকাশমণ্ডল বেন হাতে হাতে সুফিছে। প্রসারি সহস্র ফণ. অথবা অনস্ত যেন, ভারা অ্র্য্য গ্রহগণে ধরি ধবি গিলিছে। অমৃত লভিতে মত্ত. किःवा देवन दिव देवेंग, পুনর্বার বঙ্গণের রাজ্য ছার করিছে॥ পৃথিবী সহে না ভব, দৰ-কীৰ্ত্তি ভয়কৰ, কি করিবে ভার মাঝে মাস্থবের সামর্থ্য। স্ব গেল রুসাত্তল. **७ ७३ो मन** वन. देवतु तुन तामी हरत्र भार्ष द्वात अनर्व ।

তরীকাঠে করি ভর. ভাগ্যবলে বীরবর. কিপ্ত বক্রেব করে প্রবিত্তাণ পাইন। পর্চে ধতুর্বাণ-রাশি, কোমরে বন্ধন অসি. चक्न वातिध-करन जानि जानि हिनन ॥ তিলেক নাহিক স্থল. অক্ল আংগাধ জাল. তাহে পুন: বছবিধ জলচর খেলিছে। কি করি কোথায় যায়, দেখি ভাবি নিরুপায়. বীরবাছ মনে মনে অই কথা তৃলিছে। (वना धुधु धुधु करत्, ट्न काटन एमर्थ मृद्र, হেরিয়া কুন্তিত মনে, সেই মুখে চলিল। ক্ৰমণ: নিকটে আসি. ভরকে তরকে ভাসি. চক্ষু খেলে মনোহর দ্বীপ এক হেরিল। डेलवन मत्नात्रम. नक्त-क्रानन ग्रम. তাহে শোভা করে হেবি তীবে গিয়া উঠিল। হারায়ে অমরাবতী. বেন অমরের পতি. घुना लच्छा खरत्र खरधाम्रथ हिनन ॥ ষাহে মুনি মনোলোভা, লতা-পুপ্দ--ফল-শোভা. না পাবে সে বনশোভা শোকানল নাশিতে। जुनारन (म (मांक गांव, শিশু যদি শোক পায়, জ্ঞানিচিত্তশোকানল নাহি ঘুচে বাঁচিতে॥ मा (बारल कननो-त्कारल. যেই জন শিশুকালে. ছুটাছুটি করে আসি শুকু পান করেছে। নারীসনে অমুরাগে, দেই জন নিশিভাগে, नित्रमल পृर्वमानी मनधरत ८२८वटह ॥ প্ৰাণবামু ওষ্ঠাগত, পীড়াতুর শয়াগত. হেরে যেবা প্রিয়ঞ্জন প্রিয়ভাষা শুনেছে। প্রবাদেতে কি অসুথ, গুহবাদে কিবা সুখ, বনবাদে কি যাতনা দেই জন বুবেছে। বহে বীর অমিবাব সেই ষ্মণার ভার, ডাহে অতি ব্যাকুলিত হারা পত্নী ভাবিয়ে। সেই জন বুঝে সার वौर्गा-विम् चार्छ यात्र, আছে বা না আছে শোক ঐ শোক জিনিয়ে । কত্তকুলে অধিষ্ঠান তাহে মহাবীৰ্য্যবাৰ, তাহে রাজবংশধর বন্ধোগর্কে গর্কিত। প্ৰণয়িনী অপহত তাহে রণে পরাঞ্চিত, এমন সস্থাপ কিসে হবে বল স্থগিত। বুঝি বা সে শোকভবে शैनवीर्या र'रन भरत. উন্মাদ পাইত কিংবা আগ্রহত্যা সাধিত। তাই আছিলেক খিঃ মহা-তেলোধারী বীর, শাল তক্ত রহে যেন হরে বল্প-দণ্ডিত।

গজার প্রেক্তি যার. বাহে স্বল্প শোক ভার, किन्छ करम निवर्वि हिन्छा-क्वी मः निर्हा মেখের স্জন যেন. नर्छ हरक महभन. কিন্তু বাষ্প নিরবধি শুক্ত ভেদি উঠিছে **॥** বাহিরেতে নাহি আর. বীরবাছ-শোকভার. অন্ত:শিলাভাবে শেষে উথলিতে লাগিল। নয়নের জ্যোতিহার৷. ধরিয়ে উলাসী ধারা. জলশন্ত কাননেতে গীরে ধীরে চলিল **॥** যে পথ দেখিতে পায়. त्महे भए। ह'ता यांत्र, স্থপথ কুপথ কিছু নাহি কবে গণনা। শীতল তকর তলে. শীতল তডাগ-জলে, কভু বসে কভু ভাবে সমভাবে রয় না॥ নাহি সংখ্যা কতবার. অমিল নুপক্ষার. দ্বীপখণ্ড-চতুর্ভাগ সমুদায় ঘেরিয়া। দে কি ভাঁর বাসস্থান. যার দর্পে কম্পনান. ছিল মহা মহা বীব ভ-ভারত ব্যাপিয়া॥ এই ভাবে পর্যাটন. ইতন্ততঃ কডকণ. করি বীর তকতলে অধোম্থে বসিল। रहनकारण मिवाकत्र. লুকামে প্রথর কর. দরেতে সাগরগর্ভে ধীরে ধীরে পশিল॥ ক'দিনের ক**ষ্টভোগে আছে**ল শরীর। ভাবিতে ভাবিতে ঢ'লে পাছিলেন বীর॥ হেনকালে অকন্মাৎ সঙ্গীতের ধ্বনি। ভনা গেল বামাস্থবে মধুর গাঁথনি 🛭 একবারে চারিদিক পুরিয়া উঠিল। নিদ্রা ভাঙ্গি রাজপুত্র-শ্রবণ মোহিল। আড়ষ্ট হইয়া রায় কার্মন-চিতে। মোহিনী-স্থীত-স্থর লাগিল শুনিতে। मिय डेशमियो किश्ता खन्मता किन्नती । কে গাহিল এ মধুর সংগীত-লহরী দ কিছুই বৃঝিতে নারি ব্যাকুল অন্তর। কি শুনিল রাজপুত্র ভাবিয়া কাতর। অনতিবিলম্বে হেরে নারী চর জনা। ধ্বল বসন-প্রা কনকবরণা ॥ করে বীণা স্থমগুর-হ্রদে মতিমালা। তার পাশে হুই বেণী করিছে উঞ্লা। গও গ্রীবা নেত্রশোভা 🛎তি দন্তপাতি। ওষ্ঠাধর পয়োধর নাসানন-ভাতি॥ মনোলোভা শোভা কিবা বাছ কটিদেশ। মুছগতি পুরদুনী তরুণ-বয়েস ॥

আরক্ত অরুণ পদ খাম ধ্রাত্তো। (यन ভাগে কোকনদ নীল্ছদ-জলে॥ हर्नन-नम्रतन CBCय (मर्थन मासन्। মানবী-বেশেতে এরা এল কোন জন 🛭 ও দিকে মানবরূপ হেরিয়া সে বনে। বমণী কজনে দেখে চকিত-নয়নে ॥ • এ চাহে উহার মুখ না সবে ভাবতী , দাড়াইয়া বহে যেন পাষাণ-মূবতি॥ নুপতি-তনন্ন তবে বিনয়-বচনে। কহিলেন মুছভাৰে প্ৰিয় আলাপনে॥ "কেবা বট দেখা দিলে এমন সময়। কিবা জাতি কিবা নাম কোথা বা স্বালয় 🛭 মানব-সন্তান আমি বিধাতা বিমুখ। ধিপাকে পডিয়া তাই পাই বহু তথ। माम्राविनौ-दवत्भ दक्वा फिटल प्रमन । ঘুচাও মনের ধাঁধা কহিয়া বচন ॥** বলিতে বলিতে কথা শশী দেখা দিল। বীণা বাজাইয়া রামা সবে লুকাইল। অপর্ব্য রমণী-কার্য্য দেখিয়া ভনিয়া। যামিনী পোহান ভূপ ভাবিয়া ভাবিয়া॥ ঘ্চিল নিশির ঘোর অরুণ উঠিল। তীরে আসি পূর্কমূথে চাহিয়ারহিল। मिथिएक छेगात (थनाः নূপস্ত ভোরবেশা, লমিতে লাগিল বনে বনে। পশুপকী আদি মিলি. সকলেতে করে কেলি দেখি হর্ষিত হল মনে ॥ পরিমলভরে ভাবী. সে ভাব সহিতে নারি, পুষ্পপদ পতা পবে হেলি। অধবে ঈষৎ হাস. থুলিতে বুকের বাস, সমীরণ সহ করে কেলি 1 छनि উथिलिट्ड श्रान, পাথীতে ধারছে তান. প্রন মাতিয়া ফিরে ঘুরে। হেনকালে রাজস্বত, . • মহা কুতৃহলযুত, नांबीशर्भ स्मिथिरमन पृरव ॥ **ণীরেতে নিকটে গিয়ে.** তৰুপাশে দাডাইয়ে. কৌতৃকে দেখেন মহামতি।

আদি নানাজাতি ফুল,

ঢাকিয়াছে ধরান্তস,

শেফালি বকুলকুল,

তৃণ-শৈবালের দল.

শোভে উভে কদম্ব-সংহতি॥

লতিকা-বেষ্টিত চারিপাশ।

দর্গার ফুলের মালা, বাহুতে ফুলের বালা, হদিপরে ফুলময় বাস। াকলি ফুলের সৃষ্টি, मना इब क्ल-वृष्टि, চারিদিকে ফুলে ঢাকা রয়। ক্ষমতক্র মূলে. मांबारमा कमल-कृरण. ফুলবেদিপরে বসি রয়॥ वक्षान व्यक्षनि कति. ফুলে রাথে শিরোপরি, কভু হলে করয়ে স্থাপন। नंबरन एउ पाळ वरत. স্নেহেতে আদর করে. কত ভাবে করিছে বতন। বৃসি রুহে মনোছুথে, इंद्र करन मूर्थ मूर्थ, जमा इम्र भूष्प-विविधन। মিলানে বীণার তান. থেদ-হুরে করে গান, ভানিরা বিভেদ হয় মন॥ भावी-कीखि मत्नाहत. नित्रविद्या वीद्रवद्र, निकारे (शालन युवदाका দাড়ায়ে বিনীত ভাষে, कब्रुश्राते (मरी-भारम. মৃত্ৰুবে চান পরিচয়। নির্থিয়া চমকিয়া. গানেতে বিশ্রাম দিয়া. নারীগণ উঠে যেতে চায়। জনেক মিনতি করি. বুঝায়ে অনেক করি, নারীগণে বসাইলা রায়॥ অভুৱোধ-ডোরে বাধা. विभना नाशिन शौधा. রমণীমগুলী পড়ে গোলে। "अन তবে मिश्रा मन,' ক্ষিত্ব পরে কোন জন. ব'লে আরম্ভিল মধুবোলে। "বৃক্ণতনয়া পাতালে ধাম। ভগিনীক'জনাভনহ নাম ॥ মুকুতা-বিলাসী রতন-কান্তি। তরঙ্গ-বাহিনী নয়ন-ভ্রান্তি॥ প্রবালমালিনী ক'লনা এই। निनीनधना छिप्ट सिर्धे ॥ সাগরে সাগরে জমণ করি। মাণিক মুকুতা দেখিলে ধরি॥ **এই উপবনে আসিয়া বসি।** শ্রম নাশি পুন: সাগরে পশি 🛭 আগে ছিন্তু সবে শত সোদরা। গিয়াছে সকলি আছি আমরা॥ শাপেতে পঞ্জিয়া গিরাছে ভারা। আঁথিভারা মোরা হয়েছি হারা #

হ'লো বছদিন প্রভাতকালে। मक्ल अभिन्न क्रमिश-क्ला॥ সারাদিন কলে ধরিত্ব মণি। ভান্ন অন্ত ধান আন্সেরজনী॥ দেখিয়া তপন-মর্ডি শোভা। আমরাকজনে হইছ লোভা॥ ধরিব বলিয়া বাইফু পাছে। ষত দুয়ে যাই না পাই কাছে॥ ক্রমশঃ নামিছে দেখিতে পাই। না পাবি ধরিতে কতই যাই॥ প'ডে আই ফেরে পোহায় রাতি। পাতালপুরেতে না জলে বাতি॥ আমাদের কাছে আছিল মণি। चाँशाद्र मकरण यारल बन्ती॥ পরদিন প্রাতে সরোধ মন। পিতৃশাপে ষবে হ'ল নিধন ! ক্রোধেতে কহেন, 'আমারে হেণা। আর না সলিলে করিবি থেলা 8 ষে রবির তরে ভূলিলি বাপে। নিমন্ত দহিবি ভাহার তাপে॥ भूष्पत्तरम त्रवि धत्रनीभद्र । নিয়ত পুড়িবি প্রথর করে॥' কত বে সাধিত ধরিয়া পায়। করুণা-উদয় না হ'লো ভাষ॥ কুমারী আছিত আমরাক'জন। তাই সে জীবনে আছি এখন। তাই উবাকালে আসি এথানে। ফুল কেলি সবে করি বতনে॥ ৰিতীয় প্ৰহর সময়ে তাই। তক্মুলে আধি জলে ভিজাই॥ **जाहे (म প্রদোধে তুলিয়া বনে।** क्रम थुरत्र कुन काँनि क'स्नान ॥ প্ৰহর ৰাড়িছে জাসি এখন।" বলি লুকাইল নারী কজন॥ ৰ্যাকুলিভ ন নুপতি-নন্দন, চলিল সমুক্তটে। অভি কুলক্ষণ, অবপূৰ্বৰ ঘটনা ঘটে॥

ক্রিয়া বেট

নারী হয় পন,

किश्वां गरु गर्, শিরে ধাক্ধাক্, चूठिल खनन, জ্ঞলিছে রন্তন-মণি॥ হইল ষধন ভোর। পুছ প্রদারিয়া, উঠিয়া বলিয়া, চেতনা পাইয়া, इरे मिटक इरे नारग। नात्री कत्र व्यत्न कत्र। "তুমি মহাশয়, দতেকে দাড়ায়ে. ফণা প্রসারিয়ে, **অতি দরামর,** :ছলিছে ফুলিছে রাগে। মহ্ব্য বুঝি বানয়॥ থেলিছে তেমন, চপলা বেমন, না হ'লে কেমনে, मॅलिल बोवत्न, স্তীক্ষ রসনা পাতা। বদেহ অকুতোভয়ে। **ब्रह्म वन,** নাসিকা-প্ৰন্ করুণা করিলে. প্রাণদান দিলে, ডাকিছে বেমন জাঁতা ▮ বিনা স্বার্থপর হ'রে॥ শোষিতেছে আয়ু, বিষময় বায়ু, ष्पर्ट नत्रवत्र, বল অতঃপর পতিতা ফণার তলে। কেমনে তুষিব মন। मृषिष्ठ-नश्रना, কিবা উপকার, नात्री क्य बना. ক্রিব ভোমার, ভাগিছে জলধি-জলে। मिव किवा धन अन **॥**" ণেক অতীত, ষম্বপি হইড. একবারে [থেতো প্রাণ। ভূমি বীরবর কন. শতি-নন্দন, ल'रत्र नंत्रामन, पिटव किया धन कन, গুণেতে জাঁটিল বাণ 🛭 জগতের স্থ-নীরে সম্ভরণ কোরেছি। नित्रथि नित्रथि. পেরেছি সম্পদ-রস, য়া ডানি আঁথি. সতেকে নিকেপে তীর। শিরেতে ধরেছি যশ, গোর্জ-ভিতরে. ফণা ভেদ করে, प्पर-त्राम भाग कति भूरथ कान शरति ॥ অহিযুগে মারে বীর॥ भिटिष्ट मरस्राध-माध, অসি শরাসন, াজিয়ে তথন, অপ্যশ অপ্যাদ, देवत-विक्षान-भारम এरव वांधा शास्त्रिक् । বাঁপ দিয়া পড়ে নীরে। আনে করে করি. (थरक वीर्य) वाह्वन, हि-एम् ध्रि, টানিয়া ভূলিল তীরে। ভাগ্যদোষে অসম্বল, ল'য়ে থান থান. • রে অসিথান, হ'য়ে শৈলশৃক্ষচাপা সিংহ্মত রয়েছি।[»] করিরা কুগুন কাটে। প্রতি-উপকার মন, নুপ-অব্জয়, विन देकन जामांगन, চেতৰ তত্ত্ব, **পুলে নিল পাটে পাটে**। বিধাচ্ছেদ করি তবে চিস্তাভার নাশহ। ा शीत्रि शौवि. রাথে সারি সারি, কোন্ দিকে কোন্ পুর, ক'থানি রঞ্জত-দেহ। কান্তকুজ কত দ্র, क' मिर्मित भथ हर्ति मरिर्टम्य रमह ॥ থ সেই কায়া. প্রাণে ধরে মায়া. ना कांकि ना त्रदर कर । বদি জান"বল আর, হেমলভা নাম তার, তুলে আনি জল, ৰ ছল ছল. ঢালে শিরে বীরবর। (महे नाती कान् जाद्य कात्र काट्य ब्रह्माइ कि कदत्र दम त्राजिनिया, লে সিঞ্চিত, পুষ্প স্থাসিত, প্ৰাণে বাঁচি আছে কিবা, রাখিল চেতনাকর। শোক-চিতানলে পুড়ে তহুত্যার করেছে। रचरत्र कष्ठेश्न, व स्मार्ग. বৃহিল দে দ্নভোর। সে নারী আমার প্রিয়া,

তারে হ'রে ল'রে গিয়া. महे ভাবে इंडे त्रिश्र मःरशांश्यम द्रिरश्रह । যদি তারে কোন জন. ক'রে থাক দরশন, বল তবে প্রেরসীর কিবা দশা হয়েছে ৷ অঞ্পাতে হুই আঁখি, গেছে কিংবা আছে বাকি. কিংবা প্রিয়া অভাগারে একেবারে ভূলেছে। অস্থিমাংস ঠাঁই ঠাঁই, এখনো কি হয় নাই. अस्ता कि (अष्ट्रवर्ण ध्वाधारम तरत्रह ॥ করিয়া পাঠানরাজ, ্রেস্ত দম্যার কাজ. এখনো কি যম-হন্তে পরিত্রাণ পেরেছে ? মাগোও মাজমভূমি। আবো কত কাল তুমি, এ বয়দে পরাধীন হ'য়ে কাল যাপিবে। বল আর কত কাল, रावान वयनमन. নির্দ্য নিষ্ঠর মনে নিপীড়ন করিবে॥ কতই ঘুমাবে মা গো, कारमा या कारमा कारमा, কেঁদে সারা হয় দেখ কক্সা-পুত্র সকলে। ধুলার ধুদর কায় ভূমে গডাগডি ধার, একবার কোলে কর, ডাকি মা মা ব'লে। কাহার জননী হ'যে, কারে আছ কোলে ল'য়ে, খীয় স্থতে ঠেলে ফেলে কার স্থতে পালিছ। ণারে ছগ্ধ কর দান, ও নহে তব সন্তান, हुध किएम गृह-भारत कानमर्भ भूविछ ॥ त्याद्य मिल वनवांत्र, প্রিয়া আছে কার পাশ, হার কত পীড়া পাও, হে স্থাংশু-বদনে! (कांशा रामा (कांशा गांध, কিবা পথ কিবা থাও, হায় পুন: কতদিমে,জুড়াইব নয়নে॥" বিশ্বিত রমণীদল দেথিয়া ভনিয়া। किक्षिर विनास करह स्वत्रित रहेना॥ 'কামিনী লাগিয়া তব কামনা পুরাব। হেম্বতা অৱেষণে পৃথিবী বেড়াব ।। ब्द्रम ७विनी-७वे इम मद्यावत्र। सद्भाग निक्श मार्क, मक महीधव ॥

প্রাতঃ, সন্ধ্যা, নিশা, উষা, মধ্যাহ্ন সমন্ত্র । ভ্ৰমিব খুঁজিয়া তাঁৱে জানিহ নিশ্চয় ৷ নিরুদ্বেগে বীরবর থাক এই বনে। ' ত্রায় আসিব ফিরে ভাবিছ নামনে॥ চলিলাম বীর তব নারী অন্থেষণে। মৃদ্রল-বারতা আনি জ্বডাব প্রবণে u হেরিব কেমন তিনি থার সামী তুমি। বুঝি বাতেমন আর ধরেনাকো ভূমি॥ কেন ভাব যুবরাজ যুবতী লাগিয়া। কামনা প্রাব তব কামিনী আনিয়া।" বলিয়া চলিয়া গেল কুমারীর দল। নুপতি-নন্দন গেলা যথা বনস্থল। একা বীরবর রহিলেন সেই বনে। পূৰ্ব্যকথা সমূদায় উথলিল মনে ! মানদে মগন. নুপতি নন্দন, হেবিয়া জনমস্থল। शौति शौति शौति. नमः अमः शिवि. (मथा पिन मरन मन ॥ ষে শিখরে বনে. মুগয়া কারণে, ব্দসূচর সনে গেলা। যে তটিনী কুলে, যে তকর তলে বসিয়া কাটিয়া বেলা॥ যে তড়াগ-জলে, বয়স্ত্রের দলে ল'য়ে করেছিলা কেলি। ষত স্বেহাম্পদ. প্রিয়া প্রেমাম্পদ উঠিয়া একতা মিলি॥ ক্লেবীর তত, রাণী চক্রমাঙ বধুকোলে দেখা দিলা। खित्र मधीनन ভগ্নীপরিজ্বন. শ্বতিপথে আরোহিলা॥ প্রেম-অঞ্ধারা, ভিতি নেত্রতারা, गर्छरम्य दहि পডে। নুপতি-তন্ত্র, তাপিত প্রদয়. কাঁদে যত মনে পড়ে॥ পিতা নরপাল. (कन এ वक्षाः আমি এ কান্ধান বেশ। ষথা তথা ঠাই ভ্ৰমিয়া বেড়াই, পডিয়া থাকি বিদেশ 1 ध कि हमदकांत्र, काथा ग्रह्या द्यांथा जागि वनवानी।

পড়িল ॥

त्म निकुक्षवरनः প্রমোদ-কাননে, বুথা মুজে পুষ্পরাশি॥ বৰা গুলে অলি. পিক কলকলি, বুখামনদামিল বয়। বৰণ শিথিবয়, প্ৰদোষ সময়, বকুলতলায় রয়॥ বুথা বারিপরে. কুমুদ বিহরে. ইঙ্গিতে নেহারে শণী। বথা ধরাতল, হন সুণীতল. নীহারের বদে রসি॥ বপা কেতকিনী, হ'রে পাগলিনী, মাতায় বিপিনবাসী। তক আলিকিতা. বৃক্ষ ভক্ৰতা. ঢলিয়া পড়য়ে হাসি॥ কোথা সে আমার. এই সব যার. পুন: कि সে জনে পাব। এ অমা ঘ্চিকে. সে শশী উঠিবে. পুন: কি দে সুধা খাব । বলিয়া কাঁপিয়া ভাপিত-হ্রদয় শিখর উপবে উঠিল। ত্তগৎ যুড়িয়া এমন সময়ে. নিবিড আধার ঢাকিল। ক্রমশ স্বিয়া সাগ্র-ভিত্তে, ম্লিন তপন ভবিল। দেখিতে দেখিতে গগন মাঝেতে, রজনী ভ্রণ পুলকিত দেহে বীরচুডামণি, বিষম চিন্তায় পভিল।

বেন ভূমণ্ডল অনল-শিথায়, চলাচল সহ দহিছে।
উনপঞ্চাশং পবন বেমন. তাহাব সহিত বহিছে।
ধশ-দিক্পাল নিজ্ঞাণ সন্দে, উৰ্দ্ধ্য সবে ছুটছে।
পেচব ভূচের জলচর আদি. হতাশ অভরে হাকিছে।
বেণ্মর ধরা বারি বাযু বেণু, বেণু বেণু হ'রে উড়িছে।
চরাচর প্রে হাহাকাব ধ্বনি, শুধু শ্নঃশ্ন: উঠিছে।
বেই স্কভ্ক শিথা প্রশন্দেশ এলায়িভ-কেশে

ভাবিতে ভাবিতে সকল ভূলিয়া অপর্কা-ম্বপন

দাড়ারে।
নবীনা কামিনী যেন পাগলিনী, রহে ভূজর্গ জড়ারে॥
অঞ্পূর্ণ আঁথি দেই পাগলিনী, শিশু এক করে
বিরল্পী

^{পর বংশধরে}, পুত্র কোলে কর, বলি যেন দিল ফেলিরা॥ বলি বহিংগর্ভে প্রবেশিল রামা, বীরেন্দ্র বিশদ গণিল। ভাজি দীর্ঘধান হার বে অদুষ্ট বলিয়া, ঢলিয়া

প্রসারিত কর পদ অধোডাগে শির। শিথর হইতে নীচে পড়ি গেলা বীর ॥ অভ্ৰভেদী গিরিচ্ছা দৃষ্টি-অগোচর। নিমদেশে ভীমনাদে গৰ্জিছে সাগর। কেশাগ্ৰ পশিলে সেই অগাধ জীবনে। বস্থন্তবা বীরশক্ত হতো সেই ক্ষণে ॥ কিন্ত ভাগ্যবলে সেই দণ্ডে সেই স্থানে। অকথাৎ দেখা দিল নারী ছয় জনে। দেখিল স্থানর রূপ নব এক জন। প্রনবেগেতে শুক্তে হতেছে প্রভন ॥ হেরিয়া সদয়-মনে কয় জনে মেলি। ক্রোড পাতি বসিয়া রহিল উকু ফেলি 🛭 নিমেষ-ভিতরে সেই নারী-উক্লেশে। অচেতন দেহথানি প্রবেশিলা এলে। নিঃসাড শরীর সেই মুদিত নয়ন। বদন নেহারি চমকিত রামাগণ 🛭 নয়নে নরনে বাঁধা রতে পরস্পর। গও বহি অঞাবারি বহে নিবল্পর ॥ পশ্চাতে চিনিতে পারি করে হায় হায় ৷ বলে মরি এ কি হেরি মরি এ কি দার। কমল লাঞ্চন কবে কমল তলিয়া। নীবদ কমল আত্যে ধীরেতে দেঁচিয়া !! কমল-আসন হ'তে তুলি ছ'টি পাতা। তাহাতে সংলগ্ন কৈল ছ'টি বাহলতা। বেন মহাৰ্বিশালী মহাবিষ্ণু পাশে। ছয় লক্ষীমৃত্যক ব্যক্তন বিজ্ঞালে ॥ দণ্ড ছই গত পবে জাগিল চেতন। উন্মীলিত নেত্রে বীর করে নিরীক্ষণ। স্থপন দর্শন প্রায় দেখে সারি সারি। বিমল গগনে ভাসে স্বধাংশু-লহরী ॥ কথন ভাবেন ছয় অচলা চপলা। একত্রেভে বৃদ্ধি যেন করিতেছে থেলা॥ কভু ভাবে ধেন বিধি বিরলে বসিয়া। নিজ মনোরমা রামা স্থান করিয়া॥ না হইয়া তপ্তমন দেয় বিসৰ্জ্জন। পুনর্কার নরনারী করেন স্ঞ্জন ॥

ৰিচিত্ৰ ভাবিশ্বা শেষে উঠিয়া বসিল।

দেখিয়া মোহিনীগণ প্রফুল হইল। জ্ঞানের অকুর হেরি মিলাইয়া তান। বীণাবন্ত করে ধরি আরম্ভিল গান। এমনি মধুর স্রোত তাহাতে বহিল। শুনি রীণাপাণি দেবী অন্তরে মোহিল। মনোলাসে বাগীখরী তাজিয়া খরপ। আবিভূতা হইলেন ধরি বাক্যরূপ॥ কবি-কর্তে তাই দেবী করেন নিবাস। বাগীৰবী নাম তাই ভূবনে প্ৰকাশ । অমর-মোহন সেই ওনি বীণাবাণী। বীরবার পুনর্কার লভিল পরাণী॥ . সহাস-বদনে. ক্ষল-আসনে. নুপত্তি-নন্দনে বসায়ে। অধরে প্রকাশি. মৃতুমৰ হাসি. পিকবর-ভাষ শুনায়ে॥ গলে গলে ध'रत्र. मधु मधु चटत्र, वरण नृशंवरत्र "(ख्व ना । আশার আধার, পেরেছি ভোমার. ঘুচাৰ এবার যাতনা ॥ হেরিলাম ভূপ, অপরপ রূপ কামিনী। যামিনী গভীরে, ভাগীরথী-ভীরে. দাড়ায়ে মন্দিরে মোহিনী। (वर्ष कार्डामिनौ. রূপে রাজরাণী. গোময়ে দামিনী থেমনি। विनीर्श विभना. আফুল-লোচনা, বিষোগ-বাসনা-কারিণী। শিশু শশধর, অতি মনোহর, হৃদয়-উপরে রাথিয়া। পলাতে বাসনা. দেখেছি ললনা চাহিয়া। (यन वा मन्दन, (ह्दा रुत्र मत्न, হৃদয়ে যতকে ধ্রিয়া। নির্থি নির্থি, बाम बिट्ड कांकि, ধাইছে চমকে ছুটিয়া॥ দাও হে সাকাৎ, वरन 'अरह नाथ, লহ তব দাধ আমারে। সহেনাকো আর, এ ৰাতনা-ভার. দিছ সমাচার ভোমারে॥

ওচে স্থারাশি. করণা প্রকাশি, মম তাপ নাশি যাও হে। আছেন ষেথানে. আমার কারণে. তুমি সেইধানে ধাও হে। তাঁর অমুগতা, দাসী হেমলতা, হয়েছে অনাথা বলিও। বাধি কারাগারে, নিৰ্বান্ধৰ পুৱে, রিপু রাথে তাঁরে কহিও॥ তব বংশধরে, क्षमदार्ख श'दा. তব নাম ক'রে কাঁদিছে। অহে নিশাপতি. মম এ তুর্গতি. সদানুদিবারাতি জ্ঞালিছে। তাঁহারে ভাবিয়ে. আশা-পথ চেয়ে, মনেরে বুঝায়ে রেথেছি। বাসনা প্রাব, তনয় দেখাব. পরাণ জুড়াব ভেবেছি॥ তুমি হে ভ্ৰমণ কর হে ভূবন ব্যাপিয়া। তথাকর গতি যথামম পতি. মম এ হুৰ্গতি ভাবিয়া। বসি অক্ত যার শৃক্ষোপরে আর, মিনতি সবার চরণে। ককণা করিয়া. সমাচার দিয়া সঙ্গে আন গিয়াসে জনে॥ সঞ্মনতঃধে এই কথামূধে, ধীরে অধোম্থে কাঁদিছে। नौरलां ९ भनमन. উথলিয়াজল বহিছে ॥ হেরিত্থ বাহায় এই দেখ রায়-কাজ কি কথায় শুনিয়ে। দেখে মেই রগ অপরপ রূপ, আনিলাম ভূপ আঁকিরে॥ কুমারী সকলে এই কথা ব'লে, কোলে দিল ফেলে তুলিয়ে ৷ চন্দি বাদংবার নির্পি কুমার, হাদর উপর ধরিল। यात्र श्रहांकित (यन कैं। कि मिरम, কারে লুকাইরে রাখিল। िख अटम थें। मध इंडे भरत्र, কুমান্ত্রীগণেরে বলিল।

"চলসেই স্থানে. জড়াইৰ প্ৰাণে. पिथिव क्याम में हिल ॥" অপরপ রূপ ছটা. প্রচারি প্রচর ঘটা. নবরদে নৃপত্তি-নন্দনে স্থাথ ভূলাইয়ে। পরাইতে মনোরথে, **চ**िल्ला ज्लिशिश्रः অঞ্চলে বাদাম তুলি বায়ভৱে তুলায়ে॥ তডিতের আভা সম. শোভা ধরি অকুপম. উত্তরিল তডিতের বেগে গঙ্গা-পুলিনে। স্টি স্থাতির শোভা নানাবিধ মনোলোভা, দেখে নব নব ভাব প্রমৃদিত নয়নে॥ নাৰ পুক্ষ ৰাৱী, নতন ভ্ৰণ তারি. ন্তন বদন ধর গিরি গুহা কানন। তাহে নব দাকদাম. তাহে পুষ্প অভিৱাম. তাহে ফল সুরসাল অপরূপ ঘটন। । प्रवनशैन वन्तर, नव मीवि नव इन. নব পাথী ডালে বসি নব তান উগারে। গৰে নতন তারা. নুত্ৰ নুত্ৰ ধারা, দেখে দশদিকময় নাহি পায় বিচারে॥ বভাবে দ্রবীভত, হ'মে হিন্দ-রাজস্তত্ত মেচত অধিকারে আসি দিল্লীপুরী লভিল। গার উত্তর তীবে. প্রশি গঙ্গার নীতে. দিল্লীশ্ব-অটালিকা শোভা করে দেখিল। বৰ্ণ-থচিত কেত্ত. যেন স্থবর্ণের কেত. তত্বপরি সারি সারি শশিকলা-প্রতিমা। ার অধ্যেভাগে যত, মণি মৃক্তামরকত, ছলিয়া ছাদের ধারে, প্রকাশিছে গরিমা॥ ট প্রাসাদের ধারে. দাড়াইয়া একধারে. সম্মথের স্থবর্ণের আবরণ খুলিয়া। লালবিগতপ্রাণা, দাডাইয়া এক জনা. বিষ্ঠ বিমনা ভাবে বাত্পরে হেলিয়া ॥ आंक्टिक म्द्रन्त. অনিমেষ তুনয়ন, निवर्गाध प्राथमित । **গ্ৰত শশধ্যে**, যেন বিলোকন করে. বিমৃদিত ইন্দীবর জলাশয়ে ভূবিছে। দককে সুপ্ৰকাশ, কুমার সদশভাস. স্কুমার মনোহর শিশু কোলে খেলিছে। াৰা জননী-গলে. আধ বোলে মামাব'লে মার মুথে মুথ দিয়ে করতালি তালিছে। বিয়া তনর দারা. প্রেমেতে বহিল ধারা, পুশকিত দেহে লোম কণ্টকিত হইল।

উদ্ধলে বিশাল আঁথি. উতলা পরাণ-পাণী. আ**লিফন অ**ভিলাষে বাত্যুগ **খু**লি॥ আনন্দে প্রফুলকার. দাড়াইলা যুবরায়. সাগর-তনমাগণে একে একে নামিল। এখন বিদায় চাই. শ্বরি ষেন দেখা পাই. **এই निर्दान के श्री**हत्रदम त्रहिल। 'তথান্ত্ৰ' বলিয়া তবে. वत्र मिला नात्री मटव. পরে রাজতনরেরে পদাদনে বসারে। প্ৰবাল মুকুতা চণি. অণে গাঁথি গুণি গুণি. সবে হাতে হাতে ধরি দিল সবে পরায়ে॥ দেবকরু ধর লও. পূৰ্মন্তাম হও. অবি দমি দারা-স্থতে উদ্ধারিয়া আনান্ত। সর জোগমন করি বস্তররা যশে ভরি. ক্তিয়কুলের নাম অকল্ফ কর্ছ॥ পুন: প্রণমিল রায়, দাগর-ছহিতা-পায়, নুপতিনন্দন গুণ বীণা তানে ধরিয়া। সেই সুমধুর স্বর. সমীরণে করি ভর. হেমলতা-শ্রুতিমলে প্রবেশিল আসিয়া। শুনি চমকিয়া ধনী, দেখে চেয়ে নুপম্পি. উर्দ्धम् अनी उटि (महे निटक (नहाँद्र)। হেরি বোমাঞ্চিত কায়. তকণী শিহরি তার, পাষাণ প্রতিমাসমারতে বাহ্য আংকাবে॥ কুমার উপায় ভাবে. কিনে দাবা হুত পাবে. ক্ষণেক ভাবিয়া শেষে বাজপথে চলিল। তেথা রামা সচেতন. না হেবিয়া প্রাণধন, বিস্ময়ে বিরস্ভাবে নিবাসনে ব্রিল ॥ জীবনসন্ধট তলে. একা বীববাল চলে. অমুবল নাহি অক্জন। হদয়ে নাহিক তাদ. বীরমদে মনোলাস. क्रिक जिल्हार व क्रव**भन** ॥ দেবতার বেশ ধরা. দেবমালা শিরে পরা. দেখে ভ্রমে দাডাইল দারী। "পাতশাব দবশন, • * করিবারে আগমন. এই ভেট ভেঙারে আমারি ॥" নকীৰ ফকারি ধায়. স্থলতান-স্মীপে দায় করপুটে সমাচাব কছে। "মল্যক আলমগীর. প্ৰীক্লপা এক বীর, সিংহলারে দাঁড়াইয়া রহে॥ রাজ-পরিচ্ছদ তাঁর. মণিমালা চমৎকার, কিরীট-সদৃশ শোভে শিরে।

প্রকাশিব বাছবল, পাঠাইব রসাভন অসি খজা স্থশাণিত, দটিভটে চলায়িত, অধর্মের ধন নাতি রয় ৷ পষ্ঠদেশ সজ্জিত তৃণীরে॥ শুন হে য্বনপতি. যদি চাহ দিবাগভি রাজকুলে অধিষ্ঠান. চাবে বঝি অনুমান. वौत-व्याणिकत्व ट्यार स्मारत । পডিয়াছে কোন বা বিপাকে। যদি কল্মত হট সভাসভাসতাকই. করিবারে আগমন. আপনার দর্শন. এই খজো নিপাতিব তোরে॥ ' নিবেদিতে কহিল আমাকে॥" আমার শরণ লং যদি কাপুক্ৰ হও, "কর জীরে আনমূন. ভনি পাতশাহ কন. ্রাজকন্তা কর পরিহার। বঝিব সে ফেরে বা কি ফেরে।" তাজ অসি শ্বাসন नकौव कित्रिश शंह. তাজ রাজিদিংহাসন. দ্ৰলভান-আদেশ পায়. বীরবরে আনে দলে ক'রে॥ লোকালয়ে থাকিও না আর ॥" নেহারিয়া আলমগীর. বলি কৈলা নিছাশন. ऋर्यामीश्र मत्रभग দহাতেকা মহাবীর. বসিবারে ইন্দিত করিল। শাণিত কুপাণ কবতলে। আ'নি স্বৰ্ণ-সিংহাসন. এরাবতে করি ভা বঝি অফচরগণ, (यन (पर श्रुवस्त्र, অশনি নিকেপে ধরাতলে। বীরবান্ত-পশ্চাতে রাখিল। কান্ত হৈল ভীম নাদ. শক্তগণে পরমাণ ক্রোধ করি সংবরণ, নাপরণি সে আসন. ব্যঙ্গভাবে দর্প করি কন। 106353 ভাবে কে আইল ছন্নবেশে। 'ভন মেচছ-অধিরাজ, আসনে নাহিক কাজ. সময়ে দৈবের বশ. বিনারণে অপ্য এই মত কবিয়াছি পণ॥ বিস্তর চিমিয়া কছে শেষে॥ না করিব উপার্জন. অন্তরে কম্পিত ডরে. বাহে আকালন ক রাণ জয় যতকাণ, वरम "दि वर्क्षत्र स्मान वानी। ততক্ষণ আবাসন নালব। দিগন্ত ভ্রমণ করি. করিতে পাবি রে গ এই দৃঢ ব্রত ধরি, মৃহত্তে কাটিয়া মৃত্ত. কেবল লোকের লাজ মানি॥ জিনিয়াছি রাজপুত্র সব॥ ক্ষত্ৰংশ-মহাকাল, কেবা পিতা কোথা বাস, জাতি বৃত্তি অপ্রকা তমি মেছ-মহীপাল, রাখি, রণ নাগিলি আসিয়া। পথিবী পুরিয়া তব যশ। কাঁদিত অমুর নরে, তোবে রে করিলে নাশ. নাহইবে ধর্ম ই ষেই বীরবাত্-ডরে, বরং পুণ্য পাপী বিনাশিয়া॥ তারে রণে করিয়াছ বশ। তার নাকি রূপ ভারী, কিছ রূপে নিলে কান্ত. কুষশ হবে এক ধরিয়াছ তার নারী. বিপক্ষ হাসিবে সর্বাক্ষণ। পরস্পর এই কথা জানি। আসিয়াছি রণ-আশে, শ্বজাতি-গৌরব নাবে. হিন্দুক্ল শোভা পা আলমগীর তব পালে. আপনারে ধন্ত করি মানি॥ আস্পদ্ধা করিবে চুইজন। রণে জ্বিনে লব তারি, ভেটিব রে ককা সেই নিক্পমা নারী. অতএব তোর সনে. (ववा क'म इन्नरवन्धाती। शति विक नाती पित। সমতুল্য সহ রণ. শমন-ভবনে গ সমচিত ফল পাবি. কক-যুদ্ধে মম পণ্ড 🔭 তথা পাবি মনোমত নারী ॥" অকুজনে কড়ুনা ভেটিব। যদি থাকে মান ভয়. যম্মপি দাহদ হয়, विन छक्त मिन वांत्र, **डेकी**त चारमर्भ ग রাজপুত্রে দিল বাসস্থান। আশু রূপে ভেটহ আমারে। वहरमम रममाञ्जत, খুষিল এ সম यम शर्म (मह द्रांत्र, নতবা আনিয়া ভায়. জানিল সমূহ রাজস্থান॥ অপয়শ স্থিবে সংসারে ॥ क्निन्-(अ**फ-रा**व জান ত চোরা রাজন্. নানারূপ-গুণযুত, সে ত চরি করাধন, मिल्लीशास्य चानि दम्या निम्। চোরা ধন বাটপাড়ে লয়।

गारक পূर्व ज्ञांसधानी. **पिवानि** वाक्थविन. কোলাহলে নগার পুরিল। ক্রোবে যুড়ি রণ্ডমি হইল নির্মাণ। চারিদিকে উচ্চ মঞ্চ **বসিবার** স্থান ॥ खबरक खबरक ब्राइ माम्बद विधान। পৃথক্ পৃথক্ ভাগে হিন্দু মুদলমান ॥ লোহ-ধাতুমর মঞ্চ স্থবর্ণে মণ্ডিত। রতন ঝালর তাহে করে চমকিত ▮ বক্ষ-চন্দ্রাতপ-ছটা মন্তক-উপরে। তাহে মণি-মরকত ঝলমল করে॥ অমৃশ্য বসন দেহে তাবণে কুওল। হিন্দু-মেচ্ছ-রাজগণ মণ্ডলে মণ্ডল॥ মস্তকে মুকুটশ্রেণী ভারকার মাল!। কটিদেশে কটিবদ্ধে কুপাণ উজ্লা ॥ ত্রিকোটি দেবতা যেন লক্ষেশ সভার। স্বাহনে সজ্জীভূত হ'রে শোভা পায়॥ রণভ্মি-শি**রোভা**গে বিচিত্র কা**ণ্ডা**ব। গাহার ভিভরে রহে বমণী-ভাণ্ডার॥ (एटवक्ट-खबरन रचन एएव विवासिनी। সেইরূপ শোভা পায় যত বিনোদিনী॥ কাণ্ডারের বহিন্ডাগে রণভূমি-স্থলে। স্বতন্ত্র সোনার মঞ্চধক্ ধক্ জলে। ধানমুখী নারী এক তাহার উপরে। করেতে কপোল রাখি ভাবিছে কাতরে॥ ষেন স্বধাহীন শনী থসে ভূমিতলে। ষেন সীতা রাবণের রথে কাঁদি চলে। এই ভাবে বছবিধ জন-সমাবেশ। पृष्टे निरक प्रमुख्धिश्वनि इत्र र्थश ॥ সাজ রে সাজ রে করে বাজে ভেরী তুরী। অমনি প্রহরীদন দাড়াইল ভুরি । উত্তর দক্ষিণে শেষে প্রচণ্ড কিরণ। ছই স্থ্য সম দৌতে দিল দরশন ॥ শিরোদেশে শিরস্থাণ করে করবাল। বামে বর্ম পুটে তূপ ভল্ল স্থবিশাল ॥ সিংহের গ**র্জনে** দোহে ছাড়ে সিংহনাদ। কেশরী কুঞ্জরে ধেন খোর বিসংবাদ। ওনি চমকিয়া লোকে সবিশ্বয়ে চায়। ভবে হেমলতা-তমু শুকাইয়া যায়॥ নাপড়ে চক্ষের পাতাঘন বহে খাস। কি হবে কপালে ভাবি মনে গণে আস ॥

হেনকালে ছছফারে করি আকালন। সমরে মাতিল দোহে ভীম-দরশন ॥ विरुद्ध ब्रह्म, রণতরকে. चन रचात्र त्रव करत्र रत्र। **४**द्रशे कन्न. করিছে ঝম্প, कवान क्रभान भरत (त्र॥ যেন কুড়ান্ত. করিতে অস্ত, শ্লপাণি শ্ল ধরে রে। ঘুরাইয়া থাওা, বেন চাম্তা, রক্তবীলাম্বরে মারে বে। কাপায়ে বর্ম, অসি খন খন ফেলে রে। করিয়ালকা. অরাতি-বক্ষ. দৌহে দৌহারে ঘেরে রে॥ অন্ত্র সাপটে, ভীম দাপটে, অসি স্বন্সন্করে রে। বহ্নি ধমকে, থজা ঝলকে. ভূমি টলমল টলে রে॥ কোপে কম্পিত, অসি উথিত. করি বীরবাছ ঝাঁপে রে। যবন-মুগু, ভূমিতলে স্থানি পাডে রে॥ পরমাননে. সাধু সাধু সাধু বলে রে। কাঁপায়ে সিন্ধু, रुत्रिष्य हिन्तु, 🕆 ক্ষধবাত করি চলে রে u

ক্ষবাত করি চলে রে ॥
কাটিয়া ববনম্থ ডাকি উচ্চৈ: খরে।
ববনভূপালবুন্দে সংঘাধন ক'রে॥
কহিলেন বীরবাছ মহাবীর দাপে।
কেশরি গর্জনে যেন মহারণ্য কাঁপে।
"আরে রে নিষ্ঠর জাতি পাষও বর্ষার।
প্রাব ঘবন-রক্ষে শমন-বর্পর॥
সাক্ষাতে হেবিলি কার কৃত বাছবল।
এবে রে ঘবনরাজ্য গেল রসাতল॥
করতল দিলীপুরী করেছি বে আজি।
আারা দেশাইব শীভ অসিভন্তনবাজী॥
আমি রে ক্রিরপুত্র নহি রে ববন।
পালিব ক্রিরধর্ম রাধি নিজ পণ॥
বিহারা উদ্ধার মেছবাজ্য ভ্রমণাৎ।
অথবা সংগ্রামে দেহ করিব নিপাত ॥

এই থে করেছি সত্য কতৃ না ছাড়িব। मन्दल मञ्जूथ-द्रदेश भूनक माह्निय ॥ ষত দিন ফ্লেছহীন না হইবে দেশ। তত দিন না ছাড়িব সংগ্রামের বেশ॥ না ভেটিব হেমলতা না হেরিব স্থতে। মেছনাম যত দিন জাগিবে ভারতে ॥" বলি রুধিরাক্ত অসি ফিরায়ে শিরেতে। হিন্দু-নরপালগণ কহেন ক্রোধেতে॥ থিক ক্ষত্রকুলে ধিক হিন্দুরাজ্বগণ ! একেবারে বীর্য্যবলে দিলে বিসর্জ্জন ? জগৎবিখ্যাত কলে জন্মিয়া ভারতে। সমর্পিলে রাজাদেশ বিপক্ষ-করেতে গ नातित्व विधिर्मिशत् त्रत् भताकित्छ। বুথায় মানব জন্ম লাগিলে হরিতে। थाटक यनि वीर्यावन माझ टर ममदा। হের ছষ্ট শ্লেজ্যল আক্ষালন করে॥ পূৰ্বকালে মহীতলে ক্ষব্রিয়-মণ্ডল। প্রচণ্ড প্রতাপে রিপ কৈল করতল। সেই চদ্রুস্থ্যবংশ-অবতংস হ'য়ে। শাস্তভাবে যাপ কাল বৈরি দও ল'রে॥ কেন তবে কুফুকেত্রে কর তীর্থ জ্ঞান। কেন তবে নিজধর্মে কর অভিমান ॥ কেন পর অসি চর্ম বর্ম শিরস্তাণ ? তৃণ, ধহু, বীরধটি কেন পরিধান ? ষ্দি এ ৰগতে যশ চাহ চিরকাল। ষদি চাহ এডাইতে বিপক্ষ-জন্তাল ॥ ষ্দি অকণ্টকে চাহ ভুঞ্জিবারে রাজ। এদ হে সমরে সাজি রিপুজয়-সাজ। এস রাখি রাজাদেশ শাসি ধরাতল। (सथ (**ठ**रत्र ब्रगरवण विश्वत्कत्र सल ॥" कुशिन व्यनम्म. তে শ্লেছ-মহীপাল. মারিবারে বিপক্ষেরে ক্রোধভরে চলিল। দেখি হিন্দুরাজগণ, ় হ'বে ক্রোধান্বিত মন, মহাক্রোধে রিপুদল সম্রেতে ভেটিল। কাঁপিল ধর্ণীতল, विन नमद्रानन. একেবারে শত শ্র সমরেতে মাতিল। বামুকি টলিল আদে, সংহ্নাদ ধ্মুর্ঘোষে, অসি ভব্ন বাণ থড়ের নভোদেশ ঢাকিল। ধার অন্ত অগণন. চর্কর দরশন, ভীষণ শ্বশান-সজ্জা রণভূমি সাজিল।

কাটা মুগু কাটা করু कोठा भन काठी ४%. গভীর শোণিত-মোতে শত শত ভাসিল। কেহ করে হাহাকার. কেহ করে মার মার. ভীম শব্দ কোলাহল স্বৰ্গ মন্ত্য পুৱিল। হয়া রবে ডাকে শিবা, বায়দের উর্দ্ধ গ্রীবা. ভয়ক্ষর রণভূমি ঘোররূপে ঘেরিল ॥ কৃধিরে বহিল ফেনা, মাতিল শমন সেনা, উৰ্দ্ধভাগে বিকট গৃধিনীদল উড়িল। ছই পক্ষ বীরগণ. বাজিল তমূল রণ. মরি বাঁচি পণ করি যুঝিবারে লাগিল। হারিল ধ্বন-দল, হিন্দুপকে কোলাহল, বিজয়-ছঙ্কার নাদে চরাচব পরিল। করি হিন্দুর|জ জঃ, রণে রিপু পরাজয়. বীরবাছ সঙ্গে আসি আলিঙ্গন করিল। দৰ্বজনে সম্বোধিয়ে. निक शतिष्ठ मिए। অতঃপর বীরবর আদি অন্ত কহিল। মহাআাননিত্মন তথন ভূপতিগণ, দিল্লীরাজ-সিংহাসনে এভিষেক করিল। যথাবিধি উপচারে. সভোষিয়া স্বাকারে সমূহ ভূপালে ভেট নানাবিধ ভেটিল। বিদায় লইয়া রায়, মহিধী-নিকটে ধাঃ বিরস-বিধুরা বামা নিরাসনে হেরিল। कांपिएय एम विटनांपिनी. धत्री नृष्टोत्य धन প্রাণেশ্বর-পদতলে কর যুড়ি নমিল। ञ्चनस्य जनस्य धनि সাদর সভাষ করি. পুলকিত-দেহে বীর প্রমদারে তুলিল। কাদিয়া তথন, হেমলতা কন প্রেমে গদগদ বাণী। ওহে প্রাণনাগ আৰি সুপ্ৰভাত, পুন: দেহে এল প্রাণী॥ তিরোহিত করি অসুথ-শর্করী, সুথ-প্রভাকর চায়। হৃদয়-ভিতরে. পরাণে কি করে ব্যাতে নারি হে রায়॥ এ বোড়শ মাস. ছিল অপ্রকাশ আজি হেরি দিনমণি। चहे (१४ ८५८५. সরোবর ছের্মে বিক্সিত ক্মলিনী॥ षहे छनि नाप আৰু অকন্মাৎ, কৈকিল ঝন্ধার করে।

গ লি ধ্রাতলৈ,	নির্থি মপরপ শোভাধরে॥	मकरम,
ত কল্য প্ৰাতে,	, যাহার স	ক্ষাতে,
মা ৰি সেই জন,		मद्रभन,
্থই চ হান ন,	পেতেছি পরমালোক। কবি বিধ	লাকন,
ু গ্ৰিং সেই ধন,	मेवम-द्र स्त्रो (शरना । क्रि	দরশন,
	মাবো স্থবোগ হ'লো।। এই ক	ব নাথ.
	शौरन मकल कर।	,
	हनव-माथाटत थता	त नमग्र,
ামি অভ াগিনী জ	, স্বা ন্দ ন- †নি নাকো তোমা বই।	হাধনা,
গমারি আমাশায ·	, এমন মবাদ্ধব পুরে রই॥	দশায়,
शेषांची न नांत्र,	স্থী ক শিথিলাম শিশুপাঠ।	'জনায়,
थम (योवरन,		ो भटन,
गेवन-मास्राटत,	व्यनस्य (र	গমারে,
বে পরবাদে,		হতাশে, ^৷
গ্ৰাধি কারে	•	-ভবনে,
্লেজ ল ,	ণহিত ৰ বনবালা। উষাসন্ধ	্যাকাল,
হান-আগাে	দিয়াছি গেঁথেছি মালা॥ র. ফুল যোগ	াবারে.
	মাছিল আনার ভার।	·
	দহিয়াছি দাসী-ভার॥	-
	সাথিয়া স্থলর করি।	ণ হার,
লর তলে,	বসি ধ কেঁদেছি জ্যুয়ে ধরি॥	াডলে,
ेन मकन,	আৰি [:] মিটেছে মনের দাধ।	মহ†বল,

এখন বাসনা. যুচাব কুলের বাদ ॥ রাজার বনিতা. রাঞ্চার ছহিতা, क्रम क जित्र-कृत्व। অশুচি যবন. করি দর্শন, ধুরিয়া আনিল চলে। তোমার মহিমা. আমার গরিমা. টুটিল আমারি তরে। সে কলম্বাশি. সমূলে বিনাশি, যশ রাখি কিতিভ'রে॥ তোমার প্রের্গী. ভোমার মহিষী. ষেই নারী হ'তে চার। অহে মহাভাগ. অণুমাত দাগ, নাহি বেন থাকে তায়। করিব প্রাণেশ. चनत्व श्राद्यम्. ঘুচাও বেদনা তব। মনের গৌরব. কুলের সৌরভ, প্রাণ দিয়ে কিনি লব॥ মতী পতিব্ৰতা, নারী হেমলতা. ঘুষিবে ভূবনতায় ৷ নিয়ত সকলে. জপতি-মণ্ডলে. বলিবে ভোমার अवश्र॥

এত বলি নক্ষ্যের চন্দ্রানন চেরে।
অঞ্চধারা পড়ে হেমলতা-গণ্ড বেরে॥
প্রমদার সাহস্কার ভারতী শুনিরা।
প্রমাদ গণিল বীর বিবাদ ভাবিরা॥
কথন বাথানে মনে প্রেরসী-কৃদর।
কথন অন্তরে হয় করণা উদর॥
কভু থেদে পূর্বকথা করিরা অরণ।
প্রমাদারে আলিছিরে করেন রোদন
নানামত বাকের বীর সান্ধনা করিল।
তথাপি প্রেয়নীপণ অন্তথা নহিল॥
মোহাবেশে নরপত্তি লীরব হইলা।
পতিরে প্রথমি রামা কাতরে চলিলা॥
প্রবেশি মহিলাপুরে স্থী সংঘাধনে।
তৃষি দিলী-রাজক্রা প্রেম-আলিছনে॥

"এত দিন হুই বনে ছিলাম খবনী। স্থাৰ্ধি একাকিনী পোহাবে রন্ধনী।

আজি আর প্রিয়স্থী অভাগিনী তরে। বাপিতে হবে না নিশি কাতৰ অন্তবে॥ বিদায় জনমশোধ দেহ আলিকন। আজি স্থীপাপদেহ করিব প্তন। অকলত কুলে কালী রাখিব না আর। ঘুচাইব বল্লভের কুষশের ভার॥ চিতার দহলে দেহ খণ্ডচি শুধিব। ভ্ৰত্তে ক্ত্ৰকুল-খ্যাতি প্ৰকাশিব ॥ প্রিয়স্থি এক্মাত্র করি নিবেদন। মার সম সেহে শিশু করিছ পালন॥" বলিতে বলিতে আঁথি করে ছল ছল। **খনর্গল রাজকভা** চক্ষে বহে জল। धवनी-প্रতিका छनि. व्यक्टद्र विशाम शति. पित्नीयत-कन्ना आक्षि मथा-करत धरित । "এমন বিষম পণ, ম্বজনী বে কি কারণ কে ভোমারে ছেন কথা বল দেখি বলিল। প্রাণপতি আজি তোর. সংহার করিয়া চোর, মিটাইতে মনসাধ তোর পালে আসিল। ৰঝিবারে তার মন, ভাই কি করিলি পণ. এত কটে তাঁর ভাগ্যে এই ফল ফলিল। कि कि मिश्र व कि क्या. দিও না রে এত ব্যথা. निषय रहेया गरे नवाकारत जूरना ना। चार्डे (एथ मा मा व'रण, শিশু ভোর আ্বাসে চ'লে. উহারে জনমশোধ পরিহার করে। না॥ স্থি, রাজ্ভান্ময়, সবে ভোষা সতী কয়. পরিচর দিতে আর হবে নাকো ভোমারে।

ৰে ভাবে রিপুর বরে. সাহিলে পরাব ধারে त्मरे कथा विविधित चूर्वित्व अ मःमाद्य ॥ चलनि, विनग्न कति, **बहे त्मथ होटल** धनि এ বিষম পণে আর মনে স্থান দিও না। ক্তবুল-চড়ামণি, তাঁকে শোক দিয়া ধা ভারতের লোকে **ভার বিপাক্তে ফেলো না**ঃ তুমি কৈলে তম্বত্যাগ, রাজপুত্র মহাভাগ সংসারে বিরাগ করি রাজ্যপদ তাজিৰে। পুনঃ হিন্দ-রাজগণে. মে**ছ পরাজিৰে** রং পুনর্কার এই রাজ্য করতল করিবে॥ তাই বলি ত্যজ পণ. व्राज-कार्या (नर म পতিসহ দিল্লীরাজ-সিংহাসনে বসিয়া। প্ৰজাৱ পালন কর. রিপ-অভয়ার ন রাথ ধরাতলে নাম মেচ্ছদল শাসিয়া ॥^{*} এইরূপে নানামত. সাখনা করিয়া ক ঘূচাইল হেমলতা-প্রাণনাশ-বাসনা। দিলীরাজ-কল্ঞা-সনে, হরিষ-বিবাদ-মা পতিপাশে ধীরি ধীরি চলিলেন ললনা ॥ श्रमादि चारि বীরবাছ হর্ষন. করি রাজপুত্রগণে নিমন্ত্রিয়া আনিলা। দকলের অমুমতি. পাইয়া সানকঃ (इमल्डा मत्न मिन्नी-मिःहामत्न विमला॥ नगरत्र डेप्सव লোকেতে আনন্দময়. বীরবার রাজপদে অভিবিক্ত বুইল। রতিরূপ পর্কা হেমলতা বামপাশে. অর অর কোলাহলে চারিশিক পুরিল।

রত্র-সংহার

প্রথম খণ্ড

প্রথম সর্গ

বসিয়া পাতালপুরে কৃত্ধ দেবগণ,---নিতৰ বিমৰ্বভাব, চিস্কিত, আকুল, নিবিড় ধৃমান্ধ যোর পুরী সে পাতাল, मितिए स्वाएस्त स्था स्रमानिन। বোলন সহস্র কোটি পরিধি বিস্তার— বিশুত সে রুসাতল, বিধনিত স্দা---চারিদিকে ভরত্বর শব্দ নিরন্তর **নিম্বুর আখাতে খতঃ নিম্নত** উথিত। বসিয়া আদিত্যগণ তম: আঞ্চাদিত মলিন নিৰ্কাণ ৰথা সূৰ্য্য বিষাম্পতি. রাছ ববে রবিরথ গ্রাসমে অম্বরে; কিংবা সে রজনীনাথ হেমন্ত-নিশিতে কুৰুঝটিমণ্ডিত যথা হীন দীপ্তি ধরে, পাণ্ডুবৰ্ণ, সমাকীৰ্ণ পাংশুবৰ তত্ত্ :---ভেমতি অমরকাতি ক্লান্ত অবয়বে। ব্যা**স্থল বিমর্বভা**ব ব্যথিত অন্তর আদিতি নম্মনগণ রসাতলপুরে, স্বর্দের ভাবনা চিত্তে ভাবে সর্বাকণ---**কিরূপে ক**রিবে ধ্বংদ তুর্জয় **অ**সুরে। চান্তিদিকে সম্থিত অকৃট আরাব. ক্রানে লেববুন্দ-মূথে বহে গাঁচ খাস.---ৰটিকার পুর্বেধ বেন বায়্র উচ্ছাস বহে ৰুজি চারিদিক্ আলোডি সাগর! সে আকৃট ধানি ক্রমে পূরে জ্যাভল চাকিলা বিদ্ধুর নাদ গভীর নিমাদে ; क्रिका भञ्जीत चरत-- मृष्ठभरथ रुगम একলে জীমৃতবুল মক্সিল শড়েক—

মহাতেকে স্বরবুকে সম্ভাষি কহিলা:--"জাগ্রত কি দানবারি স্থরবুন্দ আজ ? জাগ্ৰত কি অন্বপন দৈত্যহারী দেব ? দেবের সমরকান্তি যুচিল 🗣 এবে ? উঠিতে সমর্থ কি ছে সকলে এখন ? হা বিকৃ ৷ হা ধিক্ দেব ৷ অদিতি-প্রেস্ত ৷ স্থরভোগ্য সর্গে এবে দছকেব বাস । নির্বাদিত সুরগণ রদাতল-ভূমে. (मत-नामिकां इत्र महन निशाम. আন্দোলি পাতালপুরী, তীব্র ঝডবেগে।" দেব-দেনাপতি স্কল উঠিয়া তথম অবসর, তেজ্ঞান্ত, অশক্ত, অলস। "इर्किनौड, रमरवरवती मञ्च-अरवरम প্ৰিত্ৰ অম্বধাম কল্কিত আজ অঞ্চর অমর শৃর স্বর্গ-অংধিকারী দেববুন্দ স্বরম্রন্ত পডিয়া পাতালে, প্রাক্ত কি হইলা সবে । কি বোর প্রমাদ। চিরসিদ্ধ দেবনাম খ্যাত চরাচরে, 'অসুর-মর্দন' আখ্যা—কি হেতু হে ভবে অবসন্ন আজি সবে দৈত্যেব প্রতাপে १ চিরখোদ্ধা,—চিরকাল যুবি দৈতা সহ লগতে হুইলা.শ্ৰেষ্ঠ সৰ্বাত্ত পূজিত আজি কি না দৈতাভৱে আদিত সকলে আছে এ পাতালপুরে অমরা বিশ্বরি ! কি প্রভাপ দমুজের কি বিক্রম ছেন, শক্তি সকলে যাহে স্ববীৰ্যা পাস্ত্রি ? কোথা সে শ্রত আজি বিজ্ঞাী দেবের শভবার রণে যায় দহুজে দলিয়া। शिक्[तित ! प्रशीभूक अकृत कारत

96

এত দিন-আছ এই অন্ধর্তম পুরে,
দেবও, ঐথর্য্য, স্থা, অর্গ ডেরাগিরা,
দাসত্মর কলঙ্কেতে ললাট উল্লি।
ধিক্ হে অমর নামে, দৈতাভ্যরে বদি
অমরা পশিতে ভর এতই পরাণে,
অমরতা পরিণাম পরিশেষে বদি
দৈত্য-পদাদিত পুঠ চির-নির্ব্বাসন।
বল হে অমরগণ—বল প্রকাশিরা
এইরপে চিরদিন থাকিবে কি হেখা ?
চির-অন্ধতম পুরী এ পাতাল দেশে,
দহজের পদচিহ্ন লগাটে আঁকিরা ?
কহিলা পার্মতী-পুত্র দেব-সেনাপতি।

দেবগণ বিচলিত করিয়া প্রবণ কাঁপিতে কাঁপিতে ক্রমে সক্রোধ-মবতি. নাসারস্থে বহে খাস বিকট উচ্ছাসে। ষণা দগ্ধগিরি-স্রাব উদিগরণ আগে. অগ্নির ভ্রবের ধম সতত নির্গমে. ঘন জলকপা, ঘন কম্পিত মেদিনী: পাৰ্কতা-নন্দন-বাকো সেইক্লপ দেবে। তুলিয়া স্থপষ্ঠে তব, পাশ শক্তি ধরি, উঠিয়া অমরবুল চাহি শস্থপানে. পূনঃ পুন: খরদৃষ্টি নিক্ষেপি তিমিবে. ছাডিতে লাগিল ঘন হুচুক্ষার। সর্বাত্যে অনলম্ভি---দের বৈশ্বানর প্রদীপ্ত রূপাণ করে উদ্মন্ত স্বস্ভাব কহিতে লাগিল ক্রত কর্মশ-বচনে স্ফুলিক ছটিল বেন ঘোর দাবাগ্নিতে। কহিলা, "হে দেনাপতি। এ মণ্ডলী-মাঝে কোন ভীক আনছে হেন ইচ্ছানহে যার অমর-নিবাদ স্বর্গ উদ্ধারিতে পুন: ? পুনঃ প্রবেশিতে তায় খ্বেশ ধরিয়া ? দানবে যুঝিতে, আর কি ভর এখন ? ভীকতার হেতু আর আছে কি হে কিছু, অমরের ভিরস্কার প্স্তব যতেক यटिट पारवत जारगा देशव-विजयन । वर्ग-ष्यद्धारमात्म मर्खा, ष्यद्धारमात्म छात्र, অতশ গভীর সিন্ধ—তাহার অধোতে. অন্ধতম পুরী এই বিষম পাতাল. তাহে এবে দৈত্য-ভবে লকান্বিত দবে। হঃধে বাস-ধ্যমন্ত্র গাচতর ত্যঃ

মুহুর্তে মুহুর্তে ঘন ঘন প্রকম্পন, সিদ্ধ-নাৰ শিৱোপরি সদা নিনাদিত শরীর-কম্পন হিমন্ত,প চারিদিকে। এ কট্ট জনস্তকাল যগ-যগাস্তবে ভঞ্জিতে চইবে দেবে থাকিলে এখানে. যত দিন প্রলয়ে না সংহার-অনলে অমর-আতার ধ্বংস হয় পুনর্কার। অথবা কণ্টী হয়ে চলাবেশ ধরি দেবের ঘণিত চল ধর্ততা প্রকাশি. ত্রিলোক-ভিতরে নিতা হইবে ভ্রমিতে মিথাক-বঞ্জবেশে নিতা প্রবাসী ৷ নিৰ্ভাব মনে হয় কাপটা প্ৰকাশ হয় পাছে কার (ও) কাছে চিত্ত জাগবিভ বিষম জঃসহ চিহা ঘণালজাকর সভত কত্ই আবোহন্যে যন্ত্ৰী দে কাপটা ধরি প্রাণে জীবন যাপন শবীব-বহন আবে, জর্গতির শেষ, বৰঞ্চনিবয়-গতে নিয়ত নিবাস শ্রেষ্ট্র শত্রণ ভিনে সে শঠতা। অথবা প্রকাশভাবে হইবে ভ্রমিতে চতর্দ্দ লোক নিলা সচি অবিরত. শক্ত-তিবস্থাব অঞ্চে অলঙাব কবি. কপালে দাস্ত চিফ করিয়া লাঞ্ছিত। যথন জকুটি করি চাহিবে দানব. কিংবা দে অঙ্গলী তলি বান্ধ উপহাদে দেখাইবে এই দেব স্বর্গের নায়ক. শত নরকের বহিং অস্তরে দহিবে। অথবা বৰ্জিত হয়ে দেবত আপন থাকিতে হইবে স্বর্গে—মার আঁছে ব্থা, অসুর-উচ্ছিষ্ট গ্রাদি পুষ্ট-কলেবর, অসুর-পণাক্ষ-রজঃ ভূষণ মন্তকে। ু তার চেয়ে শতবার পশিব গগনে প্রকাশি অমর বীর্যা, সমরের প্রোতে ভাসিব অনস্কাল নম্বজ-সংগ্রামে. দেৰরক্ত ২ত দিন না হইবে শেষ[†]। অমর করিয়া সৃষ্টি করিলা যে দৈবে পিতামহ প্রাসন - স্থমনস্ খাতি. ব্ৰহ্মাণ্ডভিতরে যারা সর্বাগরীয়ান. অদৃষ্টের বশে হার তাদের এ গতি ! দেবৰুদ্ধ লাভ করি অদৃষ্টের বশু,

বুত্র-সংহার

ভবে সে দেবও কোথা হে অ-মর্জ্যগণ ?
দেব-অপ্রাধাতে নহে দানব-বিনাপ,
সে দেববিজনে ভবে কিবা ফলোদার ?
নিরতি খতঃ কি কড় অন্তর্কুল কারে ?
দেব কি দানব কিংবা মানব সন্তান ?
সাহসে বে পারে ভার কাটিতে শৃন্থাল,
নিরত কিরব তার শুন দেবগণ !
ধর শক্তি, শক্তিধর, হও অগ্রসর,
ভাঠা, শক্তি, ভিন্দিপাল, দেল, নাগপাশ,
অরবৃন্দ স্বরতেকে কর ববিষণ,
অদুই থণ্ডন করি সংহার অসুরে।"

কহিলা দে হতাশন সর্বা-অঙ্গে শিখা প্রজ্ঞানিত হৈল তেজে পাতাল দহিয়া, অগ্নির বচনে মত্ত আদিভা-সকলে ছটিল হস্কার শক্ষেপিরি রসাতল। একেবারে শত দিকে শত প্রহবণে. কোটি বিজ্ঞলীর জ্যোতি: থেলিতে লাগিল। পাতালের অন্ধকার ঘুচারে নিমিষে দেখাইল চাবিদিকে জ্যোতিশ্বয় দেহ। তথন প্রচেতা মর্ক্সে বরুণ বিখ্যাত উঠিল গম্ভীরভাব, ধীর মৃত্তি ধরি, পাশ-অসু শুরুপরে হেলাইয়া যেন. উন্মত্ত জলধিজল প্রশাস্ত করিল। দেখিয়া প্রশাস্ত-মৃত্তি দেব প্রচেতাব নিস্তর অমরগণ, নিস্তর যেমন ক্মিগ্ধ বস্তুদ্ধবা, যবে ঝটিকা নিবাবে ত্রিরাত্রি ত্রিদিবা ঘোর হুত্কার ছাড়ি। কহিলা প্রচেতা ধীর গম্ভীর বচন: — "তিষ্ঠ দেবগণ ক্ষণকাল শাস্তভাবে হেন প্রগলভতা কভু নহে ত উচিত. এ **ঔদ্ধ**ত্য **অলমতি প্রাণীরে সম্ভ**বে। যুদ্ধে দৈত্য বিনাশিয়া স্বৰ্গ উদ্ধায়িতে অনিচ্ছা কাছার দৈত্যবাতী দেবকুলে 🔊 কে আছে নারকী হেন দেব-নামধারী ৰিক্ষক্তি করিবে ছেন পবিত্র প্রস্থাবে গ তথাপি প্রতিজ্ঞা-বাক্য-উচ্চারণ জ্বাগে উচিত ভাবিয়ে দেখা ফলাফল ভার: শামাঞ্চের (ও) উপদেশ শুভপ্রদ কভু, জানীর মন্ত্রণাকত নাহয় নিকল। কি কল প্রতিজ্ঞা করি বিফল যন্ত্রপি ?

স্ক্রন-হাস্থাম্পদ হয়ে কিবা ফল 👂 অসিদ্ধ-প্রতিজ্ঞ লোক অনর্থ প্রকাপি নমস্ত জগতে, কার্য্যে সুদিদ্ধ হৈ জন। অনেক মহাত্মা বাক্য কহিলা অনেক, কার্য্যদিদ্ধি নহে ওধ বাক্য-আড্ছরে. (कान्छ-निर्दाय कर्ण প्राट्यान चारैश. শরলক্ষা ধরাশায়ী হয় শরাঘাতে। বার বার এত যার কর অহস্কার. এত দিন কোথা ছিল স্বস্থুরের সনে যঝিলে যথন রণে করি প্রাণপণ ? কোথা ছিল সে সকল যবে দৈত্য শূল নিকেপিল স্থারবন্দে এ পুরী পাতালে ? সমর্থ কি হয়েছিলা করিতে নিজেজ তুৰ্জন বুত্ৰের হস্ত দেব-অস্থাঘাতে ? ष्ट्रेष्ट (मरे. वीधा (मरे. (मरे (मर्वर्गन. অক্ষ অসুর (ও) সেই সুপ্রসন্ন বিধি এখনো বক্ষিছে তারে অনিবার্য্য তেতে, কি বিখাদে পুনঃ চাহ পশিতে সংগ্রামে 📍 ভাগ্য নাই! ভাগধেয় মৃঢ়ের প্রশাপ! मारुम बाहार मना त्महे जागायत । তবে কেন ইন্দ্রবাণ-তেজঃ ছনিবার অক্ষত-শরীরে দৈত্য ধরিলা বক্ষেতে 🕈 কেন ইন্দুসরপতি সর্বরণজয়ী দমুক্তম্দিন নিতা, শলের প্রহারে অচেতন রণখলে হইলা আপনি. চেতন-বিরতি যার নহে কণকাল ? কেন বা সে ইন্দ্র আজি নিয়তির ধ্যানে: সম্ভল করিয়া দট প্রসাচ মানসে. কুমেক শিথরে একা কাটাইছে কাল,---কেন স্থরপতি বুথা এ ধ্যানে নিরত গ দেবগণ, মম বাক্য আকর্ত্তব্য রণ যত দিন ইক্র আসি'না হয় সহায়. অগ্রে কোন দেব ঠার করুন উদ্দেশ, পশ্চাৎ যুদ্ধ-কল্পনা হবে সমাপিত।" বঙ্গণের বাক্যে স্থ্যদেব বিষাম্পতি

বক্তণের বাজো স্থ্যদেব দ্বিধাম্পতি উঠিলা প্রথরতেজা—কহিলা দবেতে— "বক্তব্য আমার অগ্রে শুন সর্ব্বন্ধন, ' ভাবিও দে বৈধাবৈধ বাঞ্নীয় শেষে। ত্রিজ্পতে জীবজোঠ নির্জ্জর অধ্যর, चिति - नमन ११ वित्र-चार्यान 'অনখর দেববীর্য্য, শরীর অক্ষর, नर्ककारन, नर्करनारक श्रीनिक व राम। অসুর অচিরস্থায়ী অদৃষ্ট অন্থির, **हक्त मामवहिख दिल्-भद्रदम** ; মন্ত্রী মিত্র কেই নহে চির আজ্ঞাবই ; ৰুৰোৎসাহ প্ৰভুত্তক্তি অনিত্য সকলি, नर्वकारन नर्वरनारक बान उथा वहे, গুরুল্প দানৰ ভবে কত কাল সবে তুর্বার সমবক্ষেত্রে স্থরবীর্যানল. কত কাল রবে দৈত্য সে রণে তিটিয়া গ মম ইচ্ছা সুরবুক চরস্ত আহবে. नंदर दर मानवकृत और উগ্রভেজ, বুণে বুণে কল্পে কল্পে নিজ্য নিরম্ভর জনুক গগন ব্যাপি অনন্ত সমর, अनुक स्मरवत एडक अमता रचतिया, অহোরাত্র অবিপ্রান্ত প্রথর শিধার; দছক দানবকুল দেবের বিক্রমে পুদ্রপরক্ষরা ঘোর চিরশোকানলে। हित्रपूरक रेम्डानन रूरेरव वाथिछ. না জানিবে কোন কালে বিপ্রামের হুও. নারিবে ডিষ্টিভে স্বর্গে দেব-সন্নিধানে. হইবে অমর-হন্তে পরান্ত নিশ্চিত। অদৃষ্ট এভই বদি সদর দানবে, কোন যুগে নাহি হয় যুদ্ধে পরাঞ্চিত, ভূঞ্ক অদৃষ্ট তবে তিক্ত আখাদনে চিরবুকে স্থরতেকে দানব তুর্মতি। ধিক লজ্জা! অমরের এ বীর্যা থাকিতে. নিষ্টকে খর্গভোগ করে বুত্তান্তর ! স্থাধে নিদ্ৰা বাৰ নিভা দেব উপেক্ষিয়া— স্বৰ্গ-বিশ্বহিত দেব চিস্তান্ন ব্যাকুল। নাহিক বাদর হেথা সভ্য বটে ভাহা, কিছ বলি পুরন্দর আবরো বছযুগ প্ৰভ্যাগত নাহি হন, 'দৰে কি এখানে এই ভাবে রবে সবে চির-জন্ধকারে ? **চল হে चानि**छात्रन প্রবেশি শৃঞ্জেতে, দৈত্যের কণ্টক হরে অমরা বেটিয়া দগ্ধ করি বৈত্যকুল, যুগ যুগকাল, যুদ্ধের অনস্তবহি জালারে অগরে। সর্গের সমীপবভী পর্বভ-সমূহে

শিখরে শিথরে জাগি শস্ত্রধারিবেশে সুশানিত দেব-অন্ধ নিত্য বরিবণে কচ্চত্রের চিত্তশান্তি ঘুচাই আহবে।" কচিতা একেক সুগা, বাটিকার বে

কহিলা এতেক প্র্য্য, বাটকার বেশে চারিদিক্ হ'তে দেব ছুটিতে লাগিল, উপিত বালুকা বথা, যথন মন্ধতে মন্ত প্রভাৱন বেশে নৃত্য করি কেরে। কিংবা যথা যবে বোর প্রলম্মে ভীষণ, সংহার-অনলে বিশ্ব হয়ে ভন্মাকার উড়ে অন্তর্মাকপথে দিগন্ত আফরাক্ষণথে দিগন্ত আফরাক্ষণথে দিগন্ত আফরাক্ষণথে, বেটিরা অমরবর্তী অরাত্রি অদিবা, চিরসম্বের প্রোতে ঢালিরা শ্রীর, দেবনিন্দাকারী তুই অন্ত্রে ব্যথিতে।

দ্বিতীয় সর্গ

হেথা ইন্দ্রালয়ে নন্দন-ভিতর পতিসহ প্রীতিম্বং নিরম্বর, দানব-রমণী করিছে ক্রীডা।

রতি ফুলমালা হাতে দের তুলি, পরিছে হরিযে স্বমাতে তুলি, বদন-মণ্ডলে ভাসিছে বীড়া।

মদন-সজ্জিত কুমুম-আসন, চারিদিকে শোভা করিছে ধারণ, বিচিত্র সৌন্দর্য্য স্বরভিষর।

হাসিছে কানন ফ্লশব্যা; ধরি স্থানে স্থানে যেন মৃত্তিকা-উপন্থি কত্ই কুমুম-পালক্ষ্ণবয়॥

কত ফুল-ক্ষেত্র চারিদিকে শোভে, মূনি ব্রাস্ত হয় কান্ধি হেরি গোভে, রেথেছে কান্স্প করিতে থেলা।

বসন্ত আপনি স্থমোহন বেশ, সূটাইছে পুজা কন্ত সে আবেশ, হয়েছে অপূৰ্ক-শোভার বেলা॥ ধানবী-রনশী ঐজিলা দেগানে, শোভাতে মোহিত বিজ্ঞলিত প্রাণে, ফুলে ফুলে ফুলে করিছে কেলি।

করিছে শাঘন কভু পারিজাতে, মৃত্ল মৃত্ল সুশীল বাতে, মৃদিয়া নয়ন কুসুমে হেলি॥

ৰসিছে কথন অহ্বাগভরে, ইন্দিরা-কমল-পর্যান্ত-উপরে, দৈত্যপতি হাসে পারনে বদি।

হাসে মনস্থথে ঐক্রিলা স্বন্দরী, রতিদন্ত মালা করতলে ধরি, বসনবন্ধন পড়িছে থগি ॥

মৃষ্টিমান্ ছর রাগ করে গান, রাগিণী ছত্তিশ মিলাইছে তান, সন্ধীত-তরকে পীযুষ ঢালি।

খরে উদ্দীপন করে নবরস, পরশ, আখাণ, সকলি অবশ, খ্রবশ-ইন্সিয়-ব্যাপ্ত থালি॥

ক্রমে র্তিপতি সাকাইরা বাণ, কুমুম-ধন্মতে মু-ঈবৎ টান, মুচকি মুচকি মুচকি হাসি।

নাচে মনোরমা অর্গ-বিভাধরী, কলপ-মোহন বেশ-ভ্বা পরি, বিজ্ঞাস-মুরিৎ-ভরজে ভাসি॥

এইরপে জীড়া করে দৈত্য সনে, কৈত্যভাষা অথে নদন-কাননে, বুজাসুর অথে বিহল-প্রায়।

ধরি অফ্রাণে পতি-করতল,
কহে দৈত্যরামা নরন চঞ্চল,
হাব ভাব হাদি প্রকাশ তার—

"শুন দৈত্যেখর, শুন শুন বলি, বুণা এ বিলাস বুণা এ সকলি, এশুন (ও) আমরা বিজেগা নয়। বিশিত বে জন, বিশ্বরিচরণ, নাহি বদি সেবা করিল কথন, সে হেন বিশ্বরে কি ফলোদর ?

তুমি অৰ্গপতি জাজি, নৈত্যেখর, আমি তব প্ৰিয়া থ্যাত চরাচর, • ধিক্ লজ্জা তবু সাধ না পুরে।

কটাক্ষে ভোষার আণ্ড প্রাণ্য বাহা, তব প্রিয় নারী নাহি পায় ভাহা; ভবে সে কি লাভ থাকি এ পুরে ?

প্রমংবরা হয়ে করেছি বরণ, হেরিয়া ভোষাতে মহেন্দ্রকণ, ইচ্ছাময়ী হব হাদরে আশ।

ৰে ইচ্ছা ধথন ধরিবে হৃদর, তথনি সফল হবে সমূদর, জানিব না কারে বলে নিরাশ।

তালি নিক্তৃণ গন্ধ ছাড়িয়া, বরিলাম তোমা যে আশা করিয়া, এবে সে বিফল হইল তাহা।

নিক্ষণা বাসনা হাদৰে বাহাৰ, কিবা বৰ্গপুৰী কিবা মৰ্ত্তা আৰু, যেবানে সেধানে নিয়ত হা হা॥

কিবা সে ভূপতি কিবা সে ভিথারী, কালালী সে জন বেথানে বিহারী, প্রাণের শৃষ্ঠতা গুচে না কভু।

পতিতে বরণ করিরা তোমার, তবু সে বাসনা প্রিল না হার, আমার (ও) এ হশা ঘটিল তবু॥

ভাল ভেবে বৃদি বাসিতে হে ভাল, সে বাসনা পূৰ্ণ হ'ত হৃত হাল, সহিতে হ'ত না লালসা-আলা।

ভালবাসা এবে কিসে বা জাগাই, দিয়াছি বা ছিল সে বৌবন নাই, ভালবেসে বেসে হুদেছি আলা ॥ ইন্দ্রাণী যদি দে করিত বাসনা, না প্রিতে পল প্রিত কামনা, মরি দে ইন্দ্রের লয়ে বালাই।

প্রণন্ধী যে বলে প্রণন্ধী ত সেই, না,চাহিতে আগে হাতে তুলি দেই, সে প্রণয়ে এবে পডেছে ছাই ॥"

বলিয়া নেহারে পতির বদন,
আবাধ ছল ছল চলে ছ নয়ন,
আহতিমানে হাসি জড়ায়ে রয়।

ওনি দৈত্যেখর বলে ধীরে ধীরে, °কি বলিলে প্রিয়ে বল শুনি ফিরে, প্রেয়সী নারীর এ দশা নয় ?

কি দোবে ভর্ননা করিছ আমার, না দিরাছি কহ কিবা সে তোমার, অদের কিবা এ জগতী-মাঝ?

দিয়াছি জগৎ চরণের তলে, কৌস্তভ বেমত মাণিকমণ্ডলে, তুমিও তেমতি নারীতে আজ।

কে আছে রমণী তুলনা ধরিতে, বিভব এখর্য্য গোরব খ্যাভিতে, ভোমার উপমা কাহাতে হয় ?

হ্মার কি লালসা বল তা এখন আছে কিবা বাকী দিতে কোন্ধন, কি বাসনা পুনঃ হ্বদে উদয় ?"

কহিল ঐব্রিলা "দিয়াছ যে সব, জানি হে সে সব বিভব-গৌরব, তবু সর্ব্বজন-পূজিতা নই।

মণিকুলে যথা কৌজভ মহৎ, নারীকুলে আমি ভেষতি মহৎ, াবল'দৈত্যপতি হয়েছি কই ?

এখনও ইশ্রাণী জগতের মাঝে, গৌরবে ভেমনি অ্থেতে বিরাজে, এখনও আয়ত হ'লো না সেহ। স্বর্গের ঈশ্বরী আমি দে থাকিতে, কিবা এ স্বরগ কিবা সে মহীতে, শচীর মহত্ত ভূলে না কৈহ॥

রতিমূথে আমি ওনিস্ক সে দিন, সুমেক এখন হরেছে প্রীহীন, শচীর সৌল্ধ্য দেহে নাধরি।

ইন্দ্রাণ্ডি বথন আছিল এথানে, অসর-সুন্দরী সকলে সেথানে, থাকিত হেমাদ্রি উজ্জল করি॥

ভনেছি না কি সে পরমা রূপসী, বড় গরবিণী নারী গরীয়সী, চলনে গোরব ঝরিয়া পড়ে।

গ্রীবাতে কটিতে ক্ষাবিত উর্বেদ, কিবা সে বিবাদ কিবা সে হরবে, মহন্ত যেন সে বাঁধে নিগড়ে॥

শচীরে দেখিব মনে বড় সাধ, ঘূচাইব চক্ষ্-কর্ণের বিবাদ, আমার চিত্তের বাসনা এই।

পাকিবে নিকটে শিপাবে বিলাস, ধরিব অঙ্গেতে নবীন প্রকাশ, . ভুলাতে তোমারে শিথাবে সেই॥

আদিবে বতেক অনুৱ হন্দী, শচী সলে অলে দিবা বৈশু নিয়ি অমর-কৌতুক শিখাবে

এই বাঞ্ছা চিতে छन देवजानिक, मही वाजी हरद प्रियद रत्न दकि, इस्र कि ना भूनः स्टायक स्वारणा ॥"

শুনে বৃত্তাস্থর ঈষৎ হাসিরা, কহিল ঐজিলা-নয়নে চাহিয়া, "এই ইচ্ছা প্রিয়ে বৃদে তোমার ?"

বলিয়া এতেক দানব-ঈশব, কলপে ডাকিয়া বিজ্ঞানে সম্বর, "কোণা শচী এবে করে বিহার !" কৃষিণ কন্দর্প মুখে চির-হানি, "অমর। বিহনে এবে মর্ত্তাবাসী, নৈমিব-জ্বরণ্যে শচী বেড়ার।

সক্ষে প্রিরতমা সধী অস্থাত, অমে অরণ্যেতে ত্ঃথেতে সতত, না পেরে দেখিতে অনের-কার॥

কটে করে বাদ শচী নরলোকে, ইন্দ্র, ইন্দ্রালয়, ইন্দ্রতের শোকে, অন্তরে দারণ তুঃধত্তাশ।"

তনি দৈত্যপতি কছিলা, "সুন্দরি, পাবে শচীসহ শচীসহচরী, অভিরে তোমার প্রিবে আশ ॥"

ঐক্সিলা ভনিয়া সহর্ব হইলা, অধরে মধুর হাসি প্রকাশিলা, পত্তি-কয় স্থাথ ধরে অমনি।

হাসিতে হাসিতে কলপ আবার, ধহুকে ঈঘৎ করিল টঙ্কার, শিহুরে দানব দৈত্যরমণী॥

পুন: ছন্ন রাগ রাগিণী ছত্তিশ, গীত-বৃষ্টি করে ভূলে আশীবিব, নব নব রস বিভাস করি।

পুন: সে ইন্দ্রিয় অবশ সঙ্গীতে, অুস্থর-অস্থরী শুনিতে শুনিতে, ভূচমকে চমকে উঠে শিহরি॥

কভূ বীর-রদে ধবিছে স্থতার, দানব উঠিছে করি মার মার, আবার সমরে পশিছে ধেন।

অমর নাশিতে ধরিছে ত্রিশ্ল, আবার যেন সে অমরের কুল, বিনাশে সংগ্রামে ভাবিছে হেন॥

কথন করণা সরিতে ভাসিয়া, চলেছে ঐক্রিণা নয়ন মৃছিয়া, কথন অপজ্য-ব্যেক্ডেড ডোর, বেন সে কোলেতে হেরিছে কুমার, অনমুগে খতঃ বহে কীরধার, এমনি আদিব-সঙ্গীত ঘোর॥

কছু হাত্যরস করে উদীপন, কোথায় বসন কোথায় ভূষণ, ঐক্রিলা উল্লাসে অধীর হয়।

ক্ষনে পড়ে ঢলি পতির উৎসংক, ক্ষনে পড়ে ঢলি কুলদল-অকে, উৎফুল্ল বদন লোচনবয় ॥

সমনি অপার। হইয়া বিহলে, চলে ধীরে ধীরে তহু চল-চল, নেত্র করতল অলকা কাঁপে।

ঈষৎ হাসিতে অধর অধীর, অঙ্গুলী-অগ্রেতে অঞ্গ অন্থ্র, টানিয়া অধ্যের ঈষৎ চাপে॥

চারিদিকে ছুটে মধুর প্রবাস, চারিদিকে উঠে হরৰ উচ্ছাস, চারিদিকে চারু কুরুম হাসে।

ধেলে রে দানবী দানবে মোহিয়া, বিলাস-সরিৎ-তরকে ভ্রিয়া, প্রমোদ প্রাবনে নন্দন ভাসে ॥

তৃতীয় দর্গ

উঠিছে দানবরাজ নিজা পরিহরি
ইজ্ঞালরে, দশব্যক্তে নানাজ্রর ধরি,
দানব, গরুর্ব্ব, যক ছুটিয়া বেড়ায়,
গৃহ পথ রথ জ্ঞা সংঘ্র সাজায়;
সাজায় স্থলর করি পুশ্পমাল্য দিয়া
গ্রাক্ষ গৃতের ধার শোভা বিক্তাসিয়া;
উড়ায় প্রাসাদ-চূডে দানব-পতাকা—
শিবের ত্রিপ্-চিহ্ন শিবনাম আঁকা।
ঘন করে শৃত্যক্রিনি, ঘন ভেরীনাদ;
চালিদিকে অর শ্ব ঘন ঘোর হাদ।

শিপরে শিথরে বাজে ছন্দুভি গভীর: খন খন ধছাৰ্ঘোষে গগন অভিৱ। हेम्सालय किरलाफिक स्रोबरवर सार्थः জয়শবেদ চরাচর মেরুশীর্থ কাঁপে। বাসবের বাসগৃহ গগন যডিয়া, হিমান্তিভগর তলা আছে বিস্তারিয়া। ক্টাকের আভা তার ফটিরা পড়িছে. হিমানীৰ রাশি খেন আকাশে ভাগিছে। হাবদেশে ঐবাবত হল্পী সম্বাছ্তিত. স্থসজ্ঞিত পূপাবথ খারে উপন্ধিত। ইন্দ্রপরীশোভাকর সভার ভবন. কৰেব সাজায় জানি বিবিধ ভ্ৰণ: দাবি দারি মণিশুন্ত দাজাইছে তার. সাজাইছে পুস্পদাম চক্রাতপ গায়। হায় বে সে ইন্দাসন বসিত যাহাতে বাসব অমরপতি, রাথিছে তাহাতে মনদাব-প্রেপ্র ওচ্চ কবিয়া যজন. দানব আমসিয়া খাণ কবিবে গ্রহণ। ইন্দ্রেব মক্ট দণ্ড আমনি জভগতি বাখিছে আসম-পার্থে ভয়ে যক্ষপতি. সভাতলে বাগ্যন্ত প্ৰস্তুত কবিয়া ভটস্থ কিমুরগণ দেখিছে চাহিয়া। আত্তম্ভে প্রবেশ-দাবে .-- বিলাধবী যত :--উর্বাণী মেনকা বজা ঘতাটী বিনত ---বদন-ভ্যণ পরি দকলে প্রস্তুত. কেবল নর্ভন বাকী বাদন-সংহত। সমবেত সভাতলে করি ষোডকর. অপেরা, কিয়ব, যক্ষ, সিদ্ধ, বিভাগর। সমবেত দৈতাবৰ্গ স্থদীৰ্ঘ শৰীৰ---হেনকালে শঋপ্রনি হইল গ্লীর : অমনি সুৰয়ে বাত বাজিল মধব: অমনি অপারা-পায়ে বাঞ্জিল নৃপুর; পুরিল সুধার দ্রাণে সভার ভবন ; বহিল অমরপ্রিয় সুর্ভি প্রন। প্রবেশিল সভাতলে অস্তর চর্জার: চারিদিকে স্ততিপাঠ জয় শব্দ হয়। ত্রিনেত্র, বিশালবক্ষ, অতি দীর্ঘকায়, বিলম্বিত ভূজবন্ধ দোতলা গ্রীবার পারিকাত-পূপহার বিচিত্র শোভার। নিবিড় দেহের বর্ণ মেঘের আন্তাস:

পর্বতের চড়া হেন সহসাপ্রকাশ, নিশান্তে গগনপথে ভাত্র ছটার !---ব্রুবাস্থর প্রকাশিল তেমতি সভায়। জ্রকৃটি করিয়া দর্পে ইন্দ্রাসন'পরে বসিল, কাঁপিল গছ দৈত্য-দেহভৱে। মন্ত্রীরে সম্ভাষি দৈত্য কহিলা তথন :---"স্থমিত হে। ভীষণেরে করছ প্রেরণ অচিরে অবনীতলে, নৈমিষ কাননে: ভূমে শ্রী সে অর্ণো ভর্বামা সনে . আসুক শ্বরগপুরে অমরা সকলে. যে বিধানে পারে কহ আনিতে কৌশলে। কৌশলে নাসিদ্ধ হয় প্রকাশিবে বল: ঐ ন্দিলার অভিলাষ করিব সফল। বড লজ্জাদিলাকাল ঐক্রিলাকামারে — শরী ভ্রমে স্বজন্তর। না সেবি তাহারে। স্থমিতা, স্তর কার্যাকর সম্পাদন, ভীষণে নৈমিষারণ্যে, করহ প্রেরণ।"

নৈত্যেক্স বচনে মন্ত্রী কহিলা স্থমিত ,—
"মহিৰী-বাঞ্চিত যাহা কিবা সে বিচিত্র !
তব আজা নিরোগার্য্য দহুজের নাথ,
নৈমিয়-ক্সরণ্যে দৈত্য যাবে অচিরাং ।
নিবেদন আছে কিছু দাদের কেবল,
আদেশ পাইলে পদে জানাই সকল ॥"
দৈত্যেশ কহিলা- "মন্ত্রি, কহ কি কহিবে
অধিদিত বুত্রাস্বরে কিছু না থাকিবে।"

কহিলা সুমিত্র, তবে "শুন দৈত্যনাথ,
অমর পশিছে স্থার্গ করিতে উৎপাত ,
কহিলা প্রহরী যারা ছিলা গত নিশি,
দেখেছে দেবের জ্যোতি প্রকাশিছে দিশি।
অতি শীঘ্র বোধ হয় দেবতা সকল,
রণ-আশে প্রবেশ করিবে স্থান্তর্গ ।
এ সময় ভীষণেরে প্রেরণ উচিত
হয় কি না দৈত্যপতি ভাবিতে বিহিত,
সামান্ত বিপক্ষ নহে জান দৈত্যপতি,
কঠোর সে অমরের যুজের প্রতি।
দিবারাত্রি কণকাল নহিবে বিশ্রাম,
ঘূর্দ্দম বিক্রমে সবে করিবে সংগ্রাম,
বত বোলা দানবের হবে প্রয়োলন,
এ সময়ে উচিত কি ভীবণে প্রেরণ ।"

শুনিয়া হাসিলা বুত্তাস্থর দৈত্ত্যেখর ; কহিলা, "প্রলাপ না কি কহ মন্ত্রির গ আ'সিবে সমরে ফিরে অমর আবার , এ অৰ্থাক্থামন্তি বচিত কাছার ১ দানবের ভয়ে স্বর্গ পথিবী ছাডিয়া. লকায়িত আছে সবে পাতালে পশিয়া। সাধ্য কি দেবের পুনঃ হয় স্বর্গম্থ. যাক ৰুত কাল আবো ঘচক লে তুথ। দৈত্যের প্রহার অঙ্গে যে করে ধাবণ, ফিরিবে না যতে আর কখন সে জন। ্রতাম্বর থাকিতে, সে সৈক্ত দেবতার সর্গের দিকেও কভ চাহিবে না আর। বোধ হয় প্রতীহারী, রক্ষক যাহারা, অন্য কিছ শন্তপথে দেখেছে তাহারা---হয় কোন উদ্ধা কিংবা নক্ষত্ৰ-পতন. নিদ্রাঘোরে শরুপরে করেছে দর্শন।"

ক হিল। স্থমিত্র, "দৈত্যপতি, অঞ্জ্রপ বলিলা প্রহিবিগণ, ক হিলা স্থরপ। গগনমার্কেতে দেব-অকের আভাস দেনি রাছে হানে হানে জ্বোতির প্রকাশ। রুক্ক-প্রধানে ভাকি জ্বিজ্ঞাসা করিলে, বিদিত হইবে সর্কা স্থকণে শুনিলে।"

দৈত্যেশ-আদেশে আমে বক্ষক-প্রধান দাড়াইল সভাস্থনে পর্বাত-প্রমাণ । কহিলা, দানবপতি, "কহু, হে ঋক্ষভ, কি দেখিলা গত নিশি কিবা অস্তত্ত্ব ?"

কহিলা ঋকত বৈতা "শুন বৈত্যনাথ,
কিষামা রঞ্জনী যবে হেরি অক্সাং,
দিকে দিকে চাবিধারে ঈয়ং প্রকাশ,
জ্যোতির্ময় দেহ যেন উপ্পলে আকাশ!
শুন অ উদ্বার জ্যোতি: নহে সে আকার,
জানি ভাল দেব-অম্ব-জ্যোতি: যে প্রকার।
শুম না হইল কভু ক্ষণকাল তার,
চিনিলাম দেব-অম্ব-জ্যোতি: সে আভার।
ফটতে লাগিল ক্রমে ক্রমে দশদিশে,
নতক্ষণ অন্ধ্রকার অংশুতে না মিশে।
দেখিলাম কত হেন সংখ্যা নাহি তার,
উঠিছে আকাশ-প্রান্তে খেরি চারিধার,
বহু দ্বে এখন (ও) সে জ্যোতির উদ্ধান
দেবতা ভারা কিছু ক্রিম্থ নিশ্চর।

বুতামুর জিজাসিলা ঘুচাতে সন্দেহ. "ইজের কোদগুনাদ গুনিলা কি কেচ ? ইন্দ্ৰফদি সলে থাকে অবশ্য সে পানি **ক্ষরিতে পাইত স্বর্গে সকলে তথনি।**" কহিলা ঋকভ, "অক্ত দানব যতেক, ইজের কোদওখননি নাভনিলাএক ." তথন দানব-ইন্দ্র ব্রুস্থির কয়---"দেবতা আসিছে সভা, কিবা তাহে ভয়? একবার অন্তাবাতে পাঠাই পাতাল. এইবার একেবারে ঘুচার জ্ঞাল। ইন্দ্ৰ সজে নাই, যুদ্ধে পশিছে দেবতা, বাতল হয়েছে তারা কি ঘোর মুর্থতা। সংল্ল করিত অগ শুন দৈত্যকুল. সঙ্গল করিছ হের স্পর্ণিয়া তিশল— সুর্যোৱে রাখিব ক'রে বথের সার্থি. চন্দ্র সন্ধ্যামুখে নিতা যোগাবে আরতি, প্রন ফিরিবে সদা সন্মার্জনী ধবি. অমরার পথে পথে রজঃ সিগ্র করি। বৰুণ বঞ্জক-বেশে অব্দেবে সেবিবে. দেবসেনাপতি স্কন্দ প্তাকা ধরিবে. নিউয়ে সকলে নিজ নিজ সানে যাও. স্থমিত্র, নৈমিধারণ্যে ভীষণে পাঠাও।" কহিয়া এতেক বত্রাসর দৈত্রাপতি, সভা ভালি স্লমেকর দিকে কৈলা গতি। এখানে ত্রিদিব জড়ে ছটিল সংবাদ. অর্গপরী পূর্ব করি হয় দিংহন দ। ৰাজিল হুন্দুভিদ্বনি শিপরে শিপরে. কোদজ-টক্লায়ে যেন গগন শিহরে। প্রাচীরে প্রাচীরে উড়ে দৈতোর পতাকা, শিৰের ত্রিশৃল-চিহ্ন শিব নাম আঁকা। মহা কোলাহলে পূৰ্ণ হৈল স্কান্ত্ৰ, माकिल नानवमारक नानव मकल।

াশবের বিশ্ব-চিছ শেব নাম আকা।
মহা কোলাহলে পূর্ব হৈল সর্বস্থল,
সাজিল দানবদাজে দানব সকল।
বুত্রাম্মর-পূল বীর রুজ্ঞীত নাম,
মুধন্ত দানব-কুলে, দুদ্ধিতে স্থঠান।
ভূষিত ললাটদেশ, বিশাল উর্দ্দ,
ৰাল্যকাল হ'তে যার অশীন সাহস,
সজ্জিত মাণিকগুল্ কিরীট-শীর্ষে,
দেবতা আসিছে যুদ্ধে শুনিয়া হর্ষে,
মুমিতের করে ধরি, কত সে উল্লাস,
উৎসাহ-হিল্লোলে ভাসি করিল প্রকাশ,

পোড়া মনে ভ্ৰান্তি নাই.

অমৃত করিলে পান.

कित्ररंभ हंभेगा वन.

মানবের এ আগারে,

অতি গাচতর বায়ু,

নয়ন দিৱাতে ঠাঁই.

স্থপে নাহি দৃষ্টি হয়,

চায়। এ মাটীর কিতি.

ভনিতে না পাই ভাল,

এ ক্ষুদ্র কিভিতে থাকি,

বিধি স্তব্ধে অপ্রান্ত করিয়া॥

দে উপায় নাছিক এখন।

চিরছ:বে করিয়া বাপন ।

পরিষা নিখাস নাহি পড়ে।

বুক ধেন নিবন্ধ নিগড়ে॥

শৃষ্য ধেন নেত্রপথে ঠেকে।

भिना (यन कर्छात्र कर्नम।

कर्वमूटन अधिका-भर्भ॥

षा छत्न (त्रव्यक् द्वन ८एक ॥

(मरवंत्र क्लांटन कारे

তবে বা জড়াত প্রাণ

থাকি যেন করাগারে

আই ঢাই করে আং

কোথাও নাহিক পাঃ

পায়ে বাজে নিতি নিং

চারিদিক বহিন

শব্দ যেন স্বাকা

কেমনে শরীর রা

নিবসি এ ভূমওণ

মহাযোদ্ধা বৃত্তপুত্ৰ, পূৰ্বের সমরে, लिला विश्वन यमः सुविदा समस्त । আবার আসিছে বুদ্ধে দেবতা সকল. শুনিয়া উৎসাহে মত হৈলা মহাবল। চলিলা মন্ত্রীর সহ আপন আলয়ে. ष्यार्त्नाविद्या नाना कथा युष्कत्र विवरत् । অর্গছারে ছারে চলে দৈত্য মহারথী. হর্যাক্ষ বিপুৰবক্ষ পূর্বের কৈলা গভি। ঐরাবণী বল যার ঐরাবণ প্রায়, পদিনেম চলিলা বেগে নদী যেন ধায়। শঙ্খবন্ধ দৈত্য--- যার শঙ্খের নিনাদে ক্ষমর কম্পিত হয়—উত্তর আচ্ছাদে। দক্ষিণেতে সিংহজটা—সিংহের প্রভাপ - -চলিলা তর্ম্ব দৈত্য ভয়ক্ষর দাপ। স্বর্গের প্রাচীরে ক্রমে দৈত্য কোটি জন--प्लीवन-ट्रेनियवांतरमा कतिका श्रमन ।

मधी द्र मकिंग हिथा यून। চতুর্থ দর্গ নিতাএ থৰ্বতাজান, আকুল করে প্র কেমনে বা বাচে নরকুল। কত কাল ভাবি তা অমর মরণ নাই. वित्रक्षा देनिष्ठ-वटन, শায়াকে স্থীর সনে, এত কষ্টে এখানে থাকিব: শচী কচে স্থীরে চাহিরা। ষথনি ভাবি লো সই. তথনি তাপিত ং a (राष (इन **धीरो**न, বল আহার কড দিন. চিরদিন কেমনে সহিব॥ থাকিব লো এ ভাবে পড়িয়া। बन्छ (योदन नास. ইন্দ্রের বনিতা হা চপলা, ডু:থেছে অভি, না হেরে অমরাবতী, ভোগ করি স্বর্গবাস-মুধ। আছি এই মানব-ভূবনে। কিরূপে থাকিব হেথা. হইগা অনন্ত-চে জাগে নিত্য সেই কথা, না ঘুচে মনের ব্যথা. নরলোকে সহিয়া এ হথ। পুন: কবে পৰিব গগনে॥ মৃত্যুহয় বিষ ভ নরজন্ম ভাল স্থী. त्र कथा जुनिएक हारे, ্ৰপনে বছপি ছাই. মরিলে ছ:থের অবদান। . দেৰের খপন নাহি আসে। নিডাহীন অব' ठिख मध करत्र कांदा, অফুদিন অহুকণ. **লাগ্র**তে নির্থি যাহা, · জলে নালো তাদের পরাণ। প্রাণে যেন মরীক্রিকা ভাসে॥ নাহি যদি কোন কা বরং সে ছিল ভাল, সভত বেড়াৰ আঁচে, নয়নের কাছে কাছে, দেখিতাম সরগ নয়নে। স্বরগের মনোহর কারা। আগে স্থ পরে পীড়া, আগে হল: পরে ঐ দৃষ্টিপথে আৰিৰ্জাৰ, সক্ষা তেমতি ভাব, শীবিতের অসহ সহনে॥ কিন্তু জানি সে সকলি ছায়া। ভূণদলে না উপা কিছুক্ষণ ফুখে ভবু, कानि नशी अमा ছाড़ि, ্ৰান্তি ৰদি হ'ত কভু, ুধাকিতাম বাতনা ভূলিয়া।

উত্তাপে না হয় বিল, বেখানে অমরীগণ. জীড়া হথে নিষ্গন. লানি সর্বস্হাভিল, বিরাজিত প্রফল অন্তরে॥ অগ্নিদাহ অক্তে নাহি সহে॥ হার লজ্জা। চপলা রে. আমার শ্রনাগারে. তথা**পি অস্তরে দহে.** এ ছুণা না প্রাণে সহে. অমর পরশে নাহি যাহা। প্ৰকিথা সদা পড়ে মনে। না ছইলা কোন জন. যে গৌরৰ ছিল আগে. বাসবের অফুরাগে. ইন্দ্ৰ বিনাধে শয়ন. বুলাম্মর পরশিশ তাহা॥ কার হেন ছিল ত্রিভবনে গ কি আর কব অধিক. মেদেষবে আথওল. धिक लड्डा धिक धिक, েক্ষনে ভূলিব বল. এ পীড়ন সহি লো এ প্রাণে। বসিত কাম ক ধরি করে। এত দিনে দৈত্যবালা. এ মুখ করিয়া কালা, ৬**ই সে মেঘের অঞ্জে.** থেলাভিস কভ রকে. महीरत विक्रिल विषवारण॥ ঘটা করি লহরে লহরে॥ আমার স্প্রী বাজে. কি শোভা হইত ভবে. বসিতাম কি গৌরবে. সাজে লো আমার সাজে. ঐন্দ্রিলার কটিভটে হার। পার্যে তার নীরদ-আসনে। অমরী করিত যত্ন, আমার মুক্ট-রড়, ∗ইত কি ঘন ঘন. মৃত্-মূল গ্ৰজন. কুবের আনিয়া দের তার॥ মেৰে যবে তুলাত প্ৰনে॥ গৌরৰ করিবে তার. শচী বলি কেবা আর. টন্দের সে মথকান্তি. ঘচায়ে নয়ন-ভান্তি. কে আর আসিবে শচী-স্থানে। কত দিন স্থী রে না হেরি। আবুনা আসিবে লক্ষী, বাহুতে বাধিতে রক্ষী. কত দিন বৈদে নাই. ঘুচারে চক্ষু বালাই. - ল**ইতে ইন্দিরা পু**প্প ছাণ॥ স্থরবুন্দ বাসবেরে ঘেরি॥ ইন্দিরার প্রিয়পন, মুধাকাত সুধাস্থা, হ্মেরু-শিখবে যবে, সুথে থেলিতাম সবে. কত সুথে লইত কমলা। অমর-সঞ্চিনীগণ সহ। এবে সে ছোঁবে না আর. হাতে তুলে দিলে ভার, ³পরে অনন্ত শৃক্ত. অন্ত নক্ত-পূৰ্ণ. শচীর পরশ এবে মলা॥ সদা স্নিধ সদা গৰুবহ। াটত নিৰ্মল বাযু, উমা নাহি ফিরে চাবে. उनानी मुद्रियां गांद्र. প্রফুল করিয়া আয়ু, कारक यपि कथन मां छाई। কত পুষ্প স্থাকে শোভিত। লজ্জা দিয়ে অধিরত. সুররমা অক্ত যত, নৰ্যল কিরণশোভা. मशौ (त कि मनालाजा, চৰ্ব করি শচীর বড়াই॥ মের-অকে নিভা বর্ষিত॥ কোথায় পলাব বল, কোথা আছে হেন স্থল. थी त्रहे मनाकिनी. **ठित्रानन-अनाग्रिनी.** এ মুখ না দেখাব কাহারে। দেবের পরম স্থকব। বয়ঞ্চ মান্ব-দেছে, পশিব মানবগেছে. **डेकारम नक्तन-उथ.** উছলে মধুব জল, জন্মির, মবিব, বারে বারে॥ ভাবিতে লো হ্রদয় কাতর॥ ভূলে রব যত কাল. জীয়ে রব তত কাল, চার ভোগ্যা এবে ভাহা, কার ভোগ্য এবে আহা, ভাবিলেই আবার মরণ। আমার সে নন্দন বিপিন! ভবে না ঘূচিবে ভাপ, , , ভাবনাব অপলাপ, কে ভ্ৰমিছে এবে তায়, কেবা সে আছাণ পায়. ভবে বাবে চিত্তের পীড়ন॥" পারিজাতে কে করে মলিন ৷ স্থী পারিজাত মম. হেনকালে পুষ্পধন্ত, নিভা মনোহর ওছে, নগডের নিরুপম. চিরহাসি অধরে প্রকাশ। দৈত্যজায়া পরিছে গলায়। चाति नहीं महिशान. বাড়ারে শচীর মান. য পুজপ শচীর হাদি. ত্মিগ্ধ করিবারে বিধি, हेक्सानीदत्र कतिमा मखात्र॥ নিরমিলা অতুল শোভায়॥ কহিলা "হে পুল্পলয়; চপলা হেরি স্বর, ধরি কলুষিত কারা, খী হে দানবজায়া. হেথা গতি কোথা হ'তে বল। বসিছে সে আসন উপরে।

ķ. .

আছত আছত ভাল, গোৱা ছিলে হ'লে কাল, তোমাব ও রভিব কুশল। শুনি না কি মাল্যকার. হয়ে এবে আছে মার. ঐক্রিলার উত্থান সাজাও। নিজ করে গাঁথ মালা. সাজাতে দানব-বালা. থালা গাঁথি অমুরে পরাও॥ জানিলে হে মনোভব, এত গুণপনা তব. নিত্য গাঁথাভাম পুলাহার। ত্যজি পুজা-শরাসনে, থাকিতে যে অক্সমনে. ত্রিভবন পাইত নিস্তার ॥ বড আগে হেলি হেলি. भूष्मधञ्च भएष्ठे किल. বেড়াইতে স্মোহন বেশ। তাক করি বাবে বারে. সর্বলোক স্বাকারে. শুন কাম এই ভার শেষ॥ ছিছি মার নাহি লাজ. ধরি মালাকর-সাজ, এখন (ও) আবাছ স্বর্গপুরে। রতির কি লজ্জ। নাই, মখেতে মাথিয়ে ছাই. ঐন্দ্রিলারে সাজায় নপুরে।" मही करह, "हलना दत्र, গঞ্জনা দিও না মাবে, সুথে আছে সুথে থাক কাম। এ পীড়াহৃদয়ে ধরি. স্বৰ্গপুৰী পৰিহবি, প্রাইত কিবা মনধাম ? ভাৰনা যাতনা নাই. मना यथी मर्क्की है. চিরজীবী হউক সে জন। রতির কপাল ভাল. মুথে আছে চিবকাল. সহে নাদে এ পোডা যাতন। প্ৰাত্তায় কৌশল কিবা. ष्यां मादत भिशास मिता. সদা হুৰ চিত্তে কিসে হয়। তুমি যথা মনোভব. কিরপে ভলিব সব. নিতারখী নিতা হাসময়॥" কন্দৰ্প অপান্ধ-ঠাবে. শাসাইয়া চপলারে. সময়মে শচী প্রতি কয়। "মুখ ছঃখ ইন্দ্রপ্রিয়া, ' নকলি বাসনা নিয়া, যুক্তির আয়ত্ত ৫সু নয়। ছাডিয়া নন্দন-বনে. কোথাও বা ত্রিভবনে. জুড়াইবে কন্দর্পের প্রাণ। নন্দন-ভিতরে তাহা, কালেব বাঞ্চিত যাহা. নাপাইৰ গিয়া অক্ত ভান॥ সেবিয়া অসুর নর, কি দানৰী কি অমৰ. তাই স্বৰ্গ না পারি ছাডিভে।

र्यात (गर्था जीनतीना. তাৰ দেখা চির-আশা. স্থ চঃখ মনের থনিতে। সে কথা বুথা এখন. আসিয়াছি বে কারণ শুন আনকো বাস্ব রুম্ণি। আবের বিগদ জানি. আপনি কর্ত্তব্য মানি জানাইতে এসেছি অবনী॥ নিদয় অদষ্ট অতি. এখন (ও) তোমাব প্রতি. अप्त हिटल चित्र विश्व । কর্তবাষাহয় কর. নাধাক অবনীপ্র, নিকটে আদিছে আশীবিষ॥" "শচীব অদৃষ্ট মন্দ্ আছে কি শচীর ধন, সে কথা শুনাতে আইলে মার। স্বৰ্গ ভাজি ধৰাবাস. ইন্দ্রে ইন্দ্রনাশ, ইহা হ'তে অভাগ্য কি আর ১" শুনিয়াকলপ কয়. "এই यमि कष्ठे इस् না জানি সে কি বলিবে ভাষ। ঐন্সিলা দেবিতে মবে. রতি সহচবী হবে. অর্থ্য দিবে বুর্তান্দ্র-পায়॥ ক্ষাকর স্বরেশ্রি. এ কথা বদনে ধার. চেডাইতে বলিতে সেহয়। থকৰে গুনেভি যত. **बे**क्सिनां व महनां वर्षः তাই মনে পাই এত ভয়। বসিয়া নন্দন-বনে, ঐন্দ্রিলা দৈত্যের সনে আমাৰ সে সাকাতে কছিলা. 'শঙীরে স্বরণে আন. থাকুক আমার মান, শতী দেবা মোরে না করিলা-বুথা এ ইন্দ্ৰ ভব. বুথা এ ঐশ্বর্যা সং, বুথা নাম ঐক্রিলা আমার। ভূনি শঠী গরবিণী. চিরস্থী বিলাসিনা দে গৌরব ঘুচাব ভাহাব॥ থাকিবে মবরে আসি. হইয়া আমার দাং হাব-ভাব শিখাবে আমায়। निश्रादि हलन-छन्नी. कत्र-भन निरंत वा তবে মম চিত্ত-কোভ যায়?' লজ্জা পায়, বুত্রাসর, আসিতে অবনীগ আছে। দিলা ভীষণ দৈতোৱে। মহাবল দৈত্য সেই, তোমার রক্ষক নে ইন্দ্রপ্রিয়া, পড়িলা সে ফেবে ॥" कमर्भ-वांदगढ नही. কুম্ভলে ফণিনীর এক দৃষ্টে দৃষ্টি করে ভার।

আগে ক'য়ে কেন মাধ.

গ্রন্তাব **নিরুত্ত**র, গণ্ড রাথে হন্তোপর, ছান্বা যেন পডে সর্ববগার। নিস্পল শ্বীর মন. সচেতনে অচেতন, নিশাস না সবে নাসিকার। অজানিত মচিভিত. চিন্তা যেন উপস্থিত. হৃদয়েতে ঘরিয়া বেডায়॥ কলল-বচিত ফণী. নির্থি মেঘণাহিনী. কতে শচী-চপলা চাহিয়া---"এ নবক মম ভাগে. স্থী নাহি জানি আগে. দেখি নাহি কথন ভাবিয়া। শচীর হযেছে তাহা, জ্বতিব শেষ যাহা. ভাবিতাম সদা মনে মনে। কপালে আছে আমাব, লাবোধে শত পিকাব. দে কথা না উদিল চেতনে॥ কেমনে চপলা বল. প্রশিবে কবতল. मानती हत्रश-न्यूत १ কেমনে গো স্থনহাব. ন্তন শোভিবাবে ভার, ভূজে দিব কেমনে কেয়ব গু কেমনে স্থকাঞ্চী গরি. দিব কটিভটে পৰি. কেমনে বা কবরী বান্ধিব ? বনাব কুফলে বেণী, কিরূপে মুকতা-শ্রেণী, ভালে তার সাজাইয়া দিব ? াণীবে যে জানি নাই. কিরুপে সে ভাবি তাই. माखाईन मानव-महिला १ দার কাছে যাব এবে, কেবা সে শিখায়ে দিবে, দাসীপনা তুষিতে ঐক্রিলা? যক্ষকরা সমাদরে, াব অঙ্গে ষত্ত ক'রে, প্ৰাইত বসন-ভ্ৰ্ষণ। া আজি লো দানী হয়ে. বস্ত্র আভিরণ লয়ে, ঐদ্রিলাব কবিবে সেবন ॥ শ্রবণেবে শত বিক! য়লজভা৷ হায় ধিক. এ কথা কৃহবে স্থান দিল। সিংহী ছিম্ন হৈম্ন শিবা, সীপনা বাকী কিবা. যথন এ শুনিতে হইল॥ দন হে **কন্দ**ৰ্প তমি. আইলে মরতভূমি, কেন কহ শুনালে আমায়? কেন বল চাপাইলা ? দি-পরে গুরু শিলা, অনল হে কি দুধি ভোমায়? ें। कशाल यहि. ঘটিত হে সে অবধি, াসতে হাইত হবে শচী।

অন্তরে দাসত্ব-ভার. শচীরে হে কহিলে অশচী? চপলা সভাই কি লা. সেবিতে হবে ঐক্সিলা? महीव कि कि हरे त नाहे ? অপাক্ত পডিলে যার, ভয় হ'ত দেবতাব. দেব যক্ষ তথিত সবাই॥ কেহ নাই ভারে রাথে. তাগার এ হর্কিপাকে. मानरवरत कतिया भगन १ ইন্দ্ৰ হেন তবে নিষ্ঠ কোথা দেব অবশিষ্ট গ তুৰ্যাচজৰ বৰুণ প্ৰনাণ কোথা কদ্ৰ হতাপন. (कांशा शनरमवशन. युवा नाम लहे (म मवाव। ইন্দ্ৰ গিয়াছে যবে, ष्यात्र कि छनित्व मत्त्र. শচীরে ভাবিবে কেবা আব ? তবুও ত নিরাশ্রয়, हेजांगी এथन (७) नम्. ইক্রাণীত পুত্রের জননী। স্থীরে বাস্ব স্ম, আছিত জয়ক মম. ইন্দ্রাণী ত বীরপ্রস্বিনী। কোথা পুত্ৰ হে জয়স্ত, कननीत जःथ जल. কর শীঘ্র আদিয়া হেথায়। ভোমার প্রস্থতি হায়. দৈত্যের দাসতে যায়. রক আসি পুত্র তব মায়।" ধ্যানে দুঢ় মন দিয়া. এত কৃহি ইন্দ্রপ্রিয়া, জয়জেরে করিলা স্মরণ---कननी डाटवन यहि. দে ভাবনা গিরি নদী. ভেদি স্থতে কবে আকর্ষণ। জন্ম পাতালদেশে. শুনিয়া কণ-নিমিষে, गारत्र रम मानरमत्र श्राम । ব্যথিত কাতর মনে, कि वाकि नवामत्न. অবনীতে চলিলা তথনি ॥ কলপ শচীব স্থান, বিদায় পাইয়া যান, भूनः (महे नक्त-कानन। महीत्र मास्त्रना-स्थारम, . . हशना मांडारत्र शारम, কহে স্নিগ্বিনীত বচন॥

পঞ্চম সূৰ্গ

চপলা শটীরে কহে, "শুন, ইন্দ্রপ্রিয়া,
অভাপি কয়ন্ত না আইনে কি লাগিয়া १ বুঝি বা বিদ্রাটে কোন পড়িলা আপনি,
ভাই দে বিলম্ব এত আদিতে অবনী।
কলপের কথায় অন্তরে ভাবি ভয়,
মর্ত্তা ছাড়ি চল, দেবি, বৈক্ঠ-আলয়;
কিংবা দে কৈলানে চল উমায় নিকটে,—
বিশ্বাস কর্ত্তর কড় না হয় কপটে।
কমলা অথবা গৌরী অথবা বাল্মণী,
নিশ্চয় আশ্রমান দিবেন ইক্রাণ।"

हेक्तानी हलला-वाटका करह, "किवा कह, অক্তের আখেরে বাস শচীর তঃসহ। প্রবাসে প্রবশ্ সদা চিতে মলা. আশ্রদাতার মতি-গতি বঝে চলা , চিন্তিত সভত ভয়ে করিত সদাই . পরের আশ্রয়ে বাস প্রাণের বালাই। খবদে খাধীন চিত্ৰ, খাধীন প্রাস খাধীন বিরাম,চিন্তা খাধীন উল্লাস . সদর্শ গুরুতে বাস পরবশ আর, ছই তুল্য জীবিতেব, ছই তিরস্কার ! ব্ৰন্দলোকে বৈক্ঠে কৈলালে নাছি ভেদ. বেইথানে প্রবশ, সেইথানে থেদ। শুন, প্রিয়তম সথী, সে আশা বিফলা, মৰ্ক্তা ছাডি প্রাইছে যাব না চপলা।" চপলা শুনিয়া ছঃথে কহিলা তথনি. "ছদ্মবেশে থাক ভবে বাসব-ঘরণি।"

কছে ইন্দ্ৰপ্ৰিয়া, "সথী শুন লো চপলা,
শচী কজু নাহি জানে কুহকীর ছলা।
ছণিত, আমার সথী, গোপন-নিবাদ,
ছন্মবেশ কদাচ না করিব প্রকাশ।
চিরদিন যেইরপে জানে সর্কাজন,
সহচরি, সেইরপ শচীর এখন।
আাদিছে দংশিতে ফ্লী করুক্ দংশন—
নিজ্রপ, সুখী, নাহি ভাজিব কথন।"

বলিতে বলিতে আত্তে হইল প্রকাশ, অপূর্ক গরিমান্ডটা কিরণ আভাস; নরন-ললাট-গও হৈল জ্যোতির্থয়— স্থাটর স্থানে বেন নব-স্থাব্যায়য়। যোর কিপ্ত প্রচণ্ড উন্মন্ত বেই জান
হেরে জন হ্র সেই, সে নেত্র জান।
নির্মি চপলা-চিত্তে জানীম আহলাদ ,
চিন্তিতে লাগিল মনে নানাবিধ সাধ।
ভাবিতে লাগিল পেরে বিপুল হরিরে—
"নন্দন সদৃশ বন স্বজিব নৈমিষে।
মহেক্রাণী-বোগ্য ববে হইবে এ বন;
এ মূর্ত্তি তবে সে শোভা করিবে ধারণ ,
কপটি দানব মৃগ্ধ হইবে মায়ায়;
না পারিবে পরশিতে শচীর কায়ায়।
প্রকাশিব ক্ষিতির ঐশর্যা যত আজি;
শচী রবে আজি এই মরতে বিরাজি।"

চপলা এতেক ভাবি বিচিত্র কানন. শনীর অজ্ঞাতসারে কৈলা প্রকটন।---মানদ-মোহকর নবজ্মরাজি প্রকাশিল স্থন্দর কিসলয়ে সাজি। शांदिन मभीत्र मनव-पूर्णक. চম্বনে ঘন ঘন কম্ম আননি। কাঁপিল থর থর তরুশিরে সাধে. শিহ্বিল পল্লব মরমর সাদে। হাসিল ফুলকুল মঞ্জল মঞ্জল, মোদিত মৃত্বাদে উপবন ফুল। (कांकिल इत्र्रिल कहत्र क्थ . শোভিদ সরোবরে সরোজিনীপুঞ্জ . নাচিল চিরস্থথে ম্যুর কুর্জ , গুল্লরে ঘন ঘন মধুপানে ভূক। কুনার শ্রদল প্রিয়তর আবাতা— সুর্য অবধ্ , অর্ধ শশিশোভা ; শোভিল স্তরণ ছল জল অলে; विक्रिता शामिनी माद्यावन ब्राप्त ।

হেনকালে ইন্দ্রস্থ আসিরা সেথার,

দীড়াইলা প্রথমিরা জননীর পার।

জননী পুত্রের মুখ ২ই দিন পরে

ঋ বেশে যদি হনরের সর্কটিন্তা হরে;

জন্ত আশা, অভিলাব কোত বত আর,

অন্তরে বিলীন হয় বাপের আকার;

প্রথাতে বেমন স্থা তরুণ কিরপ

ধরণী পরশি করে কুল্ঝটি হরণ।

পুত্র পেরে শুটী বেন পাইলা আবার

স্বর্গের বৈভব বত ঐশব্য তাহার।

বারংবার দির্ভাণ; চিবৃক আছাণ
লইরা; ধরিলা কোলে পুলকিত প্রাণ।
পূর্বিমার পূর্বচন্দ্র হইলে প্রকাশ;
ন্থাকরে ধরে বেন প্রফুল আকাশ;
মকদেহে সরিতের প্রবাহ বহিলে;
ধরে বেন মক সেই প্রবাহ-সলিলে;
তক্র মধা নবোদ্গত কিসলয়য়াজি;
নদ্রা মধা ভূজম্ম প্রসারণ করি;
ক্রান্ত পরাণীরে রাথে বক্ষ:হলে ধরি;
ক্রান্ত পরাণীরে রাথে বক্ষ:হলে ধরি;
ক্রান্ত পরাণীরে রাথে বক্ষ:হলে ধরি;
ক্রান্ত পরাণীরে বাধ্য ক্রান্ত যামিনী;
সেইরূপ ধরে পুল্লে ইল্রের কামিনী।
অঞ্চলে মুখের ধূলি ঝাভি স্থাধে চার;
মৃত্ পরশানে কর স্র্বাহ্রে ব্লার।

কাতর অলবে কহে চপলা চাহিয়া—

"দেথ সথি, সে শরীর গিয়াছে ভালিয়া
প্রলের কদ পদা পদ্ধেতে বেমন,

সথি রে, বংদেব আজে যেমতি এখন।
বোলো, বংস, থোলো তব কবচ অলের ,
এ ভ্বণ নহে বোগ্য এ কদ্দেহের।

সহিতে নারিবে ভার বাজিবে শরীরে,

বিশ্ব হও কিছুকাল মহীর সমীরে,

তথাপি ভ্ভাবে বংস, হইবে স্থান্তর।
পাতালবাসের ক্লেশ হবে অবসান
সেবিলে এ সমীবণ—ধোল অল্পান।"

বলিতে বলিতে বর্ধা খলিয়া আপনি.

বালতে বালতে বন্ধ খুলিয়া আপান,
উবনে অস্ত্রের চিহ্ন দেখিলা তথনি,
আক্রের চাবিরা শটী জিজানে, "তনর ,
এ কি দেখি বক্ষ: কেন কড চিহ্ন ম্ব
ক্ষেত্র কাবিরা শটী জিজানে, "তনার ,
কেন চহল—এ কি সব অস্ত্রের প্রহার ?"
জয়য় কহিল, "মাতা, আমার উরসে
ছিল না কলর কভু অস্ত্রের পরশে;
কেবল সে শিবদত্ত অস্ত্র-তিশ্ল
এবার ধরেছি বক্ষে — না ছও ব্যাকুল—
মন্তু অস্ত্রে দেব, অক ভেদ নাহি হর,
শিব্রে ত্রিশ্ল চিহ্ন অচিহ্ন এ নয়।
তানিয়া পুত্রের বাণী কহিলা ইন্ত্রাণী,
"বংস রে, কডই কই ভ্রিলা না জানি;

জান নাই কভু আগে অন্তের বাজ্ঞা—
না জানি সহিলা কত বিষম বেদনা !
হার শিব ! হে শকর ! হে দেব শূলিন্ !
বাম কি শচীর প্রতি তুমি চিবদিন ?
হার উমা ! শচীরে কি কিছু প্রেহ নাই ?
কি দোর করেছি করে, কহ তব ঠাই ?
তোমার নন্দনে, গোরি, কতই যতনে
রেখেছি অমরালয়ে, বিদিত তুবনে;
পার্কতীনন্দন, কল, দেব-দেনাপতি—
শচীর নন্দনে উমা কৈলা এ হুর্গতি!
বে অম্বর করিলা এ ত্রিশ্ল প্রহার!
সেই ব্র মহেশুরি, আপ্রিত তোমার !"

কহি তু:বে কহে শটী, "আমায় উদ্ধারি কাল নাই, বৎস, আব হরে অস্থারী। লানিবে অথে কি আমি মানসে স্থরণ করিতাম তোরে হেথা করিতে গমন! শতবার ঐদ্ভিলার চরণ সেবিব, অকাতবে স্থর্গের আসন তারে দিব, তোমার কোমল অদে বিশ্ল-প্রহাব, লারর চক্ষেত্র, নারিব চক্ষেত্র দেখিতে আমার।"

শুনিরা মাতার বাক্য ইন্রস্তুত কয় —
"জননি, ছাডিব তোমা যাতনার ভর ॰
চিন্ধা দ্র কর স্থির হও গো জননি;
আাশীর্কাদ কব পুত্রে বাসবঘরণি,
পারিব ধরিতে বক্ষে আবো লক্ষবার
তব আশীর্কাদে শিব-ত্রিশ্ন-প্রহার।
কহ মাত: কি কারণে স্বরিলে আমায়,
কি বিপদ্ উপস্থিত, বিপক্ষ কোথায় ৽

চপলা শুনিষা, শচীনন্দন-বচন,
বিন্ধারি কহিলা তারে সর্ব্ধ-বিবরণ।
কলপ নৈমিবে আদি ভীষণ-বারভা
প্রকাশিলা যেইরূপ প্রকাশিলা তথা।
শুনিষা জয়ন্ত বেন দীপ্ত হুতালন,
জলিতে লাগিলা কোনে, বিশ্বত নয়ন।
দেখি শচী কহে, "বংস, হও বে শীতল,
অম ভিছুলণ এই নৈমিয-মওল,
হের, বংস, মুধাকর উঠিছে গগনে,
স্লিশ্ব হও ভিছুল্ণ শশীর কিরণে।
মহীতে মাধুরীমন্ন মুধার সকাল,
অক্ষাত্র আহিছে এই চক্রমা-প্রকাশ,

উহারি কিরণে তব তমু সুকুমার, कुड़ारव किकिए, कत्र खत्ररश विश्वात ।" প্ৰিয়া জননী-বাক্য জয়স্ক তথন অঙ্গেতে কবচ পুনঃ করিলা বন্ধন; চিস্তিয়া চলিলা শীরে কানন-ভিতরে, শীতল সমীর সেবি হেরি শশধরে। চপলা কানন রচি, আনন্দে বিহ্বলা, বেডার চৌদিকে স্থথে হইরা চঞ্চলা। ভ্ৰমিতে ভ্ৰমিতে হেরে পুৰুষ ছঞ্জন কানন-নিকটে ভাবে সংশ্বে হেমন। জিজাসিছে এক জন চাহি অন্ত প্রতি, "কোথায় আনিলা দৃত, আইলা কোন পথি ? নৈমিয-অরণ্য কোথা দেখি যে উত্থান. স্বর্গের নন্দনত্ল্য পূর্ণ পুষ্পদ্রাণ; চাক মনোহর লতা পল্লব মধুর, প্রিকলকাকলিত নিকুঞ্জ মঞ্জুর; মোহকর মনোহর স্থান্ত্রিক বাতাস. কিরণে জিনিয়া চক্র পুরণ প্রকাশ; কোথার নৈমিষ্বন ? অমরাবতীতে এখন (ও) ভ্ৰমিছ ভ্ৰমে, না আসি মহীতে।" দত কহে "জানিতাম এথানে নৈমিষ. না জানি কি হৈল তবে হারায়েছি দিশ। হটল দে বছদিন মৰ্ত্যে নাহি আদি---হবে বা নৈমিষ এই—এবে কুঞ্জরাশি।" হেনকালে চপলারে দেখিতে পাইয়া. জিজাদা করিলা তার নিকটে আসিয়া। চপলা কহিলা, "কেন, কিসের কারণ, নৈমিৰ অৱণা দোঁতে কর আংবৰণ ? এই সে নৈমিষ, আমি নিবসি এথানে . প্রকাশিয়া বল ভনি কি বাসনা প্রাণে গ দিব ইচ্চা যাহাতব, এ বন আমার— দেখ অরণ্যের কৈছু নন্দন-আকার। वल चार्रा कार्त्र एंड. श्रृंक्य कि नाड़ी ? পার কি চিনিতে বৃত্তি আমি যেন পারি। হাতে দেখি পারিজাত না হবে মানব---চার বে দে স্বর্গ বথা অমর-বৈভব।" ভাবিলা ভীষণ, তবে এই হবে শচী, यादात नक्तरन मर्खा चारक द्रि। প্রায়ল-পরাণে কছে, "ধর এই ফুল--शारक नारि मान, ठिक् जानिताक हुन ;

দেব-দত আমি, দেবি, ইজের প্রেরিউ, তৰি সুরেশরী শচী ভূবনে বিদিত। যুদ্ধে জয় অমরের স্বর্গ অধিকার, তিরস্কৃত দৈত্যকুল ভাড়িত আবার, স্বৰ্গ এবে শাস্ত পুনঃ তাই সুরুপতি, পাঠাইবা ল'তে ভোমা আপন বসতি।" ঈষৎ হাসিয়া তাহে চপলা কহিলা ;---"আমার সন্দেশবহ চিনিতে নারিলা। পেয়েছ দতের পদ শিথ নাহি ভাল-ইন্দ্রে দৃতত্বপদ বড়ই জ্ঞাল। শিথাৰ উত্তমকূপে পাই সে সময় তুমি দৃত, আমি দৃতী, জানিহ নিশ্চয়। পুরাতনে প্রয়োজন নহিলে কি এত ? নতনে নতন জালা বঝে না সঙ্কেত।" 'শিব।' বলি দতবেশী কহে দৈতাচর. "চিনেছি চিনেছি—ভ্রান্তি নাহি অতঃপর। শচীসহচরী তমি বিফুর মহিলা"---"আবার ভূলিলা দৃত" চপলা কহিলা-"থাক মেনে, আর কেনে দেহ পরিচয়---মুর্থের অংশেষ দোৰ কহিন্ত নিশ্চয়, ওহে দৃত বুঝা গেছে তব গুণপনা— नात्री टिना प्रति टिना दुर्घ एटेना। नहि इति श्रिक्षा आसि देव क्षेत्री कमला, শুন দৃত শচী-দৃতী আমি সে চপলা। আশা করি আসিয়াছি ইলের আদেশে. না হবে নৈরাশ ভাগো ঘটে যাহা শেষে। বলিয়া চপলা চলে: পশ্চাতে ভাহার চলিলা পুরুষ পারিজাত হত্তে যার। দেখিয়া কানন-শোভা মোহিত ভীষণ. শত শত উপবন অমরমোচন নিৰ্থিলা চারিদিকে—নির্থিলা তার ক্রজ বিহল কত আনলে বেড়ার; পলাশ-বল্লৱী, পুষ্প তরুণ লভার সুশোভিত নদনের সদৃশ শোভার। লভার লভার ফুল, শাথার শাথার শিপিনী নাচার পুচ্ছে চন্দ্রক-মালার; ঝাঁকে ঝাঁকে সরোবরে ব্রভতী-উপরে মধুলিহ পড়ে চলে স্থাপ মধুভারে 🛊 তরুণ অরুণ কিবা মৃত্যু শশংর জিনিয়া মৃত্ত রশ্মি কানন-ডিভর !

প্রবণ্-স্থানিশ্বকর মধুর নিঃখন কাননে ঝরিছে নিত্য করিয়া প্লাবন। प्रशास्त्रण ईसिखिया तर्म स्त्रित्रत्म : কলদবরণ প**র্চে** স্থলিবিড কে**শ**। মধে আভা ভাক যেন উৎলিয়া পডে। গান্তীৰ্য্য-প্ৰতিমা বিধি দেহ ষেন গড়ে! দেখিয়া ভিষেত-নেত্ৰ হইল ভীষণ. বাকশক্ত শ্রুতিশক্ত করে দর্শন। নিখ্যাট কবি যবে বন্ধা অক্সাৎ কবিলা মানব-চিতে চৈতল প্রভাত. আদিস্ট দেই প্রাণী নবসর্যোদয় যে ভাবে দেখিলা দৈত্য সেই ভাব হয়. সংজ্ঞানাই চিকানাই নাহি আংআজোন, চক্ষতেই গত ধেন চৈত্ত প্রাণ। প্রবেক কাল হেন অভিতে থাকিয়া---চপলাৰে জিজাসিল ভাবিয়া**চিক্সিয়া**— "প্ৰন্ত্ৰ-ভাৰ্যা শচী এই কি ইন্দ্ৰাণী ?" চপলা কহিলা, "এই তিদিবের রাণী।" জানিকে লাগিল মান জীয়ণ তথন 'সভাই সংগ্ৰেবাণীইজাণী এ জন। কোৰায় ঐদ্রিলা—বৃধি দাসীর সে দাসী. তলনায় নহে এর চিতে হেন বাসি। ধর সরপতি ইন্দ্র এ অকণ যার চিরোদিত গ্রুমাঝে ঘচায় আঁধারে॥" নানাচিতা এইরপ করে মনে মনে. নাব্যে পর্বে শচীলইবে কেম্নে.. অচল নিৱ্ৰি যার বদনপ্রভায় প্ৰশে কেমনে তায় ভাবিয়া না পায়. বিষম বিপদ ভাবে উভয় সম্বট ভাবিলা সে কার্যাসিদ্ধি অসাধ্য তুর্ঘট . অনেক চিভিয়া প্রির নারিলা করিতে. কিরপে লইবে শচী অমরাবভীতে।

হেনকালে ইতন্তত: ভ্ৰমিতে ভ্ৰমিতে।

অয়ন্ত ভীৰণে দূৰে পাইলা দেখিতে।

'অবে বের কপটা দৈতা' বলিরা তথন

বাইলা তুলিরা থজা যেন হুঙাশন;

কহিলা ভীৰণে চাহি ক্টদৃষ্টি ধরি

ফণকাল খজা শুল্পে সংবরণ করি—

চল্ এ কানন-বহিভাগে শীক্ষ চল,

জননীর বাস্জুষি নহে যুদ্ধল,

নহে বৈধ স্ত্রীকাতির সমূপে সমর , চল এ উজান চাডি, পাষ্থ বর্ষর।"

চল এ উদ্ধান ছাড়ি, পাষ্ড বৰ্ষর !" अवस्य रम्थियामाञ हिन्दा रशन पृत्र ; ধরিল বিকট মর্ভি ভীষণ অসুর। গর্জিলা সিংছের নাদে শেল ধরি করে: ঘরার শক্তেতে ঘন মেঘের বর্ঘরে 1 না ছাডিতে গেল শীঘ্ৰ বাসব-নন্দন "জননি, অন্তর হও" বলিয়া তখন। বেগে ভেলাইয়া থড়া জীয়ণ গৰ্জিয়া পড়িল বিভাৎ যেন নিকটে জাসিয়া: শক্তে থেলাইয়া অসি বিজ্ঞলী আকার. চকিতে স্বন্ধের মলে করিল প্রহার। বিক্লিঃ হইয়ামুও পড়িল অন্তরে. খোর শব্দে পড়ে গাত্র ভতল-উপবে। শালবক্ষ পড়ে যেন হইয়া ছেদিত, অথবা আগ্নেরশঙ্গ অগ্নি-বিদারিত। শক্ত কৰি ভীষণের সঙ্গী ধেই জন প্ৰবেশিলা জেডগড়িত ভেলিয়াকানন। দেখিয়া তাহারে কহে জয়স্ত কর্মণ---"তুই তৃচ্ছ, তোরে নাহি করিব পরশ। ষা রে দাস যা রে ফিরে দৈত্যের নিকট, সমাচার দিস—তার ভীষণ বিকট জন্মতের থড়ুগাঘাতে লুটে ধরাতল, অবল আনার যারে ইচছা পাঠাইতে বল। ভেট দিস দৈত্যরাজে-- ধর মুও ধর।" বলিয়া নিকেপি মুগু ফেলিল অন্তর। ত্রাসিত, অস্থির দৃত বিশ্বিত ভাবিয়া, বত্রাস্থরে বার্ত্তা দিতে চলিল ফিরিয়া। জয়ন্ত আনন্দিতে, জননী-নিকটে---উপস্থিত হৈলা আসি এডায়ে সঙ্কটে।

यष्ठं मर्ग

বেষ্টিরাছে ইন্দ্রপুরী দৈব-অনীকিনী,
চৌদিকে বিস্তৃত বেন সাগর-সিকতা,
বোজন বোজন ব্যাথ, প্রদীপ্ত ভাছতে—
দেবকুল সেইরূপ দিক্ আচ্ছাদিয়া।
দূরস্থিত, সন্নিহিত বত শৈলরাজি
অব্যোদ্য-গিরিশৃত প্রভার উক্ষর্ল

चनरुद्ध ममुमन्न नक्ष्य वा वर्षा বিস্মীর্ণ হইয়া দীপ্তি ধরে চতর্দ্ধিকে। প্রাচীরে প্রাচীরে দৈত্য ভীষণ-দর্শন--পাষাণ সদশ বপু দীর্ঘ, উরস্থান--নানা অসুধবি নিতা করে পরিক্রম ভীমদর্পে ভীম-তেন্তে গর্জিয়া গর্জিয়া. জাগ্রত, সুসজ্জ, সদা যুদ্ধের সজ্জায়, स्त्र देवजा वर्षा वर्षा. वर्ग चात्नाविश्रा, আচচাদি সমেক-অঙ্গ বৈজ্ঞান্ত চাকি, খোর শব্দ সিংচনাদ, অম্বর বিদারি ! অস্বন্তি, শৈলবৃত্তি, প্রতি-অহরহঃ, অন্ত আকল করি উভয় দৈকেতে: রাত্রি-দিবা যেন শক্তে নিয়ত বর্ষণ, বিতাৎ-মিশ্রিত শিলা দিকে দিকে ব্যাপি। নিদ্ধ-আলয়ে ছেন অমর-দানবে জ্ঞলিছে সমর্বহি নিত্য অহরহঃ; বেষ্টিত অমরাবতী দেব-দৈরুদলে। অদাদেশকা উভ দেবতা-দহুজে। অৰ্ণবের উৰ্বিৱাশি ষ্থা প্ৰবাহিত অহনিশ, অমুক্ষণ, বিরতি-বিশ্রাম, শ্ৰোভন্নতী বিধাবিত নিম্নত যদ্ৰপ ধারা প্রদারিয়া গতি সিন্ধ-অভিমূথে:— সেইকপ অবিশ্রাম দানব অমরে इम्र युक्त ष्यहत्रहः, वर्ग-वहिट्फं'्न, জ্য-প্রাজ্য নিতা নিতা অনিশ্চয় — দৈতোর বিজয় কভ, কথন ত্রিদশে। সভাসীন বতাস্তর স্থমিত্তে সম্ভাবি কভিচে গৰ্জন করি বচন কর্কশ— "যদ্ধে নৈল প্রাক্তিত এখন (ও) দেবতা! এথনও স্ববগ বেষ্টি দৈবত সকলে। সিংহের নিলয়ে আসি শগালের দল প্রকালে বিক্রম হেন নির্ভয়-স্রদ্রে ? মন্তমাতকের শুড়ে করিয়া আঘাত খাপদ বেডায় হেন করি আকালন ? ধিক আজি দৈত্য নামে। হে দৈনিকগণ! সমরে অমর ত্রস্ত করিলা দানবে! কোথা দে সাহস বীর্ঘা শৌর্ঘা পরাক্রম. দহজ বাহার তেজে চির-রণজ্মী ? সসাগরা বস্তমরা যুদ্ধে করি বার, প্রকাশিল কতবার অতুল বিক্রম,

নাহি স্থান বস্থধার কোথাও এমন. কম্পিত নাহয় আজি দানবের নামে---পশিলা অমরাবতী জিনিয়া অবনী, বিশ্বিত করিয়া বস্থন্ধরাবাদিগণে. জিনিল স্বরগ যদ্ধে অন্তত প্রতাপে মহাদন্তী সুরকুলে সমরে লাঞ্রি।; থেদাইলা দেববুদে পাতালপুৰীতে-শশকবনের মত -- দৈত্য-অসাঘাতে অচৈতক্ত দেবগণ ব্যাপি যুগকাল তুর্নিবার দৈত্যতেজ না পারি সহিতে ! সেই পরাজিত তিরস্কত স্বরসেনা আমাবার আসিয়া দক্তে পশিল সংগ্রামে : না পারি জিনিতে তায় স্থজিফ হইয়া त्त्र जोक मानवर्गन। नात्म कलक्षिना। আপেনি ধাইব অলুপশিব সমৰে: ঘুচাইব অমরের সমরের সাধ।

বলিয়া গৰ্জিশা বীর বৃত্ত দৈত্যপতি, ধরিলা শিবেব শল সিংছের বিক্রম। দেখিয়া আসিত যত দান্ব সৈনিক. ব্ত্রাসুর-জ্মাস্ত হেরি নিশুক্ত সকলে। "আন রে সে শিবশ্ল—আন রে অমর-বিজ্ঞী ত্রিশূল যাহা দানিলা শঙ্কর।" নির্থে মাত্রুয়থ যথা গ্রুপতি বিশাল বুক্ষের কাও উপাড়ি, শুওেতে তলিয়া গগনমার্গে বিস্তারে যথন. ল্ল-উচ্চ শভোব নাদে বংহিত করিয়া। তথন বুত্তের পুত্র বীর কন্দ্রপীড়---শোভিতমাণিক ওচ্চ কিরীট যাহার. অন্তেল শ্ৰীর যার ইন্দাস বাতীত. কহিলা পিতারে চাহি হয়ে কুতাঞ্জলি .-কহিলা—"হে তাত জিফু দৈত্যকলেশ্বর **অভিলাষ नन्मत्मत्र निर्दाम চর্বে.** কর অবধান পিতঃ, পরাও বাসনা, দেহ আছে৷ আমি অভ বাই এ সংগ্ৰামে ষশবিৰ ৷ যশঃ যদি সকলি আপনি মণ্ডিবেন নিজ শিরে, কি উপায় তবে, আবাজ্যজ আমরাতব হব যশোভাগী ? কোন কালে আমরা তবে লভিব সুখ্যা कीर्वि याहा-वीतनक वीत्तत आताधा, বীবের বাঞ্ছিত যশ্য ত্রিভবনে যাহা,

সকলি আপনি পিতা কৈলা উপাৰ্জন কি বাথিলে বণকীৰ্দ্তি মণ্ডিতে তনৱে? ভাবিতে ত হয় তাত, ভবিষাতে চাহি সম্ভতি পিতার নাম রাখিবে কিরুপে গ कानिना रा राभागील, अमीश रकमरन বাথিবে তব অঙ্গঞ্গণ অভঃপরে ? জন্ম বুথা। কর্ম বুথা। বুথা বংশখ্যাতি। কীর্ত্তিমান জনকের পুদ্র হওয়া বুথা। অনোমে যদি নাধ্য হয় সর্বলেশ ক— জীবনে জীবন-অল্নে চিরস্থাণীয়। বিভব, ঐশ্বর্যা, পদ সকলি সে বথা। পিতভাগ্য হয় যদি ভোগ্য তনয়ের . পজা সেই কোন কালে নহে কোন লোকে, গলবিশ্ববং ক্ষণে ভাসিয়া মিশাষ। বিজয়ী পিতার পুলু নহিলে বিজয়ী: গৌবৰ সম্পদ তেজঃ নাঙি থাকে কিছ. ভ্ৰমিতে পশ্চাতে হয় ফেকবুন্দবৎ, দানব অমব ষক্ষ মানব দ্বণিত। সুববুন্দ পুনর্কাব ফিবিবে এ স্থানে, তব বংশজাতগণে ভাবি তুচ্ছ কীট, না মানিবে কেছ আবে বিশ্ব-চরাচবে. তেজ্বী দৈতোর নামে হইয়া শক্তিত। ষশোলিপা কদাচিৎ ভীকর (ও) অন্তরে উদ্দীপ্ত হইয়া তাবে করে বীর্যাবান !— বীরের অংগই যশঃ যশই জীবন : সে যশে কিরীট আজি বান্ধিব শিরসে। কর অভিষেক, পিতঃ, এ দাদেবে আজ সেনাপতি-পদে তব, সমরে নি:শেষি ত্রিংশংক্রিকোটি দেব, আসিয়া নিকটে ধরিব মন্তকে দেখ অবই পদবেণু। জানিবে অস্তুর স্থর—নতে সে কেবল দানবকুলের চূড়া দানবের পতি. অজেয় সংগ্রামে নিত্য-অনিবার্য্য রণে ষম্ভ বীর আছে এক---আগ্রন্ধ ভাঁহার।" চাহিয়া সহর্যচিত্তে পুত্রের বদনে.

চাহিরা সহর্ষচিত্তে পুত্রের বননে,
কহিলা দস্তেম্বর ব্ঞান্থর হাদি ;—
"কন্তুপীড় ! তত্ত্ব চিত্তে যত অভিলাষ,
পূর্ব কর যশোরশি বার্দ্ধির। কিরীটে ;
বাসনা আমার নাই করিতে হরণ
তোমার সে বশংপ্রভা পুত্র যশোর !

ত্রিলোকে হয়েছ ধন্ত, আরও ধন্ত হও দৈত্যকল উজ্জলিয়া দানব-তিলক। তবে যে ব্রের চিত্তে সমরের সাধ অস্থাপি প্রোজ্জল এত হেত দে তাহার যশোলিপা নহে পত্ৰ, অন্ত দে বাল্সা নারি ব্যক্ত করিবারে বাক্য বিভাসিয়া! অন্ত তব্দময় দাগ্ৰগ্ৰহন. বেলাগর্ভে দাঁডাইলে মথা স্থাকব, গভীব শর্কবীযোগে গাচ ঘনঘটা বিচাতে বিদীর্ণ হয়, দেখিলে সে স্থা---কিংবা সে গঙ্গোত্তী-পার্গে একাকী দাঁডায়ে নির্থি যথন অম্বরাশি থোব নাদে পডিছে পর্বাতশঙ্গে স্থোতে বিলুঞ্জিয়া ধরাধর ধরাতল করিয়া কম্পিত। তখন অস্তবে যথা দেহ প্লকিত চুজ্জন উৎসাহে ২ন সূথ বিমিল্রিড. সমর-ভরকে পশি. থেলি যদি সদা সেই সূথ চিত্তে মম হয় রে উথিত। সেই সূথ সে উৎসাহ হায় কত কাল না ধরি হৃদয়ে, জয় স্বৰ্গ যে অবধি, চিত্তে অবদাদ দদা—কোথাও না পাই দ্বিতীয় জগৎ যদে লভি প্রবর্ধার. নাহি স্থান ত্রিত্বনে জিনিতে সংগ্রামে. ভাবিয়াবুত্রেব চিত্তে পডিয়াছে মলা, দেখ এ ত্রিশল- অকে পডিয়াছে যথা সমর-বিরভি-চিহ্ন কলন্দ গভীর। যাও যদ্ধে তোমা অন্ত কবি অভিযেক দেনাপতি পদে, পুজু, অমর ধ্বংদিতে যাও, যশোবিমণ্ডিত হইয়া আমাবাৰ এইরূপে আসি পুন: দাঁড়াও সাঞ্চাতে।"

কদ্রপীত প্রক্ষিত, পিতৃ-পদগৃলি
সাদরে লইলা শিবে শুনিয়া ভারতী,
এ হেন সময়ে দৃত নৈমিদ হইতে
প্রত্যাগত, সভায়লে হইল উপনীত।
দ্বে দেখি দৈতাপতি উৎস্ক-হদয়,
কহিলা "সন্দেশবহ, কি বায়তা কহ ?
কিল্লপে এ প্রীমধ্যে প্রবেশিলে তুমি ?
কোথা ইক্সালা শটী কোথা বা ভীষণ ?"

আখন্ত হইয়া দৃত কিঞ্চিৎ তথন ক্হিতে লাগিলা পুরী-প্রবেশ-উপায়,

হেমচন্দ্রের গ্রন্থাবলী

বায়ুতে চঞ্চল মথা বিশুদ্ধ পলাশ, রসনা তেমতি ক্রত বিকম্পিত তার। কহিলা "প্ৰথম যবে আমাইজ এ জানে. স্বৰ্গ হ'তে বছৰুৱ হিমাচলপথে উত্তর পর্বাত শক্ষে প্রথম সাকাৎ হইল আমার দেব-অনীকিনী সহ। बाना इल नाना ८४न विविध दकोनेल আশ্রম করিয়া পরে হইতু অগ্রসর, চিনিতে নারিলা কেহ, অতঃপর শেষে পুরী-প্রান্তভাগে আসি হৈত্ব উপনীত। প্রাচীর-নিকটে আসি অনেক চিল্লিয়া উদয় হইল চিকে, জাগৰিত ধথা সূৰ্য্য আদি দেব যত নিত্য অস্ত্ৰধারী. ভ্রমে নিড্য অধিরত হার নির্থিয়া। আসর বিপদ চিত্তে হইল উদয়, জটিল কৌশল এক গৃঢ় প্রতারণা---ঐতিলার পিতভমি হিমালয়-পারে. হয় যুদ্ধ সেইখানে গ্রুক্-দান্ধে. সেই সমাচার লয়ে ত্রিত গমনে ঐক্তিলা-নিকটে যাই, পিত্রাদেশে ভার, দৈতাকুলেখর বুত্র মহাবলবান সমরে সহার হন এ জার প্রার্থনা।---এ প্রস্তাবে দেবগণ শুভ ভাবি মনে चारमम कविन स्मारत भूती अविनिष्ठ. আদেশ পাইবামাত্র পুরীতে প্রবেশ করিয়া প্রভুর পদে আদি উপনীত।"

শুনিয়া দূতের বাক্য কহে বৃত্ধায়ের , — "এ বারতা দৃত ভোর অলীক কল্পনা সদে শটী ইন্দ্রপ্রিয়া ভীষণ সংহতি— ় শচী কি সে ফুর্য্য আদি দেবে অবিদিত ?"

দানবরাজের বাকো দ্তের রদনা
হইল জড়ডাপ্র কপেবিরহিত—
যথা নব-কিশলর বরুষার নীরে
আর্প্রডকু, বিলখিত তরুর শাথায়।
স্থমিত দানব-মন্ত্রী কহিলা তথন,—
"দৈত্যেশ্ব, দৃত বৃদ্ধি হৈলা অগ্রগামী,
পশ্চাতে ভীবন ভাবি আ(ই)দে শচী সহ
মদলবারতা নিত্য তড়িৎ-গমনা।"

নতমুথ নিষদৃষ্টি দৃত কুলমতি, কৈহিলা—"না মন্ত্ৰি, ব্যৰ্থ আখাস ভোষার ; নৈমিষ-অরণ্যে শচী জন্মন্তের সনে করিছে নির্ভয়ে বাস—ভীষণ নিহত।"

"ভীষণ নিহত।"—গৰ্জিলা দানবপতি।
"হা রে রে বালক—অমন্ত ইল্লের পুল,
আমার সংহতি সাধ বিবাদে একাকী!—
দন্ত তোব এত γ" বলি ছাভিলা নিধাস;
"কণ্ডপীড় পুল, শুন কহি সে তোমারে,"
কহিলা ভনরে চাহি গাঢ় নিরীক্ষণে—
"বশোলিন্দা চিতে তব অতি বলবতী,
কর তথ্য অমন্তের করিয়া আহতি,
শচীরে আনিতে চাহ অমবাবতীতে,
অক্সধা না হয় বেন যাহ ধরাবামে;
শত যোদ্ধা মুদৈনিক বীর অগ্রগণা
লহ সক্ষে অচিরাৎ পালহ আদেশ।"

কুতাঞ্চলি হয়ে মন্ত্ৰী স্থমিত তথন কহিলা —"দৈত্যেন্দ্র, এবে দেব-পরিবত বিস্তীর্ণ এ স্বর্গপুরী, কি প্রকারে কহ কুমাৰ ভেৰি এ বাহ হৰেন নিৰ্গত ? যতে পরাক্ষ যদি দেব-অনীকিনী. নিৰ্গত চইতে হয় আপনিতে শনীৱে. না বঝি তবে বা সিদ্ধ সত্তর কিরুপে কবিৰে কমাৱ কছ, তব অভিপ্ৰেত। অসংখ্য এ দেব-সেনা তর্জন্ব সংগ্রামে. অমর ভাহাতে সবে সুদূঢ়-প্রতিজ্ঞ, শক্ষিত নহেক কেহ অন্ত-অস্থাঘাতে. यक्तिक ना हरत भित-खिभन विहरन। ভবে কি আপনি যুদ্ধে করিবেন গতি, কুমার সংহতি অজ. দানব-ঈশ্বৰ ১ বিম্কুকরিয়াপথ পাঠান যভূপি, কি প্রকারে পুন: হেথা ছবে বা নিবেশ ?"

দৈত্যেশ কহিলা;—"মন্ত্রি, সেনাপতি-"
বরণ করেছি পুলে, না যাব আপনি,
কল্রপীতে দিব এই ত্রিশ্ল আমার,
বাইবে আদিবে শূলহতে অবারিত।"
নিবেধ করিলা মরী তেরাগিতে শূল,—
"পুরী-রকা না হইবে অভাবে তাহার,
উপস্থিত হর যদি সঙ্কট তাদৃশ

সমূহ দৈত্যের বল হবে নিঃসহায়।" জতুটি করিয়া তবে ললাট-প্রদেশে ত্বাপিয়া অকুলিম্বর, গর্বা প্রকাশিয়া কহিলা দানবপতি ;—"মুমিত্র হে, এই—
এই ভাগ্য যত দিন থাকিবে বৃত্তের,
অগতে কাহার সাধ্য নাহি সে আমাম
সমরে পরাত্ত করে—কিংবা অকুশল ;
অমৃক্ল ভাগ্য যার অসাধ্য কি তার—
ধর রে ত্রিশ্ল, পুত্র, বীর ক্রন্থীত!"

কলপীড় কহে "মান্ত্রি, কেন অন্ত এত ? জান না কি অভেগ্ন এ আমার শরীর ? বাসবের অস্ত্র ভিন্ন বিদীর্থ কথন না হইবে এই দেহ অক্ত প্রহরণে। ইন্দ্র নাহি উপস্থিত, চিন্তা কর দূর, ঘাইব অমর বৃাহ ভেদিয়া সম্বর, আসিব আমার বৃাহ ভেদিয়া তেমতি শচীরে লইয়া সঙ্গে এ অরগপুরে। হে তাত, ত্রিশূল রাথ, নাহি ক্রভেজ দেহতে আমার, উহা নারিব তুলিতে, বীর কভু নাহি রাথে নিজ্ল আম্থ বিব্রত হইতে পশি সংগ্রামের স্থলে।"

এরপে করিয়া কান্ত মন্ত্রী, বুত্রাস্থরে, শত স্থগৈনিক দৈত্য সংহতি লইয়া অসুর-কুমার শীঘ প্রাচীর-স্লিধি উপনীত হৈল। স্থাথে স্থদজ্জিত-বেশে। অফুসঙ্গী বীরগণ সহিত মন্ত্রণা করিতে, কহিলা কেই ধূদ্ধ অবিধেয়, কহিলাবা অনুকেই সমর উচিত---কদপীত নিপতিত উভয় সঙ্গটে। निक रेफ्डा दलवजी, यर्गालिका शांह, ঘটনা তুর্ঘট আর ফুযোগ ঈদশ . যুদ্দই ভাঁহার ইচ্ছা একান্ত প্রবল, ছল কি কৌশল তাঁর নহে অভিপ্রেত। নিকপার কোন্যতে সমরে সমত না পারি করিতে অস্তু সঙ্গিণে সবে. অগতা৷ সন্মতি দিলা অবশেষে তবে **অন্ত কোন স**তুপার করিতে স্থান্থর। থির হৈল অবশেষে কাছার বচনে. ভীষণের সহচর দৃত যে কৌশলে পশিলা নগরীমধ্যে, অবলম্বি তাহা, নিৰ্গত হট্মা গতি কৰ্তব্য নৈমিৰে। কলনা করিয়া শ্বির, ঘারদেশে কোন আসি উপনীত ক্রত-অাসিরা সেখানে তুলিলা প্রাচীর-শিরে স্থন্তর পতাকা, দানবের যুদ্ধ-চিহ্ন শূল-বি**রহিত**। উডিল কেতন শুত্র শলে বিস্তারিত: প্রকাণ্ড অর্বপোত ছি ডিয়া বন্ধন. বাদাম উডিল বেন আকাশমার্গেতে. সমরকেতন আরু হৈল-স্কৃচিত। বাজিল সম্ভাষ-শন্থ, দৃত কোন জন বার্ত্তা লয়ে প্রবেশিশা অমর-শিবিরে: कश्चिमा (मनानीवर्र्) উচ্চमञ्जायस्य.---"বুত্রাস্থর দৈত্যপতি যে হেতু প্রেরিলা এক্রিলার পিতৃরাজ্য হিমালয়পারে, গন্ধর্ব-সমরে তাঁর বিপদ্ধ জনক দৈত্যেশ বত্রের ইচ্ছা প্রেরিতে সহায় শত যোদ্ধা দেই স্থানে শীঘ্র অবিরোধে . দেবকল তাহে যদি পাকহ সম্মত. সংগ্রামে বিশ্রাম তবে দেহ কিছুকাল, বহিৰ্গত হৈতে তবে দেহ শত যোধে. ঐদ্রিলার পিতবাজো কবিতে প্রস্থান।"

বার্ত্তা শুন দেবপক সেনাধ্যক্ষগণ—বকণ, পবন, অগ্নি, ভাষ্ণর, কুমাব — মিলিত হইয়া সবে করিলা মন্ত্রণা, কি কর্ত্তব্য দানবের এবিধ প্রস্তাবে। নিমেধ করিলা পানী — প্রচেতা স্থার,—"উচিত না হয় পথ দিতে দৈত্যখোধে, কপট, বঞ্চক, ক্রেব, দিতিস্থত অভি, নহেক উচিত বাক্য প্রত্যম্ন ভাদের! প্রস্তিলার দিত্রাক্য হৈতে দৃত কেহ যদিও আসিয়া থাকে অজ্ঞাতে আমার, বিখাস কি ভথাপি সে দৃতের বচনে? সেথানে থাকিলে পানী না ছাড়িত ভাষ।" স্বর্যা-অভিপ্রায়—"দৈত্য বোদ্ধা শত জ্ঞা

ক্র্য-অভিপ্রায়---"দৈত্য বোদ্ধা শত জন ঐক্রিলার পিত্রালরে বাক অবিরোধে, দেব-বোদ্ধা কিন্তু কেন্তু পশ্চাতে তাদের গ্রমন করুক বেন না পারে ফিরিতে।"

অগ্নি কহে—"তুই তুলা আমার নিকটে,
নিষেধ নাহিক তার নাহি অনিষেধ,
সম্বর দৈত্যের সনে বেইপানে বাক্,
সম্বর্ধে পশ্চাতে শক্র কি তাহে প্রভেদ
শতত অন্থিরচিত্ত পরন চঞ্চল,
ক্তু অভিমত্তে এর, কড় অক্তমতে,

অভিমতে দিলা তার- সদা অনিশ্চিত—
বে কহে বথন মিলে তাহার(ই) সহিত।
মহাদেন, দেনাপতি, সকলের শেষে
কহিলা পার্ব্বতীপুত্র—"বিপক্ষে কুর্ব্বল করাই কর্ত্তরা কার্য্য বুদ্ধের বিধানে;
দৈত্যের প্রস্তাব দেবপক্ষে শ্রেম্বর।
স্বর্গ ছাডি মহাঘোদা বীর শত অন ধরাতে করিলে গতি দেবেরই মদল,
হানবল হবে পুরী রক্ষক বিহনে,
শ্রেম্বরের ছাডিবারে অভিপ্রেত তাঁর।"

দেনাপতি-বাক্যে অস্ত্র দেবতা সকলে,
সম্মত হইলা—শীর প্রচেতা ব্যতীত;
বার্তা লব্নে বার্তাবহ প্রবেশি নগরে
কন্দ্রপীড-সম্মিগনে নিবেদিলা ক্রত;
মহাহর্ব হৈল সবে; দৈত্য বোধ শত
নিক্রান্ত হইলা শীঘ ছাডিয়া অমরা,
আহলাদে করিলা গতি পৃথিবী উদ্দেশে,
নৈমিয়-অরগে যথা শচী-বিবস্তি।

সপ্তম সর্গ

হেথা স্বরপতি ইন্দ্র ক্মেরু-শিথরে চাহিলা বিশ্বয়ে যেন নির্থি নৃতন গগন ভূতল মৃত্তি বিশ্ব অবয়ব। ক হিলা বাসৰ-"হায়, গত এত কাল! ষ্ণান্তর হৈল ধেন হইছে বিশাস ! ভাবি ষেন পরিচিত পূর্কের জগৎ ধরিছে নতন ভাব ছাড়ি পুরাতন। ষেধানে তক্ষর চিহ্ন আগে নাহি ছিল, কুমেরু-শরীরে, এবে নির্থি সেখানে প্রকাণ্ড প্রসারি শক্তে উন্নত-শিধর নিবিড় বিটপপূর্মহীরুহ কত ! পূৰ্বে হেরিয়াছি যথা কৌণী সমতল, পৰ্বত এখন দেখা শৃঙ্গবিমণ্ডিত. লতা-গুলানমাকীর্ণ প্রামল স্থলর. বিরাজে গগনমার্গে অঙ্গ প্রসারিয়া। গভীর সাগর পুর্ব্বে ছিল যেইখানে. বিস্তীৰ্ণ এখন সেধা মহা মক্তল, তক্-বারি-বির্হিত তাপদ্ম সদা

নিরস্তর সমাকীৰ বালুকা-রালিতে !
নক্ষ নৃতন কত গ্রহ নবোদিত,
নির্থি অন্তমানে হয়েছে প্রকাশ,
ত্র্যের মণ্ডল বেন অস্থান-বিচাত,
অপতেত বহুদ্র অন্তরীক্ষপথে,
এতকাল হৈল গতি পূজার নিয়তি,
নিয়তি এথন(ও) তুই না হইলা মোরে
আদিই না হই, কিংবা না পাই সাকাৎ,
না বুঝি কেন বা দৈব এত প্রতিক্ল।
আবার পূজিব তাঁবে ক্লান্ত প্রিয়া,
দেখি প্রতিক্ল তিনি হন কত কাল!
অন্ত চিন্তা, আশা, ইছা সব পবিহরি,
বুরের বিনাশ কিইল জানিব নিশ্চত।"

এত কহি আয়োজন করে পুরন্দর,
বসিতে পূজায়, পুন: নিয়তি তথন
আবিভূতা হৈলা আসি সগ্থে তাঁহার
পাষাণমুরতি, দৃষ্টি অতি নিরদয়।
মাধুর্যা কি সম্বন্ধতা কিংবা দয়ালেশ,
বদন, শরীর, নেত্র, কি ললাটে,
ব্যক্ত নহে বিন্দুমাত্র, নিত্য নিরীক্ষণ
করতলন্থিত ব্যাপ্ত ভবিতব্য-পটে।
অনক্রমানস, দৃষ্টি আলেখ্যেব প্রতি,
কহিলা নীরস বাক্য চাহিয়া বাসবে,—

"কেন ইক্ৰ। নিয়তি-পজায় ব্যা**প**ত ? নিয়তি নহেক তই কিবা কট কভ , অজ্ঞাত নহ ত তুমি সৃষ্টি হৈল মবে. তদবধি এ আলেখ্য অর্পিলা আমায় বিবিঞ্চি ক্মলাসন, নাহি সাধ্য মুম বার্থ করি অথমাত্র ইহার লিখন। च्यक्रश्री ऋगादश यक्ति रुग्न निर्णि अत्र. এ বিশ্ব-ব্ৰহ্মাণ্ড কণ ডিলেক না ববে. बक्ष थ्य इत्व ध्वा, मुक्त जननिधि, विमान देनरनम हर्ग इत्य व्यक्तिशेष। ৰিকলাক হবে বিশ্ব -- মন্ত্ৰা, দেবতা, চক্ত, পূর্য্য, গ্রহ, তারা কাল, প্রমাণু--বিশভাল হবে স্বৰ্গ, মন্ত্ৰ্য, বৃদাতল, ভাগোর এ লিপি যদি তিলার্দ্ধ খণ্ডিত। বাসৰ, আমার পূজা কি হেতু বুথায় ? বিবেক হয়েছ হারা পড়িয়া বিপদে, নির্ম্মল দেবের চিত্ত অসাধ্য সাধিতে।

তাই ভ্ৰান্ত হ'রে চাও অসাধ্য সাধিতে। নাহি চাহি, ভাগ্য তব ভবিতব্য-লিপি খণ্ডন কবিতে বিন্দু-বিদৰ্গ প্রমাণ।"

কহিলা বাসৰ ছ: পে,—"না চাহি কদাচ
অসাধ্য তোমার বাহা আমার তা দিতে;
কহ ভদ্ধ কি উপারে হইবে নিহত
দৈত্য-কুলপতি বৃত্ত ; কত দিনে পুন:
স্ববৃন্দ সহ ইন্দ্র অর্গে প্রবেশিবে,
কত দিনে পূর্ণ হবে দেবের তুর্গতি ?"

নিরতি কহিলা;—"ইন্স, কি উপারে হত হইবে দানবরাজ, কহিতে দে পারি, কহিতে উচিত কিন্ধ নহে দে আমার , তুমি না হইলে অন্তে জানিত না কিছু। তুমি সুরপতি ইন্স—তোমার কিঞ্চিৎ ভবিতব্য গৃঢ় লিপি করি প্রকটন ; ত্রন্ধাব দিবাব অন্তে বুত্রের বিনাশ,— জানিবে বিশেষ তথ্য যাও শিব-পাশে।" এত কহি অন্তহিত হইলা নিরতি।

বাসৰ সহৰ্য-চিত্ত চিন্তি ক্ষণকাল, ভাগ্যের ভারতী চিত্তে আন্দোলিয়া স্থথে. অচিরা**ৎ স্বপ্রদেবে করিলা** স্মরণ। কহিলা,—"হে দেবদৃত- স্থসন্দেশবহ, তোমার বারতা নিতা মঙ্গলদারিনী, শীঘ্ৰ যাও দেবগণ এখন ষেধানে. কহ গে তাদের দৃত,এ স্থবারতা, কুমেক-পর্বতেই পূঞা সাঙ্গ করি ধ্যান ভাঙ্গি এত দিনে হইলা জাগ্ৰত. নিয়তি প্রসন্ন তাঁরে হইলা সাক্ষাৎ, করিলা বিদিত রুত্র-বিনাশ ষেক্সপে। কৈলাদে ধর্জটি-পাশে করিলে গমন. কহিবেন স্বিশেষ দেব শ্লপাণি. ভবিত্তব্য-লিপি বর্থা, বুত্তের বিনাশ, এন্ধার দিবার শেষে, ভাগ্যের ভারতী। निव्रक्ति-चारमध्य अद्य देकनाम-ज्वरन জানিতে বিশেষ তথা পিনাকী-নিকটে शींठ मम , शूनकीत लिंछ निवासन, অচিরাৎ স্থরবুন্দ সংহতি মিলিব। বলিয়া চলিল। ইন্দ্র শিবের আলয়।

স্থান, বাসব-বাক্যে স্থা-জভিমুথে দেবগণ সমুদ্দেশ্যে করিলা গমন, বাসবের সমাচার করিতে ঘোষণা। সেধানে আদিভাগণ বসি নানা স্থানে বিত্তপ্তা করিছে নানা উৎস্থক অন্তব, কি উদ্দেশ্যে ব্রাস্থর নন্দনে আপন. সৈনিক সংহতি শত মর্জ্যে পাঠাইলা। শক্রপক্ষে, প্রত্যাশারে যাইতে আদেশ, কেহ বা উচিত কহে. কেহ অমুচিত, অলীক কথনে দৈত্য ছলিলা অমরে. কেহ বাসংশয়যজ্ঞ কেহ বিধাহীন। প্রচেতা চিন্তার মগ্ন ভাবি কিছুকাল, অমূভব কৈলা শেষে দৈত্য-অভিপ্রেত. শচীব প্রবাস মর্ত্তো ইক্র কুমেরুতে, তথ্য পেয়ে গেলা কোন অনর্থ সাধিতে। এরপ সংশর ভাবি প্রচেতা তথন. প্রকাশিয়া দেবগণে বিধা আপনার. কেহ কৈলা গ্ৰাহ্ম তায় কেহ না শুনিল. মতামত নানামত প্রচেতা-বচনে। দেব-দেনাপতি স্থল পাৰ্মতী-নলন কছিলা তথন—"বুধা তৰ্ক কেন এত গ ষাক মৰ্জ্যে দৃত কোন, আফুক জানিয়া ममत बंधार्थ कि ना शक्तर्य-मान्द्रत । সমাচার পেয়ে পরে কর্তবা বিধান ষা হয় হইবে শেষ, দত কেহ যাক।"

কহিলা প্রচেতা—"কিন্তু অবসর পেরে.
বটার উৎপাত বদি কি উপার তবে ?"
উগ্রমূর্ত্তি অগ্নি কোধে উন্নত তথনি

বাইতে বস্থা-নাঝে শত্রু সংহারিতে মন্ত্রণায় কালকর সর্বকর্ণে ক্ষতি, একাকী বাইবে মর্জ্যে সদর্শে কহিলা। তথন কহিলা স্ব্য্য—"বিপদ বছলি ঘটে কোন দেবে মর্জ্যে, তথনি স্মরণ করিবে সে শস্তু দেবে মানসে ভাকিরা, দৃত মাত্র এক জন প্রেরণ উচিত।"

হেন আন্দোলন হর দেবগণ-মাথে হেনকালে ইন্দ্র তু তুভবাতাথহ খপন আইলা সেধা, শীঘ্রতর অতি একত্র হইলা তথা আদিতেরগণ। সহর্বদনে দৃত অমরবুন্দেরে সন্তাসি, কৃহিলা আক্রা বাসবের যথা, কৃহিলা—"আমারে ইন্দ্র শী্ম পাঠাইলা

"এই জাতি ফুল তাঁর প্রিয় অতি" দেবিতে কিম্বরী ঐক্রিলা-ছহিতা অৰ্গে কি ছিল না কেছ? বলি কোন পুষ্প তুলে, বদিৰার সাধ" "এই পালঙ্কেতে ব্রন্ধাণ্ড-ঈশ্বর দানব-মহিধী বলি তাহে বৈদে ভূলে। मानी ठाहि खर्म रमह! "এই অসুগুলি আমাবে না কেন কহিলামহিষী খুলি কতবার খুলি সেই শবাসন, আমি দেবিতাম তাঁয়, কহিলা 'সাজাব রণবেশে তোমা পরে না কি তাঁর দাধের ভাণ্ডার শিখাব করিতেরণ।' শচী না সেবিলে পায় ? কেন আ (ই) লা দৈত্য এ অমবালয়ে এ ক'বচ আনকে দিলাকত দিন আছিল আপন দেশ; শিরে এই শিরস্থাণ। কটিবন্ধে কসি मिना এই अनि পরে দিয়া পীড়া লভিয়া এ যশঃ হাতে দিলা এই ব:৭। কি আশা মিটিবে শেষ ? অতি প্রিয় তাঁব किवि यनि दमर्भ অস্তুএই স্ব যার দিয়া তারে যান পুন: দৈত্যপতি, আমার সাধের অতি. কাঁর সাধে অঙ্গে ধরি এক দিন এ পোড়া আশঙ্কা এ ষয়ণা যত হেরে প্রিয় ফুল্লমতি। তবে সে থাকে না, বতি।" আমাহাএই ধয় চাক পুষ্পাময় ! রতিকহে "আহা। তুমি ইন্বালা দানব-কুলের মণি। মনমথ দিলা উায়, নাদেখি শচীরে তার শোকে এত যুদ্ধ-ছল করি কত পুপাশাব বিধুরা হইলা ধনি ! ফেলিলা আমার গায়। দেখিলে ভাহাবে না জানি সে কিবা এবে শুকারেছে হয়েছে নিৰ্গন্ধ করিত তোমার চিতে, প্রিয়ক্ব কত দিন, ক্ষণমাত্র কাল না প্রশে ইহা— সমর-ভরকে বঝি শোকভবে এই স্থানে না থাকিছে। বত তিনি অফুদিন। সে অঙ্গ-গঠন সকলি কোমল প্রিয়ের আমার মুখের সে জ্যোতি সে চারু গীবার ভাণ, नमद्र ऋधू निषय , সে গুঞ্চলনি হেন স্থকোমল হদর জাঁহার মহিমজড়িত. সে উরু উরস-হান। কেমনে কঠোব হয় ? অামিও বমণী রমণীও শচী গে দেখেছে, কভূ চির্দিন ভাব হৃদয়ে থাকয়ে পশি, তবে তিনি কেন তায়, নাকরিরাদ্যা হইয়া নিষ্ঠর দেখিলা সে বতি এ পোডা নয়নে পূর্ণিমার সেই শ্ণী। ধরিতে গেলা ধরায় ? ইন্দ্রাণী সে শচী কি হবে শচীব অমবার রাণী পতি নাই কাছে মহাবীর পতি মম, ভাহারে কিন্ধবী-বেশে. 'মামিও ষ্চপি পড়িসে কখন রাখিবে এখানে , রতিব অভাগ্যে বিপদে শচীর সম! দেখিতে হইল শেষে!" কহে ইন্দুবালা থাকিয়া এথানে হুকুমার-মতি ভাবিতে সে কথা "হায়, রতি, কি কহিলা! আমার (ই) হদর কাঁপে ! কবিছে কিন্তরী এ হেন রমারে না গানি একাকী গ্ৰুন কাননে দৈত্যেক্সাণী আকাজ্ঞিলা! শচী ভাবে কত ভাপে।

"হার ইন্দুবালা তুমি হুকোমলা পারিক্বাতপুষ্প ধেন, পতি যে তোমাব ভাঁহার হদর নিৰ্দিয় এতই কেন ?" "ব'ল নাও কথা মন্মথ-প্ৰেশ্বসী তৃমি সে জান না তায়; দেখ না কি কভু শৈল-অকে কভ খাত্নীর-ধারা ধার; না নিন্দহ তাঁরে শচীর লাগিরা বীর তিনি রণপ্রিম! শচীর বেদনা ঘুচাব আপনি ফিরিয়ে আসিলে প্রিয়। বাব শচী-পাশে করিব শুশ্রাবা যাতে সাধ দিব আনি, হইতে দিব না মহিধী-কিকরী কহিন্থ নিশ্চিত বাণী। মশ্মপ্রমণি। নাহি কর থেদ যাহ ফিরে নিজবাস. পতির এ দোষ যাহে ভূলে শচী পাইব সদা প্রয়াস। গাঁথিব না ফুল ভেবেছিম্থ আর থাকিবে অমনি ঢালা, এবে গুটাইয়া আরো হ্রতনে গাঁথিয়া রাখিব মালা। ফিরিবেন পতি যবে শচীল'য়ে পরাব তাঁহার গলে, পরাব শচীরে মনের আহলাদে মৃছায়ে চক্র জলে। পতিয় মালিক নারী না ঢাকিলে কে ঢাকিবে তবে আর," কুকুমের রাশি বলিয়া, লইয়া রসিলা গাঁথিতে হার। "कि माना शांशिटव ইন্দুবালা তুমি कि माना गांबिए बान ? পুষ্প গাঁথি দিত নিজ হাতে রতি তবু নাজুড়া**ত** প্ৰাণ। (प्रवच्छाधीदत সেবিত নিয়ত क्रामक खेळाग कति. अखिना मिविश সে আৰু এথানে द्रद्ध मानीटवन धद्रि !

এ ডঃখ তাহার করিবে মোচন দিয়া ভাবে পুষ্পহার ? कदिएल वक्षन ফুলের রজ্জ্তে বেদনা নাহি কি তাব ? আর কেন চাও ফুটাতে অঙ্ক্ব চরণে দলিয়া আগে, मानव-निमनि জান নাসে তুমি **इःशो**रत **भू जि**रम नार्ग। मृशिक्षी चानिष्ह আপন আলয়ে শৃভাল বাধিয়া পায়! রতির কপালে এও সে ঘটল দেখিতে হইল হায়।" নয়নে তথনি বলি বাষ্পাকুল-ममाथ-द्रमनी हतन, নির্থি ভাসিল রতি-চক্ষু-জ্বল इन्दोना हक्षला। পড়ি বিন্দু বিন্দু ক্**নু**মের প্রজে इन्ताना जीएथ क्न, ভাবিয়ে পতিরে ভাবি যুদ্ধভন্ন চিন্তাতে হ'য়ে আকুল। ভ্ৰিয়া গহনে কুবন্ধী ধেমন মৃগয়ীর দ্ব-রব, প্রতি পলে পলে চকিত চঞ্ল মৃত্যু করে অহভব , *মে*ইরপ ভয়ে চমকি চমকি গাঁথিতে গাঁথিতে চায়. ইন্বালা রামা ফুলমালা হাতে ক্ষদ্ৰপীড় ভাবনায়।

নবম সূর্গ

দেব দৈতা শত বোধ,
চলে শৃক্তে বিনা রোধ,
উদর অচল আদি হিমাচল-পথে ,
শৃকে শৃকে পদকেপ,
কৈমে পথ সংকেপ,
শৈলপথ ছাড়ি শেষে উতরে মরতে।

এংগ্রামে জিনেছি স্বর্গ সমূহ অসমরবর্গ. ্রথন সে অতি তৃচ্ছ দানবের দাস , ইন্দ্রের বনিতা যেই. দাসের বনিতা সেই. উচিত নহে সে ছাডে প্রভূপত্নী পাশ। কি যুদ্ধ আমায় দিবি, যুদ্ধ কি তাকি জানিবি, জানে সে জনক তোর বাসব কিঞ্জিৎ, জানে সে অমবগণ. অস্থরের কিবারণ, আছিল পাতালে প'ডে হাবায়ে সংবিৎ। লজ্জা নাহি চিতে আদে, নিন্দা কর হেন ভাষে, ষে জন তৈলোক্যজয়ী বুত্তেব কুমার, হারায়েছি শত বার. হারাইব আরবার. তুই সে নিৰ্লজ্জ বড ছুঁইবি আমাবাৰ। সেই দীপ্ত হুডাশন ? ভয়ে যার অদর্শন. ংয়েছিলি এতকাল হতাশে কোথায়! ধর অস্ত্রণ, বল যুদ্ধে সম্ভাষণ, সাহস ধরিয়া প্রাণে করিবি কাহার ? "বুথা বাক্যে কাল যায় সকলে একত্র আয়" কহিলা জয়ন্ন, "যুদ্ধ দেখ্বে দানব , ধরু অস্ত্র শত ধোধ, এথনি পাইবে বোধ. বাসব-নন্দন তুল্য বিজয়ী বাসব।" विन किना मिश्हनाम, দৈত্যের শঙ্যের হাদ, অরণ্য আলোড়ি, শুক্ত করিল বিদার , শতবোদ্ধা একেবার, কোদত্তে দিল টক্ষার, মেঘের লিনাদে খোর ছাড়িল ছকার। অন্ত শব্দ সব স্তব্ধ, (मव-रेष्टा यूकांत्रक, কেবল ভ্সারধ্বনি ৰাণের গর্জন;

আন্দোলিত হয় সৃষ্টি. স্থরাহ্ররে শরবৃষ্টি, रेमटलटक रेनटलटक रचन मना मः पर्वन । क्षपन, भूषल, भना, প্রক্ষেডন, চক্র, ভল্ল, দৈত্যের নিক্ষিপ্ত অস্ত্র বরিষে করকা। জয়স্তের শররাশি চমকে তমসা নাশি. অন্তর্গীকে ধার যেন নিকিপ্ত তারকা। **क्यांत्र-मार्क्त् लक्ष्ल**, শুনিয়া সে কোলাহল. ভ্ৰমে ভয়ে ছাডি বন, পৰ্বাত-গহৰৰ, বিহক জডায়ে পাখা. ত্রাদেতে ছাডিয়া শাখা থসিয়া থসিয়া পড়ে ধরণী-উপর। ধুলিতে ধুলিতে ছন্ন, অভেদ নিশি মধ্যাহ, উদ্গীরিল বিশ্বস্তরা গর্ভস্থ অনল , অসুর-জয়ন্ত-ক্ষিপ্ত, শেল, শূল, শর দীপ্ত, ঘাত-প্ৰতিঘাতে ছিন্ন কৈল নভঃস্থল। ধরাতল টলমল, নদীকল কল-কল. ডাকিয়া ভাঙ্গিয়া রোধ, করিল প্লাবন; ঘূরিতে লাগিল শূক, र्भिनकून रेशन कुछ, চূৰ্ব চূৰ্ব হ'মে দিগ্দিগ্তে পতন। হেন যুদ্ধ দেবাস্থবে, হয় অৰ্দ্ধ-দিন পুৱে, তংন অন্নত-করতলে দীপ্ত-অসি. ছুটে ধেন নভস্বং, কিংবা ক্ষিপ্ত গ্ৰহ্বৎ, পডিল বেগেতে দৈত্য-মণ্ডলী ঝলসি। ৰথা সে অভনবাসী. তিমি তুলি জলরাশি, সাগর আলোডি করে পুচেছব প্রহার; যবে যাদঃপতি জলে, ক্রমে ভীম ক্রীডাচ্ছলে, উত্ত খ-পর্বাত-প্রায় দেহের প্রসার।

চপলার কানে কানে মৃত্ প্রনের স্থনে কহে "স্থি, দেখ কিবা হয়েছে শোভন , মৃত্রশি ক্লান্ত দেহে বেন পড়িয়াছে ক্লেছে मन्त्रात-कुञ्चरम रधन हन्द्रमा-कित्र। এই সুষ্মার থেলা চাঁদেতে চাঁদের মেলা चारा. चाकि ना प्रिक्ति. म्बि. श्रुवन्त्र : (मथा (म इहेरव यरव কহিব তাঁহারে তবে দেখিলে সে কত তাঁব জুডাত অন্তর। শুনে এ বৰ্ণ-সংবাদ করিতেন কি আহলাদ দিতেন কতই সুথে পুত্রে আলিখন; আশীর্কাদ করি কত ত্মিগ্ন হয়ে অবিরত ক্রিতেন স্লেহে আই বদন চুম্বন। যদি থাকিতাম আজ অমর-রুদের মাঝ অমরাবতীতে, স্থি, ইন্দ্রের ইক্রাণী। আজি কভ মহোৎসবে তুষিতাম দেব সবে কতই আনন্দে আজি ভাসিত পরাণী। জয়তে করিয়া সজে ভাসিয়া স্থ-তরকে ভ্রমিতাম কতই আনলে ত্রিভূবন; বিষ্ণু-প্রিয়া কমলারে ঈশান-প্রিয়া উমারে **रमशालाम हेक्क क्षित्रा महोत्र नमन**। একা যে করিলা রণ সহ দৈত্য শত জন সমরে করিলা ক্লান্ত কদ্রপীড়াসুরে; সে আনন্দে বিসর্জন--ধরাতে নৈমিববন---षद्रग्रावामिनी मही षाक्षि मर्खाभूदः ! আবার অন্তরে ভয়, না জানি বে কিবা হয়. কালযুদ্ধে, রাত্রি পুনঃ হইলে প্রভাত ;

>

ক্তুপীড় মহাবীর. অরম্ভ ক্লাম্ত-শরীর. অসুরের অস্ত্রপ্ত যেন উদ্বাগাত।" হইয়া বিমৰ্থ ছবেথ. চাহি চপলাব মুখে, ফেলিয়া স্থদীর্ঘ খাস কহে ইন্দ্রভায়া; "তনয়ে শ্বরি এথানে, मृब्धन दिंदधि व्याप्त, স্থি রে, ছুরস্ত স্প্তানের মারা। পুত্ৰ-মুখ যতক্ষণ না করিছ নিরীক্ষণ, দানব-আশকা চিত্তে ছিল না তিলেক; আগে না ভাবিয়া, স্থি, ও চারু-মুখ নির্থি, বিবশা হয়েছে এবে হারাছে বিবেক। অন্তরে আশিকা হেন বিপদ নিকট যেন সহসা আতিকে কেন চিত্ত হৈল ভার ১ স্থি, অন্ত কোন্ দেবে শ্বরণ ক**রিব** এবে সহার হইতে যুক্তে জ্বয়ন্তে জামার ?" নিশি-শেষে নিদ্রা-ভক্তে অর্দ্ধ-চেতনের সঙ্গে चम् एत मूत्रनी-ध्तनि वाकित्न त्यमन , স্থাস্থ মিশাইয়া পরাণেতে জড়াইয়া জাগ্রত করিয়া চিত্ত পরশে প্রবণ। জরন্ত-শ্রুতি-কুহরে তেমনি প্রবেশ করে শচীর সে স্থমধুর কোমল বচন; উদ্মীলিত-নেত্রে বসি হেরি অন্তপ্রায় শণী कहिला बननी-अन कतिया वन्तन। "প্ৰভাত হইল নিশি প্ৰকাশিত পূৰ্বাদাশ দে**ধ মাতঃ**, চারু কান্তি অরুণের রাগে। পুত্রে আশীর্কাদ কর না উঠিতে প্রভাকর थादिन मश्चामकृत्व मान्ददत चात्भा"

বিগুণ বিক্রমে এবে. দানব আক্রমে দেবে. ছাড়িয়া বিকট দর্পে গর্জন ভীষণ, দেবদৈতো যুদ্ধারক্ক, আবার ভুবন শুক শুকুমার্গে অবিরত অন্ত্র-সংঘ্রণ। আবার কাঁপিল ধনা, মৃর্ণ্টি ধরি ভয়ঙ্করা, তুম্ল যুদ-সংক্লা, সুদা ভালহাল , দায় হ'ল ভক্কুল. বিচিছয় পর্ববিতমূল, ভীষণ কৰ্কশ বেশ ধবে রণস্থল। জয়ন্ত দানব-মাঝে. যুঝিছে তেমনি সাজে, যুঝিলা যেমন পূর্বের বিনতা-তনয়, গকআন মহাবীর ফণীন্দ্রে করি অস্থির প্রবৈশে পাতালপুবে ভূজক্মময়। ठांत्रिफिटक व्यानीविव ফণা ধরি অহনিশ. গাঢ অন্ধকারে কবে বিকট গর্জন. গরুড হুর্জন্ম দর্পে, ঝাপটে ঝাপটে সর্পে, প্রদাবি বিশাল পক্ষ করার ঘূর্ণন। এরপে পর্বাহু গত, জয়ন্ত শরে নিহত আবাব দানৰ পঞ্চ পডিল ভৃতলে---পতে ৰখা ধনাধর শৃক ভাকি ভূমিপর, **क्किलान हरन जन छेहरन छेहरन ॥** তথন আক্রুদ্ধ-বেশ, আকৃঞ্চিত ভূক্ন-কেশ, পদ্পীড় মৃহুঠেক জয়তে নির্থি, ভীষণ হুস্কার-রবে, শ্ৰেতে তুলিয়া ভবে, প্ৰকাণ্ড ক্ৰম্বণ এক মৃষ্টিতে থমকি , ঘুরায়ে ঘুরায়ে বেগে, খোর শব্দ যেন মেদে, হৰ্জন প্ৰচণ্ড তেজে করিল প্ৰহার।

না করিতে সংবরণ, জয়স্ত-অঙ্গে পতন, হইল প্ৰকাণ্ড মৃৰ্দ্তি শৈলেৰ আকাৰ॥ না সহি হুর্বহ ভার. অচল বিজ্ঞলী-হাব বিচ্ছিন্ন হইলে যেন, পড়িল তেমন। কিংবা ধেন বাশীকত, চন্দ্রবাদ্ম শোভা-হ্রদ খসিয়া পৃথিবী-অকে হইল পতন! শিরীষকুত্মনত্তর, (यन वा चवनी शव. পড়িয়া রহিল মহী কবিয়া শোভন, দেখিতে দেখিতে ছ্যাতি নিমিষে মিশে তেমতি ভব্বেতে অকার-দীপ্তি মিশার বেমন! মৃত্যুহীন দেবকায়া, মূর্চ্ছাই মৃত্যুর ছায়া, জয়ন্তে আচ্ছন্ন করি চেতনা হরিল, নিদ্ৰিত মানৰ ৰথা, নিশ্চল হইল তথা, রেণু-ধুসবিত তমু পড়িয়া রহিশ। উल्लारित मानवम्ल. জয়শব্দ-কোলাহল, निनारम व्यवनौ मुक्त रेकल विमात्रन , শিহরে বেমন প্রাণী শ্ববাহী হরিধ্বনি গভীর নিশীথকালে করিয়া শ্রবণ , তেমতি সে ভয়ম্বর, मानरवत्र कत्र-श्वत. শুনিয়া শিহরে শচী অস্তরে পীড়িয়া. **ठॐल माभिनौ यथा.** ইন্দ্রপ্রিয়া বেগে ডথা, হেরে আসি পুদ্রতম্ব ধরাতে পডিয়া। "হাবৎস জয়ক্ত" বলি, খলিত চরণে চলি, ধাইরা আমসিয়াপার্যে ধরিল ভনর, কোলেতে করিয়া তমু, ছিলাপুক্ত বেন ধতু, त्रहरू क्षांभिन्ना पृष्टि म्लन्स्टीन द्य ।

একৈ একে বিশ্বনাথ বিশ্ববিশ্ব যভ দেখায়ে গৌরীরে তত্ত কছেন ব্যায়ে.— কি হেতু হইল সৃষ্টি কিন্নপ প্ৰকাবে, পঞ্চত, আত্মা, মনঃ প্রকৃতি প্রথমা, প্ৰমাণু, প্ৰমায়ু, উৎপত্তি, বিনাশ, কাল, পরকাল, ভাগ্য, বিধি-সংস্থাপনা পুক্ষ-প্রকৃতিভেদ হৈল কিবা হেতৃ হুইল বা **কভকাল কিরুপ সে** ভেদ, চিল কিংবা নাতি চিল সে ভেদ আদিতে ১ইবেু কি না হইবে পুন: সে **অ**ভেদ। কতাক্ষিত,কোন বিশ্ব বিবাজে কি ভাবে পৃষ্টির প্রারম্ভে মূর্ত্তি স্থিতি কি প্রকাবে, কেন বাজগৎ-গতে সকলি অস্থায়ী. সদা পরিবর্ত্ত**ীল জড় কি** চেতন। কিরূপে অতল সৃষ্টি জীবেব অঙ্গুর হটল আদি মহতে, বিনাশন ধবে কোথায় কি ভাবে রবে পরমাণুকুল, জীবাস্থা অনিতা কিবা নিতা চিবদিন। এই বিশ্ব স্বপ্রত্যক্ষ—এ সৌন জ্বগৎ— বৰ্ত্তমান কভ কাল থাকিবে এ আব : নবদেহধারী প্রাণী মহত আখ্যাত ধরিবে কি মর্ত্তি পুন: কল্লান্তর পরে। পাপ পুণ্য কিসে হয় , হুদ্ধতি, স্কৃতি, अम्रे-अधीनगर्ग घटि कि श्रकार्य; স্থুও হৈতে মানবেব তঃখ-প্ৰিমাণ গুৰুত্ব কেন এত জগতীমণ্ডলে। অল জীব-আবাবা আবে নবের আবাবায়. कि एक, कि एक (मर-मानरमञ्जातन, ত:খ-স্থ ভোগাভোগ মক্তি বা নিৰ্মাণ. দেবতা মানব দৈতা ভিতরে কি ভেদ। এইরপ দেব নর চিস্তার অতীত নিগৃচ তত্ত্ব নিৰ্ণীত করি ব্যোমকেশ কহিছেন ভবানীরে ত্রনাও দেখারে, খনিছেন কাত্যায়নী চিত্ত প্রফুলিত। এনপে ব্যাপত হৈমবতী মহেশ্বর শহাদোর শৃক্ত-গর্ড কৈলাস-ভিতরে; হেনকালে স্থারপতি আসিয়া সেথায় সম্বনে বন্দিলা উমা উমাপতি হরে। বাসবে দেখিয়া ছুর্গা মধুর-বচনে কুশল জিঞ্জাসি তারে কৈল সন্তাৰণ.

@ জাসিলা—"কি কারণে গত এত কাল. না আইলা পুরন্দর কৈলাসপুরীতে ? কি হেত মলিন দেহ বদন বিরস ? সর্বাঙ্গ বিমর্গ শুদ্ধ সমাধিতে যেন. কিংবা ষেন রণস্তলে ছিলে কত কাল— কি বিপদ উপস্থিত আবাব ত্রিদিবে।" কহিলা মেঘবাহন—"হে আ্চা প্রকৃতি. ভণিলা কি সর্ব্যক্তথা—দেবের তুর্দশাং কি কবিলা বতাসর মহেশর-বরে. কিরপে অমরাবতী জিনিলা প্রতাপে ? দেবগণ স্বৰ্গচাত জ্যোতি:শক্ত দেহ. শিবদত্ত মহাশল-আঘাতে তাডিত. লাৰ পাষ কোনমতে পাতালে পশিয়া. সরভোগ্য স্বর্গ এবে দৈত্যের **আবাস**। শনী বৈজয়স্তহারা ভূমিছে ধরায়, অরণো নিবাস নিতা অহর্নিশ কাল: অন্য দেবীগণ যত স্বৰ্গচ্যত সবে, না জানি কি ভাবে কোথা আছে লুকাইয়া, ত্রিদিব-বিজয়াব্ধি নিয়তি-পজায় নিময় ছিলাম আমি কুমেক-জঠরে পরাজিত, পরাশ্রিত শত্র-তিরস্কত-বিপদ ইহার হ'তে কি আনব ভবানি ? ভলিলা কি মহেশবি. মহেশেব মত. সুরবুদে একেবাবে ? ভুলিলা বাসবে ? ভালিলা কি ইন্দ্রাণীরে ৪ পর্স্বতনন্দিনি. পাৰ্ব্বতি, ভূলিলা কি গো পুত্ৰ ষডাননে গ জানি নাই ভাবি নাই বিপদ নৃতন হৈল কি না উপস্থিত অন্য কিছু আর— নিয়তি-আদেশে নিতা অস্তরীক্ষপথে চলেছি ক্রমশঃ এই কৈলাস উদ্দেশে।" ভবানী কহিলা--- "সতা ওহে ভগবান, লাম হয়ে এত দিন তত্ত-মালাপনে ভিলাম ঈশান সঙ্গে বত এইকপে। জান ত আনন্দ কত সে তওু-প্রবংগ। কি কৰ মৃত্জ্বয়ে সদা আগুতোষ, যে যাহা বাসনা করে না ভাবি পশ্চাৎ দেন তাতে অচিবাং বর আাকাজিংত. আপনি নিমগ্ন সদা এই চিম্ভাস্থথে। এতক্ষণ ইন্দ্র তুমি উপস্থিত হেথা. কথোপকথন এত তোমায় আমায়.

्हत (म निविष्ठे किये क्योंनि **एक**डि উমাপতি সম্ভার - সংক্রাবিরহিত। कारत गत्रना अठ निम नृजीयुद्ध ; का हो, इस. बाउ कहे कृष्टिना दर कृमि ! नहीज ध्यांक वाम अवग्-फिल्ट्ड । কান্তিক্ষে বহাদুছ্যা-হাতনা-গীড়িত। हेल, जामि बहेकरन कहित नहरत, ক্রার আশীকান পুট নৈতা হর চার উচ্ছিম করিণ খর্গ দেবে তিরখারি. ক্ষেন এথনি দৈটো-নিধন-উপায়।" क्ष कि कांग्रावनी हारि महारम्द কহিলা--"শন্তর, হের আইলা বাসব কৈলাসভ্ৰনে, দেব, ভোমার আশ্রের, क्व बन्नशृष्टे उन्न देवरकाव शीक्रान । হে শ্লিন, সদা তুমি এক্সপে বিল্লাট, 'বটাও অমারনে দৈত্য আখাসিয়া, त्मध वर्गत्रोका धार इव छात्रशेष-সানব-দৌরাজ্যে. দেব না পালে ভিটিতে। মারা নাই, দ্বা নাই, ক্ষেহ-বিশ্বহিত, (पव-(पवीशत मत्व नित्मणि विशेष. ভূলিয়া আপন পুত্ৰ পাৰ্কডী-ডনয়ে, আছ নিতা ধানি সূথে সদা নিনীলিত। । किएल ना भार यहि एष्टित नियम. লাভ তুট হলে তবে কেন ছট সনে বর দিয়া পাড় এড বিষম উৎপাত ? উমাপতি; কর বৃত্র-নিধন্ধ-উপার।" ্ত্ৰিপুৰ-অন্তক শৃদ্ধ শিবানীকে চাহি ভ্ৰিলা─ "হে হৈমবতি, বুত্তের সংহার अवन (६) कि ना ब्हेन ? नानिह पर्क এবন (৬) কি শ্বরুদের করে নিশীড়ন ? कर दिशीत, अनकान विन विका कत्रि, क्ट्रिकन मुन्नानि-"चन ए बीनर. क्षान्यकान छत् हहेरत नचत्र क्षित्र विश्वन अवित्रा-भवनात्म !" सार-"रमक्टमंब, बानि रण मःवा পুৰিয়া বছত্তি বছকাল, INCH BIRIS MES MESTE CONTES विनोदनत क्षेत्री वासितक विद्यवन

बाजारव वनवीका नाइ स्मिवहिंछ, बायक, रकामात्र चात्र क्रम व निकास আপুন মৰিমা ব্যক্ত ফারতে আপুনি. না পারি- মাহি গম্ভবে আপজনে কর্ जिथुताति, छत् हि छ-दिवनाम दिका দান করিতে নাবি চেকুনা বাঁকি ছে। ছিলাম মর্গের পশ্চি প্রারম্ভ বিখ্যাত্ত व्यक्ततंत्र त्रत्य कल् मट्ट शताकते. वा स ट्राइ हेस व मन बुखान्यदन विज्ञी लिंग त्मरे माना श्रास्त्र १७ एक नेपूर्व। व त्यांमक-एकत्य देशका ना प्रविद्धाः गृह्य वृद्ध कि रम पार्थाया के मिन के पार्थिक के कि कर, कदिला पूर्व पर्वत कार्राहर আগন ত্রিশূল নৈতে দিয়া শ্লপাণি।" कहिएक कहिएक हेन्द्र देवन। आकर्षन ভীমতেৰে আপনার ভীষণ কাম্ম্ক, इट्सब नवर्भ गांड हमरक हमरक. জলিতে লাগিল তাহে জেটভিঃ অপক্ষণ माभाक भागवकृत्म वीत (यव ह्यू, অরাতির দম্ভ তার চিত্তেন গরণ . न्डकीरहेद जुना नरह त नदाी, भक्त-निर्माण्डल मुका दम् हाटक क्यू . महावीधावान् देख त्मरवद् क्षाधान-मास-विकिष्ठ रदा, इंडि अक्निड विक्कुना विख्डारिश नव नियस्त्र. श्वरत्व मीश्र कामा वारकारक व्यकारम । শুনি উমা. উমাপতি আরুট হইয়া. টামের কাতর উক্তি চিতে ভীর বেগ, ट्रक्तरत कक्षार त्याब्टक्न करें। केंबर कैंगिन नैदर्व नश्रद किसाद। वित्रा निक्त वर वावक्त-कट्टा উমার অক্রম বিন্দু গতেতে মারিল, नक्ता छत्का किएक बहेन नवाड, विनद्य पश्चिम द्राम अञ्चल देवर विकाशिया महस्यत ठारिक केतारत 'द्रका देशवधि, त्यन का अक्रवार ! fance man, feet, wirds con 4 ten heady tifted \$ 479 Martin Printer allen ente 3 বিপদে পড়িয়া ঘোর দৈত্যের পীড়নে. লৈমিষ হুইতে দৈতা করিছে হরণ।" ভবানীর বাক্যারন্তে দেবেন্দ্র বাস্ব জানিতে পারিয়া সর্বা, ছাড়ি হুল্ফার, তলিয়া কামুকি শৃক্তে—দিব্য জ্যোতিশ্বয় পূৰ্ব-অভিমূপে শীঘু হইলা ধাবিত। "তিষ্ঠ, ইন্দ্ৰ, ক্ষণকাল" বলিয়। মহেশ হত্র প্রসাবিয়া তারে কৈলা নিবারণ। শিব-করে আকর্ষিত হযে আথওল. গৰ্জিতে লাগিলা যেন কোধিত অৰ্থ--যবে বাত্যা-উত্তেঞ্জিত মেদিনী গ্রাসিয়া, ধায় ক্রোঙ্গ যাদঃপতি, অবরোধে যদি সে বেগ নিবারি অঙ্গে উচ্চ শৈলকুল. নেষ্টি চতুৰ্দ্দিক দঢ পাষাণ ভিত্তিতে। গাৰ্জ হেন ফণকাল শাস্তভাবে কিছু, কচিল৷ –"ধুৰ্জাট, তৃপ নহ কি অন্তাপি গ া। ছিল ইন্দ্রের শেষ তাহাও দল্পজে সমর্পিলা এত দিনে মৃত্যজন্ধী দেব গ পুল্ল মুৰ্জ্জাগত, পত্নী দৈত্য-অপদ্ধত, বলা হেতু ঘাই তারে কবহ নিষেধ গ বাসনা কি. শিব, তব ইল্রের লাঞ্চনা াথাকিতে বাকি কিছু বুত্তাস্থর-কাছে. কন তবে সৃষ্টিমাঝে ব্লেখেছ অমর গ কন এ ব্ৰহ্মাণ্ড যত বিধি বিরচিত াহি চূর্ণ কর তবে १- কেন হে বিধাতঃ. বিলে দেবেব স্বষ্টি যন্ত্রণা ভগিতে গ ^{ধবেৰ} শিবত্ব গুধু এই কি কারণে ? ।মরে অপ্রীতি সদা সম্প্রীতি অস্কবে १ ট কি সে সর্বজন-পঞ্জিত শঙ্কর গ 'দনের অঞ্যার মিত্র-আমাচরিত গ াহি চাহি কোন ভিকা, না চাহি জানিভে াবধ কি উপায়ে, ছাড়হ আমায়, ^{দ্ৰ} পশুপতি, এবে কোদণ্ড-সহায়ে 🔤 ইন্দ্র কি সাধিতে পারে স্বর্গপুরে।" ইত্রের ভংসনা শুনি ত্রিপ্র-অন্তক [†]িলা আনিতে শূল বীরভদ্রে চাহি, ^{চিত্র}। বাসবে, "শান্ত হও, স্করপতি**,** িব স্মরণে চিত্ত হয়েছে ব্যাকল। 🥫 দর্প দিছেজের অসমরাহ্রিয়া, ^{দুম্বাব}তীর শোভা— শচী পুলোমজা—

শিবের প্রদন্ত বর ঘণিত করিলি ?" বলিতে বলিতে ক্রোধ হইল মহেশে. ব্ৰন্ধাণ্ডের বিশ যত শূক্তে মিশাইল, পরশিল জটাজুট অনন্য আকাশে, গবজিল শিরে গঙ্গা বিভীষণ নাদে। গৰ্জিলা তেমতি যথা হিমাদ্রি বিদারি ভাগীরথী ধায় মর্ত্তো গোমুখী-গহনবে , জनिन ननाउ-रहि श्रीश्व-भिथाय. বহ্নিয় হৈল সেই শক্তব্যাপীদেশ. ধরিলা সংহাব-মূর্তি, কদ্র ব্যোমকেশ, গর্জিয়া সংহার-শূল করিয়া ধাবণ, তুলিলা বিষাণ তুণ্ডে দীপ্ত শ্বেত-তমু, অনল-সমক্রে যেন ভাগিল মৈনাক। ভয়ে পুরন্দর শীঘ্র স্থাথ ছাডিয়া ঈশানী-পশ্চাতে আসি কৈলা অধিষ্ঠান . বীর্ভদ্র সম্রাসিত দাঁডাইলা দবে. পাৰ্কতী ঈশানে উচ্চ কবিলা সন্তাৰ-"সংবর-সংবর দেব সংহার-ত্রিশল, না কর বিষাণে ঘোর প্রলয়ের ধ্বনি. অকালে হইবে সর্বাস্প্তি বিনাশন, সংবরণ কর শীঘ্র সংহাব-মুব্তি। কি দোষ কবিলা কহ বিশ্বাসিগণ ১

পরশে শরীর তার ?—হায় বুত্রাস্থর,

পার্সকী-বাক্যেতে কর তাজি উগ্ন বেশ,
ধবিলা জাবার পূর্দ প্রশাস মূরতি—
রজত গিরি-সন্নিভ, ধবল অচল
ভূষিয়া প্রবেশ বথা হিম্মানীর কণা।
সহাক্ত-বদনে ইক্রে সম্ভাষি কহিলা—
"আধওল, বুত্তবং অফ্রিড মম,
পার্কান্তী কহিলা সভ্য এ শূল-নিক্রেপে,
সমূহ ক্রন্ধাপ্ত নই হবে অক্যাং।
পুরন্দর, ভাগ্যে ভার মৃত্য তব হাতে,
যাও নীত্ত দ্বিলিয় বিরুদ্ধিনে,

कि (माय कविना अन थानी (य मकन १

একা ব্ৰত্ৰে বিনাশিতে বিশ্ব ধ্বংস কর ১

কহ ইন্দ্রে বুজনাশ-বিধি, ত্রিপুরাবি, নিক্ষেপে সংহারশল স্বষ্টনাশ হবে .

ভবিতব্য-লিপি দেব, না কর থণ্ডন,

সংবর সংহার-মৃত্তি ঈশ উমাপতি।"

किन् भारर मार्ग, तन्त, तन्त्रा मानर.

কহিলা জিনিতে যত পাইলা আমাস, আনিলা বেরপে শটী করিলা প্রকাশ। গুনানা ঐপ্রিলা মহা আনন্দে মগন, মুখ্রাণ লয়ে শীর্ষ করিলা চুম্মন,—
কেমন দেখিতে শটী, কিরূপ বরণ, কিরূপ আরুতি, কিবা অব্দের গঠন; কিরূপ বসন-ভ্যা, চলন কিরূপ, কত বয়, কার মত কিবা তার রূপ, হাব-ভাব, হাসি-ভঙ্গী, নাসা, ওচাধর, বক্ষ, বাহ, কটি, উক, অঙ্গুলী, নথর, দেখিতে কিরূপ— জিল্পাসয়ে কেশণাশ ভূক কি প্রকাব, কিল্পাসয়ে কেশণাশ ভূক কি প্রকাব, বিজ্ঞাসয়ে কেশণাশ ভূক কি প্রকাব, বিজ্ঞাসয়ে কেশণাশ ভূক কি প্রকাব, বিজ্ঞাসয়ে কেশণাশ ভূক কি প্রকাব,

শতবার শতজনে কাবলা এবণা ন ক্রন্ত্ৰীড কংহ "শচী অতি কাবকী, বর্ণিতে দে কপ নাহি আইদে ভাবতী; ক্লপ হ'তে গাখীর্যা গভীব অতিশন্ধ, ক্ষণিক আমার (ই) চিত্তে সম্মম উদন্ধ; বসিল নৈমিধে মবে পুত্র কোলে করি, দেখিল্লা দে মুর্লি চিত্র উঠিল শিহরি, দেখী বটে, বটে শচী শক্রব বনিতা, ভগাপি দে মুর্লি চিত্র আছে প্রভাবিতা।"

स्तिश उर्थल असिलांत हिखरार . বছন চাকিল ধেন গোরতব মেব। বলদিন হ'তে শচীরপেব গবিমা. বলদিন হ'তে ভাব গৰ্কেব মহিমা. শুনিত ঐদ্রিলা পূর্বেকখন কদাচ, আঁচে শুনা, আঁচে জানা কটুতার আঁচ , প্রাণে আছিল অগ্নেশুনিত ভূলিত ; শচীও না ছিল কাছে ধরাতে থাকিত, এবে নিতা নিতা তাব শুনি রূপগুণ, কদ্যে জলিল তার জলস্ত সাতিনা হিংসার ভাজন যদি থাকে বহুদুরে, হিংদকের চিত্ত তবু কালকুটে পুরে, निकरि चांशित विष उषा ज्यान, অসহা ক্রময়ে জলে চিতার দহন। আছিল বিশ্বাস অগ্রে গরবে কেবল, শচীর সুখ্যাতি ব্যাপ্ত ত্রিলোকমণ্ডল; সৌরভ যে এত তার মাধ্য্য নির্মল, না স্থানিত, এবে শুনি হইল পাগল।

তাহে পুল্র-মুথে তার রূপেব বাধানি-জলস্ত গরলে যেন পরিল পরাণী। লকাইতে ইথাবেগ না পারিয়া আর, তন্ত্রেক্তে দর্পে নথে ছি'ডি হাব-"ৰে আইদে দেই কছে এমন তেমন. বতি কহে নাহি শচীক্ষপের তুলন। সভাই কি শচী তবে এতই রূপদী? আমাৰ অক্লেৱ বৰ্তাৰ অক্লেম্পী ? আমার এ কেশ. তার ক্তল-তুলায়. চাকতায় মৃত্তায় শুনি লজ্জা পায়? এ শবীরে নাহি তার দেহেব গবিমা? এ গ্ৰীবাতে নাহি সেই গ্ৰাবাৰ ভিন্নিমা ? জানে নাচরণ মম চলন-প্রণালী ? সিংহীৰ চলন তাৰ আমি সে শ্গালী ? শুন হে দানবপতি, শুন তোমা কহি. আর সে তিলার্দ্ধকাল বিলম্ব না সহি. এখনি আন্ত শচী কিন্তবীৰ বেশে. দানোক আসিয়া পার্শে রূপব্যাখ্যা শেযে . রূপ আছে আছে তার রূপ কেবা চায়, দেখি আগে কেমনে সে চামর চলায়, দেখি আগে হাত দিয়ে তাম্বল-আগার. দেখি দে কেমন জানে অঞ্চেব সংস্থাব . কেমনে প্রায় বাস, সাজায় ভ্রণ, ভানে কি না ভালরূপে কবরী-রচন: জানে যদি ভালমত হাব-ভাব হাস, রাধিব নিকটে তায় শিথাবে বিলাস. নতবা যেমন সিংহী—সিংহীর আচাবে থাকিবে পিঞ্জরাগারে চতুম্পথ ধারে , দেখাইতে আছে রূপ, দেখাইবে সবে, পাবে স্থম রূপব্যাখ্যা পথিকের রবে, আন তারে দৈতাপতি, বিলম্ব না কব, চল আজি মহোৎসবে স্থমেক-শিথর, পশ্চাতে চলুক মম শচী গরবিণী, হইয়া বদন-ভ্যা-তাম্বলবাহিনী; দেখক দানৰ দৰে গৌৱৰ কাহাৰ-পুলোম-ছহিতা কিবা বৃত্ত মহিলার।" শুনিয়া জননী-বাক্য বিনীত-বচনে, ক্লদ্ৰপীড কহে—"মাতঃ, থেদ কি কা^{বং}

দাসী হ'তে আসিয়াছে, হইবে সে দা^{নী}

মহত্ত হারাও কেন লঘুত প্রকাশি ?"

পুত্রের বচনে চাহি ব্যাঘ্রীর সদৃশ,
কটাক্ষ করিষা কৃট, নেত্র অনিমিষ;
ঐপ্রিলা কহিলা—"পুত্র, তৃমি শিশু অতি,
কি জানিবে আমার এ চিত্তের যে গতি ?
গামন কি পারে কভু শিশ্বর পরশে ?
গাশতেব নীড়ে সাধ কবে কি বায়দে ?
নাবীমাঝে আমা হ'তে অন্ত যদি কেহ
অধিক গৌবব ধরে, দহে যেন দেহ—
রদে জলে হলাহল —সে যদি না মন
কাছে থাকি সেবা করে কিন্ধরীব সম;
শুন কহি ঐপ্রিলাব স্তুদ্ত বচন—
অলক্তে রগ্লিবে শচী আজি এ চবন।"

কৈলাসে উদ্ভিলাবাক্য শুনিলা ঈশানী;
শচীবে ভাবিয়া হৈল আবুল পৰাণী।
কহিলা মহেশে, মহেশেব জোধানল
জলিল প্ৰদীপ্ত কবি গগনমণ্ডল,
বাজিল প্ৰদায়-শৃঙ্গ শ্ৰুতি বিদারণ,
বহিল ঘন হুকাবে ভীষণ পৰন;

সংহার-ত্রিশুলাক্ততি জ্যোতিঃ বাযুস্তরে ভ্ৰমিতে লাগিল দীপ্ত বৈজয়ম্বপুৰে। চমকিত ব্যোমমার্গে ভাপ্তবের বথ, অতল ছাডিয়া কৃষ্ম উঠে অদিবৎ, বাস্ত্রকি গুটাগ ফণা মেদিনী কম্পিত, উত্তাল কল্লোলময় সিন্ধ বিধৃনিত, ভয়েতে ভঞ্জকল পাতালে গৰ্জ্ঞা. সত্যোজাত শিশু মাতৃত্তন ছাডি বয়; বিদীর্ণ বিমানমার্গ গিরিশঙ্গ পড়ে. চেতনে জডেব গতি. গতিপ্রাপ জডে; টলমল টলমল ত্রিদশ-আলয়, মুচ্চিত দেবতা দেহে চেতনা উদয়. দোত্ৰ্য স্থনে শ্ৰু ওমেক-শিখ্ব . ঘোৰ বেগে বৈজয়ত কাঁপে থর খব। ঐক্লিবার হন্ত হ'তে হাসিল কমণ. कम्प्रीष्ठ-चास्त्र देश्य त्यांग-इवस्य, নিঃশঙ্ক বুত্রেব নেত্রে পলক পডিল. "কন্দ্ৰেৰ ক্ৰোধাগ্নি-চি৯়" জনিনা উঠিন।

প্রথম খণ্ড সমাপ্ত।



ক্রতিলা জিনিতে যত পাইলা আয়াস. আনিলা ষেকপে শচী করিলা প্রকাশ। অনিষা ঐশিলা মহা আননে মগন. মথঘাণ লয়ে শীৰ্ষ করিলা চম্বন .---কেমন দেখিতে শচী, কিরূপ বরণ, কিকপ আনক্তি কিবা অংকর গঠন: কিরূপ বসন-ভ্যা, চলন কিরূপ, কতে বয়: কাৰ মত কিবা তাৰ রূপ . হার-ভাব, হাসি-ভঙ্গী, নাসা, ওঠাধর, ৰক্ষ, বাহু, কটি, উক্, অঙ্গী, নধর, দেখিতে কিরূপ— জিজ্ঞাসয়ে শতবার. ্ঞিজ্ঞাসয়ে কেশপাশ ভূক কি প্রকাব; ভিল ভিল কবি শচীক্রপেব বর্ণন. শতবাৰ শত্যভাৱে কবিলা শ্ৰবণ। কদুপীড় কলে "শচী অতি ৰূপৰতী. বৰিতে সে ৰূপ নাঠি আইসে ভাৰতী: কল হ'লে গাখীয়া গভীৰ অভিশয়, ক্ষণিক আমার (ই) চিতে সম্ভ্রম উদয়; বসিল নৈমিষে ফবে পাল্ল কোলে করি. দেখিয়া সে মূর্ত্তি চিত্ত উঠিল শিহরি: ट्राची वटहे. वटहे भड़ी भक्कव वनिजा, তথাপি সে মৃষ্টি চিত্তে আছে প্ৰভাষিতা।" स्तिश खेशेल असिनात हिख्दार : বদন চাকিল যেন যোরতব মেব। বলদিন হ'তে শ্চীরপেব গ্রিমা. বলদিন হ'তে ভাব গৰ্কেব মহিমা. শুনিত ঐদ্রিলা পর্মে কখন কদাচ, আঁচে শুনা, আঁচে জানা কটুতার আঁচ , প্রবাণে আছিল অগ্রেন্ড্রনিত ভূলিত ; শনী এ নাছিল কাছে ধরাতে থাকিত: এবে নিতা নিতা তার শুনি রূপগুণ. হৃদ্ধে জলিল তার জলন্ত অতিন। হিংসার ভাজন যদি থাকে বহুদরে. হিংসকেব চিত্ত তবু কালকুটে পুরে; নিকটে আ'দিলে বিষ উপলে তথন. অসহা জদয়ে জলে চিতার দহন। আছিল বিশাস অত্যে গরবে কেবল, শনীর সংগাতি ব্যাপ্ত ত্রিলোকমণ্ডল; দৌরভ যে এত তার মাধর্য্য নির্মাল. না শ্বানিত, এবে শুনি হইল পাগল।

তাহে পুত্ৰ-মূথে তাব রূপেব বাধানি---জলম গরলে যেন পরিল পরাণী। লকাইতে উধাবেগ না পারিয়া আর. তনয়েরে কহে দর্পে নথে ছি'ডি হার— "ষে আচাইসে সেই কছে এমন তেমন, রতি কহে নাহি শচীক্ষপের তুলন। সভাই কি শচী তবে এতই রূপসী ? আমাৰ অঙ্কের বৰ্ণ তাব অংক মণী ? আমার এ কেশ, তার কমল-তলায়, চাকতায় মৃত্তায় শুনি শজ্জা পায় ? এ শবীরে নাহি তার দেহেব গবিম। ? এ গীবাতে নাহি সেই গ্রাবাব ভবিমা ? क्रांटन ना ठेवन ग्रंथ ठलन-थ्रानी १ সিংহীৰ চলন তাৰ আমি দে শগালী ? শুন ছে দানবপতি, শুন তোমা কহি, আমাৰ সে তিলাই কাল বিলয় না স্থি. এখনি আনহ শচী কিম্বীৰ বেশে. দাভাক আদিয়া পার্যে রূপব্যাখ্যা শেষে, রূপ আহাছে আহে তার রূপ কেবা চাব. দেখি আগে কেমনে সে চামব চলায়, দেখি আগে হাত দিয়ে তাপল-আধার, দেখি সে কেমন জানে অঞ্চের সংস্কাব . কেমনে প্রায় বাস, সাজায় ভ্রণ, জানে কি না ভালরপে কবরী-রচনঃ জানে যদি ভালমত হাব-ভাব হাস, ৱাঝিব নিকটে তায় শিথাবে বিলাস. নতবা যেমন সিংহী—সিংহীর আচাবে থাকিবে পিঞ্জরাগাবে চতুম্পথ ধারে . দেখাইতে আছে রূপ, দেখাইবে মুবে, পাবে স্থম রূপব্যাখ্যা পথিকের রবে , আন ভারে দৈত্যপতি, বিলম্ব না কব, চল আজি মহোৎসবে স্থমেরু-শিথর পশ্চাতে চলুক মম শচী গরবিণী. হইয়া বদন-ভূষা-তাম্বলবাহিনী ; দেখক দানব সবে গৌরব কাহার— পুলোম-ছহিতা কিবা বুত্র মহিলার।" ভনিয়া জননী-বাক্য বিনীত-বচনে, কুদুপীড় কছে—"মাতঃ. থেদ কি কা^র দাসী হ'তে আসিয়াছে, হইবে দে^{না} মহত হারাও কেন লঘ্ড প্রকাশি ?"

পুদ্ৰের বচনে চাহি ব্যান্ত্রীর সন্ধূশ,
কটাক্ষ করিয়া কৃট, নেত্র অনিমিধ;
নৈদ্রিলা কহিলা—"পুদ্র, তুমি শিশু অতি,
কি জানিবে আমার এ চিত্তের বে গতি ?
গামন কি পারে কভ্ শিখর পরশে ?
গানড়েব নীডে সাধ করে কি বায়সে ?
নাবীমাঝে আমা হ'তে অন্ত বদি কেই
অধিক গৌবব ধরে, দহে যেন দেহ—
রদে অলে হলাহল—সে যদি না মন
কাছে থাকি সেবা করে কিন্ধরীব সম;
শুন কহি ঐদিলাব মণ্ড বচন—
অনক্তে বগ্রিবে শচী আজি এ চবন।"

কৈলাসে ক্রন্ত্রিলাবাক্য শুনিলা ঈশানী;
শচীরে ভাবিয়া হৈল আকুল পবাণী।
কহিলা মহেশে, মহেশেন ক্রোধানল জলিল প্রদীপ্ত কবি গগনমন্তল, বাজিল প্রলয়-শৃঙ্গ শুভি-বিদারণ, বহিল ঘন হুলাবে ভীষণ পবন; সংহার-ত্রিশ্লাকৃতি জ্যোতিঃ বায়স্তরে ভূমিতে লাগিল দীপ্ত বৈজ্যস্পুৰে। চমকিত ব্যোমমার্গে ভালবেব বথ. অতল ছাডিয়া কৃশ্ম উঠে অদিবৎ , বাস্থকি গুটাৰ ফণা মেদিনী কম্পিত . উত্তাল কল্লোলময় সিদ্ধ বিধুনিত, ভয়েতে ভুজঙ্গকুল পাতালে গৰ্জণ. সভোজাত শিশু মাতন্তন ছাডি বয়: বিদীর্ণ বিমানমার্গ গিরিশঙ্গ পড়ে , চেতনে জডেব গতি. গতিপ্রাথ জডে, हेनभन हेनभन जिन्न-आनग्र. মুৰ্চ্চিত দেবতা-দেহে চেতনা-উদয়, দোতুল্য স্থানে শ্রু প্রেক-শিথ্র, ঘোর বেগে বৈজ্যত কাঁপে থর থব। ঐক্লিব হল্প ১'তে থাসল কমণ. क प्रशीष - चर्ष रेश्व (वाम-इवस्त . নিঃশঙ্ক বুত্রেব নেত্রে পলক পড়িল. "কদেৰ ক্ৰোধাগ্ৰি-চি৯" জলিবা উঠিল।

প্রথম খণ্ড সমাপ্ত।



রত্র-সংহার

দ্বিতীয় খণ্ড

দ্বাদশ সর্গ

কহ, মাতঃ খেতভুজে, খয়ন্তন্দিনি, কি হইল অতঃপর বৈজয়ন্তধামে ? শিবের ক্রোধাগি-শিখা ব্যাপি ব্যোমদেশ. আসিত করিলা যবে তৈলোকামণ্ডল। কি করিলা বত্রাস্থর, কি ভাবিলা চিতে, ভনিয়া দে ভয়ন্ধর প্রলয়-বিষাণ গ मास्त्रिका शक्तर्य-बाला रेमटलाल-महिनो সে দৈব উৎপাতে কহু, চিত্তে কি ভাবিলা ? ইন্দ্রপুরী প্রবেশিয়া পুলোমনন্দিনী ষাপিলা কিরুপে কাল বিপদলমাঝে ? কি করিলা দেবগণ দানবে দণ্ডিতে গ কিরূপে যুঝিলা খর্গ, শচী উদ্ধারিতে ? কেমনে দেবেদ্র ইন্দ্র, অভীষ্ট সাধিতে, লভিল দধীচি-অন্তি? বিশ্বকর্মা ভার কিরুপে গঠিলাবজ ভীম প্রহরণ গ বধিলা কিরূপে ইকু বুত্র মহাস্থরে ? কহ, মাতঃ, অমরার কোন স্থানে এবে শিবশক্তিধর বুত্র ?—কি চিম্ভা-পীডিত ? শুকু কেন বৈজয়ন্ত-সভাগৃহ আজি ? ছে দেবি, করিয়া দয়া কছ সে ভারতী। উত্ত স্ব স্থামক-শুল উঠেছে বেথানে অনস্ক গগনমার্গে-স্বর্গ-শোভা করি, মন্তকে বিশাল শৃষ্ঠ ধরি বেন সুথে, হর্ষে হাসিতেছে নিজ সামর্থ্য নির্বি. শুল হল্ডে দৈত্যপতি একাকী দেখানে দাঁড়ায়ে ভ্ধর-অঙ্গে অঙ্গ হেলাইয়া, একদৃষ্টি শৃন্তদেশে কটাক্ষ হানিছে---त्यथोटन मिटवज क्लांश-विक दम्या मिन।

অপূর্ব্ব দেখিতে চিত্র। স্থমেরু-অচলে বুত্রের বিশাল বপু:, গিরি ষেন কোন (ও) অকুকোন গিরি-অঙ্কে পডেছে হেলিয়া. পরীক্ষা কবিছে শক্তি দেছে কার কতা ভীমদৃষ্টি ভয়ানক কুঞ্চিত ভ্ৰন্তাগ, তিমিরে আছের মুখ তিন চক্ষ্ জলে, মেবেতে আচ্ছন্ন যেন গগন গন্তীর বিদ্যুতের ছটা ধরি। ভাবে বুলা**ম্বর**— "শিবের জোধাগ্রি কি এ ? শিবের বিযাণ গৰ্জিল কি ঐথানে ত্রৈলোক্য কাঁপায়ে? জাগাতে নিদ্রিত বুত্রে—জানাতে তাহাবে তাহার দিবস-অন্তঃ ? কুতান্ত-শর্মরী আসিছে তমদা জালে ঢাকিতে দানবে ? দর্পে যার প্রকম্পিত পল্লবের প্রায়. **ज्रांक, प्रांतिक, मृष्ठ** ! ज्ञावरल सात স্বর্গে মর্ত্তো দৈত্যনাম নিত্যপুজনীয় ! মুও কাটি করি তপ কত কলকাল, গন্ধাধরে তুষ্ট করি অভীষ্ট লভিছ ! **সিদ্ধ হৈন্ত শি**ব-ববে থাতি ত্রিভুবনে— সে সৌভাগ্য-শিখা এবে হবে কি নিৰ্মাণ পণ্ড শিব-আবোধনা। সামৰ্ব্য নিজল ৷ অবিশ্ৰান্ত রণ-ক্লেশ অপেষ যাতন, ত্র্কার সংহার-শূল শঙ্কর-অর্পিত, मद रार्थ ?--देनद-वहिन द्याविन कि हैश ? অথবা উন্মত্ত আমি অলীক আতকে ভ্ৰাস্ত হয়ে ভাবি মনে—তবে কি কারণ সহসা তিনেতে মম পলক পড়িল ? শিব-ক্রোধানল ভিন্ন বুত্র ভীত কিলে ? হবে বা দয়ার্দ্রচিত্ত দেব আভতোষ कुष देशा रेखकामा भठीत रत्रात ?

গানাই**লা** রোধ **তার—ভক্ত**প্রিয় দেব জা<mark>লাইয়া ক্রোধানল গগনমণ্ডলে ?</mark>

এত ভাবি দৈতাপতি নিখাসি গভীব কটাক্ষ হানিলা তীব্ৰ শক্তেতে আবার , নমিলা উদ্দেশে কড়ে শিবদন্ত শলে. সম্রমে প্রক্রিয়া যতে ফিরিলা আলিয়ে। ইন্দ্ৰপুরী-খারে দৈত্য, ঐক্তিলা স্থন্দরী, দ্রুত কৈলা আলিখন দানবে দেখিয়া. দাদর সম্ভাষ মুখে নেত্রে প্রেমশিখা, যক**েন ধরিলাহতঃ অনপাঙ্গ হেলারে।** দৈতানাথ চিক্কা-মগ্নাকৈল উত্তর। চতুরা ঐদ্রিল। ভাব বুঝিলা ভঙ্গীতে, ধবিলা গন্তীৰ মৃত্তি, ধরি পাদক্ষেপে, হত্তে ধরি বীরে ধীরে গৃহে প্রবেশিলা। বসাইল। **রত্তাসনে—হায়,** যে **আসনে** ইন্দ্ৰ ইন্দ্ৰজায়া পূৰ্বে লভিত বিশ্ৰাম, িদিবে যথন দেব মাতিত উৎসবে. দৈতারণে জ**য়ী হয়ে যতে আভি** তায় বসাইলা ব্রাস্থরে, গ্রুক নিদ্নী াসিলা নিকটে, বার্তা স্রধাইল কত , ক্রিল কভই যত্ন দানবে তুষিতে। কঞ্বপালক যথামৰে করিৱাজে তোগে নানা ভোক-বাক্যে, যবে কবিরাজ পাদক্ষেপে পরাত্মধ উদ্ধে শুও তুলি। তথন দমুজেশ্বর বুত্র বলবান াহিয়া ঐদ্রিলা-মূথ কটাক হানিলা; কহিলা গ**ন্ধীর-স্ব**রে, নগেন্দ্র-গহারে গৰ্জিল প্ৰন খেন ভীষণ নিম্বনে— 'ঐন্ত্রিলে,—ঐন্ত্রিলে, জান না কি হেমকুস্ত ভাঙ্গিলে দ্বিখণ্ড করি চরণ-আঘাতে ? বিশাল সাম্রাক্তা এই :--- ব্রহ্মাণ্ড কুড়িয়া. বুত্তের দোর্দ্ধণ্ড দাপ, হেখা কই সুথ, এই স্বর্গে, ইন্রধামে, অমন্নবাঞ্চিত এথৰ্ব্য অপবিসীম খ্যাতি চরাচবে; 🌃 व मचन -- हत्सरमध्य तत्र नहीं : চিবদীপ্ল চির্ম্নন প্রাক্তনবিভাস, শকলি **ভ**ইল বাৰ্থ তোমা হ'তে বামা— দানবি, দৈত্যের কুল উন্মূল তো হ'তে। জোধাছিত বিশ্বনাথ, শচী-অপমানে, कानाहेना कुछ-(बाव विवाद निर्नापि,

জাগাতে নিত্রিত বৃত্রে-দণ্ডিতে, ঐক্রিলে, গন্ধর্ম-কন্থাব দর্প দহক্তে আঘাতি। চেয়ে দেখ অন্তরীকে সে বহিন্ত ব্লেখা এখন (ও) ভাতিছে মুহ স্থামের-উপরে দীপ্র অন্ধকার যথা" বলিয়া নারব দয়জ-দুখার, শিবভক্ত মহাস্তব।

এজিলা তখন—"দেব ! দৈত্যকুলনাথ, े किला-वल्ला प्रकी, मञ्जूलधाती. হেন অসম্ভব দ্বিধা অন্তবে তোমার গ অম্বনিধি আন্দোলিত শুশুক্তুৎকাবে গ নগেন্দ্র ভ্রব-কম্প পতঙ্গ-নিশ্বাদে ? থগেল্ডেল্ডল্ল ভয় ? কি প্রমাদ হায়। কি দেখিলা—কোণা কদ্ৰকোধ হুতাশন ? কোথা বা বিষাণ-শন্দ, উন্মাদ কল্পনা। কে কহিল তোমাবে. হে দহুজেখর. হাস্তকর উপস্থাস--রোগীর প্রলাপ। জান না কি শর—স্ববে নিসর্গের থেলা. অনস্ভ মাঝারে হয় নিত্য কতরপ গ কিবাজনাল৷ চক্ষাঁধি জ্লে শ্লুদেশে. ষ্থন প্রকাণ্ড কোন গ্রহেব মুত্র থও থও হয়েছোটে এলাও ঝলসি গ অতি ভয়ন্তর ধ্বনি শ্রবণ বিদারি লুমণ করুয়ে শুনে, নক্ষতে যুখন নক্ষত্র আঘাতি ধার গন্তীর অমরে. रेम्य-कार्कर्यन-वरत ? (इ म्छक्रमाथ. দেখেছ শুনেছ পূর্বেক ত দৈব হেন। অথবা মায়াবী দেব দমুৰে ছলিতে. সকলে একতা এবে যুদ্ধ-অ'ড়েখরে, ইন্দ্রধাল ইন্দ্রপুরে দেখায়ে অন্তত, দুৰ্বলৈ করিতে ছলে দৈত্যভূজাবল। শিবভক্ত শিবপ্রিয় তুমি দৈত্যরাল. তোমাকে বিমুখ শভু ? চিত্তে দেহ স্থান হেন কাল্পনিক চিস্তা। কলন্ধ-ভোমার, কলঙ্ক, হে শিবভক্ত, ধৃৰ্জ্জটির নামে। আমি যদি, দৈত্যপতি, তোমার আসনে হতেম, দেখিতে তবে আমার কি পণ। ভঃ চিজা বিধা দয়া আমার জদয়ে. স্থান না পাইত পণ অসিদ্ধ থাকিতে। প্রতিজ্ঞা করিলে—দানবের পণ, প্রভু, মনে বেন থাকে দেব-দেনাপতিবুলে

জিনিয়া সমূবে বান্ধি আনি অমরায়, हेत्सव असिएव विश वसमा श्रमित्व। দে প্রতিজ্ঞানতে সিদ্ধ হাসে দেবগণ. আপনি চটলা বনী আপন সংশয়ে: वर्षा निक लेखिलारत, मञ्ज ने यत्र. অলীক স্থপনে মৃগ্ধ তুমি সে আপনি। "বামা তুমি" বলি দৈত্য তুলিলা নয়ন। হেরিলা ঐদ্রিলা মূথ গর্বিত গম্ভীর, দত্তে ওঠ প্রকটিত, চাক-বিদ্বাধর বিক্ষাবিত ঘন ঘন, প্রদীপ্ত নয়ন। সে চিত্র নির্থি বৃত্র স্থাবার নীরব। লাবণা-মণ্ডিত গণ্ড-- দক্তের চটায় চিত্র-প্রতিবিশ্ব ধেন প্রভাগিত এবে मर्ख-व्यक्त, व्यवग्रदा, ननाटहे, शीवांग्र । যেন বাকি দৈববাণী অকোর অশুত. গোপনে শুনেছে বামা তাই সে প্রতায় দঢ়তর এত মনে,—তাই উপহাস কবিছে দত্তজবাক্তো দত্তজ-মহিষী। দেখিয়া দৈতেরে মনে দুপ উপজিল . এনিলার গরের যেন চিত্রে ক্ষণকাল জনিল প্রতায় হেন---তাছারি সে ভ্রম।

ঐক্রিণা কহিল। তবে কটাক হানিয়া—
"বামা আমি"— বলি দন্তে সন্তাধি গভীর,
দাঁডাইল মহাদপে শিব উচ্চ করি,
ভূজদী মাতকে লক্ষ্যি দশিবার আগে
স্বনে গর্জিয়া যথা প্রদার্থ্যে ফণা।
কিংবা বেন রাকহংসী প্রথন লুঠি,
মুণাল আহারে তুই অচ্ছ সরোব্রের,
চক্তে পদজ-শোভা পক্ষ সাপট্যা
মধায়দে দ্বির হ্যে গীবা উচ্চ করে।

"বামা আমি, দল্লেক্স । বমণী কি হের ?
তুক্ত্ কীট পত্তৰ সদৃশ কি হে বামা ?
পুক্ষের বন্ধু বামা—মন্ত্রী পুক্ষের,
বীরের একই মাত্র সহায় বমণী।
তুন, ওহে দৈত্যনাথ, বামা সত্য আমি,
ঐক্রিলা ত্রিলোক্গাত পদ্ধক্ষ হতিতা,
সামান্ত্রা অবলা নহে দানবী ঐক্রিলা,
ঐক্রিলা তোমার ভার্য্যা, তুন হে দানব।
সত্যই যতপি শচী-হরণে ত্রাম্বক
তুক্ত হরে ক্রোধানক আলিলা গগনে,

সত্যই যম্বপি হয় সে উচ্চ নিনাদ প্রলয়-বিষাণ-শব্দ-- শুদ্ধ কেন তায় ? . পণ্ডন অসাধ্য এবে সংঘটন যাহা। ক্রদ্ধ যদি উমাপতি সে ক্রোধ নির্বাণ হবে না, জানিহ পুন:—ভাবনা কি তবে ? ভাবনা কার্য্যের আগে, সাধন এখন। খলিত হিমানীস্তৃপ কম্পিতুভূধরে षर्घत्र निनामि हुई कति भुश्रमाला, ধায় যবে ধরাতলে অরণ্য উজাডি. কে নিবারে গতি তার-কার সাধা হেন গ তেমতি জানিও ইছা, নতুবা দৈত্যেশ, দানবেন্দ্র নামে ঘোর কলম্ব লেপিতে বাসনা ষ্ঠাপি থাকে. স্বর্গজয়ী নাম ঘুচাইতে চাও যদি শচী ফিরে দাও। ফিরে দাও শচী তাব পতিব নিকটে, निष्क (छठेवाशै श्राय, निः भक्त मानव। নহে কহ, আমি তাব দাসী হয়ে যাই. ক বয়োডে ইন্দালিতে সূপি ইন্দকতে।"

দেখিলা দানববাজ গরিমাব ছটা ঐ জিলার মুগপদে — যথা সে পঞ্জে সুর্য্যের কিরণমালা, অকণ যথন অরুণ স্থাননে চাপি নীলাম্ব পথে আননে চালায় রথ: মৃতকলম্বরে--জাগায় মানবে স্থথে বিহঙ্গমী এজ। নির্বি পূর্ণেন্দ্র্য, দৈত্যরাজ মুখে ভাতিল অতুল জ্যোতিঃ—শশাস্ক-কিরণ চূর্ণ মেঘন্তরে যথা ঢাকিল আবার (। । टक यथा (भष्ठूर्व शूर्वभवत्र) দহ্মজের মুথকান্তি চিস্তার ছায়াতে। কহিলা মহাদানৰ চিক্তি ক্লকাল.--"বামা তুমি, ইন্দুম্থি, গন্ধৰ্কনন্দিনি, এ নহে নিস্গ্থেলা—তা হ'লে কি কভু আতদ্ধে আশার নেত্রে পলক পড়িত ? নিদর্গ-ক্রীডার রঙ্গ দেখেছি সে কত। কহিলা এ মহেশের ক্রোধই যদি হয়, কৈ চিন্তা এখন তাহে ? জান না ঐদ্রিলে, মতাঞ্জর আশুতোষ—ক্রোধ নাহি রয়। শচীরে ছাডিৰ আমি ত্যিতে মহেশে।"

এত কহি রতিরে কহিলা দৈত্যপতি,
"নীঘ্র যাও মদনমোহিনি, শচী-পাশে,

কহ তারে আসিতে হেথার, কারাক্লেশ গচাব তাহার অচিরাও।" ক্রতগতি দৈতাপতি হইলা বাহির, মহাবেগে উঠिলা প্রাচীরে, চাহি দেখিলা চৌদিকে-দৈতাদৃষ্টি যত দ্র-দরপ্রান্তে তার. অধিতাকা, উপতাকা আচ্চাদন করি জলিছে দেবের তম গভীর নিশীথে। হানে স্থানে রাশি রাশি-কোথাও বিরল কোথা অবিরল শ্রেণী—ছ একটা কোথা দিগস্ক ব্যাপিয়া শোভা। দেখিতে তেমতি তে কাশি. তোমার তটে —জাহ্নবী-সলিলে ভাবে যথা দীপমালা তরজে নাচিয়া কার্ত্তিকের অমানিশা-অন্নকার হবি মত কৰে কাশীবাসী দেয়ালী উৎসবে. অথবা দেখিতে আহা নক্ষতা ষেমন--নক্ষ নিশীথ-পুপা— নীলাম্বর-মাঝে শোভে যবে অন্ধকাবে গগন আবরি। দীপ্ত সে আলোকে নানা ব**র্ম, প্রহর**ণ, থজা, অসি, শূল, ভল্ল, নারাচ, পর্তু, কোদণ্ড বিশাল-মৃতি, গদা ভয়ত্বর, জ্যোতিশার দীপ্ত তত্ম তণীব ফলক. তোমর, মার্গণ, টাঞ্চী, ভীম থরশাণ, কোনখানে ভূপাকাব জলিছে ভিমিরে বিবিধ অত্যের রাশি. কোথাও উঠিছে বথেব ঘর্ষর শব্দ, নেমি দীপ্তিময় . কোথা শ্ৰেণ্ডিদ্ধ রথ কোথাও মণ্ডলে। তুবলের হ্রেষারব করীর বৃংহিত, মহিষের ঘোরনাদ উঠিছে কোথাও. গাট্তর রজনীর নি:শক্তা হরি.--কোথাও মাধুর্য্যপূর্ণ অমরের বাণী। কোন বা শিবিরপর শিথিপুছে শোডে, কোন শিবিরের চুড়ে মুগাঙ্গ অঙ্কিত, ে নক্স কার ধ্বজে কার ধ্বজে ভারা. কোন বাশিবির-ধবজে জলভ পাবক। ^{কত} স্থানে স্কুপাকার মেঘের বরণ িশাল শরীর, মুগু, ভূজদণ্ড, উরু, াধিবাজ দৈত্যবপু: দেখিতে ভীষণ, ^{७१}कत क्रिबार्ट्स (एव-व्रश्वम । দেখিতে দেখিতে নিশি প্রভাত হইল. ^{সর্গের} দিবার জ্যোতি উদিল পূর্বেডে,

দস্ত কড়মড়ি দৈতা নিখাসে হুকারি,
কিরিদ আকুল-চিত্ত মন্ত্র-সভাতদে !
উক্ত্রিক হুদিতল অশুভ চিত্তার
ক্রোধে তাপে প্রজ্ঞানিত রণক্ষেত্র হেরি,
ভূলিতে চিত্তের ব্যথা সমব-প্রাক্ষণে
প্রতিজ্ঞা করিলা দৈত্য ; স্থামতে ভাকিরা
আজ্ঞা দিলা সেনাবৃদ্দে সমরে সাজিতে।
অমরা-উত্তর-ঘারে বথা মহারথ
অমর-সেনানীগণ কার্ত্তিকের আদি—
সাজিতে লাগিল দৈক্ত তীম-কোলাহলে।

ত্রয়োদশ সর্গ

নগেন্দ্ৰ-অঞ্চলে—যেথা নগেন্দ্ৰ-সম্ভবা তটিনী অলকননা কলকলমতে বহিছে, অটবী-সঙ্গ ধাবে প্রকালিয়া, দিনমণি অন্তগত, উরিলা স্থারেশ, ছাড়িয়া অম্বরপথ। বিশাল বিস্তত রম্য দে অরণ্য-দেশ ! সন্ধ্যাব তিমির. গাচতর স্নেহে যেন দিয়া আলিঞ্চন. আদরে ধরেছে স্থবে অটবী স্থীরে। অবণ্য-ভিতরে কত মহীকহরাজি— थनाम, नित्रीय, वह अथय, भागानी, कटि कटि. ऋत्य कत्य. कड़ात्य कड़ात्य নিঃশব্দে ভাবিছে যেন ভীম বাত্যাতেজ। বিরাঞ্জিছে অরণ্যানী দেখিতে তেমতি, হাসি, কান্না, ক্রোধ যেন একত্র মিপ্রিত। কোথা শাস্তি স্থির-ভাব, কোথা ভয়ন্বর ? কোথা বা তমসা-পূর্ণ বিবর্ণ মলিন। ধীরপদে শর্করীব ঘোর অন্ধকারে চলিলা বাসৰ ৰক্ত অব্নণ্য-ৰজেতিত, ভনিতে ভনিতে কত ফেরু-ঝিলীরব, বিকট-তক্ষকনাদ ভল্ল ক-চীৎকার, পেচকের ঘোব ধ্বনি, কেশরি-গর্জন. ভয়াতুর বিহল্পের পক্ষের নিম্বন. শাখাচাত পল্লবেব শব্দ মৃত্তর, প্রনের খনু খনু স্থোর নিধাস ! নিবিড় ভিমিরাছর পল্পব-রাজিতে দেখিলা থলোভ-ছ্যতি শোভিছে কোথাৰ

সাজাইয়া তকুরাজি অপরূপ রূপে, কোটি মণিথও বেন অটবী-মন্তকে। কোলাও আবাৰ শাখা জটা ভয়ন্তৰ নিশাচর যেন ঘোর খন অরকারে প্রসারণ করে কর। দেখিতে দেখিতে চলিলা অমরনাথ কৌতৃকে মগন। নির্থিলা এক স্থানে আসি কিছু শুবে, রমণী-মণ্ডলী-শোভা বন অন্ধকারে, নজনী-সীমতে ধথা তারকার হার. শোতে শৃষ্ক শোভা করি মুত্রল রশ্বিতে। আবিঙ্গন প্রম্পরে মধুর সন্তাষ জিনি কলক্ষ্পানি—সুপের মিলনে প্রবাসী ভাসয়ে ষথা স্বদেশী লভিয়া! निक्तांभिक किश्ता यथा किति निकालस्य । দেখিতে লাগিলা ইন্দ পৌলোমী-বল্লভ সে স্থদ্খ মনোহর অদ্খ-ভাবেতে, মহাকুতৃহল-মগ্ন, দেখিলা বিশ্বয়ে, কেহ বা শিখিনী-মৃত্তি ছাড়িয়া বিশ্বয়ে, ধ্রিছে স্থন্দরতর স্থর-বিমোহন অপ্র অক্নারণ লাবণ্যমণ্ডিত ! কেই সুথে কুছ কণ্ঠ রূপ পরিহরি নিন্দিছে শশাঙ্ক-জ্যোতি রূপের ছটায়, কর্মিণী তমু ত্যজি কোন মনোর্মা কুর্দ্বলাঞ্চন নেত্রে তরঙ্গ তুলিছে. তাপদের চিত্তহর! কোন দীমন্তিনী ছাডিয়া শাদ্ল-বেশ প্রকাশিছে অফুপম চাক কান্তি রতিকান্তি জিনি, কহিছে কোন ললনা,—সুচামর-কেশ লটিছে চরণ-পার্থে, ভ্রমিছে যেমন मधकत्रक्त त्रक-कमन-डेभरतः। कहिएह, "हा, कल कान चनृष्टे दा चांत्र সুরান্ধনা এ ছগতি ভূঞ্জিবে ধরায়! ধিক দেবগণে দৈত্য-রণে পরাঞ্চিত! ধিক ইজ্ৰ-শ্ৰিফুনামে কৃলস্ক তাঁহার ।"

হেন কালে অগ্রসরি মুরেজ্র বাসব রমনী-মঙলী-পার্যে দিলা দরশন, পুঠেতে কামুকি দীপ্ত রম্থ-বিভামন জালিছে উজ্জ্বল করি অরণ্য বিশাল। হর্মিত হংসীকুল নির্মিলে যথা মর্বালে মঙল-মাঝে, হুর্মিত তথা

(सर्वाक्रमांशन डेट्स (धरिका (होनिटक) अधावेमा अर्श्तर-छेकात देवना करव १ কহিলা, "হে শচীনাথ, দারুণ যন্ত্রণা এত দিনে অবসান , আর না হইবে সহিতে প্রবাস-ক্রেশ জনম্বের দাহ. পশুপক্ষি-রূপে ছন্মবেশে ধরাবাদে ত্রিদিবে অস্তরদল প্রবেশ অবধি পলাইস্থ মোরা সবে—দ্বাবাগ্নি যেমন প্রবেশিলে বনে ধায় কুবলিণীনল— ভদবধি অন্ত্ৰাতনা, হে সুরেশ, কেহ বিহলিনী-রূপে বুক্ষের আগ্রেরে, কেহ বা কুরন্ধী, কেহ ক্রোঞ্চীবেশ ধরি, মাতঞ্চী শার্দ্দ লীকেহ, কেহ বা মহিষী हा ज्यानहे-- (कह ऋत्भ वताह अधुकी:! সে হুট্রের অবসান এত দিনে দেব, অমরা-উদ্দেশে আ(ই) বা স্বর্গ উদাবিয়া হে সঞ্জল শচীপতি, আইস এইখানে অভিযেক করি তোমা অমর-উৎসবে।" বলিয়া ধাইলা কেহ পুষ্প অস্থেষণে, গাঁথি মালা সাজাইতে মহেল-শীৰ্ষক, মূলাইতে পুষ্পহার স্বরেশ-গলায ---অমর-দঙ্গীতে বন পুলকিত করি, ফুক্ক-চিত্ত পুরন্দর—ষ্থা বলগীন কেশরী পিঞ্জর-মাঝে —ছাডিয়া নিখাস গভীর প্রবল বেগে। হায় রে ভূতলে দেবেন্দ্র ভিক্ষক আজি দৈত্য-ভূজদাপে, আখাদে করিলা শান্ত সুরক্তাদলে, স্থমন গভীর স্বরে কহিলা প্রকাশি কি হেতু ধরায় গতি , কহিলা যে হেতু গতি তাঁর দধীচি-আশ্রমে শিবাদেশে; যে বাবতা দিলে তাঁরে ক্ষেক্-শিখরে हे आवारका इत्रव विवास का नारक्व। कश्मि अक्रमानम "(इ शीरमामीमाध,

কহিলা অন্তনানল "হে পৌলোমীনাথ, কিছু অন্তো নধীচির পবিত্র আশ্রম। দরার সাগর ঋষি ঋষিকুলচ্ডা অন্থিতীয় সুরলোকে। জেনেছি আমবা যে অবধি ভূমগুলে বাদ, হে স্থবেশ,— আব-উপকারে ঋষি জগতে অতুল। ব্রত—পর-উপকারে আর্থ পরিহরি, কল্পনা, কামনা, চিন্তা পরের মদল, কিবা কীটে কি পতকে সদা দয়াশীল মনীক্র কপার সিন্ধ -- জীব-চড়ামণি चांश्रीन मिर्वन राष्ट्र राष्ट्रित कलार्त. না চিজ. অমরপতি।"দেখাইলাপথ। চলিলা স্থারেশ ধীরগতি। ততক্ষণে দেখিলা গগৰপ্ৰান্তে তকণ কিব্নণ, চাকমর্ত্তি প্রভাকর শক্তে সামাভাব। খেলিছে কুরুলরাজি . অজিন-রঞ্জিত শোভিছে কটীর-দ্বার : শ্রুতি-স্থকর স্বতিধ্বনি চাবিদিকে উচ্চে উচ্চাবিত . কোথাও ভাস্কব-স্থোৱা ললিত-লছৰী. গায়ত্ৰী বন্দৰা কোথা সন্ধাৰ আৱাধনা. বিশদ স্থাবেতে বেদ সঞ্চীত কোথাও. কোনখানে মহিমন: মহাকার-পাঠ। শিধাবন্দ আনন্দে ঘেরিয়া তপোগনে. গুনিছে মহ্যিবাকা--- অনুনুমান্দ . হায় রে যেমতি বাগীখরী-বীণাধ্বনি ভনিতে উৎস্থক-চিত্ত অমবমগুলী---স্প্রির উৎসবদিনে—পদাসনা যবে দেব চিত্ত-মোহকৰ শুনান ভাৰতী। কহিছেন মহা পাৰি কিরুপে কলছ. দর্ম-ভীব-তঃখ মূল আইল ধরায়। এক দিন--হায়। কেন উদিল দে দিন--জলধি-সম্ভবাবিফ-জায়া স্বৰ্গনামে চাহিলা বিরঞ্চি-পাশে স্টেতে অতুল, অপ্রপুরত কোন ফ্রি দিকে জাঁবে। বিধাতা স্বন্ধিলা ফল অতুল ভূবনে— কান্তি, চন্দ্র-শোভা জিনি--ভাত্তি নির্থিলে. সৌবভ জিনিয়া চাক স্থরভি পীয়য়. অমব-দহুজে খোর খন্দ ধার লাগি. কিরে ধবে দেবাস্থর অস্থনিধি মথি भारत्राहरू व्यवतात्र-- मध्य स्लाहरल । অনস্ত যৌধন ফলে পরশিলে বামা পুক্ষের করম্পর্শে অব্দয় প্রভাপ। वनानी (माहिना (हति हाहिना (म कन , ्कावाक दक्षवाता . (मवीव्नमाट्य. উপজিল ছোর হুন্দু, না চিন্তি বিধাতা নিকেপিলা বিষময় ফল ধরাতলে, উদবধি ঈর্বা, ছেষ, হত্যা এ জগতে। নররজে নিমজ্জিত এ ধরণীত্র।

বণসোত্ত প্রাহিত সে অবধি ভবে— মানব-নিধনে যাহা নিজা মহামারী। কত দিনে বুঝিবে রে মহুজ সন্থান কি কৃটিল ব্যাধি লোভ! কি কৃট গ্রল নারকল দেহে ছন্দ। কবে সে ব্রিবে আতার পশুত্রলাভ সমর-প্রাঙ্গণে। কুটিল, কুট-কটাক্ষী, হত্যা ভয়গ্নবী সাধিতে যে পারে ভবে, নাবে কি রে তাহা অমর-ননিদ্মী দয়াসরলা সুন্দ্রী ? কাৰ নৱকল— অংবনী সীমন্ত-রড় — মিলি স্থাভাবে স্থথে নিতা ছডাইবে ভ্রাততের স্থাধারা, ধ্যা সে স্থাদা বিমল-তব্জাগ্লাপ্ণাভ্যি-মাঝে চডান সলিলধারা মান্বে বৃক্তি। হাদের কমলাপতি, দেব বিশ্বস্তর। হৰ বিশ্বভাৱ শীঘ্ৰ এ ভ্ৰান্থি ঘুচায়ে— ভ্রাস্ত নরকলে দেব, কব চিরপ্রথী। হ্রষীকেশ, হও, প্রভো মানবে সদয় ! (भौरताभी-ज्यमा हेन्स. मुक्र असिजारय, অলক্ষ্যে অদৃশ্ৰভাবে ছিলা এতক্ষণ, পর্বজ্যোতিঃ দেবকান্তি এবে প্রকাশিলা, নীরদ লাঞ্চন কেশ প্লাবিত কিরণে. বক্ষেতে বিশাল ক্ম-ভাদর বেমন প্রভাতে অফণোদয়ে কুহেলি-আবুত। শোভিছে অতুশ তৃণ, সুন্দর কামুকি---কাদ্ধিনী-কোলে যাহা চির-শোভাময়! জ্ঞলিচে সহস্ত অকি , যথা তাবাদল নিশীথে শর্বারী-কোলে। উঠি তপোধন সশিষ্যে সম্ভ্ৰমে স্থাৰ অতিথি সম্ভাষি. ৰোগাইলা মুগচম -- পবিত্র আসন। জিজ্ঞাসিলা সুশীতল গন্তাব বচনে---"আশ্রমে কি হেতু গতি ? কিবা অভিলাষ ?"

ভগ্নতিত আগওল নেহারি নির্মাণ কুপালু ঝবির মৃথ,—ভগ্নতিত বথা দল্পানু দর্শকর্বল নবমীর দিলে, মূপকাঠে বাজে ববে নির্দান কামাব, মহিষমর্দ্ধিনী-দশভূজা-মূর্তি আগে, অসহার ছাগ-মেব পূজার অপিতে!— কে পারে আানতে মূথে সে নিষ্ঠুর বাণী— কে পারে চাহিতে অক্টে প্রাণভিক্ষাদান, না পেয়ে হৃদয়ে ব্যথা ? কে হেন দাকণ প্রাণিমাঝে । নিস্পন্দ, নিস্তব্ধ পুরন্দর। হেবি ঋষি কণকাল, ধ্যানেতে জানিলা অতিথির অভিলাষ: গদ-গদ স্বরে মহানদে তপোধন কহিলা তথন.--"পুরুদর শ্চীকান্ত, কি সৌভাগ্য মম, জীবন সার্থক আজি--পবিত্র আশ্রম। এ জীর্ণ পঞ্চর-অস্থি পঞ্চনতে ভার না হয়ে অমবোদারে নিয়েজিত আজি। হা দেব, এ ভাগ্য মম স্বপ্লের (ও) অতীত।" এতে ক কহিয়া ধীরে মহাত্তপোধন— শুদ্ধচিতে পট্টবস্তু উত্তরীয় ধরি. গাৰতী গন্তীর স্ববে উচ্চারি স্বনে. আইলা অজন-মাঝে, কৈলা অধিষ্ঠান সুনিবিড় সুণীতল, পল্লব-শোভিত, শতবাহ বটমূলে। আনি যোগাইলা সাঞ্চনতে শিষাবৃন্দ আকুল-রুদয়, যোগাসন, গালের সলিল-সুবাসিত। क्रिन टोनिक धून, अध्क, ध्रन्थन, সর্জ্জরস, সুগন্ধিত কুসুমের শুর विक्रिक व्याप्त काथिया को निरुक. भूनौत्स जानमञ्जन भारता माकाहेता। তেজঃপুঞ্জ তত্ত্বান্তি, জ্যোতিঃ স্থবিমন निर्धल नवनदृदय, গণ্ড, अक्षेप्रदेत ! সুললাটে আভা নিক্পম, বিলম্বিত চারশাশ, পুওরীক-মালা বক্ষংস্লে ! ৰদিলা ধীমান--আহা, ললিভ দৃষ্টিতে मंत्रीर्ज क्रम्ब (यन व्यवादक विकास চাহি শিষ্যকুল-মুথ, মধুর সম্ভাষে কহিলেন অঞ্ধারা মুছায়ে স্বার, স্থাপূর্ণ বাণী ধীরে ধীরে ,-- "কি কারণ, হে বৎসমগুলী, হেন সৌভাগ্যে আমার কর সবে অশ্রপাত ৷ এ ভব্মগুলে পরহিতে প্রাণ দিতে পায় কয় জন ? হিতত্রত সাধনেতে হাদধ্যে বেদনা ? হার রে অবোধ প্রাণী, এ নশ্বর দেহ না ভাজিলে পরহিতে কিসে নিয়োজিব ? শভি অসম নরকুলে কি ফল হে ডবে ১ অমুক্ষণ জীবনের স্রোভোধারা কর, হার, সে কতই রূপে ৷ কেম ভবে ছেন.

चटि यनि कोत्र कार्ला त्म इहाँ खारा. কাতর নরের চিত্ত দে ব্রত-সাধনে ১ হে ক্ৰ তাপসবুল, হে শিষ্যমণ্ডলী, জগৎ-কল্যাণ হেতু নরের সঞ্জন, নরের কল্যাণ নিত্য সে ধর্মপালনে , নি:স্বার্থ মোক্ষের পথ এ জগভীতলে।" ঋষিবনে আলিখন দিলা এত বলি. व्यानीसिका निषागर्गः कृष्टिमा वामरव---"হে দেবেল, কুপা করি অন্তিমে আমার কর ভুচি, দেহ মম বারেক পরনি।" অগ্রসরি শচীপতি সহস্র-লোচন, তপোধন-শির স্পর্শি স্থকর-কমলে, কহিলা আকল-স্বরে—শুনি ঋষিকুল হরষ-বিযাদে মুগ্ধ--কহিলা বাসব--"সাধু শিবোরত্ব ঋষি, তুমিই সাত্তিক, তুমিই বুঝিলা সার জীবের সাধন ! তমিই সাধিলা ব্ৰত এ ৰগতীতলে চির-মোক্ষফলপ্রদ -- নিতা হিতকর ৷ कीवमद नद्रक्ति - अकृत अति । ভাসিছে মিশিছে তায় জলবিম্প্রায় জীবদেহ অমুদিন। এ ভবমওলে অক্ষর তর্ত্তময় জীবন-প্রবাহ ! ক্ষুদ্র প্রাণি-দেহ-ক্ষমে এ সির-সলিল হাস-বৃদ্ধি নাহি জানে নিয়ত গভীর স্রোতোময়। অহিত জগতে নহে তায়, অহিত নিফলে প্রাণী দেহের নিধনে। প্রাণি-মাত্রে কি মহৎ, কিবা ক্ষুত্রম-সাধিতে পারয়ে নিত্য মানবের হিত, সাধিতে পারয়ে নিভ্য অহিত নরের, আপন আপন কার্য্যে জীবন-ধাবণে। বালিবুন্দ যথা নিত্য বেণু-পরিমাণে ৰাডে দিবা-বিভাবরী, সাগরগর্ভেতে, ক্রমে শুপ-ছীপাকার -ক্রমশ: বিস্তৃত বুহৎ বিপুল দেশ তরু-গিরিময়, তেমতি এ নরকুল উন্নত স্লাই. সাধু-কার্য্যে মানবের প্রতি অহরহ:। কর্ত্তব্য নরের নিত্য স্বার্থ-পরিহার, জীবকুল কল্যাণ সাধন অহুদিন ! পরহিত-ত্রত ঋষি ধর্ম যে পর্ম, তুমিই বুৰিয়াছিলে উদ্যাপিলে আৰু। মূছ অশ্ৰ ঋষিবুন্দ, ঋষিকুলচুড়া দধীচি পরম পুণ্য লভিলা জগতে। কি বর অপিব আমি নিজাম তাপস. না চাহিলা কোন বর, এ স্থকীর্ত্তি তথ প্রাত:শ্বরণীয় নিতা হবে নরকুলে। ত্ৰ বংশে জনমি মহৰ্ষি হৈপায়ন করিবে জগতে থ্যাত এ আশ্রম তব— পুণা বদরিকাশ্রম পুণাভমিমাঝে।" বলিয়া রোমাঞ্তত হইলা বাস্ব নির্থি মূনীক্ত-মূখে শোভা নির্মল: আরম্ভিলা তারম্বরে চতুর্ফেদ গান উচ্চৈৰ্গরিদঙ্কীর্তন মধর গল্পীব— বাষ্পাকৃল শিষাবৃন্দ –শ্যানে মগ্ন ঋষি मुनिना नग्रनध्य विश्वन खेलारम । গনিশোকে অকস্মাৎ অচল প্ৰন. তপনে মৃত্ল-রিখা, সুগ্নে নভজুল, **সমূহ অবণা ভেদি সৌরভ-উচ্ছাস,** বন-লভা ভক্কল শোক-অবন্ত। দেখিতে দেখিতে নেত্ৰ হইল নিশ্চল, নাসিকা নিশাসশৃক্ত নিস্পন্দ ধমনী. বাহিবিল ক্রন্সভেজ বেসংক্ষ ফটি নিরূপম জ্যোতিঃপূর্ণ-ক্রনে শুরে উঠি মিশাইল শুরুদেশে। বাজিল গন্তীর পাঞ্জন্ত-ভ্রিশভা, শকুদেশ যুডি পূপার বর্ষিল মূনীক্রে আচ্চাদি। দ্ধীচি ভাজিলা ভকু দেবের মঞ্চল।

চতুৰ্দশ সৰ্গ

অমরার প্রান্তভাগে মন্দাকিনী-তীরে
মন্দির পাষাণমন্ধ নিজ্ত আলন্ধ,
মত্তপ্ত অমরেব চির চিন্তাধাম ,—
বন্দী এবে ইক্সকারা সে তপোমন্দিরে,
চ্রিক্টিক সেই সব নিকুপ্ত কানন,
ফর্গজাত তক্ষরাজি সৌরত-প্রিত,
সেই পারিজাত-পূপা — শোভা ভাগে বার
উন্মানিত দেবচিত। গোভিছে আলোক
দ্রে বৈজয়তপুরী—ইক্স-জট্টালিকা—
চাফ কাক্ষকার্য্য বার স্টিতে অতুল

করিলা অমরশিল্পী শিল্লিকুলরাজ বিশ্বক্তং , স্থাধিত অমর-বাসগৃহ। দুৱে সে নন্দ্ৰৰন শোভিছে তেম্ভি প্রমোদ-বিশ্রাম-স্থ চির্দিন যায়, লভিলা বাসব-জায়া : শোভিছে তেমতি চির-পরিচিত যত অমর বিভব। শনী পেরে পুনরার অমরার মাঝে অমরাহাসিছে আজি। নবকুসুমিত নন্দনে কৃত্মদল স্থান ছড়ায়ে ভাসিছে অপর্বা স্থা : উন্মাদিত প্রাণ পারিজাত-পরিমল করি বিভরণ খুলিছে জদয়ভার। নির্মল মল্ছ-গন্ধে মুগ্ধ কবি স্বৰ্গ আনন্দে ছুটিছে হরিতে শচীর প্রাস্থি। হরষে অধীব ছটিছে তবঙ্গময়ী মন্দাকিনী ধারা প্রকালি পবিত্র জলে শৈল-নিকেতন--শ্চী-নিকেতন আজি। মন:শিলাতল আবো মনোবম মৃত্তি শচী-সমাগ্মে। কে আছে ত্রিলোকমাঝে প্রাণী হেন জন স্থদুর প্রবাস ছাডি স্বদেশে ফিরিয়া (কি পঙ্কিল, কিবা মক, কিবা গিরিময় সে জনম-ভূমি তার) নির্থি পর্কোর পরিচিত গৃহ, মাঠ, তক, স্বোবর, নদী, থাত, তরঙ্গ, পর্বাত, প্রাণিকল, নাহি ভাসে উল্লাসে. না বলে মত্ত হয়ে "এই জনভূমি মম।" কে আছে রে. হার. ফিরিয়া স্বদেশে পুনঃ না কাঁদে পরাণে হেরে শক্র-পদাঘাতে পীডিত সে দেশ ! বিষ্ণেতা-চরণতলে নিতা বিদ্লিত. ৰলিতে আপন ধাহা—প্ৰিয় এ জগতে ! বিজ্ঞন অরণাভমি বনের(ও)কসম তঞ্জিতে পরাণে ভর। শক্রর অর্চনা দেব-অর্চনার আগে ত্রিসন্ধ্যা যেখানে. কে না ভোগে নরকের যন্ত্রণা সে দেশে ? চিত্তমন্ত্রী ইন্দ্রপ্রিয়া শচীর হৃদরে সেপীড়া-দহন আফালি। **উচ্ছা**দে বহিছে সদয়তলে চিন্তার হিল্লোল। নয়ন কিরাতে চিত্তে বিদ্ধে ভীক্ষ শকা। চপলা ভরলমতি সে শোভা দেখিয়া ধরিতে নারিলা ধৈর্ব্য, স্থরেশ-জারারে ু मरमाधन कति धौरत कहिरल नाशिना, रमधाहेमा समयोत स्माला हातिमरक ;—

"তের, স্বরেশ্বরি, ছের চারিপ্লারে কত चमरत्रव की खिंखन्छ। चाहा, कि ख़लत्र, জন্তদি-প্রতিমূর্ত্তি বিরাজে ওথানে. ভগ্ন ডানি ভল এবে—তবু কি স্থলর, নম্চিস্দন নাম যা হ'তে ইন্দ্রের, (इब. हेक्क्यूबर्गा, (महे नमूहि-निधन হতেছে বাসব হত্তে।—পাষাণে রচিত কি সুচাক মৃষ্টি, আহা, দেব বাসবেব ! অই পাপ দৈতা পড়ে স্ববেন্দ্রে শরে। আচে বলাম্ব বীর ক্ষিব উদ্গারি ত্যজিছে বিশাল বপু। বিশ্বকর্মা-করে বচিত বিচিত্ৰ আবো দেবকীৰ্ত্তি কত। অই হের মনোহর সে শোভা-মণ্ডপ. হভাগাৰ নাম যার . পদুযোনি যায কবিতেন অধিধান ইলপুরে আসি . তেমতি উল্লেগ শোভা এখন(ও) তাহাতে। আচে সেই কমলার কমল-আদন মণিময় পদ্মে গাঁথা। দৈত্য ত্বাচার হরেছে কভই দেখ মণিখণ্ড ভার। বিষ্ণু সিংহাসন-শোভা দেখ তার পাশে। কি বিচিত্র, আহা মবি, দেবী নিকপমা ত্রিভবন-মোহকর—ত্রিদিবে অতল, বদিতেন আদি যায় জগতজননী কাত্যায়নী ত্রিনয়না- শ্লপাণি সহ! আই বিবাজিছে দেই বাণীর মন্দিব. খেতভুজা আনন্দে বিহুবলা ধার মাঝে সপ্রবার বীণা ধরি গাইতেন স্থথে অমব হুজন-বার্তা।--পড়ে কি স্মরণে, হে দেবেন্দ্র-মনোরমা, কি আনন্দ-স্রোভ ভাসিত অমর-মাঝে। মহর্ষি নারদ উলালে দেগীত শুনি নাচিত হর্ষে। পঞ্জালে তাল স্থাপে দিতেন মহেশ। হে সুরেশ-প্রণয়িনি, কি চিন্তা মধর হেরে পুনঃ এই স্ব ! কত যে স্মরণ হয় পুরাগত কথা ! অনন্ত হিল্লোল উথলিত চিত্তমাৰে যেন অক্সাং। আহা, প্রবাদের পরে, কিবা মনোহর স্মতি, রশ্মি চিন্তা-পথে থেলে মুত্তল

অন্ত স্থ্যবেধা যথা কাদম্বিনী কোলে থেলায় সন্ধার মূথে উন্সলি গগন!"

বিষাদ-হরষ-মাথা মধুর বচনে
কচিলা সুরেশকান্তা—"হে চাকহাসিনি,
কোথা বল অমরার সে শোভা এখন !
কেন আর চিত্ত-দাহ কবিন্ চপলে,
কোথা দে অতুল স্বর্গ ইন্দ্র-রমণীর!
ভ্রনায়ে ও সর কথা ? শিধিব যথন
সেবিতে ঐক্রিলাপদ, ভনিব আংলাদে।
স্বর্গ নহে, চপলা, এ ইক্রাণীর কারা।"

"কি কহিলা, ইন্দ্রজায়া, কারা এ তোমাব কভিলা চপলা ডঃথে অস্তরে আকুল--'চারিধারে এই দ্ব অমর-বিভব ভাসিছে না আজ(এ) কি সে তেমতি গৌর বলিছে না অই শোভা মণ্ডিত স্থমেক, निथत উঠেছে यात खनस विनाति. তোমার(ই) চংণ তার সেবিতে বাসনা গ कहिएइ मा ७ (मर-(मडेन डेफ्रमिटर 'বৈজয়তা শচীবাম ?' এই মন্দাকিনী কার পদ প্রকালিতে মহা গর্কে থেন চলেছে তরশ তুলি ? ভ্রমিছে হবষে, আবর্ত্ত পদর আদি ওই যে অম্ববে, কারে পৃষ্ঠাসন দিতে ? অই যে বিজ্লী কাৰ বুগচক্ৰনেমি ভাতিতে ছটিছে ? শনী ঐন্দিলার দাসী বলে কি উহারা ! किश्वा वरण सरवचनी महिसी जारमत ?"

তৎসুক-উৎফুল মুগ হেরি দপলার, সকলে হাসির রেবা অরেশ্র-বমণী
আলিকন দিলা তায়, কহিলা — "চপলা,
কহ শুনি সুথকর দে শুভ সংবাদ,
রতি শুনাইলা বাহা দে দিন আমায়—
জয়স্ত-চেতন-প্রাপ্তি-বারতা মধুর,
না মিটে পিপাসা মম দে কথা শুনিয়া।
সধী রে, ধরার মাঝে নৈমির বিপিনে
থাকিতাম মনস্থে পুত্র কোলে করি,
পেতাম যন্তপি নিত্য তায়! কি আহলাদ,
আহা সধি, ভূঞিছ দে দিন মন্ত্যধামে
পুত্র-কোলে বসিফু যখন সে নৈমিয়ে!
কোথা অর্গ তার কাছে, হায় লো চপনে!
কিপ্ত হরে ভাবিলাম না হ'তে অধিক

युथ व अभेतानरम् । भूख (भरन (कारन জননীর স্বর্গস্থ-সর্বত্তে সমান। কত দিনে চপলা রে সে স্থথ আবাব ভঞ্জিতে পাইব চিতে ? কত দিনে বল জয়ত্তে করিয়াকোলে ভুলি এ তুর্দশা— দৈত্য-করে আমার এ কেশ-আকর্ষণ ১" হেনকালে কামপ্রিয়া আসিয়া নিকটে ⊲নিল। শচীর পদ। আনীষি ইতাণী কচিলা--"মনাথপ্রিয়ে, সদা স্থী আমি হেরি তোবে —ভূলিব না মুমতা তোমার গ কি স্থুখী করিলা হায় শুনায়ে দে দিন জয়ন্ত-চেতনা-বান্তা মধর সংবাদ ৷ কহিতেছিলাম এই চপলারে পুনঃ শুনাতে দে স্বদংবাদ।—হও চিরস্থী। কি বারতা কহ আচাজি । কহ, ইন্বালা চাক্ৰমতি দৈত্যবধ — কি কহিলা শুনি সে উত্তব ? ভাবিলা নিদয়া বুঝি মোরে -নিদয়া বেমন দৈতামহিণী ঐঞ্জিলা ? কত দাধ, কামবধ, শুনি তোর মধে ইন্বালা-বিবরণ দেখিতে তাহাবে . কিন্ধ ভাবি পাছে তাব বাসন। পুরালে, शाशीय**नो** जेन्निला शीष्ट्रस्य रम वालाम ।"

উত্তবিলা মূল্যব্যুণী – হাস্যচ্চটা বিধাৰতে সদা মনোহর।--"হে বাস্ব-মনোরমে, বাদনা পৃথিল এত দিনে। गत्नावाञ्चा शृजाहेल विधि ! मिला त्याद्र, স্বরেশ্বরি, শুনাতে তোমায় এ সংবাদ। **মৃত্যুঞ্জন্ম এত দিনে সদন্ম তোমান্ন** , এত দিনে তৈমবঙী তেরম্ব-জননী চাহিলা তোমার মুথ ? শিব-ক্রোধানলে (জ্লিল যে ক্রোধানল সে দিন অহবে) আসিত ত্রিদিবজয়ী দত্তল-ঈশর। ভাবিলা ছাভিবে তোমা মহেশে তৃষিতে। ে স্বরেশ-রমা, দৈত্যনাথ কহিলা আমায়, শুড় যাও, মদনমোহিনি, শচীপাশে, কঃ তাবে জাসিতে হেথায় **অ**চিরাৎ কারাবা**দ শেষ ভব. সভি।" নীর**বিলা कामकांका मधुब्रहामिनी প্রিधःतमा । ^{ঝটিকার আংক্রে যথা গভীর আকাশ,} ^{পুলোম-}খ্যির কলা পুরন্দর **জা**য়া

তেমতি গন্ধীর ভাব। ভাবিতে লাগিলা, অনন্দ মহিলা-বাক্যে চিন্তিত অন্তর। কতক্ষণ পরে —"না বতি," কহিলা ধীরে "মারাবী অসুর ছলে ছলিল তোমায়। না বুঝিলে, কামবধু, কালভ্জু জিনী ঐতিলার কটথেলা। ছাডিবে আমায় ? হে অনঙ্গ সহচরি. এ কথা কিরুপে হদয়ে আখার দিলে > যার তরে চব ধরামাঝে পাঠাইয়া কেশে ধবাইয়া আমায় আনিল হেথা, তাব বাক্য হোল, দৈত্যপতি ছাডিবে শচীরে **ংক**হ গুনি. কিছলনে ভূলিলে এছলে ? সভাযদি ভাবিলে তা. বল বা কিন্ধপে—স্কুসংবাদ ভাবিলে ইহায় ? বতি, শুভ সমাচার শুনাতে আমায় যদি শুনাইতে আজ. তাপিত শচীর নাথ বাসব আগেনি প্রবেশিলা অমবায়—স্বহন্তে মোচন করিতে ভার্য্যার হৃঃথ , কিংবা পুত্র মম জয়ত জননী-ক্লেশ করিয়া নিঃশেষ আসিছে বসিতে কোলে, হে অনন্ধরমে, नहीं कि स्म नानत्वत आक्रांवर नामी, আদেশে ছুটিবে তার বলিবে যেখানে ? মোচন কবিতে আমা নাহি কি সে কেহ. অকল অমরকল থাকিতে এথানে ? না রতি, কহ গে দৈত্যে চাহি না উদ্ধার, সহিব এ কারাবাসে অশেষ ষন্ত্রণা পতিহন্তে যত দিন মৃক্তি নহে মম।" এত কহি স্থিব-নেত্রে শূরুদেশে চাহি

সেবিবে ঐক্রিলা-পদ, দেখিবে তা তুমি ।"
নীরবিলা বাসব বাসন। স্থ্রেখরী।
স্থলপদ্ম তুল্য, মরি, উৎফ্লু বদনে
শোভা দিল অপরূপ! প্রভাতিল বেন
ভাতিত কিরণ স্থির' তুষার-রাশিতে
অভাাময়—আভাময় করি দশ দিক্!
শিহরিলা অনল-মোহিনী হেবি শোভা,
ভাবি মনে অস্থ্রের ক্রোধন-মুরতি,

कैं। विश्वा हिनना धीरत अखिना-स्वांशास्त्र ।

উচ্চাসিলা চিত্তবেগ—"दर्गित्व रेमनस्म,

জীবছঃথবিনাশিনি, শচী নিজালয়ে

পঞ্চল সর্গ

গেলা যবে দৈতাপতি উত্তরতোরণে দণ্ডিতে অমরদর্প---দণ্ডিতে সমবে মহাবল বাযুকুলপতি প্রভন্ননে, দণ্ডিতে চৰ্জন্ম পাশী জলকলেখনে. প্রচণ্ড মার্ভওদেবে, শাসিতে সংগ্রামে, ভীম শিথিধ্বল শিব-স্থতে---গেলা বরি ক্রন্তপীড়ে সেনাপতি-পদে দেও ছাডি দ্বারে দ্বারে ক্ষিরিতে লাগিলা দৈত্য-স্বত। প্রবিদারে ঘোর-রণ দেবতা-অস্থরে---ভীমবঙ্গে যঝিছে অনল, যথে সঙ্গে ইন্দ্রস্থত জন্মর কমার ধমুর্দ্ধর। বাজিছে অমরবাত সমর-উল্লাসে, দৈত্যরণবাত বাজে অমুনিধি নাদে, ভয়ন্তর কোলাহল বিদারে অধর। অগ্রদরি চ্মুমথে কোদণ্ড টকারি দাডাইল কন্ত্রপীড়—বাজে বোর বণ, ছটিল অমরঠাট ত্রিদিব আকুলি, ष्टित मानव शक्ति खनम-शक्तान , ছন হন টলে স্বৰ্গ∙বীরপদভরে। কভ ক্ষণকাল দেবদৈর অগ্রসর বিম্থি দত্তজে - কভু নিন্দি দৈভ্যদেনা অমরবন্দেরে ধার বোর কোলাহলে। ঝটিকা-ভাডনে যথা তরক উত্তাশ ছেলে রকে বেলা সকে সাগরের কুলে--কভু জলরাশি দম্ভে ছুটে উঠে তীরে, আবার পালটি ধায় সিম্বর গর্ভেডে— ভেমতি সমররক অমর-দানবে। লভিষয়া প্রাচীর ক্রমে উঠিতে লাগিলা অমর-বাহিনী, অগ্নি অগ্নিময় তমু, 🗃 🛪 ভীষণ দেব-দেনাদল আগে ছটিছে উৎসাহে, সিংহনাদে স্থরকুল করি উৎসাহিত। পড়ে দেব-অস্থাবাতে रेमछा-अभीकिनी, পড़ে निगांवछ वशा আছাডি আছাড়ি ছাড়ি উচ্চ গিরিশুক, কিংবা যথা জ্বমরাজি ঝড়ে মড়মড়ি। খোর উচ্চস্বরে বহিং—"হে আমরচমূ, चात्र ऋगकान वौद्या (प्रथाश व्यवनि, দেবহন্তগত তবে হয় এ নগরী।

আই স্থান, হে বীরেক্স বাসব-তনর,
লাজ্যিলে দানবপৃক্ত নিমেবে এ ঘার !
দেখিবে আচিরে সে চির-আননম্বাম,
দেখ নাই দেবচক্ষে বছকল যাহা,
অমুরার চির-রতু নন্দন উভান।"

বলি অগ্নি ফুলিক-মন্তিত-কলেবর লক্ষে লক্ষে কর্ম-অগ্রে উঠিলা প্রাচীরে, ছুটিলা স্বয়স্ত জ্বন্ত সদৈন্ত পশ্চাতে। নারে রুড়পীড়সেনা সে বেগ ধরিতে; বৃত্তস্ত ব্যালা অভ্ত পরাক্রমে, নারিলা ফিরাতে নিজদলে; ভল দিলা দেনা সঙ্গে সর্ধা-অদে শোণিতের ধারা!

সেনা সঙ্গে সর্বা-অজে শোণিতের ধারা! এথায় উত্তর খারে অমর প্ররথী যুঝিছে দানৰ সঙ্গে, সমরে মাতিয়া **(** प्रशाहेर इत्रुक्त समज्ञ-विक्रम. নিবারি দৈত্যেন্দ্র-ভূকবল ভয়গর। সুর্ক্ষিপ্ত শর্রাশি ঝল্সি গগন इंটिছে আকুল দিক-বিদারি বেমন বিতাৎ-তরঙ্গ ধায় অনঙ্গ-শরীরে— উগারি অনলরাশি বিভীষণ শিথা। পডে ভীম জটামুর (সঙ্গে ফিরে যার षिरकां है मानव निका) रेमका महाकाय, দস্ত কডমডি ভীম গদার প্রহারে ঘরারে ধর্ঘরে যাহা বায়কুলপতি. श्वां कि एक कि कि कि प्रमुख्य प्रमा একা লণ্ডভণ্ড করি বিকোটি দানবে, কালাগ্নি জলিছে অঙ্গে ধাইছে মার্ত্ত উঞ্জলি সমর্সিন্ধ—উঞ্জলি যেমন বাড়বাগ্নি ধার জালি সিদ্ধু শতকোশ--ঘরারে প্রচণ্ড চক্র অস্তরে নাশিছে। পলাইছে দম্ভবক্র দানব গুর্মতি, (অমর জর্জর-তত্ম দস্তাঘাতে যার, ভৱে যার লবণ-সমূত্র প্রকম্পিত) পলাইছে স্বন্ধল সহিত ভীমবেণে; নক লক দৈত্যসেনা ছুটিছে পশ্চাতে--ৰথা খোর রঙ্গে ধার ঘূরিতে ঘূরিতে বুৰ্বায়ু সজে বুক, লতা, পত্ৰকুল। শত থতে থত করি মৃত দানবের फिनिना मार्छ७ प्रतः, निमिष्य नामिन সহস্র দত্ত বীর, শুভে খুরাইরা

দীপ্ত চক্র ভয়কর। পড়িল সময়ে: ত্বজাবকণ-হজে দান্ব জ্জিয় সিংহতুও - সিংহের সদৃশ মুও গ্রীবা। কাপিত নাবিকর্দ সদা ধার ভয়ে প্ৰতিত পিঞ্চলাৰ্ব্য-প্ৰশিতে ষেম্বি ঃ রাজ-ভবনে পাপী। কেশরি গর্জনে বকণে নেহারি দৈত্য প্রদারি বিভক্ত (উন্নত বিশাল তককাণ্ড 'যথা) ভাটলা বিকট বেগে গগন আধারি। দিলা বড বক্লণের অমুচর সেনা দেখিয়া অন্ত কাণ্ড। গৰ্জিল বৰুণ-গজিলা ষেকপ পূর্বেষ যবে আহিরাল উলাবিলা কালকট নীলক্ঠ-পেয়। কহিলা—"যা পলারে, রে ভীক্র ফেরুপাল। সকারিয়ানরকান্ধকারে স্থরাধম। অমরকল-কলক। ভঙ্গ দিলি রণে প্ৰচলেশে থাকিতে বৰুণ ? হা পামব। (भथ (मर्य-क्लाञ्चाव, (मर्थ मृत्य थाकि, সে সাহস থাকে যদি-পাশীর কি তেজ:।" বলি ভঙ্কারিলা যথা ভঙ্কারি প্রলয়ে আনোলি অভলভল তর্গ ছটান: ধবিলাসাপটি মহাপাশ—দিলাছাডি ৷ মেঘমন্দ মন্দ্রিল অম্বরে রডে . দৈতা ভীম নালে, নথে দত্তে মনঃশিলা ঘাতি — ছাইল সমরাজন দৈত্য-শব-দেহ। গ্ঝিছে অমরদৈত প্রাচীর-শিথরে, নিয়দেশে হীনবল দক্ষবাহিনী. নির্ধি মহাদানব গর্জিলা ভীষণ— বাস্থ কি-গৰ্জন ভীম ষ্থা মহাদত্তে ানিলা প্রাচীরমূলে ঘোর পদাঘাত, iলিল **অটল ভিত্তি বিশাই নিশ্মিত**. 'ডিল ভা**লি**য়া শত থণ্ড খণ্ড হয়ে. ছক**ম্পানে তাঙ্গে ধথা ভূ**ধর-শরীব। ইলিয়া তখন মহা খড়্গ—ভিন্দিপাল -^{বিশাল **জন**ন্ত প্ৰান্ত সে খড়গ ভীষণ।} শাক্ৰন্ধ বুৰভ তুল্য বিক্ৰমে দৈত্যেশ ^{থও} থও করি শুন্য ভীম-ভিন্দিপালে, ^{ম্থিতে} লাগিলা বেগে দেব-চম্রাশি। উড়িল অমরতমু আচহাদি অম্বর, ^{ম্থা} দে কার্পাসিয়াশি উড়ায় ধুনারী

টকারি ধুনন-ষম্ব ক্ষিপ্তা দণ্ডাঘাতে। প্ৰৰাহিল ধেত স্বচ্ছ অমর-শোণিত: দেব-**অংক** বহিল তর্কাকারে ধার। মনোহর—•সৌবভে পরিয়া **অপ**রূপ। অক্ষত দেবের তহু অস্ত্রের আঘাতে. (অশ্বীর মাকত ধেমন) ছিল্ল নছে কণকাল সে ভীম প্রহারে---কিন্তু দেহ मरह व्यञ्जमारह, मरह यथा ने ब्राप्तह কুট হলাহলে ঘোরতর। স্থরবুন্দ জলনে অস্থির, অস্ত্র-প্রহারে আরুল. ছাডি স্বৰ্গতল শীঘ উঠিলা বিমানে . উঠিশ নিমিষে শক্তে কোটি ব্যোম্যান আভাময়---দেব-অঙ্গ-শোভা অঞ্চে ধবি। অযুত নক্ষত্ৰ যেন উদিল সহসা নীলাম্বৰে। অপুৰ্ব্ব কিবণ অভ্ৰমণ ছুটিতে লাগিল শুক্তে শতাঙ্গ-লহরী নিনাদি মধুর নাদে, ছুটিল চ্কিতে শিবিধবজ মহারথ ইরনাদগতি. উত্তাপে ঝলসি নভক্তব প্রাণিকল অপৰ্ক নিনাদে পাশী বৰণ স্থান্ত্ৰ ছুটিতে লাগিল চক্রে চর্ণি মেঘদল . মনোবধগতি বায়-রথ ক্রভবেগে আকুল করিল ব্যোমকেশ। বৃষ্টিধারে দেৰপুরী অমরা-উপরে বর্ষিল শরজাল – দৈত্যচম মুত, গ্রীবা, বক্ষঃ, ৰাছ ভেদি চমকে উঞ্জলি অন্তন্তু— তড়িত নিঝর যথা। দল্লবাহিনী অহুপার ! দুর শুকে, অমর-স্বর্থী . না পারে স্পর্শিতে অঞ্জে কিংবা ভূজপালে। লাগিল পডিতে, পশকে পশকে দৈত্য-সেনা অগণন !---নির্থিল বুতাস্তর---ত্তিচনত মুরিল, যথন বহিচক্রপায় উজ্লি বিশাল ভাল; দজে ভ্ত্রারি বাড়ায়ে বিপুল বপু: করিলা দীঘল---দীঘ**লভূধর মে**রু ষথা, কিংবা যথা ফণীজ্র বাস্ত্রকি সিন্ধু-মন্থন-প্রলয়ে। माे जो इवश्राम मञ्जू क्या मुद्र, প্রসারি সম্বনে বাহ ঘন লক্ষ ছাড়ি. প্রচও চীৎকার ধানি হস্কারি নাসায়, দুর-শুম্বে দেবধান ধরিতে লাগিলা,

আছাডি আছাড়ি চূৰ্ণ কৈল ক্ষণকালে রথ অথ অপ্তকুল স্কুরে নিকেপি। দেবদেনাপতিবৃন্দ ত্রাসিত তথন আরো দূরতর খোর অন্তরীক্ষ-পর্থ চালাইলা দিব্য যান, দিব্য অস্ত্ৰকুল চাপে বসাইলা ক্রত, শিঞ্জিনী টক্ষারি ঘোর নাদে। মহাতেজে ছুটিল সঘনে অস্ত্রকুল--বিশ্বহর প্রলয়-প্রন ছুটে যথা ভালি গিরিশুঙ্গরাজি—ভালি ক্রম-কাণ্ড-শাখা বেগে ; মুহূর্ত্তে উডিল দশ দিকে লক্ষ লক দৈতামহাকার. লণ্ডভণ্ড দৈত্যবাহ ৷ ভয়ম্বর বেগে ছটিল বারীশ-অসুমহা প্রহরণ . ত্রিভূবন গুম্ভিত, কম্পিত চরাচর , প্রলয়-প্লাবন রঙ্গে টলিল ভূধর चानिन मध्यमन छेखान शिल्लात , শুক্ত জড়ি পড়িতে লাগিল উর্দ্ধপদ - **অ**ষুত দমুজ-তমু দ্ব-নিয়ে বেগে— পর্বতে. ভূতল, সিন্ধু অতল আচ্ছাদি। খন হাহাকার শব্দ দৈত্যমণ্ডলীতে ! বিকট মৃত্য-আরাব দণ্ডের ঘর্ণণ ! দহিছে দিতিজগণে প্রচণ্ড ভাস্কর বর্ষি প্রথর কর -- কালানল যেন--রণক্ষেত্রে। অক দিকে সুঝিছে কৌশলী সমর-পণ্ডিত ধীর শূর উমাস্তত। দেখি বুত্রে অক্স শরে অভেন্স শরীর, হানিছে স্থতীক্ষতর শর চনৎকার , শৃক্ত ব্যাপি একেবারে বাহিরিছে বেন কোটি ভূজক্মমালা মালার আকারে, ঘেরিছে অসুর অঙ্গ বিদ্ধি ধরতর, বিন্ধে যথা বিষদন্ত বিষাক্ত তক্ষক ৰমদুত। শরদাহে আকুল অসুর, লক্ষ্য করি শিবস্থতে ধরিলা সাপটি সংহারীর শেষ শূল-- দিলা শুল্তে ছাড়ি। চলিলা সে অস্তবর অম্বর উল্লে জলিল হুৰ্জন্ন শিখা ঝলকে ঝলকে, ব্ৰহ্মাও পূরিল শূল-গর্জন ভৈরব ! বোর-রকে ত্রমে অস্ত্র--গ্রহপিও বর্ণা হইলে স্বস্থানচ্যুত ভ্ৰমে শৃক্তদেশে— 🕶 বু বক্র চক্রগতি, কভু স্থিরভাব,

কথন নক্ষত্ৰ-ভুলা গতি অদভূত ! শুন্তিত দহৰ দেব, অস্থিয় আকাশ, নেহারি শভুশূল। কুমার-আদেশে ष्पृष्ण इदेना सूर्या जानि क्रनकारन ∸ লুকাইয়া ভম্ন-আভা গভীর ভিমিরে ! ডুবিল মরি রে যেন আধারি গগন কোটি ভারকার বুল । হরিল দেবতা দেবতেকে গগনের তেকোরাশি যত --না রহিল শর-লক্ষ্য অন্তরীকে আর একমাত্র প্রজ্ঞালিত শূলের কিরণ क्विटिंड गांतिम मृखटमटन करन करन । প্রান্তে প্রান্তে গগনেব ভ্রমিলা ত্রিশূল ঘুরি অস্করীক্ষম, লক্ষ্য না হেরিয়া ফিরিলা দৈত্যন্ত্র-করে অভিমানে নত। দেখিলা দমুজপতি সে অন্ত-আলোকে রণস্থলৈ ভীম শবস্থল; এবে একা (म श्रांक्य-मार्य । यथा नगतांक्र्रणः গঞ্জ-কর্ম্ম-রূপে যবে উড়ে বৈনতের। দেখিলা অদূরে হায়, ধূলি-বিলুঞ্জিড দম্জবিজয়-কেতু! নেহারি ভঃথেতে দৈত্যনাথ স্বহন্তে ধরিলা দে পতাকা, বীরগতি আলম ফিরিলা চিস্তাকুল।

ষোড়শ সর্গ

নিক্জ হৃশার, নশ্বন-ভিতর চারু শোভামর মুনি-মোহকর, নবীন প্রবে ঝর ঝর ঝর নিনাদ মধুর , থর থর থর মঞ্জী দোলে।

মুগদ্ধ-মোণিত নিকুঞ্জ-কাননে মুমন্দ্ৰ মাকত আনন্দিত যনে ঢাগিয়া ঢাগিয়া মধ্-নিখনে ছুটিছে চৌদিকে—পড়িছে স্থনে কুম্ম-কোনে

হাসে ফুলকুল ভরণ সম্পর; স্থলনিত শোভা, রসে ভর'ভর খেত রক্ত নীল পীত কলেবর ধরে ধরে ধরে—হাসি মনোহর

মুকুলমুখে

খবে স্থাকণা তত্ব সিঞ্চ করি খবে হিম বথা নিশিগদ্ধাপরি ; ছোটে কুঞ্জম মধ্র লহন্দী সঙ্গীত-বাদন শ্রুতিমূল ভরি

অত্ল সুৰা ো

ভাবে ভাবে ভাবে, ভাবে পাথিকুল ; স্বরগ-বিহক আনননে আকুল ; কেলি করে স্থে ধ্ঁটয়া মুক্ল উতি ভাবে ভাবে . ক্রক ব্যাকুল

বেডার লুটে।

দ্রমে পঞ্চবাণ পিঠে পুষ্পধস্থ হাতে পুষ্পাশর স্থমোহন তন্ত অবণ অধরে প্রভাতরে জহু স্থহাসি বিজ্ঞলী , নেত্র-কোণে ভাস্থ তরকে লুটে॥

ঐদ্রিলা কহিছে "শুন হে মদন, বচিলা নিকুজ বাসনা যেখন আশার(ও) অধিক এ স্থরভি বন দিনিবে অতুল—সফল সাধন

তোষার শ্বর,

নৈত্যপতি হেরি এ কুঞ্জ স্থলর বাবানিবে তোমা, শুন গুণধর, বণপ্রাক্ত যবে মহাদৈত্যবর, ফিবিবে এথানে , রতি-মনোহর,

স্থথে বিহর ॥"

র্যনি ক্রম্ভে পশি, ঐক্রিলা স্থলরী গ্রাসে চাক হাসি স্থলপণ ধরি গ্রাসে চাক হাসি পীন-পদ্মোধরী গ্রেবি বিম্বাধর,—অপাক-লহরী

নয়নে খেলা।

াণ আদি, ওচে দৈত্যকুলেখর"

তে দৈত্যরামা অধ্যয়ুত্বর

াঁটা ছাড়ি নাথ আমার কাতর

তিবে ভেবেছ—ইজ্বার আমার,

এতই হেলা॥

গাম, দৈত্যনাথ, রমণী তোমার ^{ামনা} প্রাতে আছে অধিকার ^{তামার(৩)} বেমন তেমতি আমার, ^{হু দুহ্}**লপতি, দেখিব এবার**

বাষা কেমন।"

হেনকালে শুনি ভূষণের ধ্বনি ফিরিলা ঐন্দ্রিলা—বেন ভূজদিনী ডমক-রবে ফিরমে তথনি ফণা তুলাইয়া—ভাবিলা ইন্দ্রাণী

কবে গ্ৰন ৷

দেখিলা একাকী অনন্তমোহিনী রতি আদে ধীরে বাজিছে কিৰিণী চিন্তা-অবনত চাক-চক্রাননী বধা সুর্যামূৰী, যবে সে যামিনী

হয় আগিত।

জিজ্ঞাসে ঐদ্রিলা, "মদন-মহিলা, ইন্দ্রপ্রিয়া শটী কোথায় রাখিলা ? বাসব-বনিতা, কহ কি কহিলা শুনে সে বাবতা,—শিরোপা কি দিলা মনের মত ॥"

"দৈত্যেশ মহিষি, আমি তব দাসী কেন ব্যঙ্গ কর, মূথে নাহি হাসি ইন্দ্রের কামিনী যে অভিমানিনী ক্লান ত সকলি—গন্ধর্ম-নন্দিনি

শচীনা আদে।

না চাহে মোচন, চির-কারাবাদে রবে ইক্রজায়া—এ স্বর্গ-নিবাদে শচী নাহি চাহে আপন মলল দহজ-প্রসাদে—সহিবে সকল

না ভাবে ত্রাদে॥"

প্রফ্ল জ্ঞানন গন্ধর্ব-কুমারী . নয়ন-কোণেতে রতিরে নেহারি থেলায়ে জ্ঞপাদে তডিত-তরদ দংশিলা জ্বর—করি গ্রীবা-ভদ

ক্ষণেক থাকি। • ইভালী

কহিলা, "কি রতি, ইন্দ্রের ইন্দ্রাণী না আসিবে হেথা ? সাবাস্মানিনি । বুথা কি হবে সে অহ্রের রাণী 'লচীর উদ্ধার' ?— যাব লো আপনি এ সব রাখি॥

সালা দেখি, রভি, ভাল কোরে মোরে কেন-বেশলাস আসে ভাল ভোরে সালা লো ভেমভি বেন হাসি-ভোরে বাঁধি দৈত্যরাক্ষে—রতি, মন ভোরে

Hai wiste .

জিনিয়াসমর ফিবিংল অস্তর রণশ্রাক্তি তাঁর করিব লোদ্র এ নিক্জাবনে !— মরি কি মধুর মদন কৌশল! মবি কি প্রচুর

স্থগন্ধ বায় !"

সাজাইন রতি গদ্ধর্ম-কুমারী (ধক্ত রাজ, ভোর গুণে বলিহারি!) নীলোৎপল যথা ধু'লে ধারাবারি ঐক্তিলার মৃথ; অলকার সারি

ভ্ৰমৰ ভাৰ।

সাজিল ঐব্রিলা; মধুর মাধুরী বসন-ভ্রবে পডে ধেন ক্রি পডে ধেন ক্রি চাক-পরোধরী লাবণ্য-তরক থরে থরে থরে

নাচিল প্রায়॥

বস্ত-সময়ে কিবা সাজে রতি ভূলাতে কন্দর্পে---রপ-কূলপতি ? বিবের সমাধি ভাগিতে পার্শ্বতী সাজিলা বা কিবা ? মোহিনী যুবতী সুধা-ভূষ্বে ?

নিন্দিলা সে সব ঐক্রিলা রূপসী সাজিলা সুন্দর, বাদে কটি কসি , কুস্তলে রতন ঝলিছে ঝলসি ভাবকার মালা— মন্থপ্রেয়সী

আপনি ভূলে॥

জন্মর-মোহিনী নেগাবে মৃকুরে সে বেশ-লাবণ্য, গরবেতে প্রে; শচীরে পাইবে ভূলায়ে জন্মরে ভাবিল নিশ্চিত; কোকিলা-ক্ধরে কুহে "লো রতি!

সাজা এইখানে যত অলঙাব, বত বেশভ্বা আছে লো আমার; রতন-মৃক্ট,মণিমঃ হার, জয়লক্ধন—ধনেশ-তাঙার

ডাল যুবক্তি।

আন বান পুপারপ, অখ, গজ, নেতের পতাকা, ২েমময ধ্রেল; আন বীণ, বেণু, মন্দিরা, মুবজ, আমার যা কিছু;—মানস-প্রজ,

ফুটাব আৰু।

বল চেড়ীদলে সশস্ত্র সাজিরা দীড়াক সকলে এথানে আসিয়া— ত্রিজ্ঞটা, ব্রিগুণা, কপালী, কালিকা, যে বেথা আছে লো গমর্কবালিকা, দানবী-সাজ

যাও, হে অনঙ্গ, ফিরিলে অস্বব জানাইও বার্তা, নিকুঞ্জে মধুর শ্রমি কিছুকাল।"—বাঞ্জিল ঘুজ্ব,র

নাচিয়া কুটিতে, চরণে নূপুর

মধ্ব তায়

"ঐদ্রিলার গতি কে ফিরাতে পারে ?" কহিল দানবী মুহল ঝলারে— "হে দম্জনাথ, ঐদ্রিলা হে নারে বাসনা ছাডিতে –বাসবপ্রিয়ারে

ধরাক পায় ৷

হেনকালে কাম কহিলা সংবাদ, কিরিছে দৈত্যেক্ত সাধি নিজ সাধ জিনিয়া সমবে-অথা দে নিবাদ উজাডি অরণা প্রাইয়া সাধ কটারে যায়

স্পন্তীর গতি, অতি ধীর ভাব, ভাবে দৈত্য মনে "এ জয়ে কি লাভ ? সমূহ বাহিনী সংগ্রামে অভাব করিল অমর—এরপে দানব

ক'দিন রবে

আমি বেন রণে পভিস্থ বিজয়, আমারি বেন এ শরীর অক্ষয় প্রতি রণে যদি দৈতাকুলক্ষয় হর হেন রূপে, কারে পয়ে শ্বর ভূঞ্জিব তবে?

চলিনা ঐদ্রিলা আণ্ড বাড়াইয়া বসস্ক-সথারে সংহত্তি লইনা চলনভন্দীতে তরস তুলিয়া ভুলারে কলর্প মধুর অমিয়া

হাসিতে ঢাগি

দিলা আলিখন প্রকৃষ্ণ লোচন নেহারি অস্তর দানবা-বদন ভূলিলা সকল ভাবনা বেদন বা ছিল অন্তরে নিমিষে কালন

মনের কালী

কহিলা, "ঐজিলে, এ কি মনোহর শোভা হেরি আজি মরি কি স্থলর কধিরে ফুটিছে স্থ-ওষ্ঠ অধর অবণের রাগে! ভন্ত-মিগ্ধকব

এ ভুজালতা।"

"রণশ্রাস্থি নাথ, ঘুরাতে তোমার আমার আদেশে বিরচিলা মাব মধুব নিকুঞ্জ , শোভা হেরি ভার সা**জিম্ আ**পনি ! রণচিন্তার

ঘূচাব হে তা।"

ৰুণু ৰুণু ধ্বনি কিছিলী নৃপুৰে, আগু হইলা ধনী ধীরে গীবে ধীবে অধীবল তমু-ভৱে দৈত্যবরে বাঁধি ভুজপাশে--চাক অদে করে

শশাক্ষকর ৷

প্রবেশি নিক্জে শিহরে দানব চারিদিকে মৃত্ মধুর স্থবব যেন উথলিছে মধুর অর্থব চালিয়া চৌদিকে।—মৃকুল পল্লব

মনক শায় 🛚

অচেতন দৈত্য ভূঞ্জিয়। মাধুৰী জাগাইলা হাসি ঐদ্রিলা হুন্দরী বণপ্রান্ত শূরে স্থরে শান্ত করি চলিলা দ্রমণে ভূঞ্জপাশে ধরি

অস্থরবর।

কিছুদ্রে গিগা কহে দৈত্যবাজ এ কি হেরি, প্রোয়ে, তব ভ্গা-সাজ কেন এ সকল কেন হেথা আজি পডিয়া এ ভাবে γ চেড়ীর সমাজ ? এ কি সমব ৮*

'কোথা তবে আবার রাখিব এ সব কং ভানি, ওহে হদর-বলত। কার গৃহ হার তবন ও সব, পেবিছ ওথানে । অমর-বিতেব! দাচী-ভবন!

অথবার রাণী! ইচ্ছের ইন্দ্রাণী! কহিলা রভিরে, কহিলা বাথানি এ ভ্বন ভার! কহিলা কি জানি ভঞ্র আমরা? চাহে না সে ধনী

कांब्रा-८माठन ।

'দৈত্য-বাক্য ছার' কহিলা আবার 'কাবামুক্তি, হায়, কে কবে রে কার ?' শুন হে দানব, পুলোম-কফার এ স্থ-ঐথব্য। তার(ই) অবিকাব হেথা দক্লি।

কি জানি কখন্ আংসিবে সে ধনী মনোলংথে ভাই আংইঞ্ আংপনি লভার নিকুঞ্জে। ছাডিব বধনি শচী আ আভাদিবে।" নীবব রমণী

এতেক বলি॥

শুনিতে শুনিতে কোধেতে ঋধীব বাডিতে লাগিল অস্থব-শরীব পর্বত-আকাব , নিখাস-সমীর বহিল সবেগে কহিল গঞ্জীর

"রতি কোথায় ?"

রতি কাঁপি কাঁপি আদি দৈতাপাশে কহে "ইঙ্গপ্রিয়া ববে কারাবাদে, নাহি চাহে শচী আপন মঙ্গল দৈতোশ-প্রসাদে সহিবে সকল থাকি এলায়॥"

রক্তবর্ণ আঁথি ঘূৰিল স্বনে, ফুলিল অধ**র** ভীষণ বদনে, কড কড় ধ্বনি বদনে বদনে উঠিল বিকট---কহিল পর্জনে

ভীম অসুব—

"আমাৰ আদেশ হেলিলি, ইন্ত্ৰাণি থ বিফল কবিলি দৈত্যৰাজ-বাণী থ" বলি ছিডি কেশ হুই হন্তে টানি ছুটিল হুম্বারি—হেবি দৈত্যরাণী বামা চতুৰ—

নিল জ্লণস্থাপনাব হাতে, বাকাইল চাপ (জ্লৰাণ তাতে) আকৰ্ণ পূরিয়া , বসি হাটুগাডি (সাবাস স্করি!) বাণ দিল ছাডি

ঈষৎ হাসি।

অব্যর্থ সন্ধান! মদনেব বাণ আকুল করিল দমুজ-পরাণ ফিরিয়া দেখিল স্থির সৌদামিনী হাসিছে ঐক্রিলা—দানব-কামিনী

লাবণ্য-রাশি॥

হেমচন্দ্রের গ্রন্থাবলী

দাড়াহলা শ্র। আাদর। নৃকটে ঐক্রিলা কহিলা নধুর কপটে "এ নহে উচিত, হে দছকনাথ, তুমি যাবে দেখা করিতে সাক্ষাৎ

শচীর দনে।

তবে গৰ্জ তাব হবে যে সফল সেই অৰ্গরাণী! হবে কি বিফল দাসীর আদেশে দৈত্যরাজ-বল ? ঐক্সিলা-বাসনা প্রান ত সকল,

আছে ত মনে ॥"
কহে দৈত্যপতি "ভোমার, সুন্ধি,
দিলাম সঁপিরা ইক্রসহচরী .
বে বাসনা তব তার দর্শ হরি ,
পুরাও, মহিবি ,—ফ্ণা.চূর্ণ করি
আন ফ্রিনী।"

হরবে উন্মন্ত হাসিলা ঐব্দ্রিলা; স্থাবে দৈত্যববে অনিঙ্গন দিলা; চেড়ীদল সঙ্গে হরবে চলিলা গব্দেস্ত্র-গমনে, কটাক্ষে হানিলা

বোরদামিনী॥

সপ্তদশ সর্গ

দেবারি দম্জনাথ দৈত্য-সভামাঝে বেষ্টিত অমাত্যবর্গ; সমর-কুশল মহাবল দেনাপতি বুল চারিধারে। নিকটে বসিয়া ধীরে স্থমিত্র ধীমান কহিছে গন্তীব-ম্বরে "দৈত্যকুলেশ্ব, मिन मिन मरत रेमछा रमस्वत्र উৎপাতে. মরি লাজে কত হায়, না হয় গণনা---বীরবংশ ধ্বংস-প্রায় দেবতার তেজে। ক্রমে দর্প, সাহস বাড়িছে দেবতার বারি বরিষার মথা তরদিণী-ধারা ধায় রকে ভাকি বাঁধ চ্কুল উছলি, ুগৃহ, শক্ত, প্ৰ, প্ৰাণী নাশি অগণন ! ্ হের ছুর্নিবার তেজে জয়ন্ত, অনল, ুসময়ে অসুরে জিনি অসম সাহসে প্রবেশিলা পূর্বহারে, লজ্মিলা প্রাচীর क्षत्रका क्षत्रव-रेगम ; रह रेगणारमध्य,

অর্থেক অমরাবতী ভূজবলে দেব
অধিকার কৈলা। এবে উত্তব-তোবণে,
আবাব সাজিছে রণে দেবসেনাপতি
মহাবণী কুমার, সুর্য্য, বরুণ, বায়ু,
ভাবিলা হে দল্লেক্স, পলাইলা ভারা
কুকাতে ত্রিপুল-ভরে পাতালে আবার.
সে আশা নিফল, প্রভ্, ইব্রুলালে ছলি
করিছে রুপ্ট বণ অমর মারাবী।
হৈলা দেব অস্থান কটক। কি উপালে,
বুকিতে না পাবি, হায় এ ম্বর্ণপুরী
হবে দেববথি-শৃক্ত—ছঃসহ সমব
সহিবে ক'দিন আবে এরণে দানব ?"
দানবকুল-ঈখর বুত্রাম্বর তবে—
"সত্য যা কহিলা, মান্ধ, কিছ কহ সুধি,

कि कल वैक्तित्रा अर्ग छाड़ि ?-पांत लागि, কত তপ কৈছু কত যুগে নিবাহাবে, জিনিতে সমরে যায় কত মহাবথী দৈত্যবীবকুল-শ্ৰেষ্ঠ ত্যঞ্জিলা পৰাণ , ষাব লাগি অসংখ্য অসংখ্য দৈত্যদেনা পড়ে রণে, বীরদর্পে শমনে না ডবি। क्रमम वीरेतन करल--- मनग(है) मकल শক্ৰ ঘাতি বণস্থলে! হে সচিবোত্তম, কে কোথা বাজত্ব ভ্ঞে বিনা যুদ্ধ-পণে---মৃত্যভয়ে সমবে বিবত কবে শূব ? কৰে দে বীবেৰ চিত্তে ক্লতাম্ভেৰ ভয় হানিতে সমবে শক্র ? তাজিতে পবাণ যুঝি রকে বিপুদকে সমব-প্রাক্ষণে ? শুন, মারি, যত দিন এ দমুজকুলে একমাত্র অন্তধানী 'থাকিবে জীবিত. পারিব ধরিতে অস্ত্র এ প্রচণ্ড ভূজে. বহিবে কৃধির-স্রোত এ দেহে আমার। নহি কান্ত তত দিন এ ছবন্ত রণে।"

হেনকালে কন্ত্রপীড় বীর চ্ড়ামণি,
মণ্ডিত সমরসাকে আসি দাঁড়াইলা
নতনির, পিতার সমূথে কর যুড়ি।
নীর্থক উজ্জ্বল শিরে অকে স্থ-করচ,
রত্ত্বমন্ত্র অসিমৃত্তি ঝলসে কটিতে—
সারসনে , পৃষ্ঠদেশে নিবন্ধ ঝলসে।
কহিলা "হে তাড়, ভোমা দেখাতে মুথ
পাই লাক, হে বীরেক্স, তব পুত্র আমি

ঢিব অবিশ্বন রবে—সমবে হারিছ,
নারিছ রক্ষিতে পুরী তিন দিন কাল।
নারিছ অনল-হতে। জন্ম বালক
অধিকার কৈল ছার বক্ষিত আমার।
বণে জল দিল, পিতঃ, দছজ-বাহিনী—
আমি যার দেনাপতি। জীবিত থাকিয়া
তাহা চক্ষে নির্বিছ। এ নিন্দা ঘূচাব,
বিলোকবিজয়ী দৈত্যপতি, বণছলে
সমব-বহিতে—বংগ দাবারিতে বন—
দহব অমর-শৈক্ত; সমর-কুশল,
নিব অনল দেবে—জয়বল জিনিব;
নতুবা হে তাত, এই শেষ দবশন
৭ চবণ-অববিন্দ। আজ্ঞা দেহ প্রতে।"
বলি পিতপদধলা ধরিলা মন্তকে।

বলি পিতৃপদধূলা ধরিলা মন্তকে।
তানয়া পুজের বালা বুজের নমনে
দেবা দিল বাঙ্গবিন্দ, দ্বিভূক প্রসাবি
পুজে দিয়া আলিকন কহিলা দৈতোশ—
"এ প্রতিক্ষা, বীরখেঠ, উচিত(ই) তোমান,
দল্লকলতিলক পুজ কদ্রপীড,
চির অবিন্দম তুমি -কিন্তু তানি পুনঃ
প্রেক্ত আদিছে রণে, পলিবে সত্বব
অসরায়—প্রনাথ তুর্জিয় সমনে,
না পাবে যুঝিতে তারে ক্রিভূবনে কেহ
মৃত্যুজয়ী বুল বিনা, রক্ষঃ-স্বরাস্থনে।
তার সনে সমরে পশিবি একা তুই দ
বে সুধ্দি, একমাত্র পুজ তুই মম।"
বলি পুনঃ গাচ্তর দিলা আলিকন
ক্রপীতে বক্ষে ধরি দক্ষদেশবর।

কহিলা আবার ছাডি ঘন দীর্ঘধাস—

"কিন্তু বীর তুই—বীরপুত্র—মহারণী,
কেমনে নিবারি ভোরে ? কেমনে বা বলি,

যাও বংস. দৈত্যকল রবি অতে যাও ?"

"হে পিতঃ," কহিলা ধ্রনন্দন তথন—
"কি কল জীবনে, হেন কলত্ব পাকিতে,
কি কল তোমার (ই) তাত, হেন বংশগরে
নিন্দা বার আজীবন ত্রিলোকে ঘ্যিবে,
ইানিবে অসুর সূব যক যার নামে?
শীবনে জীবন-অত্তে জগতে ঘ্রণিত।
বিলোক বিজয়ী পিতঃ, কহিবে সকলে,
ইশাবার কাপুক্ষ তনর তাহার

পলাইল প্রাণভয়ে না ফিরিলা রণে, পুনর্কার এ কলঙ্ক না হ'লে মোচন জীবন নিজ্ল মম, হে দছজনাথ, মবিব বীরের মৃত্যু সমবে পশিয়া।"

উৎসাহ-প্রফ্লনেত্রে আনলে অনুর,
নির্বিলা পুত্রমুথ ছটাবিমণ্ডিত,
ভাহ-বিমণ্ডিত যথা কনক-জচল
সহস্র-কিরণমালী উদিলে শিণরে!
কহিলা সংবৃদ্ধি বেগ—"না নিবারি ভোমা,
যাও রণে, জবিলম পুত্র রণজ্যী;
পাল বীরধর্ম, ভাগ্যে যা থাকে আমার।"
বলি কৈলা আশীর্মাদ অশুবিন্দু মুছি।

বিদি পদ জনকের আনদ্যে চলিলা
কন্দ্রপীড। জননী-নিকটে গেলা জ্রুত।
দেখিলা ঐজিলা চেড়ীদলে শুদজ্জিতা
চলে মলাকিনী-তীরে শচীরে বান্ধিতে।
আনদ্যে জননী-পদ বিনিয়া বীবেশ
কহিলা—"জননি, স্তেত দেহ পদধূলি,
দিলা আনীর্কাদ পিতা, প্রতিজ্ঞা আনার
নির্দেব কবিব স্বর্পরী! কিন্ধু মাতঃ,
কে কহিতে পাবে ক্রু সমরের গতি,
না হেরি যন্তপি আর ও পদম্পল,
ও পদম্পলে, মাতঃ, এ মিনতি মম,
রেপো মা চরণে ইন্বালা সবলাবে
পতিগতপ্রাণা সতী সেহেতে পালিতা,
রক্ষা করো, জননি পো, স্বেহুলানে তারে।"

হার রে, ঝরিল অঞ্চ নীরেন্দ্র-নরনে
স্মরি সে হদর-ইন্দু:-ইন্দুরালা-মুধ ,
এ বিদারে কার, হার, না আর্দ্ররে হিন্না ?
ঐক্সিলার(ও) শিলামর হদর তিতিল,
বাম্প-বিন্দু নেত্রকোনে, কহিলা দানবী
তনরের মুধ্যাণ লয়ে ঘন ঘন ,-"এ অশুভ কথা, বৎস, কেন রে শুনালি ?
কাজ কি সমরে মোর ? একা দৈত্যনাথ
নাশিবে অমরকুল শহর-ত্রিশ্লে।
দৈত্যকুল-পহজ, সমরে নাহি বাও।"

"না মাতঃ, অন্তর জলে অনন্ত শিথার। স্থর--হন্তে হারি রণে, নির্কাণ আহতি সমর্পিব এবে তার, অমরে দণ্ডিয়া, তনরের শেষ ভিকা মনে রেথো, মাতঃ! পেয়েছি চরণধূলি জনকের ঠাই. দেহ পদধ্যি তব।" এতেক কহিয়া ভক্তিভাবে প্রণমিলা জননী-চবণে। প্র কোলে করি স্নেহে দানব-মহিধী वाक्रिमा भीर्थक इटफ विश्व मध्यान. কহিলা আখাদি "বংদ. এ অঘ্য দতত অলক্ষ্যে রকিবে তোরে-- এ মম আপিন্; যাও রণে রণজয়ী আমরিন্দম বীব !" হেথা চাক ইন্দ্রালা কল্পতক্ষুলে, (শুলু কুপ্রমের মালা লুটিছে উর্বেস) বসি খেত শিলাতলে, স্থীদলে মেলি. ভ্ৰিছে রণসংবাদ ভাসি অঞ্নীরে। আহা, স্বমলিন মুধ, হানয় কাতর ! বেন রে নিশয় কেচ বিহন্ধ পরিয়া হেমন্তের দেশ হ'তে আনিলা গ্রীমেতে . ভাবিছে দানববালা তেমতি আকুল। কে পাবে কহিতে, প্রাণ স্বকোমল যাব, সমরের ঘোব শিথা---জ্বলিছে চৌদিকে, অহরহ দিবানিশি বণ কোলাইল ? ক্ষণ জন্মাঘাত নিত্য #তিমূলে, কহিতে লাগিলা শেষে ব্যাকুল হইয়া-"কত দিনে, হায়, স্থি, এ সম্ব্রেভাত শুকায়ে নিঃশেষ হবে ? কভ দিনে পুনঃ ধরিবে পুর্ফের ভাব এ অমরাবতী ? পুত্র-শোকাতুরা আহা, মাতাব রোদন, मिथ (ब. बिनरत हिया !- विनरत लो श्रीत ! জন ফিছীনা ব্মণীর করুণ ক্রন্দন। ভগিনীর থেদস্বর ভাতার বিয়োগে। হায় স্থি, বৃদ্ধ, তোরা বল্, কি উপায়ে দমুজের এ তুর্দশা ঘুচাইতে পারি ? এ দেহ করিলে দান হয় যদি বল, নিবাই সমরানল তমু সমর্পিয়া। পথি রে বৃঝিতে নারি কিরূপে এ সব অসুর অমরকুলে মহাবীর যত নিদর নহে লো তারা আপনা পাসরি, জীবন-বাতক অন্ত্র হানে পরস্পরে? না ভাবে মমতালেশ নাহি ভাবে দয়া, সদাই উন্মত্ত-প্রায় নিষ্ঠুর সমরে, হানি অন্ত বধে প্রাণী, ভাবে না অন্তরে কত বে যাতনা জীবে জীবন-নিধনে।

সমর-সুরাতে হার, অমর দানব,
হর কি এতই স্থি উন্মন্ত অক্সান ?
কিংবা কি দে পরাণীর (ই) প্রকৃতি বিভাবকুটিল কপটাচারী প্রাণিমাত্র সবে ?
কেমনে বা ভাবি ভাহা ? হৃদরবল্লভ
আমার বিনি, লো সই, কপটতা ভাঁবে
না প্রশে কোন কালে, তরু কি কাবণ
সমরে নাশিতে প্রাণী না হন বিম্থ ?
দিব না দিব না নাথে সমর-প্রাদণে
প্রবেশিতে পুনরায়, রাথিব বাণিয়া
হৃদয়-উপবে এই ভ্রলভা-পাশে,
নিদারণ হ'তে ভাঁবে দিব না লো আর।"

তেনকালে কদ্ৰপীড ব্ৰেব ভনয় দজ্জিত দমর-দাজে, সুধীর গমন, অধােমুখে ধারে ধারে উভানে প্রবেশি, অগ্রদর ক্রমে দেই কল্পতক্রমূলে। দর হ'তে দেখি পতি, উটিয়া শিহরি, ছটিলা উতলা ইন্দ্রালা বামা, পডিলা বক্ষেতে তাঁর বাছ জড়াইনা ভক্তল তা ভকুদে**ছ খে**রে যথা সুথে। कश्नि।-(कांकिनांश्विन कर्छ कुरुविन, (হায় ধবে ভগ্ন খবে ডাকে পিকবধ্) কহিলা.—"হে নাথ. কেন দেখি হেন সাজ রণদালে কেন পুনঃ দালালে প্রতম্থ " এখন(ও) সমরক্রেশ দূর নহে তব , এখন(ও) নিশিতে, নাথ, নিদ্রা নাহি যাও কত খপ্ন সারানিশি শুনাও, প্রাণেশ, আবার এ বেশ কেন দহিতে আমায় ? চলিতে আমায় বঝি দাধ ছিল মনে— ইন্দ্রালা ভাবে ভয় সমরের বেশে, তাই ভয় দেখাইতে আইলে, প্রাণেশ! খোল, প্রভু, রণদাজ, না পারি সহিতে, निष्ठेत मोत्रण ज्ञि, ललना-शम्ब ম্বিতে আইলে প্রিয়া ছলনা করিয়া. ত্যক রণসাজ শীঘ্র, দেখাই(ও) না আর বিভীষিকা তক্ষণীর হৃদয় তাপিতে !"

°প্রের্গন, নিষ্ট্র আমি, সভাই কহিলা। পালিতে বীরের ধর্ম দিলাম বেদনা ভোমার হৃদরে, প্রিবে, লভিতে বিদার এসেছি, বিধার দেহ বাই রণস্থলে।

'থাবে নাথ ? "বলি ধীরে চারু চন্দ্রাননী চলিলা বদন ইন্দ প্রিমথভলে. প্রদোষ-কমল ধথা মূদিতে মুদিতে নহারে শিশিরে ভিজি অন্তগত ভারু। 'যাবে নাথ, যাবে কি হে ছি'ডিয়া এ লতা. ্বধৈছি তোমায় যাহে কত সাধ করি গ ৳ডে কি হে তক্তবর, ঘেরে যদি তার ত্রুলতাধীরে ধীরে আতায় লভিয়া? ছিডিলে তবুও নাথ লতিকা ছাডে না , াতি তার কোথা আর বিনা সে পাদপ ? কোথা নাথ, বল বল তরকের গতি বিনা সে সাগরগর্ভ ৪ হে সথে, নিঝরি খেলিতে না বাদে ভাল শৈল-অঙ্গ বিনা, শত ফেরে **ঘেরি তারে কর**য়ে ভাষণ ঝব ঝর নাদে সদা—তেমতি হে আমি থাকিব তোমার এই হৃদয়ে জ্বভায়ে।"

খানব তোনার এই কারে জভারে।
ভানি স্থেহভরে বীব ধরিলা ভরুণী
চাক চন্দ্রানন চুম্বি ফেলি অঞ্ধারা।
ভকাইল ইন্দুবালা, নিদাবে বেমতি
ভকার কুম্বলতা ভাত্তর পরশে।
হিলা সরলা বালা, নমনের জলে
ভিজিল বীবের বর্ম, হৈম শ্রাসন।

"ধাবে যদি, নাথ, আগে এই লভাকল শালিত্ন যে সব দোঁতে যত্নে এত দিন , এই পুষ্প-তব্ৰুৱাজি কিসলয়ে ঢাকা, দেখ দেখ কত পুষ্প ছলি ডালে ডালে मधामूर्य ভাবে यम इः श्रिनीत क्या, গ্হণ্ডে অর্জিফু যায় কতই আদরে। নাশ আগে সেই সব বিহন্দমরাজি विश्व विविध वर्ष- नम्न-त्रक्षन। थि जिन भानिना त्य मत्य फ्रांनात्न, ^{ম্ধাৰ্ত্ত} দে**থিলে যা**য় হইতে কাত্ৰ मान এই मधीगत. आजीवन बाता ধ্ৰের স্পিনী মম, আজীবনকাল াত্রীভিত্তে পালিলা সদা.—সেবিলা প্রাণেশ, ^{প্রাণ}, মন, দেহ, স্নেহ-রুসে মিশাইয়া। ^{†াশ} পরে এ দাসীরে—জাবন নাশিতে ^{টাহি ত} ভোমার মায়া, বীর তুমি নাথ ! াতিয়া দিলাম বক্ষঃ, হান এ হৃদয়ে ^{দ রক্ত-}পিপাস্থ অসি,—রণে যাও বীর !"

বলি মূৰ্চ্ছাগত ইন্দুবালা ইন্দুমুখী, শ্বীরা ষতনে পুন: করায় চেতন, ক্লুপীড় স্নেহে চম্বি অধর লুলাট্র শিবিবে চলিলা জত চঞ্চল-গতিতে। নীরবে চাহিয়া পথ থাকি কতক্ষণ कहिना मानव-कन्ना ठाक हेन्द्राना---"হায়, স্থি, সংগ্রামে মাদকতা হেন, শিথিব সংগ্রাম আমি ফিরিলে প্রাজাশ।" হায় ইন্দুবালা, তুমি কি জানিবে বল, জীবের হৃদয়ার্ণবে কি অন্তত্ত খেলা ? মৃর্ত্তিমতা সরলতা তুমি জীবকুলে, দানব কুলের চাক কোমল নলিনী। আকুল সরলা বালা ব্যথিত চঞ্চল. থাকিতে নাবিলা স্থির প্রিগ্ধ শিলাতলে. মি**শ্ব কুমুমের দাম অন্তরে নি**ক্ষেপি তক্ষছায়া ত্যজি গৃহে করিলা প্রবেশ। পতিগত-প্রাণা সতী ভাবিলা তথন করিবে শিবের পূজা-পতির মঞ্চল কামনা করিয়ে চিত্তে, লভি সিদ্ধ বর নিবারিবে চিত্তবেগ শাস্তির সলিলে। আজ্ঞাদিলাস্থীগণে, পূজা-অয়োজন করিতে বিধানমত, পবিত্র আগারে, পরিলা স্থপট্টবাস , স্নানে শুচি-তত্ত, প্রবেশিলা পূজাগাবে সাধী শুদ্ধতি, স্থবিন্ন, চন্দন, পুপ্ৰমান্য, সুবসন অপর্পি শিবমূর্ত্তিপরে স্থির ভক্তি সং ধ্যানে শিবমূর্ত্তি ভাবি জপি শিবনাম, বর মাগিবাব আশে উঠিলা সুন্দরী . উঠিলা সবিল্বজ্ঞল ঢালিতে মপ্তকে . ধবিলামঙ্গল-ঘট ভক্তির উল্লাসে. হায় রে. বিমুখ যাবে বিধাতা যথন. কোন সে কামনা সিদ্ধ নাহি হয় তার. महम। कॅांशिन इस मानववानात, কাঞ্জন মঙ্গল-ঘট পড়িল খনিয়া মহাদেবমূর্ত্তিপরে খণ্ড খণ্ড হয়ে. विविभव, क्ल, भूभ इंडिन ट्रोक्टिक। অধীর হইলা দেখি ইন্দুবালা সতী. पत्र पत्र इनव्रत्न अतिन मिनन , শিহরিল শীর্ণ ডকু; 'হে শস্তু' বলিয়া ভূতলে পড়িলা বামা স্বামি-মুখ স্মরি।

স্থীগণে মেলি সবে করি কোলাকুলি পূজা-গৃহ বাহিবে লইলা ইন্বালা: রতি আসি নানামতে ব্যাইলা ভার. সাম্বনা করিয়া কিছু করিলা স্থস্থির। চেতনা পাইয়া ঘন ফেলি দীৰ্ঘখাস কহে দৈত্যরাজ্বধু দারুণ আক্ষেপে— "হে শহর উমাপতি, দাসীর কপালে এই কি আছিল শেষে গ বৃতি লো, আমার পত্তি-আবাধনা-ভাব এত কি মহেশে ? ि (मारव (मार्य) (ला मानी अमरवन-कारक ? পাব নাকি বৃতি আমাব জনয়েশে মল গ জানি না সে পাদণদ বিনা ত্রিভ্বনে।" কহিলা মদনপত্নী "হে দানববধু, ভাবিতে কি আছে কভূ এ অশুভ কথা গ বদনে এনো না, সতি, ইথে অকুশল-প্রিয়জন অকুশল অশুভ চিন্তায়, নাহি কি ভাবিতে অক্স ? হাদয় বেদনা জড়াতে নাহি কি উপায়, সরলে গ সমতঃখী প্রাণীর যাত্নাসকলি ভুলিলে কি. চাক্মতি ভুলিলে শচীরে ? অমরায় ফিরে মবে আইলা তব প্রিয় নৈমিষ অবণ্য হ'তে শনীৰে বানিষা. হে ইন্দু-বদনা, তুমি কাঁদিলা কতই শ্চী-ছঃথে কত ছঃখ করিলা তথন। দে প্লোমকন্সা এবে নিভত মন্দিরে নিরানন্দ দিবানিশি ৷ ভুলি ছঃখ তার, বুঁথা ভয়ে হেন ভাবে ভাবিছ আপনি ? আপন ১৮য়-ব্যথা এতই কি. সতি ?" त्र कि-वादका हेन्द्र बाना मनब्बन्द्र मा শ্বরি মনে পতি, শ্বরি শচীক্থা, অধোমুখে ভাৰিতে লাগিলা অঞ্মুখ। হিম-বিন্দসিক্ত যেন শশাক্ষ মলিন।

অফাদশ সর্গ

কুল কুল ধ্বনি, চলে মন্দাকিনী, দেবকুল-প্রির, পবিঅ ডটিনী; লডায়ে লুটিছে প্র-মনোইর মন্দার ছুক্লে—ছুক্ল প্লের সুমুজি বিষল ফুল-শোভার। বে ফ্লের দলে পুরবালাগণে হেলাইত তমু বিহ্বালিত মনে, না হেলিত ফুল পুর-তন্ত্ ধরি ধেলিত যংন অমর অমরী

শীতপুশরেণু মাধিয়া গায় বধন কমরা ছিল অমরের, ত্রধামে দক্ত না ছিল দৈত্যের; প্রেরবালা-কঠে স্কীত ঝরিত, যে বীত তুনিয়া কিয়নী মোহিত,

কলপ অনন্ধ যে গীত গুনে বথন পোলোমী আবগুল-বামে বসিত আনন্দে চিরানন্দধ্যে, দেবৠ্ধিগণ আনি পুগুরীক অমত-হদের—বাকা অমায়িক

দিও শচী-করে গরিমা-ওণে সেই মলাকিনী-তীবে গ্রিমাণা, মন্দির-অলিন্দে, শচী প্রলোচনা। কাত্তে প্রহাসিনী চপলা স্থন্দরী, রতি চাক্লবেশ, বসি শোভা করি—

বেরেছে মাধুর্ব্যে অমরা-রাণী প্রভাতের শশী চারু ইন্দ্রালা শচী-পদভলে, বিদি কুত্হলা হেরিছে শচীর বিষল বদন, শুনিছে কৌতকে—বালিকা বেমদ—

ইন্দ্রণীর মৃত্ মধুর বাণী কহিছে পোলোমী কোথা এগলোক, দেখিতে কিরূপ, কিরূপ আলোক প্রকাশে সেধানে; কিরূপ উজ্জ্বন কনক-নির্মিত এক্ষার কমন,

সতত চঞ্চল কারণ-জ্ব কিবা অদত্ত সে বেপু-সমূদ্র ; বীচিমালা ভাষ কি বিপুল, কুদ্র ; কত অপরূপ ফ্লনের লীলা প্রকাশ ভাহাতে ; কিব্লপ চঞ্চলা

পরমাগুমরী মহী সে লাগ কোথা বিশ্বলোক বৈক্ঠ-ত্বন; ভকত-বংগল কিবা জনার্দন; কিবা নে লল্পীর অক্ষর ভাঙার, কতই অনক্ত দান ক্ষলার;

কিবা শ্রীপতির পালন-গ্রা

দেখিতে কিন্ধপ শ্ৰীবংসলাঞ্চন;
কি শোভা কৌন্ধতে— কেশব-ভূবন ,
কমনা-লাবণ্যে কি চাক-মাধুনী,
কীবোদ মধুর যে মাধুযোঁ পুরি;

কিবা স্থামর রমার কথা॥
কৈলাস-ভ্বন কিরণ ঠতরব ,
তৈবৰ কিরণ জটাধারী ভব ,
কিরণে জিশুলী করেন প্রলয়—
গ্রিলোক-ব্রমাণ্ড যবে রেগুময়—
প্রশাস-বিষাণ কিবা সে বোর ।

অপর-বিবাদ কিবা সে বোর। কিবা দরাময়ী শঙ্কর-গৃহিণী, ডবে শুভকরী তুর্গতিহারিণী, কি দেব, দানব, যক, রক্ষ, নর, নীবহুংবে উমা কড়ই কান্তর,

ভক্তজন-স্নেচে সদাই ভোর ॥
আগে সে কিকপে বাদবে তৃষিতে
বিধি, হবি, হব, অমরপুরীতে
আদিকেন স্থাথ—আদিতেন উমা
বাগ-মাতা বাগি, প্লাদনা রমা

ইফ্রাখ-উৎসব যে দিন খরে। গুটাইতে ইন্দ্রালা-মনোব্যথা, গুটাইলা শচী সে অপূর্ব্ব কথা, ধ্যক্ষ ত্রিদিব মাতিত ঘথন, ধি পঞ্চাল নিজে পঞ্চানন

গানিতেন যোগী গঞীর-মরে॥
গানিতেন যোগী গঞীর-মরে॥
গানতি জ্ঞানী সে গীত ভ্রনিয়া

ইতি যোগধ্যান ভাবেতে ভ্রিয়া

ন্যাতেন ম্বর সে মর সহিত ,

ম্বা উত্তলা, বিধি রোমাঞ্চিত,

আনন্দে অধীরা ভবেশ কায়া। গাঁও গৃচ তন্ত্র হরি-গান ভূলি, গাঁডি তুহ যন্ত্র উদ্ধে বাহু তৃলি, বিশ্তালে ঘন ঘাতি করতল, গাঁডিত নারদ—হরষে বিহ্নল

আনন্দ-সলিলে ভিঞ্জায়ে কারা ॥ ানাইলা শতী দক্ষজধালার — ইদিবে আসিরা থাকিত কোথার ফ্ন্যু শীবনে সফল সাধন াধু, পুণাশীল প্রাণী যত জন—

দ্মাত্মস্থ-ভোগ কিবা দেখার।

কহিলা ইন্দ্রাণী "শুন বে সরলে, এই স্বর্গধানে আছে কত স্থলে, স্থপবিত্র ঝবি আত্মা মোহকর কত নিক্পম মাধুবী সুন্দর,

দিভিফ্তগণ না জানে যায় ॥"
তানি ইকুম্বী ইকুবালা বলে
"হে অমর-বাণি, আমি সে সকলে
তানাইলে যাহা মধুমাথা করে,
পাব কি দেবিতে ৽—তানিয়া অন্তরে

কত কুত্ংশ উথলে হায় !" কাতর হৃদয়ে কহে ইন্সপ্রিয়া, চাক ইন্দ্বালা-চিত্ত ধরিয়া, মুহল নিখাদে নাসিকা কম্পিত, মুহল মধুব অধৱ ক্রিত,

বাজ্বিলু ধীরে নরনে ধার;—
"রহিল এ থেদ শচীর অন্তরে,
অহুগত জনে মনে আশা ক'রে,
না পাইল ফল তাহার নিকটে !
বল, ইন্বালা, বল অকণটে

কি দিয়া এখন তৃষি ভোমায়॥" কহিলা সরলা স্থালা দাননী, (বেন নিরমল সরলতা-ছবি) "ইন্দ্রপ্রিয়ে, মম চিত্তে অভিলায় -চিবদিন তব কাছে কবি বাদ,

বর্চনে তোমার স্থেবতে ভাগি।
চল, দেবি, চল আমার আলধে,
আমি নিস্তা তোমা গদ্ধ সুপা লগ্নে
করিব শুদ্ধা; হৃদধের সুথে
হেবিব সভত, শুনিব ও মুথে
বীণা-বিনোদন বচন-বাশি ।

কেন, ইন্দ্রপ্রিয়ে, এ কারা-মন্দিরে
হংধে কর বাস, আমি মহিখাবে
করি অন্ত্নর, রাখিব ভোনারে
আপন আলগ্য,—অশেব প্রকারে

কবিব ষভন তোমার লাগি।
খামী গেলে বণে কাতর হৃদর,
ভোমা কাছে পেলে তণ্ প্রিগ্ধ হয়
এ দগ্ধ অন্তর—চল, ফ্রেখবি,
খামার আগালে; হে শ্বন ফুলরি,

নিকটে ভোমার ইহাই মারি॥"

ভনি ইশুজাধা বাক্যেতে মৃছ্ল, "হায় রে সরলে তুই দৈত্যকুল করিলি উজ্জ্বন" করিলা বিস্ময়ে, নেহারি স্থনে, ব্যথিত হৃদ্ধে

তকণীর আর্দ্র নয়নধয়।

হেনকালে বতি চকিত চঞ্চল, (হরিবী বেমন কিরাঞ্চর দল হেরিলে নিকটে) বলে, "ইন্দ্রপ্রিয়া, হের—দেশ— অই—চেডীদল নিয়া

এজিলা আদিছে বাধিনী প্রায় , ইন্দ্রালা, হায়, লুকা কোন হানে, এথনি দানবী বধিবে প্রাণে; না জানি ললাটে আমার (ই) কি বটে মহেন্দ্র-ব্যাণ, এ গোর সমটে

কি কবি, সত্তর কহ উপায় ?" ইন্দুবালা ভয়ে, কাতর-বচনে, চাহি শটীমুথ কচে, "কি কাবণে লুকাইব আমি ? কেন, স্বেখবি, বাহিবৈ আমায় দৈভোক-সুন্দুরী ?

কোন্দোবে আমি দোবী পো তাঁছ ;" উত্তর করিল। স্বরেশ-বমণী, (তানপ্রাতাবে যেন তারপ্রনি) "মীনকেতৃ-ভাগা, কি হেড় এ ভয়, ইক্রপ্রিয়া শচী অম্বী কি নয় "

নারিবে বক্ষিতে আশ্রিতে তার ? বাও, লো চপলে, যেখানে অনল, রণজগ্রী স্ব—কহিও সকল, কৈও তাঁরে মম আশিস্ বচন, সত্তর হেথা করি আগমন

করন দম্প্র-বালা উদ্ধার॥
থাকে, অইথানে থাক ইন্বালা,
কি ভয় তোমার ? কপটার ছলা
শিথ না কথন, মেথ না হলমে
পাপ-পঞ্চ হেন কোন (ও) প্রাণী ভয়ে,
কপট-আচারে অনস্থ জালা;
যাও কামবধু, প্রাণে যদি ভয়ু,

যাও কামবধু, প্রাণে যদি ভর, লুকাইরা থাক , শঙী রতি নর দানবী-থকারে নহে সে অন্থির, জ্লাছে সে সাহস্ এথন (৩) শচীর, পারিরে রন্দিতে ও চাক্বারা। ^ব দুকাইল বভি। হেবে ইন্দ্রজারা, হেবে ইন্দ্রালা: (বেন প্রাণি-ছারা) আদিছে দাবিরা চেডীরা করাল, কিরণে অনিছে প্রহরণ জাল,

ভাষ্ঠ মাথি বেন তর্ধ-থব চলেছে কালিকা ঘন-নিত্থিনী মুহ্-গলগতি—যেন কাদ্থিনী বিজ্ঞা প্রিয়া ক্রিছে নত্তন— জ্ঞান্ডে ক্রচ ভীম-দর্শন,

হাতে প্রভাৱিত শাণিত শব চলেছে ত্রিজটা বিশ'ল-লোচনা, সিন্দ্রের কোঁটা ভালে বিভীষণা, ভীম ভন্ন হাতে—মদ-মত্ত করী ধায় বেন রঙ্গে গুও উচ্চে ধরি —

ছুলিছে নিবেণী চলিছে বাম প্রচণ্ডা কপালী চলে ৰজ্ঞা তুলি, পুঠদেশে কেশ পভিয়াছে খুলি , চামুণ্ডা-করেতে অসি ধরশান, ধামলী-পুঠেতে নিষক্ষেতে বাণ,—

চলে মহা দত্তে শতেক বাম চেডীদল সংক চলেছে বে বঙ্গে ঐক্সিলা স্থন্দরী, লাবণ্য তরঙ্গে স্থবর্থ উজ্জাল, ঝরে যেন অঙ্গে বিহাত-লহনী--নমন অপাধে

থেলে কাবকুট গবল-শিবা
নিকটে আসিয়া চিন্ত চমকিত.
নেহারে ঐত্রিলা হইয়া গুন্তিত,
অমরার রাণী ইন্দ্রণি-বদন ,
চাক দীপ্তিময় অতুল কিরণ
স্বাচিত্রে ধেমন অপনে বি

কোথা রে ঐদিলে তোর বেশভ্গা? অভ্বিত তছ জিনি চাক উধা ভাতিছে আপনি, প্রকাশিয়া বিভা তছ-শোভাকর, মনের প্রতিভা উচ্চলি সদয় জনিতে মু

হার রে মলিন শশাক্ষ বেমন হেরি নিনমনি, দানবী তথন মনিন তেমনি শচীর উদয়ে, টুর্বা-বিষদাহ জ্মলিল স্কুদরে

महोदत स्मराति स्थीन है

ক্ষণে ধৈৰ্য্য পেলে, চাহি ইন্দ্ৰালা, চালি নেত্ৰকোণে অনলের জালা কহিলা—"দানবক্ল-কলকিনি, বধ্বেশে তুই কালভুজিলিনী,

বদিলি রিপুর চরণ-তলে ?
আমার কিল্পরী,—তাব পদতলে
হান নিলি তুই ? অস্তর-মঙলে
অস্ত্রাব্য করিলি ঐক্রিণার নাম,
পুবাইলি হার, শচী-মনস্থাম ?
কি কব হৃদ্যে গ্রল অবে ॥

এখনি মৃছায়ে এ কলক-মসী, ভিজাতাম তোর শোণিতে এ অসি, কি বলিব হায় পুদ্র-অহুবোধ না দিলা লইতে সেই প্রতিশোধ

চেডী-হলে তোর বধিব প্রাণ।" পরে ব্যঙ্গ-স্থরে বলিলা —"ইন্দ্রাণি, জানিতাম তুমি অমরার রাণী, বালিকা ছলিতে শিধিলা সে কবে ? ইন্দ্রাল শিকা পরে আছে তবে ?

হায়, এ জিদিব অপূর্ব স্থান " বলি, জোধে ভীমা তুলিলা 6রণ শাচী বক্ষ:স্থল করে নিরীক্ষণ , বন্ধন ছিডিয়া ছুটিল কুন্তল; বেন ফণা তুলি দোলে ফণিদল

স্থন্দরী-রমণী জোধ কি কটু! চেডীদলে আজা করিলা নিদমা, বান্ধি আনি দিতে ব্দুপাড়-ন্সামা, বান্ধিতে শৃঞ্জলে ইন্দ্রের অসনা,— ছুটিল কিম্বরী করালবদনা

ভীমাজ্ঞা পালিতে সভত পটু॥ হেনকালে রণবেশে বৈখানর, চপলার সনে আসিয়া সত্তর বন্দিলা শচীরে , জয়ত কুমায়, করতলে অসি ধরি থরধার,

নমিলা আদিয়া জননী-পদে।
পুজে কোলে করি শচী সুলোচনা,
বহিরে তৃষিলা, পীযুষ-তুলনা
বচনে মধুর; চাহি ইন্দুবালা
অন্তে কহিলা—"সম্বর এ বালা
লারে কোন স্থানে রাথ বিশলে;

বধিতে উহারে দানব-মহিলা দেখ দাড়াইয়া,"--বলি অধাইলা চাহি পুত্রমুখ, কুশল সংবাদ, কোলে পেয়ে পুন: অধীম আহলাদ মতনে নয়নে রদয়ে ধরে।

ইন্দ্ৰপায়া-বাক্যে হয়ে অগ্ৰসব ইন্দুবালা-পাৰ্গে উগ্ৰ বৈধানৰ চলিলা তথনি , সত্তফ নয়নে হেবে দৈত্যবধু শচীয় বদনে,

কপোল বাহিয়া সলিল ঝরে॥ দেখি ইন্দুবালা-বদন-মূক্ল -হাব রে যেমন নিদাবের ফ্ল নব তকশিবে কিরণ তাপিত— পুবন্দর-জায়া শটী ব্যাক্লিত,

হৃদয়ের বেগ ধরিতে নারে॥
ভাবিতে লাগিলা বৃশ্ধি আকিঞ্চন,
"কিন্ধপে একাকী করিবে পদন
চাক ইন্ধালা ৮ এ চাকলভায়
সেহনীরদানে কে পালিবে, হায়।

কে ভূডাবে তথ্য জ্বয় তাব পূঁ
অথি নিকপমা সুরেশ-রমণা,
নিধিল একাণ্ড-মানসের মণি,
তব চিত্তে বিনা হেন মধুরতা
কার চিত্তে শোভে, এ ফেহ-মমতা

বিপদ্ধধ্বে কে করে আব ?
জয়ন্ত শচীবে করি অহ্নর
ব্যাইলা কত—ভাজি সে আলয়
জ্ডাতে সহাপ হদয়েব ভাপ;
কহিলা "হা মাতঃ, এ দাসের পাপ

ঘুচাও আদেশ করিয়া দাসে,
নারিত্ব কিতেও নৈমিবে তোমার,
সে মনোবেদনা, জননি গো যায়
এ কাবাবন্ধন ঘুচালে তোমাব;
আক্তা কর মাতঃ, দফ্জ-বামার

দর্প চূর্ব করি বাবিয়া পালে।" দহজ-রাজেস্ক্র-বনিতা ঐব্রিলা, বথা বিক্যারিত ধহুকের ছিলা ছিলা এতক্ষণ; সহসা তথন সাপ্টি ধরিয়া তুলিলা জীবণ

हामुखाब मीथ थव कुमार्ग।

নম:শিলাতলে শচী-তমু-ভাতি প্রভাষিত যেখা চরণে আঘাতি সঘনে তাহার, দাঁডাইল বামা --নিশুস্ক-সমরে যেন দক্তে ভামা

দাঁডার নিনাদি বিকট খনে। হৈরি জোধে বহি জনিতে লাগিলা, জয়ক টকারে কোদণ্ডের ছিলা, লজ্জিত আবার ভাবে হুই জনে বামা-অদে শর হানিবে কেমনে,

কিরপে দমন করে ভীমার।
আসি হেনকালে দাঁডার সমূথে
বীরভদ্র বীর বোমশন্ত মূথে,
হাতে মহাশূল, শিরে বহি জলে,
শিব-আজা ভনাবে জয়ন্ত-অনলে,

সন্ধরে দোঁলারে করে বিদার॥ সঙ্গে করি পরে ইন্দ্র রমণীরে শিবদৃত চলে; চলে গীরে গীরে শাচী অলোচনা, জননীর স্বেহে জড়াইয়া বাছ ইন্দুরালা-দেহে,

কনক ভূপর হুমেক বেখা। হাসিল ত্রিদিব শচীপদতলে ত্রিদিব-কুন্তম দলে দলে দলে সূটিতে লাগিল ফুটিয়া বেন মনে সাধ সে পদ ধরিয়া

চিঃদিন তাবে রাথিবে দেগা॥ বীরভন্ত বীর কহে ঘোর বাণী চাহি ঐতিলাবে 'ভন রে দৈত্যানি, রবে ইন্দ্রপ্রিয়া স্মেঞ্শিধরে যত দিন রুক্ত সমরে না মবে—

অমুরনিধন নিকট অভি।"
মহোরগ বধা মহামত্তে বশ
ভানি শিবদুভ-নির্ঘোধ কর্কশ
ভেমতি ঐক্রিপা—মহিলা গুম্ভিড,
কে যেন চরণযুগলে জড়িড,
ক্রিয়া শৃত্মণ দিবারে গতি॥

উনবিংশ সর্গ

গভীর ধরণীগর্ভ, পুত ত্তমোমন্ত্র নিৰ্জ্জন ছৰ্গম স্থান বিশাল বিস্তৃত, বিশ্বকর্মা-শিল্পাল: ভীম শন্ত ভায় উঠিছে নিয়ত কত বিদারি শ্রবণ. প্রকাণ্ড মুদ্রার-ধ্বনি কোটি কোটি বেন. পডिছে चांचां जिन्दी ; निनानि विकरे-সহস্র বাস্থকি-গর্জ ভয়ত্বর যথা দগ্ধ ধাত-স্রোভ বেগে ছটিছে সলিলে। ধ্ম-বাষ্প-পরিপর্ব গভীর সে দেশ সপ্তবীপ-শিল্পালা একত্তিত যেন হইলা গহনরে আসি : গাচতর ধম ভস্মরাশি: বাষ্পর।শি-দগ্ধ বাযক্ষর উঠিছে নিখাস রোধি তীত্র ঘ্রাণসহ, প্রবেশিলা পুরন্দর দে কেন্দ্র গহররে শইলাদ্ধীচি-অন্তি। উচ্চ-ভন্তপরে দেখিলা জলিছে উদ্ধে জিনি কুৰ্যা-আভা. ভডিৎ পিণ্ডের শিখা, নীপের আকাবে উक्षि जिम्मारम्य । दम्भिमा चारलारक — ভীমবলী আৰওল ধাতন্তবমালা পাংশুল, পাটল, শুলু, কৃষ্ণ, রক্ত, পীত, বক্রগান্ত সপাক্ষতি চৌদিকে ভেদিছে মহী-দেহ, নানাবর্ণে রঞ্জিত তেমতি ৰথা ঘনতের নানা আভাময় পশ্চিম গগনপ্রাত্তে ভাতরখ্যি ধরি।

কোনথানে ধ্যবর্থ লোহ-ধাত্রাশি
পশিছে পৃথিবী-গর্ভে--শভ শভ যেন
মহাকায় অলগর পুছে পুছে বাধি
ছুটিছে মহা অঠরে , কোনথানে শোভে
তল্প বড়ীকের তার তাড়িত-আলোকে
আভাময় ; রক্তবর্ণ তায়ের তথক
কোনথানে--ক্ষিরাক্ত তরক-মাকৃতি
রক্ত-স্বর্ণরাধি অক্ত ধাতৃসহ
নির্থিলা আখণ্ডল দে মহী কঠরে,
শোভাকর--শোভাকর বথা অরুকারে
বিশ্বনী উজ্জন আভা কাদ্ধিনী-কোলে!
অলিছে ভূমি অলারগ্তর কত দিকে,
কোখাণ্ড বা শিখাময়, কোঝা শুমি শুমি

ছড়ায়ে বিকট জ্যোতিঃ যথা ধ্যধ্যক্ষ গৃহদাহে, কভু দীপ্ত কভু গুপ্ত ভাব! পীতবৰ্ণ হরিতাল-ভূপ কোন স্থানে দবে শিথা নীলবৰ্ণ—দীপ্তি-থবতর; কোথাও পারদ-রাশি হুদের আকারে। কোথা স্রোতে তর্মিত ছুটিছে ধ্রায়।

অগ্রসরি কিছু দরে দেখিলা বাসব অগ্নি-প্ৰজালন-যন্ত্ৰ যেন বা আংগ্ৰেয় শৈলভোণী সান্ধি সারি বদন প্রসারি উগারে অনলরাশি ধাতুরাশি সহ! মিশেছে দে সব যন্তে বায়ু-প্রবাহক বিশাল লোহের নল শতদিক হ'তে---জরায় সহিত যথা গর্ভিনী-জঠেরে গর্ভস্থ শিশুর নাড়ী মিলিত কৌশলে। নলরা জি-অন্তমুখে প্রকাণ্ড ভীষণ উঠিছে পড়িছে শ্লাঁতা, গাতু বিনিৰ্গত, ভয়ক্ষর শব্দ করি—ছটিছে প্রন কভ ধীরগতি, কভ ঘোরতর বেগে। যন্ত্রমণ্ডলীর মাঝে বিপুল শরীর. প্রসারিত বক্ষোদেশ, বাছ লৌহবৎ দেবশিল্পী ঘুরাইছে চক্র লৌহময়. ঘর্মাক্ত ললাট-ঘর্ম মৃছি বাম-করে। ঘুরিতেছে একবার শিল্পাল যুডি. সংযোজিত পরস্পরে অন্তত কৌশলে. लक लक (लोइयञ्ज (म हाळून मह. শৃৰ্মী ঘাতি পড়ে কোট ভীষণ মুদগর, ছুটিছে শৃৰ্মীৰ পূঠে শত শত প্ৰোতে বাহির হইছে নিতা কত গুপ্তরাঞ্চি ফটিক লাঞ্চনা আভা---পোভে চারিদিকে. ক্থন বা বিশ্বকুৎ লৌহচক্র ছাডি শর্মনা ধরিয়া হল্যে প্রচণ্ড আঘাতে ভেদিছে ভধর-অন্ব, তথনি সে ঘাতে শত ধানি-প্রতিধানি ছাড়িতে ছাড়িতে বিদীর্ণ গিরির অঙ্গে তরক ছটিছে भिन्नभारम, वातिकृष्ठ भूर्व कति नौरत i ক্থন বা সুরশিল্পী খুলিছেন গীরে ধরা অতে আগ্রের পর্বত আচ্চাদন. শিল্পাল-বহ্নি-ধুম বাব্দ নিবারিত,---গৰ্জিয়া গভীর মন্ত্রে তথনি ভূধর উগারিছে অগ্নিরাশি পাংও ধাতু-ক্লেদ

কাপিতে কাপিতে ঘন , শৃত্য ভয়ত্বর
পরিপূর্ব ধুমাপ্রিত বহিব শিথার ,
শিলাপূর্ব বাত্ত্রার ভত্ম-বিষয়ের
শত নগরী নিময় রেবুগুরের
গঠে শিল্পী কত সেতু কত অট্টালিকা,
প্রাটার, দেউল, হুর্গপ্রকার কত,
মতৈবস সত্ম, বর্ম্ম দেখিতে অভূত।
নিম্নি চলিলা ইন্দ্র, সত্মর আসিমা
দাঁড়াইলা শিল্পিলে। বিশ্বক্ষা হেবি
দেবেন্দ্র বাসরে হেথা ফার দিলা শ্রমে।
মৃহ্ ঘর্ম আসি কাছে হইয়া প্রণত
কহে ম্বশিল্পিকা, "কি ভাগ্য আমার,
আমার এ ধুম্বশালে দেবে আপনি ?
সফল আয়াস মম এত দিনে দেব।"

সফল আয়াস মম এত দিনে দেব ! এতেক কহিয়া শচীনাথে আগে আগে দেখায়ে চলিলা পথ, খুলিয়া অপুর্ব অক্টের অদৃত ধাব রত্ন-গিরিদেহে, প্রবৈশিলা ইন্দ্রসহ সুরুম্য আলয়ে। রজতনির্মিত গৃহ কাককার্য্য চাক. গলিত কাঞ্চন, লৌহ, তাম আদি ধাত, মহর্ত্ত-ভিত্তে তায় শলাকা বহৎ, সুশা সুশাত্ৰ তার ধাতৃ-পত্র নানা গঠিত আপনা হ'তে গঠিত নিমেষে কন্ড মৃত্তি – স্থবলনি গঠন স্থন্ত । ষেত রুঞ্চ শিলাখণ্ডে কত স্থানে দেখা বিচিত্র স্থানর মৃত্তি চাক অবয়ব. প্রাচীর-পটল-অঙ্গে দিব্য বাডায়নে. খচিত কাঞ্চন, মণি, হীরক, প্রবাল, চাবি ধারে শুস্তবাজি: চাক শোভাময়. চাক মৃতি চাবিনিকে স্থানর ঝলনি কমনীয় বামাতত পুরুষ স্ঠাম. নিকপম-হেম-মণি-রঞ্জনির্বিত চলিতেছে, বসিত্তছে, নর্ত্তন-বাদনে রত সদা: সচেতন যেন বা সকলি। কত রকে কত দিকে বাজিছে বাজনা ল্লিত মধুব স্বরে। কত অঙুত রহস্ত বিশার্থর সে হর্মা-ভিতরে : वर्गिटिक शास्त्र, शास्त्र, दान्य-निद्याद्यमा । মণ্ডিত হীকথণ্ড স্থ্ৰৰ্ণ-আসনে

বসাইলা আধওলে—পার্থে দাড়াইলা শিল্পগুল, স্থধাইলা কি হেতু দেবেজ্র সে গহরে ? কি মহৎ কার্য্য হেন তাঁব স্বরেজ্র আপনি বাহা আদেন সাধিতে, উদ্দেশে স্মবিলে আজা স্থদিদ্ধ গাঁহার ?

"হে বিশাই, দেবশিল্লি, শিল্পি-কুলেখর স্থনিপুণ।" কহিলা স্থারেশ স্বর্গপতি.--"কোথা স্বৰ্গ ১ কোথা বদি স্মবিব ভোমায় ১ ৰক্ৰাসৰ পাপমতি এখনও ধৰংসিছে স্তবপরী। উদ্ধাবিতে তাম শিবাদেশে এ ধরণী-গর্ভে গতি মম: নামবিবে দক্তজ-ঈশ্বর অকুশরে, বজ্রবাণ হে কৌশলি, কবহ নিশ্বাণ ত্বা করি . এই অন্তি মহর্ষি দধীচি দিলা যাহা দেবেব মন্দলে তমু ত্যজি আপনার। লছ বিশ্বরুৎ, অসু গঠ অচিরাৎ, কহিলা পিনাকী ইথে যে অস্ত্ৰ গঠিবে, সংহাবাতিশণতল্য তেজ সে আয়ধে. প্রলয়-বিষাণ-শব্দে হুলারিবে সদা: ত্রিদিবে না ববে আর দানব-উৎপাত. বজ নামে সেই অস হবে অভিহিত।"

শুনি ছঃথে দেবশিল্পী কহিল।—"স্থরেশ, ত্রিদিব উদ্ধার নহে আজও! হের দেথ সাজাইতে সে প্রবর্ময়ী অমরায় করিয়া কতই যত্ত কতই গঠিত স্থভ্যণ। এখনও দম্ম দ্যা করে সে নগরী? এত আনে বিফল আনার? পালিব আদেশ তব, সুরকুলপতি, ক্ষম কর কণকাল।" বলিয়া প্রাচীরে বসাইলা অতি কৃদ্ৰ রব্ধত-কৃঞ্চিকা, অমনি সুহেম-ঘট পূর্ণ হিমজলে, স্বৰ্-থালে সুরস অমর্থান্ত আহা! কে পারে বর্ণিতে কোণা আত্র স্থাফল ক্ষিতিতলে ! রাখিলা বাসুখ-সন্নিধানে ; কহিলা বিশাই—"তব অভার্থনা, দেব, কি আতিথা সম্ভবে আমায় ? দীন আমি. ভোগৰতী-বারি এই—স্বাহ স্থশীতল।" সম্প্রীত আতিথ্যে স্বরীশ্বর শচীনাথ ক্ছিলেন.—"ছে শিল্পেশ্ব বিশ্বকৃৎ,

সঞ্জ করেছি আমি না ছুঁইব কিছু

পেয় ভোজা ত্রিজগতে, ত্রিদিব উদার না হইলে.--নহিলে এথনি স্থথে আমি পুরাতাম অভিলাষ তব : পুর্ণপ্রীতি আতিথো তোমার।" শুনি আথওল-এত অস্থি লয়ে কর্মশালে ফিরিলা সত্তর শিল্পিরাজ, প্রন্মর ফিরিলা পশ্চাতে। দিলা ঘুরাইয়া চক্র,—স্বান স্বান ডাকি পভিতে লাগিল জাতা, প্রবেশিল বায অগ্নি-প্রজালন-যন্ত্রে থব তর তেজে যন্ত্রগর্ভ শিথাময়, মুহুর্ত্ত-ভিতরে অষ্ট জালায়য়ে অষ্ট কটাহ বহৎ বসাইলা সুরশিল্পী ভাম ভঙ্গবলে: দিলা অষ্টধাতৃ তাম্ব লৌহাদি কাঞ্চন ; দাঁডাইলা শৃশ্মী-পাশে দাপটি মুকার। ছুটিল ধাতুর স্রোভ কটাহ হইতে অষ্টধারে একেবারে--নুগ্র ভয়ন্তর , ঘন ঘন মুকারের প্রচণ্ড আঘাত পড়িতে লাগিল তায় বধিরি শ্রবণ। এইরপে ধাতৃস্রাব একত্র মিশায়ে, করি ভীম পিণ্ডাকৃতি শিল্পিকুলরাজ নিষ্কাশিল মহাধাত অন্তত প্রকৃতি গলিত না হয় তাহা অত্যুঞ্জনলে দে বাত. দধীচি-অস্থি এক পাত্রে রাখি উত্তাপিলা বিশ্বকর্মা হুরন্ত উত্তাপে ধরি তড়িত্তাপ যন্ত্র, ছই কেন্দ্র ছাড়ি ছটিল বিদ্যাৎস্রোত বিপুল ভরক্ষে মহাতেকে তেকোমর করি সে গহার। কাঁপিতে লাগিল ধরা ঘন ভূকম্পনে, মানীতে ছুটিল চেউ, উন্নত ভূধর ডুবিয়া হইল হ্রদ ধরণী-অক্ষেতে,---সে বোর উত্তাপে ধাত গলিল নিমিষে। অইধাত-পিওসহ সে পিও মিশায়ে মহাশিল্পী আরম্ভিলা বজের গঠন. প্রকাশি কৌশলে যত নিপুণতা তাঁর। স্থৰিশাল দণ্ডাক্ততি গঠিলা প্ৰথমে. পরে মধ্যগত সুলকোণে বাঁকাইয়া পিটিয়া গঠিলা ফলা অপুর্ব্ব-মুর্রাত, ছই মুথ দ্বিবিধ আকৃতি বিভাষণ পশাইলা ऋञ्ज-ऋक् और रहरवारा প্রদীপ্ত প্রচণ্ড তেজ:, বিহাৎ-অন্ন

জলিতে লাগিল পৃষ্ঠে কলা ভল্কব্রে। গঠিলা হরিচন্দন-ছকে করতার নহে দগ্ধ যে পাদপ তড়িৎ-উত্তাপে: অগ্রিকোৰ গঠিলা ভাহাতে মৰোহর। বিবিধ বিচিত্র চিত্র দিব্য শোভাকর গর্যোগে দেবশিল্পী সহর্ষ অস্তরে, খাকিলা অপ্রের দেছে, মৃর্তি নানাবিধ (চক্র, সুর্য্য, তারা, গ্রহ, সাগর, সুমেরু) অনল-রেথায় দীপ্তি-জ্ঞালিতে লাগিল। থাকিলা অমরোৎসব এক ফলাদেতে. পারিজাত-মালা পরি অমর-অজনা রত নৃত্য গীত-বাত্মে, দেবতামণ্ডলী দেখিছে সহর্ষচিত দাভারে অন্তরে। থাকিলা অক্ত ফলকে, কুডাস্ত-নগরী: ভীষণ নরককুণ্ড, পার্যে যমদৃত দও হাতে দাড়াই**রা ভীম আঘাতিছে** নারকী আংগীর মুভে, আঁকিলা কোথাও ুঙীপাক ঘোৰ হুদ, কোথাও ভীষণ উচ্চাদ, নরককুতে প্রাণি-কলরব , বহিছে ক্ষির-প্রদে তর্গ কোথাও কোথাও শীতোক কণ্ডে কাপিছে পাতকী।

मध मिर्चा- निर्माणको नामि छ अत्रत्य भित्रमाल प्रविभागो — अहेम मिर्चाम पूर्व- अवहव व क्क-रुष्टि ममिर्धिना। अत्र गणि विश्वकृष्मी महाक्क- वनस्य कहिना स्टादर्स हाहि, "निर्म्हरुश्व क्षेत्रथा निर्दाष हित्रर्स, तम्ब, कन्न स्वर्थान। मधाजार बहेत्य कृष्ठ स्वर्धाम व्यवस्य हाहिए बहेर्द कृष्ठ, उथिन मर्खानि (त्रिन् स्वर्धानामन दिखीन व नाम) महामिर्चामन विश्व व नाम)

হেনকালে অকন্মাহ তিন দিক্ হ'তে
দীপ করি শিল্পশালা তিন মহাডেজঃ
লোহিত জ্ঞামল খেতবরণ কুন্সর,
জনিতে জলিতে অস্ত্র-আলে প্রবেশিলা।
খামিলা পুরন্মর তিন তেজঃ হেরি
শিল্পি বিষ্ণু, হরে, তথনি গভীর
গর্মিলা ভীমনাদে, দভোলি ভীবণ।
দেবশিলী দক্ষপ্রার নে প্রথম তেজে

না পারি ধরিতে অন্ধ এবে গুরুভার ছাড়ি দিলা অকুমাং, ঘন ঘন ঘন কাঁপিল ধরণী-কেন্দ্র প্রচণ্ড আঘাতে।
মহানন্দে শচীনাথ নির্মাধি দড়োলি তুলিলা দক্ষিণ হল্পে করিলা উচ্চম পরবিতে অন্ধরের, বিশ্বক্রা ভয়ে করবোড়ে প্রক্রের নিবারি কহিলা;—
"না নিক্ষেপ অন্ধ্র দেব এ মর-আলরে, এখন উৎসন্ধ হবে এ বিশাল পুরী, বহু পরিশ্রমে, প্রভু, করেছি সঞ্চয়

নিরন্ত বিশাই-বাক্যে, দেবকুলপতি স্বরীশ্বর, আশীর্কাদ করিলা তাহারে আনন্দ অন্তরে শীন্ত ছাড়ি কেন্দ্র-গুহা বক্স লবে শৃত্যপথে আরোহিলা পুন:।

এ সকল , হবে ভত্ম ব'জ্ঞর নিক্ষেপে।

বিংশ সূর্গ

বাজিল ছুলুজি রণ-নাদে,
অস্ত্র অমর উন্নত্ত সে নাদে,
ছাড়ে সিংহনাদ ছাড়ে হুত্তার,
চলে দৈতাদেনা-দল অনিবার,

তরল বেমন তরল-কাছে।
ঘনতার বথা গগনমগুলে
বায়ুম্থে গজ্জি মহাবেগে চলে,
চলে দৈত্যসেনা বোজন বিভার ,
তুই পক্ষে তুই বাহিনী প্রসার.

মধ্যে অকৌছিনী প্রধান বল। স্থাজ্জ সমরসাজে বীরবর চলে রুদ্রপীড় মহা ধহধ্বি, চলে ভীম ধহু সংনে টকারি; তুই পক্ষ-নেভা, তুই অমরারি—

কালভদ্ৰ-বার স্থলনাস্র।
চলেছে বাহিনী অগ্রবড়ী দেনা
অগ্নম্থে ঘন অন্তের ফেনা,
হতেছে নির্গত ঝলকে ঝলকে
বহি তাল ভাল পলকে প্লকে

इंटिक् निकिश्व सक्ख शाह ।

হেংখি দেবদল ভাগি ছই দলে জন্ম অনল আদেশেভে চলে। ঘন ধ্যুৰ্ঘোষ ঘোব সিংহ্নাদ, দেবতকুদীপ্ত কিরণের বাঁধ

তিমির-ভরকে বেন ভেটছে। অগ্নি অগ্নিম চাপ ধ্বি করে, নৈত্যসেনাপরে প্রবৃত্তি করে; বহিং-বৃত্তি দেখিতে ভীষণ, জয়স্ক-কামুকে বাণ ব্রিষণ

ধেন বা করকা দেবে ঝরিছে। ক্রমে অংগসর ছই মহাবল, মঙাশকে যেন ধায় জলদল, বফ্লম বথন আপনি সার্থি, মহাসিদ্ধ-বারি শতচক্রে মথি,

শতচক্র রথ চালান বেগে।

মিলিল ত্দল, -- তুই মহানদ মিলে যেন রক্তে ফুটিয়া উন্মদ, ফেন রাশি রাশি ভরতে তরজে ছুটে কোলাহলি তুই নদ-অকে

বৰ্ণচক্ৰপ্ৰনি, অশ্ব-ছেধা-নাদ,

ড্'নদ বিস্তার সমূহ জৃড়ি। শিল্পির-নির্ঘোষ থম খন খন, অস্তে অস্থাধাত শক্ষ বিতীধণ, দেনার গর্জন, তুরী শহ্ম-নাদ,

বিপুল তুম্ল সমর-স্রোতে।

ধূলি-ধুমজালে গগন আছেল রথচকে অথ-কুরেতে উৎসল অমরা নগরী, বোর অরকার দৃষ্টি নাহি চলে দীপ্ত-অস্তধার

हमरक हमरक नवन धारि।

চ্ছোটে ক্তপীড-রথ ভর্ম্বর, ভীমকৃত্রমূর্ণ্ড ভীম ধ্বজে ধার— ছোটে জয়স্তের অরুণ অক্ষন, ছোটে বহিবথ ধোরদরশন

ক্লিক ছড়ারে যোলন পথ। কালডন্ত্র ক্ষ-ত্রক-উপরে মহাগর্ক ক'বে ফিরিছে সমরে , স্কন অসুর ভীষণ করাল ; ধোর গদা হাতে জিনি তক্র শাল,

ফিরিছে উন্মত্ত মাতল্বৰ।

পড়ে সৈক্ত সংখ্যা অগণন, শক্তস্তেরাশি আছাণে বেমন ক্ষকের অসু-আঘাতে লুটিয়া পড়ে শক্তকেত্রে ভূতল ছাইয়া

থেলাইয়া চেউ ধরণী-আবে : শালবনে কিংবা যথা পত্রকুল, উড়িয়া পবনে উত্তাপে আকুল, নিদাব-আরন্তে পড়ে রাশি রাশি নীর্ম, পিঙ্গল বর্ম প্রকাশি

ধোজন-বিস্তার অবণা ঢাকি !
পডে দেবদেনা থরে থরে থরে পুশারাশি যেন রণগুল'পরে
কিংবা বহিগর্ভ বাজি শৃক্তে উঠি
শৃক্তপথে যেন ভাদি পড়ে লুটি

ছডায়ে সহস্র কিরণকণা , ভীবন সমর-ছভাশন জলে অমরা-ভিতরে স্থলে স্থলে যোঝে দলে দলে দেবতা অফ্রব , রণডেজে ঘন কাঁপে স্থরপূব,

খোর আডম্বর, বীব-মারাব।
স্থমেক-শিপরে চপলা চাহিয়া
দেধাইছে শচী অসুলি তুলিয়া
"হের লো চপলে কিবা ভয়ত্তর রণ অইথানে — কি খোব ঘর্মর — একাদশ ক্যু গুরে ওথানে ,

ভৈরব-বিক্রমে যুঝিছে দানব,
মহাগর্ক ধরি — মূধে ভীমরব —
হানিছে চৌদিকে, পড়িছে অমর,
কোন্বীর, রতি, অই বজ্ঞাবর,

কোধিত বৃষত ছুটিছে খেন ? সর্ব্ব অংক ঝরে কধির-প্রবাহ, সর্ব্ব অংক গুলে প্রহরণ-দাহ,

তবু যুঝে এক। একাদশ দলে মতত্ত্বী বেন ভাঙ্গে নলবনে—

অমর-বাহিনী দে'খে পলার।" চাফ ইন্দুবালা সরলা অন্বরী স্থালা—"ইক্সাণি বল গো কি করি, এ ঘোর আধার-শব-ধ্নমন শৃস্তপথে দৃষ্টি কিরপেতে হর, কিরপে দেখিতে পাও বা দুরে। আমি ত কিছুই নারি নির্থিতে, গুধু মাঝে মাঝে চকিতে চকিতে হেরি অন্তজালা, গুনি কোলাহল বল্পুরে বেন চলে সিদ্ধুজল

উথলি হিলোলৈ অনন্ত পথে।"
শচী বুঝাইলা দানববালায়
দেবচকু বিনা দেখিতে না পায়
ধৃমাছন দেশে, কিবা তমসায়,
বুজাও দেখিতে পায় দেবজাত

দানব-মানব-নন্ধন স্থল। কহিছে শচীবে মদনের প্রিয়া কালভদ্র-দৈত্য-বীর্ঘ্য বাগানিয়া, ফোকালে রৌদ্র অঞ্জ-ক্রন্ত শ্র ধিগও করিয়া প্রভাষ

বিদ্যা ককদেশে আঘোতি ভাষ , অহিব ব্যথায় পড়িল অহাব,— একাদশ রথচক, অখাকৃব কুণা করি বিধা তথন ছিটালে, বিধায়ে দহজ-বাহিনী চলালি,

কাপভদ্ৰে বৃধি শাণিত শ্বে , থেৰি কন্দুপীত ভগ্ন নিজ্প দল চালাইলা রথ—অমরা চঞ্চল, মহাঘোর শুস্তে কোদণ্ডে টুন্নার, থাণে বাণে সাজাইল হার

ভূজদের শ্রেণী যেন আকাশে। ফুলনে কহিয়া পশ্চাতে থাকিতে, গুলল বিশিব ছাড়িতে ছাডিতে, গুগলে গিয়া অংগ আওলিলা (ইর্মুছ: গুণে বাণ বসাইলা-

ধেন লক্ষ শর একত্র ছাড়ে ! গটিয়া নামধে রথের ধ্বজিনী, ^{৭৮}জ, নেমি, অখের বৃদ্ধনী, ^{১৯}গেশ কন্ত নিমেধে নীরব, ^হরিতে সুন্ধন নিবারিলা পথ,

পড়ে রুজগণ ঘোর বিপদে , ণে বাণবৃষ্টি বাণবৃষ্টি পিঠে, উজ্জ্বকার নাহি চলে দিঠে , হে শতধারে অমর-শোণিত, শূর্স হুগদ্ধি সৌরভ-পূরিত,

অত্যের দাহনে দহে শরীর।

ন্ধন্ত কহিলা 'হের বৈধানর, বুত্রস্কু-শরে দেং জরজর, কজু একাদশ—পশ্চাতে সুন্দন— না পারে দানৰে করিতে দমন,

অহিব শরীর অত্র-তেওে।"
শুনি অগ্নি বেগে চালাইলা রথ,
চক্রের বর্গণে অগ্নিমর পথ,
সর্ক-অলে দীপ্ত ক্লিক ছুটিল,
নলবনে যেন দাবাগ্নি পশিল.

তেমতি ক্রোধিত অনল-বেশ , চারিদিকে দৈত্যসেনা পচে ঝবি চোগো চোথো শবে, স্থতীকু কগুবী— আমাতে যেমন পডে নলবন, ক্যুম্ব-চমুতে অনল তেমন

করিছে নিধন দহজ-বাশি, পেথিতে দেখিতে ভীম হুতাশন দৈত্য-চমু দমি নিবাবি সুক্তন, দাড়াইলা গিয়া কজগণ-আগে, কালাগ্রির তেজে, ভয়ুম্বে রাগে

বহ্নিক্দুপীডে তুমূল বণ ' কহিলা হঙ্কারি দহজকুমাব — "বৈখানর, শিক্ষা দেখিব এবাব, বুঝিবে এবার বুজের তানয় সমরে না জানে জীবনেশ ভয়.

এ ভূজান প্রের সামর্থা কত।"
বলি শরে শরে কৈলা অন্নকার,
ছাভিতে লাগিলা বিকট হুলাব ,
কোলও-টঙার নিমিষে নিমিষে,
বাবেশ্ব গার্জন আন্তে করি দিশে

ৰধির করিল শ্রবণমূল। অনল তৎপর দে আশুগঞ্চাল এড়াইলা, বথ রাণি ক্রণকাল, শর লক্ষ্য-স্থান অস্তবে আদিয়া, আবার ঘর্ণর নির্বোধে ঘুরিয়া

বিজগী-গভিতে অতি নিকটে, কিরিলা নিমিবে কোধে হতাশন, না ক্রিতে ককা দুফ্ল-নন্দন, দীপ্ত অসি ধ্রি, লক্ষে ছাড়ি রথ, ক্লেপ্টিড্রপে অধে আলাবৎ

হানি দীপ্ত অসি করিল নাশ ,

শতগণ্ড করি কেনিল শতাল— নেমি, নাভি, ধুব, ধ্বজ, রথ-অঙ্গ, ভীম অসি-ঘাতে—বিনাশিরা স্তে, উঠি ভগ্ন রণে লক্ষ্য দিয়া জত

ক্রড়পীড-ধন্থ বিথও করি ; হানিবারে বান্ধ বন্ধংশ্বলে তার, মহা জ্যোভিশ্বন তীত্র তরবার, হেনকালে দৈত্যস্ত সূচতুর ছাড়ি নিজরথ রথেতে শত্রুর

উঠিল বেংগতে প্রলম্ফ ছাড়ি।
পদাবাতে ত্তে ফেলিয়া অন্তবে,
নিজে রশ্মি ধরি ঘোর বেগততের
চালাইলা রথ কিছু দ্বে গিয়া
রাধিকা ভালন চরণে চাপিয়া
ধরিলা অধের বশ্মি-ডোর;

নিলা অনলের ধ্যুৰ্কাণ তৃণ কামুকে বসায়ে দিব্য নব গুণ গৰ্জিতে লাগিলা ভূজকেব গ্রায় লফ লক শ্ব অনলের গায়

ক্ষিপ্রহল্ড ফণে নিমিষে ফেলি।
"সাধু কৃদ্রপীড — ধন্ত মহাবল"
ছাড়িল হুকার দানবের দল;
শরেতে অস্থির শূর বৈখানব,
ভরারথ'পরে জোধে ধর থব

না পারি রোধিতে অরাভি-বাণ। ছুটাইল রণ জ্নলে রন্দিতে জন্মন্ত সুরণী পল না পভিতে ছুটাইল রথ কুবের হর্মার, ছুটাইল রথ অবিনীকুমার,

অনল-সহাৰে বিজলী-বেগে। ছেন কালে বুআস্ব স্নিপুণ নহাধসুদ্ধি কৰ্ণে টানি ঋণ, হানে ভৱৰৰ সুশাণিত বাণ, হুভাশন-কঠ কৰিয়া সকান

বিদ্ধিল সে শর করিয়া লক্ষা।
ভ্রমন্ত, কুবের, আখিনীকুমার,
বেরির বহিন্তে কাছে আদি ভার,
বিশিধ জলনে অস্থির অনল
ক্ষিলা—"বীরেশ ঐক্রি মহাবল,
বেশু তব রুধ কানাই বৈত্যে—

বহ্নির কি তেজ।" প্রবেধিলা সবে "এস মহাভাগ কণ শান্তি ল'ভে , এ হাতনা তব হ'লে কিছু দ্ব রূপে এস পুন: , বুত্রাস্তর ক্রুব

ষ্কিলা অমরা রোধিবে রণে।"
বলি ইস্ক্রাথাজ বথে বৈখানরে
তুলিলা সকলে, রাধিরা অন্তরে
সমরে ফ্রিলা—জরন্ত স্থার
কুবেরের রথে তুই মহাবীর

অখিনীকুমার অখেতে চলে।
দক্ষনন্দন বহিরে বিম্থি —
মহাদর্পে ছাডে — অভরেতে সুখী —
ভীৱ শরজাল দেবসেনা পরে,
মৃহুর্তে বিহিছে দে শরে

অমরবাহিনী দহি বাতনে।
জন্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্তব্যুক্ত আবার বাজিল সমর তুম্ল ভীম অস্তাঘাতে ক্ষুক্তস্ত্রুক্ত

শরে ত্লতুল সমর্থন।
বেগে লক্ষ দিয়া কুবের তথন
পদা ঘুৰাইয়া করিল গমন,
উড়াই মা শবে শুক পত্রাকারে
ঘুর্ণবায়ুগতি পদার প্রহাবে,
পদভরে খন কাঁণে ত্রিদিব।

সমন্ত্র প্র ক্রিয়ার সমরকুশল অফ্রকুমার ছাড়ি ধহুর্কাণ, ছাড়ি হুহুজার, দাড়াইলা রথে ভীম শেল ধরি, কুবেরের বৃক্ষঃগুল লক্ষ্য করি

বেগে ছাড়ি দিলা বিপুল তেজে . বিদ্ধিল ভীষণ শেল বক্ষ:স্থলে, দাকণ প্রহারে খাস নাহি চলে, পড়িল ধনেশ হয়ে হস্তচিত, জন্মন্ত-ক্ৰমন ছুটিল অবিত.

ধনেশেরে ঐজি তুলিলা রণে।
শিল্পিনী টানিয়া আকবিলা বাণ,
দছজনন্দনে করিয়া সন্ধান .—
শচী নির্থিয়া আতকে উত্লা,
কতে তীজ্মরে "হের লো চপলা,
বাও শীজ্ঞাত নিবার মুতে ১

না প্রেবেশে রণে রজেপীড়-সনে , মহাধহর্দ্ধর দহজ-নন্দনে নাবিবে সংগ্রামে করিতে বাবণ, যার হাতে হারে দেব ভঙাশন,

ভার সনে একা ব্ঝিতে ধার। .
নিবার নিবার নিবার চিপলে,
বাও জ্রুডগতি যাও রণস্থলে,
বাজিল হদরে শেলসম ব্যথা,
পডে যদি পুত্র পডেছিল যথা

নৈমিব-অরণো দানবাঘাতে।"
চপলা চলিলা ফ্চপল-গতি
দেবদুজ-বেশে বথা দেবরণী।
কচে ইন্দ্বালা "হার, ইন্দ্রানা,
তব বাকো, সতি, কাদে মম হিরা,
কেন প্রাণনাধ হেন নিরদর দ

ক্চ চপলাবে আনিতে এখানে,
দুচাতে এ ভয় তোমার প্রাণে,
পুত্র আনি কাছে পুরুদরজায়া,
দুঝিবারে পাবি তব চিত্তমায়া,

আমার (ই) জ্বর-বেদনা-বেরেগ। হার নাথ, যেন ব্যথিলে আমার, বাথা দেও কেন অবেল প্নরায়।" বলি অঞ্জলে কক: ভিজাইলা , দেবদ্ত-বেশে এথানে চপলা

বাসক-কুমারে সম্ভাষি কয়— "বংশ ক্ষান্ত হও, সংরেশ-নন্দন, সহিতে নারিবে ভীম প্রাহরণ কুদুপীড-হাতে, জুননী-আদেশ, একাকী সমুদ্ধে করো না প্রবেশ,

বিধোনা তাঁহার ফ্রন্তর শেল।
একাকী যে বীব নিবারে সমরে,
একাদশ কড় বক্ষ বৈখানবে,
তাবে কি সংগ্রামে পারিবে জিনিতে ?
শুও অন্য হানে এ রথ ছারিতে;

ক্বের অনলে সুসুত্ কর ?"
বিষয় তথান হৈলা অদুশন,
তান দৃত্যুবে জননী-বচন,
জ্বিত হংখেতে ফিরাইলা রথ
তালি ধ্ত্রাণ—ধ্রি অঞ্চ পথ
ফুবেরে লইয়া অনল-পাশে।

জয়তে বিম্ধ দেখি ব্তন্তত, বোব সিংহনাদে—শিক্ষা অদভ্ত, অয্ত অযুত শব নিকেপিলা, দেবচম্ বাতি বথে তুলি নিলা

আপেন সার্থি, নিষক, ধরু।
মবিতে লাগিলা ক্রেদেনাগন—
বাডবায়ি বেন দহি রসাতল
জলজত্ত্ব আকুল করিয়া
ভ্রমে সিকুগর্ভে ছুটিয়া ছুটিয়া

ছবস্ত প্রচণ্ড ভীষণ দাপে—
অদ্রে দেখিলা অধিনীকুমাব
যুঝিছে অবাধে বিক্রমে হর্মার,
দিব্য অখোপরে দেব হুই জন
হানিছে কুপাণ সুতীক ভীষণ

লণ্ডভণ্ড করি দফ্জদল। তথনি দৈতোশ-মৃত মহাবলী আদেশে সাবথি মুরামূরে দলি চালাইলা রথ বর্ষর নিনাদে বেগে সেই দিকে,—ক্রুপীড় সাধে

ধবিলা কাশুকি উদায়ি ৩০ ৷ চলের পলকে লক্ষ্য কবি হির, ছুই তীক্ষ শব নিকোপেলা বীব, নিকোপেলা পুন: সাবে ছুই শব, নিমাৰ না কেলি কাঁচেপ থ্র থব

পড়ে দেব-অব্ধ আবোহী সহ।
ভীষণ হকার ছাডে দৈতাদল,
ভঙ্গ দিল রণে অমরেব বল;
পশ্চাতে চলিল দানবের সেনা
(বস্থা যেন চলে বুকে করি ফেনা)

দহজনন্দন, স্থান বীব। ধান্ত্ৰ বাস্থাৰ কেশনী যেমন ছাজি সিংহনাদ ভীষণ গৰ্জন , দেখিতে দেখিতে অমরবাহিনী আনীর-বাহিবে ভাডিত তথনি,

লভা-পূত্র যথা ঝটকা-মূথে।
দেৰবৃাহ ভেদ কবি মন্তগতি
চলে দৈভ্য-দেনা চলে দৈভ্য-বথী;
বণক্ষেত্র দূবে, ছাভিন্না চলিল,
বথা চলে বেগে ভটিনী-দলিল
ভরদ-আবাতে ভাদিলে কুল।

শচী স্থান্তর শিখর-উপবে হেবে দেনাভঙ্গ কাওব অন্তবে ; কন্দ্রপীড় বীর্ঘা হেবে চমকিত চাহে দৈত্যবধূ-বদনে অবিত, ব্যাহতে তাহাব স্থান্তর।

তেমতি বিমর্থভাবেতে সরলা দেখিলা ভাবিছে—তেমতি উতলা, কহিলা ইন্দ্রাণী "এ কি দেখি ভাব, চাকু ইন্দ্রালা, পতির প্রভাব

দেখিয়া তব্ত প্রসন্ন নহ।
আনার তনর হইলে এখনি,
ভাবিতাম ওবে অগতের মণি,
কিবীয়া সাহস কি শিক্ষা-কৌশ্লা।

একা হাবাইল ত্রিদশেব দল.

শক্ত বটে, ধক্ত বীব বাথানি !" ইন্দুবালা অঞ ফেলি দ্রদ্ব কচে "প্রয়েখরি, কাঁদিছে অন্তব, নাহি চাহি আমি প্রভাব প্রতাপ, প্রাণে না সহে এ খোর উন্তাপ,

ইন্দ্রপ্রিয়া, হার, অভন্ন দেহ— না দিব ঘটিতে কোন অমঙ্গল প্রিরের আমার—হে শচি, সংল একমাত্র অই এই তঃথিনীর!

একমাত্র অই এই ছ:খিনীর ! আমার (ই) অদৃষ্ট-দোষে হেন বীব, নাজানি কপালে কি আছে শেষে।"

কহে ইন্দ্ৰনায়া "ললাট-লিখন অৱে ইন্বালা, কে কবে খণ্ডন ? চিন্তা নাহি কর কি আশন্ধা তব ? ইন্দ্ৰ নাহি হেথা, সাধিব, তব ধব

বাসব-অভাবে অমব হেন !"
হেথা কদুপীত গজিছে ভীষণ,
সমন-প্রাসণে দেবর্ষিগণ
দূর হ'তে তাম কৈলা দরশন ;—
কার্ডিকেয় ত্র্য বক্ণ প্রন,

দেখিলা অগির শতাল ধাজ । বুঝিলা তথনই পূর্বাধারে রণ হইলা কিরণ ; জয়ন্ত তথন অখিনীকুমারে কুবেবে অনলে সংহতি লইয়া আইলা দে স্থলে

বিবরিলা রণবারতা যত।

স্থররথিগণ শুনি চিন্তাকুল— বৃত্র, বৃত্ত্রস্থত করিলা আকুল অমর-সেনানী , কিরুপে উদ্ধাব সে দোহার হাতে হইবে আবার,

পিতাপুলে দোহে অজের রণে। কহিলা ভাস্কর—"শুন দেবগণ, বিনা ইন্দ্র ঘদি সমরে নিধন না হবে ইহারা—কি হেতু হে তবে এ দারুণ কেশ এ ঘোর আহবে ?

ইন্দ্ৰ লাগি সবে বিরত হও।
নত্বা যজপি রাথ মম কথা,
করহ সমস ধবি অৱ প্রথা,
তাজি ধহুর্বাণ, বাহন, অনন,
নিজ নিজ তেজ কবহ ধারণ

প্রদরের মৃষ্টি বেকপ যার।
দাদশ প্রচণ্ডরূপে জলি আমি,
জলুন কালাগ্রি-বেশে বহিষামী,
প্রলম্বাবন ছুটান বাবীশ,
প্রন উড়ান বাতে দশ দিশ,

দেখি কি না দৈতা-নিধন হয়।" স্থা-বাক্যে বায় ছুটিতে উভত, সিন্ধুপতি তাৱে করিলা বিবত, কহিলা "কি কহ, ওহে প্রভাকব, দম্জে নাশিতে তেজ বিধাহব

প্রকাশি ব্রহ্মাণ্ড করিবে শ্রম্থ নাশিবে নিধিল পরাণীর প্রাণ নাশিতে তুজনে ৮ কবিবে ঋশান বিখ-চবাচর ৮ কছ কি উচিত দেবের এ কাজ ৫" "না জানি কি হিত,

জ্ঞানি কেহ দক্ষ" কহিলা রবি। হেনকালে শৃক্তে ভৈরব-নির্ঘোষ কোদগুটফারে যুড়ি শত জ্ঞোশ বন সিংহনাদে পূরে শৃক্ত দূর বন সিংহনাদে পূরে অরপুর

অমর দানব শ্রেতে চায়,
দেবে ইন্তর্ধস্থ গগন যুডিয়া
শোডে মেঘশিরে হুলিয়া হুলিথা
নামে গীরে গীরে দেব আথঙাল,
মন্তক বেড়িয়ে কিরণমঙল,

চির-পরিচিত স্নীল তম।

পরশিলা ইন্দ্র অমরা আবার কত কল্প পরে করিতে সংহার বুল্ল মহাস্থর, দিলা আলিঙ্গন প্রব্যবিগণে পুলকিত মন,

দেব শচীপত্তি অমরনাথ । ১৫ৰ্ঘ সিংছ্নাদ দেবসৈৱসদলে

অম্যুনগ্ৰী শুদ্ধ কোলাহলে, সহৰ্য বদন চাহিয়া চপলা ক্ৰুছে শুচী "সুখী গেল চিত্তমলা,

জ্ভাল হদর নরন মন।"

ানি অকস্মাৎ চাহি ইন্দুবালা মনিন-বদনে শচী শিহবিলা সে অঞ্চনমন ফিরাতে তথন ১পলাব সনে বিবিধ কথন কহিতে লাগিলা স্তরেশ-রমা।

একবিংশ সর্গ

किनारम नरशक्तवाना खानिना यथन প্রকরজায়া-শচী-বক্ষ: লক্ষ্য করি विक्रिना कुनिना भम,---मनिना हत्ररन পৌলোমীর প্রতিবিম্ব চাক আভাময় কিরণে অক্টিত স্বর্গ-মনঃশিলাতলে , বাষ্পবিন্দু নেত্রকোণে, জয়ারে সম্বোধি কহিতে লাগিলা মহামায়া মুজস্বরে;— 'জ্যা রে. কি হেতু বল জগতীমণ্ডলে শর-চিত্তে পীড়া দিতে প্রাণিবন্দ হেন তিলার্দ্ধ না ভাবে তঃথ, না চিন্তে মান্দে কি দারুণ ব্যথা প্রাণে তাব, প্রদঞ্জে পীড়িত যে জন। হায়, স্থি মন্তাপ ক্তই এখন ভঞ্জে শচী—মনস্থিনী ए उनक्रिशी **हिस्तामग्री** ? अन अग्री, ফেন চিত্ত**জালা নিত্য ভূঞে যে প**ৰাণী, সেই বুঝে নররুক্তে কেন নিরুষ্টর মার্ডিজ মহীতন: কি মহা পীড়ন विक्रगटा, मञ्ज, ८ वस, मर्श जूकतरण ? था कित्न हेस्सकाद्यां वृद्धिल दत सत्रा, বিজিতের জ্বদিদাহ কিবা বিষময় কি বিষম কালকট-জালা অধীনতা!

হে সদিনি, তুমিও বুঝিলে এখন সে ভরহরী নাম ধরি কেন কালে কালে করাল কালিকা-রূপে আবিভূতা উমা।" কহিতে কহিতে চিত্ৰ ঈষৎ চঞ্চল. কহিলেন, ক্রোধস্বরে মহাকাল-জায়া জীবদন্ত-সংহারিণী--"এ দন্ত তাহাব থাকিত কি এতক্ষণ দানবী ঐকিলা এই দক্ষে ক্লানিত সে ভীম-ভামিনীর বীর্যা কিবা। চণ্ডবিলাসিনী চণ্ডীরোষ। বে ভৈরবী, কি কব দে ইন্দ্রে অগৌরব আমি যদি বতে বাধ দণ্ডি সে বামারে।" এত কহি ভবানী ভাবিয়া ক্ষণকাল তাজিয়া কৈলাসপুৰী শঙ্গে প্ৰবেশিল: বিশ্ব-কেঞ্ছ-মধাভাগে ধথা এক্সলোক উক্তেবিলা বেক্সমধী ইবম্মদগ্রতি দেখিলা দে মহাশক্তে, অনন্ত ব্যাপিরা, কিরণমণ্ডলাকার বিপুল প্রিণি ব্ৰহ্মার প্ৰবীৰ প্ৰাক্ষেণা—শোভাময় অন্তে আলোকে। নীল অনুরের কোলে নিবন্ধব থেলে যেন ভাতর হিল্লোলে. বিবিধ সূবৰ্ নীলবৰ্ণে মিশাইয়া (प्रिका टिक्व काला। तम विश्व-अद्यादन कर्का व. मानव किश्ता मिक एमवर्षानि ব্যোমচর প্রাণী যেবা আইদে দেখানে. লমে ভূলি শুক্লপথ, প্রণমি তথনি ষায় দুৱে উচ্চেতে উচ্চারি গাতা-নাম, छक्ति-शनकि करनवर । ठाविभिरक থেরি, দে মহামণ্ডল কিরণপরিত---পার্খে নিমু উদ্ধদেশে অপর্বা মবতি। নবীন ব্ৰহাণ্ডবাজি সভত নিৰ্গত। দেখিলেন জগদমা প্রফল মতরে সে ব্ৰহ্মাণ্ডকুল-গতি অকল শৃষ্টেতে কত দিকে কতরূপে কত শোভাময়। ভেদি সে ভাত্মগুল, প্রবেশিশা সতা, বিশ্নোহকর অন্সলোক-মধ্যভাগে। দেখিলা দেখানে, সীমাশুর মহাসিদ্ধ সদশ বিস্তার শ্রোতঃ-পাবাবার ঘোব সদা তর্জিত-ঘুর্ণামাণ উর্শিরাশি নি:শব্দে সতত ভীম আবর্তে ঘুরিছে বিধাতার আসন ঘেরিয়া। নির্বিকার.

নির্বাণ নির্জ্যোতিং, আভাহীন তাপশৃষ্ঠ ; সে স্বোতে উর্শির সিদ্ধু ! উর্দ্ধদেশে তার বাপারাশি সুন্মতম মণ্ডলে মণ্ডলে---বথা ভল্ল মেঘরাশি গগনে সঞ্চার . ঘুরিছে অন্তত বেগে-- অচিন্তা মানসে, অচিন্তা কবি-কল্পনে—সে বাষ্পমগুলী • আবর্ত্ত-ভিতরে কোটি আবর্ত্ত বেন বা! জনমি তাহার মৃত্ আলোকমণ্ডল ব্যাপিছে অনন্ত তমু-কেন্দ্র আভাময়, আভাময় সুক্ষতেব **তরল কি**রণ সে কেন্দ্রের চারিধারে , দূরতব ষত, তত গাঢ় দৃচ্তর পরমাণুরজ বায়ু, বহিং, ধাতু, মুৎপিওক্সপে। ছটিছে অনন্তপথে দে পিওকলাপ স্ব্য, চন্দ্র, ধুমকেতু, নক্ষত্র-আকারে नान। वर्ष, नानाकांत-- अशुर्व निनात পুরিয়া অম্বরদেশ , কোথাও ফুটিছে মনোহর দম্জ-ভুবন মোহময়। विदाखि (म ऐभिमम अकृत अर्वत বিধির স্ঞ্নাসন-অচিস্তা নিগমে! চারিধারে সে আসন ঘেরি নিবস্তু ছুটিছে তরন্ধালা বুটিতে বুটিতে উঠিছে আসনদত্তে আনন্দ খেলায় হেন ক্রীড়াবলে রভ সে তরলরালি (थलिए जामन-शार्य; विधि-शर्मायुक বধনি পরশে তায়, তথনি সহসা নে অপূর্ব্ব স্রোভোমালা জীবন-মণ্ডিড খুৰ্ণ নিরমল রূপ জীবাত্মাত্মন্দর— 考 প্রিন্ধ জ্যোতীরেখা অলে পরকাশ। পুলকিত পদ্মধোনি হেরেন হর্যে त्म कीय-व्यापा-मधनो, त्रुद्धन रहत्य স্টির লগাম-শ্রেষ্ঠ জীবের চেতন, (मर-नर-थानि-(मरह स्त्रह स्वर्शाधात्र। বিশ্বিঞ্চি কারণসিদ্ধ-গর্ভে হেন রূপে গঠিছেন কত প্ৰাণী সকৌতুক মনে। नवीन बीदनाचारा मुख भीवजून ভূঞ্জিতে অভ্তপূর্ব কতই উল্লাস--সে মৃহুর্ত্ত হুধ ৷ আহা, কে পারে বর্ণিতে, কে পারে চিন্তিতে, হার! আভাস তাহার (দীপভাতি বথা হুৰ্ব্য-কিন্নণ আভাস)

ভাব মনে, হে ভাবুক, শিশুর উল্লাগ রবে পর:সিক্ত তুণ্ডে, অর্থ্যুট বরে, ধরি জননীর কণ্ঠ ছালে চিত্ত-সুথে, প্ৰকাশি পীয়ৰপূৰ্ণ স্বেহ-ফুলাননে ! এ হেন আনন্দরসে হইয়াবিহ্বল প্রথমে বধন, ছেরে সে প্রাণিমণ্ডলী **লোভোগভ অর্ণবের উর্মিক্স ক্রী**ডা হেরে শক্তে বায়, বাষ্প, বিদ্যাৎ-আলোক স্কন-লীলা অন্ত, তথনি সভয়ে শুক্ষ শীৰ্ণ পুষ্পপ্ৰায় মুদিত নয়ন ধায় বিধাতার অংগ ভয়ে লুকাইতে, ধার ভয়ে শিশু যথা জননীর কোলে ! পশি বিধাতার ক্রোডে তথনি আবার ceca (म कक्नाश्र निर्माण स्थानन, তথনি নির্ভয় পুন:—পাসরি সকলি, তথনি আপন হ'তে চিত্তের উচ্ছাদ। সঞ্চীত উচ্ছাদে বহে অপুর্ব ধানিতে অপর্ব-ধানিতে উচ্চে পরবন্ধনাম **फाकिएक फाकिएक फेट्टि एवं गांत जूनरन.** জ্বগৎ-সীমান্ত-বত্ত্ব জীবরূপ ধরি। আনন্দে আনন্দমন্ত্রী কারণ-সিন্ধুতে (हतिला कछहे (हम एक्स्मत मीला, পুঞ্জ পুঞ্জ জড়, জীব, ব্রহ্মাণ্ড, স্মাকাশ, স্থ্য, ভারা, শশধর, স্বর্গ, রসাভল মৃহুর্ত্তে মৃহুর্ত্তে সৃষ্টি অপূর্ব্ব দেখিতে, দেখিতে দেখিতে স্থাধে শঙ্কর-মোহিনী চলিলেন ধীরগতি—দাড়াইলা আসি বিপুল কারণ-সিদ্ধুতটে মহামায়া! সহসা উদিল ছটা---অতুল শোভার উজলি মহা-আমৰ্থব। হেরি সে কিরণ সবিস্ময়ে পদ্মধোনি উন্মালি নয়ন চাহিলা, যে দিকে চারু শোভার উদয়। সম্ভ্রমে আইলা কাছে শক্ষরী, হেরিয়া সম্ভাৰি স্থমিষ্ট স্বরে সুরজ্যেষ্ঠ বিধি জিজাসিলা —"কি বারতা, হে ত্রাংকজারা কি কারণে গতি এখা ? কোথা বিশ্বনাৰ কি হেত বিধিরে আজি হেন অহকুল ? "হে বিরিঞ্চি, তুমি ভিন্ন" কহিলা অ্বিকা^ন "দেবকুলক্ডা-মান কে রাখিবে আর ? **क्टाइ नादि कहिएक मह्हल अ नश्राम**,

ভানি পাছে করেন প্রাণম বানদেব !

ছটা বুআত্মর-জায়া দানবী দাভিকা
তুলিলা হানিতে পদ শটা-বক্ষ:হলে,

হে ক্ষলবোনি, ব্যথিলা শটীর ক্রদি,
কে আর হে তবে পরচিত্তে পীড়া দিতে

ইইবে শক্তিত, ইক্সজায়া পোলোমীর
এ দশা যভাপি ! দর্প চুর্প কর দেব,

দক্ষবামার অচিরাৎ— কর বিধি,

হে বিধাতঃ, বুঅ-বধ যাহে, বধি তারে

দানবীর দৌরাত্য ঘূচাও অগ্ধামে,

মুচাও, হে প্রাণমন, উমা-মনজ্যাপ।"

বিরিঞ্জি উমার বাক্যে চিক্তি ক্তজন, নগেজনন্দিনী সঙ্গে বৈক্ষঠ-ভূবনে গেলা বথা রমাপতি, মাধব-সংহতি ফিরিলা সম্মর পুন: ভূবন কৈলাদে!

বসিয়া ভবানীপতি ভাবে নিমগন। কোটি ব্রহ্মাণ্ডের প্রতিমৃত্তি চারিধারে, হেরিছেন কুতৃহলী বোগীত মহেশ শং**দের অপূর্ব্ব** গাত !--বিশ্বচরাচরে, কতরূপে কত জীব, কত জড়ভফু এই তেঁহইছে লীন। নিগুঢ় রহস্ত— নিদর্গ বন্ধন-স্ত্র—ছেদন-প্রণালী। বোধাতীত, চিস্তাতীত, অতীত কল্পনা---জড় জীব-ধ্বংসগতি--কাল-সংগঠন। কিবা সৃক্ষতর ক্ষুদ্র সৃত্তেতে জড়িত র্ণাবের জীবন, ভোগ, সম্পদ, প্রতাপ ; কি সুক্ষ মিলন, বিশ্ব-চরাচর-মাঝে অচেত্তন সচেত্তন -- ভূলোকে হ্যুলোকে, প্রাণিকলে, জড়জীবে, আত্মায়, শরীবে কিবা মনোহর ক্তু শৃঙ্গল-মালায় ৰ্জিত ব্ৰহ্মাণ্ড-বপু কেশাগ্ৰ সদৃশ ইতের রেধার বদ্ধ আত্মা, মম, দেহ। शिक्षिण इहेरल कर्म निक्षिण विकल।

দেখিছেন মহাবোগী প্রগাঢ় কৌতুকে
গে লর, প্রলম্বন্ধ ভ্বনে ভ্বনে।
দেখিছেন বোগিবর কালের প্রভাবে
গাঁবব্র কত মর্প্তো স্প্তি শোভাকব,
গাঁবম্প্তি পরিহরি, হতেছে বিলীন
গভার কালের গর্ডে। কত জ্ঞানদীপ
কোটি কোটি ব্রশাওমাঝারে ক্ষণে ক্ষপে

निविद्य-पूर्विद्य त्यात्र अव्यान-चित्रिदत्, সুষ্মা কতাই রূপ, কতাই জাগতে হতেছে কলন্ধময়--ভাতিছে কোখাও অসীম লাবণ্যরাশি চক্ষের নিমিষে। চতুর্দিশ লোকমাঝে মাত্র। স্থবিমল। নিৰ্বাণ নক্ষত্ৰপ্ৰায় জ্যোতি হারাইয়া পড়িতেছে কত দিকে কত শত, হায়, পাপপন্ধ-পরিপূর্ণ অন্ধতম কুপে --পুড়িতে সন্তাপ-তাপে। দেখিছেন দেষ সে স্বার অধােগতি ব্যথিত অন্তরে,---যথা নরচিত হেরি সুখ্যের মণ্ডল --রাছর গভীর গ্রাসে যবে প্রভাকর। কোন বা অবনী এই প্রাণিপুঞ্জময় উদ্রিদ-লতার স্থানোভিতা, কণপরে হইছে পাধাণপিও মণ্ডিত হিমানী---প্রাণিশুর ভ্রারের মরু ভর্মর। কোথাও আবার কোন বিপুল জগৎ বিদীর্ণ হইমা চর্ণ-রেণুর আকারে মিশিতেছে শৃতাদেশে। কত জনপদ উমতি-সোপাৰ ছাডি ডুবিছে কালেতে অচিহ্ন হইয়া ভবে চিরাদন তরে গ দেখেন কোথাও কোন একাণ্ডের মাঝে ভীষণ প্রলয়-রঞ্জীব, জড যত, উদ্ভিদ্, ভূধর, বারি, ভূমগুল, বাযু, কালানলে দশ্বীভূত শৃংগ্যতে লুকায় অণুরূপে ব্যোমগর্ভে—শৃক্তময় করি সে ধরামণ্ডল-ধাম , কোথাও আবার দেখিছেন ভূতনাথ যুগ বিপৰ্য্যয় ---फुर्डिश शां**रत्न मध** विनाल धरनी পশু, পক্ষী, নরকুল অদৃশ্য সকলি, ভ্ৰমিছে বিমানমাৰ্গে ডাকিছে প্ৰন ভীষণ প্রবল শব্দে মিলি দে প্লাবনে। সে ঘোর প্লাবনে বিশ্ব, ভুবন চকি**ভ**, এইবপ লয়প্রথা ভূবনে ভূবনে कि एपर मानव-वाम , किया निक्षारम ; দেখিছেন যোগীন্দ্ৰ নিমগ্ন গাঢ় ভাবে. মুত্তর কথন ঈষৎ হাস্ত মুখে।

হেনকালে ম্বংর অরভু ভবানী; দাড়াইলা ব্যোমকেশ শঙ্করে সন্তাবি, সদানন্দ মহানন্দ বৈলা আলিছন কেশৰে হিরণ্যগতে—উমারে চাহিরা ত্বিলেন আত্তোত্তাৰ মধুর হাসিতে, মাধব তথন সদা প্রিয়বেদ দেব— গন্তীর-বচনে শুনাইলা বিশ্বনাথে সকল বারতা— শুনাইলা শচীত্ত্ব, শুনাইলা শিবে অধিকার মন্তাণ।

শুনিতে শুনিতে ন্ধটা ধূজ্ঞটি-মন্তকে কাপিতে লাগিল ধীরে---ললাট-ফলকে শশধর থরতর স্মান্তা প্রকাশিল। মহাকাল-ক্রোধমৃষ্টি উদয় দেখিয়া সান্থনিলা হুবীকেশ সত্তর শহরে .

বিষ্ণুর বচনে মৃত্যুঞ্জনী মহেশব কহিলেন "হে মাধ্ব, উমার বাসনা পূৰ্ণ কর এই দত্তে—হে কমল্যোনি, কর যাহে বুত্রাস্থর নাহি জীয়ে আর, ক্লানি আমি আমার(ই) বরেতে স্পর্দ্ধ। ভার কিন্তু কহ শুনি, কেশব কৈটভহারি, সম্ভ বিধাতা, কেবা সে নহ তোমরা ভক্তির অধীন সদা— যথা ভক্তাধীন ভ্ৰান্তিমান আঞ্জোৰ ? ভ্ৰান্তি যদি ভাব. এই দত্তে দেই ভ্রান্তি ঘুচাতে বাসনা দমুক্তের অদৃষ্ট অভিয়া; হের ইক্ত সসজ্জ সমরক্ষেত্রে; বজ্র প্রহর্ণ নিশাইলা বিশ্বকর্মা; দিলা ভোমা দোঁতে নিজ নিজ তেজ: অত্তে অব্যর্থ করিয়া, একমাত্র অন্তরায়-- অন্ত নতে আ্রাঞ্জ(ও) ৰিধা হার দিনমান-সে ব্যথা ঘুচাও অকালে অন্তরে নাশি হে বিধি কেশব !---আপনার কর্মদোষে মজে যে আপনি, কে রক্ষিতে পারে তারে ?" বলি শুলপাণি ভক্ত বংশল দেব বুৱে ভাবি মনে তাৰিয়া গভীর খাস, বদিলা নীরবে। ছেরে মহেশের মূর্ত্তি দেব চক্রপাণি মন্ত্রণা করিলা ক্ষণকাল ব্রহ্মসহ উত্তরিলা মহেখরে—"হৈ অন্তক্ষারি: কর্মফলে প্রাণিবৃন্দে উন্নতি, পড়ন ; খত: পরিবর্ত্তশীল প্রাক্তন-প্রভাবে !

তথাপি উমেশ, উমা-অহুরোধে আমি,

দেব প্রজাপতি, বুত্র-ভাগ্যলিপি-নাশে

হুইত্ব সমত।" বলি লুকাইলা তত্ত।

অতমু হইলা মহাদেব ,—গুণ তিন একত্র মিলিয়া অক্সাৎ, প্রকাশিলা পর ব্রহ্মকপ নিরূপম !--অত্তলিত শোভাপূর্ণ কৈলাস-ভুবন ক্ষণমাঝে। क्रमार्य (चात्रभुटक देश्य (चात्रश्रामि---"রুদ্রের অদুষ্টলিপি অকালে থণ্ডিত।" হেপা ভাগ্যদেব গাঢ়-চিস্তা-নিমজ্জিত, বদিয়া বৈকুণ্ঠ-প্রান্তে বিনত সন্মুখে বিশাল প্রাক্তন শিপি -- দৃশ্ব মনোহর। ছায়া ইন্দ্রকালে যথা ধৃষ্ঠ যাত্তকর দেখার অঙুত রঙ্গ—অজুত তেমতি অনন্ত আলেখ্য আলে ক্রীড়ানির্ভর। কোনথানে ভূমওল-বিজয়ী বীরেশ ছুটে চতুরঙ্গ দলে পর্বত লঙ্কিয়া আবার মুহূর্ত্তকালে সে বীর-কেশরী মরুভূমে পদব্রজে ভ্রমে চিন্তাকুলে। এই রাজ-অভিষেকে,—আনন-হিল্লোগ (थिणाइ धरानी, चाक अवारह अवारह, কত গজ, তুরক্ম, কত প্রাণিকুল স্থ্যস্থাস্থ্যার। তথনি আবার আলেথা শাশানজারা ভয়ন্তর বেশ। রাজতত্ব চিতাপরে, অপত্য, বান্ধব, বাষ্পাকুল-নেত্রে ছেরি শবে। ক্ষণকালে চিতা-পাৰ্যে কোথা আচ্ছিতে অটালিকা মুদজ্জিত--রঞ্জিত বসনাবত চাক---বিবাহমগুপে স্থাৰ দম্পতি আদীন ৷ মুহুর্ত্তে জ্বাবার, মৃতপতি কোলে করি কাঁদিছে যুবতী ছিন্নভিন্ন কেশবেশ: বসন-ভূষণ বিলুষ্টিত! ক্ষণে ক্ষণে কতই যুবক আহা, ভৃষিত সুষ্মা, প্রতি অঙ্গে স্থাধ ধেন স্বাস্থ্য মৃত্তিমান---যৌবনে উচ্ছিন্ন কত বামারপরাশি। কোন চিত্ৰ উণনাভজালে পূৰ্ণ এই; উজ্জল নিমিশমধ্যে। কোন দীপ্ত ছবি. প্রভাষিত নির্ভর--সহসাম্পিন। কোন সে আলেখ্য-দুখ্য – দারিদ্য-প্রতিমা বৰ্ত্তমান এই ধেন – দেখিতে দেখিতে মনোহর চাকুৰেশ মণি-মরক্ত-

ময় রত্ব-ত্রশোভিভ: কত পর্বশালা

ধরিছৈ সুহর্মারপ চক্ষের পলকে । কত সে আবার দিবা স্বর্ণ-ছট্রালিকা ধরিছে কটার-বেশ কালের কালিমা. তণ গুলালতা আছোদিত কলেবব । মিশাইছে কত চিত্ৰ ফুটিতে ফুটিতে গ্ৰাতক শৈলকল; প্ৰভাতে কুহেলি আবরিলে মহীদেহ মিহিরে লুকায়ে ' কত দুখা মিলাইছে চিরদিন তরে। ্ট্রেপে জগভের যে কোন প্রদেশে কালণৰে কৰ্মকৰ্মে স্বৰোগে কৰোলে. ণ্টিছে যথন যাহা স্থগতি অগতি. কিবা জীব কিবা জড কি উদ্ভিদকলে। তথন দে চিত্ৰপট নিতা ক্ৰীডাময়, অঞ্চিত চইছে তাহা ,--- নিমগ্ন মানদে দেখিলেন ভাগাদের নিশ্চল-নয়নে . ব্যত্তব বিশাল চিত্ৰ সে আলেখ্যপরে কত শোভা-বিভ্নিত, কত জাভাময় নলিছে উজ্জন মূর্তি-প্রদীপ ছটায ত্রিভ্বন প্রস্থলিত।- হেরিলেন ভাগা কুত্হলে। হেনকালে আহব বিদারি প্ৰনিল ভৈৱৰ মূৰ্ত্তি -- আকাশবাণীতে প্রকাশিয়া ব্রহ্মরূপী ত্রিমৃ**র্টি আনেশ।** সভ্ৰেপাক্তন শীল ফিরায়ে নয়ন নিব্যল চিত্রপটে— দেখিলা সহসা বত্তের বিশাল চিত্র কালিমা মণ্ডিত. মিশাইছে ধীরে ধীরে—ধোডা-বিরহিত !

দ্বাবিংশ সর্গ

বিদিয়া অসুর-পার্মে অসুব-ভামিনী;—

নৈ নীরদরাশি, লুকায়ে বিজলী হাদি,
বুকে ইন্দ্রধন্থ-রেখা, ঢাকিয়া মিহিব,
বাবশি ভ্ধব-মন্দে রহে যেন স্থির '
যেন চল চল জলে নীলোৎপলদল

বিত নেজবন্ধ, দৈতাম্থে চাহি বন্ধ,
নিস্পদ্ধ শরীর ধীব, গভীর বন্ধন,—

না পভিলে ধারাজাল জলদ বেমন।

দেখিয়া দহজনাথ সে মুখের ভাব বিশায় ভাবিয়ে মনে. কর ধরি সবতদে. করতলে চাপি গীরে মধুব উল্লাদে. কহিলা উৎসাহপূর্ণ মৃত্ল সম্ভাষে ;— "এ কি ছেরি, দৈতারাণি, যামিনী উদয় ক্দেপীড শবজালে এ সুখ-মধ্যাহ্নকালে গ निर्द्धित कतिना शुत्री अनत्य किनिया, পরিলা অতুল ষশঃ কিরীট মণ্ডিয়া। পলাইলা সুবদেনা শিবা যেন ভারে: জয়ন্ত শশকপ্ৰায় त्थं वस्य द्वर्गं भाग. পালটি না ফিরে চায়, দৈত্যের ভাতনে, অমবার প্রান্তে দেব ভাবে ক্ষু মনে; ভাসে অস্তরের দল আনন্দ-উৎসাহে: পুত্রের স্থাশোগান, ত্রিভবনে দৈত্যমান. আজি প্ৰভাষিত কত। –সাৰ্থক জীবন च्यांकि (म मक्त श्रिरम, मक्त माधन। হেন পুল্লে গর্জে ধবি, এ স্থবের দিনে চিত্তে নাই স্থাচছাস, মুখে নাই প্রীতিভাষ, প্রতের কল্যাণে নাই মঙ্গল-কামনা; এ ভাবে মনের থেদে কেন ছে বিমনা ? ভের দেখ কবতলে ধনের ভাগার। কর যাহা চিত্তে শম. খোষিতে পুলের জয়. ভাসাও ত্রিদশালয় উৎসব-शिल्लाल, এ দিন কথন যেন কেহ নাহি ভূলে। কি অভাবে মনোতঃখ, দতুজ্মহিষি ? কি নাঠি করিতে দান কিবা স্থান কিবা মান, কহ কিবা চাহে প্রাণ, কি আশা প্রাতে-কোন রাজসিংহাসনে কাহারে বসাতে? আবিদাদবিজু যেবা দয়জেব কুলে আশায় জুড়ায় প্রাণ, দেও আজি আশাবান স্থপনে কল্লনা করি অসাধ্য কামনা ! ইচ্ছামথী ঐজিলোহে মলিন-বদনা? জননীর মন্তাপে পুত্রে অকল্যাণ-কে কোথা বিশ্বতিপ্ৰলে, ভাগায়ে হান্য-তব্দে, বিষাদে আতার দিলে, कি হেন ভাবনা ? ক্রিলেলে, চিত্রের বেগে ভূলিলে আপনা ?" উপ্তরিলা দৈত্যবাল-মহিষী তথন;— থলেব চাতুরী মায়া, वक्त्रशी (नश्यक्ताः। ধরে কত রূপ তাহা কে বুঝিতে পাবে ?

শ্বমণীর চাতুরীতে রমাপতি হারে !---

উত্তরিলা---"হে দকুজকুল-অধীশর, তথনি অদটে তার. অভাগ্য ধধন ধার. কত বে লাঞ্চনা-ডোগ কে বর্ণিতে পারে গ নহিলে নিৰ্দয় তেন কেন হে আমারে ? ঐ দ্রিলা পাষাল প্রাণ। – তুনয়ে ভলিয়া, ভেবে মুখ করি কালা. ্বাপনার তচ্চজালা, আইনাপতির কাছে? হে লদয়নাথ. ক্রম্ম ব্যথিত আর পেলে না আঘাত ? কবে যে কঠিন হেন দেখেছ আমার? কাহার জীবন-দানে. কারে বধিয়াছি প্রাণে, নিদ্ধা হট্ডা জোমা কৈছ নিবাৰণ ? कि (पिथिटन करव वन निष्टेंब (छमन १ হায়, ঐক্সিলার হেলা তনমের প্রতি. ধিক ঐ জিলাব নামে. এই ছিল প্রিণামে. ভনিতে হইল তারে এ পক্ষ বাণী। পতির বদনে, হার। ধিক রে পরাণী। কারে জানাইব আর মনের বেদনা ? ৰশ্বকাল যার সনে. নিদ্রাহারে একাদনে, তিনিই আমারে যদি ভাবিল এমন কি জানাব কে জানিবে মনের যাতন। থাক. হে দমুজ-নাথ তনয়-বংসল, কর ভোগ একা সুথে. যে খেদ আমার বকে. থাকুক তেমতি, দ্বংখে পুডুক পরাণী। थाक स्टार्भ, प्रयासय - हिलल शांवाती।" বলি ভাক্তকোধে বামা উঠি দাঁডাইল -কত অহুরোধ করি. কত যতে করে ধরি. বসাইলা মহিষীরে নিকটে আমাবার. ঘুচাইলা কভ ষত্ত্বে চিত্তের বিকার। কহিলা তথন রামা মধুর কপটে ,— "ছে বীর সমরপ্রিয়, রণকেতে অবিতীয়, শান তুমি শুধু রণ-রঙ্গ-ক্রীড়া যত; তমি কি জানিবে কহ বামা-ক্ষেহ কত ? কি কানিবে জননীৰ প্ৰাণে কিবা হয় গ ' সস্তানের মমতায়. কত ব্যথা চিম্কা তায়, কত দিকে ধায় চিত্ত। হে দৈতাভ্ষণ, পুরুষ বুঝে কি কভু বমণীর মন ? विकाद-डेलारन धरव कृषि रम डेमान. পুতে দিয়া দরশন, ্ভাবিছ আমার মন. দেখাবে কিক্সপে তারে এ বদন ছার---

भाभीक्षेत्री-रकारम यरव विशद कुमात् ।

স্থাবে ৰখন 'মাতা, ইন্দ্ৰালা কোথা? দিয়াছিত তব করে. পালিতে সোহাগ্ৰ কোথা সে জেভের লভা বাথিলে আমার কি ব'লে জনয়ে শেল বিধিব ভাছার ? হারামেছি, দৈত্যনাথ, পুত্রের মাণিক, श्रादाहि, अन्दर्भ. অঞ্চলের নিধি ৫ দত্তক্স, হারায়েছি, সুশীল তোমার, ইন্দুবালা বিনা এবে পুরী অন্ধকার !" বলি বাজাকলনেত্র হইলা নীরব ! দৈলোপতি অক্ত অচল নগেন্দ প্ৰায় চাহি ঐদ্রিলার মথ থাকি কভক্ষণ. ছাডিলা অনল-খাদে গভীব নিম্বন, "কি কহিলা ঐলিলা" বলিলা গাঢ় সংগ্. সে স্থাংও নিক "ইন্বোলা নাই মম. ডবেছে কি অন্তাচলে !--পাব না কি " দেখিতে সে নিরমল পীয়ৰ আধার গ আর কি সে জেহময়ী সরলার কথা চিত্ৰাৰ উত্তাপ : হৃদয় শীতল কবি. জড়াবে না এ শ্রেণ--জ্ডাত বেমন নিন্দিত বীণার ধ্বনি ঝরিত ষ্থন ধ না ঐদ্রিলে, নিগনের নহে সে প্রতিমান ছবিতে সে স্বৰ্মায়. কভান্ত কাদিবে গ চিরায় সে ইন্দ্রালা অক্ষুরতন,---विकारी वीद्युत गर्भः किवाय त्यमन ।" "হেন অমলল কথা, হে দক্তপতি ' কি হেতৃ আন হে মূথে," ঐন্তিলা কুলিমা কহিলা বিমৰ্গভাবে চাহি দৈত্যপানে. "এ বেদনা কেন দাও ডঃখিনীর প্রাণে? চির আব্যতীহ'ক বধু সে আমার ' চিরায়তী থাক ভার. পরশে না যেন উ কেশের শতাংশ ভাগ শমন চর্মতি. হে নাথ শমন হ'তে নিদারুণ অতি। ইন্দ্রের কামিনী শচী— সাপিনী—কুটিনা শিশুমুজি বাবিধ क्र अटि हिन्दा शह. সাধিতে নারিল যাহা দেবতার বলে , সুসিদ্ধ করিল তাহা কৃহকীর ছলে। श धिक **अखिना-धार**न—धिक टेमछात्राञ्ज कृति दिवसारवर्ग ভোমার কুলের ব্যু, ভলি কুল-মান গৰ্ম হেলিয়া সকল. আপ্রের করিল কি না শচী-পদতল ?

তব আজা শিরে ধবি, দলুজকেশরী, #চী আনিবারে বাই. হতভাগ্য পোডা ছাই. নিবখিত ইন্বালা সেবে শ্চীপদ।---ব্ৰহ্মাণ্ডে রহিলা, নাথ, এ কলক্ষ-হদ । অসহ সময়বেগ না পারি ধবিতে #চীবে গঞ্জনা **দিয়া**. বধরে আনিতে গিরা, ঘটিল যা ছিল শেষ কপালে আমার.---ষেমন তবাশা হায়, পুরস্কার তার গ বলি নাই, ভাবি নাই, চাহি না বলিতে महिष्ड बहेन. প्रच. দে চঃখের কথা কভু, স্বৰ্গজ য়ি-জনায়াহ'য়ে শঙী পদাঘাত। সে তঃখ 'পাধাণ'-প্ৰাণে সহেছি হে নাথ। সহিতে না পাবি কিন্তু এ অখ্যাতি তব, নারীব কলক ভাষ্ ামীৰ কথ্যাতি যায়. ভাবি ভার সে কলক ঘচাবে কেমনে --ইন্দ্রালা পড়ে মনে জাগ্রতে স্বপনে। চল দেপাইব চল স্বচকে দেখিবে. াঝিনে সে কি কারণ, দতে 'পাষাণীর' মন. কেন এ স্থের দিনে হ'য়েছি হতাশ। নারীর বচনে নাথ, কি কাজ থিখাস ?" ঈষৎ কম্পিত নাসা, কৃঞ্চিত ললাট, াগনে নিখাস খন, আগ্রহিল্ম তিনয়ন. চলিল দম্জপতি দানবী-সংহতি, চলিল দৈত্যেশ-বামা গৰ্কিত সুর্বতি . ধন্ত রে ঐক্রিলা ভোর পণে বলিহারি ' চাপি চিন্তা, চিত্তবেগে, লছ নদীর বেগে. সাধন করিতে নিজ সাধেব মনন ; জান না হৃদয়ে কড় নিরাশা কেমন। চলিলা অসুবপতি মহিষী-সংহতি. নির্থিলা স্তরে স্তবে, টিলা প্রাচীরপরে. অকল সাগর তুল্য স্থরাত্রদল, নির্বিলা বর্ণময় স্থমেক অচল। শোভিছে অমরা প্রান্তে – সহল্র শিথব যেন কল্পনার বেদী, ঠি'ছ অনস্ত ভেদি. সুরবিমোহিনী মৃতি সাঞান রয়েছে! निर्माल कित्रवयांना मर्कात्त्र (म्टब्राइ ! ান দে শিখরে তার — মাহা, কিবা শোভা তার, যা কিরণেতে মিলি. থেলিতেছে ঝিলি মিলি, দেখার ভর্জনী তুলি দছক্ষহিষী --বসিয়া সুরেশ-কান্তা উত্তলিছে দিশি;

117 -

পদতলে ইন্দুবালা মলিন বদনা— শীণালস কলেবর, অফুট কুমুম-থর, মধ্যান্ডের সূর্ব্যতাপে বিরস বেমন, निक्त, अलम, अर्फ्स्मिक नश्न . কাছে রতি ভ্রমতি চপলা অচলা. তেরিছে সমরাঞ্নে. মগ্ধচিত কয়জনে---চাক চিত্রপটে यেन जुलौत लिथन। নির্থি দক্তজবাক বিস্থায়ে মগন। বিশায়ে মগন দৈতা কভক্ষণ থাকি করিল নাসিকা-ধ্বনি, গরজিল যেন ফণী. ল্ফা ছাডি লজিবতে স্থমেক দেহ বাডে . হেনকালে সুৱাসুৱে সিংহনাদ ছাড়ে,---পুরিয়া সমবক্ষেত্রে সেনা-কোলাহল সহসঃ শক্ষেতে উঠে. वश्चन (वर्ग इति. করিব্রঙ্গ শুগু তুলি গর্জ্জিল ভীষণ, বাজিল পটহ. ভেরী, দামা, অগণন ! নিমিষে পালটি নেত্ৰ দেখিলা প্ৰাক্তে. যেন বিহ্যাতের গতি. রুদ্রপীড রপে রথী. ছটিছে বাহিনী-অগ্রে, উঠেছে পতাকা, ভয়কর বাতৃক্ধ কেতৃ-অঙ্গে দাঁকো। নির্থি ভলিয়া দৈতা সকল ভাবনা, স্থিব-নেত্রে স্তর্ধবৎ, वक्परंष्ठे ठोडि तथ, দেখিতে লাগিল বুত্র অনক্ষমানস বথের তরঙ্গতি, অধের তরস। সমর-আহলাদে চিত্ত সদাই বিছবল, তাহে পুত্র যুদ্ধপাবে. প্রবেশিছে শক্রমাঝে, नित्रि अभुक्ति जारत अनग्र मणिन. অন্তত আনন্দ্রোত চিত্তে প্রবাহিণ ! দেখিলা অমুর-মুব মধ্যস্থলে আসি. অতুল আনন্দমতি, স্থির হৈল রথগতি, পুলের সমবসজ্জা হেরে বুত্তাস্থ্ব— রতন-দন্তবা বিভা উছলিছে ধুর, শুলুসারসের পুছহ মণিওছেে নড তুলিছে শীৰ্ষকে বাঁকা, অৰ্তাণে অৰু ঢাকা; হীরকমণ্ডিত অসিমৃষ্টি কটিতটে, সারদনে অদিকোষ চলিছে দাপটে। বক্র ধমু: বামকরে, রথ-মঙ্গে শোডে, নানাবৰ্ণ ধছওবি হেম্মর নানা তৃণ, শাণিত কুপাণখেণী, গদা, প্রক্ষেড়ন, श्रुम 😻 विविध व्याद्ध व्याप्त ।

ব্দিরাসমরাদ্রে ভীম শৃথানাদি.--ধ্যুপরে করতল উঠি মহেখাদ. দীভাইলা রথোপরে. গন্তীর বিশদ করে. বাজিল চুন্দভিধ্বনি. খন খন খন খনি কহিলা সন্তাষি স্ততে, প্রফল্ল নয়ন---বাজিল সমরত্বী যুডিরা প্রাক্প; "ছে সার্থি আজি মম সফল জীবন . দানবের সিংহনাদে কাঁপিল গগন। তুৰ্জন্ম ত্ৰিদশনাথে সমরে সম্ভাষি হেরি বডানন শীঘ্র সেনা-অগ্রভাগে উজ্জল করি শিরস, আইলা-নক্ত্রগতি. সদল বিপক্ষ মহি পরিব অতল যশঃ. রাধিব অক্ষয় খাতি অক্সরমণ্ডলে. मां जो हेन निश्चिक्त क बंद बंद बंदि : দেখাৰ কামুকি শিক্ষা প্ৰৱৰ্থিদলে ! উডিল বিশাল কেত শত্ত শোভা করি। कहिला डिमानसन खलम गर्कातन,-জানি মৃত্যু স্থনিশ্চিত বাসবের হাতে, রণ্ড্র্য্য ঘনরং আভি এ সমরাঙ্গনে. তাজিব অক্ল-মনে. মহুৰ্তে নিস্তব্ধ সব, রথের মর্যরশক্ষ, হন্তীর গর্জন. এ দেহ, হে সভবর--সৌভাগ্য আমার. ভালে নালিখিলা ভাগা অসুমৃত্য ছার ! হয়ব্ৰজ স্থানভাব উন্নত **প্ৰ**বণ .---কহিলা জলদম্বনে—"রে দান্তিক শিশু, ত্রিলোক অজের ইন্দ্র ত্রিদিবের পতি. বহিনরে নিবারি রণে. উন্মত্ত ইলি মান শ্বক্ষেপ প্রথাযাব. বীব-চকে চমৎকার. অমৰ-সেনানী-অংগু আ(ই)লি একা বণী, তাব সনে আজি রণে যুঝিব হরষে, জুলিলি শ্যন-ভয়, আবে ছন্ন্মতি 🕈 এ মরণে কাব মনে মুখ না পরশে ? যে শিবিতে আদিতের মহার্থিগণ. সাবিপি, মৃত্যুর চিম্না খ্রুচচেছ এখন, এক একজন যার. নিমিধে ব্ৰহ্মাও ছা দেখিবে অন্তত রণ, আজি সুরাস্তরগণ, বিক্রমে কবিতে পাবে অবহেলি ভায়. দেখিবে বীবের মৃত্যু সম্ভত কেমন. সমবে পশিলি একা অবোধের প্রায় ? এক কথা, সাব্ধি হে, বাখিও শ্ব্ৰণ.— না চিনিলি প্রচণ্ড মার্ত্ত গ্রহনাথে ? অক্তিম-শরনে যবে দেখিবে আমায়. সিদ্ধ যারে নিতা সেং প্ৰন ভীষণ দেৱে. রণক্ষেত্রে. এই দেহ. দেখো যেন শক্ত কেছ. আক্রেদ্ধকে পাশী ? মদ দওধরে ? ঘূণিত চরণে নাহি কবে প্রশন. রাক্ষস পিশাচে ধেন না করে ভক্ষণ। ফণীন্দ্র বাস্থাকি ফণাধব-ক্লেশ্বরে ? ভীম অঙ্গারক কুজ, দৌরি শনৈশ্চর, এই আমগ্রিচক্র রথ লভিফুষাবণে. বৈনতেয় থগেশ্ব. নৈঋ্জ নৈঋ্ভগ ভাবাইয়ে ভতাশনে. দিও হে পিতচরণে. জয়ত্ত বাসবপুত্র অসীম সাহস. দিও পরে এই মম অক-আছোদন, আমি দেব-দেনাপতি ভবেশ-ঔরস। বলো-কুদ্রপীড়-সাধ হয়েছে সাধন! এ বীরবুলের মাঝে বল কার সনে, এই অৰ্ঘ্য, সূত শ্ৰেষ্ঠ দিলেন জননী. যুঝিবি রে ধহুঃ ধ্রি তাঁর প্রাণাধিক পুদ্রে, যঝিবি সাহস কবি? রক্ষিতে সমরক্ষেত্রে. দেবেব বিক্রম কত দাস্তিক বালক-দিও জননীরে পুন: বলিও তাঁচায় সমুদ্র শুবিতে চাও হইয়া শুষক ?" মত্যকালে এই অর্ঘ্য ধরিত্ব মাথায়। "হে পার্ব্বতীস্থত" দর্পে উত্তরি তখন, দিও, হত, এ সারদপ্ত মণিময়, কহিলা বুত্ৰতনয়. "পাবে শীঘ প্রি উজ্জन भीर्यक्र तर् আজি যাহা শোভা করে, শিশু কি প্রাচীন এই অসুর-আত্মজ, मिश्र हेन्स्वाना-करत्र कतिराज यातन, বৰে আংগ্ৰস্ব শীঘ্ৰ হও শিখিধ্বজ. উনাদিনী প্রেমে যার মুগ্ধ আজীবন, कि मल विहारि कांत्र मत्न कति त्रन, বলো তারে, সার্থি হে, বলিতে বলিতে করেছি অবলভ্যাপণ. পরাঞ্জিব সংক্র ঝরে হিমবিন্দ ঝারা. करलात्न विक्न धाता. নিদেব করিব স্বর্গ আজি এ সমরে. ভাবি সে রদয়ময়ী স্লেছের পুতলী.

चनचारम कर्श्वरताथ-- नीव्रविना वनी :

নতুবা ভ্যঞ্জিব প্রাণ ব্যাবুলি অমরে,

ধত জন ধেবা ইচ্ছা হও অগ্রসর. সাধিতে বীরের কাজ, ভিব **বিমুখ আজ**. চক্রাকারে মহারথ, আজি সমরের পণ উদহাপন মম. খুচাব সমরে পশি দেব-চিত্তভ্রম। ভেটিৰ সমরাজনে সুর্নাথে আজি. শিঞ্জিনীর ক্রীড়া তাঁর. ীরচকে চমৎকার. চক্রাকারে শৃত্যপব, पिथित (म क्यांत ज्यों नाहि गहि चान, আভ পূর্ণ কর আশা ধর ধমুর্কাণ।" বলি সব্যসাচী বুত্রস্কুত ধরুর্ধ র,---ঘুচ্**তে ধ্রশ্র.** ফেলিল শতাঙ্গপর, কাঁপিল সূৰ্য্যস্তানন, লক্ষ্য করি বরুণ প্রথন প্রভাকবে, সেনাপতি শিথিধকে বিদ্ধি পর্শরে। বাজিল চুন্দভিগ্ননি স্বৰ্গ কোলাখলি. ভীকর প্রাণে আতঙ্ক, শতৰেও ধরু গুণি, জিল সমর শৃত্য, ঝডগতি চারি রথ ছুটিল সমুথে, ছুটে যথা প্ৰহেলিকা গাঢ় অভ্ৰমুখে। চারি কোদওের ছিলা বধির শ্রবণ এই নিবারিছে শব, মশব্দে একেবারে. নিনাদিল চারিধারে, ছুটিল কলম্বুল তারারাশি হেন . ছুটে ঘনঘটা-কোলে তভিল্লতা যেন। ছটিছে নৈখতি হ'তে ভাস্বরের রথ. উন্মত্ত অসুর দল, নাসাতে প্ৰন বয়. জন্ব সাত হয়. ক্রে না পরশে ক্ষণে মনঃশিলাতল--ক্রোধিত তপনতেজ স্থানন উজ্জ্বল ; অগ্নিকোণে বকণের শভা হয় রথ. উল্লাসে দমুজনাথ. টল মেখের মজে: ফেনরাশি নাসারস্তে, চারি কৃষ্ণ হয় ফেন্ময় কলেবর. শতচক্র বায়ুগতি খুরিছে ঘর্ষর। দ্বীনানে পাৰ্বভীস্থত-ক্ষণন ভীষণ, গাঢ় ঘনরাশি প্রায়, শাৰ কেন্তন চুড়ে, উড়িছে আকাশ যুড়ে, থেলে বেন ইন্দ্ৰধন্ম: আভা ছড়াইয়া, অখের তরলগতি তরক জিনিয়া। বায়ুকোণে প্রনের শতাকের থেলা,---াকিরণের রেথা, यांग्र कि ना यांग्र (मथा, বিশাল ললাটয়ল. ছুটিছে মানসগতি জিনিয়া তর্পে,— কুরক অন্ধিত কেতু গগন পরশে। দেখিয়া দুফুকুসুত সমর কুশলী ভীও কুরদের প্রায়, किना मात्रशिद्य. मण्डल मण्डल किर्ने, বেগে চালাইতে অখ , না হয় বেমন न्त्रका क्रवकाल (बाउँक अन्तन।

বিজলীর বেগে ধেন ঘুরিতে লাগিল, অনল ক্ৰিক্বং. ক্ষিপ্রহন্তে ক্ত্রপীড ভীম ধতু ধরি কিবা শিক্ষা অন্তত চারি বথোপরি. হানিতে লাগিল শর শিলাধারাবং. একে ধোর অস্থ্র. मखन-आकारत वाति-नश्ती (यमन, ছটিল ভডিৎগতি বিচিত্র মার্গণ. পড়িল ভাস্কর-বথ-চূড়া আচ্ছিতে, শরাঘাতে ঘন ঘন. বক্ণের তুবলম বাণেতে অস্থির, ধারাকারে রুফ-জ্বঙ্গে ছুটিল কধির। অচল বাযুর রথ-তরঞ্ উধাও, বাণ-মুখে উডে তুণ, ধহু:শৃক্ত প্রভঞ্জন নিমিষে বিকল, ছুটিতে লাগিল বেগে ভ্রমি রণস্থল। অন্তির পার্বাঙীস্থত ব্রম্বত-তেন্দে. তথান মুহূর্তপর, স্বৰ্ম আঞ্ক কেলেবৰ শ্ৰঞালে ঢাকা. স্থনে কাঁপিছে রথ - ভগ্নচু গ পাথা। চমকিত দেবগণ, ইন্দ্ৰ চমকিত, ে বি দৈতাস্ত∙বল, সুব∤সূব **ছই দলে ধ্বনি ঘন ঘন,** "সাধুক জপীড় সাধু বুত্তেব নক্তন" অধীর সেধ্বনি শুনি তরুপুলকিত, উচ্চৈ:ম্বরে অক্সাৎ, "সাধু কদ্ৰপীড" বলি নিম্বন ছাড়িল, पृत मृत्रापरम (यन क्लाम গজ्জिल। দেখিল অন্তর-মূর প্রাচীর-শিথবে. বুঞান্ত্র মহাকায়; मां जार्य विभाग रुख मृत्य व्यमातिया, আশীর্কাদ করে যেন পুজ্রে সঙ্কেতিয়া। চঞ্চল নিবিড় কেশ উড়িছে প্রনে. শ্ৰবণে বীর-কুণ্ডল. ভটিনী-বেষ্টিত কটি প্রস্ত উরস, তিন নেতে অরুণের রক্তিমাপরশ। বুত্তে হেরি দেব-যোধ পদাতিকদল বেগে শত দিকে ধায়, রণক্ষেত্রে নিকেপিয়া চর্ম প্রহরণ; পালটি ফিরিয়া নাহি করে দরশন।

नित्रथि উদ্দেশে दूख थसः (इलाहेश) রন্তপীড প্রণমিলা, কণ কান্ত ধহু: ছিলা. আবার কোদওঘাতি টানিয়া শিঞ্জিনী. চমকিলা জ্যা-নিৰ্ঘোষে অমৰ বাহিনী। অধৈর্যা অমবর্থী সরোধে তথন. আজা দিলাতিন জন, চালাইতে অফুক্ণ, ক্ত্রপীড়-রথমূথে নিজ নিজ ধান, সভকে কোদও ধবি কবিল সন্ধান। চলিল দৈত্যারি-রথ অবার্থ গতিতে. না মানি শরের গতি. নামানি বিপথ পথি. অবিচ্ছেদে ঋজু-গতি চলিল সমুথে — ছকার বিশিখ-স্রোভোবেগ ধরি বকে ! ভিন মধে ভিন দেব স্তর্থী নিপুণ. বকণ বারিধীধর. গ্রহপতি প্রভাকর, তারক-হুদন শূর পার্বতী:নন্দন--অক্তদিকে গদাহতে ভীম প্রভন্তন। কন্দ্রপীড রথগতি মন্দিভূত ক্রমে, ক্রানে কুদ্র কুদ্রতর, চকে ভ্রমে রথবর, শেষে স্তির মধ্যস্তলে নিবারি গমন . হেরি সুরুর্থিবন্দ ছাড়িল গর্জন। "মাতৈ মাতৈ" শব্দে ভীষণ নিনাদি. "হের পুত্র ধ্মুর্দ্ধর, ক ছিল দমুভাষের. ক্ষণকাল নিবার এ স্তর রথিগণে. এখনি বাহিনী সঙ্গে প্রবেশিব রণে ! গোকৰ্ণ, শালিবাহন, গাধি, ঘটোৎকচ, হে দৈত্য-রথিক-পতি, সোমধৃতি, তুণগতি, বীরেন্দ্র-পষ্ঠেতে শীঘ্র ২ও অগ্রসর"----রণক্ষেত্রে চাহি উচ্চে ডাকি দৈত্যেথব, নামিলা প্রাচীর হ'তে—এখানে ত্রিত . মিলি সুর-রথিগণ, আরম্ভিলা মহারণ, ঘেরি রুজপীড়-রথ বিষম হুস্কারি দৈতাসত শররাশি শরেতে নিবারি। কাটিলা ভাষর অগ্নি শুন্দনের চূড়া, कारिना त्रापत ठळ, তারকারি শরে বক্র. বকুণ শাণিত অন্ম হানিতে লাগিলা; সদাগতি গদা ধরি ক্রোধেতে ছুটিশা---नाम्क नाम्क अनिकिन कति हातिनिह्क, রথচক্র পাতে পাতে, ্ৰন ঘন ঘোর ঘাতে, हुन देवनां कनकारन अत्यत्र वसनी, क्षिणा निमित्य हुन युशस्त्र, न्यान !

লক্ষ্যারণক্তে, নামি মনঃশিলাভ্ সিংহ ষেন দাড়াইল কিরাত-বেষ্টিত, দীপ্ত তরবারি বেগে মন্তকে ঘূর্বিত: শত খণ্ডে খণ্ড কৈল প্রনের গদা: নিমিষে কাম্ম ক পুনঃ, व'स्त्र करत्र मिना अ শিঞ্জিনী অপুর্বা রকে খেলিতে লাগিল, ক্ষণে ক্ষণে শরকাল গগনে ছটিল। আঘাতিল প্রভাকরে বকণে আঘাতি. আচ্চাদি কুমাব অঙ্গ. শতদিকে হ'য়ে ভ পড়িতে লাগিল ঢাকি শতাঙ্গ গগন, বিমৃথি সংগ্রামে শরদক্ষ প্রভল্পন। তথন পাৰ্কতীপুদ্ৰ দেব-দেনাপতি, निवा षाञ्च धति करत्. দিগও করিয়া শ রুদ্রপীড়-শরাসন ভীষণ আঘাতে---নিমিষে বীরেন্দ্র, ধন্য নিলা অকু হাতে . নাটাৰিতে শিঞ্জিনী প্ৰচণ্ড দিবাকর কোদও ফেলিলা গ্ খণ্ড করি খুরে গুরে, বসাইলা চাপে অস্ত্র ঘোর আভানয়, নির্থি তিলাদ্ধ কালে বুত্রের তন্য ধুমদণ্ড—ধুমকেতু-আক্বতি ভীষণ---বাহিরিল থবে 🛚 ধরিলা সাপটি করে, কিরণের ক্লেথাকারে গগন বিস্তারি-ভাত্রমধ শলাকা সহস্র সারি সারি। वानट वानट वाड़ि त्य नित्क ट्रनाय দে দিকে শলাকা ধরিছে আকাশমূথে, শিলাকারে ধাতুর বর্ত্ত বাহিরিছে, यात भरक मृत्रमार्ग हि एमा छूटिए . জণকাল কভু যাহে পরশে বর্ত ল, অদুৰু কৰি উ ছিল ভিল চুৰ্কাল, চিহ্ন লাহি রহে তার দেখিতে কোথার, ভীষণ বৰ্জ্তুল হেন কোটি কোটি ধায় ৷ मछ-७७ (मर-त्रथी विमान-मछनी। প্রচণ্ড নিনাদ ঘন. ধাতুর বর্ত্ত ল পিও ঝলকে ঝলকে,--ভালে রথ ধ্যু অত্রে পলকে পলকে; ভালে প্রভাকর-রথ ক্ষার-দগ্ধ বেন ', ক্ৰমধ্যে থাৰ वक्राणत निवा यान, কোটিথতে কার্তিকের বিমান ভাঙ্গিল, (मयत्रश्य-कृत खरत्र त्रत्य एक निन्।

অচল দেখিয়া রথ দক্তককেশরী

তথন দেবেন্দ্র ইন্দ্র সাপটি কামুকি, টক্ষারি ভীষণ স্বনে, মগুসর হৈ**ল রেণে,** দিব্য চাপে বসাইলা অন্ত্র ধরশাণ. টানিলা ধহুর ছিলা করিয়া সন্ধান— ছটিল বিহাৎগতি নি:শব্দে অম্বরে, 9শাণিত ম**হাশর** পডে ধুমদও'পর, কাঁপিতে কাঁপিতে খণ্ড তথনি নিমেষে, হইল সে ধুমদণ্ড কাশতুণবেশে। উভিল শলাকাক্ল দওমৃষ্টি ছাডি. আভাদি পগন-তমু, যেন প্ৰমাণু-জ্বণু. অদৃশ্য হইল শৃক্তে কোটি পথে ছুটি ;— ক্দপ্রীছ-হাত হ'তে পড়ে দণ্ডমুঠি। निकटि आंत्रिया हेस अनव वनस्म. माध्याम निया. বুত্রস্থতে বাথানিয়া, কহিলা "সুববি, ধক্ত শরশিকা তব, (मथाहेला बीदवीया आखि अमलुव, এখন প্রস্থান কর রণস্থল ছাডি; গাম নাকর আবে. মনোগত পুরস্কার. পেয়েছ, হে বুত্রস্ত, লভ গে বিস্থান, নহে হব্দ তব্দনে নাচাহি সংগ্ৰাম।" কহিল দমুজনাথ-তন্য বাসবে---ালৈ মেখবাহন. শুনিয়াছ মম পণ, পর্গেতে থাকিতে দেব না ফিবিব ৰূপে, গীবিতে লজ্বিয়া পণ ফিরিব কেমনে গ াধা আকিঞ্চন তব, দেবেল বাসব. **ৰছি জীবন পণ,** করিয়া তা উদ্ধাপন, व्यक्ति श्वाहेत मम कीवरनत आंगा. থবিতে যন্ত্ৰপি হয় মিটাৰ পিপাদা---নিটাব পিপাদা যুদ্ধ কবি তব সনে. ^{হি} এ সমরকেতে, দেখিব প্রফল্ল-নেত্রে গা-বিষ্ণাদ তোমার কোদণ্ডে স্থরেশর, ^{পর} প**হঃ, যোধবাক্য রা**থ ধছর্দ্দর।" ∄গাইলা নানামত ইক্র মহামতি, ে ঃইতে ক্ষাস্তু. দৈত্যস্তে রণশাস্ত, ^{ছক্}যুদ্ধে অসম বিপক্ষে সংগাতিতে, শতত বিরাগ-ভাব দেবেন্দ্রের চিতে। मितिना नृतिराज यनि कहिना जरन, भवरवर्ग गःवव्रग, রুপে আরেরাছণ, ^{কর} ভবে পার যদি বেগ নিবারিতে।" শাজা দিলা সার্থিরে অক্সর্থ দিতে।

মাতলি অপুর্ব বান বোগাইল ত্রা-বৃত্ৰস্থত জ্বভগতি, ক্ষণে আরোহিলা তথি, বাছি বাছি প্রহরণ তুলিলা ভাহায়; ছুটিল অমররথ অপূর্ব্ব প্রথার। বাজিল অভুত রণ হই ধহর্দ্ধবে; কে বৰ্ণিতে পারে ভাহা, ভূবনে অতুল যাহা, মুরেক্র অমরপতি খ্যাত ত্রিভূবন---মহাধোদা ধহুদ্দর দুহুঞ্জ-নন্দন। কিবা কোদণ্ডেব গতি—শিঞ্চিনীর ক্রীডা, ফিবিছে বিমান্ত্র, রণক্ষেত্রে সমুদয়, कर्ष मृद्य-करन कारह-प्यित भवन्नदर, সহসা সংঘাত খেন আবাৰ অলৱে! কিরিছে বিপুলবেগে, না পরশে তবু, চ্ডা অঙ্গ কেহ কার. যেন রঙ্গে নিত্যকাব, নর্ত্তকের সঙ্গে ফিরে প্রমোদ মন্দিরে— না ঠেকে বাহুতে বা**হু—শবীরে শরীরে**। কণন দৈত্য-বিমান পুস্পকে লজ্মিয়া भृष्म डेठि क्लकाल, বিস্তারে বিশিশকাল. সৌদামিনী থেলে যেন নিঝ বৈ ভাঙ্গিয়া। আবার ইন্দ্রের রথ নিকটে আসিয়া, প্রন বিদারি বেগে মহা শুক্তে ধায়, দেখিয়া কপোতে দূরে, मृत्म (यन पृत्व चृत्व, তুই বাজপকী ফেরে পক সাপটিয়া, নথে পণ্ড **থণ্ড দে**হ ক্ষিবে ভিজিয়া। কথন বহু অন্তবে অচল স্গান, ছুই ব্যোমধান স্থির, শহুধরি ছই বীর, পেলায় শর-তরঙ্গ দেখিতে অন্তত। নিঃশব্দে অন্তর-দেহে অযুত্ত অনুত ঘুরম্বে মণ্ডলাকারে হুই শবখেণী, প্রান্ত দীমা অহমান, দ্বহিত হই যান, তবঙ্গ আসিছে এক ছোটে অকু ঝারা তুই কেন্দ্র-মাঝে ধেন বিত্যুতের ধারা! যুঝিল এ হেন ক্লপে সমর-নিপুণ ধহুৰ্দ্ব হুই জন, চমকিত ত্রিভ্বন, . যতক্ষণ কদ্রপীড-অন্ন না ফুবায়--নেহাবে অথুব খুব অসাডেব প্রায় ! ষে মৃহুর্তে নিঃশেষ হইল তাব তৃণ, ৰীবেন্দ্ৰ শতাঙ্গ'পরে, তথনি ইজের শবে. পড়িল সহস্ৰ শবে অৰ্জ্জবিত-ভযু, খসিল শীর্ষক শিরে করতলে ধহুঃ।

পডিল জিদিবতলে সার্থি সহিত, অচ্ছিদ্ৰ নাহিক স্থান. শুকু ছাডি ব্যোমধান. ত্রেতায় কর্ম,বপতি শবেতে অস্থির। পডিল গভার্ বথা জটার্-শরীব। উঠিল সমবক্ষেত্রে হাহাকার ধ্বনি। বকঃ ভিজাইয়া জল. व्योक्त मञ्चमत , প্ডিতে লাগিল স্থোতে, ভাসায়ে নয়ন; নীবৰ অমবদল বিষয়-ৰদন। উঠিল সে কোলাহল - ক্রন্দন-কল্লোল নেত্রযুগে ধীবে ধীবে. কনক স্থমের -শিবে শচীর শোকাশ্রধানা বহিতে লাগিল, সহস। বিবর্ণ-তমু -- চপলা কাঁপিল। জিজাসিল ইন্ধালা আতক্ষে শিহবি, কোন বামা-হ্রদিভলে, কে পড়িল বণস্থলে. আবাৰ হৃদয়নাথ ঘাতিল আমার — কার ভাগো ভান্দিল বে অথেব সংসাব ?" চপল । অশ্ট-স্ববে রুদ্রপীড নাম উচ্চাবিল অকলাৎ, হূদে ধেন ৰজাঘাত, না পশিতে সে বচন শ্রবণের মূলে— পড়িল দানব-বধু ইক্সজায়া কোলে। क्रकाडेल डेन्स्वाला - निर्माद्यय कुल, ধেন স্বপনের হাসি. হার রে সে রূপনাশি. লুকাইল নিদ্ৰাকুলে—ফুটিবে না আব ! ছিন্ন যেন শচীকোলে লাবণ্যেব হার। "কেন বে চপলা হেন নিদারণ হ'লি ? ঘচায়ে স্থ্ৰভি বাস, কেন সে দাকৰ শাস, প্রশিল এ কুসুমে ।"-বিলি হাদে তুলি ধবিলা ইন্দ্রেব রামা সে স্বেহ-পুতৃণী। এখানে সমবান্তনে প্রবেশ্বর-কাছে. য়ভিয়া খগল কব. नशरन (भाकाम थ्व, রুদুপীড-সাব্য কহিছে থেদস্বরে -গহরবের মুখে যথা গিবি-ধারা ঝবে ! "পুরাও সদয় হয়ে, হে অমবনাথ, কুমাব বাসনা আজি, , প্রভাতে সমরে সাজি, আইলা ষ্ণ্ন বীব কহিলা আমায়---এক কণা, সাবথি হে, আদেশি তোমায়. দেখিবে অন্তিম কাল ধণন আমাব, मम (मह नेव्यन्ति. শেখো বেন বণছলে, চবণে প্রশি কেই না করে হেল্ম— রাক্ষণ পিশাচে যেন না করে ভক্ষণ।

এই ঋগিচক্রবর্থ লভিম্ন যা রর্ণে হারাইয়া ভতাশনে. **मिख दह भिज्**हता দিও পদে এই মম অন্ধ-আচ্চাদন. বলো-কুদ্রপীড-সাধ হয়েছে সাধন। সে রথ উৎসব এবে, হে অমবনাথ, কবচশীৰ্শক গ আজা দেহ বীবতমূ. লয়ে জাঁর পিতপদে সমর্পণ কবি---পুৰাও বীৰেৰ সাধ, হে বীৰকেশৱি ।" বাসৰ ত্রিদশপতি সার্থি-বচনে কহিলা---"শুন রে স্তত্ত দৈত্যসূত সদত্ দেখাইলারণে আজি সময়-কৌশল. শুৰু সুৱাসুৱ তার হেরি ভূঞ্কবল। এ হেন ৰীরের শব পবিত্র জগতে . চিন্তা নাহি কর চিতে, আমি সে দিব বচিত্ এ বীবেদ্র-মতদেহ, নিজ পুস্পবথ---ইথে লয়ে পূৰ্ণ কর বীব-মনোরথ।" সার্থি সঞ্চলনেতে স্ববেক্ত-আদেশে দৈনিক সহায় করি, ত্ৰিয়া পুষ্পকোৰ্গ কদ্ৰপীড-মৃততমু অম্মানি ভূষণ, ইন্দ্রাদেশে শব সঙ্গে ফিবে দৈত্যগণ। বাজিল সমর-বাজ গন্তীর নিনাদে , চলিল পতাকাগা রথ-পার্থে সারি সারি. প্ৰাতিক মাত্ৰ অৰ পশ্চাতে চলিল,-ধীরে খীরে অমরার হারে প্রবেশিল।

ত্রয়োবিংশ সর্গ

পুত্রে আখাসিরা বৃত্র ফিরিয়া আলবে,
করিলা সমর-সজ্জা রণক্ষেত্রে এরং
প্রবেশিতে পুত্রের সহারে। অজ্ঞা দিন
বোধবৃদ্দে সমরে সাজিতে অচিরাথ।
সহস্র কোদওধর শত যুদ্ধ যারা
যুদ্ধি দেবরথি সনে মথি সুরদল;
লভিলা বিপুল বশ: অতুল উৎসাহে
সাজিতে লাগিলা দৈত্য আদেশে তথনি
কিরিলা সভামওপে বৃত্র মহামুর।
মহাপাত্র স্থানতে চাহিয়া ধীরভাবে
কহিতে লাগিল। বৃত্র;—"কি কৌশল ধ্
যুধ্বের দানবগণ—রক্ষিবে নগরী ?
কে বৃক্ষিবে পূর্বহার কেবা দে দক্ষিণে

থাকিবে খদৰ সঙ্গে ? কোন্ সেনাপতি পশ্চিম-ভোরণ রক্ষা করিবে বিপদে গ কেবা সে উত্তর হারে প্রহরী নিয়ত ?" হেনকালে ঘোরতর ক্রন্দন-আরাব উঠিলা বিমানমার্গে, গুরু সভাজন ত্ৰনি সে ক্ৰন্দনম্বর—ন্তব্ধ সে নিনাদে ইক্রারি দমুৰেশ্ব চাহি অমাত্যেরে, জিজ্ঞাসিলা "কোন বীর আবাব পডিলা শ্ৰাঘাতে ? কহ হে সচিব, সহ্সা এ কেন হাহাকার গ কেন হেন কোলাহল গ শুৰুক্ণে. হে স্থমিত্র, কভিণাজনম দানবের কুলে পুত্র বীর কুদুপীত। ধল রণশিক্ষাতার—-ধক্তবাত্তল। সকল সাধন এত দিনে। ভুজ-ৰলে मगर व्यमद्रोमण निवादिला এका: জিনিলা দমরে বজি তর্নিবার দেব; विनिन। कुरवर जीम रनी : रिमुश्रिना ক্ষে একাদশ—বলে বৌদুভেজ যাব . ইক্সের নন্দনে খেদাইলা ফেক ছেন : নিঃশক্ত করিলা পুরী , প্রাচীর বাহিবে মণিছে সমরে এবে অমর-বাহিনী ঘুৰত বিশিখজালো: সচকে দেখিতু---েম জুজীয় সাহস, সমর-নিপ্**ত**া চাবি মহারথী সঙ্গে গুঝিছে একাকী। য়ানি মন্ত্রি, জানি ভার বীর্ণ্য-রণোল্লাস ^{পারে} সে যুঝিতে একা প্রচণ্ড ভাগরে भैमव**नी व्य** ङक्ष**रन, किश्वां निक्किंध**रव, কিংবা মহাপাশধারী বারিকুলনাথে , কিন্ধ মুরপতি ইন্দ্রে, কি জানি উৎসাহে, একাকী ভেটরে পাছে ? মন্ত্রি, সত্তর ^{আজা} দেহ র্থিবলে হইতে বাহিব।" হেনকালে ক্রুপীড-সার্থি বহিলক গথিলাপুজ্পক ব্থ আক্সনের মাঝে! ^{ন্ত্}ম্পে স্থপতাকিবৃন্দ দাড়াইল ; ^{মুচ্মন} রণ-বাছা বাজিল গন্তীরে: ^{শিহ্}রিণ সভা**জন অ**মুর-মণ্ডলী; ^{কাণিল} বুত্তের বক্ষঃস্থল ঘন বেগে। াহ্লিক সঞ্জ আঁথি রথ হ'তে নানি, मिरितत्र त्रमञ्जा नद्य शीरत शीरत ^{গ্র}েশিল সভাতলে। হেঁটমূথে আসি

রাথিলা দমুজবাজ-চরণের তলে. মুদিবা কবচ, আভাময় মুমেগলা অনি—কোষ—নিসদ—কাশ্মক—চন্দ্ৰহাস বাথিলা, হায়, ফেলি অঞ্চধারা, শার্ক শোভিত সারসপুচ্ছ-ওচ্ছে মনোচব। দৈত্যরাজে নমি, দাঁডাইলা যোডহল্ডে. কহিলাকাঁদিয়া -- "প্রভু, কি আর কহিব ?" ব্রাম্ব, প্রশেকে অধীর সদরে, অশাবিদ্নেত্কাণে সহসা ঝবিল. কহিতে লাগিলা হতে -- হায়, বাদ্যন বনবাজি-মাঝে মথা--- "হবে না বলিতে বার্ত্তা তোর, রে বহিলক, জেনেছি সকলি, দৈতাকুলোক্ষনেরবি গেছে অন্তাচলে।" দূরে নিকেপিলা শূল -- এখন নিফল। নীরবে বসিলামহাত্রে। কণ্পবে তৃশিয়া শইলা বংগ পুত্ৰ-ভক্তজন . চাপিয়া হৃদয়ে ধরি, পুত্রে পাইয়া যেন আলিঙ্গন দিলা ভাষ করিয়া চুম্বন। কবচ, শীয়ক, নেজনীরে ভিঞ্জাইয়া। উচ্ছাদিল সভাস্থলে শোকেব নিখাস। ম্থামূচ মৃচ স্থারে সাগর-ভিল্লোন উচ্ছাদে বেলায় পড়ি, নিদ্ধুগর্ভে যবে ডোবে কোন নীরককা, মুগুগানে তথা উচ্ছাসিল সভাগন কন্দ্ৰপীড-শোকে। শোকাকল বহিনক ওখন খেদস্ববে কহিলা .-- 'হে দৈত্রাজ, হে বারমণ্ডলী, হে মিত্র অমাত্যগণ, না দেখিলা, হার, কি ৰীর্ম দেখাইলা অভিনে ক্যার ৷ সূত মামি তাঁব, কত যুদ্ধে নির্থিত, সে বীরের বীরদর্প—কিন্ধ কভ কেন অদভ্ত অসুকেপ চকে না হোবিজ না ভানিত্ব এ প্রবলে। বীরচভামনি মৃত্যুকালে দেখাইল। বারত্ত্বে শেষ। হত আমি, কি বর্ণিব, কি জানি বর্ণিতে. সে কামু ক-ক্রীডাভন্নী--সে ভুজ্চালন विजनी-उत्रम-मोगा जिनि हमएकात ! অন হেরি দেবকুল স্থবরথিগণ, স্থ্য, বায়ু, বৰুণ, পাৰ্কতীপুত্ৰ ধীর, অস্থির আক্ল বাণে নারিলা ভিষ্টিভে,—

डांब्रिक्टन अटकवांट्य युविमा कुमात्र ।

কি বলিব, দছজেল্ল চক্ষে না হেরিলা! না ভ্ৰিলা সে বিশ্বয়-প্লাবিত উল্লাস সাধ্বদি ঘনধ্বনি কত শতবার উঠিব সমরক্ষেত্রে কুমারে বাধানি। বাসৰ আপনি—হায়, শৱে হার বীর গতজীব—বিশ্বিত অন্তত বীর্য্য হেরি. দিশা নিজ পুপার্থ, ত্রিভূবনে খ্যাত, বহিতে বীরেন্দ্র-সজ্জা, অর্পিতে ও পদে।" ভনিতে ভনিতে বৃত্র করিত নাসিকা. বিক্ষারিত বক্ষঃস্থলে দাপটে সাপটি ভীষণ ভৈরব শূল, কহিনা উচ্চেতে ,---"সাজ. রে দানবরুন--সংসারের রূণে।" হেনকালে তথা শিশুহারা কেশ্রিণী वम च्यान्नानिश जत्म बंश निविधारय. ষাইশা ঐদ্রিলা বামা—আললিভ কেশ বিশৃঞ্ল বেশ-ভ্ৰা স্থল নিশাস কম্পিত নাসিকারন্ত্রে, অঙ্কিত কপোলে শুদ্ধ অশ্রু-মুল্যারা, কহিলা দানবী বোরখরে—উন্তর করিণী বেন জীমা,— "হে দৈত্যকুলপতি, দৈত্যকল নিৰ্কংশ জানিরা এখনো স্থির আনছে দক্ষ হিরা? শৌকে অবসর তত্ত হতাশের প্রায় ? ধিক হে ভোমারে, ব্যাধ না বধি এখন নির্বিছ শক্ত নীড, উচ্চিন্ন অট্রী 🔻 হের. দৈতাপতি. হের তপ্ত অঞ্*ৰ*ল দহিছে এ গওতল। আবো উঞ্জৱ শোকদাহে দহে জদি। তুমি পিতা হয়ে এখনো অসাড় দেহ না সরে চরণ ? কি কব, হে দৈত্যনাথ, না শিখিলা কভ मः शास्त्रव क्षकर्य क्रेक्टिमा काश्चिती। নহিলে সে দেখাতাম কার সাধা হেন ঐক্তিলার পুত্রে বধি ডিটে অভ্রেবন ? জালাভাম ঘোর শিখা চিত্ত দতে যাতে. **নেই ভন্তরের** চিত্তে—জারা-চিত্তে তার জালাভাম প্রশোক চিতা ভয়ত্তর... জানিত সে দানবীর প্রতিহিংসা কিবা।" সহসাপড়িল দৃষ্টি দহকবামার ক্তুপীড়-রণসা**লে** ; হেরি পুল্র-সাল

क्षमध्य त्नारकत निक्क वहिल आवात ! বহিল শোকাশ্রধারা গগু ভিজাইয়া।

"হাপত্র। হারুদ্রপীড।" বলি উচ্চৈঃস্বরে লইলা দমুজবামা যতনে তুলিয়া পুত্রের সমর-সজ্জা—দেখিলা শীর্ষকে সেই মাঞ্লিক অর্থা রয়েছে তেম্ভি। জালিল বিষম শোক সে আংগা হেরিয়া. कैं। फिल मारवित ल्यांग । श्रेष रत्न । श्रीवारण পশিল অনলদাহ যেন অক্সাৎ! উচ্চৈ: স্বরে কোলে করি পুল্র-রণসাজ, "হাবীবেজ-চড়ামণি" বলিয়াউচছাসি. कांक्रिमा मारून बाटम ঐक्रिमा मानवी। "কে হরিল ? কারে দিলে, অহে দৈতারাঞ্জ আমার অমল্য নিধি ? জন্য-রতন আনি দেহ এই দতে তনরে আমার দৈতানাথ, আনি দেহ ক্তুপীতে মম। এমনি কবিয়া বংক ধবিব ভাহায়. এমনি কবিয়া ভিঞাইব অঞ্চনীবে সেই চাক চন্দ্রান্য ৷ দৈত্যকলমণি, দেখিব হে একৰার। জীবন-পীগ্রে জুড়াব ভাপিত দেহ !-- এ জগৎমাঝে 'মা' বলিতে ঐদ্রিলার কেবা আছে আর ধরাসনে নহ, বংস জননীর কোলে, বলিৰ যথন ভার মন্তক চহিয়া. নিদ্রা তাজি তথনি উঠিবে প্রম্ম--দৈত্যপতি, এনে দাও সেধন আমার।"

কহিলা দল্লপতি—"হে দৈতামহিষি. জানি সে কঠোর বিধি করেছে নির্মান ব্রত্তের হাদের আশা কঠার-আঘাতে। এ শোক-চিতার বহিন জলিবে হৃদয়ে. হা ঐ ক্রিলে, যক দিন ভকানছে দেহ ৷ কি হবে বিলাপে এবে ? হা রে অভাগিনি বিলাপের বছদিন পাইবে পশ্চাৎ আংকেপের এ নহে সময়, আংগে ছাতি প্রবাতী ইন্দের সদয় এ তিশলে. পরে বিলাপিব দোহে। হের যুদ্ধসাতে সসজ্জ স্থার থিবন্দ--- সমর-প্রস্থানে গমন-উত্তত আমি, বিলাপি এখন চিত্তের উৎসাহ-বেগ না হর, মহিৰি !"

मानत्वत्र एड: पूर्व वहरम अखिमा পাইলা স্বভাব পুন:, অশ্রধারা মৃছি কহিলা---"দত্ত্বনাথ, প্রতিপ্রত হও--- পুত্রবাতি-পুত্রে বধি দিবে প্রতিশোধ—
তবে সে হৃদয়-জালা ঘূচিবে কিঞিৎ ,
তবে সে বৃথিব বীর শ্লধারী তুমি।
তবে সে জগৎমাঝে এ মূধ জাবার
দেধার দহ্জ-কুল-মহিলার কাছে।"

কহিলা দম্বজেখর উত্তরি বামার .—
"পুরাইব মনোবালা, মহিলি, তোমার--এ শূল আঘাতে পারি যদি পুরাইতে।"

শপরি যদি প্রাইতে গ্—কি কহিলা হার"
কহিলা-ভূজস্বাদে ঐক্সিলা দাননী,—
"হন্দ্র-শোণিত তব গেছে কি শুকারে,
প্রতিহিংসা নাহি তার গু নহ কি সে ভূমি—
দেই মহাত্তর বুত্র দেব-অসকাবী গ্
এখন(ও) তৃতীর অংশ নহিল অতীত
বন্ধার দিবসমানে, তৈরব ত্রিশ্ল
এখন(ও) ধবিছ হল্তে তেমতি প্রতাপি,
'পারি যদি প্রাইতে'— বলিলে গৈতোশ গ'

বুঝাইলা তুনাস্থর সাভ্নিরা ভায় প্রভিজ্ঞা করিয়া পুন: মণ্ডক পর্যাশ, নাশিতে ইক্রের স্থানে।—স্থিরচিত্তে তবে ধীরগতি ঐক্রিলা ফিরিলা ইন্দ্রালবে।

তথৰ দহলপতি স্থমিতে সমোধি কহিতে লাগিলা পুত্ৰ-**অন্ড্যে**ষ্টি ধেরূপে সমাধা হইবে অংকা। হেনকালে সেথা প্রবেশিল বীরভদ্র মহাকাল-রত। সম্ভ্রমে দমুজপতি প্রণতি করিয়া সম্ভাষিলা শিবদুতে। কহিলা প্রথমে-"বৃত্র, ভব পুত্র-তমু সুমের-শিখরে ণ্টতে বাসনা মন। অভ্যেষ্টি-সংকার সে বীরের করিবেন ইন্দ্রাণী আপনি। ইন্বাল্-ভতুসজে অনস্ত-মিলনে মিলায়ে সে বীর ততু সুমেক-অকৈতে রাথিবেন স্থরেখবী :--হে দমুজনাথ, পতিশোকে পরাণ তাকেছে পতিপ্রাণা हेम्वाला। मानरवस, लुकाहेरक, हाइ, সে হুব্যা-রাশি আজি হুরর্মা-কোলে! निरंश्य मा कत्र, रेम्छामाथ, श्रुलमाम প্রতিষ্ঠিত করিতে ত্রিদিবে চিরদিন।" নীরবিলা শিবদত এতেক কহিয়া। कहिना मञ्जनाथ-"अकारम्ह शम,

দে চাক কোমললতা ইন্বালা মম;
হের মন্ত্রি বিধাতার বিধি আদভ্ত—
দৈত্যকুল-রবি দনে দে কুল-পক্ষ
ভূবিল হে এককালে। ছাড়িলা যথন
কন্দ্রপীড় বৃত্রাহেরে, থাকে কি দে আর দৈত্য-কুল-লন্ধী তার ঘরে ? জানিলাম,
এত দিনে অস্তরকলেব অবসান!
হা মাত: ফ্লালে। তব অন্তিমকালেতে
চক্ষে না দেখিছ তোমা! দেবিলে মা কত
তনমার সেহে বৃত্রে – বৃত্র জীবমানে
মরিলে শক্রব কোলে ? মৃত্যুব সময়ে
না পাইলে অবাধ্যবে পজনে দেখিতে!
হা বিধাতঃ, লীলা তব কে বৃস্বিতে পারে ?"

আক্ষেপি একপে বুলু নিখাসি গভীর, কহিলা এইতে তমু মহেশেব দুভে. বীরভদ্রে প্রণমিয়া কবিলা বিদায়। চাহি পরে মহাস্ত্রব গৈনিক বুন্দেরে সাজিতে আদেশ দিলা— আদেশিলা শ্ব সাজিতে দহুজকুলে। কি বুদ্ধ তক্প हिनल क्लब्रक्षतीय (य यात्र व्यालस्त्र, ঘোষিণ অমরমাঝে সুর্ব্যাদ্যে বণ । হায় রে সে নিশি যেন গাচতর কেশে দেখা দিলা অমরায় ৷ প্রতি গ্রেহ পথে মৃত্র করণ সর। আলিয়ে জালয়ে গৃহীর হৃদ্যোচ্ছাস মধ্ব গভীর, পিতাপুল্লে, মাতাস্থতে, ভগিনী-লাতায় কত ধীর আলাপন, মধুর সভাষ, বিনয়, ককণা, ক্লেহ, মমতা-পুরিত। বনিভার স্থললিত কতই বিলাপ ! পতির আখাদ প্রেম্ময় মোইকর ! কাদিতে কাদিতে পুল্লে সাজাইছে মাতা চন্বি কতথার স্নেছে পুল্লের ললাট। মছি নেজনীর বীর অলীক আখাদি বঝাইছে কত তায়। জননীয় প্রাণ ভলে কি ছলনে, হায়া আরো গাটতর অস্তবে ছটিছে বেগ প্রাণে আঘাতি! কত শতবার থুলি তহুত্র কঠিন তনয়ে ধরিছে বুকে! কোন বা আলয়ে त्मानत्त्रत्रं शतिष्ठ्रम वै। धिर्ड वै। धिर्ड ভগিনী কাঁদিছে শোকাবুল অর্জভয়,

च्यक्ति नियान, नीद-धाता पत पत নয়ন-যগলে। পতি-আছ্যা শিরে ধবি. কোন বার্মণী বাঙ্গে পতি-কটিবন্ধ। কোন বা রমণী ধরে তলি শিশু-কর. কাদিতে কাদিতে জড়াইছে পতিকণ্ঠ সে কোমল করে। হায়। কেহ বাধবিছে পতির অধরদেশে শিশুর অধর ৷ সুমধর হাদি মথে থেলিছে বালক কিরীটের গুড় তলি—আনন্দে তুলায়ে আংশতে মিশারে হাসি হেরিছে রমণী. সঞ্জল-নয়ন মবি এবে আমবিচল। চাতে কোন সাম্যিনী স্থামীর বদনে কবে তুলি খড়গ-কোষ, কোন বা বালং পিতার কবচ অঙ্গে, হাসিতে হাসিতে चामिए क्रममी-काएक-कामिएक सममी। পুলে গাজাইছে পিতা, পিতাৰ পুঠেতে কৌতহলে পূৰ্ব বাহিছে তন্য! ব্যাইছে বধুক্লে বৃদ্ধ পুৰব্যা । মায়ে সাভনিছে স্থা, জননী কলায় ' শুকাইছে কত ফল প্রথল আনন. গত নিশি প্রকৃটিত অববিক সম, চিল প্ৰেদটিত ধাহা ৷ হায়, কত আঁথি তু:থেতে মুদিছে আজি ৷ গত বিভাবগী ষে বদন দেখিবাবে হৃদয় উৎস্ক, আজি নিশি নাহি চাহে নির্থিতে ভার ? যে হৃদয়-প্রশনে শীতল প্রাণ দিঞ্চিত পীয়ৰ ধারা, তপ্ত তাহা আজি--প্রশ্বে দগ্ধ জ্বিত্র। শ্রুতিমূরে যে বচন কালি সুমধর, আজি তাহে বিদ্ধিছে কণ্টক। কত সেহে আশা, আহা, কন্ত চিন্তা,ভয়, প্রতিদিন দানবের ঘরে একত তর্গ তলি দিবিছে সে নিশি. না হয় বৰ্ণন হায়, সে ফদি প্লাবন । পুডিছে স্বার বক, কোলে করি কেই হেরিছে শিশুর মুখ – চুম্বনে বিহাল। কেহ প্রিয়তমা-আশ্রু মৃদ্ধিছে বতনে জনম্বে চাপিয়া স্বেধ ! কেই বা কাঁদিছে ! ভ্রাতার ভ্রাতার, আহা, সে কাল-নিশাতে বিদায় কতই মত। স্থায় স্থায় শেষ প্রণয়ের দেখা কতই স্নেহেতে!

আলিঙ্গন পিতা-পুত্রে-জননী আলিদ্, সে তামদী অমরায় নির্থিলা কত!

চতুর্বিংশ সর্গ

অমরায় বিভাবরী হইল প্রভাত. খডগা, চৰ্মা, বৰ্মা, তৃণ ভারল কিরণে প্রদীপ্র হইল দশ দিকে। সিদ্ধ যেম সে ঘোর সমরভমি—অকল গভীবা দেব-দৈত্য-চমদল উন্মিকল প্রায় ভাসিতে কিরণ মাথি সে রণ-সাগরে ! দে কিবণে প্রভাতিল ভীম শোভাষয় অপেকাঅমর-বাহ বাসব-রচিত। বচ দেশ যডিয়াছে বাহিনীবিভাস— অস্তাচল, হেমকুট, ভায়কুটগিরি, পর্বত-পারদ গর্ভ প্রবাদ-ভ্ধর, মন:শিলা শৈলকল আদি আচ্চাদিয়া মণ্ডল-ভিতরে দৈর-মণ্ডল স্থাপিত---অপের্বা প্রাকৃতি। মধ্যস্থলে তাব যক্ষপতি আদি স্থবরথী—শরাহত (मवर्गन: (हो मिटक खवटक खूबटमना, রক্ষিতে সেনানীবৃদ বণে স্থনিপুণ। বাচ নির্থিয়া ইন্দ্র অকণ-উদ্ধে দেৱ-সেনাপতিগণে করিলা আহ্বান আপনার পটগুছে। বাসব-আনেশে আ(ই)লা জলকুলপতি বকুণ স্থীর বন্ধস্তবাণে বিদ্ধ বাম উক্দেশ পাশে রাখি দেহভার যঞ্জের গতিতে আইলাইজের পার্খে। ত্র্যামহাবলী তীকু শরে দগ্ধতমু, আইলা সত্তর ট্রন্তু-পটগুহে বিদ্যাম-ভূজ ধবি। আচলালে অগ্নিদেব অস্থির দহনে; क्या(रे)मा (मर व्यञ्जन हक्षन-গভিতে, অম (ই)লাদওধর ধম করাল-মুরতি; অয়স্ত বাসৰ পুত্ৰ দেব হড়ানন। ষ্পাস্থানে যে যাহার কৈলা অধিষ্ঠান। প্রপতি চাহি সুয়ো, অনলে, বরুণে, ক্ৰিলেন. — "হে অমৰ মহার্থিগণ, চিত্তমম আবকুলিত হেরি তোমা সবে

হেন শরদক্ষ-তম্ব — না জানি এরপে,

৬গতি করিলা সেবে বৃত্তের তনয়।"
জিজ্ঞাদিলা—"কোথা এবে হক্ষ ধনপতি;
না আইলা কেন তুই অধিনীকুমার,
কোথা একাদশ ক্রন্ত, অন্ধ্র বীর আর ১"

উত্তরিলা বারীশ বরুণ পুরন্দরে. "আমাসবাহ'তে শ্রদ্ধ গুরুত্র দে সকলে, হে সুরেন্দ্র, গতিশক্তিংীন কোন দেব, মুৰ্চ্চাগত কেছ বুত্ৰস্তত শ্রাঘাতে।" শুনি ইন্দ্র আক্ষেপিলা কত। কহিলা **অমর**পতি—"হে সেনানীগণ, হত এবে সে **অসুব ভী**ম গ্রুদ্ধর। কিছ ছট বুত্রাস্থর জীবিত এখন(এ). দৈতাপতি সমরে জর্কার। যার রণে অমবা-বঞ্চিত দেবগণা সে ছবাত্মা সাগ্রামে পশিবে **অ**চিরাৎ , কি উপায়ে নিবারিবে ভার এ সমবে ? কহ শুনি। দ্ধীচির অস্থিবলে, পিনাকি-আদেশে, পেয়েছি অব্যর্থ অস্ত্র— বজ্র প্রহবণ কিন্ধ দে অস্তর ইথে না হতে নিপাত ना श्टेटल अक्षामिया (भव ! कि जेशारम. কহু, দৈত্য তথ্য সমরে নিবারিবে গ বলি কোষ হ'তে তুলি ধরিলা দজোলি দৃতকরে পুরন্দর। ধক ধক জালা গ্লিতে লাগিল অস্ত্র করি দীপ্রিময় নে দেব-পটমগুপ--অনস্ত শিবির: ^{हे} बार्ट्स **क**श्चित्र स्वयक्त, स्विथि हेस ভীম বজ্ঞ রাখিলা আবার বজ্ঞাধারে।

তীবণ দজোলি-তেজ হেরি বৈখানর প্রান্থাকে অধীর, অলে ফুলিস ছুটিল, কহিলা অসহ কর্চবেদনা উপেকি, "ম্মরেক্স । শুন কহি মম অভিলাব, তিলার্ধ নিমের আর বিলম্ব না কর, অনুরে সংহার বজে, অনুষ্ট-লিখন কে বলে খণ্ডিত নহে, স্বোগে সকলি "ভকল। না থাকিলে এ বেদনা মম, এখনি, সুরেশ, ব্ধিতাম সুত্রাসুরে এ অস্থ-আবাতে।" শাক্ত কৈলা সুবপতি উগ হতাশনে বুঝাইয়া নানামত। তথ্য আছ্ক-তাশ্বত এহকুলপতি দেব

তীবতর খবে উচ্চে নিনাদি কহিলা,—

"হে হ্রেক্সে, ভয় যদি দভোদি-নিকেশে,

দেহ তবে মম করে, দেখিবে এথনি

থও-মূও হয় কি না ত্বল্ল অফুর !

প্রচিও স্থেটার তেজে বজ্জের সহায়ে

ল্টিবে অফুর-মূও—বিত্তীর্ণ মাণানে
শাল কন্ত বড্ডে যথা! না জানি, ফ্রেল,

কি হেতু অসাধা তব হেন বিপুনাশে,
আগনি অকত দেহ! জরজর-তল

দেবকুণ অস্থায়তে! কি জানিবে কহ,

ছিলে সুকাইরা দ্বে ক্মের-গ্লবে।

দর্যোর বচনে জুদ্ধ জলদলপতি
কহিলা—"হা ধিক, ধিক্ দেব দিবাকব,
দেবেক্সে এ ভাষা। সর্ব্বভাগৌ সুরপতি
দেবতার হিতে, লজ্জা, ঘণা পরিহবি
বিশ্ববারে অমিলেন ভিক্তকর বেশে,
ভাঁরে এ পক্ষ-বাকা । হে পাছবিনানা,
অন্ধ কি হইলা কেশে। কহু সে কাহাব
নহে শ্রদ্ধ দেহ। একাকী সমবে
য্মিলা কি দৈতাপতে । কি সাহসে হেন
শহরার, হে সবিত:—ভীক্ অপবাদ
দিলা ইন্দ্রে এ স্বমগুলে । লাভাবি নে ভেমনি।"
এত কহি নীরবিলা সিদ্ধুক্পতি।

সংবেজ তথন শান্ত কৰি বাবিনাথে,
কছিল। সুধীবভাবে গন্তীর বচন ,—
"হে স্থ্য, অসুক্লনাশে অসাধ আমার—
দেব-ছৃ:খে নহি ছ:খী--নহি হে বাখিত
শ্ববাথা বিহনে শ্বীবে ? অকারণ
অরাতি নাশিতে করি হেলা ?—হে নিনেশ,
সহস্রাংগু, ঘুচাও সে চিত্তল্ম তব,
লহ এ সংহাব অন্ধ, বিনাশ অসুবে।"

এত কহি স্থা-ক্ষরে রাখিলা দভোলি।
কাগ্রহে ভাষর হেরি সে ভীম আগুদ,
তুলিতে কবিলা ষত্র হুই ভূষে ধরি;
প্রকাশিলা যত শক্তি ভূজণতে জীর;
তুলিতে নাবিলা বজ্—লক্ষামত মুখে
শীভাইলা দুরে গিয়া দেব-ক্ষরালে।

হাদিলা অমরবুল উচ্চ অট্ট্রাসে; হেরি স্থ্য-পরাভব ব্যক্তরে কড

বিজপিলা কত জন কৃটভিরস্কারে। তথন বাসব শীঘ্ৰ পীয়ৰ-তুলনা বচনে শীতল করি চিত্ত সবাকার; নিবারিলা সর্বজনে—"হে দেবমণ্ডলী" कहिला विभक्षात्र-"गृह-विमश्वाम সদা অনর্থের হেতু ত্রিজগতীমাঝে; विপाल कात मतामिलन(ह) मण्या । কে না পারে স্থাভাবে সম্পদ্ভৃঞ্জিতে গু দেবতার কত হীন মানবেব জাতি. তাদের(ও) সম্প্রীতি কত সোদরে সোদরে. কতই স্থাতা স্বেচ আত্মীয়-স্ক্ৰনে সৌভাগ্য সে যত দিন। সৌভাগ্য ফুবালে স্থার সংসার ছার—শাদ্দি-কলহ আগ্রীয়-কলহে গৃহে ! ভ্রাতৃত্ব উচ্ছেদ। সে প্রবাদ দেবকুলে করিতে প্রবল চাহ কি অমরগণ ? আ গু-বিম্মবণ বিপদে এতই দেবে, ওছে দেৰগণ ।" এতেক বলিয়াইজ আবার নীরব. ভাবিতে লাগিলা চিত্তে কিরূপে অসুরে ভেটিবে সমরে পশি। পার্কাতীনকর কার্ট্টিকের সেনাপতি সমর-কুশল কহিলা গুদ্ধের প্রথা বৃাহ্মধ্যে থাকি, বঞ্চিতে স্বপক্ষবল: বক্ণ বিচারি तरन कांखि कनकांन मिना उपरम्भ ; অকুদেবগণ মত দিলা যে যাহার। ভাবিত-অমর-পতি অমর-শিবিরে. হেনকালে মহাশকে বিদাবি বেগেতে আন(ই)লাশিব-পারিষদ ভীম মহাকাল , স্থাধিলা বাসব শিৰদুতে শিবশিবা-বারতা, কৈলাদ-স্থদংবাদ। শিব্ধাবী নন্দী ইন্দ্রে বনিয়া তথন কহিলা "হে---चायत्त्रस. উমেশগেহিনী পাঠাইলা, শচী-দুঃথ হ্রিতে সতত চিস্থা তাঁর : পাঠাইলা, হে বাসব, জানাতে ভোমায় বুত্তের খণ্ডিল ভাগ্য--অকালে অসুর পভিবে দজোলি-ঘাতে। হে শচীবল্লভ. विवय ना कत्र आत्र. वर्ष्ट्य विमातिश বকঃ চুর্ণ কর তার , ভৈরব আপনি কপিত এদ্রিলা-দন্তে কৈলা এ বিধান।" थे विन निवन् कित्रिना देवनारम.

ধুমকেতৃ-বেগে গতি উৰুদি অখর। মহানন্দে কোলাহল দেববুলমাঝে। ক্ষণকালে জিভুবনে খোবিল সংবাদ -ইন্তব্রাহ্ররে রণ ব্রুরে সংহার বজা**ঘাতে। বিহ্বলিত কৌতৃক-হর**ষে চতুর্দশ লোকবাদী সিন্ধ-ব্যোমচর ছুটিল বিমানমার্গে। আহিল বক্ষুল, বিভাধর, অপার, কিন্নরবর্গ ষত ; আইল কৰ্ব, রগণ, গন্ধৰ্ব, পিশাচ; আইল সিদ্ধ, নাগকুল, প্রেত, পিতৃগণ, দেবর্ষি, মহর্ষি, যতি, শুচি-ম্পান্থা যত : আইল ব্ৰন্ধাণ্ডবাদী প্ৰাণী শৃক্তদেশে। আকাশের দ্রপ্রান্তে শৃক্তযানে চাপি বহিলা সকলে ব্যগ্র। সে রণ দেখিতে খুলিল ব্রন্ধাণ্ডদার অম্বর সাজায়ে: নানা বৰ্ণ হেম, মণি, প্ৰবাল, অয়দ, রচিত বিচিত্র কত গবাক্ষ, ভোরণ, কত দিব্য বাতায়ন খুলে চন্দ্রলোকে, ছডায়ে বিমানপথে চল্রলোক-শোভা। স্থ্যলোকে কত কোটি বাতামন, আহা, থুলিল অতলমূর্ত্তি লোমহর্ষকর ক্ষম্ভত সৌন্দর্য্য-রশ্মি প্রকাশি গগনে। প্রতি গ্রহে এইরূপে নক্ষত্তে নক্ষত্তে থুলিল কতই হার, গবাক্ষ, ভোষণ, বিপুল অনন্তকোলে অনন্ত শোভায়. প্রতিবাভায়ন-পথে গ্রাক্ষের ছারে আপাণিবৃন্দ অগণন; শৃষ্ঠ যেন আপাঞ্জি প্রাণিময়-পরিপূর্ণ জীবন প্রবাহে। সে শোভা হেরিতে রমা শ্রীপতি সহিত ু খুলিলা বৈকুঠছার। খুলে ত্রন্সলোক অতুল তোরণ, আজি ব্রদ্গলোকবাদী। থুলে বার মহাকাল কৈলাস ভ্বনে ! অতুল সুরভি-গন্ধে পুরিল জগৎ! বিহ্বলিড চৌদ্দলোকে প্রাণীর মণ্ডল সে সৌরভ দ্রাণ লভি ! আকুলিত প্রাণ দেখিতে লাগিল শুক্তে বৈকুণ্ঠ-ভূবন, অতুল ব্ৰহ্মার পুরী, বিশাল কৈলাস, মোহে অচেত্ৰন বেন ভূলি কণকাল ইন্দ্র, বুতাস্থর, স্বর্গ, সমর প্রাস্ণ্য **(ह्था हेक बुाह-शास व्य**दिनि ज्यन

নিবখিলা-একে একে দেবর্থিগণে সমরে আমাহত যত. কিংবা সে মুর্ক্তিত। ধনেশ্ব কুবের অধিনীস্তত-দরে, সাস্ত্রনিলা মিষ্টস্বরে। ক্লু একাদশে শ্বিষ-করি, স্নিগ্ধ করি অব্যাদেবে ধত আহত সমরক্ষেত্রে, কিরিলা বাস্ব কবিবাহ প্রদক্ষিণ। আমাসি বহির্দেশে আজা দিলা মাতলিরে আনিতে পুপাক. খাজা দিলা নিজ নিজ বথ সাজাইতে. অ**স্বত প্র**-রথী। শিবিব য**ডিয়া** সাগ্র-কল্লোলধ্বনি উঠিল আকাশে। সাঞ্জাইলা অকণ সুধোর প্রবিমান একচক্র **র**থবব অন্তত দেখিতে। গতি মনোহর অতি, প্রদীপ্ত চড়াতে স্থ স্বৰ্ণ-ক্স শোভা। নিয়োজিলাতায় স্থ খেততব**ল**ম ব্যাসম বিশাল. জিনি তথ্যফেনবাশি শুভ্ৰ তমুক্ছ. ক্ষণে পাবে ব্রহ্মাণ্ড ঘুরিতে। বৈনতেয় উঠিশীঘ বসিলা ভালনে। সে আনদেশে খনল-সার্থির্থ সাজাইলাভেড: ধলোহিত বিমান প্রচণ্ড শিখাময়, বজনবৰ্ছই অংখ, নাসাবজে খাসে প্ৰাদে ছটিছে ধুম ৷ আন বোগাইলা াফ হয় ক্লফবর্ণ শ্মন-স্থানান কৃতাত-সার্থিভীমা শহাবির্চিত শত-চক্র শভাঙ্গ স্থল্ব বঙ্গুণের, বেগে যার রসাতল সদা বেগময়. উত্তাল ভরক্ষপূর্ণ দিন্দুর শ্বীর, মবে বারিনাথ রক্তে, বাবিধি-বিহারে, ণ্মেণ বারুণী সজে—সাজাইলা সূত। ামাব-সার্থি জ্বন্ধতি সাজাইল। শত চড় শিথিধকজ স্থানের বিমান . ক্ৰম-বাহন বায়-বিমান সাজিল. শাজিল শতাঙ্গ অক্ত যত অমরের। হেনকালে মাতলি সার্থি কৃতাঞ্জলি নিবেদিলা পুরন্ধরে—"পুষ্পক-বিমান দিলা দেব. রুদ্রপীড-শব বহিবাবে, ^{কি} বাহনে স্তররাজ পশিবেন রণে ১" চিস্তি ক্ষণে দেবেন্দ্র কছিলা আনিবারে ^{উচৈ}টে:শ্ৰ**া মহা অখ-- অ**খকুলপতি।

মাতলি ঘোটক আনি দিলা ইন্দ্রপাশে। হেবিয়া বাসবে, উচ্চৈ: প্ৰবাঘন ঘন ছাডিল নাসিকাধ্বনি, তলাইয়া স্তথে ফুলাইয়া গ্রীবাদেশ, কেশব স্থলর-ঘন হেষাধ্বনি ছাণে, ঘন থবাঘাতে থ ডিতে লাগিল। মন:শিলা স্বৰ্গতলে. ষভ শ্বিনি তক্তশোভ। শুভ সুচিক্লৰ. ক্ষীরোদসমুদ্রজাত ঘোটক অন্তত। সাজাইলা আপনি সে অধে স্বরাজ , স্তদিব্য আসন পঠে বশ্মি তেজোময় গলদেশে শোভিতে লাগিল --সৌদামিনী বেডিল বেমন গ্রাবাদেশে। মহা হথে শচীনাথ ধবিয়া দভোলি, আবোহণে করিলা উজোগ। হেনকালে শুকুপুথে স্থামক হইতে জত নামিল পূপাক. চপলা স্থন্দবী বসি ভাষ, ভড়িলভা হাস্থাছটাম্থে। হেবিইন্ডেড্ডগজি নামিলা চপলা, নিবেদিলা শচীনাথে শচীব কুশলবার্ত্তা, কহিলা, ষেত্রপে পাইলা পুষ্পকৰণ হেমাদ্রি-শিখবে , ইন্দুবালা-বারতা সংক্ষেপে বিবরিয়া দাভাইলা নম্রমূথে। চপ্লারে হেরি স্থাইলা স্থতনে কত্ই সংবাদ হুরনাথ বার বাব : কভ চিত্রহুথে শুনিতে লাগিলাযত কহিলাচপলা। সহৰ্য উৎস্কুক মনে আশীষি ভথন. কহিলা পৌলোমীনাথ, "হে চাৰুৱদ্বিণি, চিরসহচবী ইন্ধাণীন, কহিও সে স্বৰ্গন্ধৰ-স্থানীবে, স্বৰ্গরাজ্য তাব উদ্ধারি আবার শীম্র অর্পির জাঁচারে. চিরতফা মিটাব চিত্তের ! ফিব এবে স্থহাসিনি, স্থমেক-শিথবে নিরাপদে।" এত বলি শচীনাথ চপলার পানে চাহিলা প্রফুলমতি : হেরিলা—বঙ্গিণী **८मिश्ट निक्त जा**थि रङ-करनवर. দ্বিপথে চিত্তহারা যেন৷ ইন্দ্রে হেবি স্লজ্জ-বদ্দে বামা মুদিল নয়ন: বাঙিল সুগওতল, কাঁপিল অধর। বিশ্বয়ে স্থারেন্দ্র এবে দেখিলা এ দিকে

ভীমরূপ ত্যঞ্জি বজ্র দিব্য তেজোময়

ধরিছে অপূর্বা মৃর্ত্তি বিধি-ছরি হর-তেকে নিত্য সচেতন: হেরিছে সংনে স্থির সৌদামিনী-শোভা অন্তির নয়নে। হাসিল বাসব, আজ্ঞা দিলা মাতলিরে আনিতে কুমুমদাম, কহিলা—"চপলে, পূরাব বাসনা তোর—লাবণ্যে মিশাব আজি স্থর-রণভূমে ত্রিলোক-সাক্ষাতে তেজঃকুলেখর বজ্লে বিবাহ-উৎসব হবে পরে।" মাতলি আনিয়া পুষ্পমালা मिना ऋष्थे हे<u>स</u>-करत्र, **खा**नत्म वानव অর্পিলা চপলা বজ্রে দে কুমুমদামে। স্বয়ংবরা হইলা চপলা মনস্থাথ , বলিলা লাবণারাণী তেজ্ঞাকলরাজে, অমর সমরক্ষেত্রে—বুত্রবধ-দিনে ! বাঞ্জিল সমরভেরী তৃরী শভা কত; উঠিল আনন্ধ্বনি ঘন ঘনোচছাসে পুরিয়া সমরক্ষেত্র—অনস্ত যুডিয়া অবিশ্রার পুষ্পধারা হইল বরিষণ। কোলাহলে পূর্ণ দশদিক। ফ্রন্তগতি ইন্দ্রপদে নমিলাচপলা, হাসি দেব দিলেন বিদার। ভীম অসম্তি পুন: ধরিলা দস্তোলি শত্রুদন্ত-সংহারক।

রচিরাচে মহাবৃতে বুজ মহাত্মর
দিগত অর্দ্ধেক যুড়ি উদয়-অচল,
পিছল, ত্রিকুটনাগ, গোত্র ধরাধর
লোকালোক স্মাভূৎ অচল মালাবৎ
ভূধর রজতক্ট হিমাঙ্গ শিথর
ছেরেছে দানবদৈক্স। বচিরাছে বৃত্ত
একাদশ মগুলীতে বাহিনী সাজারে
বিস্থাসিয়ে বথ অম গজ পদাতিক।
পক্ষীত্র গরুড় বেন বিভারিয়ে পাথা
বনেছে নগেন্ধ-শিরে—দেখিতে তেমতি
দৈত্য-চম্ব গঠন। মধ্যে নিজ্পদ্দ,
বুজ ঐরাবতপরে, বেরিয়া ভাহার
পরাক্রান্ধ দৈত্যদেনা; দৈনিক স্বর্থী
পর্বতের প্রেণী বেন নগেন্ধ্র বেটিয়া।

হেনকালে ছুই দলে বাজিল ছুলুভি, নাচিল বীরের হিয়া লহরে লহরে, সাগর তরজ-ভুলা বিপুল বিশাল ছুলিয়া ভালিয়া পুনঃ মিলিয়া আবার চলিল দছজ-দল সেনানী-চালনে। দৈত্যধ্বকা উডিছে গগনে মেখাকারে ঝক ঝক কিরণ চমকে অস্ত্রপরে রথপান ঝালসে ভাষুত্রে ১ মুহুলে,---থকিছে কিরোণোচ্ছাদ দিগন্ত ব্যাপিয়া ! দাজিয়াছে রণমাজে দৈতাকুলপতি বুত্তাস্থর – বান্ধি কটি কটিবন্ধে দৃঢ়, চুই খণ্ড গণ্ডাবের দৃঢ় চর্মপেটি তুই উপবীতাকারে বান্ধিয়াছে ঘেরি বকোদেশে। বাম-করে ধবেছে ফলক সুর্যোব মণ্ডলবৎ--প্রচণ্ড, বুইৎ, দক্ষিণে ভৈরব-দত্ত শূল বিভীষণ , ঐরাবত করি পুষ্ঠে বসেছে অশ্বর रेमल-भर्छ रेमल (यन। कविक्रवादांख গত রূপে জিনি যায় লভিলা দানব চলিলা বংহিত করি -- চলিলা পশ্চাতে দম্ব-বাহিনী যেন তরকের মালা।

छिन हेर्न्यत तथ शशन च्यान्सिनि, কভু শৃক্তে কভু নিম্নে কভু পার্নদেশে বিঞ্লীর বেগে গতি ছিল্ল-ভিন্ন করি रेनजा अनोकिनो शाकि, कक, वरकारनन, খনদল অখব বিদার্থ চক্রাথাতে। ইরম্মদে রথচক্রে জ্বলিতে লাগিল তডিদ্ধাম— জ্ঞলিল সহস্ৰ অক্ষি তেকে। শর্কাল ভয়ত্বর শুক্তে বর্ষিল মুষ্টের ধারে যেন ববিষার ধারা! অপুর্ব শিল্পিনী-ভঙ্গী! মুহুর্ত ভিতবে দিগত ব্যাপিয়া শর সর্বজন'পরে সর্বস্থানে সর্বাদিকে রণস্থল ঢাকি, পডিতে লাগিল প্রহরণে অশ্ব হস্তী অসংখ্য পদাতি-মহাঝডে তরু যেন কিংবা বজাবাতে যথা শৈলকুলচ্ডা; ব্যহ ভেদি প্রবেশিণা স্থরেশ-ক্ষন্দন, ভ্ৰমিতে লাগিল ৰেগে দাবাগ্নি বেমন ভ্রমে বেগে ভীম রক্ষে বন দথ্য করি; किश्वा यथा উर्म्मिक्न निम्नु উपनिस्म ধার রকে বেলাকুলে উপল আছাড়ি।

ছিন্ন কৈল ছুই পক্ষ স্থরেশের শরে বৃহ্হ-কলেবর ছাভি—বথা বৃত্তাস্থর বেষ্টিত দানব-বীরদলে। রক্ষলোত প্রবাহিত বিপুল তরকে চারিদিকে।
দেবি দৈত্য মহাতরে দত্তে চালাইলা
মহাহত্তী ঐবাবত; ছাড়িল মাতক
কোটী শঝনাদ শুডে, গর্জিল তথন
ভীম-শব্দে দৈত্যনাথ, গর্জিল বেমন
অধ্যে জ্লানদল, কহিলা ভ্রারি—

"রে পাষণ্ড, এ প্রচণ্ড ভুক্তেজ আগে না নিবারি, বধিছ দম্ভ-পদাতিক গ তম্ববের প্রার বুত্তে এডারে সমবে নমি**ছ বে বশভ্মে ভীক হীনমতি**। ত্লাজনে সংগ্রামে না ভেটি, হস্তী হয় বধিছ নির্জ্জ-প্রাণ। ধিক হে বাসব। কি হেতু আইলে রণে ভয়(ই) যদি এত অস্বের ভূজবলে? সে ভূজ-প্রতাপ চেব পুনঃ।" কহি, শুরে তুলিলা অমুর মহাকাল শল ভয়ত্বৰ ৷ নাউত্তরি স্বনাথ কোদও ধবিলা ভীমতেজে লক্ষা করি ঐরাবতে নিমেধ-ভিতরে কৰ্ণমূলে নিক্ষেপিলা স্থতীকু বিশিথ, অস্থিব জালায় মহাবাবণ মাডিল. ঘোৰ শব্দ শুক্তে ছাডি ছুটিল বেগেতে নামানি অঙুশাখাত। ভীম লক্ষ ছাডি দাঁডাইলা মহাশ্র মনঃশিলাতলে---শূল হতে ৷ লক্ষ্য করি ইন্দ্রকতল ভাবিলা ছাড়িবে অস্ত্র -- দূবে হেনকালে দেখিলা দমুজপতি জয়স্ক-পতাকা। নির্থি ইন্দ্রের পুত্রে নিজ পুত্রশোক জলিল জনয়তলে, শ্বরিলা তথন এক্রিলাব ভীমবাকা, প্রতিজ্ঞা কঠোব, চকারিলা ছোর স্ববে অসুব চর্জ্জয়, ছটিলা উন্মন্ত যেন মথি স্থররথী, ম্থি অংখ মাজক পদাতিক অগণন। নুকায়িত শার্দ্ধনেরে যথা বনমাঝে খুঁজে বাাধ বনরাজি আন্দোলন কবি. কিংৰা পক্ষিরাজ বাজ কপোত হেরিয়া ^{ধার} যথা শুক্তপথে—ছুটিলা দিতিজ।

्रथो हेट्स (बाज जेरा टेन्डावीज वर्ड पित्रेन निरमवकारन ! जूमन नःशीम वाक्षिम बांमर मरहा। करबान, यडक, यवध्य स्वनाक रवित्र भूकारक

স্থদল সহিত এককালে। সুরপতি যঝিতে লাগিলা রণমদে। পশুবাজে বনমাঝে নিষাদ ঘেরিলে, উন্মাদিত পশুবাঞ্চ ভীম লক্ষ্ট ছাডি, ল্রমে যথা দশদিকে লওভও কবি বাাধকলে. তীক নথে দস্তাঘাতে থণ্ড থণ্ড করি. নিক্ষিপ্ত তোমর, ভল্ন, কৃঠাব, মৃদাব---তেমতি স্থারেক্স বথগতি। ক্ষণে পর্কো. ক্ষণে পরে উত্তরে আবার অকস্মাৎ. পশ্চিমে দক্ষিণে—বেন খেলে ভডিদ্ধাম সৰ্বস্থানে দিগন্ত ব্যাপিয়া একেৰাবে ৷ যুঝিছে দমুজদল অসীম বিক্রমে, ভিন্দিপন্ন, ভীষণ পরভঃ, প্রক্ষেডন, निरमरव निरमरव रक्षि रेखकरणां भरव . কাটিছে সে অস্ত্রকল ইন্দ্রমহাবল ভুজদুও মুও সহ শুরে , উঠাইছে থণ্ড উক্ল বিশিথে বিশ্বিয়া: জ্বজ্বা, বাছ. কক্ষ, বক্ষা, ললাট বিদ্ধিছে লক্ষ বাণে । নিবস দম্ভাগৈন্য হৈল অচিবাৎ পড়িল সমবক্ষেত্রে কোটা দৈতাবীব। ছাডি সিংহনাদ কোধে দৈত্য-দেনা তবে দাইল উপাতি বৃক্ষ**, ক্টিডি শৈল**চড---**চটিল সচল ধেন আর**ণা ভধব. ছুটিল পুষ্পক শুলো মেঘমন্ত্রে ঢাকি. নিনাদিল ধ্রুগুণি ইন্দ্রের কাম্ম ক. ছাইল কলম্বুল ঘনাম্ব-পথ, সুরপুরী অন্ধকার হইল ক্ষণকালে। পড়িল কমোজ, হলাস্ধ, মহাস্ব খবশ্ব খড়পড়ি পিঙ্গল খেডকেশ সেনাধাক আরো শত শত। ভদ দিল দৈতাদল বণস্তল ছাডি--ফেলি অন্ত্র. গিরিশৃক মহাজ্মরাঞ্জি, ফেলি রথ অখ হন্তা। ছুটিল তেমতি করণালে-বায-মথে উড়ে ধথা কাশ। কিংৰা বথা পশুপাল, পশুপাল সহ করাবাদে প্রাণভয়ে পুছে তুলি কবি ধাের বব!

হেথা মহাশ্র রুত্র জন্মস্ত উদ্দেশে ছুটে ঝটিকার গতি। হেরি মহারথ কার্ডিকের জাদি স্থর রক্ষিতে কুমারে চালাইলা দিব্য যান বেগে ফ্রুত্তর; ছটিলা অনণ দিবাকর অম্বপতি বায়কুলপতি প্রেডঞ্জন ভীম দেব. করাল অনসমূর্ত্তি যম দণ্ডধর জালাময় তিন চক্ষ ভীষণ ছক্ষারি . #াডাইল দৈতারাক্স সুবর্থিগ**ণে** হেরি দরে। হেরি দৈতা দণ্ডধর কালিম জলদবৰ্ণ হোব স্থাবে ভাষি किंडिना अभववर्गन -- "(इ एमवरमनानि . প্রান্ত সবে, বহুরণে যুঝিলা ভোমরা, কণকাল লভ হে বিশ্রাম আমি যুঝি দৈতোৱাজে ক্ষণকাল আজি।" চাহি ডবে সম্বোধিলা বুত্রাস্থবে—"হে দানবপতি, পরেতে-পতিবে আবিদ্ধ ভেট রণজ্ঞা। প্রেতপতিবাকো বন ছর্জয় জ্ঞারি ক হিলা, 'হে ধখ্যবাজ, এত যদি সাধ ষঝিতে প্রত্রের সহ – পর দণ্ড জবে, হের দেখ রাখিজ তিশল আজি. ইছা নাধরিব অভাদেবরণে ই*লেম্ব*তে কিংবা ইন্দে না আঘাতি আগে।' পাশুদেশে বিদ্ধিলা ভৈববশল মন:শিলাতলে দৈতাপতি: ভীমগদা ধরিলা সাপটি. ঘবাইলা ঘনসনে: ঘ্বাইলা যম প্রচণ্ড করাল দ্ওা। ছই ক্বী যেন বনমাঝে রণমদে করে কবাঘাত, তেমতি আঘাতে দোঁতে দোহা ৷ দওগদা-প্রহারে বিদীর্ণ নভস্থল, ঘোর রব উঠিল গগনে, ঘর্ণ-পাকে ডাকে বায চৰ্মনঃশিলা চাবি চরণ ঘণণে। দণ্ডমদ্ধে বিশাবদ দোঁতে, কেচ নারে নিবারিতে কারে, ভ্রমে নিরন্তর ঘুরি; छ्टे घन (सव (यन मुस्क जबकत । প্রেতরাজ কালদও ঘর্মরে ঘুরায়ে আবাতিলা ভীমাঘাত বুত্র-মৃষ্টিতলে, সে আঘাতে ফিরে দণ্ড—ফিরে বুত্রগদা গ্রুদস্ত-বিনিশ্তি। তথন অসুর বামস্কল্পে শমনেব ভীষণ বেগেতে করিলা প্রচণ্ডাঘাত গদা ঘুরাইয়া। যমরাজ বদিলা আবাতে ভগ্রকটি, ক্ৰম্ম যথা ছিল্মূল পড়ে মড়মড়ি। তুলিলা তথন দৈত্য ভরন্বর শূল

লক্ষ্য করি জয়স্তেব বিচিত্র পতাকা। দিলা বড দেবরথিগণ ঝডবেগে হেরি সে ভীষণ অস্ত। দর হ'তে হেরি চালাইলা পুষ্পক বিমান ইন্দ্রাদেশে মাতলি---ছটিল রথ ঘনদলে দলি ঘৰ্ষৰ নিনাদে খোব জিদিব চমকি . জন্মন্তের রথমূখে পথ আচ্ছাদিয়া দ্যভাইলাক্ষণকালে। বিচাতের গতি বাসৰ আমৰ নাথ ছাডি সে সালন. আরোহিলা উচ্চৈ:প্রবা অধনলেধর, শোভিদ স্থনীল তত তত্ত্তদ ভেদি, ক্ষৰ অনে ভেদি যথা শোভে নীলামর। ক্রটিক জিনিয়াস্ভ স্থলিবা কব⊳. শিরস্থাণ দঢ়জিনি কঠিন অখস, অপুর্ব্ব কির্ণছটা কিবীট আকারে বেডেছে নিবিড কেশ- আভা ছডাইগা সর্গমেশ্বমালা যেন ঘেরেছে মন্তক। জলিকে সহস্ত অকি —ভীষণ দল্পোলি শঙ্গে তলি স্থবনাথ অংখ আরোহিলা. উট্টিলা নক্ষুগতি উচ্চৈংশ্ৰবা হয় মহাশুর ভেদ করি, সুমেক ছাডিয়া উচ্চ এবে দৈত্যবপু নগেব্ৰুদদ্শ , বক্ষ: সমসতে তার পক্ষ প্রসাবিয়া স্তির হৈলা অশ্বপাত—ডাকিল দছে।লি শত জিমতের মন্দ্রে বাসবের কবে। হেবি ঘোর ঘনস্বরে ভীষণ অস্তর ক্ষতিলা নিনাদি উচ্চে.—"গ্ৰামনী বাস্ব, ভাবিলে রক্ষিতে হতে বতের প্রহাবে ! কৰ কৰে এ শল-আখিত সংবরণ পিতা পুত্ৰ হুই জনে"— বেগে দিলা ছা^[5] ছুটিল ভৈরব শূল ভীম মূর্ত্তি ধরি মহাশৃক্ত বিদারিয়া, কালাগ্নি জ্বলিল প্রদীপ্ত ত্রিশূল-অঙ্গে ! হেন কালে (হায় বিধির বিধান গতি কে পারে বুঝিতে) বাহিব্লিল খেতবাত কৈলাসের পথে দহদা বিমানমার্গে শূল-মধ্যস্থলে चकिं चम्छ देश निरम ভिতরে। काम्या रहेन मृन भराम्य-८कारण ! হেরিয়া দমুজ্ঞপতি কাতর হৃদয় किना किनारन हाहि, मीर्चवान हाफि,

'হা শন্তু, তুমিও বাম।' দগ্ধ হতাখাদে ছুটিলা উন্মতপ্রায় হস্কারি ভীষণ. ছিলম্ভ বাহু যেন। অগ্নিচক্রাকার ঘবিল ত্রিনেত্রে বোব--দত্তে কড নাদ। প্রলয় ঝটিকাগতি আদিয়া নিকটে প্রসারি বিপুল ভক্ত ধরিলা সাপটি ইন্দ্র-করে ভীম বজ্র —উদ্বিগ্ন করিতে অস্ত্ৰবৰ বজ্ৰদেহে জালা ধক ধক ছলিতে লাগিল ভয়ন্বর। সে দহন মহাস্থর না পাবি সহিতে গেলা দূবে ছাডি বজ্ৰ, ঘোর বিকট চীৎকান, লন্দে লন্দে মহাশ্রে ভীম ভক্ক তলি ছিডিতে লাগিলা ক্রোধে নগত্রমণ্ডলী. ছডিতে লাগিলা ক্রোধে—বাসবে আঘাতি. আঘাতি বিষমায়াতে উচ্চৈ:শ্ৰবা হয়। বন্ধান্ত উচ্চিন্নপ্রাম, কাপিল জগত উজাড স্বর্গের বন, উভিল শুক্তেডে স্বৰ্গজাত ভঞ্কাও। গ্ৰহ, ভাবাদল, থসিতে লাগিল ষেন প্রলম্বের ঝডে। উছলিল কজ সিন্ধ কত ভ্ৰমণ্ডল. থ ও খণ্ড হৈল বেগে চুর্ণ বেণু প্রায়। দে চীৎকাৰ. দে কম্পনে বিশ্ববাদী প্ৰাণী চন্দ্ৰ, স্বৰ্যা, শতা, গ্ৰহ্, নক্ষত্ৰ ছাডিয়া ছুটিতে লাগিলা ভয়ে বোধিয়া শ্রবণ. ৈকলাস, বৈক্প, ব্ৰহ্মলোকে। সে প্ৰালয়ে স্থিৰ মাত্ৰ এ তিন ভূবন ৷—মহাকাল শিবদূত কৈলাস ছয়াবে, নন্দী ধারী কাঁপিতে লাগিল ভয়ে. কাঁপিতে লাগিল

ব্ৰন্দলৈকে ব্ৰন্ধার জোৱন ঘন বেগে। কাঁপিল বৈকুণ্ঠ দ্বাব ৷ বোর কোলাহল দে তিন ভ্ৰনমুখে, ঘন উচৈচ: স্বর "হে ইন্দ্ৰ. হে স্থবপতি, দস্তোলি নিক্ষেপি বধ বত্তে—বধ শীঘ—বিশ্ব লোপ হয়।" এভক্ষণ সুবপতি ইন্দ্র সে তর্য্যোগে ছিলা অচেতনপ্রায়-বিশ্বকোলাহলে স্বপনে জাগ্ৰত খেন বজ দিলা ছাডি: না ভাবিলা না জানিলা ছাডিলা কখন। ছটিল গর্জিয়া বজ্র খোর শৃক্ত-পথে, উনপঞ্চাশৎ বায সঙ্গে দিল যোগ. ঘোৰ শবেদ ইরমাদ অগ্নি অক্সেমাথি. আবিত্ত প্রদার মেষ ডাকিতে ডাকিতে, ছটিতে লাগিল সঙ্গে , স্থামক উন্ধলি ফণপ্রভা থেলাইল . দিল্লাওল ধেন থোব বঙ্গে সংক্ষ সংক্ষ ঘরিয়া চলিল। ঘরিতে ঘুবিতে বজ্র চলিল অন্ধবে যেখানে অস্তরপত্তি বিশাল-শ্বীব. বিশাল নগেন্দ্র তুল্য , ভীষণ আঘাতে প্ডিল বুলেব ব্ঞেল্প্ডিল অসুব, বিষ্ক্যধবাধর যেন পডিল ভূতলে। বহিল নিক্ত খাস পিত্ৰন যড়ি. ব**হিল বুত্রেব খাসে** প্র**লয়ের** ঝড়। "হা বৎস. হা কদ্ৰপীড" বলিতে বলিতে মুদিল নয়ন্দ্র চুজ্জয় দান্ব। দহিল ঐক্সিলাচিত্তে প্রচণ্ড হতাশে. চিবদীপ্র চিতা ৰপা। ব্রহ্মাণ্ড মডিয়া

জমিতে লাগিল বামা--উন্নাদিনী এবে •

আশা-কানন

[সাঙ্গ রূপক কাব্য]

পগন-ললাটে

প্রথম কম্পনা

আশাব সহিত সাক্ষাৎ ও পরিচয়, ভাঁহার সক্ষে আশা-কাননে প্রবেশ। ভিন্ন ভিন্ন দিক হইতে কৰ্মকেত্ৰাভিম্থে প্রাণি-স°প্রবাহ। मार्गाम्य नम বলে স্থবিখ্যাত ক্ষীর সম সাত্নীর , বিবিধ লতায় ৰুক নানা জাতি মুশোভিত উভ ভীর; জনমি যে নদ বিস্কাগিবি-শিরে (मभ-(मभोख्टत हरन। সুৰার সৈকৈত দিকতা-সজিত মুধৌত নিশাল জলে, ধে নদের কুল পবিতাক রিলা সুক্ৰি কন্ধণ ক্ৰি; কুন্ম মধুব ফুটায়ে কবিতা-বাণীর প্রসাদ লভি , রসবিহ্বলিড যে নদ-নিকটে ভারত অমৃতভাষী; বাশীতে উন্মন্ত জনমি সুক্ৰে করেছে গউডবাদী। ভীরে এক দিন সেই দামোদর-व्यक्त-डेनदब डेठि , धत्री-भत्रीदत्र त्वि मृक्ष्यारर्ग কিরণ পরিছে ফুটি; পড়িছে কিরণ দশ দিক্ ভাতি আকাশ মেবের গার, বরণ বিবিধ হরিদ্রা লোহিত গগনে চাক্ন শোভার;

च्छात चरत चरत क्रि, পৰনে উডিয়া কিরণ মাথিয়া দিগন্ত বেডার ছুটে। দামোদর-জলে পড়ে সূর্য্যরশ্রি আন্লোকরি ছট কুল , তৃণ-লত্তা-দলে পড়ে তরু-শিরে বঞ্জিত প্ৰভাতী ফুল। ভূমি ধীরে তাঁরে হেরি চারু শোভা প্ৰশি মৃত্প্ৰন, হাদয় পীড়িক সংসার-যাতনে চিন্তায় আকুল মন , কত ভাবি মনে ভ্ৰমি কত বার শেষে প্রাস্কি-অভিভূত, কোন বৃক্তেং বসি চকুমুদি ক্ৰমে তক্সা আবিভৃতি; ক্রমে নিস্ত্রাবোরে প্রাণী আছের হয়, সংসার ভাবন স্বপন-প্রসাদে পাস্ত্রিজু সমৃদ্যু; नवीन खरम ভাবি যেন নব ক্ৰমশঃ কতই ধাই; ছাড়ি কত দে আসি কত দ্র কানন দেখিতে পাই; কানন ক্র অভি মনোহর ষেন সে গগন কোলে; কিরণে সজ্জিত क्रेष्ट हर প্ৰনে ছেলিয়া দোলে; বিটপে ভূফি ৰ্রণ হরিত সরল স্বরুর দেহ,

চূৰ্ণ-কান্ধ মেগ

	मामारत उपार	শহিন্দ্ কটিয়া	ংক্লিছে সে প্রাণী
द्वाभिन्ना त्यन २। ८कर ।		কম্বর, ব্রুপ্তরে ক্রিয়ের	
	বিচাহ কড়বি	कियापि उत्	ulhat famo
প্রদাবি নিপুদ্ কাম		ीसवा + + ८ माल' ५.स.	
∞ (म्द्र अ तुल्	Profit Albira	न्हार्या र्यक्ताराज्ञ	ነ 🕠 ጠቁርማ
ছলিছে ষ্টল হায়।		李寶 医二氏氏虫病原素	
	ત્રાકા મુધ્યુપ	' 17 + (स	कोइत्र' । स. नावि
কভি হো জেল্লে ৮ স ক্তা শাংলাচিক ক্রানি ন		ক্ষিমিটো নাৰ্থন প্ৰীয় প্ৰাথমিক বিশ্ব বিশ্ব	
		काली प्रश्नाम	520 a 12 ad a
নিঘৰ বেশান উল্লাহ্য		ি কেন্দ্ৰ পূৰি ; শীৰণাৰ স্থাপ সংক্ৰমণাজ	
	नाम केषे भाग	' निष्यं विश्व	% হ'লের পরে
গুৰাল চলালি আছি;		পারিকেটো ভন্তানে, দ্বাজিপ্র	
'યો તુમ≁ (. ક	७% -८५४ ०,०३	नर् '. ६४ ५ त।	विकास पराज
1 Tel	ৰ গ'ব,	4 (*) €.1	াটে প্ৰ
14 2 14 4	व्यक्तिक (भाग		54 A.G.
5 A + 2 44	কং/শু ,		arm with.
San Garage	11/ 164 4	1252414	"v" \$ -47.5
19 (B) (1 - 1)	क्षेत्र भीरत		16 - 37
t graferi	2019年 12 12 12 12 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14		শার ক্রিকাদ
ভাটাত শ্লাপিক চ গ, শাল্ম উচ্ছা ভাগ নক্ষণ		1100 Mar & 17 1,	
^{लंद} श डी इंग	A 4 44 4 4	after the m	केंद्रक कर देवा स्टब्स
ርጠለ (4) ማ ህ ምሚኒრ		नगर सर अक्षांत्र अक्षार स्थाप	
≁ा ८५७ की (्न छहं र व	্ৰ কাই ট্ৰ	outers in
ক্ষম মে বালাও তাক বিজয়াৰ ভাগে - মূৰি চাবিশাদক		· g.	¥ ·.
ভিজান জ্ব	मृदि हालिक्ट	9 311	4 1€ 3€ 69.
間 47分 2 37	2 · · · ,	্টিনের শন্ত ' শিক্ষিকটিম সংক্রিপ্রথর ল	
ः पम्बुब		"म्टाप कार्यम	कारीक प्रमण ज
শৃক্তা কাল্যন	id.	्री वीर् ं रिव	7.3 CM.,
াই শ্ৰেম	યન મુજ ક	ুর⊺ শাক মালাবে ছঃহ	10 mg 3 2414
ঞ্চি বিংমাণ	2 2 호선 1	হু।।ই ল্যান	
্গৰ ভৌগৰ	(करि १क भा।	थनाच कुन्दर	व्यक्तिद (भोक्किया
चोर्धा शिक्षा छ ।		(तो १८७ सम्मन् ५व,	
"沙型"	হাণিচে হাসিত্ত	ીલ ડીચ (ખી	्रिव ८० ४.भनः
화(* '家 'Wi' 위리 등(#;)		শ্ভেশ করি জ্লয়।	
75 A (49	নিমিষে ন া	, रा १ (० ४) - १५।	ार्थ : ३ ⊜कामान्त्र
ক্ষ্যেক এতে ব	(184,	and the salte of the fa	
ারি ন্ক	(१४४, निभिष्य (१०४)	als Ylon	धवना स्कृति
क्यांनर्क रण्य क्योंत,		ত পুরা কর শ্বন।"	
া সেই	মুকু/ব্র শে∮ভা:	ছণ, দয়া নিভাৰ	
কত প্ৰতিবিদ	ভাষ,	*(বিজ্ঞন্ত	ौन इत्त्र,

একে একে একে প্ৰাণী **ৰনে ৰনে** দেখাবে আমারে, দেখেছি অনেক, কত যে উঠিছে তায়; নছে এ তকণ প্রাণ।" ভ্ৰমে সে তর্ণী বিনা কৰ্ণ দণ্ড কভৃত দেপুরী আমাশাকহে "তবু (अम्रा निमा शाता-नीटन , কর নাই পরিক্রম, প্ৰাণী ষত জন উঠে ক্রমে তাহে দেখ একবাব ল সকে মম পরপাবে রাথে ধীরে! ঘুচুক চিত্তের ভ্রম। প্ৰাণী হেন কত উঠে ভীর'পরে তাপে চিত্ত তব গ্নি যে কারণে গুৰা বৃদ্ধ নাবী নব, যে বাসনা ধর মনে — মনোরথ-গজি থেলায় ভরণী স্কল তোমাব ধুরাব বাসনা ধারা-নীরে নিরন্তর। প্রবেশ আমার বনে , দামিনী-ছটায় গগনে ধেমন সকল তোমার দেখাব সেখানে কাদস্বিনী শোভা পায়, কত কিবা অপরূপ. বদন তেমতি প্ৰাণী দে সবাব নয়নে কথন দেথে নাই ধাহা প্রদীপ্র স্থ-প্রভার। থপনে কোন সে ভূপ ; হেরি কতকণ চিত-হারা হয়ে স্বরুগে যেমন থাকিবে কাননে প্রাণী ফুন লক্ষ লক্ষ, কাদিতে হবে না আব; আদে সেই স্থানে দশ দিক্ হৈতে ভূলিবে সকল, শোক চিম্বা তাপ ভরণী করিয়া লক্ষ্য। ঘূচিৰে প্রাণের ভার।" চাহি মুখপানে আশা কহে হাগি পাইয়া আশাস বচনে আশার 'কি হেন সংবিদ্হারা, পশ্চাতে ভাষাব সনে , আমার কাননে প্ৰবৈশে যে প্ৰাণা হ'য়ে কুতূহলী ধাই জ্বগতি ভাহারি এমনি ধাব!— প্ৰবেশিতে সে কাননে। ভাতিছে বদনে হের কিবা স্থ দাভাইলা আশা আসি কিছু দূর নাচিছে হৃদয় কত; হাসিয়া মধুর হাসি পানে মত্ত মন ব্ৰাসনা-পীধূষ — মম আঁপৰিবংগ পরশি ভর্জনী চলে মাতোয়ারা মত , কহিলামৃত্ল ভাবি— নিমিধে নৃত্ন নন্দে যেমন সম্মুখে তোমাব नवीन कूच्य फूटि, "চের বংস ছেব আমার কাননস্থল, ইহাদের চিতে নিমিষে তেমতি . হের মনোহব নবীন আনন্দ উঠে, কাননেব ধারে ধাবা কিবা নিরমল। কখন কোথা দেখেছ কি কতু আশার কানন তশ্নী হেন চমৎকার, নির্থি সমূর্থে প্রকালিত ধারা-কলে; বিনাশে বিরাগ প্রশে প্রাণে সলিল তাহাতে শ্বচ্ছ কাচ ধেন ঘূচায় প্রাণের ভার। उहाँग उहाँग हान , বুঝিবে তথ উঠ তরী'পরে উঠিছে আপনি ক্থন উথলি এ কাননে কত সুথ, কথন হইছে গ্ৰাস , রচেছি কান नक्तन अपूर्व মণির উৎপল ম্বি-পদ্ম কত, ঘুচাতে প্ৰাণীর ছথ।" ধরা-অঙ্গে সুপ্রকাশ ; ধরিয়া আমা এত ক'রে আশা তরী মনোহর ८थरल धात्रा-नोदत्र তুলিলা তরণী'পর,

হীরকে থচিত কাম,

অমনি সে ধারা निन उथनि চলে জভ পর পর; দেখিতে দেখিতে পুরিয়া তুকুল हल इल हल हल कल, দেখিতে দেখিতে সলিল ঢাকিয়া ফুটলি কত উৎপল। চলিল ভরণী গতি মনোহর মধুর ম্বলীধ্বনি, বাজিতে লাগিল गश्मा को मिटक তরীতে সদা আপনি ; ভূলিলাম যেন এ বিশ্ব ভূবন করতলে স্বর্গ পাই: চাবি দিকে যেন মণিময় পুষ্প নির্থি যেখানে চাই। গুনি যেন কেহ কহে শ্রুতিমূলে "বেখ রে নয়ন মেলি, কলস্কবিহীন মানব-মণ্ডলী ধরাতে করিছে কেলি , স্বৰ্গ-তুল্য এবে হয়েছে পৃথিবী সর্গের মাধুবীময়, বেষ, হিংদা, পাপ-ৰৰ্জিত পৰাণী নিৰ্মাল শুচি হ্ৰদয়।" হেরি যেন মর্ক্ড্যে ভেমতি তকণ তেমতি নবীন ভাব ধ'রেছে মানব যে দিন বিধির হদি পদ্মে **আ**বিভাব , নাহি ধেন আর **নেই মন্ত্যপুরী** (यथारन मात्रिजा-मिश्रा, ভিশ্ব করে নরে, হতাশ-অঙ্গারে অনলে যথা মকিকা, भष्य-मन्तिद्व ধেন অভিনব কিরণ প্রকাশ পায়, ∮রি করা ধন, ফিরে ধেন কালে कारन जारन भूनतात्र ; ^क ७ (व क्षमस्त्र আনন্দ-লহরী উঠিণ তথন মম ভাবিলে সে স্ব, এখনও অস্তুরে সহসাউপৰে ভ্ৰম ! ^{ক্}ড দ্র **আ**সি ভাগি হেন রূপে তরণী হইল স্থির,

পরপারে আসি আশা সহ স্থা উতরি ধরার নীর ; ৰুৱী হৈছে তীরে নামিয়া তথন হেরি মনোহর স্থান; "বহিছে সভত শীতল প্ৰন বিস্তারি মধুর জাণ; তক-ডালে ডালে পূৰ্ণ প্ৰকাশিত সুবভি কুসুমদল, চন্দ্রমার জ্যোতি সদৃশ কিরণে উজ্জল কানন-স্থল; পাখী নানা জাতি প্লবে বসিয়া মধুর কৃজন কয়ে, ি≕ নাচিয়া নাচিয়া গ্রীবাভঙ্গি করি মযুব পেথম ধরে। কুছ কুছ কুছ কুহুৱে গলায় কোকিল প্রমন্ত ভাব, মূহ: মূহ: মূহ: তমু-নিশ্বকর সুগন্ধ সুধার আব। সরোবর-কোলে প্ৰফুল কমণ কুমুদ, কহলাব ফুটে, গুঞ্জরিরা ভালি কুম্বমে কুম্বমে আনন্দে বেডায় ছুটে। চলেছে সেথানে প্ৰাণী শত শত সদা প্রমৃদিত প্রাণ, স্মধুর স্থরে পূবে বনস্থাী আনন্দে কবিয়া গান, কেহ বা বলিছে আজ নিব্ধিব কুম্দ-বঞ্জন শোভা; উঠিবে ষথন গগনেতে শ্ৰী क्शकन-म्याताता हा ; আজি রে আননে ধরিব জনমে মধুর চাঁদের কর, কোমণ করিয়া কুত্বম সে করে বাধিব হৃদয়'পর। ভাহার উপরে রাখিয়া প্রিয়ারে কত যে পাইব স্থ। কখন ছেরিব, গগনে শশাস্ক কথন তাহার মুখ।" কৰে কোন জন বেণ্ডরবে স্থধে "কোথ' পাব হেন স্থান!

নাড়ঙ্গ-বিক্রমে আৰি মত্ত নদী য়াধিয়া এ নিবি ৰেবি কি ভরণ চালে ! ঋগত-হর ড नित्रवि क्षारे शांव ! প্রভন্ন ভোর আৰু রে প্রতাপ এ হেন রভন विना व शीमारे হেরিতে আনন কত, ৰতনে বাথিতে ঠাই, ্হেরি ক্ষবর্থ আজি ধরা তব নিরজন হেন ভূমগুলমাঝে কিবা সুখ অবিরত ! নয়নে দেখিতে নাই।" পগনের কোণে জোল হৈমধ্যজা "हाब कछ मिरन কৈডনে বিহাৎজাল-(कह् वा विनय भाव त्म काक्न-कन ! कुनारवात मृत्य লেখ ধরাতলে দেখিতে তেৰন মানব জিনিবে কাল।" নাছি বে খুনার यूँ खिला खरनी छन ! তুরক-দলেরে **বলিখা সুস**ভ্র কি সে অপক্লপ সে তুল ভ কল ভরুকরি কত ভন, দেখিতে কিবা শ্লব, **हरण खण्डरवर**ण् नावित्र हुना অপঙ্গপ তার বুৰি ক্ষিতিতলে करत **कृति आ**क्षिण । নাতি কিছু পুথকর ! ক্ত হেন % सम सिक् इ'एज নৱনে কেৰগ लाहे महाना সঙ্গীত শুনিতে পাই. না গতি আখাদ কভু, উন্মন্ত্র পরা ত্রহ উলাপে ক্ষা সে আনন্দ প্রাণী ভেরি যত যাই। হার মধুমর কিবা সে আন্ত্রাণ তবু; ধৰা দে জাহবী পাব কড সুখ ছাডিয়া শিধরতল, না জানি সঞ্চয়ে গুচিৰে সকল ভৰ, শীতল বায়িং ं अटम एमस्न **ट**मर्टन করিব পৃথিবী কভু যদি পাই শীতস করি অঞ্স ;— অপূৰ্ব সৌন্দৰ্ব্যময়। श्वान नीत्रमां ছোটে কল কণ ছার চিস্কা রোগ ভাবনা কি ছার ধর্ণী পরশে সুথে, দে ফল যন্ত্ৰপি মিলে, নানা শত বিধিধ পাদপ জীবন পরাণী বিভূত করিয়া বুকে। বিনিমরে তার কোভ নাহি বিকাইলে।" योग नाना का (बर्स समहत् সুথে করে গীত मखद्रव कांत्र भीटव. চলে কত কৰ वरण करव श्रीव वन, विविध आहे! পশু স্থলচর শোভিব উল্লেখ পরিয়া শিরেতে नना लाय स्टब डीटन ; धवनी कवित वर्ष । विदेश विदे ভীর সমিহিত বিভীম রভন পৃথিবী-ভিডবে नाची करत सूरव भीम, কি আছে তেমন আর— বিকাশে সৌ লভা-শুন্মরাজি চিক্ৰ মৃত্তিকা প্রফুল্লিত করি প্রাণ ; बोबा विव दिन **क्विन श्रंबर छोत्र!"** দ্রবে তটে ভীরে स्त अत् मारा विविद्य क्वांबाड नमा लामानिक वन. গঞ্জীর চুন্দ্দি-খর, नीरत करत बाननिक बरन করিয়া সৰীত हरण खापित्रन नमा ऋर्थ निम्तर्गः कल्लिक (बहिनीशब ! क्या ता जारूवी भावि वि युवर

নির্থি ডেমভি াহে শিত্য তথা আনন সুধা-লহর। ংশ্বি শত পথে ছাড়ি শত দিক প্রাণীগণ চলে তার; াবা বৃদ্ধ প্রোণী शुक्ष तमती ক্ষিতি পূৰ্ণ জনভায় , লে থাকে থাকে কাজারে কাডার পিপীলির শ্রেণীমত: व्यागीत व्यनारक धनःथा व्यनःथा পরিপূর্ণ পথ যত। নির্বাধি কৌতুকে धार्थिया होतिहरू সাগরের যেন বালি--াৰ প্ৰাণিগণ চাকি ধবাতল **চলে निश करलांगि**, অদেষ উৎসাহ আন্দ আখাদে मकरण करव गमन, দেখিয়া বিশাৰে পুরিয়। আখাদে আশারে কেরি ভখন, "এরপ আনন্দ িজাপি ভাহায় প্ৰাণী সৰে কোৰা যায়. কে বাসনা মনে চলে কোন স্থানে কি ফল সেধানে পায় ?" খাশা করে খনি হাসিয়া তথৰ "हन, ३९म हन कारन, প্ৰাণী-রঞ্জুমি কৰ্মকেত্ৰ নাম নির্থিবে অমুরাগে, াণ্ড তুমি (इब १३ मव সেইখানে নিত্য ধায়, াশনা কল্পনা वामुन बाहाद সেইথানে গিয়া পায়।" চলি জ্ৰুত বেগে ^ছ:শা-বাণী **শুনি** আশা চলে আগে আগে ाने किष्ट्राह्य দেখি মনোহর পুরী এক পুরোভাগে।

দ্বিতীয় ক**পোনা** কণকেল—ছর বাব—হর জন প্রহরী কর্মুক

রকিত-পুরীপরিক্রম-প্রতি থাছে প্রহরীর আরুতি ও প্রকৃতি দর্শন। ্রম ছাত্রে শক্তি, ২য় ছাত্রে অধ্যবসায় ৩য় ছাত্রে मारुम, वर्ष चारत रेवश, क्ष्म चारत लोग, ७**हे चारत**् खेरमाइ--- পুরীমধ্যে প্রবেশ - পুরীদর্শন -- भूतीय भगाकारण यमःरेनम] অপুর্ব নগরী চৌদিকে প্রাচার भावारम ब्राइड कांबा, নির্দ্বি সমূধে বিৰাণ বিভত পক'শিলা আছে ছালা; প্রাচীর-শিখরে প্ৰাণী শত শত নিবৰি দেখানে ৩জ বিচিত্ত স্থাদর সামগ্ৰী বরিষা লমে স্থাপে অনিবত, কবি ওর্দ্ধমণ নিয়দেশে প্রাণী কতই আছেল নন. চাহিয়া উচ্চেতে व्यमीत श्रेष मना करत्र मित्रीक्षण--বা**জ**-পবিচ্ছদে রাজ-সিংহাসন खुवर्ब-द्रक्क कांत्र, মতিত হীরক প্রবাল মাণিকা কত দ্রব্য শোভা পায়। আশা কহে "বংস, অপুর এ পুরী আমার কানন ইজ, প্ৰেশে ইহাতে গ্ৰাণী নিতা নিতা মিটাইতে প্রাণের স্পৃহা, এ পরী পশিতে আছে হয় খার ছয় বারী আছে বারে। **(कह (**म हेशारू व्यव्यम्बद्ध माहि भारत , আ(ই)দে যত জন **જા**(वन मानदेश সেই পথে করে গভি, যে **পৰে বাহারে** করিতে জ্ঞাবেশ ধারী করে অত্মতিঃ चा(रे)रम अधिकक्षक, 🔻

করি হেঁট মাথা বাৰুন্ত,প পাশে প্ৰতি বাবে বাবে একে একে সবে বালুকা করে গণন। ক্রমশঃ করে ভ্রমণ। গুণিয়া গুণিয়া শিধরসদৃশ এ পুরী ভোমারে চল দেখাইব করিয়াছে বালুরাশি, च्यारा रमथ यछ चात्र, ল'য়ে ভায় ভার আবার গুণিয়া প্রকৃতি প্রহরী কিন্নপ আকৃতি ঢালিছে তাহাতে আসি, গতি মতি কিবা কার।" **অনুভাৰ** ভিলাধ অন্ত কোন সাধ लहेबा च्यामाब এত কৈয়ে আশা নাহি কিছু চিত্তে তার, চলিল প্রথম ঘারে বালি গুণি গুণি অনক্ত-মানদে যুবা এক জন নির্থি সেথানে কবিছে শৈল-আকাব। দাডায়ে মাবেব ধারে; প্রকাশ বদনে অতি সাম্ভাব প্রকাণ্ড-মুর্তি শার-সন্নিধানে অণুমাত্ত নাহি কেশ, অচলেব এক পাশে, নহে বিকশিও অস্তবে শরীবে ভুকাদৃঢ়ক রি ৰে যুবা পুৰুষ চাঞ্চল্য বিবক্তি-লেশ। দাঁডারে দেখে উল্লাসে। ভ্ৰনে প্ৰশিদ আশা কহে "বংস, অচল-শবীর হেলিয়া পড়েছে ধরাতে শুখ্যাতি ধার, সে যুবা ধরিয়া ভায় প্রার্থ-রঙ্গ হুমে দে অধাৰসায়, তুলিছে ফেলিছে অবলীলাক্রমে চকে দেখ এইবার ॥" ভুক্ষেপ নাহি কায়। ক্ৰুমে উপনীত তৃতীয় তৃয়ারে, কভু সে অচলে ভ্রকৃটি করিয়া আসিয়া হেরি তখন, যুবা কেরে মাঝে মাঝে, প্ৰাণী লগ গণ দাভাষে সে খারে নিক্ষেপি অন্তরে নিহত কপোত করে দ্বারী আরাধন। नित्रथ (यमन बास्क। হয় দেই দারে মহা কোলাহল বিচিত্ৰ ব্যাপাব দেখিয়া যুবার শক্তধাবী সর্ব্যজন। বিশ্বয়ে নিশান হই, চমকে চমকে রবির আলোকে প্রমাদে কণেক বাণী-শৃকুহ'য়ে অস্ত্রে অস্ত্রে ধর্ষণ। ন্তম্ভিত ভাবেতে রই। পুরুষ জনেক নির্থি নির্ভী চ চাহি আশাম্থ পরে কুতৃহলে দারেতে প্রহরীবেশ, আশা বৃঝি অভিপ্ৰায় বীৰ্যা প্ৰকাশি অপাৰ-ভৰীতে প্রাণীরকভূষে কহে **"শক্তির**প চাহি দেখ অনিমেষ। এই দারে হের তাম, কেশরী কুলং সম্মুখে উন্মন্ত অদাধ্য ইহার নাহি এ ভবনে করে ঘোরতর রণ, ষাহা ইচ্ছা তাহা করে, সেই বীশ্যবাদ নিমগ্ন ভাবেতে মানব মণ্ডলী ৰূম দৈত্যকুলে করে তাহা দরশন। পূক্তে এরে সমাদবে।" আপদি মধ্যগুলে আচল শ্বীর হ'রে অগ্রসর কহিয়া এতেক हुई शएउ (मारह भरत्र, আসিয়া বিভীয় বার, এক হাতে ^{ক্রী} এক হাতে সিংহ দেথ এ ত্রারে আশাকহে "বৎস, (वंश निवांत्रण करत , প্রাণী এক চমৎকার।" कतिया डेजी স্বাবার উদ্রেক নির্থি বসিয়া **দ্বিভীর** বারেতে (मृद्ध (चांत्रकत त्र्य,

বৃদ্ধ প্রাণী এক স্থন,

মাধুরীতে ভাব অতি মধুময় কেশরী ক্রম্বর লৈয়ে করে ক্রীডা স্ক্র-অঙ্গ নির্মাণ, মনসাধে অতুক্রণ। তথনি সে সাধে আশা কহে "বাবে ৰা বলেন বিধি দেখিছ বাহারে সাহস ভাহাব নাম, ষারে করে পরশন, দেব দৈতা প্রাণী ধরা তুষ্ট তারে তথনি অমনি টনি তুষ্ট বাবে বশীভূত সেই জন; মর্ত্যে বাজ্জ গুণগ্রাম।" কিন্তু অঙ্গে তার ভুজক্ষের মালা চতুৰ্থ তুষ্কাবে আশা আইদে এবে পরাণী দেখিয়া জাদে · कट्ट "वरम, देवर्ग (मेथ, আপন ইচ্ছাতে নিকটে তাহার এব তুল্য প্রাণী প্রাণী-রক্কড়মে হেরিতে না পাবে এক, কেহ না কখন আংসে। কি করেন বিধি ভাবিয়া অধীৰ দেখ কিবাছটা वम्या श्रमीश्र স্জন বিফল হয়, কিবা দে প্রশাস্ত ভাব, প্ৰাণী কোন জন এ মৃর্ণ্টি যে ভাবে পবিত্র স্থাদয়ে অদ্র্টের কাছে করে নিত্য মুথ লাভ।" সুন্থির নাহিক রয়। ष्यामि देनवरमारम আসি হেন কালে নির্থি সে দ্বারে বিশ্বাবিত-নেত্রে ত্বিসৃষ্টি এক জন, নিকটে করি গমন, না জানি যে বিধি অন্তরেব বেগ কি ভাবিলামনে পুরোদৃষ্টি কবি আমারে হেরি তথন, मना करत मःववन, ভূঞ্জ তাহারে অঙ্গ হইতে তার (चत्रिम्ना (ठो मिटक খুলি ফণিমালা দ°শন করিছে কভ. পরাইল মম অবস্থে একই ভাবে সদা করিতে ভূবন করিলাভ্রমণ তবু সে পুরুষ শরীরে বাঁধি ভূজদে , গ্ৰীবাদেশ সমূরত, না পরি লজ্মিতে নয়ন-অপাঞে বিধাতাৰ বাক্য মূখে নাহি খর ত্রিলোক ভ্রনে ফিবি, নাহি ঝরে অঞ্কণা। ফৰিমালা গলে অঙ্গ বিষে জলে নাহি বহে ঘন খাস নাসাবস্ত্রে भिवानिमि शीति शीति । नट्क हक्ष्णमन्।। নাহি পাই খান ব্ৰহ্মাণ্ড ভূবনে ক্তিপয় মাত্ৰ প্রাণীসেই দ্বারে প্রবেশ করিছে হেবি, স্থান্থর পরাণে থাকি, আসি শ্বস্থ কি চু প্ৰাণী শত শত শেষে আশা-পুরে দ্বে দ্¦ডাইয়া এক্সপে হয়ার রাখি আছমে সে বাব ঘেৰি, মানস তোমাব দেখি স্থকুমার **হেরি অথপর**প প্রাণী শ্বারদেশে এ পুরী ভ্রমণে ভাপ। সম্ভ্ৰমে সুধি আশায়, আংসিও নিকটে পাও যদি কভু কেন সে বসিয়া **শেরূপে সেখানে** ঘুচাটৰ সে সন্থাপ , ফণীদংশে কেন গায়। হৈয়ে চমৎক্ত ভূমি ধৈৰ্য্যবাণী ধীব শাস্তমতি খনিয়া বচন চলিফুপঞ্ম ছাব, ধৈৰ্য্য, সে তথন কয়-নির্থি সেথানে প্রহরি জনেক "ভন বলি কেন হেন দশাম্ম · প্রাণী অতি থকাকার, কিক্সপে উদ্ভব হয়। সেই কৃদ্ৰ প্ৰাণী বামন আঞ্চতি ক্ৰিয়া বিধাতা খদুই স্ঞ্ন কোদালী করিয়া হাতে, ভাবিয়া আকুল প্রাণ—

তবু ক্লণকাল ध्द्रवी मंत्री द করিছে ধনন নিতা নিভা অস্থাঘাতে, भिवन-यामिनी इंगिट्ड मुखिका ধনন করিয়া রাশিতে রাখিছে একা: ঝরিছে সভত करमवर (सप वस्त हिन्दांत्र द्वाथा। मुभ वर्ग योहां अति-(कोनाइन শুনি সেই হারে নিবিড় জনতা ভাষ, श्रानी खररणिए মুছুৰ্তে মুহুৰ্তে পড়ধ-কীটের প্রার। বিহীন শরীর वनन-ख्रान-কেশজাল ভাষ্য-শলা ! আফ্লিষ্ট কান ধূলি মৃঠি করে। নিবৰি ভাদের (क्रम एक (खन माना, কুধা-কৃষ্ণাত্র অংক পরিপূর্ণ बाभारत विखामा कति, প্রাণী সেই স্বারে क्त वा (म मव সেরূপ আকার ধরি। जे व दिश्ह অস্তু কোন পথ আশা কছে বিৎস, যে প্ৰাণী নাহিক পায়, এই ম্বারে ডারা কথকের মাঝে প্ৰবেশ কৰিছে চাৰ; ভনিয়াছ ক্ষি শ্ৰম নামে হৃংথী নৱে তুজ ধাব নাম. কের মৃত্তি ভার সেই আন এই কতে দিক মনস্কাম।" তৃ:খিত অস্থ্যর শুনি আশা-বাণী निकाहे डाडात्र याहे. করিয়া প্রমেবে বিনয়ে নিব্ৰ বারতা গীরে স্থাই , গুৰে সুণীতল সাভনাবাকেতে करङ् होत्रौ (अन्यदत्र, বক্ষঃস্থলে নিডা করতলে ধরি বলিজে বলিভে घर्षिन् पन यद्र , আমি এইরপে ৰুছে "চিরদিন बहे (म क्लानानौ धर्वि, कति व्यक्त्रह ।द्री वनन ना कानि मिया-नर्सदी ; প্রাণিগণ খাসি আইনে অপরাহু আহভাত ক্রার ্ৰা নিডা বেইকণ, পাবার প্রভাত হর,

এ ক্ষিতি-থন আমাৰ বিবাম নগ; **थुँ** फ़िशा **थुँ** फिश নিত্য যা সঞ্চয় করি. भगरन छेए সে যুদ্তিকারাশি কিংবা আন্ত লয় হবি ; তুলি আকিংশ এক গাত্যাখাতে নাশে. অদৃত্য আন না জানি কেন ৰা এডই ছবৈ আদে . ধাৰী হেব**ি** আর আর হাবে কেছ না বিশ্ব পোহায়. ন' হবিছে ভার (माना-मूटि श'द याय , कामि यहि स्त्रामा রাখি করে 🏗 ভথনি সে ২য় ভথা, गहें नहिं य প্রমেব ভাগোতে কিব। মগু के প্রশ্ন, জ্ব **সংস্থ** कछ कि कदिएव लोन, আবিল এক বলিয়া আমাধে এবে সে দেখ विधान !" ভনি চাহি ফিরে আশাফিরাইয়ামূপ, या ३ अर्थ ं কতে "বংস, চল ঋদুটে ইহাব ছব ፣ (कृति भीर्यथाभ व्यक्तारा वर्षः वात्र. ভাম ম হেরি শুস্তপাশে श्रानी (मधा हम्स्कांत , **শাড়াবে ত্রাবে** শ্র-পদে আছে স্থির, **南**(本)。 ছম্বার করে গম্ভীর, বহিছে 🖑 নিখাস-প্রখাস অপর্প তেজ তার, শরীব '' निष्माय भवाम 'द्वतनकि द्वन भाव ; धारत 🗟 🕆

নহে বত কাল

ধন মান তেজ

এখনও না পারে

দেবতুল্য ভেজ

रुटेन छेरमार

প্রাণীর জাবর্ছে

তিলাৰ্দ্ধেক কাল

আশার সংহতি

क्रवकान (यम

করি চারি দিকে

শত শত ভাবে

কেতন স্বৰ্

রঞ্জিত বসনে

খন্ত্ৰ-শোভাকর

চিত্রিভ ছুকুল

বৰনে আৰুড

সহত্ৰ পৰাণী '

নেই ধক্ত প্ৰাণী নিভ্য থাকে বার সে নিশাস-বেগ পাবর্ড আকারে সেই পথে দৃঢ় দৃষ্টি; প্রবেশে পুরে তথম ; বুরিতে বুরিতে স্বকাৰ্য্য-সাধন यथा ममीगर्ड এ বিশ্ব-ভূবন-মাঝে, ननिन वथन চলে, ভয়তরী-কার্চ আচান বুজি বল **পড়িলে ভাহাতে** मृहूर्स्व क्षारंतम जला; দেহ প্রাণ কোন কাজে; বুরিতে বুরিতে ধিক্ সে মানবে 🦈 এধা সেইরূপ প্রাণ সঞ্চারিতে জীবে, প্রাণী প্রবেশিছে তার, এখন(ও) কৃতান্তে না পারে জিনিতে ক্লণকাল স্থিৱ क्ट मृष्-भरम সেখানে নাহি দাঁড়ার, नःशंत्रि नर्क चिन्द ; পড়িতে পড়িতে কি কব এ ডেক সহিতে না পারে গ্রাণীর আবর্ডে নরকাতি তেকোহীন, আশা দৃঢ় করে ধরি, গুল্ত-বহির্দেশে রাথিলা আমারে নতুবা ভাদের ৰভনে স্থৃত্বি করি। করিভাম কভ দিন।" এত ক'ৰে কান্ত কৌতৃক প্ৰকাশি বিশ্বরে তথন নিখাসে হন্ধার ছাড়ে, আশার বদন চাই, কাপিতে কাপিডে আশা কছে, "বৎস, না হও চঞ্চল নির্থি আশার আড়ে; আছি সঙ্গে ভর নাই; **बहे वर्ष्ट-बादब** মৃহুর্ত্তে শতেক এ মহাপুক্র বুরিতে বুরিতে বার, ভূবনে বিখ্যাত বিনি, दांद्रस्त्य भनि উৎসাহ নামেতে অসম সাহস ভূমিতে নাহি দাঁড়ার; त्नहें बहावानी हैनि।" বিশ্বরে তথ্য উৎসাহ তথন আশার বাক্যেতে नगरत প্রবিষ্ট হই, আনন্দে আগ্ৰহে অতি, প্ৰবেশি নগৰে ৰলিভে লাগিল বসাবে নিকটে ভড়িত হইরে রই; সন্মুৰে দেখায়ে পৰি---পরে নিরীকণ "এই পৰে বাও কৰ্মকেত্ৰ-মাঝে প্রাণী হেরি রক্তুমে, না কর অন্তরে ভয়, শত শত প্ৰাণী মানব-জীবন কে বলৈ ক্ষপিক পতি করে মহাধ্যে ; ৰগতে প্ৰাণী অকর; নির্ধি কোথাও ত্রমূ ভীর তেকে প্ৰাণী-রক্ত্বৰ বছমূল্য বিরচিত, শরীর অক্ষর ভাব, কোৰাও চিত্ৰিত कीवदरण मिक् মৃত্যু ভূচ্ছ করি ধরাতল সুসক্ষিত ; रेबंटछात्र विकारम श्राव ; কোৰা চন্দ্ৰাভপ শৈবালের জল · র্থপন-প্রকাপ • বিস্তৃত গগনভাবে, नटह ७ मानव-धाँग, কোণা ব্যনিকা कोठ-क्ष क्रमाः আহার শর্ন आक्राहिए रम्बारनः चाचात्र मटर विवाम ; **মূত্তাৰ**ড়িত व बहीबश्वरण THIS WHILE ভুরুত্ব কুরুত্ব 🖛 😘 , क्षेत्र माचा विशेष रहे,

A PART OF THE PART

যুবা কোন জন

আন্তাকে রূপ ভং

ক্ষিতি কৃষ্ক করি भरब भरब भरब াতি করে অবিরত: াৰান শভ শত হাবক-মণ্ডিড পথে পথে করে গতি. ভ্ৰতার স্বোতে নগর প্লাবিভ রজঃ-পরিপূর্ণ পথি; হেম্মণিময় কোথা বা সুন্দর আসন সজ্জিত আছে, করি করবে/ড় প্রাণী সক্ষ লক্ষ দাভাৱে তাহাব কাছে; প্ৰাণী কোন জন ব্যিল আস্থে হেমদণ্ড করতলৈ, ধন জয়ধ্বনি আকাশ বিদীৰ্ণ প্রাণিবৃন্দ-কোণাছলে, হেরি স্থানে স্থানে বসি কভ জান भित्रद्वारा ब्दल मनि, (हलांग्र (ग मिटक ইপিতে কটাক रंगरे मिरक अबसानि ; তুরক্ষের পৃষ্ঠে কোখা বা সুসজ কেংকরে আরোহণ, ছির্ণ্য-মণ্ডিত বাঞ্জিয়া কটিভে অণি-লগু সার্সন; ইঙ্গিতে কটাক্ষে কোট কোট প্ৰাণী ट्रोपिटक क्रुटिटक् छात्र, অসি নিফাশন কবিছে গৰ্জন ভীবণ ঘন চীৎকার, কোন দিকে প্ৰনঃ হেরি কন্ত বাশা অন্তরে ভাবিয়া স্থৰ. विननी विनास ব,ধিছে কৰবী क्षांत्र-त्रांभि-माथा मूथ ह— পাডিছে আসন কেচ বা কুসুমে कांभण भत्री छल, অস্তবে হুবিনী বসিছে ভাষাতে সিঞ্চিয়া সুগন্ধিজলে। কেহ বা চিশ্ব পরিয়ে বসন করতলে মণিমালা, বাজুতে খুংখুর ছলাইছে ধীৰে বাছতে বাজিছে বালা; शेटन शेटन शेटन চলে কোন ধনী ठाक-क्या (यम भने,

ধীরে ধরাতলে বদি; চলে কোন বাষা রাজা-পদ পড়ে ধরণীর বুকে, কোমল কান ষ্বা কোন জন সম্বাধে পাতিছে হবে। নারী কোন 🚉 নিব্যি কোথাৰ বসিয়া ধনণীতলে, কোলে সুকুমাব হেরে শিশুমুণ वालन कति अक्टल, मांचारत्र निकः প্রসন্ন-বদন হৃদ্য গল্ভ তার, "কভ শিশ্বণ তেরে ক্রিয়াম্থে মুত্রাসি অনিবার, প্রণগীৰ ক্রোণ হেবি কোনগানে श्रमा (माश्रारा (पार्व, পূৰ্ ধোলক শশচিক যথা শোভে শশাক্ষেব কোলে। **क्वाबा क्वा**डाटम । श्रीवी क्वान २० ধেৰে ভার চারি পাশ, আছে শুচ চাতক বেমন বদনে প্রকাশ আশ; সেই শ্বৰী 🥇 আমানকে মগ্ন ধরিয়া কাঞ্জন-ডালা, করে বিড " পুরি কর্তল বিৰিধ রতন-মালা। निकटि याः ভনয় ভনয়া বান্ধব যতেক জন, ভাবি শূপ ব বদন ভাহার মুখে করে নিরীকণ; কোথাও আবার बुबि धुमार সহস্ৰ সহস্ৰ প্ৰাণী,---ভার-ভগ (া कति। इ.जन्मन শিবে করাখাত হানি। খেদ আর্দ্র া যুৱা, বৃদ্ধ, শিশু वमन-विशीन कांत्र, অনশনে কীণ শিরে কক্ষে, 🦠 কত কোটি প্ৰাণী বায়। कैरिम करू 🕫 হাগে থেলে কড ভাবে বলি কড জন্,

কৈর আইকারে কেছ বা মাণিককিরণে করে প্রমণ।
কত অপরণ কড কি অত্তত
রহস্ত এরণ কড,
পেণি চক্ত্ মেলি প্রাণি-রম্ভূমে
চলিতে চলিতে পথ।

তৃতীয় কম্পনা

রত্বোদ্যান-আকাক্ষা-ভবন, ভরিবাসীদিগের নৃশংস ব্যবহার ও কঠোর রীতি-নীতি। চলিতে চলিতে হেরি এক স্থাদে चभूर्स नव चशन, **অ**তি মনোহর তক্ষিরে ফল कनरकत्र शब्दकाः। কত শত প্ৰাণী **हु**ष्टि ह्या नित्क কত ৰত আসি কাছে, ফল প**ত্র হেরি** তক্ষর শিপরে উর্দৃধ হ'রে আছে। वितिष्ट् तक्ष কোথাও তক্সতে বহিছে ত্রভি বাস, र्घात्रमा कोनिएक শানিগণ ভার করিছে কত উল্লাস। মা**শ্চর্য্য-প্রকৃতি** তক্ষ সে সকল च्तिष्ड अतन्यम् क्छ् बद्यारम्टम কড় প্রান্তদেশে ভিলেক স্থৃহির নয়; ৰ্মিছে ভাহার পশ্চাতে পশ্চাতে প্ৰাণী হেরি কত জন, ড়ুহ সারি সারি **ज्ञाल (यह मिटक** (न पिटक करत्र शमन ; वस्य कछ छन्न ভ্ৰমে তক্ল-পাৰ্মে প্ৰাণী হেন ৰত শত, স্থাউৰ্ছ বাছ • नम উद्धान স্বিপ্ৰান্ত স্বিয়ত; লমে কিপ্তপ্ৰাৰ भटध नाहि हाइ ভক্ত না প্রধে তবু, ছাৰি নাভিখান WINDSTON TO THE !

কম্ভ ভক্ত পুৰা দেখি স্থানে স্থানে হির হ'বে সেধা খাছে; হোর বিসংবাদ ৰহা গওগোল হয় নিভ্য ভার কাছে; **২৬ ৰে হৰ্কা**ক্য অপ্ৰাব্য কটুকি गडफ राबादि रह. ভাবিতে ৰখন্ত শুনিতে ব্যক্ত मूर्थरा वक्कवा नव। কোন প্ৰাণী বদি করে আকিঞ্ন পরশিতে তরু-অল, আঘাত, চীৎকার क्डरे श्रकात কে দেখে সে প্রাণী-রছ। সে সব বিকট দেখিলে তথন কুরমভি ভরকর, মনে নাহি লয় সেই স্বৰ্দ বস্করাবাসী নর। উঠে ভঙ্গপরে সবার বাসনা উঠিতে না পার কেহ, বিপরীত মতি এমনি অভূত প্রাণীয়া পিশাচ দেহ। সহি বছ ক্লেশ কেহ বদি কভূ উঠে কোন তরূপরে, **७**थन ठोहित्क শত শত বন ভারে আক্রমণ করে; পাদপৃষ্ঠ ধরি ্ কেলে ভূমিডলে থণ্ড থণ্ড করে তূর্ণ, নৰ-দম্ভাষাতে निर्मन खहादन অস্থি মৃত করে চ্ব ; আরোহী যে জনে না পারে ধরিতে चट्ड काटी रख गर, ध्वमनि विवय বাদনা ছয়ত্ত व्यवि नेरी इर्वन ; 🔹 ুউঠে তরুশিরে ভবু সে পরাণী चानत्म काकन रीत्र ; থাকিয়া থাকিয়া ফুটিছা ব্দন মণি-আভা নেত্ৰ ধাঁধে; ছিল হস্ত পদ কত প্ৰাণী হেন হেরি দেখা তরণয়ে, क्छ छन्न वोहि উঠে অকাডবের क्ष जान तक नाम ।

মাভ≢ বেটিক দেখিলা যতেক নাহি কৰে জান সে ক্ষিরধারা (इम दोशायव यान, প্ৰাণী সে কাঞ্চন পাড়ে, **নাতা ভোক্তা** প্ৰ.ৰ দেখিলা যতেক কনকের ফল নেকের পাতা ভূৱে স্থাপদ মান; যভানে কানে বাডে। পত্ৰাদি 5% এই ভক্-শস্ত উঠে নিত্য প্রাণী **१हेक्टल** ८मधा আগে করি গেলা তারা, কভু আংদে কোন জন, ভোগে সে ঐশ তাই সে এখন সে প্রাণিমণ্ডলী অতি দূর হ'তে ধরাতে আশ্চর্য্য ধারা ।" নিমিয়ে করি লভ্যন; कामा हता । বলিভে বলিভে উঠে তঙ্গপরে বিষ্ণলীয় গতি পশ্চাতে পশ্চাতে যাই, কেহ না ছুঁইতে পায়, আসি একস্থা সে অঞ্চল-মাঞ্ डेडिट यथन ভরুবর-শিবে চকিত অন্তরে চাই। তথন সকলে চায়, लांगे कः भ দেখি সেইখানে বতন পাড়িয়া ভক্ত হ'তে পুনঃ ভ্ৰিছে প্ৰয়ত্ত ভাব; নামে শেষে ধরাতলে, মুথেতে 🗥 দামিনীর ছটা প্ৰাণিগৰ এবে ভুকুত্তল স্থিত নিতা হয় আধিৰ্ভাব , (कह नाहि कि रू राम , করেতে উণক দেখায়ে রভন ষায় মন্ত করি ৰ্কিছে ভড়িভবং, ভাষে সেবে জ্ডস্ড্, বেশেতে ৬ নক্ষত্ৰ পত্ন না পারে চলিতে না পারে ছুঁইজে हू हि ज्ञाम मर्का नथे, চরণে বেন নিগড়। করি সি'∻ কেহ অশ্বপ'রে মম চিত্তভাব ব্ৰিয়া ওখন ঝড়গতি সদা ফিরে, व्याना करह "वरम, सन. যেন অভিলাষ এই জব্নদলে ভেবো না বিশ্বয় व्यक्ति कदि हिस्त , ্ৰম্মি আশ্ৰহী গুণ-(क्इ हर्ल मर्ख কিবা দে কৌশলে ছলে কিংবা বলে किंछि कैरिल हेन-हेन, যে পারে উঠিতে শিরে, ছ†ডিয়া বুংহিত-নিৰ্ঘোষ কভু কেচ জার ভাহারে এথানে চলে দর্পে মদকল ; পরশিকে নারে ফিরে शांत्र % কেহ মন্তম্ভি খাপ**দ খেমন** অ**ও**রে দীড়ায়ে তব্ৰহ্ণ যে ভাবে ধাৰ, গৰ্জিবে ডখন সবে, ঘন শ তুলি দীপ্ত অদি অংসিয়া সম্বরে অথবানিকটে ৰ্জ্ৰধ্বনি নাগিকায়; পদধুলি ভূলি লবে।" व्यानी 🕬 হেন মন্তভাব 'এড कहे मस्ब বিভাসি আশারে ভ্ৰমে নিত্য সেই স্থানে, द्रडन मश्रम करते, শুর '' পদ্ভলে দলি কিবা মোক্ষপদ কি কামনা-দিদ্ধি গগনে কটাক্ষ হানে; কোথা পার পুন: পরে।" **কাচ-বি** নির্ধি দেখানে আগিতে আগিতে नाना क्य "ववा কড় চার অট্টানিকা---मिरित याउक सन, প্ৰভা ম নাই চাৰ ব্ৰহাতি विदा वनि निदन ু প্ৰকাশে বেন চল্লিক) ; े विद्यागतन दिन er die অপুৰ্ব্ব শোভা ধাৰণ ;

কিরীট মন্তকে किम श्रामन एउ শত শত ধাৰ পরিয়া উচ্ছল ৰেত রক্ত নীল পীত, বেগে নামে ধরাতলে. উড়িছে সভত ছাড়িয়া হন্দার কাঁপারে মেদিনী ৰট্ৰালিকা চূড়ে গগনে করি শোভিত। মহা দন্ত-তেকে চলে; "পৃথিবী স্ক্ৰন ভটিভে ছটিভে , প্রাসাদ-নিকটে বলে গর্ক করি मद्द উপनोक इद्र, বল সে কাছার ভরে. করিবে এ ধরা না চিন্তি কণেক করে আরোহণ না বদি সম্ভোগ (कम विधि शरक मात ? চিত্তে ত্যবি মৃত্যুভর। প্রাসাদ-শরীরে প্রাণীর শৃত্থল ম্বর-বীর্য্য ধরি বে আসে মহীতে আরোপিত কাঁথে কাঁথে, ভাহারি উচিত হয়, ভূঞ্জিতে ধরাতে <u> এখৰ্য্য</u> প্ৰতাপ সে প্রাণি-শৃত্বল লন্দে লন্দে এরা শিখরে উঠে অবাধে; পশু যারা ভাবে ভয়। পাবে কর্মফল ধর্ম ল'য়ে ভাবে উঠে যত দুর ক্রমে গৃহ-চূড়া পাবে মোক্ষপদ হার। উঠে তত শৃষ্ঠ ভেদি, করিতে পারিলে মর্ভ্যে ইন্সালয় প্রাণী সে সকল অসম সাহসে অৰ্গপুরী কেবা চার ?" উঠে অञ्र-जन एहिं , দ্র অন্তরীকে কেছ গৰ্মজাবে চলে দর্প করি উঠে ধেন ক্রমে প্রাণী সে সকল হেরি, আকাশে মিলিভ হয়, শত শত প্ৰাণী त्त्रीनाभिनी नक् অঞ্চ নয়নে যোর যেন দেহ চলে চারিদিক্ খেরি; ঞ্লদ স্থির রয়। জনক আমার" কেহ বলে "কোথা ্ মাঝে মাঝে কয় কোৰ বা প্ৰাসাদ কেহ বলে "প্ৰাতা কই"; অতি গুরুতর ভাবে, **८क** इंटिंग किरत দেও রাধানাথ, বিভিন্ন হইয়া পড়ে ভূমিতলে নাহি সে সমল বই।" ह्रकां हा शिशादा ; রুমণী বালক এইব্রপে কভ প্রাণীর সোপান আরোহী সে জন क्रमन कतिश धौद्र, কাচ বিনির্মিত গেহ. গলবস্ত্র হ'রে চলে কুডাঞ্চলি নিমিষে অদুখ্য নাহি থাকে কিছু मदक मदक मना किरत। नाहि बाटक थानी टक्ह। (म क्रमन-चर् না ভবে সে বাণী উটিয়া শিপরে ন পড়ে বাহারা त्म लागे भाष् म-लाव খন সিংহ্নাদ ছাড়ে; চমকে চমকে অসি হেলাইয়া हात्रिनिटक (वन ণড়িছে প্রাসাদ উদাত্ত ভাবেতে ধাম; नित्रि वानम वाए। কি পুরুষ নারী যে পড়ে সমূৰে স প্রাসাদমালা-উপরে আশ্বর্যা কিবা কিবিত প্রাণী, প্রাণী এক হেরি স্রমে, তথনি সে জনে থ**ও ধণ্ড ক**রে ক্রীড়া করে বেন বিষদীর লভা শাণিত কুপাঁণ হানি। क्षाजाम-मिषद्य क्रम् । শিশু এইব্নপে দেখিলাম কভ निकटें चारेटन व्यादाशे व्यागिता কত বে অনাথা নারী, म्कूष्ठे ज्लिका धरत ; नमा वस भन করিল বিনাশ প্রাণী সে স্কল षर्थका इहेबा (महे नव चन्नवादी ; क्तिती नित्रत्य गरतः

षायि करि, "हल बाहे मिटक व े माहिकदा नद्रा প্ৰাণে নাহি যায়া ७नि एवन कोनाहन, कल लागे (हम वर्ष, নির্থিব কিবা কেন কোলাই ভত্তেছে ছিড়িয়া কমল-কোরক इत्र পूति (म प्पक्षन।" हस्तो (यन हरन भए ; चटनक निरम् করিলা আমা কেহ বা পশ্চিমে কেছ উম্বরাক্তে দে পৰে বাইতে আৰা; পূৰ্কদিকে কোন জন, ভবুকোন জেমে সংব্যিতে না: উন্মন্ত পরাণী দেখি সেই সব भवागिव रम भिभामा। मांगरि करत्र शंमन, ব্দনক উপায় ৰেবে আশা মো প্ৰাণী হুই এক উম্বর-পশ্চিমে नहेमा तम नित्क यात्र ; किशि॰ नरकारत यात्र, নিকটে আসিয়া অভিধীৰে ৷ পূৰ্ব্বদিকে চায় কেশবিগর্জনে প্ৰচছয়ভাবে দীড়ায়, ছুটে কত মহাকার! ভয়ু অহি দা দেখি সেইখানে হৃদয়ে বেমন দেখিয়া তথন প্রাণী এক বৃদ্ধারা, कृषि**त्र टि्न खन,** শতগ্ৰন্থিময় ৷ বস্বধুলিপ জ্ঞলিল পরাণ रवन विवशास মলিন বপুতে পরা, (सर् इहेन म्ब्यवन । ধৃলিপিওবং [°]এই কি•তোমার থাত কিছু হা ক্ষিত্তাশার কণা কণা করি ভায়, আনন্দ-কানন-প্রান ? চারি দিকে প্র বাটিছে সকলে ভূড়ায় ভাগিত-আসিলে এথানে ঘোর কোলাহলে ধার, হৃদর-শরীর-প্রাণ ? সদৃশ ছুটি ক্ধার্ত পার্ন ইবৎ লচ্ছিত ভাবে কৰে আশা যুবা রুদ্ধ কত প্রাণী, "ওন রে বালক্ষতি, বণ্টন কবিং বিশ্ব না সয় প্ৰাণী যত এখা আমার সেবক कां फ़िलय (वर्ग हें नि ; এ নহে তাদের গতি ; क्रित्र महार স্ধানলে জলে ছুরাত্মা পরাণী ভুৱাকাজ্ঞা নামে कि करत चरत्रत करा, কখন পশে এথার, কাড়াকাড়ি ক' পরস্পদ্ধে সবে দাপট ভাহার তুৰ্দ্ধ প্ৰভাপ নিবারে ক্ধা আপনা। নিবারিভে নাহি ভার, ভৰি কুগ 😘 কত হোকরণ ফেলায় কুপৰে **ज्नारेश** वारी कछ (थम-वाकः संब, অহি সম পূৰ্ব ছল, ভৰে হিরচিত্তে वाद्रिक व्य⊸न সে জন পরশে বাবেক যাহারে জনমে না ভূলে তার। করে ভারে করতল; कछ निर 🕫 দেখিলাম আহা অধিকার মম নাহি থাকে আর সে প্রাণীশিক্তাতে ধার, বেশরে হয় কিবা গভি বিশুদ্ধ পুপের মত, রম্বী দু 🖫 ব কত পদ্ধ ধর নাহি কানি পরে চেয়ে আছে অবিরত; वृशा रंग स्मार्थ व्यामात्र ; প্ৰ বক্ষ 👯 অ্ঞ্জনে ভাগে *प*िषदि (म**श्रा**म - इन अहे बिदक ৰ্মতা ভেদিতে চাৰ, কিবা এ পুরী-সহিমা, নিকটে বে খানে वारवरम भूतीरक ं (एनं बड सन নালনে বেরটের ভার। व्यक्तिमा अक श्रीवया ।"

হার কড জন অধীর ভূধার निविध स्थापन धाव, তুৰ্বলা অবলা শিশু-হন্ত হ'তে আৰু কাড়ি ল'ৱে খার। দে প্রাণি-মণ্ডলী কত যে অধৈৰ্য্য কত যে কাতরে আদে. করিয়া চীৎকার मृहुर्ख मृहुर्ख मिर वृद्ध व्यानि-शाल । कैं। मिटल कैं। मिटल অর'কণা কণা व्हेन कत्त्र (म क्षांगी, নিত্য থিয় ভাব সদাই আক্ষেপে **অ**তি কটে কহে বাণী ;— "কেন বে সকলে আইদে এখানে কোথা জার অর পাব, विधित्र वश्वना তোদের লাগিয়া वन चात्र (कांशा शाव ; এ পুনী-ভিডরে নাহি হেন স্থান না করি বেথা ভ্রমণ ; নাহি হীন বৃত্তি ্চৌৰ্য্য কিংবাছল नां कवि बाहा शावन , তৰু ৰাহি ঘ্চে কাছালের হাল কি কব কপাল ছুষ্ট, কোৰা পাৰ বল, আহার তোদের বিধাতা আমারে ক্নষ্ট ; কেন এপুরীতে করিস্প্রেবেশ ভূৱিতে এ ছেন ক্লেশ, প্রাণি-রক্ত্রে ধনীর আশ্রয় नट् काकालात (मन।" তাণিত অন্তৱে কহিছ আশার "आत्र ना मिश्टि ठारे, এ পুরী-মহিমা গরিষা যতেক बंशान (मंबिट्ड शांहे , मिक स्मिक्षा हैया বাহিরেতে বার পুন: বাই সেই স্থান, শাসি বেণা হ'তে, मिथिया थ गव অস্থির হরেছে প্রাণ।" আশা কহে "কেন मधुत्र-वंहरम **উ**ठना रहेष थक, मिथादेव (छात्रः বাসনা বেরুপ

्रात्वा पर महिद्यपः

কৰ্মভূষি নাম चन এ ननती कर्ष ७८९ घरन वन. বালম্ভি তুমি ব্ৰিছ ভোমার অন্তর অতি কোমল ; কঠিন ধাতুতে নিৰ্শিত বে প্ৰাণী সেই বুঝে রহ এর, প্রাণি-রক্তৃমে ভ্ৰমিতে আপনি বিরিঞ্চি ভাবেন কের, **हम এ**ই मिरक তব মনোমত भनार्थ (मथिए भारत, কৌতুক লহরী এ পুরী-ভ্রমণ-তথন নাহি ফুরাবে।" এড ক'রে আশা চলে আগে আগে সভয়ে পশ্চাতে যাই ; আসি কিছু দ্র পুরী-মধ্যভাগে অচল দেখিতে পাই।

চতুৰ্থ ক**ম্পন**্ বশংশৈল—নিয়ভাগে প্ৰাণিসমাগম—স্বাংগা-

হণ-প্রথা--ভিন্ন ভিন্ন শিশ্ব-দর্শন-ভিন্ন ভিন্ন যশনী প্রাণিমগুলীর বীর্টি-কলাপ-দর্শন--বাল্মীকির সহিত সাক্ষাৎ। নিকটে আসিয়া নির্থি সুন্দর च পূर्व विश्वतः विशे ; কনক-প্রদীপ শিপরে শিপরে ধেন কিরণের বেণী। শৈল-চারিদিকে ভ্ৰিভ নয়ন প্ৰাণী লক লক খন, মাল্য মনোহর কুমুমে গ্রথিত भृत्य करत्र छेश्यक्रमण , रुष्ठ अवस्वनि चन चन चन ক্ষণেক নাহি বিশ্রাম, যেন উর্ণিরাশি ৰগরাশি-অকে ' গতি করে অবিরাম। গ্ৰাণিৱন্দ ভাগি क्षरक करक मृद्य

হেমচন্দ্রের গ্রন্থাবলী

'চুড়াতে জলিছে	মাণিকের দীপ	চলেছে গায়ক	নটিক বাদৰ,
সন্থনে দেখিছে তার।		बीना द्वप्-चानि-धारी।	
দে খচলে হেরি	বেরি চারিদিক্	উঠিতে বাসনা	করে না অনেকে
	ারোহণ করে,	আসিরা ফিরিরা বার,	
আমূল-বিশ্ব	रेमन-व्यक्त व्यानी	নীচে হ'তে শৃষ্টে	ফেলি ফুল-মালা
অপরপ শেভাধরে!		দেই অচলের গায়।	
	नित्त्र नित्त्र नित्त्र	वहसम् भूगः	করিয়া প্রায়ান
	জ প্রশন,	উঠিছে অচল	ारमरम,
	প্রাণীর প্রবাহ	পাই বহু কেশ	
কৌত্ত	कित्र पर्यन ;	নামিয়া আ	
শিলাতে শিলাতে	পদ রাখি ধীরে	ৰিজাসি আশারে	
	পরাণিগণ,	কিবা হেরি	
	পড়ে কত জন	আশা কচে "বৎস,	
	গড়ে দরণ ;	অতি ধনোরম্য স্থল।	
ৰ্টফল ধ্থা		বাডিল কৌতুক	
	ধুক হ'ত গণ পড়ে ভ্ তলে ,	খানদে আ	
41481	গড়ে ভূতণে, প্রাণীনিক্যনিক।	আগে আগে আশা	
		बहर १९	
	ণড়ে অচলে। কেহ নাছি পারে	উঠিতে উঠিতে	শুনি শ <i>∄'প</i> রে
		সুমধুর ধ্ব <i>নি</i>	ঘন.
(कह न	े बादबारह श्राः,	মন্তব্য-উপরে	পরিয়া হেমনি
्रम ध्यानि-अवार	क्षितिस्क्रम-शि	স্ভত করে	लड्डन :
ক প্ৰ	ल : इ.स. ७ ० ।	যেন শভ বিনা	
	যে আছে সম্ব	মিলিত করি	
	যভনে কভ,	ভাবণে প্রবেশ	
	কনক-প্রানীপ	পুনকিত ক	
	র স্থাপে দত্ত।	শুকে দৃষ্টি করি	বোমাঞ শই
	দীপ লক্ষ্য করি	ৰ্ডে গৃহ সাম বিক্ষয়ে ভা	Garage Care
	ীম নাহি জ্ঞান,	विदा दशन रह	
	দেহ ভাবি ছার	কিব কোন প্র কিছুলাক	। विद्यु भारे
ি পূৰ্ ক	রি নিজ প্রাণ।	হাসি কহে আশা	"त्रभा क्यांकिशः
	মণি-মৃ্জারাশি	হা।শ কংহ আন। দৃষ্টিনাহই	पूर्वा ना। । स्वास्त्र
উপাৰি	ৰ কাহার শিরে,	ण मध्य स्त्रन	चित्रका क्रोडेका विकास
ু কাহান সম্বল	নিজ বৃদ্ধিবল	এ মধুর কান নিনাদিত	शिक्षा चारणा शेके रामस्या
क्षाहरण खेडिएइ धीरतः;			
🤌 🏭 রাশি রাশি	গরে কোন খন	বীণা কি বাশরী	
কাৰ	ক্রতলে তুলি,	নিঃস্ভ ন	
^{মেন্ত} ্রুত্বা পরিছে	হতনে ক ক্ষেতে	ৰতঃ বিনিৰ্গত	ুৰ্ব্বলিত [:]
्र _् कांग्र	-গ্ৰন্থ কত্ৰলি ,	দ্ৰুমে নিগু	
ক্ষেত্ৰা ল্লপের	क्षांति ग'रव सिरव	्नना गड़नारव	वाबूटल वार
pcet	र रक्त संक्र	of the section of the	

केमेंटर्गन्ने मर्ग ৰেষ্টিয়া বেমন खमत खरम खब्बति।" ভনিতে ভনিতে আশার বচন क्रमनः चहरन छे हि, বত উৰ্চ্চে বাই তত সুমধুর श्विन खरम त्रिश हु।। ছাড়ি অধোদেশ উঠিছ যথন মধ্যভাগে গিরিকার; শরীর পরশি थीरत थीरत थीरत বহিল মুছল বায় ! সে বাযুতে মিশি কুমধুর জাণ क्रिन चारमाप्रमा ; স্থ্র ভি মধুর যেন সে অচল সৌগদ্ধে ডুবিয়া রয়; জিনিয়া সে গন্ধ অগুরু চলান পুষ্পগন্ধ ষেন মৃত্ ; মরি কি মধুর মনোহর বেন দেবের বাস্থিত মধু। ভ্ৰমিছে সে গন্ধ বেরিয়া অচল প্রতি শিপরের চুড়ে; সে ভাগ নিয়ত ছুটিছে প্ৰনে কতই যোজন যুড়ে; নাহি হয় হ্রাস ক্ৰমে যত বাই क्राय वृक्षि छछ इत्र, ভ্রাণপূর্ণ করি নাসারদ্ধ যেন প্রাণ করে মধুমর। সেই গল্পে মঞ্জি ভনি সেই ধ্বনি ভ্ৰমি সে অচলপ'য়ে ৰ্ষিতে ভ্ৰমিতে কত কি অডুভ দেখি চক্ষে সুখভরে ; নির্থি ভাহার কোন বা শিখৱে व्यापी रित रकान बन, সত্ত্র সুসাধ্য অসম্ভব ক্রিয়া निभिष्य करत्र नाधन; কোন গিরিচ্ডে বৃদি কোন প্ৰাণী मनि क्थ ट्लारेट्स, শণপ্রভা ভার ৰশবভী হ'বে চরাচর খুরিভেছে; क्वां वा विश्रद বৃদি কোন খন ভোৱে ভোগবড়ী-বন.

কেহ বা করেতে আকর্ষণ করি ঘুরায় বিশ্বমঞ্চল. কেহ বানক্ত গ্ৰহ, ধৃমকেডু यतिया त्रचाय भथ. লক্ষ্য করি ভাহা শৃক্তমার্গে উঠে ভ্ৰমে সবে চক্ৰবৎ, কেহ বা ভেদিয়া কুৰ্ব্যের মণ্ডল षाञ्चामन प्राव रक्ति, খাননে দেখিছে বাষ্প সরাইরা নিবিড বিছাৎ-কেলি, কেহ শৃন্ত হৈতে পাড়ি চন্দ্র-ভারা করতলে রাথে ধরি, পুনঃ ছাড়ি দেয় সর্ব্য অঙ্গ তার স্থে নিরীকণ করি; দেখি কোন চূড়া উপরে বদিয়া স্থানিয়-মূরতি প্রাণী, তন্ত্ৰী বাকাইয়া মনের আনন্দে ঢালিছে মধুর বাণী; কোন শৃদে হেরি প্ৰাণী কোন ধন মন্তকে কাঞ্চনময়, শিধর উপরে জলিছে মুকুট रत्र (यन पूर्वा) एत्र ; হেরি দিব্য মৃষ্টি দিব্যাসনোপরে প্রাণী বৈদে কোণা স্থবে, ধক্ ধক্ করি হীরা-থণ্ড সদা अभीख श्रेष्ट तूरक , হির শান্ত প্রাণ হেরি কত ঋষি বসিয়া অচল-অকে, গ্রন্থ করে পাঠ বেন ধ্যান ধরি ভাগিছে ভাব-তরছে। হেরি অপরপ অচল-প্রকৃতি প্ৰাণিগণ যত উঠে, ছাড়ি মধ্যদেশ হির হয় হেথ त्महेबादन भग्न कृत्हे। তথনি শিধরে रव भूकशा मम मिक् मरक शूरत्र, कैं। शास्त्र निमा অচল-শরীর , क्थारवरम व्यमत्रभूदत्र । वानि त्रहे बन व्यत्व विवा मृरि বৈদে চাক পুষ্পপন্ন,

(इंग्रेस्ट्रें अश्वनी

दक्वा चार्वाप्टर ভারতীর পুত্র চ্যে অন্ত বড छाहात दीका वाबात। পূজে তারে নিরম্ভর। এবে স্বাৰ্যভূষি কোন্ বীরভোগ্যা সে ভূধর-অব্দে ह्यदक खबदक কোন কথী বলবান, কত ছেন পদাফুল, ক্রিয়া হমন দৈত্য-রক্ষঃকুল (मथिनाम द्राप्त উপরে উপরে दक्का करत चार्ग्यमान । कोकृत्क र'ता चाक्न। ্যশঃ-প্রভাগ্তণে কোন্ আৰ্যান্থত বিজাসি আশারে বিশ্বরে তখন चरतन उच्चन म्थ, আশা মৃত্ভাদে কয়, হৈয়ে কোন্ নারী বিভীয় জানকী প্ৰাণী যে এথানে "ভাৰে জীবনীলা শ্লিম্ক করে পতি-বুক; এই ভাবে হেখা রয়। दिमविधि धर्म কেবা রক্ষা করে জানাতে বারতা কোন বুধ মহামতি. প্ৰাণি-রলভূমে হর খুজে সিংহনাদ, ভিলকম্বরূপ ব্রাহ্মণকুলের আইদে দেবপণ निषत्र-छेशद সাধন করে উন্নতি; করিয়া কত আহলাদ। বিজ্ঞানে বারত কত এইরূপ প্ৰাণী যত জন बहे ख (मधिष्ट उधारेबा वाबरवाब, পদ্মাসনে আছে বৃসি, ভাবিয়া না পাট কি দিব উত্তর প্রলয়ে অকর **চক্ষে বহে नौ**त्रशत्र । ধরার ভূষণ मानव-हिएखद मनी। করুণ-বাক্যে হেলে অঞ্ধারা ত্তব পরিচিত দেখ গিয়া কাছে ঋ্যি অতি ব্যগ্র মন, প্রাণী এবা পাবে কড, অতি সম্ভ আগ্রহে আবার করিয়া আলাপ বছন হেগ্নিয়া देकला स्थादन मञ्जादन। পূর্ব কর মনোরও।" "কি বলিব ঋ কহিছু তথন কাণে কহি নাম একে একে আশা কি দিব সংবাদ তার— ठिनिन दिशासि बस्म, তোষার কোশ ভোষার ক্ষযোধ্যা मिथिए मिथिए পুলকিত তম্ব সে আ্যা নাহিক আর; চলিফু তাহার সঙ্গে। कत्र-मणिया ্তুবেছে এখন ভারতী প্রভৃতি वाान, कानिमान, নিবিড় ভাষনী ভার, চরণ বক্ষনা করি, त्म बीमा-सकार সে ধন্ত-নিৰ্ঘোষ থনা দীলাবতী শ্বর-আচার্য্য আর না কেহ ওনার। মূর্ত্তি হেরি চক্তরি। विक, कवर्ग निरचन स्टब्स् বেখানে বনিয়া केंद्रिष्ट् रमधारन ্বেদ ধর্ম সর্ব্ব গিয়া, বালীকি অবরপ্রার, অকুন পাথারে ভালে প্ণাক্ষি क्ष्मधूत्र वीषा : भागत्म वाकादा পরমূধ দির্থিরা। প্রীরামচরিত গার। আৰ্ব্য-খবিস্প নে বচন ওনি অমর ত্রাবণ দেখিয়া আমারে बहिन (व किया छाउ, महार्ज-मानम र्'रत्, কৰি চতুৰিব 🛊 বে ভাৰত্বর 🦠 ं चरतने वानिहा क्षिणा श्रमपृति वाशमूर्व बनवार । व्याच निरदांबान न'रत्र। काविटक (न क्या व्यवस्थानमञ्ज जिल्लानिन पत्र। কেবা রাজ্য করে ভার and a supplemental state of

পড়রে অভিত ब्रेट्व हिब्ब्रिन বাণীতে প্ৰকাশ্ত নয়, য**ত ছিল সেথা** আৰ্ব্য-কুলোৱৰ महाव्यांनी मटहाएव, ঘোর ব<u>জা</u>বাতে · একরারে খেন আকুলিত সম্দর। সে হুঃধ দেধিয়া সে ভাবে আগ্যন্থতে চিন্তাকুল; ভূশিয়া দৰ্পণ আশা কহে "ইথে চাহি দেখ আগ্যক্ষ। দেব রে দর্পণে ভবিষ্যতে পুনঃ ভারত কিরূপ বেশ, দেখে একবার প্রাণের বেদনা च्ठांव दत्र मदनद (क्रम ।" দেশিলাম চাহি रवन পূর্বাদিক व्यक्तिहास्य क्रियम्ब ভারতমগুল সে কিরণে বেন व्यमीखं रहेश द्रव । ভারত-অননী বেন পুনৰ্কার বসিয়াছে সিংহাসনে, ফুটিয়াছে খেন ভেষতি আবার পূৰ্কতেৰ হাভাননে। ঘেরিশা ভাহারে নব আর্ব্য-জাতি কিরীট কুগুল তুলি, পরাইছে পুন: ভূবণ উজ্জ্ব ্বাড়িয়া কলছ-ধূলি। নবীন পভাকা জনি ভূলিয়া গগনে ছুটেছে আবার দৃত, ভূবন-ভিত্তরে क्ति वन नाम বদনে প্রভা অভুত। **निक्ममबाजी** মানবমগুলী भानि नश निब्बन, करत्र अख्रिदेवक वर्ग केळनारम 🔻 পাথত পাৰ্য্যৰ্থন। পশ্চিমে উত্তরে হয় গোর-ধানি ্মানদ-স্কীত গায়, ^{ष्ठेट}र्व निष्यवादि ভারত প্রস্থানি ्र चारांत्र गब्जिया शासः উঠে বিষয়ের পুন: পৃত্ত ভেদি

हुट हे श्रेनवाद वाह्वी समूरा গভীর সলিলে ভরি। আনন্ধে আবার ভারত-সভান . বীণা ধরে করতলে. স্বাবার আনন্দে বাৰাৰে হন্দুভি वञ्चका-मार्य हरण। सिष्य स्म मर्भाव সপূৰ্ব প্ৰতিষা া ন পূৰ্ব হরব-বাম্পেতে আঁথি, পূরিক ক্ষমনি ক্লম কৃটিল বাসনা বদরে তুলিয়া রাখি। দেপিতে দেখিতে **নে দৰ্পণ ছালা** . আরো উর্বভাগে বাই, অরে ভরে খেন হেরি সে ভ্ধর উঠে শৃত্তে ৰত চাই। আশা কছে "বংস, ক্ত দূর বাবে নাহি পাবে এর পার, यछ मूत्र बाटव তত প্র ক্রমে শৃদ পাবে **অন্ত আর**।" শাশার বচনে কান্ত হ'রে কিরি প্নঃ দে অচন-অদে, নামি কিছু দূর নির্ধি বেথানে স্ক্ৰি ক্ৰণে রকে। পদতলে তার দেখি মনস্থৰে বিসিয়া ভারত বিজ, বাজাইছে বাশী मध्द्र ञ्बद **ছড়াইয়া द्व**ग नि**ञ**् ক্ৰমে ভূমিতলে অবভার পুনঃ তৰু বেন প্ৰাণ মন, করে আকিঞ্ন গিরিতলে থাকে হথে আর কিছুক্ণ! করিয়া হরণ ৰথা নীড় হৈতে স্বরণ্যে পক্ষীশাবক, ক্রভবেগে গতি ক करत्र शृहमूर्यः ছুর্ত্ত কোন বালক। त्महे नकी निष তখন বেমন চার হৃঃথে দীঞ্পানে, 🛴 কাকলি করিয়া णापूर्विक स्क कार्य।

সেই ভাবে এবে কিরিয়া কিরিয়া অচল-শিখরে চাই, মুক্ট উর্জাল জ্বলে হেম-দীপ হেরিতে হেরিতে বাই।

পঞ্চম কম্পনা

त्यह, ভक्ति, वाष्त्रला, अवन अञ्चित निर्वारत প্রবেশ করিবার পূর্বের এই অঞ্চল অভিক্রম করিশ্বা বাইতে হয়—কর্মক্ষেত্র এবং স্বেহাদি অঞ্লের মধ্যবর্ত্তিনী নদী-তত্বপরিস্থিত পরিণয়সেতু--তাহাতে প্রাণি-গণেব গতি বিধি। করি পরিহার কৰ্মকেত্ৰ এবে আশার সহিত পরে উপনীত হই আসি এক স্থানে নির্ধি আননভরে---নব-দৃক্বাময় ভূমি সমতল বিস্তার বহল দুর, প্রাস্কভাগ তার পডেছে ঢলিয়া নীল নভঃ স্মধুর। ভরুর শিপবে জেকণ তপন वन किंकि किंकि करत्र, ভামুর্শ্মি মাঝি শাখা বলী যেন তুলিছে সুপেব ভরে, কিরণ প্রকাশি প্রফল্ল ভাস্কর প্রকৃল করেছে বন, পর্মশ শবীর মুহুতর তাপ শ্বিগ্ধ করে অহুক্ষণ। (यन स्मश्रुद्र হেমন্ত-প্রভাতে স্বাের মৃহল ভাতি, যুথে ভূঞে লোক আলোকে বসিয়া কিরণে শরীর পাতি। পশু পক্ষী প্রাণী এথা সেইরূপ ভ্রমে স্থাপে নিরন্তর, অঙ্গেতে মাথিয়া ক্সিগ্ধ নিরমল উচ্ছল ভাহর কর। নেহারি সেখানে চারিদিকে কত

নিজ নিজ বৎস ল'য়ে গাভা মেধ নিরস্তর স্থথে চরে। শস্তুনানাজাতি ক্ষিতি-শোভাকর বীজ পুষ্প ধরি কোলে, প্ৰন-হিলোলে কিরণে ডুবিয়া হেলিয়া হেলিয়া দোলে। निविश को मिटक कोजूरक रमधारन শশুন্তন্ত নতশির. কাঞ্চন-বরণ মঞ্জরি পরিয়া **जूर**न (यन मशैद्र । মনোহর চিত্র ষেন সেই স্থান চিত্রিত ধরণাবুকে, কিরণে স্থন্দর চলে পথ বহি প্রাণী সেথা কত সুথে। চলি কত পথ ক্রমে এইরূপে আপি শেষ কত দূব, নির্খি সমুখে চম্কিড চিড সুস**জ্জ গৃহ** প্রচ্র , শোভে সৌধরাব্দি অভ্ৰ-অঞ্চে ধেন চিত্ৰিত স্থলৰ ছবি, তাহে যেন ধ্ৰে রঞ্জিত করিয়া কিরণ ঢালিছে রবি। দেবালয় সব সেই সৌধ-বাগি স্থ্রচিত্ত মনোহয়, অবিমৃক্ত শ্ৰেগ ওরে শুরে গুরে শোভিছে ভটের পর। চলিছে তবঙ্গ থব্ৰত্ব বেপে ভিত্তি প্ৰকালন করি, উঠিছে পড়িছে আবর্তে ঘুরিছে সূর্য্য-প্রভা জটে ধরি, ছুটিছে তটনী ছণ ছল ছল কুল কুল কুল নাদ, কাপিছে দলি धत्र धत्र धत्र ঝর ঝর ঝরে বাঁধ; ঘুরিছে খার্ব षद् षद् षद् কর্ কর্ কর্ ডাক, ৰীপিছে ত্রী লপট ঝপট धमक धमक धांक ; मिल-ग नव क्लध्द কিরণ ফুটিছে ভার;

917 100 19 CHIN 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11		
	ধুলিয়া অঙ্গুৰী প্ৰায় অঞ্জুলে উচিমনে উভে উভ ;	
উটে দেবালয় জলে চেউ খেলা অগ্রিসাকী করি সং	ু. লোকৰে দান	
বৌদ্র-খেলা ভার সঙ্গে করে করে করে করে করে	वि	
আন্দোনবাথ নয়ন বিফ∤বি ক্রিছে প্রিছে। ১৯	ভয়ে আননে	
দেখি সে কভ চ রক্তে। সেক ১ নবে কোনে		
াে বিনাহৰ নীরব উপৰ এইকলে বাহ	হতে বাধিয়া	
সেতু বিবচিত আছে, প্ৰাণী কোঁছে সেত্ৰ'	'श्रेत	
গ্ণল মুপল প্ৰাণী সেখানে উঠিছে আননে	ং, প্রুম্পিক রক্ত	
দাঁড়ায়ে তাহাব কাছে. প্ৰভট যথে অসুব	1	
পেবালয়য়ত কত যে জুনর কত হেন কপ নিয	্ বৰি কৌতক	
অবস্পারণন তবি, মনস্থানির হর		
উচ্চেবেশপনি প্রতি দেবালয় উঠিছে দম্প্তী হাসি	তে হাসিতে	
ভানে স্থ্য দেবতার। বিচিত্র সেতব প্র।	1	
শশাৰম্ঘটি সুময়লে ধানি আশোকতে "বংস, স্ম	াগে ভোমার	
হর মহ উচ্চবিণ, দেখা সে অনুস সেল		
চলন-চাৰ্চ্চিত ক্সনেৰ ছাণে আমাৰ কাননে কে		
প্রফ্রিড করে মন। কেরল স্থেপর হেজে		
^{প্রব-} জ্ঞেতি পঠি জয়জয়ন/দ প্রিণ্য-সেত না	মে পবিচিত	
সক্ষত্র উঠে গন্তীব, এ কানন-মানে ইচা		
বিবাজার নাম ভক্তকণ্ঠ-শ্ত্ত আবে ইথে লোক মিটা	ইতে শেষে	
বোমাঞ্চ কৰে শরীব। কানন-লম্ল-জন্মা।	কানন-ভ্ৰমণ-স্পৃহা।	
গানতা গীত-⊲'লপনি এই দেতু ব'হি দ∾পত	গী ষে, কেং	
কত মত মহোৎসব, পারে হৈতে নদী পা	পারে হৈতে নদী পার,	
নয়ত দেখানে প্ৰনিত কেবল এ কানন-মাঝে আ	ছে যত সুখ	
স্থদ আনন্দ-রব। নিতা প্রাপ্তি হয় তাব		
াগ্ৰাপ বদন প্ৰাণী কড জন দেখিছ যে অই নদী	অব্যুপারে .	
প্রতি দেবালয় খারে, দিবা উপব্ন যত,		
ি অভিপ্রেত দেব নিজ নিজ প্রবেশিতে তায় আনাব	কৌশলে	
উপনীত সেতৃ-ধারে; আছে মাত্র এই পণ।	!	
^{শতুন্ধে} প্রাণী দেখি কত জন সদা প্রীতিকর, সং	ভিভ সুনাৰ	
ধানদ্কী ল'য়ে হাতে, অই সব উপবন,		
াণীর্সাদ করি করিছে পরশ পবিত্র নির্মাল অংথি		
প্ৰিকমণ্ডলী-মাথে। প্ৰাণীৰ শাস্তি-কামন।		
^{ট্যান্} র্বা-পান ধরি করে কবে বিচিত্র গঠন অপূর্ব	(कोनटन	
ত্ই ছই সুখী প্রাণী, সেতৃ বিরচিত এই, ^{নৈক পুরুষ} রমণী জনেক সেই হয় পার নিগ্		
^{নিক পঞ্} ষ রমণীজনেক সেই হয় পার্ নিগ্ বিদ্নতার উভপাণি; বুঝেছে ইহার যেই।"	গৃত সন্ধান	
বদ্ধ করে উভপাণি ; বুঝেছে ইহার যেই।"	_	
পে গড়ি খুচ অঞ্চলে অঞ্চলে এক ক'য়ে লাশা আমা		
তত বিধি দৃষ্টি তত, সেতু কৈল আ ারোহণ,	,	

ছিল-ভিল্ল দেহ কৃক্ষ শুফ্ পাথা সেতৃ-মূণে স্থাপ নবীন আনৰে অস্থির শরীর হয়। কৌতুকে করি গ্য়ন! চাতে চতুৰ্দ্ধিক আকুল নয়ন कृष्टे शास्त्र समिथ রঞ্জিত বসন চঞ্পুট ভয়ে **অ**ড, ভূষিত স্থার সেতৃ, ঘন তক্ষণাধা শূক কলরব ন্তম্ভে ক্সন্তে ভাছে বসন্ত বায়ুতে নথে নথে ধরে দড। উড়ে খেত পীত কেতৃ। কত পডে তলে ভগ্ন শাধাসহ वक्तरम विविध গ্রথিত সুন্দর ভগ্ন পাৰা ভগ্ন পদ. সজ্জিত কেডনকুলে, হ'য়ে গত জীব পড়ে পুৰ: কভ নবীন পল্লব হুছে মাঝে মাঝে চঞ্চবিদ্ধ করি ছদ। মঞ্জর) সহিত হলে। এথা সেই ভাবে শত শত প্ৰাণী মৃত্ল প্ৰন বহিছে মুছল সেতৃ হৈতে পডে জলে, পড়িছে শীতল ছায়া, ক্ষা সেতৃ-কম্পে কেহ, কেহ পিপাসায় বসিয়া পল্লবে ৰধুপ্ৰিয় পাথী কেহ ঝটিকাব বলে। কিরণে ঝাড়িছে কায়া। না পারে উঠিতে পড়ে একবার বায়ু আমোদিয়া উঠে চাৰুবাস াস চলিতে চলিতে বায়, মুগ্ধ নবরসে বিষম তরকে ভাবে, পুন: কত জন কভ জ্বন হেন চলে প্রাণিগণ তলগামী হয় ত্র'দে। বায়্-গদ্ধে স্মিগ্ধকায়। ভাসিতে ভাসিতে কদাচ কথন ষাই কভ দ্র সেতৃমূখে হেন কেহ আসি লভে ক্ল, পাই পরে মধাস্থান, ষ্টে এ ঘটন কপালে যাদের সেথা থরভর ় বোর রৌদ্রভাপ দৈব দে তাহার মূল ৷ উত্তাপে আকুল প্ৰাণ! নির্থি চমকি কভই পরাণী প্রচণ্ড কির'ণ উত্তপ্ত বালুকা ভাগিছে নদীর জলে. করে দথ্য পদত্তল, প্রাণিগণ সবে দেতৃম্পঞ্িভ আকুল তৃষণায় শুষ কণ্ঠ তালু দেখে ভাছে কুতৃহলে। প্রাণিগণ চাতে জল। কেহ বা যুগল কেহ ভাসে একা বহে বেগগতি নীচে ভয়কর নদীর আবর্তে ঘুরে, স্ৰোতম্বতী কোলাহলে, প্ৰাণী শ্বী-পূৰ্য ভাবে নদীময় ভীষণ গৰ্জন বৰ বৃশিপাক তুক্ল আকেপে পূরে। জন তটের নিকটে তীব্ৰতর বেগে চলে ! আংসি কভ জন ভৃকম্পনে যেন মাঝে মাঝে মাঝে ক্ষণে বাডাইছে হাত, (मञ्करत हेन हेन, পুন: সৃর্ণিজ্ঞ বালি-মৃঠি ধরি বহে মাঝে মাঝে খন হত্কার সূরে পড়ে অকশাং। দপে প্রকশাং তৃরস্ত ঝটি প্রবল। প্ৰাণী কত জ ভাসে এইরূপে প্রাণী কন্ত এবে অস্থির চবণ সেতৃ হৈতে পড়ি নীরে, প্রাণী সেত্র উ^{প্র} মৃথে প্ৰকাশিত ভয়, চলে অন্ত প্ৰাণী অন্বির শরীর हक्षण सम्बन, দেখিতে দেখিতে ধীরে। দেখিয়া সংথেতে ভাবিতে ভাবিবে চলে কটে সেতুময়। ভংগীড়িত বন वर्षा बद्द अएक चारब्रा कृष्ट्र मूत्र महि, ষতেক বিহল্পচয়,

চাডি মধ্যভাগ ক্ৰমণ আসিয়া সেতৃপ্রান্ত শেষে পাই। অতি মনোহর এখানে নির্থি আবার শীতল ছায়া। পর্শি ভথনি পডে**ছে সেতৃতে** শীতল হইল কায়া। পড়িছে বে এত व्यानी नमी खरन তবু হেরি সেইস্থানে. চলেছে আনন্দে লক লক জন দল প্রফল্লিড প্রাণে। চলে চি**ত্ত-সুথে** সদা তৃপ্ত মন অকুর শাস্ত হদয়. দে বনে তাহারা মধ্য কিং সম कत्रस्य भर्गक्षः । কেন যে বিধাতা স্বার ভাগোতে এ ফল নাহিক দিল। কেন এত জনে বিমৃথ হইয়া বিপাক-স্রোতে কেলিল। সেতৃর নির্মাণ কেন বা যে হেন রচিত এত কৌশলে। উঠিয়া সেতৃতে কেন এক প্রাণী মগুহয় পুন: জলে । এইরূপে চিক্তা ধরি চিত্তে নানা আশার সহিত বাই, সেতৃ হয়ে পার প্রোণী শান্তিবন হাসিছে দেখিতে পাই।

ষষ্ঠ কম্পনা

ণরোভান—ভাহাতে ভ্রমণ—অপুর্ব তক্ত-পুশ দর্শন —সতী-নিশ্ব(র—প্রণরের মৃষ্টি তাঁচার সহিত সাক্ষ'ৎ ও আলাপ।

বধা ববে ঋতু সরস বসক প্রবেশে গরণী-মাবে, শোকে ভরুলতা ধরি চারুবেশ নবীন-পল্লব সাজে; বাবে ধীরে পত্র প্রাতন ছাড়িয়া বিটপী-ক্ষক,

চাক কিশলয় প্রকাশিত ধীরে পাইয়া মলয় সক। নব চাক মৃগ্ধ কিপলয় যত হরিত-বরণ শাখা, মঞ্জবী মধুব পরিয়া স্থন্দর বিকাশে তরুর শাখা। ষথা অপরূপ সে বসস্ত কালে चानन डेथरन मरन, হৃদয়ে অব্যক্ত স্থাবের প্রবাহ প্রকাশ্ত নহে বচনে ; এথানে প্রবেশি তেমতি আনন্দ উপজে হাদ ময়, শীত প্রিগ্ন রস ষেন সে এথানে বায়ুতে মিশ্রিত রয়; मिथ हात्रिकिक উত্থান রচিত প্রকাশিত চারু ছবি, সাজিছে সুন্দর ন্তবকৈ স্ত 'কে বিবিধ শোভা প্রসবি; অভি মনোহর উচ্চানে সে সব পার্ঘে পার্ঘে অবস্থিতি, অঙ্গে অঙ্গে মিশি মধুচক্তে যেন অপুর্ব বিকাস-রীতি, পু ক সকল প্রবেশের মুথ ভুণাপি মিলিভ সব , নৰ নৰ জাপ প্রতি উপবনে সদাহয় অফুভব। আশাকহে "বৎস আমার কাননে স্থির শাস্তি এই বেশ, কিছু কাল সুথে ভ্ৰমিলে এথানে ভূলিবে পথের ক্লেশ। ষত উপবন দেখ ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ন ক্ষেহ-স্থান। প্রভৃতি সে বস (मोटाफा. व्यनग्र সদা স্থিয় করে প্রাণ। উচ্চ কোলাহল কটু ডিজে সর না পাবে শুনিতে এথা, ধীর মিষ্ট ভাষা ধীরে ধীরে গতি এখানে প্রাণীর প্রথা; সবে সভা ভাব সবে সভ্যবাদী পরিসক প্রাণে প্র'ণে,

আসিলে নিকটে আপনা হইতে এখানে প্রাণীবা ছেন হিংসা ছল তক্ল ছাডি হলে দুটে। কেহ কভু নাহি জানে। কত তক হেন নির্থি সেথানে এখানে নাহিক ষভশ্বতু ভেদ **्**र्ञानेवक मरन मरन সমভাবে अर्याामग्र. ভ্ৰমে সূপে কভ যু**গল পর**াণী স্থেহ্ময় প্রাণী আমার কাননে নিয়ত তাহার তলে, এই স্থানে তাবা রয়।" কৰতল পাতি তক্তলে শাগ্ এত ক'য়ে আখা প্রণয়-কাননে সেই মনোহৰ ফুল . হাসিয়াকবে প্রবেশ, অতুল আননে মার্ পডে ক্ত তায় প্ৰাণী **সক**লে মাতিল হৃদয় আনন্দে হয় আকল; হেবিয়ামধুব দেশ। প†তিয়া অঞ্চল দাঁডায় **ছ**'জনে লভা-গৃহ দেখা হেবি চারি ধাবে গিয়া কোন ভক্নমূলে অপুৰ্ক কিবণ্ময়, মুহুর্ত্ত ভিতবে পরিপূর্ণ ভাষা অমরাবতীতে ধেন দেব-গৃহ হয় মনোমত ফ্লো। ভাবকা-ভ্ষিত রয়। ভ্ৰমে চুই প্ৰাণী প্রতি তরতলে পুস্পুময় পথ মৃত্রিকা পর্শ তকু বৃষ্টি করে ফুল, নিন্দ তেবি নাহি হয় পদতলে, যেন বা আনন্দ হেরিয়া ভাদেন ভক হৈতে স্বভঃ চাক স্থকমাৰ ্জানন্দিত তকুকুল। ধবিত্র কণ্ণের আছিল্য পুষ্প হ'তে সৃষ্টি ছলো। যণা সে পবিত্র প্ৰতি গৃহদ্বাবে সুথে চক্ৰবাক্ . হেরে শশুস্তলা-সুথ ; কবে পুষ্প ছড^{িই}ল চকোৰ ভ্ৰমণ কৰে। শাখা নত কবে বাগ্র হিলোলে নিৱবধি যেন ফ্ল-ভকু ফল্ল-মূ্থ ; হবি স্তথাধারা দেখা কবে। দেইরূপ হেবি প্রণয়ী य^न শোডে তকরা**জি** সে প্রদেশময় আবাসে এথা তক্তলে, ধরে অপেরপে ফুল, ভক নত-শিৱে করে আশীর্কাদ অবনী-ভিডবে অপুৰ্দ্য প্ৰাক্ষতি দাত নাহিক ভাহার তুল , কে শাথাব উপবে , বর্ষি কৃস্মদলে। সে কুলের মালা পরিয়া গল∤য যতক্ষণ থাকে প্রণয়-প্রফুয় প্রাণ, শোভামাত্র দৃষ্টি তাব, ভুমিছে সেখানে হেবি কত প্ৰাণী বছে দে কুন্তমে মধুর সৌবভ লভিয়া কুসুম-আণ , চাঁপা ফুল হেন বরণের শোল্ গাথিলে হৃদয়ে হার , **হয় সে** ক্সম আপনি গুথিত সুন্দৰ মলিন আঁথি, বৃদে বৃদ্থে শত যুডে, কিন্তু পুনঃ আব নাহি ণ্থা হয় চলে কত বামা বল্লভের দেহে ত্ৰৰে বাছলতা রাখি। বাবেক যগপি তুডে। নব নব ভাব কোন সে যুবক প্রতিকণে ধরে চলে মনসুথে নবীন মাধ্বী তায় , নেহারি আননেদ প্রতি ফণে ফণে বাধি নিজ ভূজপাশে, কমল-কোরক **সদৃশ ত**বণী অংশ্বিমৃত্হাদে। নৃত্ন পত ছডায়. চলেছে সোহাগে কোন বা স্থলবী ফুল-বিক্সিত ছবি, নবীন সৌবভে প্রতিক্ষণে তাহে নবীন পরাগ উঠে,

োহিত স্থন্দর	গণ্ডে প্রস্ফৃটিত	প্রতিধারা অবেদ কত রঙ্গে তা	হৈ	
গুলাবরঞ্জিত রবি ;		অবস্থাব বর্গ ছড়ায়।		
আহা কোন রামা		ঝরিছে নিঝ'র ধারা হেন ব	চত	
প্রণন্তীর বাহ	म्रव,	প্ৰণয় অঞ্ল অসং		
চক্রকরমাথা	সেফালিকা যেন	দেখিলে নয়নে ফিরিতে নাচ	ায়	
চলেছে গুঠন	थ्रल।	নেহাবে তুলিয়া বঙ্গে।		
কাহার বদনে		ফুটে কত ফুল 📄 ছেরি উৎস	স্ব	
মধুর মৃত্ল হ		অমর-নন্দন-ভাতি,	অমর-নন্দন-ভাতি.	
সহকার কোলে	সরস মঞ্চবী	নন্দনে তেমন বুঝি বা স্থ	দর	
বসন্তে ধেন ৬	প্ৰকাশ।	নাহি পুষ্প হেন স্বাতি।		
ठटलट्ड् भूर्णऋ		অতৃগদৌৰ্শ্য সেসবকুত	(মে	
কোন রামা		নাহি কভু বৃদ্ধি হ্রাস,		
	যৌবনে প্রকাশ	নিবৰধি শোভা ফুটে সমভা	বে	
অ ণডে হেরি	थिय्रम् रथ ।	নিবৰ্ণি ছুটে বাস।		
প্রিয় চাক করে		অতি শৃজ-গামী চকোব প্রভৃ	তি	
প্রফুল্ল উৎপল চলেছে চঞ্চল	⊺ (यन,	স্বৰ্ণীয় বিহস্প যত,		
	•	মৃত্কলম্বৰে ধারা ধারে ধা	বে	
আগাকতর	ামা হেন।	স্থে ভ্রমে অবিরত।		
নীলপদা যেন	ভ্ৰমে কত নারী	হেবিকতপ্ৰাণী আমি উৎস্পা	7*1	
মধুর মাধুবী :	ধরি,	ধারা-জ্ঞলে করি সান,		
इथिनो महिना	প্রির-অঞ্চে অঞ্চে	নিমেধ-ভিতবে নিশাল শর	14	
স্থা সুমিলন করি।		ধরে সুধাসম ছ∤ণ।		
ণেখি স্থানে স্থানে <i>(</i>		হেরিকতপুনঃ পরাণীবিশ্ব	ζij	
কত উৎস ম		পরশনে সেই বাবি,		
থ্ধার সন্ধাশ		পাধাণ হইয়া হারায় সংবি	बे९	
পড়িছে সহস্ৰ	ঝ ড়,	চলিতে চিস্তিতে নারি।		
পড়িছে নিঝর		কত ে পুরুষ 	14	
চাবিধারে ধী	রে ধীরে.	निक्ष नियंव पार्य,		
		কত যে রমণী পাষাণ-মূর		
	জাহনী ধেমন	1 2 2 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	ত	
জ্ঞটায় শিবের	জাহনী ধেমন	ठक्कटल मन्। खाटम ।	ত	
জ্ঞটায় শিবের কোথা সে ভৃতলে	জাহ্বী ধেমন শিরে। ভূপতি-ভবনে	চক্ষলে দদা ভাদে। চিন্তিয়ানা পাই কারণ তাহ		
জ্ঞটায় শিবের কোথা সে ভূতলে খেত-শিলা চি	জাহ্নবী বেমন শিরে। ভূপতি·ভবনে বৈরচিত,	চক্ষলে সদা ভাসে। চিন্তিয়ানা পাই কারণ তাহ আশারে জিজ্ঞানা করি,	ার	
জটায় শিবের কোথা সে ভূতলে খেড-শিলা চি শীডা-উৎস নব	জাহ্বী বেমন শিরে। ভূপতি-ভবনে বৈরচিত, মহিধী-মোহন	চক্ষলে সদা ভাসে। চিস্তিয়ানা পাই কারণ তাহ আশারে জিজাসা করি, কেন সে প্রাণীবা সলিল পর।	ার	
জটায় শিবের কোথা সে ভূতলে শেত-শিলা চি দীড়া-উৎস নব মাণিক্য-স্বৰ্ণ-	জাহ্নী ধেমন শিরে। ভূপতি-ভবনে বৈরচিত, মহিধী-মোহন মিতিত!	চকুজলে সদা ভাসে। চিভিয়োনা পাই কারণ তাহ আশারে জিজাসা করি, কেন সে প্রাণীবা সলিল পর। থাকে হেন ভাব ধবি ?	ার শে	
জটায় শিবের কোথা সে ভূতলে শেত-শিলা চি নীডা-উৎস নব মাণিক্য-স্বৰ্ণ- উঠিছে নিশ্বর্পর	জাহ্নী ধেমন শিরে। ভূপতি-ভবনে বৈষ্ঠিত, মহিনী-মোহন মিতিত! সেকাননময়	চকুজলে সদা ভাসে। চিন্তিয়ানা পাই কারণ তাহ আশারে জিজাসা করি, কেন সে প্রাণীবা সলিল পর থাকে হেন ভাব ধবি γ হাসি কহে আশা "ভন রে বাল	ার শে	
জটায় শিবের কোথা সে ভূতলে শেত-শিলা চি নীডা-উৎস নব মাণিক্য-ফ্র্ণ- উঠিছে নিশ্বরি নিভ্য ক্ষিভিয়	জাহ্বী ধেমন শিরে। ভূপতি-ভবনে বৈরচিত, মহিবী-মোহন মিওিত! সেকাননময় চল ফুটে;	চকুজলে সদা ভাসে। চিন্তিয়া না পাই কারণ তাহ আশারে জিজাসা করি, কেন সে প্রাণীবা সলিল পর থাকে হেন তাব ধবি ? হাসি কহে আশা "ভন রে বাল অতি ভাঠি অই জলা,	ার শে ক	
কটায় শিবের কোথা সে ভ্তলে খেত-শিলা চি দীডা-উৎস নব মাণিক্য-খৰ্ণ- উঠিছে নিশ্ব'র নিত্য কিভিয় শত-ধারা হয়ে	আহ্বী বেমন শিরে। ভূপতি-ভবনে বৈরচিত, মহিবী-মোহন মতিত! সেকাননময় তল কুটে; ভালিয়া ভালিয়া	চকুজলে সদা ভাসে। চিন্তিয়া না পাই কারণ তাহ আশারে জিজ্ঞাসা করি, কেন সে প্রাণীবা সলিল পর থাকে হেন তাব ধবি ? হাসি কহে আশা "ভন রে বাল অতি ভচি অই জল , পবিত্র মানস প্রাণী বেই ভ	ার শে ক	
জটায় শিবের কোথা সে ভ্তলে শেক-শিলা চি দীডা-উৎস নব মাণিক্য-খৰ্ণ- উঠিছে নিশ্ব'র নিত্য ক্ষিডিয় শত-ধারা হয়ে পুশ্ব যেন প্র	আক্বী বেমন শিরে। ভূপতি-ভবনে বৈরচিত, মহিবী-মোহন মতিত! সেকাননময় তল কুটে; ভালিয়া ভালিয়া ড় ফুটে।	চকুজলে সদা ভাসে। চিন্তিয়া না পাই কারণ তাহ আশারে জিজ্ঞাসা করি, কেন সে প্রাণীবা সলিল পর থাকে হেন ভাব ধবি ? হাসি কহে আশা "শুন রে বাল অতি শুচি অই জল , পবিত্র মানস প্রাণী যেই ভ	ার শে ক	
কটায় শিবের কোথা সে ভ্তলে খেত-শিলা চি দীডা-উৎস নব মাণিক্য-খৰ্ণ- উঠিছে নিশ্ব'র নিত্য কিভিয় শত-ধারা হয়ে	আহ্বী বেমন শিরে। ভূপতি-ভবনে বৈরচিত, মহিবী-মোহন বৈতিত! সেকাননময় তল কুটে; ভাকিয়া ভাকিয়া ড় ফুটে। আদি বৰ্ণ যত	চকুজলে সদা ভাসে। চিন্তিয়া না পাই কারণ তাহ আশারে জিজ্ঞাসা করি, কেন সে প্রাণীবা সলিল পর থাকে হেন তাব ধবি ? হাসি কহে আশা "ভন রে বাল অতি ভচি অই জল , পবিত্র মানস প্রাণী বেই ভ	ার শে ক	

আনন্দে বিহ্বণ বসায়ে নিকটে দলিল-মাহাত্ম্যে তথনি সে জন ন্তনে গীত প্রেমভরে। পাষাণ-মুক্তি ধরে ; জিজাসি আশারে হেরি কডক্ষণ এই ভাবে সদা কাদে চিরকাল কেবা সে অপূর্ব জন, চলৎশক্তি-হীন , নিঝঁরে নিঝঁরে ভূষি এ সবারে অন্ত প্ৰাণী ৰত অমূতাপ হেরে এরপে করে ভ্রমণ ? স্নিগ্ৰ হয় অফুদিন। "এই সে পরাণী আশাকহে হাসি এ সব নিঝর সজী-ঝর নামে দেখিতে হেন হঠাম, স্থপবিত্র বারি অতি, চিরদিন বাদ, প্ৰবয়-কাননে मनिन ইश्र পর্বে যে নারী সস্ভোষ ইহার নাম।" লভে ধশঃ নাম সভী। করি আলাপন সে যুবা-প্রসক্ষে করে ইথে স্থান পুরুষ ধে জন আশার সহ উল্লাসে, জিতেন্ত্রিয় নাম তার, চলিতে চলিতে আসি কিছু দুর লভে স্বৰ্গ∙সুধ ধরাধামে থাকি এক লভাগৃহ পাশে; আনন্দ লভে অপার। প্রাণী এক জন হেরি তার মাঝে প্রণয়ে যাহার কঠোর সাধনা অকু জন পাৰে বসি, পবিত্র নির্মাল মন, উদ্ধ্য ধ্যেমন মেবের আড়ালে জনমে বে প্রাণী পর-চিস্তা চিতে পূৰ্ণকলা চাক শ্ৰী। করে নাই কোন ক্ণ। সৃত্যু ন্যুন বসি তার কাছে পরশে এ বারি সেই নারী নর চাহিয়া বদন তার, অফে না ছুঁইতে পারে, কতই যত কতই শুশ্ৰাষা অপবিত্র মনে অন্তেধে পরশে করে হেরি অনিবার। অই দশা ঘটে তারে।" প্রদীপ যেম নিৰ্কাণ-উন্মুপ নিকটে দে স্ব নির্ধি নিঝ্র ক্ষণে স্থিত্ব ক্ষণে জলে, ভ্ৰমে প্ৰাণী এক জন, বিকাশে তেম প্ৰাণী সেই জন মধুর মাধুরী মধুময় হাদি ্ কিরণ মুধমগুলে, অক্টেড করে ধারণ, নাহি অক্ত আশা নাহি অক্ত তৃষ আকৃতি তাহার অতি সুললিত (क्व्न वम्दन ठाव, দেহ কাস্তি নিক্পম, পড়ে যদি তাং সূৰ্য্য অংশু-রেথা মুখে দিব্য ছটা অধরে সতত কেশজালে ঢাকে তায়। মুত্ হাসি স্থাসম ; নিম্পন্দ শগীর বেন সে অসাছ প্রীতিকর দাম গলে প্রস্ফুটিত হৃদর ছাড়িয়া প্রাণ, গ্রথিত অপূর্ব ফুলে; নিবিড় হইয় আসিয়া বেমন ্ মধুর বাদিত্র খত: নিনাদিত নয়নে পেয়েছে স্থান। লখিত বাহর মূলে; প্ৰাণী অন্ত জন মলিন বদন ल्य यदा यदा মুখে করি গান तिथाहेट्ह विखीविका, সরল স্থমিষ্ট ভাষে, নিমেৰে নি^{মেৰে} কত বে প্রকারে নির্মণ জ্যোতি বিষশ বদন वर्गत जनाश निथा; সূৰ্য্য-মাভা পরকাশে ; কর্ষে চাপি কর কখন বা বেগে প্রাণিগণ ভারে নিঝ'র-বিলাসী করিছে নিখাস রোধ; कछ नमामन कदन,

কথন বা নধে ছি'ডি ওঞ্চাধর প্রেমানন্দে ভোর হইয়া **হু'জনে** উঠিছে করিয়া ক্রোধ; হেরে নিবস্তর স্বথে। কখন মাটীতে ভাঙ্গিছে ললাট কপো**তী যেম**ন কপোতের মূখে কৃষির করিছে পাত, মুথ দিয়ে স্থাপে চায়, কভূ সর্কা-অঙ্গে ধৃলি ছড়াইয়া মূছ কলধ্বনি মধুর কৃজ্ঞন বক্ষে করে করাঘাত, क्रदा धन शलाम। --কথন গৰ্জন করিছে বিকট দেপে প্রস্পরে দোঁহে মনস্থথে **मस्य मस्य चत्रवन,** লভিয়া প্রাণয়-ভাগ, কখন পডিছে আনন্দ-পুলকে ধরাতলপরে পুণকিত ভহু, সংজ্ঞাহীন বিচেতন। স্থে পুলকিত প্ৰাণ ,---প্ৰাণী অক্তজন নিকটে ষে ভার দেখেছি অনেক সেইরূপ ভাব কতই যতনে হায়, প্রণয় প্রকাশ হায়, দেবিছে তাহায় করিছে শুশ্রষা প্রণন্ধী ক্রনের প্রেমের অনলে যুচাইতে সে মৃচ্ছায়। বদন বহিন্দ প্রায় , কভূ **ধী**রে ধীরে করশাখা খুলে কিন্তু কভু হেন বিশুদ্ধ **প্ৰেণ**য় মার্জিছে হৃদয় দেশ; নির্মাল স্লেহের কীর, কভু করতল কভু পদতালু নাহি দেখি চক্ষে মানব শরীরে কভূ ঘর্ষে ধীরে কেশ। প্রগাঢ় হেন গভীর। কথ**ন তু**লিছে হ্বদয়-উপরে কত্তই উৎস্ক অন্তরে তথ্ন অবসন্ন বাছ লতা, र्हित रम आणितमन, কভু*ন্*ন্নহপূৰ্ণ বলিছে শ্ৰবণে न र-कलधर নিরপে ধেমন পীয্**ষ-প্**রিত কথা। চাতক উৎস্থক মন। ক্ধন আনিয়া বারি স্থশীতল অধবা যেমন বনাচ্য-আগারে रम्दन करत्र निक्षन, ছংখা হেরে ধনরাশি, ক্থন তুলিয়া মৃত্ল সুগৰ হথে নির্মর নির্ধি তেমজি নাসাগ্রে করে ধারণ , আনন্দ-বাষ্পেতে ভাসি। আৰার ধ্থন চেতন পাইয়া পাইয়া সুষোগ গিয়া কাছে তার হয় সে উন্মাদপ্রায়, বিনয়ে জিজাসা করি, মধুর মধুর বীণাবাছ করি কিরূপে এরূপে থাকে সে সেখানে স্থিধ করে পুন: তার। একধ্যান চিত্তে ধরি । হেরে সে প্রাণীরে কি স্থথে উন্মাদে কত যে আহলাদ লম্বে করে সেবা হৃদয়ে হইল মম, সহে নিত্য এত ক্লেশ, বাসৰা ফুটিল रवन नित्रविध কেন সে মণ্ডপে শাগ্ৰত সভত হেরি মৃথ নিরূপম। থাকিতে এতেকু দেশ। দেখেছি অনেক প্রণয়ী পরাণী সংবন্ধ বীণাতে পড়িল যেমন হেরে পর**স্পর** মৃথ, সহসা কাহার কর. নয়ন-হিলোলে ভাগি এ উহার উঠে সে বাঞ্চিয়া আপনা হইতে **পি**ष्ट्रि स्थानम स्थ , निःगाति **मध्**त श्रत , ^{ধ্}স নির**জ**নে দেইরূপ ভাব করে আলাগন क्टर (महे अन स्वारका (यन मृत्य क्रिं) स्मध्र चत्र मृत्य,

কি মুথ সম্ভোগ করে দে সভত কি আনন্দ প্রাণে উঠে। কহে "সে কেমনে বুঝাৰ তোমায় कियां (म जानत्म शिक, বসিয়া ইহারে এ লডা–মণ্ডপে কেন এ ষ্ডনে রাখি। প্ৰণন্নী যে নম্ব কেমনে ব্ৰিবে প্রণয়ের কিবা প্রথা, মক কি জানিবে স্রোতোধারা কিবা মধুময় তক্লতা। হ্যুলোক ভূবন বসি এইথানে বৈকুণ্ঠ দেখিতে পাই, বায়ু ব্যোষ ধারা ∤লনিধি মেব সকলি ভূলিয়া যাই ! আসি সুরবালা গৰি খেন মনে व्यानिया चर्लाव वर्ष, লইয়া বিমানে ব্রিয়া আমারে চলে বহি শৃক্তপথ, নির্থি সেধানে প্রবেশি স্বরগে नक्तरान्त्र फ्ल, হেরি মনস্থ ভনি বেদধ্বনি মনাকিনা-নদীকুল, मिथांत्र आमादत (एव-वृक्त (मथा আনন্দে অমরালয়, অনুত ভাণার তারা শশধ্য युद्र-युथ-नभूषद्र । সে স্থুও তোমারে কেমনে বুঝাব বাণীতে বৰ্ণিব কিবা---দিবাকর-জ্যোতিঃ জ্যোতি বে কিরণ তাহা সে প্ৰকাশে দিবা।" পর্শে যেমন ষ্থা হুতাশন ষ্থন গৃহের ছাদ , প্ৰথমে প্ৰকাশ শেষে অনলের হ্রদ। সেইক্লপ তার বলিতে বলিতে বদন পূরে ছটায়, নিমেষে শরীর নেত্রে বাষ্পধ্য व्यतीश विरुद्ध व्यात्र । পরে পুনরায় সেই প্রাণি-পাশে वक ठिखा बक शान,

প্ৰাণী সেই জন ধরিয়া আবার भूनः देकना व्यक्षिति । বিহুগ বেমন নিদাৰ-ভাপিত भाहेरल वत्रश-कल, স্থথে ধৌত করে আর্দ্র-পক্ষ-ক্লেদ স্থানে হয় সুশীতল। তেমতি শীতল ভূনে ৰাণী ভার পরাণ হইল মম, কিরে কিরে চাহি হেরি বার বার त्में पूर्व ऋशी मम, হেরি কতবার অতৃপ্ত নয়নে ভাবি কত যনে মনে— ভাবি নির্মণ মাধুরী যেমন বুঝি নাই ত্রিভুবনে ; বিশ্বন্ধ ভাবিয়া চাহি আশাম্থ আশাব্ঝি অভিলাষ, কহিলা তথন আনন্দে হাসিয়া বদনে মধুর ভাষ। এ কাননে মণ "এই যে পরাণী হেন সুখী নিরমল, ভুবন বিখ্যাত প্ৰণয় নামেতে নিত্য দেবে ভূমণ্ডল ." শুনি আশাবাণী বোমাঞ্চ শরীর আকুল হইয়া চাই, প্ৰাণয় ভাবিয়া প্রাণের ছতাশে বিধিরে শ্রবিয়া ধাই।

সপ্তম কম্পনা

শ্বেছ-উপবন-মাতৃক্ষেছ-সাথনা থকির হারদেশে ত্রান্তির সহিত সাক্ষাং।

আশার আখাসে চলিহু পকাওে

প্রণয়-অঞ্চল-মাঝে, আমাসি কিছু দূর দিব্য বাপী এব

সন্মুখে হেরি বিরাজে। মনোহর বাপী গভীর সুশ

থই থই করে **ৰুগ,** স্থির শাস্ত নীর স্থগদ্ধি রু^{চি} অভি অফ নিরমল।

দাডাই**লে তীরে** অপুর্ব দৌরভ বন্ধাণ্ডের জীব নিত্য করে পান পরাণ করে শীতল. ক্ৰমাত্ৰ নহে ক্যু, ্চন ভ্ৰান্তি হয় মনে নাহি মানে চারি যুগ ইহা আছে সমভাবে আছি বেন ধরাতল: এইরূপে পূর্ণ পর। কভু কিভিভলে স্লিল তেম্ন এই দিব্য বাপী এ কানন-সার চক্ষে না দেখিতে আংসে, মাতাব ক্লেহের হ্রদ; यथा एमथि नाई জানিয়াছি ভগু মুধা হৈতে মিষ্ট সলিল ইহার ঋষির বাক্য-আভাসে , বিনাশে সর্ব্ব বিপদ। সুধাকি নাসেই না জানি সে বারি কেহ কোন কালে এ স্থা-সলিলে আশাবনে পরকাশ, বঞ্চিত নহে অভাপি, এমন নিৰ্মাল এমন স্থরভি हिरकान हेश • আন্তে এইরূপ এমনি সুচাক ভাস। অগাধ অকর বাপী! বাপী-চাব্রি-ধার প্রাণী লক্ষ লক ष्यहे स्य स्मिश्ह মাধুরীর রাশি দাঁডামে গাঢ় ভকতি, নারীরূপ নিরূপমা; करत्र नित्रीक्रन নিৰ্মল সলিল দেবসৃর্জি ধরি জননীর স্নেহ সভত প্রদন্ন মতি। প্রকাশে হের সুষমা। **গাডায়ে তটেতে** হাতে হেম-পাত্র প্রকাশি এথানে বিভরে সলিল অপরপ এক নারী. রাখিতে প্রাণীর কুল; <u>কালে যত প্ৰাণী</u> সভত সকলে লগত-ভিতরে এই স্থানীর বিতরণ করে বারি ; এ মৃঠি নিত্য অতুল।" কিবা মৃষ্টি ভার **কি মা**ধুরী মৃথে হেরি প্রাণ ভরি হেরি কভক্ষণ কিবা সে অধরে হাস. কতবার ফিরি চাই, ৰুগতেৰ সুধ কত যে আৰক বিধাতা বেমন উপলে জদয়ে একত্র কৈলা প্রকাশ। অবধি ভাহার নাই। ধ্যান ধরি হেরি **ৰত্ম-পরাগে** ক্রিয়া গঠন হেরি চকুমেলি অমৃত লেপন করি, ভূলি যেন ভূমওল; বিধি **ষেন সেই** হাতে যেন পাই নিকপম দেহ হেরি বত বার গঠিলা হৃদরে ধরি; পবিত্র তিদশস্থল। শৰা হাস্তময়ী সদা বারিদান চাহিয়া আবার হেরি বাপী-ডটে করেন স্বর্ণ-পাত্তে; हाक हेन्द्रभञ्च डिर्फ, কোটি কোটি জীব আদে অফুকণ বাকিয়া পড়েছে ধরণী-শরীরে শিশুগণ ধায় ছুটে; স্তৃপ্ত পরশ মাত্রে। পিপাসা-আতুর চাহি আমাণা-মুগ ধরি ধরি করি ধায় শিশুগণ কতই আনন্দ মনে, ইন্দ্রধন্থ ধার আগগে, খাশা কহে "বৎস. মাতৃত্বেহ-ভূমি সরিয়া সরিয়া নানা বৰ্ণ আভা हेहाहे जामात्र यस । প্রকাশিয়া পুরোভাগে , ^{(চন} পুণ্যভূমি ধরেছে ভা**ৰি**য়া পাবে না দেখিতে কেহ বা খুলিয়া খুঁজিলে অৰনীতল, নিজ করতলে চার, ইদ পরিপূর্ব নেহার সন্মধে আছে দেইথানে সেই ইন্দ্রম্যু किया द्रमधूत भग। मूरत्रक सिथिक भात्र।

ধরাতে সে জানি विधित इनाम वधुत्र व्यश्दत्र হাসি নাহি ধরে वुषा (म निभव निधि, দুটাইয়া পড়ে ভূমে, মৃত্যু কণী শিরে কৈশোরে রাথিয়া উঠিয়া আবার হাত বাড়াইয়া मानदव विक्ता विधि। ধরিতে ধাইছে ধৃমে। আছে কি শে কীট এ কাননে পুন: ধরে ধন্ত-অঙ্গ কোন শিশু ধেয়ে দারুণ করাল কাল ? অমনি মিলায়ে যায়; এ স্বৰ্গ-পুত্তলী অাশারও কাননে নুভন নৃতন আবার ফুটিয়া পথে কি আছে জঞাল ?" নশ্বন-পথে বেড়াশ্ব। "কথন এথানে ভনি কহে আশা মনের হরষে খেলে শিশুগণ পডে দে কালেব ছায়া, দে বাপী-ভীরেতে স্থথে, নিবারি ভাগকে কিন্তু সে ক্ষণিক স্থান্দর কিরণ ভকুণ ভপ্ন নিমিষে প্রকাশি মায়া। ভাতিয়া পডেছে মুথে; করেছি নির্মাণ অদেষ কৌশলে হাসিছে অধর হাসিছে নয়ন দিব্য অট্টালিকা ফুলে, বদনে ফুটিছে আলো; শোকতপ্ত প্রাণী প্রবেশে যে তায় অমরাবতীতে না জানি তেমন তথনি সকল ভূলে। আছে কি কিরণ ভালো। পায় নির্থিতে **প্ৰ**বেশি তাহাতে রোমাঞ্চ শরীব হেবে সে আনন্দ ষে যাতা হয়েছে হারা— কত চিন্তা করি মনে, প্রণয়ী প্রেমিক. দাবা, স্থত, প্রাত नित्रवल स्थ ভাবি বৃঝি হেন তেন দে প্রসাদ-ধারা ! নাহি ভূঞে কোন জনে; বলি চলে আৰ বালীকি ভাপস চল দেখাইব" ভাবি বৃঝি ব্যাস ষাই পাছে কুতৃহলে, করেছিলা দ্বশন, হেরি অট্টালিক আসি কিছু পথ ভূবন অভূল মর্ভো স্বর্গপুরী শোভিছে গগন-ভালে। আশার সেহ-কানন; কি দিব তুলনা গ তুলনা ভাহাব তপশ্বী আশ্ৰমে তাই সে গোকুলে নাহি এ ধরাব মাঝ; ছডায়ে আনন্দর্স, বা**জ**-অট্টালিকা ভূলোকে অতুল স্থললিভ হেন পায়িলা মধুর সেহ হারি মানে লাজ। জননী স্লেহের বশ। স্বপনে দেখিয়া পরীর আবালয় থাকিতে এ পুরী ভাবি মর্ত্তাধানে বুঝি কোন শিল্পকর, আবার কি হেতু লোক, করিয়া সুন্র রচিলা দে তাজ, করে স্বর্গপুরী ৰাইতে কামনা মানবের মনোহর, ছাডিয়া মরতলোক ? শিলা ধৌত কৰি ভাবিতে ভাবিতে ⊎ভ্ৰ-চন্দ্ৰ-করে ভূগিয়া দে ভ্ৰমে রাথিয়াছে যেন গাঁথি; মৃত্যুরূপ পুন: স্মরি; চূণি পালামণি হীরক প্রবাল উৎস্ক হইয়া কাত্তর অন্তরে তাহাতে স্থন্দৰ পাঁতি ; আশারে জিজ্ঞাসা করি— শোভে ভিত্তিকাৰ লভাষ লভাষ এ শোভা প্রকাশ "এই ভাবে নিত্য কতই হীরার ফুল, থাকে কি তোমার বনে 🖰 নাহি কি শুকায় ষ্ণি পদ্মরাগ এ আনন্দ ধাবা সৌন্ধ্য শোভা অতুন; মুত্যুশিখা-পরশনে ?

নীৰ কৃষ্ণ পীত লোহিত বরণ माणिक्त किवा इते; মাণিকের লতা মাণিকের পাতা মাণিকের তক্ত্রটা, চামেলি, পক্কৰ কামিনী, বকুল কত সে কুমুম তায়, বত্তনে খচিত রতনে জড়িত ভিত্তি-অঙ্গে শোভা পায়, কিবা মনোহর গোলাপের ঝাড ফুন্দর পদোর শ্রেণী. क्षियां शोवांटन করেছে কোমল (यन नवनीटि एकनि, (पश्चित्व व्यानम পাষাণ বলিয়া নাহি হয় অসুমান; ভ্ৰমে তুলে আঁথি উপজে প্রমাদ পুষ্পত হুহয় জ্ঞান। শিল!-অঙ্গে আভা ভিতবে প্রবেশে আহা কিবা মনোহব; যেন সে পুর্ণিমা চাঁদের জ্যোৎসা হরে তাহে নিরন্তব , অট্টালিকা তা**ক** এ হেন স্থল ব তুলনাতে সেই ছার। নির্থি আমাসিয়া অট্টালিকা সেথা হেরে হই চমৎকার। স্থানে স্থানে মবি কত কাচথণ্ড জলিছে প্রাসাদ-গায়; বেন মনোহর সহস্ৰ মুকুব প্ৰদীপ্ত আছে প্ৰভায়। হেবি কত প্ৰাণী প্ৰবৈশিছে তায় য়ান মুথ মৃত্গতি, বদন নয়ন চিন্তা-সমাকুল শরীরে নাহি শক্তি, কতই যতনে धरत्रहाई अपरत्र সুগন্ধি কার্ষের পুট, কবিছে নিয়ত মৃধে মৃত্বৰ সুমধুর অর্দ্নমূট ; পুট হৈতে তুলি ধুলিয়া খুলিয়া দ্রব্য করি বিনির্গত, বাথি ৰক্ষোপরে धीरत लक्ष जान

আহরে বতনে কত;

কখন বা ছঃখে করিছে চুম্বন সে পুট হৃদয়ে রাখি, কখন মস্তকে করিছে ধারণ मनलात्य पृति चाँथ । এরপ আশালয়ে করিয়া প্রবেশ ভ্ৰমে তাহে কতক্ৰণ. শেষে ধীরে ধীরে আসে ভিত্তি-পাশে त्रेष९ जूटन वनन , যেমনি নয়ন পডে কাচ-অক অসনি মধুর হাস, यमन नम्रन অধর ওঠেতে ক্ষণে হয় প্ৰকাশ; তথনি বিরূপ হয় পুৰ্বভাব ভূলে যত পুৰ্ব্বকথা ; হাসিতে হাসিতে প্রফল অন্তরে গৃহে ফিবে নব প্রথা। অট্টালিকা-দ্বারে আশা সহচবী ভ্রান্তি-হাতে দেয় তুলে, কোটা নৰ নৰ হেরিতে হেরিতে পূৰ্বভাব সবে ভূলে। কত প্ৰাণী হেন হেবি কাচখণ্ড ফিবে দে আলর ছাডি, কেশ, বেশ, অঙ্গ সহাস্ত-বদনে চলে নানারূপে ঝাড়ি। চমকিত মন আশার কুহকে বসি সে সোপানপব; উঠি পুনর্কার আদেশে তাহার थौरव **इ**ष्टे **ञ**श्चनत्र ।

অফ্টম কম্পনা

ব্ৰহ্মবন্দনা ও সরস্বতী অৰ্চনা।
ব্ৰহ্মাণ্ড-ভ্বন স্কুন বাহাব
প্ৰাণী বিৰ্চিত বার,
যে জন হইতে জগৎ পালন
যিনি জীব-মূলাধার;
রবি শশধর প্ৰন আকান
জ্যোতিছ নক্ষ্মদল,

कोगुठ, कनिध পর্বতে অরণ্য इपिनी, श्रिजी, बन, অনল উত্তাপ নিনাদ বিহাৎ হিম রৌদ্র বাষ্প বাস, ফল বুক্ষভা পুষ্প বিহল্পম লাবণ্য আন্থাদ শ্বাস, শ্ৰবণ দৰ্শন বাক্য স্পর্শ ভ্রাণ শ্বৃতি চিন্তা সুথকর, প্ৰেম ভক্তি আশা স্জন যাঁহার পালন পৃথিবীপর; মানব-শরীর জগৎ-ভূষণ মানব-ভূৰণ মন, নমি আমি সেই স্ঞিলাযে জন দেব নিতা সনাতন। তুর্গম কান্ধারে করেছি প্রবেশ ত্রাশা বামন হয়ে, ধরাতে থাকিয়া ধরিতে শশাঙ্ক শিশুর উৎসাহ লয়ে, আশার কাননে ত্রস্ত বাসনা ভ্ৰমিব পৃথিবীময়; কর কুপাদান কুপানিধি প্রভূ, হর ভ্রান্তি, হর ভর। নাহি কিছু মম পথের সম্বল অবলম্ভধু আশা, বোধ-বিভাহীন জ্ঞান-চিস্তাহীন অক্হীন থকা ভাষা। ক্ষিপ্ত অভিনাধ যশ:-তৃষাতুর **शी**ष्ठि करत्र श्रमः, তব শক্তি বিনা সর্ব্বপক্তিময় বাঞ্চাপূৰ্ণ কভুনয়। मश्राविस् मान কর দরাময় আমি ভ্ৰান্ত মৃঢ়মতি, আ দি মধ্য শেষ জ্ঞানী পরমেশ অচিস্তা চরণে নতি। কর মাভারতি তুমিও গো দয়া দেও মনোমত ফ্ল, বাসনা যেরূপ সাজাই কানন তুষিতে বান্ধবকুল; তোমার উন্থান থোল মা বারেক প্রবেশ করিব ভাষ,

তুলিয়া আনিব গাঁথিতে নবমালায়; নাহি সে স্বৰ্ণ রঞ্জতের কুঞ্চি অদৃটে আমার ঠাঁই, বিহনে সাহায্য জননি তোমার কাননে কেমনে বাই। त्रिश्र हिख∙भर्षे কত চিত্ৰ মাতঃ ! বাসনা অক্ষরে আঁকি, না পারি আঁকিতে বাণীর অভাবে অন্তরে লুকায়ে রাখি। মৃদ্ধ বাসনা পূর্ণ কর মাতঃ রসনাতে দিয়ে বাণী, শত অংশ তাব ব**ৰ্ণে ষেন** পাই ষে চিত্র মানসে মানি; আঁকি চিত্রপটে মানবের হৃদি রচিব আশার বন ; করুণা বিছনে জননি তোমার কোথা পাব কিবা ধন। মানস-রঞ্জন দেও গুটিকত কুকুম ভোমার ভুলে, পুরাই বাসনা আশাব কানন, সাজাই তোমার ফুলে।

নব্য কল্পনা

বিবেকের সহিত সাক্ষাৎ—আশার অন্তর্জান— বিবেকের অন্তবর্তী ইইরা কাননের প্রান্ত-ভাগ দর্শন। শোকারণ্য—তাহাতে প্রবেশ ও ভ্রমণ—শোকের মৃষ্টি দর্শন ও তাহার পরিচর।

আৰার পশ্চাতে প্রাসাদ হইতে
আসিবা কিঞ্ছৎ দূব,
বিজ্ঞাসি তাহারে কোন্ পথে এবে
ভ্রমিথ তাহার পূরণঃ
বিজ্ঞাসি কাননে সকলি কি তেন
সকলি সৌন্দর্যামর ?
কোন ছানে কিছু সে কানন-মাথে
কলক জাহিত নর ?

ভৰি হাৰি আশা অভি সুমধুর সেই পাপে ইন্দ্র কহিলা আমার কানে, "পাইবে দেখিতে ভূ**লিবে** যাহাতে মানব-নিবাদে উতলানাহও প্রাণে, তদৰ্ধি ছঃখে চল এই পথে" হেনকালে হেরি জ্যোতির্ময় ঋষি-বেশ, **उक्:श्रुव शो**त्र অমল বদন খেত খাশ্ৰ খেত কেশ , প্ৰাণী এক জন আসি উপনীত চিরকাল হেন শিরেতে কিরণচ্ছটা, ছায়া-শৃক্ত দেহ দেবের সদৃশ নাহিক বিরাম অঙ্গেতে গৌরভগ্টা, "কুহকে ভূলিয়া কহিলা আমারে কোথা বংস কর গতি, দেখিছ বে অই আশা মায়াবিনী বডই কুটিলমতি। উহার বচনে ক'রো না প্রত্যন্ত্র ভূলো না উহার ছলে, হেন প্ৰবঞ্চ দেখিতে পাবে না কলাপি অবনীতলে। ছিল সভ্য আগে অমর-আলয়ে ঋষির বচন সদা সত্যপ্রির অতি, না জানিত কড় মিথ্যা প্রবঞ্চনা সরল স্থলর গতি। যধন হেরূপ বলিত ৰাহারে ফলিত বচন তথা, ত্ৰিলোক-ভূবনে আছিল সুখ্যাতি আমার নিকটে মিথ্যানা হইত কথা! স্থুবে স্বৰ্গধানে ছিল বছ দিন क्रांच देशविष्ण्यमा---স্বৰ্গ লইল হবি দানব ছরস্ত অমরে করি ছলনা। ভনিয়া সে কথা ^{हे}स्सामि (क्वर्डा **मञ्**ल-भोत्राप्या স্বৰ্গপুরী পরিহরি, নিছলি ঘুচিলে করিলা ভ্রমণ ধরি ছলুবেশ আসিয়া পৃথিবী'পরি, ধার্থ-পরবশ আশানা আইসে অমরাবতীতে থাকে, দানৰ-ব্ৰাজ্জ-সময়ে স্বর্গেডে অর্গের হয়ার রাখে;

দিল অভিশাপ গতি হবে ধবাতলে, হইবে থাকিতে চিরদিন ভূমগুলে। অমে কৃহকিনী ঘুরিয়া পৃথিবীময়, কংহ যত বাণী সকলি নিম্ফল मकानि व्यनौक इया ভ্ৰমে এ কাননে ভূলায়ে মানব ৰত, ভ্ৰমে দিন দিন শঠতা করি সভত। নির্থি তোমারে সুকুষার অন্তি সরল নিশাল মন, পড়িলা বিপাকে উহার সংহতি এখানে করি গমন. করিয়া গোপন রেখেছে তোমারে এ কানন গৃঢ় স্থল ; আমি চেতাইব এস সঙ্গেমম নেথাইব সে সকল।" শ্ৰবণে কৌতুকী व्यानात्र উत्म्तत्न ठारे, হেরি চারিদিক্ কোন দিকে ভারে নির্থিতে নাহি পাই। ঋষি কহে "বৎস, পাবে না দেখিতে এখন তাহারে আর, থাকে নাহ্বস্থির এমনি প্রকৃতি তার। দেখিয়া আমারে নিকটে ভোষার অদৃশ্ৰ হইল ছলে, গেলা ভূলাইতে অক্ত কোন জনে আনিতে কাননম্বল।" তথন বেমন ভাঙ্গিল নিদ্রার ঘোর, উঠে যেন প্রাণী भनाहेल भद्र कात्र। কথায় প্ৰভায় হইল তাঁহার অগত্যা পশ্চাতে বাই, ু আশাপুরী-প্রান্তে গাঢ়তর এক অরণ্য দেখিতে পাই।

' কত যে রমণী কত যে পুৰুষ ভ্ৰমে এইথানে ঋষি কহে "বৎস সাধনা করিছ কত --व्यानामध लागी गात्रा-এ কুসুম দাম গ্ৰহণ কবিতে দারা, বন্ধু পিতা শতি, **পুত্ৰ, ভ্ৰাতা** কেছ সে নহে সম্মত। कननी, वाक्तव-श्रा !" পলায় অন্তবে নাজানি কি বুঝে ষাই জ্ৰুতগতি ব,ডিল কৌতুক নিকটে দাঁডাই যার, বন-দবশন আশে; দেই কার হাতে ভলে ধদি কভু আ সিয়া অস্থির অরণ্য-নিকটে (ठेनि (करन এই श्रंत। ন্তম্ভিত হইতু আদে। হেরি এ কাননে আবাহ! কত প্ৰাণী বহে ভয়স্কর ৰথা যবে ঝড কতই আনন্দ পায়, ৰায়ুমুথে মেঘ ছুটে, कि कर विधिद्र এ হেন অমৃত দুর হ'তে শুক্তে অতি ঘোরতর নাহি সে দিল আমায়। ছ ছ শব্দে বেগে উঠে , চ্চিডিব এ ৰাম ভাবি কতবার তেমতি উচ্ছাস কানন হইতে চ্চিডিতে নাহিক পারি; উঠিছে গভীর রব, প্রণয়েব ভূমি তাই হঃখে ত্যব্দি ভনিয়া সে ধ্বনি কানন-বাহিবে এ বনে হয়েছি দ্বারী।" পরাণী নিস্তব্ধ সব। ক্ৰন্তবেগে চলি প্রচণ্ড নিশাস এত করে যায় ঘন হাহারব **চক্ষে विन्तृ विन्तृ अ**ल , উঠিছে ঝটিকা সম; অন্তরে ধেষন ভ্নিয়া কাত্র কভু ভয়ানক কভু শাস্তভাব ख्वलिम कृष्ठे शत्रम । এই দে তাহার ক্রম। প্রবেশি অরণ্যে ঋষির সংহতি সে অরণ্য-পার্শে প্রবেশের মুথে হেরি এবে চারিদিক্ -দেখি প্ৰাণী এক জন, শভা, গুলা, পাতা হাতে ফুলমালা, জৰ্জবিত তক্ত, অভি মানভাব আকীৰ্ণ রাশি বল্মীক। তুঃধেতে করে ভ্রমণ ; এথা ভক্ত শাখা ভাকিয়া পডিছে বদনমগুলে পডিয়াছে কালি ওথা উন্মূলিত দারু; গভীর চিস্তার রেখা, হেলিয়া কোনটি রয়েছে শৃষ্টেতে চাহি ধরাপানে ফেলি অশ্রধারা হুত পুষ্প ফল চাক ; সতত ভ্ৰমিছে একা। ভাকিয়া ছলিছে কাহার পল্লব কাতর অস্তব দেখিয়া তাহার বিক্বত কাহার চূডা, উপনীত হই কাছে, বিশীৰ্থ কোনটি ভ্ৰমে দেইথানে বিহাৎ-আহত জিজাসি কি হেতু মানীতে পড়িছে গুঁডা; কত দিন সেথা আছে। खनन- नाइएन ষেন বাছরস্ত "আশার কাননে कहिल (म सन উচ্চিত্ন করেছে তার-আছি আমি বছদিন, শোভা-বিরহিং দিবা-বিভাবরী সে শোক-কানন ভুমি এইরপে দেখিতে তাহারি প্রায়! শরীর করেছি ক্ষীণ; প্ৰাণী সে কানন নির্থি আশ্র্যা বংসর কতই পক্ষ ঋতু মাস ত্ই রূপ ত্ই ভাগে, অতীত হইল হায়, কানন-ভিড্ ধার পরস্পর নারিলাম দিত্তে তবু কার গলে পাছে এক, অন্ত আদি; এ ছার ক্ষেহ-মালার!

ঐবিত যাহারা 🐪 তাহারা পশ্চাতে অগ্ৰভাগে ছায়া যত, কানন-ভিত্তরে করে পরিক্রম অবিশ্রান্ত অবিরত; গ হতো২স্মি রব, শিব শিব ধ্বনি সতত জীবিতমুখে, ছায়া-বুন্দ পাছে খুরিয়া খুরিয়া ভ্রমিছে মনের ছথে। কত যে প্ৰাচীন ভ্ৰমিছে দেখানে প্রসারিয়া হই বাছ; বিশীৰ্ণ শরীর, ব্যাকুল বদন গ্র।সিয়াছে **খেন রাছ**। ক**ত শিণ্ডছোয়া** ধায় অগ্রভাগে নিকটে আসিলে হায়, অমনি স্বিয়া ফিরে ফিরে চাহি দূরেতে পলায়ে যায়। কোন বা যুবক বুদ্ধের আরুতি ছায়ার পশ্চাতে ধায়, ছায়া স্থির র**হে** যুবাছুটি আম সি আলিঙ্গন করে তায়; কোথা আলিখন বুথা সে পরশ শূক বাহু বক্ষ:স্থলে। যুৱা দীৰ্ঘখাদে ছায়া নির্থিয়া ভাগে তপ্ত অঞ্জলে। কোন জন ধায় ছায়ার পশ্চাতে বাড়াইয়া ছই হাত ; ব্ছদিন পরে বেন পুনরায় দেখা পায় অকস্মাৎ, करह **चाञ्**नय বিনয় করিয়া "আ(ই)দ সথে একবার, গাহুতে জড়ায়ে ত্তব কণ্ঠদেশ নিবারি চিত্তের ভার। वह मिन मरथ ভাবি নিরন্তর षहे ऋथनः भूथ, নামে জপমালা করি করতলে সংবরি মনের ছথ। সকলি তেমতি বদন-আক্লতি সমভাব সেই সব, ^{ভবে} কেন সথে কাছে গেলে সর ৺কেন নাহি মূপে রব ?"

কেহ বা বলিছে ভূটিভে ছুটিভে কোন এক ছায়া-পাছে---"মা(ই)স ফিবে ঘরে ভাই প্ৰাণাধিক ठ**न अ**ननीत कांट्ह; দিবানিশি হায় क्तिरह क्लन জননী তোমার তরে, শাব্দায়ে রেখেছে সকলি ভেমতি জননী তোমার তরে। সেই ঘৰ আছে আছে সেই জায়া ভাই-বন্ধু সেই দব, (मह माम-मामी, সেই পরিজ্বন গৃহে সেই কলরব, কমলের দল সদৃশ তোমার শিশুরা ফুটিছে এবে; আন(ই)দ ফিরে ধরে ক্রোডে করি ভার বদন আজাণ লবে।" বলিয়া ছঃখেতে করিয়া ক্রন্দন পশ্চাতে ধাইছে তাব, ছায়ারপী প্রাণী না ভনে সে কথ। দূরে যায় পুনর্কার। আহা হরপদী রামা কোন জন চই বাহু উদ্ধে তুলি, ছুটে উর্দ্ধ†দে "নাথ নাথ" বলি । কুন্ধল পডিছে খুলি , "দাঁডাও বারেক ফণকাল নাথ. জুড়াও তাপিত বুক, বারেক তুলিয়া দেখাও আমারে অই শশিসম মৃথ , ভ্রমি অনিবার এ আঁধার বনে বর্ষ বর্ষ হায়। শাগর সলিলে ঞ্বতারা ধেন নাবিক নির্থি যায়; উঠিছে তরঙ্গ চারি পাশে ভার তরণী ছুটিছে আগে, অনিমিষ আঁখি দেখিছে চাহিয়া আকাশের সেই ভাগে; সেইকপ নাথ वांशि पिरानिम সেইরপে ছাথে চাই, ভবু এ হরস্ত ১ অকৃল সাগরে কুল নাহি খুঁজে পাই;

পক প্রসারিয়া স্থিরভাবে কর্তু শাবার তেমতি কবে পুনরায় বৃহক্ষণ শুষ্টে রয়, পাইব হৃদয়ে স্থান। আ ৩ হ'তে নারে না পারে কিরিতে মুধা সম স্বর শুনিব মধুর অবিচল পক্ষয়; জুড়াবে শরীর প্রাণ।" জিজ্ঞাসি ঋষিরে দেইরূপে যাই কত পত জন এইরূপে সেথা "কহ এ কি তপোধন— ছায়া অধ্যেষণ করি, এই স্থানে বেগে কোথা হ'তে হেন রোদন করিয়া ত্ৰমিছে আকেপে এরপ বহে পবন ? আঁধার কানন ভরি , অকু দিকে হেরি ঝড়ের আকাব সদা থেদশ্ব ভ্ৰমে অবিচেছদে, কিছু নাহি **হয় দৃ**ষ্টি : শিরে বক্ষে করাঘাত, প্রচণ্ড বাতাস বহিছে এখানে অবিরল ধারা ঘন দীর্ঘাস, একি অদভ্ত স্টি?" যুগল **নয়নে পাত।** চল কিছু আগে ঋষি কহে 'বৎস, চাহি ক্ষণকাল তাহাদের মুখ चहत्क (मिथिटव मव ; হুঃথেতে পূরে হদয়, কথন্ কি ভাব কোথা হ'তে উহা নবীন পঙ্ক কহি, "হায়, বিধি কৈত্ৰপে হয় উদ্ভব।" ওকালে এমন হয়! দেখি এক স্থানে ষাইতে ষাইতে প্ৰকাশিত যায় স্ষ্টির গৌরব প্রচণ্ড ঝটিকা বহে , এ ছেন ভরুণী-মূধ, পশু পক্ষী জীব সম্মুধে তাহার মানবের মনে তাপদগ্ধ হয়ে তৃণ আদি স্থির নছে, দেয় কি এতই হথ! গগন আছেয় ধৃলিভে ধৃলিভে বিধু পদ্মসূলে ধীরা, মুক্তা, চুণি ঘনবেগে শিলাপাত, কলক দেখিতে পারি; ব্রিষে কম্ব, বৃষ্টিধারা-রূপে দগ্ধ শোকচছায়া তক্ষণীর মৃথে বিনা মেলে বজ্ঞাঘাত। কদাপি দেখিতে নারি।" সাগর হইডে যথা সে তরক করিয়া তথন এরপে আ'কেপ প্রবেশি নদীর মৃথে, ক্রমে হই অগ্রসর, তুলারাশি হে মত্ত-বেগে ধার বেগে অল্ল অল্ল ক্ৰমশ: বাতাস ফেনভুপ লয়ে বুকে; আঘাতে বদনপর। তীর সম তেনে ছুটে ভরীকুল হই ৰত আরো ক্রমে অগ্রসর তীরেতে আছাড়ি পড়ে, বায়ু গুরুতর তত ; তরঙ্গ-ভাড়িত বেগে পুনরা লতা-পাতা ক্ৰমে গাছের পল্লব নদীগর্ভে ধার রড়ে ; বায়ুভরে অবনত। কত শত প্ৰা সেইক্লপ এথা श्चरण भवन ক্রমে বৃদ্ধি ঝড় ঝড়মুখে বেগে ধার, বুকে মৃথে বেগ পড়ে; আকুল বুর ঘন ক্ষুদ্ধাস হই অগ্রনর অতি কটে ধীরে ধরা না পরশে পায়; স্থির হৈতে নারি ঝড়ে। বৃদ্ধ নর না কত শত যুবা ৰায়ু-প্ৰতিমূপে বৰা অন্তরীকে বিধাবিত বেগে ঝড়ে; বিহল বখন ধাৰ, কড় জন্তুদিং কভূ এক স্থানে প্রবল বাভাবে আগত্ত হৈলে কিছু আহাড়ি আহাড়ি:পড়ে। দুরে ফেলে পুনরার;

নির্থি সেথানে কিরণ ঢাকিয়া व्यक्ति भएए हि होता. ব্রবায় বথা তপন ঢাকিয়া প্রকাশে মেঘের কারা। অথবা যেমন শুকো পঙ্গপাল উড়িলে আধার-লাগ. ছায়া বিছাইয়া পড়ে ধরাতলে ঢাকিয়া গগন-ভাল; ছोत्रा तम श्रापति তেমতি আকার আঁধারিয়া নভত্তল, ঘুরিছে শুক্তেতে ছটিয়া ছটিয়া इन्न कति (म अक्षण। অস্থির শরীর ছায়ার পরশে শুফ কণ্ঠ রুদ্ধ শ্বর, তপোধন-পাংশ চঞাল নয়ন নির্ধি শৃক্তের পব, বোর গাঢ় মেঘ যেন কালি-মাধা শুকুপথে উড়ে যায়, ঝ**ড়বেগে** গতি তুলিয়া তুলিয়া ধুম বিনিৰ্গত ভাষ ৷ অন্ধকার কবি ভুমিছে সে মেঘ প্রসারে আকাশ যুডে . . সে মেঘের ছারা পড়ে যাব গায় উত্তাপে তথনি পুডে। শুকার রুধির শরীবে আমার তুত্তে নাহি সরে ভাষ. ঋষিব বদন অশ্ৰপৰ আঁথি নির্বি পাইয়া আস। অন্ট কাল মেৰ ঋষি কহে "বংস. এ আশা-কাননে শিখা, ৰুখা যে এ বন উহার(ই) শগীবে কালির অক্ষরে লিখা। ও কালী মুরতি পকী নহে উহা করাল কালের ছায়া, খুরে নিত্য এপা প্রাণিগণে দলি এরপে প্রদারি কায়।" ভূলিয়া আপিনি বলিভে বলিভে তপোধন কয় শোকে— এ কালিম ছায়া "হার রে বিধাতঃ 🔅 ছড়ালি কেন ভূলোকে ?

in things ...

মধুর সুন্দর ৰগতে যা আছে গঠিয়া তাহাৰ পর. গঠিলে বিধাতঃ সকলের শ্রেষ্ঠ প্রাণিরপ মনোহর; বিষমাখা তার কণ্টক আবার গঠিলে কেন এ কাল ? মৰ্ক্যে পাঠাইয়া সর্গের পুতলী भर्ष मिरल कैंगि-क्रांन । স্থাচিত্র পটেতে কালি মাথাইতে কেন এত ভালবাস গ নিদাকণ বিধি ব্রুগতের সুধ এরপে কেন বিনাশ ?" এরূপে বিলাপ करब्रन रम श्रवि আতক্ষে সম্মুখে চাই, গৈরিক-মিশ্রিত দরে প্রান্তদেশ ভুপ নির্থিতে পাই। সেই ভূপ-অজ অন্ধ গুহা এক উখিত হইয়া তায়, হন ঘন খাস প্রচণ্ড বাতাস ঝডের আকারে ধার। সেই গুহাপাশে অতিকটে দোহে আসি হই উপস্থিত , দেধিয়া স্বস্তিত নিকটে আসিয়া ভয়ে চিত্ত চমকিত। বদি এক প্ৰাণী গহৰৰ-ভিতম্বে প্রচণ্ড নিশাস ছাডে. জনমি বাতাস (महे मौर्घशीरम ঝড় সম বেগে বাড়ে। পাষাণ-নিৰ্মিত কালীর বরণ (यम (न कठिन कांग्रा, ধেন অন্ধকার শরীরে . বিস্তত ঘোরতর গাঢ় ছায়া। কাপে দর্ম-অক মাৰো মাঝে মাঝে ভ্কারধ্বনি নাসায়, কৃণ্য (কৃণ্ ছিন্ন-ভিন্ন বেশ মন্তকে বিভিন্ন হায়! করিয়া বদন করে আচ্চাদন বসি ভাবে হেঁট মাধা, বেন সে মুরতি বসি ছেন,ভাব (महे श्रहा-च्याक श्रीवा।

কোথা নাহি ৰাই থাকি একা হেখা সম্ভাবি আহারে কহে তপোধন তবু সে বিধি আমার. "শোকমূর্ত্তি এই হের, আশার কাননে • ইহা হ'তে ঘটে প্রেরিয়া পরাণী বিভম্বনা করে বছ বিশ্ব বছ ফের।" আমাৰে কত জালায়: ঋষিরে জিজা†সি "কেন, তপোধন খুলি দগ্ধ আঁথি, বৰ্ষে যন্তবার মুখে আমছাদন কর? তথনি যে থাকে কাছে. না দেখিত কভু বদন হইতে ভার সম বুঝি আশার কাননে উহা ত হয় অন্তর।" অভাগা নাহিক আছে। সে কথা গুনিয়া ছাডি দীৰ্ঘাস আসিতে আসিতে দেথিয়াছ পথে শোক-মূর্তিছ:থে বলে, সহঅ সহঅ প্রাণী, বলিতে বলিতে করের অঙ্গুলী ভ্ৰমিছে হৃঃখেতে, . এ कठोक-रनारम তিভিল নয়নজলে, শুনায়ে কাতর বাণী। কে তুমি এখানে "এ কথা জান না না থাক এথানে যাও অবুতা হান ভ্ৰমিছ আশা কানন , বাঁচিতে যগপি চাও, বুঝিয়াছি খবে শিশুনহ তাহা আমার নিকটে থাকিয়া এথানে হবে কোন যুবাজন। কেন এ সন্তাপ পাও ?" আমি হতভাগা আছি এই স্থানে গৃহীর আলগে যথা যবে কোন চারি যুগ এই হাল , মৃত্যু উপস্থিত হয়, বিধাতা আমায় করিলা স্ঞ্জন রোদন-নিনাদ বিলাপ-শোচনা করিয়া লোক-জ্ঞাল। विभौषं करत चालग ; ব্যুকোন জ্বন মৃত্যু নাই মম ষে আদে নিকটে তথন যেমন সেই পায় নানা কেশ, বিমৰ্থ মলিন বেশ, থাকি এ নিৰ্জ্জনে সেই হেতু এগা ক† লিম বদন কালেব ছায়াতে জঃধে ছাড়িয়াছি দেশ। নাদেখাই কারে এ ভা বাহিরায় বহির্দেশ . হেরে চাবিদিক এ ছার বদন অক্সক বিষয় তাহাব কারণ বলি---ব্ৰহ্মাণ্ড মলিন-কায়, দেখিব যাহারে বিধান্তার শাপে ভঙ্ক কণ্ঠ তালু ঘন উদ্ধর্যাস তথনি দে বাবে জ্বলি: হৃদয়জনলৈ শিখায়, কত অমুনয় করিত্ব বিধিরে অধীর হইয় ধরাতল যেন লইতে এ পাপ-প্রাণ, সতত কাঁপিতে থাকে, এ কাল-কটাক হইতে আমার কণ্টক উপবে ভরে ভয়ে যেন প্রাণীরে করিতে ত্রাণ ; ধরাতলে পদ রাথে; তা ভনিয়া বিধি শুধু এই বর সেইরূপে এবে নির্থিয়া শোক করি স্থান পরিহার, मिना (म कक्ना कति-হেরিতে কেবল ষাই ঋষি সহ ঋষি কচে মুহ শিশুর বদন বদনে চিন্তার ভার---পাইব নয়ন ভরি, "নির্থিলা শোক নির্থিলা ভা এ কটাক্স-দাহ শিশুরে কেবল দাহন করিতে নারে, ষরণ্যে কাল-প্রতিমা, ন্তুবা মৃহুর্ত্তে দম্ব করি তাপে. চল বাই এবে দেখিবে আশ অন্ত প্রাণী স্বাকারে; কোথা সে কানন-সীমা।"

দশম কণ্পনা

নৈরাশক্ষেত্র—মধ্যভাগে মরুপ্রদেশ— তাহাতে চিরপ্রদীপ্ত ব্দনলকুও— হতাশের মৃষ্টি দর্শন ও নিদ্রাভল ।

ধীরে ধীরে ঋষি চলে আংগে আংগে পশ্চাতে করি গমন,

শোকারণ্য ছাড়ি, অন্তব্যরে তার উপনীত হই জন।

কঠিন মৃত্তিকা নিয় উচ্চ ভূমি ধরানহে সমতল,

চ**লিতে** চবণ স্থির নাহি বহে, সেপথ হেন পিচ্ছল।

নাহি ডাকে পাথী তক্লব শাৰায় নীয়বে বসিয়া রয়,

বিনা বায়ুবেগে নিত্য তক্তলে ঝরে লতা-পত্রচয়।

ক্রীডায় নিবৃত্ত ব্যাপগণ সবে উক্লাড করিয়া বন,

ফিবে গৃহমুথে ত্যজিয়া কানন আনন্দে করে গমন;

তথন ধেমন ছাডি নানা দিক্ পুন: ফিবে যত পাৰা;

ভ্রমে উডে উডে তক্স চারি ধাবে ভরে না প্রবেশে শাখী।

নিরপি আসিয়া এথা দেই ভাবে আছে যত নিকেতন,

চারিধাবে তার ভ্রমে নিবস্তব হতাশ পরাণিগণ ;

সাহস না করে পশিতে ভিতরে কুল মন, নত শিব,

হেবি কত প্ৰাণী চলে অতি ধীবে দেহে যেন নাহি বল,

শুক নীলোৎপল মুখছেবি ধেন করে চাপে বক্ষঃস্থল।

কত যুবা. আহা নত পৃষ্ঠদণ্ড চলে হেন ধীরে ধীরে, প্রতি পাদক্ষেপে বেন রেণু গণি নিরথে মহী-শরীরে।

হেন ধীব গতি তবু কত জন পড়ে নিত্য ভূমিতলে,

খলিত চবণ ধ্লিতে লুটার পিচ্ছল সেহ অঞ্চলে।

পড়ে কিন্তি পৃষ্ঠে চলিতে চলিতে বৃদ্ধ প্রাণী কত জন.

উঠিতে শক্তি নাহিক আশ্রয় আশ্রেষ্টের প্রন্

কোথাও পরাণী হেরি শত শত বৃদিয়া তুর্গম স্থানে,

অনিমেব আধি নীরস বদন নিত্য হেরে শৃক্ত পানে,

চলে দিনমণি ভাসিয়া গগনে
চাহিয়া তাহাব পথ,

ছাড়ে দীর্ঘরাস বলে "হা বিধান্ত: ভাল দিলে মনোরথ;

করি বড় সাধ ধরিলাম গ্রেদ কুপণের যেন মণি,

এখন সে আশা হয়েছে গরল দংশিছে যেমন ফণী।

কেন বিধি হেন আখাদে ভূলায়ে জালিলে হৃদয়ে শিখা ?

জানিতে যগপি অগ্রে এ লগাটে এ হেন অভাগ্য লিখা!"

এ রূপে বিলাপ করিছে **অ**নেকে কেচ বা উঠিয়া ধায় ,

ভাবে যেন শৃক্তে কোন সে আরুতি সহসা দেখিতে পায়।

গিয়া জ্রুতপদে কর্তল যুডে বাছ প্রসারণ করি,

বাতাসে মিলায় ঘুচে সে প্রমাদ পালটে আশা সংধরি।

ফিরে অংধামূথে বসিয়া আবার দিনমণি পানে চায়,

দেবে শৃক্ত মার্গে ধীরে ধীরে স্থগ্য গগনে জাসিয়া বায়।

নির্বি সেধানে প্রাণী অফ কড মনস্তাপে ধীরে ধীরে.

ধূলি-সমাচ্ছয়, কুমুমের হার কণ্ঠ হৈতে খুলি नित्रथिष्ट फिरत फिरत , বলিছে "এখন ফেলিছে ভৃতলে করি ছিন্ন ছিন্ন भम्डत्म पृष्ठ ठानि, এ ছাব সংসাবে ফেলি মৃত্যু ভ নেত্রে অঞ্বিন্ উঠিছে সম্বনে কাঁপি; কত বে উৎসাহ পণ্ড পণ্ড হয়ে পদাবাতে চূৰ্ণ त्र भाना পড़ে यथन, ভূধর-শরীর ছাড়িয়া নিশাস উদ্যাপন বলি সে প্রাণী করে গমন। ভাবিতাম আগে বৃসিয়া নির্জনে দেখি কত জন धौरत हिजाल पे प्रत, পরিণামে হায় অক্কিড চিত্ৰেব नद्रस्तत नीरव একে একে রেখা তুলে: বলিয়ে এতেক সর্ব্ব অবয়ব করিয়ে ম'র্জিড নিরক্ষ কবিরা পরে, আবার ভূতলে সেই চিত্রপট বিছায়ে বিছায়ে তুই করতলে ধরে; উপবে উপরে পরুশে মহাকে পরশে জনয়ে যতনে করে চুম্বন; কবিছে আকেপ ফেলি ধরাতলে পবে ছিন্ন কবি সস্থাপে করে গমন। বিদীৰ্ণ হলি নে বলে "রে এখন(ও) হার রে কঠিন হিয়া? না ভাঙ্গে সে বুক এ হেন মধ্ব কি ফল বাঁচিয়া আশা বিসৰ্জন দিয়া ? বলিতে বলিভে না জানি কভই ভাবিতাম আগে (कांबल बानगबन, বুক অন্তরালে আশার হিলোকে ছিল যত দিন কবিত হদে শ্রমণ। বাড়িল কৌতুক কৌছ ধাতুময় বু**ৰেছি এ**থ**ন** कर्छ। त नरतत श्रमि, লানিতে বাসনা কারণ করিয়া আনেস্ত ডু:থেয় গঠিলা আমায় বিধি !" পশ্চাতে তাদের প্ৰাণী শত শত কোন খানে দেখি শয়ন করি ভূতলে, অনন্ত বিভার তুলিয়া বিষম পাষাণের ভার রাথিছে স্তুদন্তলে; হেরি চারিণিক মণিমর দণ্ড কাঞ্চন মুকুট হেম-বিমণ্ডিত অনি,

প্ৰতিজন পাশে পডেছে কতই ধসি। বাঁচিয়া কি ফল পাইয়া এ হেন ক্লেশ, বুথায় ভ্ৰমণ ধরি এ ভিক্ক বেশ! কতই বাসনা ধরিত আগে এ মন ৷ ভাবিতাম তৃচ্ছ শামাক তুজহ গগন ! জল্ধি গোপদ ইদ্ৰপুৰী কৃদ্ৰ অতি, इंहेन अ मनः এখন কোথায় গতি!" ভগ্ন অসে লয়ে ज्ञारत करत श्रहात, পডিয়া বক্ষেত্রে চাপায় পাষাণভাব। শিলাখণ্ড তুলে কতই চাপিছে বুকে, কতই কাদিয় দারুণ মনের ছথে। "कि कठिन हिंगा"— कहिए के मिश "শিলা ছেন হয় ছার, পরেছি যেখা^{নে} বাসনা ফণিব হার।" উঠিয়া আবার ক্ৰমে অগ্ৰন্তাকো যায়, গিয়া কিছু দুৰে অরণ্যমাঝে লুকার; কোথা প্রাণিগণ এরপে করে গমন, ঋষির পশ্চাত চলিফু আকুল মন। চলি কভ 🕫 ক্রমে আবি উপনীত, ঘোর মক্জি হেরি হয়ে চমকিড; **ৰেন** নিব^{যু} ধুমেতে আচ্ছের বর,

নাহি বৃক্ষলভা পশু-পক্ষী-রব ! গাঢ়তর বেন অন্ধকারজাল বিকলাক সম্দর ,
বারিশ্ভ মক ধৃধৃকরে সদা
চলিতে নাহিক পথ,
কঠিন কর্কণ লবণ-মৃতিকা সে মকপরে ছড়ায়। দে বিকট জালে আঠুল তরাদে শিহরি চাহি তথন, চদেহ ব রোমাঞ্চিত দেহ কম্পিত হাদর নিম্পন্দ ছই নয়ন; দেখি স্থানে স্থানে স্থানে ক্ত শব-দেহ কঠিন কৰ্কশ লবণ-মৃত্তিকা উত্তপ্ত অনলবং। পদতালু জ্বলে যে যেন তপ্ত বালু সে তাপ নাহিক জ্ঞান, দিক্হারা হয়ে ভ্রমে সেইখানে সেই বারিশ্রু স্থলে, নে বি বিক্ত বদন বিবর্ণ শরীর পরাণী আকুল প্রাণ; বাণীশৃক্ত মুখ ধূলি -লতা-রজজুবাদ্ধা গলে। দয় কাঁপিতে কাঁপিতে ধ্লিপূর্ণ কেশ পীড়িত হৃদয় শরীরে কালিম-মলা দে মরুপ্রদেশে ভ্রমে প্রাণিগণ জ্বভবেগে করে গতি, হেরি এইরূপ যাই যা**ই য**ত দূর **অভ্**রে হয়ে উতলা; বিশীর্ণ বদন বরণ পাঞ্র বাহিয়া উত্তপ্ত পথি। ক্রমে যত যাই তত্ত তত উষ্ণ বায়ু - নীরবে করে ভ্রমণ; উফতর শুদ্ধ মহী, উঠে বোর তাপ ঘেরি চারিদিক্ নিশীথ সময়ে প্রেত্যোনি যথা দগ্ধচিত্ত দগ্ধমন। শরীর চরণ দহি। ক্রমে উপনীত বিশাল বিস্তৃত তৃষিত অক্তরে **१**ट्र मक्रमिं চায় সে ধ্মল শৃত্তে, নির্থি সে ভাব শ্রীয় কণ্টক ভরত্বর মক্তৃমে, শ্রুওআলতা হ হ করে দিক্ আছেল নিবিড ধ্মে; হ হ অবে বালি অনস্ত বিস্তৃত ভাদর প্রে কাকণ্ডো। হার, কৃত নারী নর আশাভগ্ন হায়, কত যুবা বৃদ্ধ প্রাণী, ভ্রমে এই ভাবে সে মক-প্রদেশে দশ দিকে পরকাশ, ধৃ ধৃ করে শৃস্ত অনন্ত শ্রীর ভাবে বৃদ্দেম মলিন গ্লানি। দ্ব ক্রমশঃ ভতই ু দৈধিতে পরাণে ত্রাস। লবণ-বালুকা বিকীণ প্রদেশ যাই যত দূর ্নেহারি ধ্ম প্রগাঢ় , বনবটা বেন বিছারে আকাশে দারুণ উত্তাপ অংশ, থেলে ধেন তাহে অন অনলের ঢেউ তিমিরে ঢাকে আবাঢ়। ক্রমে অন্ধকার বেহর দশ দিক্ উত্তপ্ত বালুর সক্ষে। মরু-মধ্যভাগে **এক**মাত্র তরু প্রবেশি ষেন পাতাল, উঠে নিত্য ধৃম ফুটে ক্ষিভিতল তাপে জার্প কলেবর ; প্রাণী এক জন তলকেশে তার দাড়াইয়া স্থিয়তর, হাতে রক্ষুধরি দৃঢ়করি তার কজ্জল-বর্ণ করাল। মাঝে মাঝে মাঝে বিকট কিরণ দৃঢ় কার ভার বাধিছে কটিন কাস, আরোপি শাখাতে পরিছে গলার ছাড়িয়া বিকট ^{কাল} চমকি চমকি ছুটে, কাল-কাদখিনী কোলেতে যেমন ৰিছাৎ গগনে ৰুটে ; ভাতে তীত্ৰ ছটা ধাঁধিয়া নয়ন ছাড়িয়াবিকট খাস ; ঝুলে তরুডালে শবদেহ বেন ঝুণি হেন **কভকণ,** মৃহুর্ভে পুনঃ লুকায়,

•				
কণ্ঠ হ'তে পুনঃ	খুলিয়া আবার	धृध्कटत मिक्	অনস্ত ব্যাদান	
রজ্জুকবে উন্মোচন।		বালুময় ময়	বালুমগ্ন সকলেশ;	
কখন শস্থির	বেগে তক্তল	জলিছে অনল	সে বিৰম কুণ্ডে	
	টনাদপ্রায়,	আশাভগ্ন	নারী নর,	
ছুটে মত্তভাবে	সে মক্প্রদেশে	দশদিক হ'তে	হতাশ-তাড়িত	
প্রাণী সে	ক্ষাল্কায় ,	পড়ে তারে	হ নিরস্তর ।	
চলে দিক্শুক্ত	করি ছত্কার	হেরি ক্ষণকাল	সে জনল-কুণ্ড	
ক্রে-পঞ	मार्थ डिट्रं	ব্যাকৃলিভ	ঃ হয় প্ৰাণ,	
ফেন-পুঞ্জ জনস্ত বালুকা	ভাপে দগ্ধীভূত	বলি—"শীঘ্ৰ ঋষি	পবিহরি ইহা	
অব্লয় বাগুক। অক্সিস্ক	त्रत्न ছूटि ,	চল কোন	(অংকুজান।	
व्याश्त्र ए	प्रताङ्करणः, चरशः विकारिका	যেন সে কোন বা	অণবের ক্লে	
हिन्न करत्र रमर	নতথ বিদাবিয়া	বসি নিং	ৰ্থিলে একা,	
	করে আচে, ভিত্তিক কেন্দ্রকার	-12 -1 11 10 11		
বানিয়া অঙ্গুলে ছি'ডে কেশ-জটা		নেত্রপথে ষায় দেখা,		
	র বিকচ ;	इङ्ह्टल अन	অনন্ত জলাধ	
	চায় দশদিকে	অনন্ত ঘন উচছুাস, শুলু অন্তরীকে অগাধ অনুভ		
	ণ থেদাইয়া—			
আশাভগ্ন প্ৰাণী	যত সে প্রদেশে	ব্যোমক	ায় পরকাশ। নিথিল গগন	
সম্মুখে ড	হমে ছুটিয়া।	পক্ষী প্রাণী-শৃত্	নিথিল গগন	
জ্ঞলে মকুমাঝে	অনলের কুণ্ড	পক্ষী-প্রা	ণী-শৃক সিন্ধ। কেবলি নিয়ত	
বিপুল মূ	थवरामान,	জলধি-গৰ্জন	কেবাল ৷ পরত	
ধুমল কালিম	খ্ব্যাদান, বজ্জ-ধাতু সম	নাহ অ	ক্রি স্বর-।বন্ধু।	
শিলাখ	ও নিরমাণ।			
উঠে বহিং শিখা	मृत्र भू ज्ञ পথে	প্রাণ অ	†কুল হ য়,	
ৰিহ বা ও	প্রদারণ করি,	ব্দিলে একাকী	শ্রীর জীবন	
हुरहे छूरहे छेरहे	দ্র শ্রূপথে	(4)4 es	। শৃক্তময়; এ মরুপ্রদেশে	
ভীষণ	গৰ্জন ধরি;	সেইরূপ এখা _{প্রস} ক্তি	অন্যতন্ত। অন্যতন্ত্ৰ	
লিহি লিহি করি	উঠে ব হিন্দা লা	অবেশ	আকুল দেহ, শুন তপোধন	
কপ হ'	তে ভীম র লে,	হতেছে আমার ইবে প্র	বিত্তাণ দেহ ! [*]	
জিহি লক্লক্	ছুটিতে ছুটিতে	বলিয়া নির্বাধি	র্থা। তাই : হেরি চারিদিক্	
	(वन जूकर्त्र ,		हि प्रिथि चातृ!	
चानि छानिशरन	ধরি একে একে		সেই ভক্তল	
	ত্তি ভয়ন্বর,	নিদ্রাভকে পুন:		
6.14.2	मृहुत्कं भृहत्कं	(गर गा 	মোদর-ধার। পড়ি দামোদ ^{েব}	
সে অন গ-কুডে	প বহিংর পর ;	তেমতি কিরণ	करत करें कहा	
(निर्मः	া বাহুস াস ; তের রে হড়োল	च्यारणा 	করে ছই কুল, তক্লর শরীবে	
ঋষি কহে বংস,	. হের রে হতাশ কণ নেকার	(७५।७।५४।	করিছে ফ্ল_!	
	কুপ নেহার ; প্রিথম এই	ন্নজভ দেখিতে দেখিতে	কারতহ মুগ : ফি রিহু আ বিবি	
আশার কাননে	পরিণাম এই	্দাৰতে গোৰত জনসন্ধি	অবাপন গেছে:	
	ত বিধাতার !"	আবেণাশ কলং যে ধর্মার	আপন গেছে ; আবর্ত্তে পড়িয়া	
নেহারি স্বাতকে	কম্পিত শরীর	সুশঃ গোৰ্ স। স সক্ষিত	জাটিল স্থাহে।	
ভয়ে 1	শিরে কাঁপে কেশ—		alle il Aug / I	

ছায়াময়ী

[কাৰ্য]

প্রস্থাবনা

পার্ক্য-গগনে নিবিড কালিমা অরণো থেলিছে নিশি । ভীত বদনা পৃথিবী দেখিছে খোব অন্ধকাবে মিশি !---शै शै भवरम **अ**हेवी शृतिरह জাগিছে প্রমথগণ, ষ্ট হাসেতে বিকট ভাবেলে পৃরিছে বিটপী-বন। কুট করভালি কবন্ধ ভালিছে **डाकिनी इतिছে डात्न**, বিন্দ-বিউপে ব্রহ্ম-পিশাচ शिष्ट् वोकारा शील। উৰ্দ্ধচৰণে প্ৰেক্ত নাচিছে বুক্ষ হেলিছে ভূঁৱে, াৰ অটবী বিৱাট ভাওবে. কাশ উডিছে ফুঁয়ে; ক্যা বিথাবি বিকট শ্মশানে বসিছে ভৈববী পাল, ীম-মূবতি শাশানে হাসিছে আলেয়া জলিছে ভাল। ^{চ্}ণ্ড-**স্বারাবে থেলিছে ভৈর**ব অন্থি-ভূষণ গলে, ঠঠ ঠং ঠঠ নর-কপাল শ্বশানভূমিতে চলে। প্রেত। চলে কপাল বথ- यः

कात्र माथा এটা हि हि हि—हः ধাকিটি ধাকিটি ধিমিয়া। ২য় প্রেত। রাজা কি বাথাল ছিল কোন কাল এখন মডার মাথার কপাল শ্বশানে দিয়াছে ফেলিয়া। ১ম ও ২য় শ্রেভ। চলে কপাল ধধ--- পঃ কার মাথা এটা হি চি চি চ: ধাকিটি থাকিটি ধিমিয়া। মথে কটকট শব্দ বিকট থেলিছে ভৈরবদলে. দম বিকাশি থিলি থিলি হাসি অস্থি-ভূষণ গলে; খেলিতে খেলিতে চণ্ড দাপটে প্রমথ চলিল শেষ. নদীকলে হেথা মুণ্ড ঝুলায়ে শ্বশান কবাল-বেশ। দগ্ম-বরণ বিগত-যৌবন সন্মুণে স্থাপিত শব. ভল পলিত চিকুর বিরসে বদনে বিবত বব. তীত্র নয়নে দেখিছে চাহিয়া কপালে কঞ্চিত রেখা, অৰ্দ্ধ-জীবনে শ্মশান-গহনে মানব বসিয়া একা। অটুহাসিতে প্রমণ হাসিল ভৈরব ধরিল ভালি. অন্তি কুডারে নুমুগু-কগালে সম্পে রাখিল ডালি।

প্রথম পল্লব

শ্বশানবিহারী ভিখারী তথন :—

"অরে রে প্রমথ প্রেডম্র্রিগণ,
করিম শ্রমণ কত সে ত্বন,
কত অন্ধকার আলো দরশন,
ব্রিলোক-ভিতরে নিশিতে যুরে,

বল্ কোথা বল্ কোথা পরকাল, কি প্রথা সেথানে ডোগ কি জঞ্জাল, জীবদেহ হ'তে কডাস্ত করাল জীবাত্মা যথন থেদায় দূরে ?

প'ড়ে থাকে দেহ,—কোথা বা পরাণী, কলুষে অধিত ঐীবনের গ্লামি করে প্রকালিত,—কি সলিল আমি থাকে কত কাল, কোথা কি পুরে?

আছে কি ঔষধ—আছে কি উপায়, পাপেব কলঙ্ক বাতে বৃচে বার, পাশীর পরাণ আবার জীয়ায়, জীব-চিত্তশিথা কভ কি নিবে?

कक् कि निरंद एत एम एचात्र व्यवन, बारतक श्वरदा बनिरन श्वरन ? डेश्मत्रकारन कि चारह एत वन्, एम माह निवारंग्र कुछ।'एछ खीरद ?

ভূলে কি পাতকী ত্যজিলে জীবন, ইছ-জন্মকথা এ মৰ্ত্যভূবন ? স্থাতি-চিন্তা-ডোর জীবের বন্ধন মাটীতে পুন: কি মিশারে বার ?

অথবা আবার সে সব বন্ধনে জীবাত্ম। দেখে বে অপনে অপনে, ফণিক্সপে কাল অনস্ত গৰ্জনে অনস্ত ভূবনে অুবায় তার ?

না থাকে এবে সে ইন্দ্রির-চালনা, সে মোহ বিকার মারার ছলনা, শরীর-ধারণে, পাপীর বেদনা কংন কলাচ ভূলা ও বার; ভূলাতে কিছু কি থাকে নাক আর্ব, কেন বা খপন—কেন বা বিকার, কেবল পরাণে আগে কি ধিকার, অশ্রীবি-ভাপ নাহি ভূড়ায় ?

জুডায় কভু কি সে চিডাদাহন ? কিবপে জুডাল—জুডায় কখন, আছে কি নে প্রথা বিধির লিখন লঘু-গুক-ভেদ যাতনা-ভেদ?

অথবা বেমতি দশানন 6িডা জলে চিরকাল — চির-প্রজনিতা, শিথার গর্জনে সাগর পীডিড! বেলার দুটিয়া কররে থেদ,

অধীর রদরে অপ্রান্ত তেমতি ত্রমে জীবকুল অসীম তুর্গতি ছাডিতে ভূলিতে নাহিক শক্তি তিলার্দ্ধ রভনে নিদ্ধতি নর ?

এ হ'তে নরক কিবা ভয়স্কর কোন্বেদে আছে, জীবদাহকর; পাপের কণ্টক বিধিলে অন্তরে নতে কি কথন দে পাপক্ষয়?

দেহশৃন্ধ তোরা, আমি দঞ্জমতি, বুঝাইরা বল্ পাপীর কি গভি, শিশু পুণ্যমন, নারী পুণ্যমতি কলুয় পরশে পায় কি পার?

আছে কি বে পার সে পাপের হ্রদে,
ভূবে বাহে নর পড়িরা প্রমাদে
বিবাক্ত ভীবন ভোগে রে বিবাদে,
আছে কি পকাতে নিকৃতি তাব।

ৰদি সভ্য বল, দেখাইতে পার পরকালে হয় পাতকী উদ্ধার যথন তাজিব এ জালো-আধার, তোদের সঙ্গে সাধুয়া ^{হয়।}

গহন গহবর নগর অটবী নরক পাতাল বে কোন পদবী বধন দেখিব— যেধানে দেখাবি তথনি দেখানে আগতেরে বং! হর নিশাচর, লব দেহোপব নর অস্থি-মালা নৃম্ও-ধর্পর, নরদেহ ধরি হব রে বর্মর, পিশাচ-পদ্ধতি শিথিব বত।

বল্ কোথা বল্—চল্ লয়ে চল্ দেথিব সে দেশ, পাপীর সম্বল, দেহত্যাগী জীব লভিদ্বা মঞ্চল, কি কাজে কিরূপে কোথায় বভা ।"

সে কথা শুনিয়া তৈরব সকল কেহ বা ধরিল বিকট কবল, কেহ বা নাচিল— কেহ বা হাসিল, ভীষণ কটাকে কেহ বা চায়।

বিভগ্ন বিকট পিশাচ-শবদে কেহ বা নিকটে আসি ধীরপদে কহিল বচন ,—"ভাজিবে বথন দেহ-আচ্ছাদন জীব-নিচয়,

কি হবে তাদের কি হবে রে আব—
আমাদের মত ধরিবে আকার,
অমিবে ভ্বন খুঁজি অরুকার,
ব্যাহত হচারে নিশ্চয় বাণী।"

বলি থিলি থিলি হাসি বাস দূরে , আসি অন্ত প্রেত ভরত্কর স্করে কচিতে লাগিল শ্রুতিদেশ পূরে শ্মশানবিহারী প্রাণীর কাছে ;—

শ্বামি বলি যার ;—করিস্প্রভায়, দেহাতে মানব কিছুই না হয়, মাটীর শরীর মাটীতেই রয়, দেহ মন গড়া একই হাচে।

্মমরা অদেহী বিভিন্ন-গডন চিরকালি এই মূরতি ধারণ, তৃহারা নহিদ্ মোদের মতন।" বলি নৃত্যু করি মূরে দেখার।

সংসা, তথন সে বনরাক্সিতে বেতাল ভৈরব আসি আচ্ছিতে তথ্য করিল করের তালিতে, পিশাচমগুলী নিকটে ধার। কহিল ডাদের ভূত-দলপতি, বিকট তুজেতে থরতর গতি অমাহাবী ভাষা— শৈশাচ-পদ্ধতি ;— "নিকটে উহার না ৰাও কেই:

শোক-দুঃথ-তাপে যে নর পীডিত মৃত্যুর অঙ্গী ধার দেহে স্থিত তাহার নিকটে জগৎ অভিত, না গজ্য কেহ রে তাহার দেহ।

আমি ভূতা বার, এ আদেশ তার ত্রিলোকমণ্ডলে এ কথা প্রচার, কহিছু তোদের—দেখিস্ ইহার কদাচ কোথাও অন্তথা নহে।

লজিবলে এ বাণী জান ত সকলে কি শাসনপ্রথা পেরেত মণ্ডলে ?" বলিয়া অঙ্গুলী হেলাইয়া চলে; এবে শৃক্ত বন কেহ না রহে।

দ্বিতীয় পল্লব

একাকী মানৰ এবে বিজ্ঞন শ্মণানে সম্মৃথে স্থাপিত শব স্ফুৰ ঝিল্লীর রব মাঝে মাঝে উঠে খালি বিকট স্বননে।

উঠিতে লাগিল তাহা আকাশে ছড়ায়ে, একে একে ঝিকি মিকি শুত্র আলো ধিকি ধিকি ফুটিল নীলিমা-কোলে ফুটে ফুটে যেন দোলে— আকাশের নীলিমার কালিমা যুচায়ে।

প্ডিল সেধীর জালোপাতার লতার, প্ডিল সৈকভ তীরে প্ডিল নদীর নীরে প্ডিল শাশানভূমে বজাতছ্টায়।

তথন তাপিত সেই নব্দেহধারী চাহিয়া মৃতের পানে বাথিত ব্যাকুল প্রাণে দেখিতে লাগিল ঘন, কত্বা উর্জ্জননমন ভাবিতে লাগিল ঘোর স্বত্বে বিচারি,— সত্য কি পিশাচ বাক্য-শ্ৰীর-বিনাশে পরাণী বিনাশ পাবে ? পাংশু ক্লারে মিশে বাবে, ভাবিতে হবে না কিছু ভাবীর তবাসে ?

ভাবিতে-কি হবে না বে ? পরকাল নাই ? মাংস অস্থি মেদ শিবা জীবের চৈতল্প-গিরা, সে গ্রন্থ খুলিলে ফাঁস জীবন—জীবাত্মা নাশ, ত্রাণ মজ্জি ভক্তি জ্ঞান সকলি বুথায় !

এই জন্ম, ইংকাল, এই আদি শেষ ? মৃত্যু পরশনে গত জীবনেব ষম্বণা যত, স্হিতে হয় না পবে তৃষ্কৃতির কেশি ?

যা কিছু বাতনা কেশ, চিতের উচ্ছাস, স্রোতের ফেনার নত উঠে ফ্টে অবিরত, শরীরেই জন্ম লয়, দেহাতে নাহিক রুখ, ক্ষির মজ্জান্তি থালি তর্ম বিকাশ ?

ধে জ্বরে মানবকুল ভূমওল যুডে ভাবে নিত্য অবিবত, দেব দেবী ফ্জে কত, কৃত স্বৃতি, কৃত বেদ, কত নীতি গড়ে;

ধেলার করনা-স্রোত যে ভরের হেতৃ
মানব হদরতলে মক-গিরি বনস্থলে,
হিমঅ'ূপে দ্বীপকার, প্রায়শ্চিত লালসার,
বান্ধিতে কালের নদে মুক্তি-পথ-সেতু ,

সারত্ব নাহিক তাম —কেবলি প্রমাদ ? সেই ভন্ন সেই আশা, অনিবার্য্য সে পিপাসা, সকলি কি মাহুষের স্ব-রচিত ফাঁদ ?

শিক্ষা দীকা জনজতি বেরপ বাহার.
সেইরপ চিন্তা জ্ঞান, আশা তৃথ্য পরিমাণ,
বাধিয়ে আগন পায় শৃথাল নিজে গড়ায়,
মঞ্জের মত তুমে কৃপে আগনার শৃ

পাপীর নরক শুরু এই কি জীবন ? কলাফল শান্তি যত, সলে সলে হয় গত, জল-বুবুদ্দের প্রায়, ু চিহ্ন কি থাকে না তার, প্রকাল-পরিসীয়া ভূপতি-শাসন ?

কিংবা মরণের পরে প্রেতরূপ ধরি বাঁচিতে হবে ধরার বাঁচে ওরা যে প্রথার, কানন গহন গুহা বীজৎসেতে ভরি ? কহিল ও প্রেত বথা করিয়া নিশ্চয়,—
হিতাহিত-বোধ-হীন, নিয়ত তমেতে গীন
জবস্ত-ধিক্ত-কায়া, জীবন নয়—তমছোয়া
মল-মৃত্র-ক্রেদ-ভোগী, নিয়াশ নিগত ?

এই মৃত কারা যাব. যে ছিল জীবনে কান্তি-রূপ-গুণ-সীমা. সারল্যের স্প্রতিমা নির্দ্ধ শুশীর শোভা যাহার বদনে;

দরা মারা করণার পুরী ধাব দেছ,
শীতলার মণিমালা, বিনরের বক্ষোমাব হিতত্তত-পরিণাম, নিখিল মাধুবীধাম ছিল বার হৃদিতল বিলেপিত-মেছ;

জগতের একমাত্র ছিল যে বন্ধন. ভূলিয়া বাহাব স্লেহে ভূলিতাম পাপ-দেল ভূলিতাম চিন্তারূপ চিতাব দাহন ,

যার মায়া-বন্ধনীতে বাধিগা পরাণ হৃদয়ে না দিহু স্থান বিধাতার কি বিধান জীবনের পাপ তাপ মৃত্যু ভর মনস্তা হেবিলে যাহার মুখ তথনি নির্ধাণ .

সেই স্থতা মৃত্যুকালে যথন শগান বালল মিনতি ক'রে— কি হবে এ দেহাল পিতা গো ভাবিও তাহা—কিসে পবিত্রাণ

ষার শব বক্ষে ধবি অমিচ মর্ত্তোতে, হেরিলাম রামেখব যুম্নাতি পুত^{ুর} পুছব প্রয়াগ গরা, বিদ্যাচল হিমান অমিলাম কামরূপ, শীক্ষেত্র তীর্থেতে,

সেই সুপৰিত্র স্থতা – নির্ম্মল প্রাণী স্ত্রমিবে পিশাচীবেশে তমোময় দেশে দে স্থর্গের সৌরভ-শোভা হর্ম না স্থানি !

ভ্ৰমিছে কি সেই বালা উহাদেরই সনে আই ভৈরবীর দলে নর-অস্থি-মালা গ^{েই} ভূলেছে পিতারে তার মন্ত্রা-জীবন গ সারল্য শীলতা দলা নাহিক সে মনে ?

নতে—নতে কদাচন, না জানি প্রত্যয়. ব্ৰহ্মা বদি নিজে বলে সে প্রাণী ওরূপে চ সে আব্যার শেষ এই—অন্ধ নিশিমর। প্রবঞ্চক, মিথ্যাবাদী, বিজ্ঞপি উহারা, প্রকাল আছে সত্য আছে পাপে প্রায়ন্তিত্ত দ্ব্যংনিম্বস্তা বিধি অবশ্য কবিলা বিধি বেশ্বপে উদ্ধাব পাবে ভ্রমান্ধ যাহারা।

কে বলিবে—কে জানাবে—দেখাবে আমায় বিধাতার সেই পথি নরেব চরম গতি পরলোক, মৃক্তিপথ, কিন্ধুপ কোথায়।

কে আমানে লয়ে যাবে দেখাতে তনয়া, দেই পুণ্যরাশি ছায়া ধবেছে কিব্লপ কায় কি কারণে বিরাজিচে কার তবে কি ভাবিছে অক্তহীনা সে প্রতিমা কোগায় উদয়া।

জ্যোৎস্নাময় গগনেব কোল হ'তে তবে যেগানে বোটিণী তারা প্রভাবতী সেই ধাবা দেবী এক তারা গতি নামি এল ভবে।

নরদেহ-ধাবী-কাছে দাঁডাইল আসি—
পরিধান খেতবাস খেত আভা অঞ্চাদ
পনীবে অমৃতগল্ধ মূথে স্নিত্ন মনদ স্নকোমল নিবমল নিকপম হাসি।

বিনিদিত-কাশপুশ তহু কমনীয়, গ্ৰহতে করতল পদে যেন প্লদল বিনীত-নয়না, চাহি প্লযুগে স্বীয়।

নিকটে আসিয়া তাব মৃত্ল গুলনে মুমুৱী কহিল ভাষা জীবিতের ছুঃখ-নাস। ভাপিত না হও দেহী ভবতলে কেহ নাহি ক্লফিভ নহে যেবা পাপ প্রশ্নে।

প্রবৃত্তির ক্ছলনে ভূলে নাহি কভূ খাপন প্রমাদবশে কিংবা বিপুরাশি-রসে হেন নর-নায়ী নাই— হবে নাকো কভূ—

পরিপুর্ব নির্মাণতা এ জগতে নাই, গ্রিণীন নহে তাহা দে বাসনা এথা স্পৃহা নিন্মগুলে কেহ, ধ্বিলা মানব-দেহ যদি করে সে বাসনা দে আশা রুথাই।

যত দিন নরকুলে সকলে না হবে বিট নিশ্বলতাময় পরিগত রিপুচয় — যত দিন কারে। চিত্তে খেদ্ধিন্দু রবে, তত দিন একা কেহ এ ধৰণীমাৰে, রিপুমর দেহ ধবি ক্ৰাসনা পৰিহরি নিক্লক সুধাজতো স্থান কৰি হৃদিতলে নারিবে শভিতে জয় পুণাময় সাজে।

বিধির নিয়ম ইহা অথও লিখন—
সমগ্র নরেব জাতি, ধরাতে একতে সাথী
একত্র উদয়গত, একত্র পতন।

ৰথা অনজের পথে গ্রথিত সুক্রর গ্রহ শুনী ভারাকুল অনুষ্ঠা বন্ধন মূল , কোন গ্রহি যদি ভাব ভিন্ন শ্লথ একবাৰ পাতাল ভূতল শুক্ত ছিন্ন চরাচর।

কিন্তু যার বিধি ইহা তাঁরি বিধি ৩ন, চ্ছতির আনছে গণ্য স্তাপ অনত নয় পরকালে আনছে ভোগ মৃক্তি আছে পুন:।

চল সক্ষে দেখাইব সে গতি তোমায়. দেখাব জনয়াতব ধ'রে যার শুরু শব অমিলে পৃথিবীপর ভিক্ষ্বেশে নিবলর দেখিবে ক্ষদেহ এবে সেই তৃহিভায়।

আগে এ শবেব কর দাহ-সংস্কাব মৃত্যুম্পর্শ দেহ যাহা রাবিতে নাহিক চাহ। অন্যুক্ত জীবের বাদে—বিবিধাক্য দাব।"

কহিল তথ্ন শ্র্ক নরদেহগাবী;
অস্থ্যীর দরশনে শ্রিগ্ধ ভীত গুরু মনে লোম কণ্টকিত কায়া বদনে অনিছা-ছায়া অস্থি-দাব শ্বে বাহু স্বেহতে প্রদারি—

"কেমনে কছ গো ধেবি অনলেব তাপে ভাপিব ও কলেবর আন্দৈশৰ নিবন্ধর স্নেছে ভিজাধেছি যায় হরষ সন্তাপে।

দিখাছি অমূত তেবে যাহাব বদনে পায়স নবনী জীব সুশীতল ভজ্গ নী ব সুগদ্ধ চন্দন চূয়া তঃঘূল কপূব গুয়া সে বদনে বহিজালা ধবিব কেমন।

্ৰমিয়াছি বহুকাল থাণানে খাণানে, দেখেছি নিদয় মন নব নারী কত জন খাণানে ক্রিছে দ্যু প্রিয়ত্য জনে . দেখেছি পরাণে কেঁদে কত স্তা-স্ভ প্রিয়তম পিতা মূথে সহায়ি করেছে স্থে বর্গরূপা জননীব মুখায়ি কবিয়া নীর আনিয়া চেলেছে ভয়েম—শাস্থ অঞ্সধত।

এ নির্দ্ধর প্রথা কেন, ওগো বর্গস্বতে । প্রিয়তম ভিন্ন আব স্থাসিগ্ধ নহে সংকায় এ প্রথা পালিতে প্রাণ দহে অব্যুতে।"

সে বাক্য প্রবণে মুগ্থ অমরী তথন শব-পাশে দাঁডোইল। নিজ মুথ অগ্রি দিয় রহিল কল্পালগাশি সংক লয়ে মর্ত্ত্যবাদী উঠিলা আকাশে উর্ক্লে ক্যান।

তৃতীয় পল্লব

চলিল গগনপথে অমর-ফুলরী কিরণের রেঝা-মত শোভা কবি নীলপথ সুধাগদের বাযুক্তর পবিপূর্ণ করি।

মূদিত নয়ন, ভীত, কম্পিত শরীর আকলেশে দেহধারী এবে শূরুপগণাবী মুখ্য প্রাণীর প্রায় স্থপনে বেন গুনায় উঠিতে লাগিল ভেদি আনন্ত গভীর!

উত্তির অবংশধে অমরী তথন গগনের সেই দেশে বেথানে নক্তর্বেশ অনস্ক ভ্ৰওরাজি করয়ে ভ্রমণ।

প্রবেশে নক্ষত্তে এক সে তারারপিণী
আরু হ'তে আপনার রাখিল নিকটে তাব
জীবদেহধারী নরে যতনে তাহার পরে
কহিলা মৃত্রুরে খুমিটভাবিণী:—

কহিলা চাহিয়া রথ মানবের পানে—

"ধোল চকু দেহমগ্র ও ভূবন শৃষ্ট নয়,
ভ্রমিতে পারিবে হেথা যবা ধরাস্থানে।"

সবিশ্বরে দেহধারী দেখিল তথন
• চারিদিক্ কুহাময়— মর্ত্যে যথা শৈলচয়
উন্নত বিনত তথা কুয়াসা তেমতি সেণঃ
• নহে দে নক্তা-বপু মণ্ডিত কিয়ণ।

আখাদিত চমৎকৃত বিনীত-বচনে জিজাদে তথন নর "এ কি পুন: ধরাপন আনিলে আমায় দেবি ঘুমায়ে অপনে ?"

অমরী কৃষ্ণি— 'দেহি, এ নহে পৃথিবী, পৃথিবীর অফ্রেপ দৃঢ কুহেলিকান্তুণ অধিনী নক্তানামে বাক্ত হাহা ধবাধানে এই লোক সে নক্তা—ভূলিও না জীবি।

কিরণের রাশি মত—কিরণমণ্ডল; কিন্তু এ নক্ষত্রাজি, অতরল শৃক্তবাজী মুশার ধবার প্রায় দৃঢ়ীভূত সম্দার মুক্ত জীবিতের বাস—প্রাণিমর স্থল।

রচিত খনিজরাজি পৃষ্ঠতলদেশ, পারদ, রজত, সীদ শিলা, স্বৰ্ণ স্কৃদ্ধ কত ধাতু মৰ্জ্যে তাব নাহিক উদ্দেশ।

কারো পৃঠে অবিরল কেবলি ত্যার. কারো অঙ্গে কুহাচর কেহ বা দলিলয় কেহ ফ্লাকালারুত কারো অঙ্গে দদ। ডিঙ অনল উভাপ তেজ—করিছে বিহার।

জ্যোতিবিশারদ গুরু ধবাতে বাহারা, তাহারাই বহু ক্রেশ দেখে এ নক্ষত্রদেশে স্ক্রপ কিক্রপ কার, কোথায় কি ধারা।

ধরাতে নক্ষত্ত নামে ভাকে এ সকলে, আমরা আন্দেহী প্রাণী আন্ত নামে শৃত জানি এসব বর্তুলাকার ভ্রনে মত নিস্ত ব জীবাভারে কারাকার আন্তর্তীকতলে।

তাপ ৰাষ্ণা বৃষ্টি ধৃম ঝটিকা প্রভৃতি বেৰানে প্রধান যাহা তারি অহুদ্ধণ ভাগ ইহানের নাম হেথা—যার যে প্রকৃতি।

দেহত্যাগে জীব-মাত্মা পরমাত্মা-দেশে. বাহার বে হঃগকল ভূজিবারে সে সংগ বেগানে মাদেশ পায় সেই সে মন্তংগ াই পুঠতল ভেদ করি মন্তরে প্রবেশে। যতকাল শেষ নহে জীবন-আসাদ হুলতাপ-শিথানলে ততকাল সেই স্থান, থাকে সে প্রাণীপুঞ্জ ভুঞ্জিতে বিষাদ।

দে লালসা নির্মাণিত হয় যেই কণে দেইকণে মৃক্ত প্রাণী তেয়াগি শবীথী-গ্রানি দ্যা-আভা অবয়বে প্রকাশিত পুন: দবে তাজয়ে দে লোকগর্ত নিস্তাপিত মনে।

তাদেবি অন্তের শোভা কিরণ-আকাবে, ঠাপি কাঁপি ঝিকি ঝিকি তারা-অন্তে ধিকি ধিকি চমকে মানব-চকে শরীতী ভাগোবে।

পাপমুক্ত প্রাণির্ন্দ বিহরে তথন একাও বেটন করি তাপিতেব তাপ হরি হিতরতে সদা রত আপন সামর্থ্য মত বিধির বাঞ্চিত কার্য্য করিতে সাধন।

কত হেন মুক্ত জীব মানবমণ্ডলে নমে নিজা নিশাকালে ছুচাতে ভ্রান্তিব জালে দেখাতে সরল পথ বিপথী সকলে।

কত প্রাণীধার পুন: হরষে মগন, বিধিব রাসনা বেখা গঠিতে নৃতন প্রথা নৃতন আকাশ ভারা পৃথিবী নৃতন ধাবা নব রবি নব শশী নৃতন ভুবন।

যে লোকে এখন তুমি দাঁড়ায়ে মানব, কুচালোক এই স্থান কপটী পাপীর প্রাণ নিহিত ইহার গর্ভে—ক্ষুপ্ত প্রভা সব।

মিথ্যা ভাষা প্রবঞ্চনা করিয়া ধারণ ^{যে} প্রাণী ধরণীপরে অক্তেরে ছলনা করে ^{যুক্}ল পাপের মূল সেই সব জীবকুল এই লোক-জঠরেতে ভূঞে দিপীডন।"

ন্ধীবিত বিজ্ঞানে তাঁয়—"কোধায় সে সব, । নেধিত কোন দেহ কোধায় না দেখি কেহ কেবলি কুছেলি-ৱালি—নিবিত নীরব।"

"সদে এসো এই পথে" — বলি দেবী শেষ

ভীবিতের আবেগ আবেগ

ইণয় শেখায়ে ভারে; আসি এক গুহা-বারে

অন্ধকারে গুহা-পথে করিল। প্রবেশ।

চতুর্থ পল্লব

প্রবেশি গহরর-মূথে শুনিল শরীরী বেন কত প্রাণিরব এফত্র মিশিছে সব কলরবে সে প্রদেশ পরিপূর্ণ করি।

নিবিড অরণা যথা মাকত-নিখনে পত্র ঝব-ঝর খরে, সর্কাদিক পূর্ণ করে, তেমতি অফুট নাদ, ঘন খর স্বিবাদ বহে স্রোড নিরস্কর সে খোর ভূবনে।

ধ্মবর্ণ বাম্পরাশি—গাঢ়তর ঘন— ভ্রমে সে প্রদেশময়, সর্কত্ত প্রসারি বর তমাবৃত নিশামুধে যেমতি গগন,

কিংবা যথা হিমঞ্জু প্রদোষ সময় গাঢ়কুহেলিকা জাল চাকে মহী ভকু ডাল সবোবৰ পথ ঘাট শ্কু গিরি নদী মাঠ ধুসরিভ কুহাধ্যে সুকাইয়া রয়;

তেমতি কুৰেণীজ্ঞ নিবিভ সে দেশ ; গোধূলি-আলোক-মত ধীর-ভাতি দূরগত কদাচিৎ স্থানে স্থানে করিছে প্রবেশ।

আলো-অরকারময় বিশাল ভ্বন, জটিল কুটিল গতি নানা দিকে নানা পথি চলেছে ফিরিছে ঘ্রে, এই লক্ষ্য কিছু দ্রে প্রবেশি তাহাতে কিছু আসোধ্য ভ্রমণ!

অসাধ্য ভ্রমণ যথা কোন সিদ্ধযোগে বিদেশী ব্রাজক ধবে বৃদ্ধি হত ভদ্ধ রবে কাশী বর্গোনিকোপিত একা নিশিযোগে।

সতত অলিত-পদ শরীরী মানব চলে অমরীর পাছে ধীরগতি কাছে কাছে চলিতে চলিতে ধীরে তেরে অন্ধকারে ফিরে কত দিকে কত জীব সংখ্যা অসম্ভব।

হেরে দেহধারী ভরে রোমাঞ্চিতকার — কবন্ধ সদৃশ সব বক্রগ্রীবা ক্ষীণরব, পশ্চাতে ইাটিয়া চলে পৃষ্ঠভাগে চার। না পায় দেখিতে অগ্রে—নেতা নাসা মুধ ঘুরান পৃঠেব দিকে কেহ নাহি চলে ঠিকে ঘুকলে বাযুর মত ঘুরিয়া বেডায় পথ, বাক্য-নিঃসাবণে যেন কতই অসুধ।

চলে দৰে করে চাপি কঠিন কৰ্মণে কণ্ঠতল মৃত্যুত্ত, বেদনা ধেন ছঃসহ নিয়ত ব্যথিছে কণ্ঠ শ্বাস-প্রসারণে!

এত স্কীব চলে পথে চলিবার স্থান কটে স্বতি মিলে নরে; চলিল পথির পরে স্কটিল জনতা ঠেলি শতপদ বেন ফেলি শতপদ বক্ষে: চলি কর্মে প্রায়াণ।

দেহের উত্তাপে তাবে জানি জীবকুল, ভগ্নকীণ কুল বর, পলবে বেন মর্মর নির্গত নিখাসপথে—ব্যথায় ব্যাকুল,

কহিল—শরীরী প্রাণী ফুল দেহ তব, জুমি কেন হেথানব হুরন্ত এ গুহাস্তর কোথা মাদি কোথা মন্ত না পাইবে সে তদন্ত এ গুহাগহার, নব হুর্গম ভৈবব;

কতকাল(ই) আছি হেথা ত্রমি এই ভাবে ঘ্রিয়া ঘুরিয়া প্রান্ত তবু পদে পদে প্রান্ত চিনিবারে নারি পথ—তুমি কোথা পাবে ?

আলোকে ভ্রমণ সদা অভ্যাস ভোমার, ওহে দেহধারী নর শীঘ্র ভাজ এ গহরে আত্মামর দেহধবি আমরা ভ্রমণ করি আমাদেরি নেত্রপথে নিশি এ আঁধার ।

নিবারি ফিরিয়া বাও।"—-স্থন শরীরী কহিল "হে স্থাত্মাময় তব চক্ষে দৃখা নয় আমি কিন্ধু বাব এই স্বন্ধকার চিরি,

সদে হেব কে আমার।"—বলিগা সঙ্কেতে , দেখাইল জ্যোতির্ঘয়ী, নির্থি সবে বিস্ময়ী শশব্যক্ত আথান্তর বহুনে বিস্তারি কর পলায় পাপান্ত্যাগণ নিশি যথা প্রাতে :

কিংবা পিণীলিকাশ্রেণী দলিলে চরণে চৌদিকে যেনপে ধার দেইরূপে হেরি ভার পদাইল পাতকীরা সে কুহা-গ্রুন। প্রবেশে গহররমধ্যে অমরী পশ্চাতে শরীরী পরাণী এবে চলে ধীবে ভেবে ভেবে কাতর অন্তরে অতি ভরে ভরে করে গৃহি দেখে অলে গুহালোক – দীপ যথা বাতে।

না যাইতে বছদ্র শবীরী হেরিল বদনে গুঠনার্ড আত্মা দেহী শত শব চলে ধীরে, কড় ফুড, কথন শিথিল ,

চলে পথে, চলনের গতি চমৎকার— যষ্টি বাডাইয়া ধীরে পদ ফেলি দেখে ফিরে এই চলে একধাবে মুহুর্কে অপর পারে ক্ষণে পূর্ব্ধ, ক্ষণে পরে পশ্চিমে আবার।

শরীর-ওঠনে ছাপ কত রঙে আঁকা, কি যেন কক্ষের তলে লুকায়ে সতর্কে চলে ধঞ্জ গতি—কক্ষে যেন বিদ্ধিছে শলাকা।

আছোদন অবয়ব ভাষা বৰ্ণ বেশ দেখিল যত প্ৰকাষ বিভিন্ন সে সবাকায দেখিয়া ভাবিল দেহী ধৰা বৃদ্ধি শৃক্ত-গেহী – এত স্কাতি এত জীব ভূঞে সেথা ক্লেশ।

নিকটে আমিবামাত্র মিই আলাপন মৃত্সন্তাৰণ করি জতগতি অগুগ্রি দীভাইল হাতুমুধে শত শত জন।

• এত মধুপূৰ্ব বাকা মুখেতে দদাই— বেন বা মিত্ৰতা কত স্লেছ-মানা পূৰ্কগত অবি যেন হদিতল কতই স্থ-বিস্থা তত আপনাৰ আৱ কেহ যেন নাই।

চাহি অমরীর মৃথ মানব তথন— "চে দিবাাদি। কহ এ কি নেত্রে না কথন দে^{ছি} জন-প্রাণী ইচাদের, তবে কি কারণ

এরপে সন্তাবে দবে ?"—জ্যোতিশ্রী ^{ব্র} "ও কথা শুনো না কানে চেম্মো না ওদের ^{পানে} ওরা জীব নরাধম!" বলিয়া মূচাতে ^{রা} মূথের গুঠন তুলি দেখার সকলে;

নরদেহী চমৎকৃত ত্রাদিত অস্করে, স্বারি ললাটভাগে দেখিল অক্তিত দার্গে 'প্রভারক'—লেখা দগ্ধ-শলাকা অক্রে। তথনি জীবাত্মাগণ কাঁপিতে কাঁপিতে উল্লপদে নিমশিবে তুরিলা তুরিলা কিরে করে থোব আর্ত্তনাদ না পারে ফেলিতে পাদ কর্মধাদে উড়ে যেন না পারে থামিতে—

মূথে বলে "হার হার ধরার তথন কেন বা চাতুরী করি পরের সর্বান্থ হবি বাপিরা জীবনকাল — ভূঞ্জি এ মাতন।"

রোষ-ক্ষাধিত-নেত্রে অধর-ক্ষণে
লগভাব বিলেপিত অমরী চলে স্ববিত নানব-দেহীরে লয়ে। পশ্চাতে বিশ্বিত হয়ে শরীরী চলিল ধীবে সে কুহা-গহনে।

চলিল—বধির কর্ণ আত্মা-কোলাংলে, কেঠ নাহি শুনে কায়, সম্ভাবে সবে সবায় বিকলিত কতরূপ অফুট কাকলে।

চলেছে সে আত্মাগণ নিরানন্দ মন, গুলিতে চলিতে হায়, অঙুত ভীম প্রথায় ছিল গ্রীবা সহ তুও অক্স কাঁধে বদে মুও কার মুথে কার থিহবা ভীষণ দর্শন!

অন্ত নাই—শান্তি নাই—গতি অবিচেছদ নামে মাঝে বোরতর মুখে বেদনাব স্বর নিশাচর প্রেত-প্রায় তম করে ডেদ।

জিজ্ঞানে অমতী চাহি দেহধারী আমাণী কি কাষণে আর্ত্তনাদ করে এরা—কি বিবাদ কি তাপে অস্তর দাহে কেন বা ওরূপে চাহে বনত্রই মুধ্বেন হেরে অর্ণ্যানী ?"

কহিলা অমরীমৃঠি—"করিছে ভ্রমণ ^{এই} সব জীব হেথা কত কাল এই প্রথা এই কথা মনে যবে করয়ে শারণ,

যথনি স্বন্ধতলে প্রবেশে প্রত্যেস — গুণাবে উদ্দেশ্য স্থান না পাবে পথ-সন্ধান গুগারেশে দূরে থালি ইইবে চক্ষের বালি প্রকাশে তথনি স্বরে নিরাশের ভয়।

দেহধারী জুমি জীব ব্ঝিবে কিঞিৎ ^{হ ডুং}সহ সে বাতনা, কি নিরাশাসে ক্লনা বাসনা থাকিতে চিত্তে ফলেতে বঞ্চিত। ১৪ মিধ্যক পাপায়া এবা—ধরাতে থাকিয়া জডারে অসত্য-জাল কাটিলা জীবনকাল এবে ভূঞ্জে ফল তার, এখন ও চিন্তবিকার; বিধাননে জলে নিতা এখানে আসিয়া।

চল আংগে"—এলি দেবী হয়ে অগ্রসর, দাঁডাইলা এক স্থানে , শরীরী উৎস্ক প্রাণে পুনর্কার চারিদিকে চাহিল সম্বর।

দেখিল সমূধে এক ভীমাকার বন, ঘনতর কুয়াসায় আবৃত সে বনকায় দেখিল অঠেরে তার করিছে শ্রমণ।

কত জীব-দেহছোরা কত রূপ ধরি, কদলীপত্রের প্রায়, সতত কম্পিত হার, ভীত-দৃষ্টি মন-ক্লেশে হেরে সদা পৃষ্ঠদেশে— পৃষ্ঠদেশে মমদ্ত ছোটে দণ্ড ধরি;

সে বনের চতুর্দিকে বিকট নিনাদ উঠে নিত্য ঘোরোচ্ছানে আংআকুল মহাত্রাসে করে ঢাকি শুভিতণ করে আংর্তনাদ।

বিকট বিদ্যুৎছ্টা মাঝে মাঝে তার পড়ে অরণ্যের গায়, আাত্মাকুল দক্ষপ্রায় হা হতোহশ্মি শব্দ করি বৃক্-বিবরেতে সরি লতাগুল্ম অধ্বকারে আতকে নুকার।

সেধানেও নাহি আ'জি ৰাজনা সন্ত্ৰাসে; বিবর-কোটর-গায় যেধানে লুকাজে বায় দেইধানে গন্ধকীট উডে চারিপাশে,

কৰ্ণসূল প্তদেশে কটুল ঝকাবে, ড্ৰমে সদা লক লক, ছড়ায়ে বিৰাক্ত পক, উডে উডে চারিধাবে আবৃল করে ঝকাবে, ব্যথিত জীবাআকুল দংশন-প্রহারে!

দেশে নর আত্মা দেহ সে বন-ভিতরে কত হেন গিরি-কৃটে, নদী, ওহা, ণতাপুটে কাদিতে কাদিতে কাপে বিবরে বিবরে।

বিবর ছাডিতে নাহে বিহাতের ভরে. ভিতরে হুর্গন্ধময় কর্ণমূলে কুমিচর ঝরারে বিষয় তানে বধির করিয়া কানে অধীর জীবাঝাকুল বিবর-আত্রাহা। ্ংন অঞ্চলার দেশ যেন নেএ পথে গুরুতর কোন ভার দৃটি রোধে জনিবার নাসরে, নাহয় ভেদ, কভুকোন মতে !

কত আবা সে হু:সহ তিমির-পীডনে করি খোর আর্ত্তধনি বিহ্যতাভা শ্রের গণি, বিবর ছাডিতে চার ছাডিতে না পারে তার, এবে তমসায় অরু দৃষ্টির বিহনে!

দেহধাৰী মানবেরে অমরী সন্তাবে— "নিরানন্দ এই সব জীববৃন্দ হে মানব, দেখিছ এখানে যত ভীত হেন জাসে ,

কৃটজীবী প্রবঞ্চক ষতেক গ্র্মতি,
ধরাতলে বঞ্চনায় ছলিলা কত প্রথার
ভাপন হিতের তরে সতত পরস্থ হয়ে
হের হে সে পাপীদের হেথা কিবা গতি।

হের কি তুর্গতি কিবা বিশীর্ণ মূরতি ! জীবনে হুলুতি বত জাগে ছিল স্মৃতিগত এবে কীটরূপে শক্ত ব্যবিহিছে শাতি।

না পারে সহিতে পূর্ণ আলোকের ছটা, কিরণ দেখিলে কাঁপে নিত্য দহে চিত্ত-তাপে আদেহি-চিত্তের দাহ— তুরস্ত বিষ-প্রবাহ ছুটিছে অস্তর-তটে করি ঘোর ঘটা।

দেখ দেহী আই স্থান"—বলিয়া আৰাব্য আমনী দেগালে তাল সেই দিকে ধীরে ধায় দেহধারী নির্থিল সক্তেতে তাঁহার।

দেখিল মক্ষ-প্রাস্তবে জীবাআ। ছুটিছে পতলপালের মত মধ্যস্থলে কৃপগত কৃত জীবাআার বাশি খেদবাণী প্রকাশি কৃপগতে নির্ভর জ্মনলে পুড়িছে।

কুপের নিকটে তবে অমরী আসিয়া দেখাইল মানবেরে, তাভিত শরীরী হেরে অনলের হুদে জীব চলেছে ভাসিয়া;

ক্তবুধ, কৃপগত বিশাল বাদান, লক লক অহি তার অনল মাধিয়া গার লোল জিহবা প্রসারিয়া লেহিছে জীবাআ,-হিয়া নাচিয়া প্রমথগণ করিছে সন্ধান। বিকট কামুকি ধরি তীক্ষতর শর্ব কৃপগর্কে নিরন্তর আবাকুল জরঞ্ব — শরজালা অহিদন্ত-দংশনে কতির!

ষথন অন্তির সবে তীত্র বেদনায় অ্দ্ধকারে দৃষ্টি করি কৃপ পার্যে ধবি ধরি উর্দ্ধেতে উঠিতে যায় তথনি সে স্বাক্। ভূতগণ শর ক্ষেপি গহবরে ফেলায়।

ছারারপী কত আত্মা সে প্রান্তরময় শীর্ণ-ক্রিষ্ট হতথাস হৃদয়ে হত বিখাদ– কাহাব কথায় কেহ না করে প্রভায়।

জননী বিখাসী নয় আপন তনরে। পুত্র না প্রত্যের হার পিতা হিধা তনরা অবিখাসী পতি-প্রিয়া অবিখাসে দয় গি মিত্রে না প্রশে মিত্র প্রতারণা-ভরে।

স্বাত্মাকুল এই ভাবে ত্রমে সে কান্তাবে, প্রান্ত হরে কভ্ধার, লভিতে তরু-আপ্রান্ত প্রব শোভিত তরু কান্তাবের ধারে।

তরুতলে আাসে বেই, ভূলিয়া মর্শ্বর হেন বিষাদের শ্বর ধরে লতা-পত্র-গ বেন বা উন্মন্ত বেশ কেহ তক্ষ্ল-দে কেহ শাখা পত্র ছিডে অধ্ধ্য্য কাতর।

পলায় জীবাত্মাবৃন্দ উধাও হইরা, বদন বিকৃতাকার নিকটে না আদে আ জ্বেম তমোমর পথে অপুরিত মনোরণ গহুরের কুহেলিতে অদৃশ্য থাকিয়া।

অমরী শরীরী চাহি কহিলা—"হে দেহি এই জ্রম বিষপর্ত; শাথা, শিথা, প্র, প্র তীত্র বিষপূর্ণ—গদ্ধে নাহি **জী**রে কেগ।

ধরাতে 'উপাস' নামে এ তরু আবাতাত, বে বার ইহার তলে বে পরনে প^{ুরুতি} বে শরীরে পড়ে ছারা তথনি সে জী^{ন কা} নির্ধাত জীবন-মূলে তথনি আবাত[া] হেবিলা ধরিত্রীবাসী সে গাঢ় কুয়াসা _{হব} আছের যায় ছুরস্ত প্রভা চটায়, কথনও উডিয়া যায়—দিশি পরকাশা।

তথন গহ্সরগত জীবাত্মা-মওলী চাগে যে চুৰ্গতি কত দেখিলে হদঃ হত ডি স্কডরাশি প্রায় প্রান্তর অবণা চায়, নতগ্রীবা ভ্জতলে করিয়া কুওলী।

না পারে দেখাতে মুথ কেছ অন্ত কাবে, জীভূত জীর্ণ কাষা সেই সব জীব-ছারা । নিশ্চল — নির্বাক্ - যেন ভূজাদ তুষারে।

যমদূত ভয়হর আসিয়া তথন তোক কুণ্ডলীকৃত পাপাত্মারে করি গৃত বালোকে তুলি মূথ, থুলিয়া দেখায় বুক---হেরিয়া শরীবী ভয়ে পাণ্ডর ববণ :

ষ্চ্ ক্টিকের প্রায় হৃদ্যের তল, খা যায় সে কিরণে— লেপিত ধেন স্কুন কৃড কুদু কত ছিদ্য-পূর্ণ কৃতত্বল।

আপনি ফ্লিছে কভু আপনি ফাটিছে। টি সৰ ছিন্তুনুথ ছিন্তু-ভিন্ন কৰি বুক, উন্তাৰ মাৰি গান্ধ কোটি ক্লিন্ত্ৰিম ভাষ ছিদ্ৰে ছিদ্ৰে ছুটে ছুটে কলিন্তা। কাটিছে।

কত ভীতিপূর্ণ স্থান হেরিলা শরীরী ক্রক্রটিকাময় সে বোর পাপি-আলয় অমরীর সঙ্গে সঙ্গে ভয়ে ভয়ে ফিবি।

শমিতে লাগিলা দেবী দেখায়ে নবেবে তিনে থ্যাতিমান্ কত মিথাকের প্রাণ— বিক ছলভাষী বকধৰী আভারাশি— থবন নিক্ক সেই গহসবের বেবে।

দেখাইলা মানবেরে অমরী দেথায়, বিবরেতে স্থান বদি কোন নরপ্রাণ ক্ষ-কঠ গতখাদ টানিছে জিহনায়।

বিদিয়া "তৈথস থঠে" বিকট বদন , গীট অবিয়ত উড়িয়া পড়িছে কত ^{মুণ} নাসিকায়, তাড়াইতে সে স্বায় অজ্ঞ অঞ্জুয় ধারা ঝুরিছে নয়ন ! শৃষ্ঠ হ'তে অনিবাব ফিণ্ণ ভগ্মরাশি উত্তপ্ত ক্ষরবৎ বোধি নাদা ওঠপথ ব্রন্ধতালু-তল দগ্ধ ক্ষাব-ভগ্ম গ্রাসি!

কবে কবতল মাতি প্রেতরূপণারী চাবিদিক্ থেবি তার, ছাড়ি থোর ভত্কার, শব্দে বিদারিছে প্রাণ বদ্ধনূল নিরুখান মৌনীভাবে কাঁদে মীব উব্দে প্রহারি!

হেরিল অমনীবাকো অস্থতে চাহিনা, বদনে জড়ান কর "এউনি" বিষয়স্বর "কাইসরের" মৃত তত্ত সমূবে পড়িয়া,

বদনে বিলাপ ক্ষরে হুদি বিদারিয়া; সে প্রাণী কাছে তথান, আসিয়া ভূনিল ধ্বনি ভূনিল এ নহে তাহা "সপ্ত গিরি বোমে" বাহা কপটা ভূনায়েছিল জগৎ মোহিয়া।

ভ্রমে জীব শলাবিদ্ধ নহনে নেহারি, পৃষ্ঠরেথা বক্তভাব .ওষ্ঠাধরে লালাম্রাব সম্মূথেতে শিলাতলে রেথারিত অম্রেজনে ব্যসনের পাঠী পুঁটি পডেছে প্রসারি।

শরীরী বিজ্ঞানে— "কার আ আ। এ পরাণী ?" অমরী কহিলা তার কটাফ কৃট প্রভায় "ভারত কলঙ্ক আই কৃটিল শক্লি।"

বলিয়া নির্দেশ কৈলা হেলায়ে অসুলী,
শরীরী ফিরারে আঁথি সেই দিকে দৃষ্টি রাধি
হেরে এক ক্লাসন ক্লেদ-পূর্ব কুগঠন,
দৈলের অপেতে গাঁথা-শ্লেচ কেলু তুলি।

'এখন আসন শৃষ্ঠ' অমরী কহিলা, "কিছু ঐ শিলাখতে বিধির বিহিত দঙে সত্যক্রপী মৃধিষ্টির সন্তাপ ভূজিলা,

একমাত্র মিথ্যাবাণী বলিরা জীবনে— সেই পাপে এ আলবের মনন্তাপে দগু হরে ক্সীপুত্র ধর্মধর বাপরে প্রসিদ্ধ নর সে পাপ ধণ্ডিলা আসি এ তাপ-ভূবনে। তারি চিহ্ন হেতৃ এই শিলার আসন চিরস্তন বন্ধ হেথা অলভ্যানিয়ম প্রথা জানাইতে শৈল ফালে কেতৃ নিদুর্শন ৷

দেখ, দেহি, কত আত্ম। সন্থাসিত এবে কাঁদিছে ওথানে বসি নেত্রমণি গেছে থসি মুখে শক হাহাকার প্রবেশ কীট-ঝকার জীবনে অসত্য খল ছলনায় সেবে।"

পরিছরি দে প্র'দশ চলিলা দক্ষিণে. অকস্মাণ কোলাইল যেন চলে স্রোক্তজ্ঞল চতুর্দ্দিক্ হ'তে দেখা প্রবেশে শ্রবণে।

এত অন্ধতম কুছা সে গুৰ্মম স্থানে; কোথা হ'তে কোলাহল কোথা বা আত্মা সকল কিছু নাহি দৃশ্য হয়, থালি ভীতি-প্ৰমন্ত্ৰ কলবৰ ভয়ৰৰ প্ৰবেশিছে কানে।

সেথানে পশিতে নর দেখিল সভরে জ্যোতির্ময়ীকাশে কাণে হেন হিগাযুক মনে ভাবে কোনুদিকে পথ কুহা আরু হরে।

হেন রূপে চলে দৌহে— শুনে অক্সাৎ পশ্চাৎ পারশহর উচ্চনাদে পূর্ণ হয় বেন আ্যা কত জন অক্ষায়ে অনর্শন বলিতেছে ঘোরহুরে বচন নির্ঘাত—

"সাবধান—সাবধান, সমূধে গহরর জ্বেল পাতালস্পর্শ অসীম ভীম চ্র্র্র কে বাও নির্ভ হও—নহিলে সহব

পড়িরা প্রণাত-মুখে ছুটিবে এখনি সে অতল তলদেশে কে যাও শরীরি-বেশে কান্ত হও—কান্ত হও অইথানে স্থির হও পাদমাত্র নিক্ষেপিলে নিপাত তথনি।"

কপালে দর্শ্বেব বিন্দু শুদ্ধ কলেবব শরীরী দাঁড়ারে দেখা নেহারে অপূর্ব্ব প্রথা হুরস্ত প্রপাত ছোটে শব্দ ভয়ক্কব।

নেহারি পাতালদেশে দেগীর পরাণ আরুল হইল ভরে যেন মুগীগ্রন্ত হরে হেরে মুরে শৃক্তদিক্ নেঅ-পাতা অনিমিষ পজে পড়ে যেন স্লোতে হারাইশা জ্ঞান। দেখিয়া অমরী নরে ধরিল তথনি, মৃহুর্ত্তে দিলা চেতন শবীরী বিহরণ ম কহিলা "না পাক হেথা হে দেবনন্দিনি.

অন্ত কোথা লয়ে চল — দেখ দেহে চাচি।
অসমী ভাবিষা তুথ
কণ্টকৈ আছেন যেন পুলবিত দেহ ৫ ক্টিকো আখাদি নবে "প্ৰয়োজন নাচি

প্রবেশি এ হুর্গমেক্তে—ও গুছা গহিত, বিধির বিধান-বলে, আত্মকেল-অশুদ্ধ পবিপূর্ণ চিবকাল—নিত্য উচ্চুাদিত।

বিষম ড:থের জাগী বিশাসঘাতক মঠালোকে যত জন, মিত্রঘাতী ক্রুব মন আই পাতালের তলে চল ঘাই অস্থে নির্থিতে অঞ্জল পাপের নবক।"

পঞ্চম পল্লব

উঠিলা অমহী এবে অন্ত তারা-লোচে অক হ'তে রাথি নরে কচিলা সুমিট থং "যাতি নামে ধ্যাতলে বলে যে আলোকে

এই সে নক্ষত্র দেখ।"—নেহাতে শ্বীরী নিরস্তর বৃষ্টিধার। পারদের ধাবাকাশ সে ভুবন-শৃক্ত-তলে যথা আহাবদের জলো সাত মহীতলে সদা বায়ুবন গিরি।

পড়ে ধারা কণকাল নাহিক বিরাম – পড়ে সে ভ্বনময়, জীব-আলা দৃগ না, হিমানীর মফ বেন নীরদেব ধাম :

প্রবেশিল নরে লয়ে অমনী তথন, অন্তর-ভিত্তরে তার, হেরে দৃষ্ঠ তীমালার শরীরী কম্পিত দেহ কপালে স্থেদেব প্রে দেখা দিল বিন্দু বিন্দু—নিক্তল নয়ন।

দেখিল জলিছে আলো সে লোক-জঠ : রক্তবর্ণ বনজ্ঞটা চারিদিকে ভী^{২ ঘটা} নিশাকালে জলে বথা বেলাক্তম্বনের . উৎকট লোহিত আভা - - ভানাতে নাবিকে কোথা গিরি জলমগ্ন, কোথা দিকু পোতভগ্ন ল্কায়িত জলতলে কোথা ব। ভালিয়া চলে, চঞ্চল বালুকাচর — বন্ধ কোন্দিকে।

অথবা শৈল-শিখরে যুদ্ধকালে যবে আলে ঘোর দীপ্ত জালা গৈনিক প্রহরিমানা কুহাবৃত নিশিকোলে লুকায়ে নীরবে।

সে আভ'র প্রতিভাতি অপুমাত্র ভাব বৃদ্ধিবে দেখেছে ধারা, নিশীথের ভারাকাবা বক্তবর্ণ কাচপিও ধরি যাহা পোতদও ভাগীরথী-জলে ভাসে জানায়ে প্রভাব,

ধ্বক্ধক্জলে আভো কেশব-পুচ্ছেতে চলে যেন অজ√র রজ্ঞচকু ভয়কব , ধদ্ধদ্হেলাহাদ বহে নাদিকায়খাদ নানা জাতি নববুদেন উভাগে পুটেতে।

জনে দেইরূপ আলো প্রচণ্ড উৎকট , প্রভাতেই যেন তাব চাবিদিক অরুকার ঝলসিত-চক্ষুনব ভাবিল সঙ্কট !

কম্পিত শ্বীবি-দেহ আবোক নির্ধি, । সর্বাঙ্গ শ্বীরময় ভরেতে তেমতি হয় গুমাইয়া অকলাৎ অহি-দেহে দিয়া হাত অস্ককার গৃহে যথা জাগিল চমকি।

না যাইতে বহুদ্ব শুনে ঘোও নাদ উচ্চপরে আবাজু-মূথে—শেল বিল্পে যেন বৃকে— শুনিলে তেমনি যেন চিতে অনাইলাদ।

শুনিল উঠিছে স্বর, প্রবণ বিদারে— বাহি আছি আহি জীবে। নিবে নিবে নাহি নিবে কি ভুনন্ত দাহ জ্ববে, দহে দেহ শুবে শুবে কি জ্বাছে ব্রদাওমাঝে এ তাপ নিবাবে!

আর্ত্তনাদ শুনি নর আত্মায়ী সনে টালল যে দিকে শ্বর , হেরিল হরে কাতর আর্ত্তনাদকারী সেই আত্মাদেহিগণে। দেখিল ললাট বক্তে "হত"—চিহ্ন লেখা দগ্ধ লৌহ শৃগাধাবে। নিরখিল সে সবাবে— নিতাক দেহের পর অফাব সদৃশ কর, আফা অবয়ব চক্তে নিবাশাব রেখা।

তাদের নিকটে আসি শরীবী পরাণী কহিল – "হে জীবময়, আমাদেব গতি নয়, হেরিবারে তোমাদের এ হুর্গতি গ্লানি;

দেনিষ্ঠব কৌত্কের পরবশ নহি; এদেছি খুঁলিতে তার, হারায়েছি মটো যায় এদেছি মায়ার ডোরে বদ্ধ হয়ে এই ঘোরে, অবামিও ধরেছি দেহে জীবনেব অফি!

জানি জালা, জাত্মময়, সকাপে কেমন শরীরীর সাধ্য যাহা কহ এবে শুনি তাহা বলিতে সে কথা যদি না থাকে বাবণ;

ক হ কি কারণ সবে বিক্তেব প্রায়ণ কি হেতুদেহের পর এরপে নিবদ্ধ করণ কারও পৃঠে,কারও বৃক্তে, কারও কটি, জ্ফা^ন, মৃথে ভ্রমণ শয়ন গতি পঙ্গুর প্রথায়ণ

বৃদ্ধিলা কঠেব অবে জীবাআ-মওলী, নরে দেখি নিরিধিয়া, নেতকোণে দশ্ব হিয়া অশুদারারূপে ধেন উথবিল গলি।

কছিল, "হে দেছণা ী, জীবে যত দিন লিখ জীবনেব মূলে তথ্য শলাকার শূলে এ দগ্ধ জীবেব কথা – কেন হেথা হেন প্রণা আমাদের আত্মামন্ত জীবন মলিন।

ছিলাম ধরণীধামে আমরা যথন ভোমারি মতন দেছে, দথা, মায়া, ক্ষমা, স্লে'চ, না দিগাছি হৃদিওলে আশ্রয় তথন,

স্থাৰ্থ-পদ লালগাতে, লোভের দচনে, অন্ধ হয়ে জীব-দেহে, দুবে ফেলি দিয়া স্থেহে, যেথা কৈছু অস্থাবাত সে অবে তাহার হাত নিবন্ধ এখন, হায়, অচ্ছেল্ড বন্ধনে।

সাধ্য নাই, আশা নাই, খ্লিতে—তুলিতে, বক্ৰ ভল বিকলাক আশা মোহ শান্তি দাল ছিল দেহে ছল জীবে হতেছে কাঁদিতে।" বলিখ়া উচ্ছোদে দৰে ভীৰণ চীৎকাব। শুনিয়া শবীরী নব শ্রবণে তুলিল কর সেরূপ মরম-ভেদী আর্দ্তনাদ স্থাব্-ডেদী ধরাতলে নাহি কিছু তুলা তুলনাব।

অসমী-আনেশে এবে তৃঃখিত মানব চলিল হৃদয় চাপি তেয়াগি সে মহাপাপী থেদপূর্ণ আাত্মাকুল সেখানে যে সব।

ক্ষণেক চলিতে পথে নাগাবন্ধ পূরি উঠিল এমনি ছাণ হেন তীত্র অফুমান স্বাহ্মি শহীয়ী জীবী; দেখিয়া বৃদ্ধিণা দেগী নিবারিলা দে হুর্গক স্থাগক্ষ ফুরি।

কহিলা আখাসি:-"দেহী না হও এ।সিড, দেহেতে বা কিছু ক্লেশ বৰ্ধনি হবে প্ৰবেশ, তথনি কহিও তাহা হবে নিবারিত।"

বলি পুন: অগ্রসর; পশ্চাতে শরীরী বাকশ্রু মন্দগতি চলিতে লাগিল পথি; চতুর্দিকে নিরখিল দেখিতে অতি পিচ্ছিল, কৃথিরাক্ত মুদু যেন রয়েছে বিভারি।

নিকটে আসিয়া আরও দেখিল মানব

ক্টিছে সে মৃদ্বৎ বথা সিদ্ধ অর কথ,
বাশ্পাকারে ধ্ম ভার উথলি ছুটে বেডায়

ফটে ফটে উঠে নিত্য – নিয়ত উত্তব

তেমতি দেখিতে যথাপচা গন্ধময় 'স্থলরী"-অরণ্য কোলে, শুক থাণ বিল খোলে অপক পদের রাশি ছডাইয়াবয়।

পরশনে সে কর্দ্ধ মানব-শরীরে শ্বাপাদ মন্তক যুড়ে সর্ব-অঞ্চ যেন পুড়ে, কাত্তরে কহিল নর চাহি অমরীরে –

্পপ্রাণ যায়, প্রভাষয়ী, দগ্ধ হয় দেহ। সেছে না দহন সয় নিখাস নির্গত হয়, গাহি মাক্তের লেশ কঠে যেন কাসে কেশ, হৃৎপিও ফেটে যায় — ভালে যেন কেহ।

দাহ-ক্ষত পদতল, শরীর, আনন, সংযেন তথ্য বাসু! পিপাসায় ভক তালু, ধূলিবং জিহবারস—না সত্রে ভাষণ!" বলিলা মূৰ্চ্চিত্ৰৎ পড়িল মানব। শীতল বাৰু-সঞ্চারী নিজ খাদে মূচ্চা হার, অমরী তুলিলা তাল, উপনাভ-জাল প্রাফ নিজ শুঠনেতে ঢাকি স্ক্-অবলব।

নরে চাহি কহে দেবী—"এখন শরীরী ভ্রমিতে পারিবে হেথ৷ অধিন্ন অমর-প্রথা; শীত, গ্রীম, বৃষ্টি, তাপ, সকলি নিবাবি।"

আখন্ত শীতলদেহ শরীরী তথন পুন: সে মৃত্তিকা'পরে প্রবেশে সাহসভবে , অগ্রভাগে দেবী-মৃ**ত্তি**, উৎফুল্ল নয়নে স্ফৃত্তি, ধীরে ফেলি চাকপদ কবেন অমণ।

ব্ঝিল মানব এবে সে মুৎ-পরশে, পক্ষ যথা জলসিক্ত ক্ষিরেব ধাবাপুক পিচ্ছল তরল তথা চরশ-ঘর্ষে,

দেহভারে মৃৎ যেন ঘ্রিয়া বেডায়।
দেবীরে সহায় করি চলে নর পদ্ধোপবি
লোহপ্রাবে সূত্র্সম ভয়ত্বর সে কদিম
পদে পদে খলে পদ দ্বির নহে ভার।

বহিছে প্রবাহ এক সে পঞ্চিল দেশে কালির সরিৎ ধেন কালতর ঘূর্ণ ধন ভীষণ তরঙ্গ তুলি বিভীষণ বেশে!

হুন্তর কান্ধার-মাঝে চলেছে সবিং , অক্স জলবিন্দু নাই কোন দিকে---মক ঠাই নাহি বাযু তঞ্চজ্বা, বিবোর বিকট কায়া চলেছে একাকী সেই নিভ্ত সরিং।

ছুটেছে কৰোলৱাশি ভয়ত্বর বোবে, চক্রাকারে ঘৃথাবর্ত্ত ঘ্রিয়া চলেছে নিতা নির্ব্বাত শ্রেতে শ্রবিন্দু নাহি বোবে।

এ হেন নিঃশব্দ স্থান — বাযুশ্ত লোক,
আপন নিখাস-শব্দ দেহধারী নিজে তকে বেন দূর শৃত্ত কোলে কেহ প্রতিধ্বনি তোলে—
আবেহে তুবনময় বিকট আলোক!

দেখে জীব-আত্মা কত উৰ্দ্বখনে ছুটি পড়িছে সরিৎ-অকে, ছুটিনা স্লোভের সঙ্গে ভাসিছে ভুবিছে নিত্য কন্তৃ তীরে উঠি, পিপাসা-আত্র প্রায় আবার সরিতে ভগনি দিতেছে ঝাঁপ, মুহর্ত না সহি তাপ আবার উঠিয়া তীরে লুটিছে পক-শরীরে কথনও তৃদানে লুটে ভাসিতে ভাসিতে।

granical contractions and the contraction of the co

কত আথা তীরে নীরে এরপ বিব্রত বিশ্বয়ে হেরিল নর হেবিল হয়ে কাতর, অসহ যাতনা ববে আয়ু ওঠাগত।

তথন সে আত্মাগণ করিয়া চীৎকার ডাকে বিধাতার নাম প্রহাবি হৃদয়ধান, বৃত্তিত তরদ বৃকে আহি—আহি শল মুথে অবসয় হস্ত পদ তবদে বিস্তার।

এবে অনন্তের কোলে শ্রুতি-বিদারণ গ্য ঘন বজ্ঞনাদ অন্তরেতে অবসাদ গভীর আবর্ত্ত-গর্ভে ডুবে আত্মাগণ।

অময়ী কহিলাধীবে চাহিয়ামানবে—

"যত দিন স্পৃহা-লেশ রবে চিডে—রবে ক্লেশ জীবনের পাপাখাদ যত কাল অবসাদ না হইবে চিত্তমূলে, এইভাবে রবে।

এই সব নরাধন"—বলিয়া অমরী চলিল অনেক দূরে, মানব বিষাদে পূরে দেখিল সমূধে পুন: নেত্রপাত করি—

দেখিল শ্রেণীতে বহু আব্যা অগণন অর্ধ-নগ্ন হয়ে নীরে বসিয়া নদের তীরে দধিরে অঞ্জলি করি পুক্র পৌত্র নাম ধরি নয়নে বিষাক্ত দৃষ্টি—করিছে তর্পণ!

তুলিছে সে ক্লেট্রন অঞ্চলি প্রিয়া নিশায়ে অঞ্চ ক্ধিরে একে একে ধীরে ধীরে কাল তর্মেলর কোলে দিতেছে ফেলিয়া।

দেখি চমকিল দেহী,—দেখিল আবার শবিৎ-দলিল ঢাকি ছামারূপে থাকি থাকি ত শব নদ অলে ভাসিছে তরকসলে কতচিহ্ন কত হানে অলেতে সবার;

বেরি আহা জনে জনে খুবিছে নিকটে, কাহারো জন্ম ধরে কাহারো অক উপরে কাহারো অঞ্জিপুট বক্ষ কটিডটে। ষ্থা প্রাণের কথা প্রাচীন লিখন, কাল-আকে ভাসি কালী, শবরূপে দেহ ঢালি ঘোর পচা গদ্ধর ঘুরেছিলা মহাকালে করিয়া বেইন।

হেরে সে জীবাত্মাবৃক্ করি নিরীক্ষণ প্রতি শবে কতস্থান প্রতি ক্ষত পরিমাণ হৈরিয়া ধিল্লাবে পূবে, ত্বণা করি ফেলে দ্রে, অক্ষাৎ ছিদ্ধ-শির—বিকট দর্শন।

দেখি দেহী হতজ্ঞান , অমনী তথন — পবদ্রবা-অপহারী মহাপ্রাণী হত্যাকারী বোর পাপী এবাসব জবক্ত জীবন।

জিজ্ঞাসে মানব জাঁরে—"এ নদ-উদয় কিন্নপে কোথায় কহ্ আমায় সেধানে লহ বাসনা দেখিতে হায়, এ সরিং কি প্রথায় হেনরূপে হেন স্থানে প্রবাহিত হয়!"

"দেখাব"—∢লিয়া দেবী চলিলা সত্ত্ব , উত্তরি অনেক পথ মানবের মনোরথ পূণ্ঠিকলা দেখাইলা সরিৎ নিঝ্র ।

দেখিল নদের মৃত্রে দেখীর নির্দেশে— আহারপী কত জন বসিয়া কিপ্ত বেমন হৈরিছে হৃদয়তল কক্ষ: ভেদি অবিরল বহিছে উত্তপ্ত ধারা সরিৎ উদ্দেশে।

বসিরাছে আত্মাগণ বিদীর্ণ উরস , উগারি উগারি ধারা পড়েছে কালির পাবা---ঘনতর নীলময় কটুল বিরস ,

বহিছে তেমতি— ষথা ঝরে থনিমূথে কালিবর্ণ জলধার অনর্গল **অনিবার** মাথিরা অকার ক্লে থনি- অক করি ভেদ বেগে প্রবাহিত শেষে ধরণীর বৃকে।

কিংবা যথা কালিনীর কৃষ্ণ জলরাশি যন্নোত্তি-নগব্কে বহে বেগে নিমুদ্ধে পডে ধরাতল দেহে কল কল ভাষি। বদেছে জীবাস্থাকুল জম্মাননাপরে, উৎকট বেদনা রেখা ওঠ গণ্ড নেত্রে লেখা বিদারিত বকঃস্থল নির্থিছে অবিরল গণ্ডুষে করিছে পান ধারা-স্রোত ধ'রে,

বিকট বিষাদ-নাদ মূথে মূছ্মূ ছিঃ, শুনিলে তাদের অর বোধ হয় খেন ঝড় বহে ভেদি মর্মতল—শব্দ করি হ হ।

ক্ষাত্রী দে নিনাদ শুনিতে তেমতি বেন কন-শৃত ক্ষতে বায়ু পদে কলদেতে নিনীথে প্রান্তরপরে আদিত করিয়া নরে কিংবা মুমুর্গুর স্বর কুশ্রাব্য বেমতি।

"কে এরা"—জিজ্ঞানে দেহী,— অননী উত্তরে—
"অবনার পাপরপ দয়াশৃত্র বত ভূপ দেই পাপী এই সব এ তাপ-গহররে।

হের দেখ অইখানে— পারিবে চিনিতে যত জীব নূপসাজে তাপিতা ধরণীমাঝে মাতিয়া ঐথাগ্যনে ভাসাইল অঞ্চনদে দৌরাত্মা-পীড়িত নরে— অংইছো সাধিতে।

হের অই ভশ্ররাশি-আবাদনে যে পাপী—
আহকংস ধরাপতি দরাশূক্ত ছন্নমতি
উৎসন্ন করিল আাগে যত্ত্বে তাপি।

নিপ্লীড়িত মথ্রাব ধক্ষ:ত্বল ধলি, দেবকীর মনোল্বে লিথিয়া ভারত বৃক্তে আপন কলত্ত-রেথা এখন বিরাজে একা এ বোর নরকে বসি—মনস্তাপে অলি।

হেব অই সাত শিশু স্কল্পেশে পড়ি কি বলিছে কানে কানে বিব ঢালি দক্ষ প্রাণে নেত্রকাছে যমদ্ত হেলাইছে ছড়ি,

দেখাইছে নিলাতন—প্রহারি বাহাতে সজ্যোজাত নিশু দেহ বিনালিল তাজি স্নেহ হের দেখ নৌহ-পারা জননীর অনধারা নিলাতে আঁকিছে অবং প্রতি বিল্পাতে।

সে জীবে পশ্চাতে ফেলি চলে ছই জান; কিছু বৃদ্রে পিয়া ফিরে হেরে পরিখার পারে অপ্রেডে অন্তল এক ধুসর-বরণ; উৎকট আবোকজ্ফটা পড়িয়া তাহায়
মহাভয়ত্তর বেশ করেছে ভূধরদেশ
একা সেই গিরিপরে আহা এক বীণা-করে
ভাগিছে নেত্রের নীরে বসিয়া সেণায়।

বিশারে জিজাদে দেখী অমরী চাহিয়:—

কোব আআ হেরি অই. দগ্ধ বীণা করে লট এ ভাবে পাপাআ লগ্ধে ওথানে বদিয়া ?

উত্তরিলা জ্যোতিশ্মী "অচল-পশ্চাতে আমরা এখন, নর, তাই ও গিরি শিখর, দেখিতে না পাও ভাল, কিছু ফুত পদ চাল চল নির্থিবে স্ব আব্রোহি উহাতে।"

পার হয়ে শুক্ষ থাত শিখরের তলে ক্রমে শোহে উপনীত, অমরী সহ জীবিত উঠিতে লাগিল এবে সে উচ্চ অচলে।

শরীরী বর্মাক্ত-দেহ আবোহিতে তায়, যে ভাগে চরণ সরে সে ভাগ তথনি কবে নাহি পায় স্থান এক দৃঢ়পদে মুহুর্তেক বেখানে চরণ রাথে ভ্রবের গায়,

নাপ। মূথে ঘনখাস চাহে দেবী-পানে। বুঝিয়া অমরী তায় করে ধরি লয়ে যায় অচল-শিথবদেশে, পাপাত্মা ঘেথানে।

অমবী বলিলা নরে, "থালি থাক দেহ এই গিরি—ভন নর, উঠিতে ইহার পর শরীরীর শক্তি নাই, বিষম হৃথথের ঠাঁই এ গিরি জীবাত্থা বিনা না পরণে কেই।"

বছ কটে শিখবেতে উত্তিলা শেষে; তথন জীবিত প্রাণী হেরিল বিশ্বর মানি চাহিলা চকিত-নেত্রে গিরি অগ্রদেশে,—

দেখে রাজধানী এক বিশাল বিস্তার, পরিপূর্বমানলে, মাঝে মাঝে শিবা জলে যত সৃহ হর্ম্য তায় দগ্ধ ইন্ধনের প্রায়-লক্ষ প্রাণি-কোলাহলে শব্দ হাহাকার,

বীণাদওধারী মাজা একদৃষ্টে চাহি, বিগলিত অঞ্ধারা, হেরিছে উন্মাদ-পাবা দে বহ্ছি-ওরল-ভল—ক্ষাণ ক্ষান্তি নাহি। ত্জ্য প্ৰন-বেগে ৰুদ্ধ খাস-বাত होত নাসাবদ্ধে ছাডে স্বেগে খন আছাড়ে য় বীণাদও-দাক তাদিখা পৃষ্ঠের মেফ কভ্ বক্ষ: ভালদেশে প্রহারে নির্ঘাত।

দারণ আকেপে তার শিলা তাব হয়, লিছে "কণেক কান্তি, দেহ দেব চিতশান্তি পারি না—পারি না আর দাহ নাহি সয়।

বৃথি নাই ধরামাঝে— এখর্থ্য-উন্নাদে—
নাকপতি হ'তে হ'লে কত সাম্য-ধৃতি-বলে
নাকেরে পালিতে হয়, কেন বলে ধর্ময়
লোকপালে ধরাতলে—ব্ঝেছি বিযাদে।

দ্রে দাডাইল দেহী মানিয়া বিশায়, জাতুর মৃত্থকে দেবীরে জিআচানা কবে— . "কেবা এই ভ্ঞোহেন সন্তাপ ভ্জুর ?"

জীবিত নরের বাণী তনি সে শিথরে
দুইবরে জীব বলে— "কে তুমি রে এ অচলে
গীবিত শরীরধারী ? তুমি কি কেহ তাহারি
মাহার পীডনকারী নূপ এ ভূধরে ?

হও বা না হও শুন—নিদম্পরাণী মানি 'নীরো' ধরাপতি— রোমের নিপাতগতি ধরার কলঙ্গাতি—নরকুলগানি!

নিজ রাজধানীকার। জালির। জনলে, ধে বীণাবাত করি বসিরা শিথরোপরি ইরেছিছ শিথানল প্রভূজে পিয়ে গরল প্রাতে চিতের সাধ ধর্ণীমণ্ডলে।

বলি, পুন: পুর্বভাব আবার ধরিল ! মমরী-ইলিতে নর তেরাগি গিরি-শিথর পদাক গুলিয়া তাঁর আবার চলিল ;

কত বন গুহা থাত এড়ারে ছরিত ^{গুনীত} ত্জনার যেথানে অচল প্রার ^{বিবা}ণ প্রাচীর অলে, সাঁথা যেন তারি সলে আ্যামর দেহ এক শুক্তে প্রসারিত।

সে প্রাচীর-তলভাগে বহিছে ভীষণ ^{ক্রির} সলিলাকার বেগবতী স্রোভোধার তীরে পাবাণের পুরী মলিন-বরণ! অঙ্গী ংলাজে দেবী দেবাইলা নরে পুরীর পরিথা ভিত্তি বুরুজ গমূজ কীঠি চাহি পরে উর্জপানে দেবাইয়। পাপপ্রাণে বলিলা—"শরীরি, তুমি চিন কি উহারে ৮

অই পাপী নর-আত্মা বিকট-আকার কৃষ্ণশাশধারী ছান্না ধ্রাতে ধরিলা কান্না নিষ্ঠুর ভূপাল-বেশে, যে নাম উহার

শুনিলে এথনি তুমি ঢাকিবে প্রবণ ; হুদয় অকারময়— মানবের হুদি নয় বলের সৌভাগ্য-টোর দৌরাত্ম্য-আধারে ঘোর কেতুরূপে ধরাত্তদে কৈল বিচরণ।

গণ্ডৰতী রমণীর জঠর খণ্ডিলা দেখিতে জরায়্পিও জীবিত জীবের দণ্ড কবিত অশেষরূপ তুর্মদে ডুবিয়া।

দেশ দে পাপের চিহ্ন এবে আত্মাদেহে, পাষতের হুদিতল উগারিছে ক্লেদ মল হস্ত পদ বক্ষ: শির পাষাণ-প্রাচীর স্থির কালের করাল ফণী সাধে অদু লেহে।

নড়িতে ফিরিতে ভোগ হের কি করাল। ভয়কর শলাকায়— মলা-বিন্দু নাহি ভার বিদারিত কঠতল কাদিতে নাহিক বল জীবিত মুতের মুণা চিহ্ন চির কাল।

চিন কি উহারে তুমি ?" বলি আআমরী চাহিল দেহীর মূথে; শরীরী নিখাদি তুথে বলিল,—"দিরাজুন্দোলা অই কি চিনারি ?"

ইলিতে হেলারে শির অমরী চলিল , চলিল তাহার দনে দেহী নিরানন্দ-মনে দলি ক্ধিরাক্ত পক হনরে কত আতঙ্ক কতই উল্লেখবেগে উর্থলি উঠিল।

দ্রেতে দেখিল দেশ জালাশয়ময়; দ্র হ'তে দৃশ্য তথা বেন পঢ়া পত্র-লতা হত্তর হুর্গৰ গর্ভে বিছাইয়ারয়।

বলে বথা ভাজ-শেবে-রৌজ-ভথ জলা ঘন-শঙ্কে বিনির্গত তুর্গদ্ধ বায়ু দূখিত বর্ষা ঝতুর ভলে ছড়ারে চৌদিকে রজে নগরে নগরে ভোগে শমনের বেখা। দেইরূপ দে তৃষ্টর তৃর্গম যুজির। কত শুক্ত জলা বিলে বনবর্ণ পক্ত-নীলে ছুটিছে দ্বিত বায়ু ত্র্গদ্ধে পৃতিয়া।

স্থানে স্থানে তীত্র-ফট তৃণগুল্পপ্রায়
ফটুল কুশের রাশি কর্মিনতে চলে ভাসি
ফ্রোগ্র কন্টকময় পচা লতা-পত্রচয়
কোনধানে উর্জুশির—কোধা বা স্টায়;

কাছে আসি হেরে নর কাতর অন্তবে, পচা গতা-পত্র নর, সকলি জীবাঝাময় পত্র-লতা-গুলুর্গণে ন্লাশ্য-পরে।

গড়ারে গড়ারে চলে ধরি গলে গলে, কেহ বিম্পিত হয়, কেহ অক্টে বিম্পির, ছিম করে প্রস্পর বিষ্ম তৃদ্ধিশাপর আ্যারাশি—বালু যেন লুটে সিকুললে।

"ধ্য়াতে এত কি পাপী ;" কিজাসে শরীরী "দ্য়াশুক্ত এত জীবী ?" উত্তর করিলা দেবী— "হের, দেধ অইখানে এই দিকে দিরি;

নরাধম ক্রণৰাতী পিতৃৰাতী নত, ভাদের তৃদ্দশা দেখ. দেখ, দেছি, দেখ শেখ, শ্বরি নিজ নিজ পাপ ভূগিছে কি ঘোর ভাপ," এত বলি শোভাষয়ী হৈলা নিক্তর।

দেখে দেহী দ্রমে কোথা স্বান্থাগণে টানি ভীন ক্ষম বনচর গুল্ফ ভাগে ধরি কর, ক্ষুরধার কুশোপরে---পদাবাত হানি।

কোথাও গহ্বর-গুলো জীবাত্ম। বেড়ার শিশু-প্রাণ বীধি গলে কাদিতে কাদিতে চলে কোন বা উদ্ধত প্রাণ আগনি তুলি কাডান ভীরবেগে হানে নিত্য আগনন গলায়।

কোনধানে পাজ বেন রজকের পাট, আবাগাণে ধরি ভার বমদ্তে আছড়ার; কেহ রজু বাঁধি কঠে কররে বিনাট।

এইরপে কতক্ষণ জুগি ছংধবাদ, উদ্যাদ আকৃল হিরা কুক নদ-তটে গিরা কুঁাপ দিরা পড়ে তার আবর্ত্তে বেরি বেড়ার মূথে হাহাকার শব— অন্তরে বিবাদ। একান্ত উৎস্থক-চিত্তে নিকটে আসিয়া দেহী ধীর সংখাধনে কহে আত্মা কর কনে "কে ভোমরা কি পাপে এ তুর্গমে পড়িয়া ?"

নরের ছঃখিত খর বছকাল পরে শুনিয়া পরাশিগণ . মুগ্ধ হয় কিছুক্ষণ পরে কাছে ছুটি তার, ঘূচাতে ফুদির ভার আহারস্ত করিল কেহ আনফেপের ফরে।

অকসাৎ সে গুৰ্গমে গুরস্ত ঋটিকা, বহিল কোথার হ'তে জীববুলে পথে পথে, উড়ারে চলিল বধা লুটিত গুটিকা,

চলিল উড়ারে ঝড হেন ভীমবেগে হেরে নর গভিহীন, পাণুর মুধ মলিন, শুকাইল কঠতালু মুখেতে ফেটিল বাণ উঠিণ চীৎকার কবি—স্বপ্নে যেন জেগে।

শোভামরী মৃত্ত্বরে আখাসিল তায়, কহিলা—"এ আত্মাসব এবে করে অফুভয ষে তাপ না ভোগে কভূ থাকিয়া ধরায়।

পত্নী-ব্যবসারী এরা--হীন অর্থলোডে বংশের দোহাই দিয়া নারীর সতীত্ব নিয় ব্যবসা করিত এরা অহণ্য অক্ষোডে !*

অমরী এতেক বলি নীরব হইল। কাঁপিতে কাঁপিতে নর যুড়িরা যুগল কর— "হে দেবী সদয় হও শীল্ল স্থানান্তরে লও ছুহিতা আমার কোথা"—সুংধেতে কহিল।

ষষ্ঠ পল্লব

শরীরি-বদনে আসিত বচন
তানিরা অনবী তার ;—
"প্রাব প্রাব বাসনা তোমার
অন্তথা নাহি কথার,
দেখিবে নন্দিনী কিরপে তোমার,
দেহ উন্মোচন করি,
কি গতি লভিলা করে কিবা লীলা
কি প্থা-পরাণ ধরি।

जम थ भूरवन भाव किছुकान: বাসনা জনমে মম. দেখাই তোমারে এই সব পুরে প্রবেশের কিবা ক্রম। मिथारे जिमाद थिन छव-दिना, কিরপে জীবাত্মা শেষে আসিয়া প্রবেশে কোন্ পথ দিয়া এ সব আহার দেশে। ধর্মকপীষম. কিরপ আনাদনে. কি প্রথা বিচারে তাঁর. কিরূপে নরকে পাঠান পাপীরে সহিতে পাপের ভার। पिथिरव नम्रतन, नम्रतन कथन ७ मानव ना ८५८४ बांब---ব্ৰহ্মাণ্ড-কেন্দ্ৰেতে বসি ধৰ্মবাজ বিরাজে কি প্রভার। কত কি অপূৰ্ব্ব দেখিবে সেখানে বিশ্বয়ে প্লাবিত হয়ে, দেখিতে বাসনা থাকে যদি বল. যাই সেধা তোমা লয়ে। কিন্তুকহি শুন তুরুহ ভীষণ গগন-গছন সেই. পশিবারে পারে দে জন সেখানে ভীক্তা বাহার নেই। এ হেন সাহস ধর যদি চিতে কহ তবে গোহে চলি. এত যে আগ্ৰহ দেখিতে এ সব এবে কোথা গেল গলি? সে উৎসাহ আশা কোথা বা এখন 🤊 কোপা বা সে মনোরপ? ষচকে দেখিবে পরকাল-গতি বিধি-নিরূপিত পথ ? জীবন থাকিতে পরকাল-ভেদ ষে জন ভেদিতে চায়. প্তল-শহীরে থগেন্দ্রের বল ধরিতে হইবে তার।" নীরব **অম্বরী এতেক কহিয়া**: ৰানব মনের হুথে िष्ठि क्लकान कहिना उथन লজা-অবনত মুখে---

"অরি জ্যোতিশ্বরি ধরি সে সাহস এ ৰুড শরীরে যাহা পারে ধরিবারে, না কাঁপি অন্তরে, অসাধ্য নহে গো ভাছা। किन्द्र योश (पवि व्यनाश) मानत्व দে সামৰ্থ্য কোণা পাব ? পাপীর নির্দ্ধে পাপাত্মা হটয়া কেমনে নির্ভয়ে যাব ? (मिथिक (य नद मत्म क'तन चात হিয়াতৃক তুক করে, শিরাতে শিরাতে প্রচণ্ড আবাতে বেগেতে ক্লধির সরে: লোম-ছরষণ হেন ভয়কর নারকী আত্মার গতি, অবজ্বা নিয়ম বিধাতার হেন. চেতনে হেন গুৰ্গতি---क्नुरवत कारन कोवरन क्रन्सन. ক্রন্সন মরিলে পর। হেরিলে এ গতি হে অমর-বালা. তাসিত কে নহে নর ? তথাপি দেখিব দেখিবে যা किছू, অভ্যাস নরের বল, त्म व**न अ**न्द्र न एक हि कि कि ভ্ৰিষাএ স্বস্থল, তুমি গোষ্পন সহায় আমার, ক্ষু নহি আমি নর---মারে রক্ষা করে যে শিশু-সন্তানে থাকে কি তাহার ডর ?" अनिया अमरी:-- "(रु मतीत्रशादि. ভ্ৰান্ত না হইও মনে. পারিব রক্ষিতে শরীর ভোমার প্রবেশিয়া সে গগনে। কিছ চিত্তে তব বহিবে যে স্লোভ পরাণ ব্যাকুল করি, অমরী বদিও, সে স্রোত-বারণে শাম্প্য নাহিক ধরি। আপুনিহ নিশ্চর মনেস দমনে মাসুষেরি অধিকার; হৃদর-রাজ্যেতে, শাসন রাথিতে সহায় নাহিক ভার।

আপনারি তেকে আপনি বিজয়ী, व्यक्ती इर्जन (यहे. তর্বল পরাণে শমভা সাধিতে ক্ষমতা কাহারো নেই। কি অমর নর, এ প্রথা স্বার, ভন হে শরীরী প্রাণী; প্রকাশ এখন কি বাসনা তব এ কথা নিশ্চয় মানি ৷" কহিল মানব, "হে স্থাভাষিণি, কেন স্থাইছ আর, যা ঘটে ঘটক কাঁচক পরাণী যাব সে ত্রন্ধাত্ত-পার। সামান্ত পণেতে তকু খোরাইরা---প্রাণ দিতে পারে নরে. নর হয়ে আমি এ পণ দাধিতে নারিব ভয়ের তরে ? **ठल, ८५वि, ठल, ८काथा ल**स्त्र शांदव, সাহদে বেঁখেছি বুক, দেখি অন্ত ভার জীবনেব পাপে জীবাঝার কত হথ।" চলিলা তথন দেহীরে লইয়া অনন্ত গগন-মাঝে, অমর স্থলরী কিরণ প্রপারি कित्रप (यन वित्रांदक ! উঠিতে লাগিল কতই যোজন গভীর শৃক্তেতে পথি, নীল নীলতর গাঢ় সূক্ষ্ম জড কত বায়ুন্তর মথি। থেলে চারিদিকে অধঃ উর্দ্ধ পাশে গড়ায়ে ছড়ায়ে সেথা, মক্ত-সাগরে প্রন-ছিলোল সাগর-উর্মির প্রথা। উঠিতে লাগিল যত সুন্ধাকালে কক্তলে তত নরে, মুত্ৰ কৰ্ষণে অমর-বালিকা যতনে চাপিয়া ধরে। দিয়া নিজ খাস-প্রখাসে তাহার मृत्त्राञ हिनन (परी ; মাতৃ-ক্রোড়ে যেন চলিল মানব অপুর্ব আনন্দ দেবি।

দেখিতে দেখিতে উঠে দেহধারী বিশ্বয়ে বিহবল প্রাণ. পথচিহ্ন নাহি অভ্ৰান্ত গতিতে গ্রহ তারা ভাষামাণ ৷ কত দিকে গতি করে কত গ্রহ. কতই তারকা ছোটে, অনন্ত প্ৰাক্তে জ্যোতিৰ্মালা যেন ফুলঝারারপে ফোটে ! ছোটে পিঠে পিঠে গুৰকে গুৰকে কেহ ধীরে একা ধায়, অদুবে অস্তবে বিচিত্র অয়নে বিশাল অনন্ত-গায়। কেহ না বাধিছে কাহারো গমন চলেছে অয়ন কাটি, পূৰ্ব গোলাকার কাচডিম্ব প্রায় গ্ৰহ ভাবা কত কোটি। ছটিতে ছটিতে নিজ নিজ পথে निनाम कतिरह मत्व, পরিপূর্ণ করি সে গগনদেশ মধুর মৃত্ল রবে। দে মৃত্ নিকণে নিজালু মানব মুদিল নয়ন-পাতা, স্থপনে যেন বা উডিয়া চলিল শুনিতে শুনিতে গাথা। অমর-সুন্দরী জ্যোতিঃ পিণ্ড-পথ এডায়ে এডায়ে ধীরে, **চ** जिल (जमनि श्वद्रात्। (समनि कित्रत्वत (तथा कित्व। ভেদি সে সকল বুত্ত-মধ্যভাগে সুর্য-জ্যোছনা ছাডি, প্রচণ্ড নির্বাত কিরণ-সাগরে প্রবেশিয়া দিলা পাডি। তপত-কিরণ গগন-গহনে चमत्री अदिदान (यह, व्यन्तर्भ उपरंग सन्दर्भ सन्दर्भ অসহ উত্তাপ দেই, মুপ্ত মানৰ কপোল কপাল মুত্রল পরশ কবি, বক্ত নয়ন নাসিকা অগ্রেতে থেলিতে লাগিল সরি;

কৰ্ণ-কুহরে খন খন নাদ ঘাতিতে লাগিল ধীরে. দর-ধাবিত ক্ষিপ্র-চালিত নিনাদ যেমন তীরে। গ্রীম ঋতুতে ব্রত্তী-আবৃত ছাড়িয়া কুঞ্জের ছায়া, দথামকুতে পডিলে বেমন উত্তাপে তাপিত কায়। তীক্ষ কিরণ হিল্লোকে পরশে निर्माप खंदरन नद्र. স্থপ তেয়াগি চমকি জাগিল কঠেতে কাতর স্বর । স্বিশ্ব-ভাষিণী অমরী তথন কহিল তাহার কানে, "উণা-বদনে আবর বদন বেদনা পাবে না প্রাণে।" শীঘ্র শবীরী অমরী-গুঠনে ঢাকিল বদন গ্ৰীবা. স্থিরদৃষ্টিতে দেখিল চাহিয়া অস্থ্য-প্রভার দিবা। সাদ্ধা-গগনে ঢলিয়া পশ্চিমে ডুবিছে যখন রবি, वर्गवद्रम, किद्रम-मागटक, অনল যেন বা হবি। দীপ্ত প্ৰভাতে তথন যেমন উডে পাবাবত-সারি. মঞ্চলায়ে উড়ায়ে শৃষ্ণেতে, করিলে গগনচারী। স্হ্ম চিকণ ঝকিয়া তেমতি আ বাশ আছেল করি. দেখিল মানব উর্দ্ধচরণে জীবাত্মা পড়িছে ঝরি; চক্রগতিতে ঘুরিছে সতত সে ভীষণ ব্যোমগুর, সঙ্গে ঘুরিছে কিরণ-সাগর অনন্ত অয়ন'পর। দীপ্তি-জলধি অক্তেত মিশিয়া কোটি জীবাত্মার কায়া, ন্টিতে দৃটিতে উর্শির আহাতে উড়ে यन धृति-ছामा !

প্রাস্ত শিথিল গতিতে অমনী कित्रग-मागदा शिल: যোজন যোজন গভীর প্রদেশে পশিল সে স্ব ঠেলি। স্থির ফটিক সদৃশ আকাশ পরশি ছাড়িলা খাস ; কক্ষ-গ্রথিত মানব-দেহীরে রাখিলা তাঁহার পাশ। পূৰ্ণ পীযূষ পূবিত বচনে কহিলা তাহারে চাহি. ত্রস্থ নিমিথে দেখিল অমরী नद्रत्र विदवक नाहि। সর্প-দংশিত পরাণী সদৃশ মানৰ পড়িল ঢলি. নীল-বরণ-মণ্ডিত বদন কম্পিত কঠের নগী। বাক্য বিহ্বল বিশ্বয়ে পাগল ক্ষারিত নেত্রের পাতা, **५ष्टि-विशीन नवन-**गृश्रव কপালে ষেম্ন গাঁথা। মুত্ত করিলা নিমেষ-ভিতরে अव्यक्तिक विष्य অস্তৰ্কনে চেত্ৰা লভিয়া মানব কহিলা পরে--"হে স্থরস্করি, কর গোমার্জনা इर्जन मानव-चाँथि, এ আলো উত্তাপ নারিফ সহিতে চক্ষুর মণিতে রাখি। হেরি বহুক্ষণ নিরীক্ষণ করি হইমু অক্ষের প্রায়, এ কি অন্ত ও গো সুরবালা বিশ্বহে পরাণ যার।" কহিলা অমরী,—"চিন্তা নাহি আর মুস্থ হও এবে নর, প্ৰশান্ত এ দেশ প্ৰশান্ত যেনন অহিলোল সরোবর। দেখেছ মরতে ঝটকা ধেমন সহস্র বোজন ছেরি. चूरत रशांत्र रिटा रिम इत कति, প্রাণিকুল শুরু হেরি।

ফেলি রুদ্ধান চলিল শরীরী মধ্যস্তল ভার অচল অটল ধৰ্মের আসন যেখা, প্ৰন প্ৰশাস-হীন, যোজন অন্তরে দাঁড়ায়ে অচল সৌর-বিশ্বমাঝে এ কেন্দ্র ভেষ্ডি এ হেন জনতা সেধা। প্ৰশান্ত সকল দিন। (मरी करह "नव, शांक धरे शांत মধ্যেতে ইহার সঞ্জন অবধি কি হেতু সহিবে ক্লেশ ? স্থাপিত মহতাসন, নিকটে পশিতে, এইখানে থাকি ধৰ্মবাজ-বেশে শমন তাহাতে **मक्न इत्व উत्मन**। চল পাবে দরশন !" এত পরিষ্কার কিরণ এথানে বলি আগে আগে প্রফুলবদনা অসুন্ধ নয়নে তব, শোভামরী ধীরে বার; বিনা অবরোধে হেরিতে পাইবে ভাবিতে ভাবিতে পাছে চলে নর এত দ্র হ'তে সব।* ক্ষটিক মণিশিলার। অমর-স্বন্ধরী বাক্যেতে শরীরী অবত ধবল মুকুরসদৃশ নির্দেশে তাঁহায় হেরে क्विक कि किम्बर বিচিত্র আসন, জীবাত্মা-সাগর তুহিনের রাশি চারিদিকে ভাসি চারিদিকে যেন ঘেরে বেন বা ছড়ায়ে রয়! জিনি স্বচ্ছ কাচ, ফটিক মাণিক **८**मथोटब ८५थिटब व्यमती मानव রচিত অপূর্ব্ব পীঠ চলে কুতৃহলী হয়ে, ঝলকে ঝলকে উছলিছে আভা বেতে কিছু দূর অবনী-বিহারী আক্ষি নয়ন-দিঠ দেখিল শিহরি ভরে--ব্ৰহ্মাণ্ড-কেন্দ্ৰেতে নিবদ্ধ আসন ভীম দীৰ্ঘাকার ছায়ার আন্ততি আদিকাল হ'তে ধীর অশরীয়ী প্রাণী কত, *(लांदक दे* खोरांदम यथा कांनीशांम ফিরিছে ঘুরিছে তমস্বিনীময় ত্রিশ্ল শ্রেডে স্থির আরণ্য-ভরুর মত। ইন্সাদি প্রভৃতি ত্রিকোটদেবতা (मर सक्षकांत्र, कशार**न**त्र उटि তুলিয়া মন্তক'পং দেউটা ষেমন জালা, ধরেছে আসন সহাস্ত বদনে ঘুৱে ধেন ভাটা এক চক্-ছটা জুড়িয়া যুগল করে মুখে শব্দ হলা হলা। चात्रन-উপরে মণিমর বেদী, দেহধারী নরে হেরি জতবেগে স্থাপিত উপরে তাঃ চতুদ্দিক হ'তে যুটি, অভুত গঠন মহা তুলাদও শভ শত জন শমন-কিন্তর সর্ব্ব-মান্যস্ত-সার নিকটে আসিল ছুটি। উৰ্ণনাভভন্ত সদৃশ স্ত্ৰেভে কেহ কেহ ভার হুছকার নাদে **লম্বিত তুলা**র ধা किटिएटम ध्रति नद्द, कुहे मिटक (यन कुहे शूर्वीम করিল উভাম শৃক্তেতে ঘুরারে इनिष्ट हरम अक्र ফেলিতে প্রভা-দাগরে। ক্ষণ নহে স্থির উঠিছে নামিছে তথনি অমরী নিবারি তাদের **निव्रष्ठ ८म १८५**व. कानाहेन मरनात्रथ, দক্ষিণে পুণ্যের বাষেতে পাপের অমর-বালারে কথনে চিনিয়া মান-নিক্লপণ হ^{রু।} বনদৃত ছাড়ে পথ।

একে একে পাপী আসন-সমীপে কাঁপিতে কাঁপিতে আসি. আপন বদনে আপনি বলিছে নিজ নিজ পাপরাশি। **शिर्वात्री त्वय हेन्सानि बाहात्रा** বলিছে পুণ্যের ভাগ, তথনি আপনি নামিছে উঠিছে চন্দ্রাকার তুলাভাগ। ানদণ্ডপরে স্থির দৃষ্টি করি প্রস্রতি হেন. সি ধর্মরাজ, ফটিক-আসনে निवक त्रस्त्रह् (यन। চলার্দ্ধে ষম্বাপি আত্মামর প্রাণী পাপ অংশ কোন ভার, র কি বিশারে গোপন-মানসে নাকরে মুখে প্রচার ; হসা তথনি সে অপূর্ব যন্ত্রে তুই ধট হয় স্থির, লে তুলাদণ্ড: অথণ্ড বিধান হায় রে কিবা বিধির ! ने निक् इटेंट इहि ऐर्क्षचारम তথনি শ্যনদূত, থে "হলা" ধানি প্রহারে এমনি পীড়নে অস্থির ভৃত। ানিতে বাসনা ফিরে চাহি নর বাক্য নিঃসারিতে যায়, स्य अर्थाध्य चत्रुगी ठालिया অমরী নিবারে তার। নঃ পূর্ববং ছেরিল শরীরী তুলাগট উঠে নামে, লকে পলকে কন্ত আতাময় প্রাণী ফিরে ডানি বামে। ত বে ব্রহ্মাণ্ড খুরে চারিদিকে গ্ৰহ ভারা খণ্ড হয়, াটলে আসেন নাপশে নিঃস্বন (म (म्म निःमक तत्र। र्परमय-बृर्ध, मार्थ मार्थ संद्र्य सं অতি মৃত্তর খরে, ৰ্মাত্ৰ হুই, আদেশ ৰানাতে,

প্রতি আত্মা-মানপরে।

পাপ-পুণ্য-মান এক্রপ বিধার্মে, সেথা সমাধান হ'লে. ষমদৃত যত, পাপিবুন্দ লয়ে. পরিখা বাহিয়া চলে। মরে লয়ে দেবী পরিখার তটে গিয়া চলি জভপদ. কহিল—"হে নর, স্থূল-নেত্রে হের , **এই বৈতরণী न**দ:" দেখিল শরীরী, খেয়া-ভরী কভ, কুল-ভাগ যেন ছেয়ে, প্রতি তরী পৃষ্ঠে বমদ্ত এক, দাড়ারে তরীর নেয়ে। অতি কৃত্ৰ ভরী বৃহৎ ভরালু, বৈতরণীতীরে বত. এ ভব-ভিতরে, তুলনা তাহার, নাহি কিছু কোনমত। নিম্বর চৌদিক, আকাশ প্রাদণ, হেন শক্ষীন স্থান, চকিতে মুহুর্ত দাঁড়ায়ে দেখানে. উড়ে শরীরীর প্রাণ। নীরবে আত্মারা, উঠে নৌকাপরে, নীরবে শমনদৃত, (अम्रा निम्रा हतन, देवज्यती-करन, কেপণী ফেলি অন্তত। অমরী-ইন্সিতে কর্ণধার কেহ. বুহৎ তরণী বাহি, निकरि यानिया, त्राचिन स्माहाद्य, বিশ্বিত নয়নে চাৰি; মুত্ৰ ৰিখন প্ৰমে ধ্যমন. यथन (कडकी-कारन, বসস্ত-বারতা, গোপনে শুনার, ভেষতি অফুট তানে--व्यवती वृक्षारत, भगन-किक्रदत, मानदव नहेन्ना धीदन, ভরণীতে উটি বাহিগা চলিল. देवजबनी-ममी-मीदब । कछ निमि मिता, खत्री छटेन वाहि, কত গ্ৰহ কত ভারা, দুর শুক্তপরে; উঠিণ ডুবিল, যেন ভষোমণি-ঝারা।

উদ্দেশিত দেশে উতরি নাবিক. ভরাকু করিল স্থির, অমরীর বলে, তরণী ছাড়িয়া, মানব লভিল ভীর। (मशिन (मशाति, भवानी भूक्ष. দাঁডাইয়া মহাকায়, ধবল कुछल, शिद्धार यमन ধবল শক্তের প্রায়। বিশাল ললাটে, অঙ্কিত তাহার. সহস্ৰ কৃঞ্চিত রেখা. को वांचा-छेन्त्रिव. मधाष्ट्रत्य (यन, মৈনাক দাঁডারে একা। বামদিকে তার, স্থতীক্ষ কুঠার মৃষ্টিতে রাখিয়া ভর, হেলিছে কখনো, উকু হ'তে ঝরে বৈভবণী-নদী-ঝর। সে মহাপুরুষ, দাঁডায়ে এ ভাবে, मिक्किनिरकट्ड (मृद्ध. জীবাত্মা ধরিয়া, অনস্তে ছড়িছে, উর্দ্ধে তুলি একে একে। যে গ্রহ নক্ষত্রে. যে পাপীর বাস. (महे पिटक नका कति. অতুলা বেগেতে, সে মহাপরাণী, নিক্ষেপে পরাণী ধরি। স্থবির বিশীর্ণ, মুবক মুবতী হায় রে কিশোর কত. কুৎসিত, স্থলর, ধনী, মানী, জ্ঞানী, মহীপাল শত শত, নিক্ষিপ্ত এরপে, ব্যোম-গর্ডদেশে, বুৰ্ণ প্ৰভাসিকু বায়, व्यांकांत्रस-मृत्थे, त्य क्रम्यन-ध्रति হাহারব যাতনার -পশুর(ও) প্রবণে, পশিলে সে খেদ, স্থান্তির নাহিক রয়, त्म त्थम छनित्म आंगमुक अंछ, পাষাণে। विमीर्ग हम्र। ञ्जज्ञामा-मधी. नरत्रज्ञ नव्रत्न. ঝরিল অজম ধারা, বিশ্বরে হিমাস, গওদেশে যেন, ্নিবদ্ধ মুক্তার ঝারা।

অমরীর(ও) আঁথি বাপাধ্যে খেন, देश किছू आंडाशैन, নরে চাহি দেবী মুচল নিখাসি কহিলা বচনে ক্ষীণ---"হে অচলবাসী কিরণ-সাগরে विन्तृ विन्तृव क्षात्रा, নির্থিলে বত, সেই রেণুরাঞি এ হেন আতারি কারা।" "ভেবেছি তা আগে" কহিলা মানব "কহ গোজননি শুনি: এ মহাপুরুষ আ আয়াকি আমের কহ কে দাভাৱে উলি ?" "মৃত্তিমান হেথা আাদিক্ষণ হ'তে অনাদি প্রাচীন জ্ঞানী:" কহিল অমরী "কাল ওঁর নাম" পীয়ধ-পুরিত বাণী। হেন কালে নর হেরিলা শক্তেতে সে মহাপুরুষ-করে, পরম সুন্দর নর-আবা এক निकिथ अन्छ छात्. নেহাবি নিমিষে স্তর-কন্তা পানে চাহিলা উৎস্ক হরে. বঝিয়া অমরী ছাড়িলা সে দেশ চলিলা মানবে লয়ে।

সপ্তম পল্লব

অসরী মানবে লবে নামিল তথন; জগতের কেন্দ্র ছাডি শৃক্তমাঝে দিয়া পার্দি ভিন্নরূপ পাপলোকে করিলা গমন।

আবাদের ঘেই থণ্ডে অট্টালিকাকার পঞ্চ সক্ষত্তের মিল শোভি গগনের নী^ন দশমী ভিথিতে ঘেথা চল্লের বিহার,

পাচে একে একে পাঁচ—মিলায়ে কিব[া], নিনীথিনী-শিবোপরে স্চিকণ ঝারা ধ^{††} অনস্ত কোলেতে বাহা দের দরশন; মধা নামে তারালোক —প্রবেশি তাহায় নবে নামাইল। দেবী , স্থশীতল বায়ু সেবি দেব লোক-বাহিরে দেহী শরীর জুডায়।

শীতল হইলে পরে অমরী মানব প্রবেশিল গর্ভতলে, দুও তুই কাল চলে, গোধুলি আনালোকে যেন—বিষ্ধুনীরব।

কিছু পবে হেরে দ্বে উন্নত প্রাচীর, হেরে মনে হন্ধ হেন, লৌহের প্রাকাব যেন নীবৰ শৃক্তেব কোলে তুলেছে শবীর ,

নিবাবিছে কিরণের প্রবেশ সেথার, বোন প্রহরীর বেশে, বিরাজিছে ঘোর দেশে কালীর বরণ অন্ধ কালেব মলায়।

ছই দিকে ছই বার—প্রশন্ত ভীষণ ক্ষ-মৃষ্ঠি ভয়ত্বর শত শমনের চর রোধি প্রবেশের বার কবিছে শ্রমণ।

পশিছে তাহাতে যত আল্লাময় প্রাণী ক্ষবর্গ লোহশল। তপ্ততৈলে যেন জ্ঞালা অকে বিধি তাহাদের কহে ঘোর বাণী।

জ্যোতিশ্বন্ধী চলে আগে—পিছে পিছে নব, মাসিয়া ঘারের কাছে প্রবেশের পথ বাচে কৌতুকে নিকটে ছুটে যত যমচর।

অপূর্ব মধুর বাণী অমরী-বদনে বিশেহয় শীতল, কুডান্ত-কিল্লরদশ চমকিত-চিত্তে চাহে দেবীর নয়নে।

ষ্ঠ শোভাকর আভা চারু নেত্রতলে ীর স্লিগ্ধ মনোহর নেহারি শমনচর পথ ছাড়ি তুই ধারে দাঁড়ায়ে সকলে।

ভিতরে প্রবেশি নর নিরবেও আবাকাশে
নিবিড জ্ঞানদল বিদ্দুমাতা নাহি জ্ঞা গর্জিরা গর্জিরা থালি উড়েড উড়েড ভাসে।

নিদাবে দ্বৌত্তের ভাবেশ ফাটিলে বেমন বনীতে ক্লেক্রেফর সেইরূপ নেজমর চারিদিক্ ক্লেবেশ---নীরস-দর্শন। হেন ক্ল ক্লেত্তলে পশিলা ত্লনে , ক্লু ক্লু ভ্রুলারি হেরিলা শাখা প্রসায়ি শিপাসাতে ফাটি বেন চাহিছে গগনে।

হেরিল। কভই লতা-কুপ সে কাস্তারে শুক্ত শাঝা নীর্থ মাথা বিনা বাতে ঝরে পাতা অপাপনা হইতে নিত্য শোণিত উগারে।

দ্র হ'তে লক্ষ্য করি তক দে সকল বিক্ষারিত ছিলা'পর বদায়ে স্থতীক্ষ অব, ভ্রমে কত ভমচারী দলি দলি ক্ষেত্রতলে;

আংশ- দেহ নরাকৃতি — কিটব উপরে, পদপুত্ত আংখ-প্রায় বড়ের গতিতে ধায় লতা গুলা কুপ তক বিদ্ধ করে শরে।

ক্ষত অঙ্গ সে সকল বিবাদে তথন মহুখ্য-ক্রন্সন-বরে ফুটিলানিনাদ কবে, শর সকে শুক্ত তৃক্ ঝরে যতক্ষণ।

স্থানে স্থানে থমন্ত প্রান্তর খুঁড়িয়া বেড়ায় বিকট আঁথি আধারে বদন ঢাকি অঙ্গার সদৃশ করে খনিতা ধরিয়া।

অমরীর দিকে নর ব্যগ্রচিতে চাম, ধীর সম্বোধনে তাঁয় কহে—"দেবী, কি হেখায় কারা এরা হেন বেশে কাঁদে এ প্রথায় ?

কেন বা কালের চর ওরণে ধনন করিছে এ সব কেত্র ?" অন্ধ্রী প্রশাস্ত-নেত্র চাহি মানবের দিকে কহিলা তথন—

"গুপ্ত কামে যাহাদের আবাকাজ্জা-প্রবাহ বহে হৃদরের তটে সংঘটন নাহি ঘটে এ সব তাদেরি আ্যান্যা-- সহে পাপ-দাহ।

মৃত্যুচর হের বত করিছে ল্রমণ, ফুটাতে অঙ্কুর বীজে বে বাহার নিজে নিজে পুঁড়িছে ক্ষেত্রের তন্—করহ অংবণ—

প্রোধিত এ ক্ষেত্রতলে প্রাণি-স্থান্থা কত পোড়ে নিত্য তাপানলে, অলৌকিক বিধি-এলে স্কর্তিত হয় পরে লতা গুলা মত।

হেমচন্দ্রের গ্রন্থাবদী

কুত্র কটি পণতলে জমিলে বেমন সর্বাচ্ছে লোমাঞ্ছর মানবের দেহমর সহসা ডেমতি হয়, ওনে সে বচন;

শ্বীরী সে স্থান ছাজি অন্তরে দাঁড়ার। অমরী মধুরতর বাকো কতে—"ভ্রান্ত নর, সর্বাটাই এইরাপ, সরিবে কোথার?"

"ৰাই হোক অস্ত স্থানে চল, দেবি, চল" মানব কহিলা তায়, জ্বতগদে তৃজনায় দে ক্ষেত্ৰ ছাঙিয়া পশে অস্ত ক্ষেত্ৰল।

"এই দিকে হে শরীরি," অমরী কহিলা, "দেও চাহি ক্ষণকাল, তুংব ভোগে কি বিশাল পদ্বিল-পরাণ যত অসতী মহিলা।"

অমহীর বাক্যে নর হেরে অনিমিবে; নেখিল প্রবহীন কত শুদ্ধ তরু ক্ষীণ শাখা তুলি শৃক্ততেল উঠেছে চৌদিকে।

কহিল—"কোথায় দেবি, না দেখি ত কই কোন এক আত্মা-চিক্ত শুক্ত জীৰ্ণ তক ভিন্ন অক্স কিছু কোন স্থানে বিদিত না হই।"

"নিম্বিয়া দেখ নয়—হও অগ্রসয়, ভৰে এর তথ্য পাবে" বলিয়া স্বন্ধিওভাবে রক্ত-সন্নিধানে দেবী স্বাইলা সম্বর।

দেখিলা শ্বীরী সেথা—শুশানে বেষন চিতাগ্যে সমাজ্য চিতাতাপে সংগ্রেথ শাক্ষণী থক্ষ্য তাল—তেষতি দর্শন।

গুরুত্ব শাধাদেশে বলেছে করালবেশে পৃঞ্জুল শাধাদেশে বলেছে করালবেশে পক্ষীর পুরীবে বুক্ত কর্মব্য-শরীর।

নধে নধে বিদ্ধি শাপা বসি গুঙাৰণ ্টিবাইছে বীরে বীষে চঞ্ দিয়া চিদ্নে চিদ্নে ি ক্ষম শাপা শুবিশুছে যবি গণ্ডল।

পড়িছে অধ্য বেগে শত শত ধারা—
ব্রিহের ধারা হেন কাঁপি কাঁপি রুক্ত খেন
ক্রিমিণ সংকাঁপ করে সামধ্যার-হারা।

ডখন সে সব ভক্ত করিরা জেন্দ্রন্ত্র ফাটিছে হিথও হরে হেরিরা পুচ্ছেতে ⊲্ বিকল-লের ভাব করিছে ধারণ।

ভাপিতের ধ্যের খর বদনে স্বার আত্মাগণ একে একে জীবনর বৃক্ষ কেন্দ্র বাহিরি প্রকাশে তঃখ চিতে যেবা যাই

আমরী কহিলা— "নর, গুএ হের যত এ হেন কদর্য্য-বেশে বসি উচ্চ শাধানে । পক্ষী নহে ও সকল-—পক্ষিরপগত।

শ্বনের ভীষ্টর রাক্ষ্য উহার। ।" অক্ত হয়ে চাহে নর গুলুরপী নিং । স্থনে চীৎকার ছাড়ি উন্মন্ত ভাহার!,

পাথার ঝাপটে টানি গুভি ক্ষণে ফর্ম চঞ্তে প্রহার করি ক্রধার ২০০০ বিদীপ বৃক্তের মাঝে ফেলে কাত্যাগা:

অমনি বিওও তক্ দাঁভাৱে আরার উঠিরা প্রের মত জীববুনা ব নিদারণ নিপীড়ন সতে পুনর্কার ;

সে স্থার মাঝে নর হেরে ছই জন, আংশ্রুম গণ্ডতল জীব-লীব কে: জীব অরে বলিতেছে জাতর ব্যন-

'হে বিধাত: কেন আর—মরণ কোণ্ড এ পরাণে নাহি কাজ ধরাও গুরু বি দেও মরিবারে পুন আহো প্রাণ বার চ

मानव विकारम-"(मिव, दिन दिन भर्गे) करलाति चक्ते वांत्रा नाजीरवरम दे हैं। चांचा दहाज मरन इत चाहिन जल्ली

ছিল ববে ধরাতলে ; প্রাচীনা শে^{জন} পরিচিত কিবা নাহে ? কে উটি উং াবা হুরপা নবীনা বালা—মণিনা এব*া*

"বিজ্ঞাস নিক্টে গিয়া"—বলিয়া জা ভাবের নিকটে বার ধীরগতি া কু প্রস্তুরীবিয়া চলিক নর শ্রীরা মাচ কবি । নিক্টে আসিছে হেরি শকুনির পাল পক সাপটিয়াসবে ভয়ত্বর তীকুরবে তুলিল এমনি ঝড় প্রচণ্ড করাল,

অমনী মানব দোঁহে বেন অককাং পক্ষ-ঝাপটের জোবে পড়ে বৃণ্বায় বোরে; সকট বৃনিয়া দেবী উৰ্দ্ধে তুলি হাত

বলিলা—"হে ধর্মচর, লাস্ত দাও রোজে. আমরা পাপাত্মা নহি বিধাতার বিধি বহি পশেছি এ পাপদেশে—নহে অস্ত দোবে।"

ঝন্ধার পাথার নাদ নীরব তথনি ; গিরা তুই আংআ-পাশে, মানব কম্পিত তাসে সুধাইল তুই জনে, শ্রবণে দে ধ্বনি,

উচ্ছ্বাসি গভীর খাস প্রাচীনা যে জন কহিলা—"হে দেহধর, শাপযুক্ত আমি, নর, দেব-গুরু-ভার্য্যা আমি—পাপেতে এমন;

কামীর নরক-মাথে হের হে তারায়।" বলিয়া যুগল করে বদন ঢাকিলা পরে ক-কারাগারে ছোটে শিহরি লজ্জায়।

জীবদর জন্ত প্রাণী বলিলা বিষাদে—

"আমি নর, পাপীরসী জন্তচি প্রণরে পশি

এ ভোগ ভূগি হে হেথা চির-জনাহলাদে,

আমি বিভা ভারতের !" বলিরা লুটার শ্বাহত মৃগী প্রায়। নরদেহী বেদনার অমরী দহিত ফিরে অভ দিকে বায়।

না চলিতে বছপথ শিহরে মানব, শেথিল সমূথে তার গলে ভূজকের হার, ছটিছে জীবাঝা এক নিনাদি ভৈরব।

ক্ষণিতল ফুঁড়ি ফুঁড়ি দংশিছে ফণিনী ^{ইদিত}লে ধারা ঝরে সুপুঁ ধরি ভানি করে টানিতে টানিতে ফণী ছুটেছে রমণী।

"কে তুমি"—জিজানে নর ভরে চমকিত, উন্নাদিনী প্রায় হেন প্রজানে ছুটিল কেন ? পশস্তাশ বুধানে গ্রেরিতু ?" অভিত নরের বাদক্য—দীড়ারে সমূথে সে জীবাত্মা জড়বৎ নিবারিতে ংরি পণ ক্হিতে লাগিল বাণী নিদাকণ তুথে—

"ফ্থারো না হে শরীরি, সে কথা জ্ঞামার, মিশর-রাজ্ঞীরে হার কে না জানে ব্যুধায় কুলটার ঘোর তাপ এখন হেথায়!

চল নিরখিবে কিবা খাতনা তুঃসহ ভূগি প্রাণে অহুফণ কুলটার কি শাসন দেখিবে চল হে চক্ষে তুঃখ বিষবহ।"

"কে ইনি"—বলিয়া ফান্ত হইল তথনি;
চাহি অসমীর মূথে দাকুণ মনের চুথে
নতশির অধোমুথে দাড়ার রমণী।

ধীর শাস্ত স্থশীতল দেবীর বচন ঝরিল পীযুষ তুল্য সে পীযূষ কি অমূল্য পৃষ্কিল প্রাণ ধার জানে সেই জান।

শ্বাও আগে; হে জীবাত্মা, দেখাও মানবে," অমনী বলিলা তায়, "ব্যভিচাব-পিপাদান কিরপে নিবারে বম—দেখাও সে সবে।"

নীরবে চলিলা এবে ত্রিবিধ পরাণী — দেব-আ্থা দেহী নর পাপিনী নরকচর — আ্থাগে চলে সকলের মিশরের রাণী।

দেখে নর ভয়ে কাঁপি-—উচ্চ শালাকার শত শত প্রাণি-প্রাণ অধংশিরে লয়মান পদাসুঠ শলাবিদ্ধ তত্তে প্রথায়!

সে সৰ আবার কাছে করাল-মূৰতি নিষ্ঠুর কালের চয় ছড়ে ছড়ে দেহত্তর ছি'ড়িছে হয়ার ছ'ি প্রকাশি শকতি।

ভীষণ খাপদক্ল অভি রুশোদর, কুধাতে আত্র বেন ব্যালান বিভারি ংংন গ্রাসে গ্রাস খণ্ড করি টানে নিরন্তর ় সে পৰ আমারার দেই। হেবি চাহে নর আমরীর মুখ-পানে, দরা-বিচলিত আহাণে অমরী অবিত নরে কৈলা ভানান্তর!

না যাইতে বছদ্রে সে দেশ হইতে জনমীর ঐতি ভ'বে কঠোর কর্শন ফরে নিদারুণ শোকবাণী বছিল বাযুতে।

কঠোর শুনিতে যথা লোকের কীর্ত্তন শব-দেহ স্কদ্ধে ধবি হরি হরি শস্ত্ব করি জ্ঞাতিবর্গ গলাতীবে আগত বগন।

সেইরূপ শোকময় কঠোর নিনাদ, সহসা দক্ষিণ হ'তে প্রবেশিল শুভিপথে চমকে মানব-চিত্ত ভবে সে বিবাদ।

চমকি হেরিল নর—নিবধে সন্মুধে ধেন অপাকার বালি অবেতে মাথিয়া কালি চলেছে উর্মি-আবাতে সাগরের বুকে।

নিকটে আদিলে পবে তথন নেহারে আয়োময় প্রাণী যত চলেছে বালির মত শলে দলে কৃষ্ণবৰ্ণ বাল্সিজ্-ধারে।

উড়িল দেহীর প্রাণ দেখিল যথন সে সব আন্তার হাতে ক্রিয়েনিক নথাবাতে রংগিও, শিব-নত –বীড়ংস দেশী ৮০০

দলে দলে চুলে-মতর্ব-শরীরে, কুপুন মেন বাতংখ্যা-জরে : করন্তিত মৃত ধানে চৌদিকে ধ্যিনীপুলি করিছে থতান :

আচেতন প্রায় জীবী নয়ন মুদ্দি;

অকলাৎ ভীমনাদ— স্রোতে বেন ভালে বাধ

ছটারে বজাব জল—ভেমতি তুনিল।

আতকে দেখিল দেহী—থর্মে দিক ভাল— ঘোরতর রুফবর্ণ তীক্ষদয়, উর্দ্ধরণ ব্যন্ত বিতাড়িত ছোটে ফেরপাল।

চকিতে জীবাআবৃন্ধ নির্থি পশ্চাতে কা বি-বেংগ উর্বাসে, নঃন না মেলে আসে বি উয়েস মেন ধূসিবৃন্ধ ঝটিক্লা-জাবাতে।

শশু দিকে প্রাচীরের পৃষ্ঠবার বেথা বেগে প্রবেশিয়া তার নির্গত হইতে ২া৹ হেরে ভয়কর মৃত্তি বারদেশে দেথা—

মহা অবলগর প্রায় দেহের গঠন, স্কন্দেশে তুই পাধা শহলে শ্রীর ঢাং। শত কুওলেতে পুস্ক—রাক্ষন-বদন।

ধাৰিত জীবাত্মাগণ দেই দারে আসে সেই ভীম অস্তাগর ব্যাদানি মূধ-গংধ্য পক্ষের ঝাপটে সবে মৃষ্ট্রেকেগ্রাদে,

তীকু দক্তে পিষি পিষি নিগেপে জঠবে। আবাৰ বমন করে আবার গরাসে গাং কথন(ও) পেষণ করে প্ৰিয়া উদৰে।

এ হেন পীড়ন সনি গ্রহরেক কাল নেই সব পাপি-প্রাণ হতাশেতে হত্ত্যান প্রাচীর ভিতরে ছুটে ভেটে জেরুগাল।

তথন সে মহেগরগ রাজদ-বদন, উৎকট চীৎকার করি বলে—"রে সভীব জার লব্পট কুট্নীগাল জবল জীবন—

এ ভোগ ভোগেনির যোগ্য ; যে বিষ ধরায় ছড়াইলি দেহ ধনি সেই বিষ প্রাণে '' ভবিল্ল-সঠরে ভোগ চিল্ল-যাতনায় !

ু হেরি দেহধারী নর, তানিয়া গর্জন, অনুষয়ীর দিকে দেগি কহিল—"জননি, এ^{বি} - কোথার আনারে দেবি আনিলে এগন ?

এথানে কি পুণাময়ী ছহিতা আমার ? এ কি ভাব যোগ্য বাস ? সে চার-কু^{ল চার} যোটে কি এথানে কভু ? লাছে চল বা

"হে দেহি ভোষারি চিন্ত করিতে উজ্জ্ব . প্রাতে ভোষারি আশা এ ত্বংশ-নিবানে কা^{ন্ত} দেখাব কলারে তব্, সঙ্গে কিরে চল**া**

তনয় দেগিতে হেন ভূবনে প্রমণ করিতে হবে না এবে চল ধরাতে ্ন বিগত-ক্নুহ-ভাগ বিগত-স্ফার্কী আয়োরাম নদিশীর পাবে দর্শন।" এত ধলি নিজাগত ক্তিয়া মানবে িল্ল অমরী করা প্রতিক্র জ্যোত্যা মত মাকতের শতি উতরিল ভবে।

বালি নিবে ধর তিলে জাণারে চেতন,
নক্তটা প্রতিভায় দিবাচকু দিব' ভার
কেই-বিনত্ত-মূপে দীড়ারে দেনী সমূপে
কলি—"কের গো তব লহিডা এ ন ।"
বিশ্বরে আনন্দরেশা নিম্মল প্রাণ্ড ক্রিয়
ধরতিলে জাদি নেক স্বেছে উন্ধান

মহতে মুক্টজ্ঞটী জ্বিছে মণ্ডের, চবাগদ্ধ জ্বতে গ্রন্থা বিশ্বরে - এন নীলিমা-সিং, কুলাতে কিবলী কর রেথাগ্রুট্ন হেন্দ কর উল্লেখ্য স্তৃপ্ৰ-নয়নে হেলি মানব-বছন শ্চিলা প্ৰশাসাশি- ভাত, এবে **অবিনাশী** আল্লাময় এ শ্বীব মৃচ্চতে স্থান।

শে হপন ৩ ছগতে নবাছি পুছিবে গ্লিনেল ৮৬ হরে তাপ ন**ল হলে লয়ে** প্রকাশি বহাত কাব **পু**লায়ে শনন-**যার** আমাধির মনন মধে ফুর্গতে পশিবে !

ধে ড:ত, দোনতে পুন্ত থয় যদি মন একলে জীবাত্তালয় সনস্ভ ভার**কাময়** পুন্নীয়ে ত্তিভাবে কবিড গ্ৰহণ।

এত ালি শোভাষ্যী প্রকাশে নিশিয়া, কণ্কাল সম্থানি হৈলা ছাড়ি সরস্থান, বিসমে বিজন দা নিজন প্রশীপায় ভালিতে গাড়িল এদন প্রমে ফাডিয়া।



চিত্ত-বিকাশ

হের ঐ তরুটির কি দশা এখন। হের ঐ তকটির কি দশা এখন : বিরাঞ্জিত বনমাঝে আগে সে কেমন। ছিল স্থাবদাল কাও স্চাক গঠন, উন্নত শিথরে অত্র করিত ধারণ, শাধা শাধী চারি পারে উঠিত কেমন. বিটপে আতপ-তাপ হইত ধারণ। পড়িত ভাহার তেলে ছায়া সুশীতল. ফুটিত কেমন ফুল কিবা পরিমল। কতই পতিকা উঠে জড়াইত গায়. কতই পথিক প্ৰান্ত আদিত তলায়। কটিকা-ঝাপটে এবে হারারে স্ববল হেলিয়া পড়েছে আজি পরশে ভূতল। শুকায়েছে শুকা'তেছে বিটপ-পত্তিকা, থদিয়া পড়িছে ভূমে আপ্রিত-লতিকা. ত্তক ফল পুষ্প পড়ি ভূমিতে লুটায়, আশে পালে বিহলেরা উভিন্না বেডার। নিরাপ্রা ভগনীডে নিকটে না যায়, পথিক সভফ-নেত্রে ভক্ল-পানে চায়। ছায়া বিনা কেহ তথা বসিতে না পায়. নিকটে আসিয়া কেহ কণ না দাঁডায়. পূৰ্বকথা ব'লে ব'লে পথে চ'লে যায়। দেখিয়া তক্ত রে তোরে প্রাণ কাঁদে মম. আছিল আমার(ও) আগে সবই তোর সম, শাথা পাথী ফল পূল্প স্থবেশ স্থাণ, করেছি কতই জনে সুঞ্যো প্রদান। হেলিয়া আমার গায় লভিয়া আখ্র কতই ৰতিকা ৰতা ছিল সে সময়, নিজ পর ভাবি নাই অনক্র উপার. বে এসেছে আশা ক'রে দিরাছি ভাহার, এখন আপনি হেলে পড়েছি ধরার. খগণ আঞ্জিত জন কাঁদিয়া বেড়ায়.

কে দেখে আমারে আজ ফিরায়ে নয়ন, হের ঐ তঙ্গটির কি দশা এখন।

বিভূ কি দশা হবে আমার। বিভ কি দশা হবে আমাব,

একটি কুঠারাঘাত শিরে হানি অক্সাং ঘুচাইলে ভবের স্বপন-সৰ আশা চূৰ্ণ ক'ৱে রাখিলে অবনীপরে চিরদিন করিতে ক্রন্দন॥ আমার সহল মাত. ছिল হন্ত, পদ, নেন, অক ধন ছিল না এ ভবে. সে নেত করে হরণ হরিলে স্বর্বন্ধ ধন कामाहेबा फिल्म कवार्गद्व । চৌদিকে নিরাশা-চেউ. রাখিতে নাহিক কে সদা ভয়ে পরাণ শিহরে. ষ্থনি আ'গের কথা. মনে পড়ে পাই ব্যগ मिवानिमि हत्क अन वादत । কোথা পুত্ৰ ককা দারা, সকলই হয়েছি হারা গৃহ এবে হয়েছে শ্মশান ; হৃদয়ে দাকণ ব্যথা ভাবিতে সে সব কথা. নিরাশাই হেরি মৃষ্টিমান। मब घठां है एवं विधि. रु'रत निरंत्र 5क्-नि^१ मानत्वत्र अथम कत्रिलः পর-প্রতিপাল্য দীন বল বিভ সব হীন, ক'রে ভবে বাধিয়ে রাখিলে। मकनहे कतित रह জীবনে বাসনা হত, অন্ধকারে তুবারে অবনী; ভবের শোভা-ভা না পাব দেখিতে আর, চির-অন্তমিত দিনমণি। অরণ্য ভূমি আ ধরা শৃত্ত ভূগ জগ . . ना शांकिरव किहुब(है) विठांब,

भा तरंव नंबरन पृष्ठि ত্তমোমর সব স্বষ্ট, म्मिक शांत अक्कांत-ৰিভু! কি দশা হবে আমার॥ প্রতিদিন অংশুমালী, সহস্র কিরণ ঢালি. পুলকিত করিবে সকলে: আমার রজনী শেষ, হবে নাকি। হে ভবেশ। कानिव ना निवा कारत वरण ? আর না সুধার দিয়ু, আকাশে দেখিব ইন্দু. প্রভাতে শিশির-বিন্দু জলে, শিশির বসস্তকাল. चारम बारव हित्रकान. আমি না দেখিব কোন কালে। বিহল পতল নর. জগতের সুথকর, তাও আর হবে না দর্শন. ভাকিয়া সংসার-ক্ষেত্রে. পাব না দেখিতে নেত্রে দেবতল্য মানব-বদন। পৃথিবীর সার স্থ, নিজ কেলা-পুত্ৰ মুখ. ভাও আর দেখিতে পাব না. থাকিবে স্মরণ মাত্র, অপুর্বাভবের চিত্র, স্থাবৎ মনের কপ্রনা; তবে কি সাধনা হবে কি নিয়ে থাকিব তবে. ভবলীলা ঘুচেছে আমার, হয় না কেন এখন, বুথা এবে এ জীবন. বুঝা রাখা ধরণীর ভার। ধন নাই বন্ধ নাই. কোথায় আত্রর পাই, তুমিই হে আশ্রয়ের সার, সকলি হরিয়ানিলে. জীবনের **শেষকালে**, প্রাণ নিয়া ছ:থে কর পার— विष्टु ! कि मभा इत्य व्यामात्र !

कि इरव काँ मिया ?

কি হবে কাঁদিয়া লগৎ ভরিষা
সবারি এ দশা কিছু চির নর,
চিরদিন কাবো নাহি রর হির,
চিরকাল কারো সমান না বার।
পবিবর্ত্তমন্ত সদা এ লগৎ।
নাহি ভেদাভেদ ক্ষুত্র কি মহৎ;
ছাস বৃদ্ধি নাশ বার বে নিরত,
পল অফুপল পৃথিবীমন।

আমি কিবা ছার নগণ্য পামর, শত শত কত মহাভাগ্যধ্র, বিরাট, সম্রাট দেবতুল্য নর,

উন্নতি পতন সৰার হয়।
কোথা আজি সেই অংবাধ্যার ধান ?
কোথা পূর্বন্ধ দীতাপতি বান ?
কোথা আজি দেই পাওবের দথা ?
কোথার মধুরা কোথার দারকা ?
কে পারে লভ্জিতে অদৃষ্ট-শৃঋ্নে ?
ঘটেছে আমার যা ছিল কপালে।
কে পারে রাধিতে বিধাতা কাঁদালে ?

বুধা তবে কেন কাঁদিয়া মরি ? এস ভগবান্, কর ধৈর্ঘ্য দান, কর শাস্তিমর অশাস্ত পরাণ। সৌভাগ্য অভাগ্য ভাবিয়া সমান,

নিজ কর্ম যেন সাধিতে পাবি ॥ স্থাচির বসস্ত, হাসে না ধরায়, না চির-হেমস্ত ধরণী কাপায়, উত্তপ্ত নিদাঘ প্রাবৃটে জুড়ায়, ক্ষনিত্য সকলি বিধির ইচ্ছায়, ছর্দ্দিনের দিন ষেই বলীয়ান্, সহিতে বিধির কঠোর বিধান! নমে না টলে না নহে ম্বিয়মাণ,

বে পারে তাঁহারি জীবন ধঞা। এ ভব-সাগর এব লক্ষ্য ক'রে রাধিতে আপনা আবের্ত্তর ঘোরে না হারায়ে রুল না ডুবে পাধারে,

নাহিরে নাহিরে উপার অন্ত ॥ আমা হ'তে আরো কত ভাগাধর, হারারে সামাল্য গৌর্য বীর্য্য আর, পড়িছে ভূতলে অদৃষ্টের ফলে,

বৈদ্ধৰে আবার বাধিছে হিরে। কি ছার আমি যে হয়ে ভাগ্যহীন, কাদি এত ভাবি দেখিয়া হর্দিন, কেন কাদি এত কেন বা কাদাই,

রাথ আমার নাথ ধৈরৰ দিয়ে॥ আপনারই দোবে আপনি হারাই, বিধাতারে কেন সে দোবে জড়াই, এ সাজনা কেন পরাশে না পাই।

निक कर्मकन चमृत्हे क्वरन !

সে গদ সপ্পদ সে আদির মান,
কত দিন হলো কোথার গেছে,
গরু সে মগর দেখে নৃত্য তোর,
সকল আমার প্রাণে আগিছে।
সকলইতি। গেছে সব ফুরারেছে,
আর ত ফিরিয়া না পাব তার,
তব্ত এখন্ত) যুতিগত সুথ
ভেবেত তালিত হদর জুড়ার।
আর বে মার নাটিয়া আমনি

থছোত।

কি শোভা ববৈছে তরু থছোত-মালার, হয়েছে আলোকময়, শাধাৰও সমুদ্র, কি চার স্থানর শোভা জুড়ার নয়ন! নীল আভাপুঞে ধরে শোভিভেছে তরুপরে. कक चार्यारकत विभू कृष्टिष्ट समन। সোনার তক্তে বেন, . হেরে মনে হর হেন, লক হীরাথও জলে, জড়িত কাঞ্চন! কথন বা মনে হয় তক্তি ধেনন, चारनाटक जूरिया चारह, नर्स-वन विकटिलह, भागाहत गोनकाष काक्षम-कित्र। অথবা যেন বা কেছ অসিত বসনে, চাঞ্জাক্কার্য্য ভূলে विन् विन् यर्ग-कृत्व, एकिया दाबिट्ड छक्र करि आंख्रांपन। किन পর্বদিন প্রাতে উদিলে তপম, কাছে গিয়া হের ভায়, কোথায় কাঞ্চন হার, দাক্ষময় ভক্ন সেই পূর্বের মতন। (काथा वा शेत्रक्रमाना मधन-त्रश्रम, ভক্তলে ভালে গাছে, দেখিবে পড়িয়া আছে, কেবল জোনাকী পোকা গাঁডি অগণন। हांद्र दत्र कछहे एवन विकिस नर्मन, नर्न-मानन-रुद्र, मामत्वत्र ख्वकत्र, করেছেন ভগবান্ ভূতলে ফ্লন। निया विकादशी-त्यात्त्र कक्टरे धमन, #তি দৃষ্টি মনোলোভা, সৃষ্টি করেছেন শোভা, ्रे प्रमुखीन गच्दीम प्रश्नन (द्वनन ।

আহা বিধাতার এই মারার ইথন,
নহে বঞ্চনার তরে, তুরুই জ্ডাতে না
মারাজালে জড়ালেন নিধিল ভ্বন,
না ব্যে ক্তছ নর বিধির মনন।
নিন্দা করে এ কৌশলে, তাঁহাতের নিষ্ঠ্র ব

আলোক।

আ'লোক স্জন হুইল যথন অগতের প্রাণী উল্লাদিত মন, व्यवनी शशन अवधि-कौरन , করে বিচরণ পুলকিত মনে, মহাসুধে হেরে প্রক্রতির ম্থ, হেরে পরস্পবে হইয়া উৎস্ক । हमिकिन हिटन करत पदम्म. লাবণ্য-মণ্ডিত জগৎ বদন, কিরণ ভূষিত ভূতল আকাশ, অতুল স্বমা চন্দ্রণ প্রকাশ। জগতেৰ জীৰ আনন্দিত-মন, প্রাণি-কর্গ-রবে পূরে ক্রিভ্বন, बारनारक উब्बन लोक नम्मस्य, জয় জয় শব্দ ক্রিভূবন্ময়। क्र १६ व जाला क्रम, খুচিল আধার জডতা ভয়, বিধাতার এই অতুল ভ্ৰন, হ্ইল তখন আনন্দ কানন, ভরুলতা তৃণ মুৎ ধাতু জ্বল, নিজ নিজ রঙ্গে সাজিল সকল ; পতল বিহল কুরল কুঞ্জর, কিরণ মাধিয়া অভি মনোহর, त्रक्षिण गंगम विविध वंत्रत्। माना वन-कृत कृष्टिन कानता। चारनारक क्षकांन इहेन ७५न, ञ्चल प्रशीव मानव-वतन, ছেপ্নি সে বদন পশু-পক্ষী ৰত. নিজ নিজ শিশ্ব ক্রিল জানত। कि कान्तर्ग विवि रुक्त-जेनानी, अब बार्क किन विधिन नवनि

চিত্ত-বিকাশ

चारलाक भारेश मानवम्थली. দেখিতে গাগিল হয়ে কভঃলী, নব-স্প্রশোভা-স্জন-কৌশল বিধি নিয়মিত শখল সকল, দিবস রজনী চতু সূর্যা গতি. **১৮ ঝতুধারা নিয়ম-প**র্ভি. চেরি ব^{াই} লীলা স্তত্তিত হইয়া, বোমাঞ্চিত কায়া বিশ্বয় মানিয়া। আলোক-মাহাজ্য কেনা নাহি ভানে (य (सर्थ एक कम् निना चनमारन, श्री ज:-श्र शिक्षा किरदी मका काटन পৰ্ণ যোলকলা শ্ৰাম মণ্ডতে (व एमरश्रह कड मदम-तभरम्. 5कि कुलमल मा नव तुरह. शक्त के बना भवशात दकारन. श्रीम-मध्य स्टब्स बाटन तीटन टानटन. নান। বৰ্বকে প্ৰচিত্ৰ কাহ। বিহল ধকল কিবলে যোগায় : (भर-राष्ट्र कथन(९) व्यन्ध्या अभरम. वारमाय-मार्शशा (गण (म स्रात्म) আংশোক-মহায়া এানিয়াড়ে সেই. b विज्ञास दिन शिवोद्ध (गर्ड, লতা, পাতা, ভক্ত নিক্তিব গায়, चारिकारिकत ७८९ प्रजः वास्त्र हुई, বিধি-চন্ত্ৰলিপি কোথা তাৰ কাছে. গীতা-উপদেশ জগতে কি আছে. अभूमा भनार्थ (इन किंडू जात.

ফুল।

আলোকের সহ তুলনা যাহার গু

দেশ কি ফুলব ফুলটি বাগানে,
ফুটিরা উত্থান আবলা ক'রে আছে
নাল রলে মরি কি শোভা উহাব,
অক্লণের প্রাডা আলে মাবিয়াছে!
এ কৌন্দর্ব্য আর ক'দিন বাকিবে,
জুড়াবে এরণে নয়ন-মন দ
কাল না কুরাতে পরত হেলিবে
ব্রেট্টাট্ট উহার, কুরাবে ধৌবন।

হবে মন্তব্দির সালিয়া পরিকে এ শোভা তথন ঘা^{লি}তে না আর. ক্রমে পর্ত্তর শুকারে ক্রান্ত্র ভূচনে প্**ভি**ৰে ব**ৈর ক**ণ্#া মাল্যের(০) দেহ সোল গি এসনি, বিন কয় যাত্ৰ ভঙ্গ ভঙ্গী ट्योबटन : काल क्लांब दक्षन. শে শেতি সৌন্দর্যা করার অমনি। ৰেণিকে তথ্য এথ প্ৰত কাল দে বুবা ধুবকা চেনা নাহি **যা**য়. প্ৰাদ্দক্য যথন প্ৰশে ভাগ্দেৰ. (मथिराज कथन कमि राधा भाषा অগতেও অজে নিয়ত নিয়খি. পৰ্ন ৰোভা আন্ত একাৰিয়া আছে. বাদ আৰু ভাৱ দি মান নাই, তে ও চবে যেন জোধার ভিন্নতে। কেল ভগুলাম হেল নিষ্ট্রতা, সগতের প্রতি এই কি যাম গ না গাকিতে দাখা কিছকাল ডেগে. যা দেখে পৰালে এতই আবিমিগ বিধি কি চে ডুমি মনে ভাব লাছ নিজ নিপুণ্ডা দেখাইতে ভবে গ किया स्रोत-प्रा क्य हिश्मा छन. না ভুঞ্জিতে দুও তথ বিভবে। এত কি হে এথ দিয়াছ জগতে. এ সংখ্র আগর প্রয়োজন নাই. নোহাই তোমার তুমি জান ভাল এ ভব তোমার কি মুখেব ঠাই।

गति९-- मगरा।

তর্ তব্ ক'রে চলিছে সলিল
শিলা ক্রম্ন করিরা শিপিল ,
शैरের গীরে মাটী কেটে ছড়ে ছড়ে
ক্লে ক্লে জলে ধন ভেলে পড়ে।
লভা-পাতা বেত স্মোতোবেলে কাঁপে ;
তক-লভা ঝোনে তীরে মাঁপি মাঁকে।
বিবৃ বিবৃ ক'বে মাটী ম'বে পড়ে;
তক লভা লোভে সমূরে উপাদেই।

সর সর বালি জলতলে সরে, বাধা পেরে শেবে দ্বীপক্ষপ ধরে। আম, জাম, শাল, জারুল, ভিস্তিডী, তীরে ছারা করি চলিছে ছধারি। ফুল তরদল তুকুলে সুন্দর, ফুল-গদ্ধে বায় করে ভর ভর। জলচর পাখীতীর চাডি ছটে. নীন মথে করি পাতা ঝাডি উঠে। চলে প্রোত-ধারা ভাঙ্গে গড়ে কড়. আপনার বলে খুলে লয় পথ , বাঁধা বাধা বাঁক কিছ নাহি মানে। দিবা-নিশি চলে আপনাৰ মনে। উজীর আমীর কান্সাল না গণে, চলে দিবানিশি আপনার মনে। তর তর ক'রে চলেছে সময়. পল অফুপল কার(ও) লক্ষ্য নয়. গভিচিফ থালি ধরা-অঙ্গে লেখা. কালের প্রবাহ তাই যার দেখা. কত ভাকে গড়ে প্রোতোধারা তার. ভূমগুলময় সংখ্যা করা ভার। নব কিসলয় সম শিশুগণ, প্রকুর কুমুম সম যুবা জন. কাল নদী কলে ভক্লভা মভ বাড়ে দিনে দিনে শোভা ধরি কত। তঙ্গণ বৌৰন পূৰ্ব হ'লে পৰে. সরল স্রঠাম প্রেটি কান্তি ধরে। বাৰ্দ্ধক্য অৱায় শুকায়ে ধথন. কালগর্ভে পড়ে হয়ে অদর্শন: অবিচ্ছেদ-গতি বহে কাল-স্রোভ, ধরা-অক্টেক্ত করি ওত-প্রোত। রেণু রেণু করি পর্বতের চড়া। কালে ভগ হয়ে হয়ে বার গুঁডা। ় বালুকার স্ত,প বেড়ে বেড়ে কালে, পৰ্বত আকারে ঠেকে শৃন্তভালে। আৰু মকড়মি কাল জলে ঢাকা. বিপুল ভরত চলে আঁকা-বাঁকা। আৰু রাজ্যপাট অট্টালিকাময়, কাল মহাবন খাপদ-আভার। কাল-ত্রোত ধারে নর-ক্রোঞ্চ কত. নীরে শকা করি ভ্রমে অধিরত :

অবদর বুঝে প্রোতে মগ্র হয়,
ডক্ষ্য মূপে করি বুক্ষে উড়ে বায়,
পক্ষ ঝাঁপটিয়া পূর্কবেল ধরে,
উচ্চ ভালে বনি ভক্ষ্য ঝাঁপ করে।
চলে কাল-প্রোত নাহি দ্যা মায়া,
চলে মূপে নিয়া লিগু-বুজ-ক্ষেয়।
রাজা হংবী ধনী প্রভেদ না গলে,
চলে অধিবত আপনার মনে।
তর তর্করি কাল-প্রোত বায়,
দরিৎ সময় হই ত্লা প্রায়।

কল্পনা।

কি দেখিত আহা আহা. আর কি দেখিব ভাহা. অপূর্ব স্নরী এক শুক্ত আলো করি; চাঁদের মণ্ডল হ'তে. উঠিছে আকাশ-পথে. অদীম মাধুরী অঙ্গে পড়িতেছে ঢলি। ভাবভরা মুধধানি, আহামরি কি চাহনি. কটাকে ভুলার নর অমব ঋষিরে, कि नगाउँ किवा नामा. মন-ভাষা পরকাশা, ওষ্ঠাধরে হাসি-রেখা নৃত্য করি ফিরে। বিচিতা বসৰ গায়. ইন্দ্ৰধন্ত শোভা পার. বিবিধ বরণে ফুটে কিরণে খেলায়, (यथान छम्ब वय. সুপদ্ধি মূলর বয়, অলের সৌরভে দিক আমোলে প্রামা कथन मिश्रत-मिरत्र. বসিয়া নিঝ'র তীরে. মিশারে বীণার খরে গানে মত হয়. কভু কোন কুঞ্গবনে, প্ৰবেশি প্ৰমন্ত মনে. নুত্য করে নিজ মনে অধীরা হইয়া, कथन छिनी-नीरत्र, ধৌত করি কলেবরে. ভরুকে মিশিরা ফিরে সজীত ধরিয়া।

কভূ হকজ্মি-গায়, ফুলোভান রচি তার, শুনিয়া পাখীর গান করয়ে ভ্রমণ; কভু কি ভাবিয়া মনে. একাকী প্রবেশি বনে. शांटन काँद्रिक निक मदन डिमान रामन । কথন মন্দিরে ধায়, পূজা করে দেবতায়, জগৎ-মাতানো গীত প্রেমানন্দে গায়, कथन नमन-रान. অপরী অমরী সনে. থেকা করি কত রক্ষে তাদের ভূকার। কথন অদৃত্য হয়ে, ছায়াপথে লুকাইয়ে, দেখার কতই ছলা কত রূপ ধরি. महाहे जानन मन, সর্বত্র করে গমন.

বেড়ায় ব্রহ্মাপ্তময় প্রাণি-তৃঃধ হবি।

স্বৰ্গ মন্ত্ৰ্য রসাত্ৰ. সব(ই) তার লীলাম্বল. কোথাও গমন তার নিবেধ না মানে. তিন লোকে আদে বায়, সর্বত্ত আদর পায়, সে মনোমোহিনী মৃর্তি সকলেই জানে। কভূ ছায়াপথ ছাড়ি, আর(ও) শৃক্তে দিয়া পাড়ি, দেখার অপুর্ব কত ত্রিলোক মোহিয়া; উঠিতে উঠিতে বালা, मिथाहेरा का हना, কত রূপে কত মতে নাচিয়া গাইয়া। নিথিল ব্ৰহ্মাণ্ড-প্ৰাণী, হেরিয়া আশ্চর্যা মানি, বিক্ষারিত-নেত্রে সবে বামা-পানে চার, धवा डेलिटिया स्करण. স্বৰ্গ আনে ধরাতলে. **অমরাবতীর শোভা ধরাতে দেখা**র। চলে বামা বায়্পথে, भूबाहिया मत्माब्रद्ध, यथनि द्यशास्य जाव द्यशास्य छम्ब ;

কথন(ও) পাডালপুরী,
আলোক-উজ্জল করি,
বোর অন্ধকার হরি করে সুর্যোদর।
মহতে উভান রচে,
মরে প্রাণী পুন: বাঁচে,
উত্তপ্ত কিরণ চাঁদে, ভাহ্ মিথকার,
চপলা চাশিরা রাঝে,
ত্রন্ধাও ভ্রমে পলকে,
অহুরপ কত হেন ভ্রনে দেখার।
কতই বিম্মরকর,
কার্য্য হেন হেরি ভার,
মুহত্ব বাজীকর বাছর সমান,
হেলার প্রায় নাধ,
সাগরে বাঁধিরা বাঁধ,

অগাধ জলধি-জলে ভাসায়ে পাষাণ।

পশু-পক্ষী কথা কয়, "বানরে সঙ্গীত গায়" গিরি-অকে পাথা দিয়া আকাশে উড়ায়; कथन नाविकमाल. ছলিবারে কুতুহলে, অভেল সাগরজলে কমল ফুটায়। কণ নিমিষের মাঝে. মহানগরীর সাজে. সাজায় কখন বন গছন কাননে, কখন বা মহারকে, ভালিয়াধরণী-অংক. (मोधमाना चाहानिका मथ्टम हत्रत्। কভুমহাখৃত পরে, দৌর জগতের ধারে. দেখায় নৃতন সূৰ্য্য নৃতন আকাশ, নবীন মেঘের মালা, नवीन विक्रणी-(थणा. নব-কলাধার শশি-কিরণ প্রকাশ। স্বর্গ শৃক্ত ধরাপর. কত হেন কল্পনার, অংলাক্সামান্ত কাণ্ড দেখিতে দেখিতে, বিচারি ত্রন্ধাণ্ডময়, হ্য-পুলকিত কায়, হেরি কত অন্তোদর হর ধরণীতে

হেন্ডক্টের প্রস্থাবলী

েলি কত দুর বাই. যেন ভার অস্ত নাই, শেষে না দেখিতে পাই কোথা বাই চ'লো; মুদ্র গগন-গার, **लिय मिलारेबा** वाब, हर्गनी हम्दर्भ त्यम दर्भाव मख्टन । 'मरमा होषिटक हांहै, তথনি দেখিতে পাই. সেই আমি সেই ধরা দেই তক লল. বাইনি নিমেষ গায় ছাড়িয়া এ ধরাত্র, তবৃত ভ্ৰিতু সৰ্গ মৰ্শ শেশত ল। এ হেন প্রভাব যার. श्रमाप मण्डित क्षेत्र कि इ:य व क्रमंदिक ना लावि , खिडिमिन क्तन, ज. পাঠ ৰণি প্ৰাৰ্থের निवासन भागम्बद्धि हिश्याना केति। क किंत्र प्रदेशक मार्च. মিটিল না অপরাধ ল হোলাড়াখিনীমাণে গৈৰ-প্ৰতিক্স, कमना (ठेलिस शोह, **ट्याम टेक**ना मानमात्र আশ্ৰান্তক মম বিনা ফ.. ফণ।

প্রস্থাপতি।

কে ভাবে মহিনাময় মহিনা তোমার,
সামান্ত পতক এই,
ইহার তুলনা নেই,
কৈ চিত্র বিচিত্র করা আগেতে ইহার।
কিলে ফলাইরে রং করেছে এমন।
কে লানে লগং-মাঝে,
কে পারে তুলির ভাকে,
ভূলিতে এমন চিত্র হলর চিকণ।
খলারে রক্তর টেট কি রেখাই টেনেছে,
ভিতরে ভিততে ভার,
নিম্বিল্লেম্বার্তার রেখেছ।
বিব্রি টোটা দিলে সাক্তারে রেখেছ।
বিভাগি বিশ্বিল্লাক্ত্রার

কার চকু বাজ্ডায়, · अ महीमधन-मात्य (क खाइह अमन ! কি এ শোভা আকৰ্ষণ বলিতে না পারি. ভলার শিশুরও মন. কত আশা আকিঞ্ন: कफरे कानत्म हाटि धति धति कति। ধরিতে না পারে যদি কি হতাশে চার, ধরিতে পারিলে স্থা: ভূলে দ্ব্যু প্রাণ, মুখেতে কি হাসি দ্টা পুলকিত কার। (मय-मिल्लकद-कीर्ति वाथात्म नवाहे. বল ত বিশাই শুনি. কি কাৰ্য্য তোমার গুণি, वित नक्ष जुना निष्ठ काथा रशत शहे সামান্ত পত্ৰ এই শোভা কারিওরি, ক্রমশ: উন্নত কর. আনো কড শোভাধর, কি আশ্চর্য্য বিধাতার নৈপুণ্য-চাতৃরী। এত বস্তু কর নর আপেন কৌশলে। বন্ধাণ্ডের পতি গাতে. প্রতি রেখা প্রতি ছত্তে, দেৰ শোভা দেখ বিখ কি কৌশলে চলে কিছুই না পাই ভেবে আদি অক সীমা দকলি আশ্চৰ্য্য তব, অন্ত ভোষার ভব, কে জানে মহিমামর তোমার মহিমা।

জ্মাভূমি !

এট ও আমার লগতে সার.

শুতি মুখকর জনম ঠাট বেখানে আজাদে নবীন আখাদে, শৈশব-দীবন মূখে কাটাই বে মুখের দিন আজ(ও) গড়ে মনে, ভূলিব না বাহা,কভু এ দীবনে, দেখানেই থাকি বেখার যাই। হেবেছি কত নগরী নগর, पूर वाहित्याह कह समागत, पणि अवितय-गांता अव्यव, दरन दोन चात्र स्वाचीत सारह ? वंगरसूबती समस्त्यत्व,

ওক্ত সোহতে হই অত্বন, সমস্পতি সিক্ট প্ৰবেছ(ই) কাছে।

এই লৈ বৰ্তন পৰিত্ৰ আলৱ (ব্যৱসা-পূজা কত সেবা হয়)

গীতবাদশালা সমূৰে ভার। সেই শাটচালা নীচেই অলন, ইষ্টক-মুজিকা প্রচাটের বেষ্টন,

ৰোধনের বিব পরশে বায়॥ হেরে যেন সব চারিছিক্ষয়, আনভন্না ক্রেও ভরিল ক্রম্যু

আবার যেন বা আসিল কিরে। শৈশৰ কৈশোর সুখের ঘৌরন, বাল্য-স্থা স্থী বৃদ্ধ গুরুতন, আবার বেমন চৌদিকে বিরে॥

क्षाचात्र देवनन दिवासदक विदेश क्षाचा कर्त्याशक्यन,

रण प्राचन कर्याणकथन, राज-পत्रिराम मृत्रीष्ठ राहन,

্শমানসৈর চক্ষে দেখিতে পাই। প্নঃ বেন ধেলি নদীগণে মেলি, বাঠে স্থাটে ছটি উরে অনুনেক্লি,

কালাকাল তার বিচার নাই ॥ কথন বেন বা ক্থা-ডুফাডুর, আতপ-উক্ত কিরি নিজপুর,

अनमी-निक्टि इंग्रिश बाहे !

रुपेन्(क) र्यन मात्र स्टाटन करत्र, स्टानक स्टान व्यापारतम् स्टान,

विकारण श्रीकत्रा वस्त गुकारे। केण विकास व्यव द्वार वारवात गुकारे। दर्शक सुद्धि करका विकास व

काल तरह शुरू तो चीननकरि।

and the country and

विषयात्व (येन क्रेप्रिय प्रति। वर्षे

51D₁

प्ता अन त्मई नदीव तीवश्र प्रनः त्म क्षत्रिम क्षत्रक गरम

ক্ষিন্ত ভূমনে প্র ইবির উভাবে উন্নতিভূমান্ত্র ধন-বশ-লোজে বিজয়-প্রভাবি

व्यवित्र द्यवेष क्षांत्व बाहात व्यावद्य वाक्षेत्रदेश वित्र, द्योवन-बात्रद्ध होतीहरू व्यावहरू

কৰিত প্ৰাৰ আৰ্ছি কতই আগের স্থধ ভাৰবানা, কতই আগাজা কত রূপ আর্বা

স্টেউটে প্রাণে বে দিলে কথন একরে কড় একে একে, অনিমের চক্ আনন-প্রকের

হণর-মূক্তর বেদি প্র আগেকার মত থেন হেরি সব্ আগেকারি মত পশু পক্ষি-রর,

আগেকারি মত ক্রিক্র জ্ডাতে পরাণ ইহার সমান, নাহি কিছু আর, নাহি কোন স্থান,

চির-তৃপ্তিকর স্থার প্রাক্ত

महामहिनामत इत यदि शास, औ मानन উखारन करन यात्र खान,

তব্ও বে দেশ বংলা ভাহার নরনে ভেমন হুক্রর, মনোহর ছান পৃথিবী সালয়,

নাহিক তৃতলে কোঁৱাৰ কে আছে এখন মানৰ-সমাজে

श्वति-छत्रो बाद जानत्य ना वार्ट्य वहहिन शुरुद्ध

मा बरन डेजारन श्रम्ब व्यवस्त्रहरू दक्षमञ्चि स्वार-व्यवस्त्रहरू

এই ক্ৰমুদি আৰ্থে তৰি ক্ৰমতা এক হীৰ-আলা,

वेष्ठ देव बिना ६७ गीन-रोहा

(कामात्र(क) नवान स्टेस्ट (क्टब्रुक्ट पुर बटन साहर देश) आहर्त साहर स्टेस्ट्रिसिय হে জগৎপতি এ দাস-মিনতি, রেখ এই দরা বলমাতা প্রতি, বলবাসী যেন কথনও কেহ। যেথানেই থাক্ খেথানেই যাক্, ষতই সম্মান খেথানেই পাক্, না ভূলে স্থদেশ-ডকতি স্লেহ॥

কি সুখের দিন।

কি সুথের দিন মনে পড়ে আৰু, चानक निर्देश शहरत वह. হ'ল বছদিন, আজ(ও) তুলি নাই, এখনও সে দৃশ্য তেমনি রয়। শৈশব-সময় বর্ষ বার ভের. প্রাক্রম ব্রি হইবে তথ্ন, জানারা অবধি এক দিন তরে. कानि ना कथन इःथ (कमन। তথন(ও) প্ৰাৰ্হ সেই মাতামহ. ম্বনেক্র মত উহত শরীব. মাতা পিতা আদি বন্ধু সর্বজন, ্রেস গিরি আশ্রমে আছেন স্থির। সুৰে হাসি খেলি স্থৰে আসি যাই, সুখেতে ভাসিয়া করি ভ্র-ণ. সুৰে পূৰ্ব ধরা শৃক্ত স্থথে ভরা, স্থুথের(ই) প্রবাহ ভাবি জীবন। আদরে লালিত আদরে পালিড, মাতাম'র আর ছিল না কেহ. অগতা তাঁহার আমাদের(ই) প্রতি ছিল আশৈশৰ অধিক ক্ষেহ। আশার নির্ভর করিয়া আহলাদে, ৰানাইলে তাঁয় মনের সাধ. ক্ৰমণ্ড অপূৰ্ণ থাকিত মা তাহা, পুরাতেন তিনি করি আহলাদ। वश्त्रात्व वश्त्रात्व मात्रतीव शृका, হইত আলরে আনন্দ সহ. कडहे जानम (शरहि छर्थन, মাসাবধি করি ধরি উৎসাহ। খানিত প্রত্যহ প্রতিমা দেখিতে, · क्छ छ:शी व्यापी व्यवक्र-मृत्य.

नव बर्ख गरव निरम निरम गांवि. সাজায়ে বালিকা-বালকে সুথে। त्म आवन्त्रकृति जाशास्त्र मृत्थ. হেরি কতবার সংশয়ে ভাবি, কার বেশী শোভা-প্রতিমার কিবা ডাদের প্রফল মুখের ছবি। আদে যায় হেন কতই দৰ্শন, গ্রাম-পল্লীবাদী কতই আদে: ভিক্ক বাচক গীত-বাছ-কর, অভিথি অভ্যাগত কত কি আৰে। ক্ৰমে গ্ৰাগত আত্মীয়-স্ঞ্লন, কলবব-পূর্ণ সতত আলব, প্রির সম্ভাবণ মধুর আলাপ, গৃহের সর্বতি ধ্বনিত হয়। দল হাইমতি কুট্ম-জেয়াতি. चारमारम श्रामारम त्रज ममारे, সর্বা পরিজন আনন্দে মগন. নিরানন ভাব কাহার(ও) নাই। সে আনল মাঝে আমি শিশুমতি. সদা হেসে থেলে স্থথে বেড়াই, धनो कि पश्चित श्राज्य (वित्नी-चरत्र, আমার প্রবেশ নিষেধ নাই। সে কালের প্রথা রামায়ণ-গান. অপরাহে ভনি মোহিত হয়ে, সমৃদ্র লজ্যন পুষ্পকে গমন,— শুনি গুরু হরে বিশ্বরে ভরে। নিশিতে আবার শুনি বাতা গান. সমস্ত রজনী জাগিরা থাকি . গুনি সে আধ্যান না ডুলি কথন. ज्ञमद्र-क्रम क निथिता दाथि। वारे वर्ष चायू कृताहरल गात्र, দে স্থের দিন কতই গিরাছে, আজি ত সে দিন তুলিনি শ্বদয়ে, সে মুখের স্থাদ আৰু ত আছে। बमनीत खन कीरतत आशाम, একবার জিহবা জুড়ার বার, বে জেনেছে বাল-জীড়ার মাজাদ: क्रगंड किह कि ठात्र मा आते ?

ধনবান্।

ধনবান জনবান ধরণীর ফুল. বিনাধনীকে অবনী সাজাত এমন ? কে পরাত ধরা অকে এত আভর্ণ ? প্রাসাদ-মন্দির-মালা স্বর্গে অতুল ? কাশ্মীর-ভূধর-শিরে যক্ষ-সরোবর. অচ্ছোদ বাহার নাম কাদম্বী প্রিয় কে সেখানে বিরচিল ক্রীডাবন স্বীয়, ধনী যদি না থাকিত ধবণী-ভিতৰ। তাজ-অট্রালিকা চ'থে কে দেখিত আজ যার শোভা দেখিবাবে ধরা-প্রান্ত হ'তে-প্রতিদিন কত লোক আসে এ ভারতে. অমূল্য প্রাসাদ-বত্ব অবনীর মাঝ। विना धनौ खुशकत निष्ठांत अवार. থাকিত না ধরাতলে বিভার আহলাদ. জানিত না নরচিত্ত সাহিত্য আখাদ, কি আনন্দকর চিত স্থবে **অ**বগাহ। उक्काण धत्री-काण धनीत उत्रास्त्र. ববিচ্ছটা সম ছটা তাদের প্রকাশে. এক জন ধনী যদি হয় কোন দেশে. চিরদীপ্ত সে অঞ্চল তাব দীপ্তি লয়ে। কোন কালে ছিল আরে ভারতমগুলে. ভবানী অহল্যা বাই মরিলা ছ'জন; আজ(ও) দেখ তাঁহাদের নামের কিরণ, জাগায়ে স্বদেশ-খাতি জগতে উজ্জলে। কত হেন লব নাম প্রতি দেশে দেশে. धनव**ी धनवान ऋत्वन कल्**रान শাধন করিয়া নিত্য লভিয়া সন্মান, পনাম খদেশ পূর্ণ করিছে স্থাশে। শাধিতে জগৎ-ছিত ধনীর স্জন, ^{বিধাতা} ভাদের হস্তে দিয়াছেন ধন, জগতের স্থম**দল করিয়া মনন**, এ কথা যে বুঝে মর্ত্তো দেবতা সে জন ; নিতা স্মরণীয় সেই মহাত্মা ভূতলে; के इःशी खानी जाना करत्र निवादन, ^{জগতে}র কত হিত করে সে সাধন. দে কথা ভাবিলে প্রাণ আপনি উথলে।.

পরের হিভার্থ ধন না বুঝে বে ধনী. নিজ স্বার্থ চরিতার্থ সদা বাস্থা করে. পরহিত ভাবে না বে মুহুর্ত্তির তরে সে জন ছরাত্মা আমতি জগতের গ্লানি। বিধাতার বর-পুত্র ধনী এ গরাতে. দেবতা হইতে পারে ইচ্ছা ধদি করে ইচ্ছাকরে যেতে পারে নরক ভিজেরে স্বৰ্গ নরকের দাব তাহাদের হাতে। मशैष्ठ मशैश-तृत्त धनौत्र अधान, দৈবঘটনায় আৰু মহীপতি তারা. আবার চক্রের গভি হ'লে অবলধারা, পশিয়া ধনি-মণ্ডপে হবে শোভমান। धनीतां अन्तारतत सूथ-इ:थ-मूल, যে ধনী না বু'ঝে ইছা ভ্ৰান্ত পথে যায়, ধরার কণ্টক সেই , যে বুঝে ইহায়, ফুটে রয় ভবময় শোভায় অতুল।---ধনবান জনবান ধরণীর ফুল।

ভালবাসা।

ভালবাসাবাসি এত পথিবী-ভিতরে. সে তৃঞ্চা মিটে না কেন আমার অন্তরে 🔊 বাল্য হ'তে নিরস্তর খু' জিয়া বেডাই, প্রাণ জুড়াবার স্থা তবু নাহি পাই। কারে ভালবাদা বল, কিবা তার ধারা? কি পেম্বে প্রাণের তৃষ্ণা মিটাও তোমরা ? পিতা ভালবাদে কতা পুদ্ৰ আপনার. স্বামী ভালবাদে ভার্য্যা প্রিয়ত্মা তার। ভাই ভালবাদে ভা(ই)য়ে সোদরা সোদর, প্রতিপালকেরা ভালবাদে পোয় তার. আত্রিতে আগ্রন্ধাতা ভাবে আপনার. अन्त्रिमी अन्त्रीतं कृत्त्वत्र कात्र । এ যে ভালবাসা-ভরা দেখি এ সংসার. ভালবাসা নয় ইহা স্বার্থের বিকার. ক্ষেত্ৰয়া মায়া আর যাহা কিছু বল, ভালবাসা কিন্তু তবু নহে এ সকল। প্রাণে প্রাণে বিনিময় ভালবাসা বেই. সে ভালবাসা ত হেথা দেখিবারে নেই,

কত জনে হাতে তুলে দিয়েছি তাহায়. সে ত নাহি প্রাণ তার দিয়েছে আমায়। আমি চাই এক জীউ একত্যা মন. এক চিন্তা এক দৃষ্টি একই প্রবৰ্ণ, এক রাগ অভুরাগ একই মনন. ছুই ছুই ছুচে গিয়ে একতা মিলন। অন্সুমনের গতি. অনন্ত কল্পনা স্মৃতি, অন্য আকাজ্ঞা আশা, অনন্ত প্রাণের ভূষা, এক জ্ঞান এক ধ্যান একই স্থপন. ভার(ই) নাম ভালবাদা হুজনে মিলন । এক প্রাণ হই দেহ. অভেদ শক্ৰতা স্বেহ. অভেদ আনার ভক্তি. इहे (मह এक(है) मिक्ति, পাষাণে পরাণ গাথা একাআ জীবন, এ ভালবাসাবে মোরে দিবে কোনু জন ? এই ভালবাদা-আদে উন্মন্ত হইয়া. লজ্জ। ভয় লোকনিন্দা সব তেয়াগিয়া পরাণে প্রাণে তার হইতে সমান. অনেকের হাতে সঁপে দিয়াছি পরাণ: কত জনে কতবার সোদরে অধিক. ৰভাৱেছি হৃদ্ধেতে ভাবিয়া প্ৰেমিক, বৃশ্চিক-দংশিত হয়ে ফিরিয়াছি শেষে. কেলেছি রজনী দিবা যাতনার কেশে। কতবার কত জনে কণ্ঠের ভূষণ. করিয়া রেখেছি বুকে ভাবিয়া রতন, ছি ডিয়া ফেলেছি শেষে ব্ঝিয়া স্থপন, করেছি কতই তপ্ত-অঞা বিসর্জন; ভালবাসা বলি যাবে পরাণে ধেয়াই, সে ভাৰবাদারে হায় কোণা গেলে পাই ? পরাণের বিনিময়ে পরাণ বিকাই. এ ভাৰবাসা কি তবে পৃথিবীতে নাই ?

অতৃপ্তি।

বিধাতা হে নাহি জানি প্রাণে কেন হেন মানি মাঝে মাঝে বির্ক্তি উদয়। থাকিতে এ ভবনিধি পরাণে কেন এ ব্যাহি বল বিধি বল হে আমার। আছে নয়নহে কাল এই ভাব চিরকান কেন মন হেন ডিক্ত হয়, কিছুই নাধ্বে মনে ष्यमाधा महाहे खोल কিছতেই সাধ নাহি রয়। আমাদ প্রমোদ হাসি সব(ই) যেন যায় ভাগি কিছতেই মন নাহি বলে, নিকটে প্রাণের মিতা গুনায় রুসের গীতা তাহাতেও চিত্তনাহি রুসে। সুত সুতা স্বেহভবে. চিবুক ভূলিয়া ধ कर्छ धन्नि क्लारन यिन हारम , তাতেও চেতনা নাই সে দিকে না ফিবে চা ষেন কোন অমঙ্গল তাদে। এ অতুপ্তি কেন সদা ধন যশ কি প্রেম किन्नहे मरस्वायकत नरह. নাহিক আকাজকা আশা নাহিক কোন লাল প্রাণ ধেন সদা শৃত্য রহে। মুথে ব্যঙ্গ পরিহাস হূদে থেদ বাবমা कन्छम्य नुकारिया हटन , বাহিরে আলোক-পূর্ণ হৃদয়ে অঙ্গাব-ঃ প্রাণে সদা বহিং শিখা জলে। কেন হেন তিক্ত প্ৰাণ দিলে মোরে ভগবা এই সুখ-জগতে তোমার; নাহি কি কিছুই তায় মম সাধ মিটে গা কোন হেন স্থলর স্বতার। ফুলতক কত জাতি কত বৰ্ণ কত ভাগি আছে এই জগতমণ্ডলে: ধরা শুক্ত শোভাকর কত পশু পক্ষী ন্য रेनदान प्रभाग भीन करन। আকাশে টাদের শোভা জগতের মনোগেতি মনোহর তারকা ঝলকে, বেটি মনে ধয়ে ধার সেটি আদরের ^{তাব} চিরকার এই ধারা লোকে। উদ্যানে কাহার(ও) সাধ কুম্বমে কারো আংলা^র कादा मार शामान-छवत्न.

ক বা পকীব গান ভনিয়া জ্ডায় প্রাণ, কেহ মুগ্ন সঙ্গীত-শ্বণে। কহ ভলে চিত্রপটে কেহ বা কবিতাপাঠে কারোমন সৌলর্ঘ্যেমগন . ্কহ সুখী ধনাৰ্জনে কেহ সুখা ধনদানে कोट्या मोध मम्बि-मोधन । কহ বত বিলাভাবস কেহ বা বেশবিকাদে বিলাদ-বাদনা কবে কেহ. কেহ অনাদরে তায় ভাগস্থ কেহ চায় বনে যায় তেয়াগিয়া গেহ। ঃন রূপে স্কজিন কোন না কোন বন্ধন জনয়ে বেঁধেছে স্থুখ আ'শে; ষ্ণ করি সেই আ**শা** জড়ায় কদি-পিপাসা অকল সাগ্রে ন†হিভাসে। গামারি কদি কেবল ছায়া-শুরু মক-তল কোন বাসনায় বন্ধ নয়; কিছুই না গরে চিতে এত শোভা ধরণীতে. শৃত্য প্রাণে দেখি সমুদয়। কি হেতু হে ভগবান দিয়াছ এমন প্রাণ সুথের সাগরে সবে মজে , ংলে জলে ভ্যওলে হুপেৰ লছৱী চলে কি সে সুখ্ আমি মরি খুঁজে। স'ব আগব কভ দিন গ্ৰেছি অনেক দিন দিনে দিনে ডবি ছে পাথারে, এ ডঃখ ঘুচাও হরি াহৰ এ প্ৰাণ হবি এ যাতনা দিও নাক কারে॥

মৃত্যু।

কে আসিছে অই আধার-রণ,
লৌহদণ্ড কবে করিয়া ধাবণ।
জলস্ত বিদ্যাৎ নয়নের ছটা,
দেহের বরণ খোর ঘন ঘটা,
চূপে চূপে আসি ছায়ার মতন,
মুম্ব্ প্রাণ্ডীরে করে নিরীক্ষণ।
মৃত্যুগব্যাশান্তি-শিয়বে দাডায়ে,
নিজ্ঞ দণ্ড তার শরীরে ঠেকাফে,
বলে 'গুরে আয় আর দেরী নাই,
আর সঙ্গে নোর, আমি নিয়ে ঘাই,
বে দেশে নাহিক ক্ষ্য চন্দ্র তারা,

যেখানে দেখিবি অদেহী যাহারা, কোথা এবে তোর ব্যক্ত যাহারা. যাহাদের পেয়ে হয়ে জ্ঞানহারা. যৌবন-মদিরা পিয়েছিলি রঙ্গে, কৌতুক, বিলাস, ব্যসন-তর্পে, ভাবিতিদ ধরা সরার মতন: এখন তাদের কাদিছে ক'জন ? দেখ একবার এই শেষ দেখা. যাদের চিত্র ভোর প্রাণে লেখা. যাদেব পাইয়ামনের মতন. সাজাইলি তোর ভব-নিকেতন, পদ্র-পৌদ্ররূপ ভবরত্ব-চয়, কোথা ববে এৰে সেই সমুদর ? দেখে নে রে ভোর ক্রেহময়ী মায়, (আব কভ চথে দেখিবি না হায়,) काॅनिएड এখন इख्र नित्भशाता, ধরায় পডিছে পাগলিনী-পাবা, দেও যাবে ভলে কিছ দিন পরে, কদাচিৎ যদি কভুমনে কবে। অই দেখ তোর প্রাণাধিকা নারী, ষারে লয়ে তই হ'লি রে সংসাবী. তোর মৃথ চেয়ে করিছে ক্রন্সন, নিস্পন্দ নির্বাক পাষাণ যেমন, কিছকাল পরে সেও রে ভূলিবে, ফিরে এলে কাছে চিনিতে নারিবে, টাডায়ে শিষ্তে হাবায়ে সংবিৎ, অই যে তোমার প্রাণের স্থন্তং. যাবে কাছে পেলে আর সবে ফেলে, शांकिएक निवम-इस्रमी विवरण. কত দিন মনে রাথিবে তোমায়, ভলিবে যে দিন পাবে অকু কায়। এই ষে রে ভোর গৃহ অট্টালিকা, মঠ, অখশালা, ডোরণ, পরিধা, এ নাটমন্দিব হদ পুদ্বিণী, বিচিত্ৰ চক্ৰিণী পতাকাশালিনী, (काथा तरव नव मुनिटन नवन, কে ভোগ কবিবে এ সব তথন ? তই নিজে ধাবি ভূপিয়া সকলি— দারা পুত্র সথা এ ধরামণ্ডলী, धन, मान, गन, अधर्गा, विভव.

দয়া মায়া স্নেহ জনকলরব. একাকী উলঙ্গ সঙ্গে যাবি মোর. কিছই সক্ষেতে যাবে না রে তোর। এই সব ভবে হয়ে চিন্তাকুল. আৰম ঘ্রিলি ষেন বা বাতুল, मक्ति कितिया (यट र'न এবে, কার ধন হায় ! এবে কেবা নেবে ! সব(ই) ফেলে গেলি সৰ বিলাইলি. পথের সম্বল কিবা সঙ্গে নিলি ?" আচ্হিতে নাভিশ্বাস দেখা দিল. মৃত্যু-শ্ব্যাশারী নয়ন মূদিল, शैद्ध शैद्ध मूथ इडेल व्यानान, সেই পথে প্রাণ করিল পয়াণ. ফুরাইল এক জীবের জীবন. ভাঙ্গিল ভবের একটি স্থপন, দিবস রজনীকত হেনরপ্র ওনিছে মানব শমন-বিজ্ঞপ; (मिथिছে नश्राम कल भक्त खरान, ম'রে ফুরাইছে প্রতি ক্ষণে ক্ষণে, তবুও কিবা যে মায়ার বন্ধন. সে কথা কাহার(ও) থাকে না স্মরণ, কার সাধ্য বুঝে সংসার-রচনা ? ধক্ত বিধি। মায়া-সঞ্জন-কল্পনা।

শিশু-বিয়োগ।

এ কি ভানি, কাব কালা হেন নিদাকণ, বুঝি বা জননী কোন হলে শৃক্ত কোল, কান্দিভেছে হেন রূপে করি উত্রোল, দিবানিশি কেঁদে চক্ষ্ করেছে অবল!

কেন হেন ভগবান চুর্বল মানবে, কর দক্ষ চিম্নদিন শোকের অনলে, এ কি থেলা গেলাও চে এ ভবমণ্ডলে, ভাসাইয়া নর-নারী ভংগের অর্থবে।

কি পাপ করিল শিশু এই অল্পকালে, অনাহারে মৃত্যুম্পে নিকেপিলে তারে গৃ হ'ল না দধার পাতা তোমার বিচাবে ? কেন কর্মভূমে তবে ভাহারে পাঠালে ? না না, কিবা কোন পাপ ছিল না উগাঃ
মাতা পিতা পাতকের(ই) তথু এই ফল,
কেন তবে দেখাইলে তারে এ ভূতল,
নির্দোষ জীবন কেন করিলে সংহার ?

অথবা সে পূর্বজন্মে ছিল মহাতপা, তাই তারে না ছুঁইতে ধরণীর ক্লেদ, দকালে দকালে তারে করিলে উচ্ছেদ, ভালবাদা জানাইতে করিলে হে কুণা।

এই যদি ছিল মনে ওছে দয়াময়, কেন তবে মায়ে তার দিলে গর্ভক্রেশ, কেন আশা দিয়ে বুকে ছুরি দিলে শেষ, প্রভু, এ তো করুণার কাষ্য্য কভু নয়।

একবার মার মুখ চেম্নে দেখ তার, কি ছিল বা গত নিশি কি হয়েছে এবে, ডাকিছে তোমার দেব প্রাতে অভাবে, দে শক্তি অলাওপতি নাহি কি তোমার।

সে শক্তি না থাকে যদি আপনিই এস, কোল শোভা কর তার শিশুরূপ ধবি, তুমি ত সকলি পার এজনাথ হরি, কেন না এরূপে আদি অভাগীরে তোষ?

বৃদ্ধি না তোমার দেব ভব-লীলা-বেলা, এক্লপে কেন বা জীবে হাসাও কাদাও, কেন মার কেন কাট কি সাধ প্রাও, আচার-বিচার কি যে কেন বা এ গেলা?

ক্ষানি তুমি আছ সত্য ব্যক্ত চরাচরে, সত্য তুমি দল্পামন্ত্র ব্রেবেওও পাবি, ভবের রহক্ত শুধু ব্রিবারে নাবি, নিষ্ঠুরতা হেরি তাম প্রাণ শিহরে।

দরাল নামটি নাথ বড়ই মধুর, কলম হেরিলে তার প্রাণে বাথা পাই, তাই বিজ্ঞাসিছি এত ক্ষম হে পৌসাহ, মনের এ ঘোর ধাঁধা ভেলে কর চুর।

ব্ৰজ-বালক।

স্ফারু ফুন্দর বিনোদ রায়. কে সাঞ্চালে তোমা হেন শোভায়. নয়ন বঙ্কিম কিবা সুঠাম, চাক গ্ৰীবাভঙ্গী ঈষৎ বাম, ভালে ভুরুষ্গ আবের্ব টান. অপাক্তকীতে চমকে প্ৰাণ, মোহন মুরতি চিকণ কালা. রপের ছটায় জগ উজলা। মুখে মৃত্হাসি অলকা সাভে. মধুর মুরলী অবধরে বাজে, শিথিপুক্ত চূড়া ঈষৎ বাঁকা, ললাটে ৰূপালে ভিলক আঁকা, নব-ঘনঘটা দেহের কান্তি. দেখিলে নয়নে উপজে ভ্রান্তি. পীতধড়া আঁটা কটিতে তায়. মেঘেতে ষেন বিজ্ঞলী খেলায়. বক্ষঃ সুবিশাল কটি সু-ক্ষীণ, মনোহর বপুউপমাহীন. ভূজদেওলতা জিনি মূণাল, করপদতলচ্চটা প্রবাল। বন-ফুল-মালা গলায় সাজে, চলিতে চরণে নৃপুর বাজে, নটবর-বেশ রসিক-রাজ, मनारे विरुद्ध निकुछ-मांग, স্থান্ধ সৌন্দর্য্যে সদা বিহ্বল, সদা রক্ষ-রদে ক্রীডাকুশল, কদম্বের তলে মুরলী মৃথে, ত্রিভঙ্গ-ভঙ্গীতে দাড়ায়ে স্থে, বাঁশরীর রবে শিখা নাচায়, বাঁশরীর রবে ধের চরায়, ষাহার মধুর বাশীর গানে, यम्नात खन চলে উজানে, ব্ৰজের রাখালে অতুল রূপ, **निया माबायाह** जगर ज्ल, হেন কালরপ আর কি আছে? এখন(ও) নাচিছে নয়ন কাছে। প্রেমডক্তি-পথ শিখাতে লোকে, बाद इति भूर्व दद चारनारक,

এ ম্রতি ধার মনে উদর, এ জন কথন মাজুদ নয়।

কবি**তাস্থ**নরা।

অশোকেব তলে বেন শশীজলে হেন রূপবতী নারী, ভাবিছে একাকী করে গণ্ড রাখি অপূর্ব্য শোভা প্রদাবি। ম্বনিবিড কেশ ঢাকি প্রদেশ ছডায়ে পডেছে এলা, ঘুরিছে ফিরিছে উডিছে পডিছে প্ৰনে কবিছে পেলা। নৰ তণ্দল আসন কোমল বসেছে চরণ মেলি, বাহ্বা পদতল করে ঝলমল তক-দেছে আছে হেলি। করি-শুণ্ডাকার ক্রমে লঘতর উक किनि श्रकननौ , নিভম্ব পীবর ন্তন মনোহর অফুট কমল কলি। ত্রিবলী-অঙ্কিত কণ্ঠ স্থশোভিত পক্ষবিদ্ব ওষ্ঠাণর . সিন্দূবে মার্জিভ মুকুতাব মত দন্তপাতি শোভাকর। মদনের গড শ্বণ কুহব বাশরী সদৃশ নাদা, চক্ৰনিভানন, শ্বেডাভ বৰণ ধঞ্জন নয়ন-ভাসা। পুষ্প থরে গর শোভা মনোহব শাখা এক শিরোপরে. মনৰ মনৰ দোলে প্ৰন-ছিলোলে বৈদে বামা গণ্ড করে। ডালে ডালে পাগী নানা বৰ্ণ মাথি . করিছে মধুর গান , (थरक (थरक (थरक ডালে অঙ্গ ডেকে কেহ ধরে উচ্চতান। তক্ষ অঙ্গে গাব মন্দ মন্দ বায় পত্র কাঁপে থর থর ;

নিঝ র-দর্পণে কত নিবজনে পল্লবেরা দোলে প্ৰন-হিলোলে নিজ নিজ বিষ হেরি। শক হয় মর-মর ফ্**লন্ত্ৰাণ সে**বি কত বনদেবী ততুমনোহর কত ব্নচর ভ্ৰমে সাজি ফুল-সাজে, আবৃত রঞ্জিত লোমে; রত সর্বাকণ দূরে সলিধানে নৰ্তন বাদন অভয় পরাণে সে শেব-কানন-মাঝে। অধিরত স্থে ভ্রমে। পুলকে পূরিয়া নাচিয়া গাহিয়া শিশু কাছে করি হরিণী সুন্দরী এরা সবে মাঝে মাঝে; ভ্রমে নৃত্য করি স্থুথে। প্রেম-ভক্তিভরে পুলকেতে পূবে তুলে মুণালিনী করিণী স্বথিনী আনন্দে বামাবে পুজে। (एवं निक निकम्(४। করে অভিনয় মিলি বৃদ্নয় হাম্বা রব করে গাভী বৎস চরে বামাব প্রীতিব তরে , কেহ না দেখিলে কাম; করুণার দৃশ বীর বৌদ্র হাস্থ্য চমকিত চিতে চরিতে চবিতে নয়নে তুলিয়া ধবে। তৃণ-মুখে মুগ যায়। ম্রিমান হেন ভ্ৰমে নীল গাই প্ৰাণে ভয় নাই স্বর্স যেন হৃদয়ে প্রত্যেষ হয়; অদূরে অথবা দুরুর, বদে বামা-হূদি ক্ৰোধ ভয় আদি লোমণী স্থন্দরী বিচবে চমরী কভূ অশ্রধারা বয়। বনমাঝে ঘুরে ঘুবে। নৰবৃদ **মে**ণি হেন রূপে কেলি প্রমত্ত উল্লাসে সেথা পরকাশে ক'রে সমাদবে রাখে, কবি-প্রিয় ঋতুচয় , ভূষিত নয়নে স্রস সূৰ্যা কীড়া সমাপনে বসস্ক, ববষা বামারে ঘেরিয়া থাকে। শরৎ সৌন্দর্য্যময়। বসিয়াছে হেরি সে বামারে যেবি অতি বম্য স্থান নিকটে উচ্চান মহাপ্ৰাণী কত জন ; দেবতা গর্কা ভূলে, নাহি পডে প্ৰ সদা সুশোভিত অনিমেষ নেত্ৰ সুগন্ধামোদিত হেবে সে রান্ধা চবণ। নানা জাতিতক ফুলে। মহাজ্যো**তি**ধ ব কত ঋষি নর সদা ভ্ৰমে তার ফুলে রেণু-গায় বদেছে বামারে থেবে, মনদ মনদ সমীরণ, কতই যশসী স্বদেশী বিদেশী আকাশে দৌরভ মাটীতে দৌবভ কেবা সংখ্যা তার কবে; সুগন্ধ বর্ষে যেমন। • জ্যোতি ছড়াইয়া সেখানে বসিয়া লতা-পত্ৰ ঝরে গাছে মধু ক্ষরে, মহাকবি ঋষি ব্যাস; উডে ভৃঙ্গ মধুকর , সম জটাধৰ নব প্রভাকর ভবিয়া উচ্চান সুষমা সুদ্রাণ বাল্মীকি সেথা প্রকাশ। গন্ধে ভরা সংগাবর। কবি কালিদাস মহিমাকে জানে সে সৰ উন্থানে বাণী-বন্ধপুত্ৰ যেই; নিত্য চন্দ্ৰোদয় হয়: ় সেক্ষপীর কবি অমরের ছবি শশান্ধ উত্তলা নিভা ধোল কলা विक्रली (यन (थलाई। চির-জ্যোৎসাফ্টেরয়। বুধের মণ্ড ধরণী উঙ্গলি অপ্যর-বনিতা ভ্ৰমে কন্ত সেথা বদে দেপা স্তরে স্তরে, গীত বাখ নৃত্য করি ;

নিজ বন্ত ধ'বে স্থাকণ্ঠস্বরে সে চরণ পূজা কবে। হেরি সেই শোভা দেব মনোলোভা কার না বাসনা করে . পরিতে গ্লায় এ ৰশোমালায় রাখিতে হাদয় ধ'রে। অয়ি নিরুপমে মম হৃদি-পামে বাসনা আছিল কত, তোমার সাধনা ত্র আরোধনা কবিব জীবন-ব্ৰত। ভ্ৰেনিজ ভ্ৰমে বুথা পরিপ্রমে জীবন দুরায়ে এলো, নালভিত্থন না সাধিত্ব পণ তুকল ভাসিয়া গেল। পডিয়া বিপদে এবে নহে সাধে আবার তোমারে ডাকি: হয়োন। নিদয়া কর দাসে দয়া ভক্ত ব'লে মনে রাখি; তুমি কেমস্কবি নিজে ক্ষমাকবি ভুল নাম†বেয়ব মায়া; পুরাইও সাধ ক্ষমি অপরাধ क्थि (क्वि। श्रम्होग्रा।

এবে কোথায় চলিলে ?

(সার বনেশচলের মৃত্যু উপলকে)

এবে কোথায় চলিলে ?
প্রথর সূর্য্যের প্রায়

এত দিন ধরাতলে স্কাধ্য সাধিলে,
দেশ অন্ধ্যার কবি কোথায় চলিলে ?

জগতের হিত-ব্রত সাধিতে মনের মত ঈশবেব কোন্ রাজ্যে উদয় হইলে ? কোথা ওহে মহাপ্রাণ কোথায় চলিলে ?

এখন চলেছ ঘণা সে দেশ কেমন ? কিবা তার হুল জ্বল কি ঋতু সেথা প্রবল কুমুমের কৈ মুগন্ধ কেমন কিরণ ? কি পাধী সেধানে গান্ধ কি বৰ্ণ রঞ্জিত ভান্ধ প্রকৃতির কিব! শোভা কেমন গঠন ? গে ফিতি মাটীর কিংবা গঠিত কাঞ্চন ?

বায়ু বহে কি প্রকাব ফল-বৃক্ষ কি আকার গগনে আছে কি দেখা চন্দ্র-ভাবাগণে ? দিবাকর কিবা হ্যতি অনলেব কি আছতি জীবের স্থবের গতি কেমন দেখানে ?

একাকী যাইতে হয়
থেকে থেকে তাই ভয়
ভোমারে সুধাই তাই বল বিবরণ—
যেতে পথ কি প্রকার
আলো কিংবা অন্ধকাব
আছে কি কন্টক কিংবা ভূজস্ব-গর্জন ?
সুথে কি কেশেতে সেথা হয়েছ উদয় ?
পথে পৈমেছিলে তক ?
কিংবা পথ শুধু মক ?
একা যেতে কান্ধ হ'লে কি করিতে হয় ?
যেতে পথে মেলে ফল ?
মালে কি ভূফায় জল ?
প্রাণী তো চীংকার ক'রে কাঁলে না সেথায় ?

একাকী অজানা পথে
নি:সহায় বেতে বৈতে
অক্থাৎ প্রাণে যদি পেয়ে উঠে ভয়,
আতফে শিহরি ডবে
ডাকিলে চীৎকার ক'রে
আাদে কি রক্ষক কেই মহা দয়াময় ?

সধা ! জীবনের প্রহেলিকা
ভেনি ভব-কুহেলিকা
জীবন-পরিধা-পারে কিছু কি ব্ঝিলে ?
বেরিয়া নখর কায়া
কেন এত দয়া মায়া
ফুরায়ে যায় কি তাহা এ দেহ ভালিলে ?

স্তৃত্ব জীবে কি বন্ধন কে করিল সংঘটন জীবাত্মা মানব-দেহে কা হ'তে সঞ্চার দৃ এ গৃত রহস্ত-কথা প্রকাশ হয় কি সেথা অথবা সেথাও এই আলো অন্ধকার দৃ

কাল-অব্দে চিহ্ন রাখি
মহিমার জ্যোতিঃ মাঝি
জ্যোতির্ময় দিব্য-ধামে তুমি ত চলিলে,
তোমারে ইইয়া হারা ধরাতে রহিল বারা
কি সাখনা তাহাদের জ্ডাতে রাখিলে ?
তুমি কোথায় চলিলে ?

ভোমারে পাইলে কাছে জুড়া'ত পরাণ,
কি মধুর মাদকতা সৌরভের াক মিগ্রভা
সরস আনলভরা কি মধা আদা।
ভানিলে ভোমার কথা ভূলিভাম সব বাথা
শোক হুঃথ ব্যাধি আলা পাইত নির্বাণ,
কোথা ওহে মহাপ্রাণ করিলে প্রস্থান ?
হা মিত্র, মিত্রভা তব করিয়া স্বরণ,
বদ্দুমি আজি কত করিছে জন্দন;
কান্দিলে জনমভূমি
দেখিতে পারনি তুমি
আজি দেখ দেশময় উঠেছে রোদন,
রোদনের প্রতীকার
করিতে পার না আর ?

ঢালি অঞ্চ অবিরত
সধা ব'লে ডাকি কত
নিদারুণ বধিরতা যে দেশে এমন,
কোন্ প্রাণে সেথা তুমি করিলে গমন ?
কোনে বা ভোল আজ, আবাল্য প্রণয়
একত্তেতে সব হয়
কোথাও পুধক্ নয়

হার স্থা সে ক্ষমতা গেল কি এখন ?

বিশ্রামত্বন কিংবা বিচার আগার, কত নিরজনে বাদ কত হাস্ত পরিহাদ কত সুথ আলোচন। কত শোক-পরিচয়,

মন-কথা বলাবলি
প্রেমে কত কোলাকুলি
মিষ্টালাপ • শিষ্টালার কত স্থবমন্ন;
যৌবনে যশের আশা
একত্র বিজয়-তৃষা
যুগান্তের কথা যত আজি মনে হয়!

তুমি রোগে শব্যাপরে অন্ধ হরে আমি দূরে দেখিতে নারিছ শুধু বাবার সময়, আমারে বার্দ্ধক্য-কটে দেখিলে নাহায়!

কি আর বলিব সথা চির-ছবী হও। অভাব দেবের ক্লার আহ্যি দেবতার প্রাচ মলিন মর্ত্তোর তরে ত্মি সথা নও; দেবলোক হ'তে এলে দেবলোকে বাও।

সেবিয়ে দেবভাচর সে রাজ্য দেবজ্মর
দেবনাথে দেবভার ভালবাদা লও,
দেবলোক হ'তে এলে দেবলোকে বাও।
দেববাসে দেব-পাশে
দেবে দেব ভালবাসে
দেব-ভাবে দেবভারে ভালবাসা দাও,
দেবলোক হ'তে এলে দেবলাকে বাও।

কত সাধ হয় মনে
মিলিরা তোমার সনে
ভূমি চরাচরময় করি নিরীক্ষণ,
জীব-ন্তরে পরে পরে
ত্থ হুংথ কিবা ঝরে
জীবের জনন্ত গতি কিসে সমাপন।

ফলিবে না সে আশা কি বৃথা আকিঞ্ন, আমার বিখাস এই প্রণয়ের অস্তু নেই একবার প্রাণে প্রাণে প্রণয়ে বাধিলে; আনন্ত কালেও আর
পার্থক্য নাহিক তার

তৃই স্রোতোধারা যথা একত্র মিলিলে।

তুল না ভূল না সথা

কথনো খপনে দেখা

দিও এই অভ্যোহে কাতরে ডাকিলে;

হ্বালে কালেব ধেপা
অক্লে ডাদিরে ভেলা
ডেকে নিও নিজ-পাশে তাদিত হইলে।
কোথা ওহে মহাপ্রাণ কোথায় চলিলে?
প্রথন স্থেট্যর প্রায়
উজ্জ্বল করি ধরায়
এতদিন ধরাতলে স্কার্য্য দাধিলে,
দেশ অধ্কার করি কোথায় চলিলে দু

मण्पृर्व ।

দশমহাবিদ্যা

গীতিকাব্য

দতীশৃত্য কৈলাদ।

দীর্ঘ তিপদী।

कित्र देश्य मञीप्पर.* मृक देश्य निवर्गर, वांभामत वित्रभवमन । চাহেন কৈলাসময়. प्रत्थन किनाम नह. অন্ধকার বিধোর ভুবন॥ সতীমুখ-বিভাগিত, বে আলোক শোভা দিত, পুল্কিত কুম্বম-কানন। সুবর্ণ মণি উজ্ঞলা. পেয়ে যে কিরণমালা সে আলোক নহে দরশন। শুষ্ক কল্পজুক সারি ७४ मनाकिनौ-वादि, শৃষ্ণকোলে সতীসিংহাসন। নিক্তম দৌরভ ভাণ, নিশুদ্ধ জগৎ প্রাণ. কঠে ৰদ্ধ বিহন্ধকুজন॥ कान्मिट्ड दुवछवत्र, नमी छात्र (त्रपूर्ण त्र প্রাণশৃক্ত মূগেন্দ্র বাহন। मृत्त्र द्वाचि वाचाचत्र, হেরিয়া ত্রিপুরহর বসিলেন মৃদি জিনম্বন ॥ আৰম-আলম বিনি. আৰি চিন্তাময় তিনি, ধ্যানে ধরি সভীদেহ-ছায়া। ছুড়ে ফেলি হাড়মাল. करत मिल ख्याकाल বিভৃতিবিহীন কৈলা কারা॥ মুথে "দক্তী---দতী" স্বর বিনিৰ্গত নিরম্ভর দিগম্বর বাহজ্ঞানহীন। मृत्थ वववम् वत्न করে অপমালা চলে অকুশক সকলি মলিন॥ মিলাইয়ে কিহ্বাজালা জলমগ্ন ফলিমালা লুকাইল জ্বটার ভিতর।

নিম্পন্দ প্রনম্বন नित्रानम श्रृष्णश অপ্রস্কৃট ঝরে রেণুপর॥ থামিল গঞ্চার রব নিৰ্কাক প্ৰথম সং কৈলাস জগৎ অচেতন। কদাচিৎ "মা" "মা" নাদে ष्मशःवि९ नन्तौ कै।ए বম শকাসহ সম্মিলন ॥ কৈলাস অম্বরময় তারা স্থ্য অফুন ক্ষণকালে নিবিল সকল। তমঃচ্ছন্ন দিগাকাশ কেবলি করে উল্লা नौलकर्ध-कर्धत्र शत्र ग। ধ্যানমগ্ন জোলানাথ স্বন্ধে কভু তুলি হাত সভীরে করেন অন্বেষণ। পরশিতে পুনর্কার সুকুমার তহু তাঁয় মমতার অভ্যাদ ধেমন। তথন নয়ন ঝরে পূৰ্বকথা মনে গ্ৰ ঝরে যথা নদী-প্রস্রবণ। বিশ্বনাথ শোক্ষর निमौणिष्ठ निज्ञा প্রকৃটিয়া করেন ক্রন্দন ॥ হারায়ে অর্দ্ধান্ন সতী कारमन देकनामनि কেবল সতীর কথা মনে। কাদিছেন হেরি শি ৰূগতের ব্রুড জীব কাদিতে লাগিল তাঁর সনে ॥

महारमरवत्र विमाश ।

দীৰ্ঘ ভদত্ৰিপদী।

"রে সভি রে সভি" ≉ কাদিল পণ্ডগাঁ — — — পাগল শিব প্রমধেশ।

* (—) চিহ্নিত বর্ণ দীর্ঘ এবং ক্ষকারাত প্র ক্ষত্তেহিত ক্ষ উচ্চারিত হইবে।

अपूर्णन हत्क हिन्न व्हेरांत्र भन्न ।

	-		
বোগ মগন হর	ভাপদ যত দিন	নিম্বণ ত্রিনয়ন	আফ্লাদে দেইকণ,
	—-		—
ততদিন ন	াছিল কেশ।	শ্ব'পরি	আসন মেলে॥
—	—-	—	
শবহৃদি আংসন	শ্মশান বিচরণ,	প্ৰীত কমলাপতি	বভনবর-পাত্তে,
——		—-	
জগত-নিরূপণ জ্ঞানে ।		নৰ-ভালে প্ৰীত গিবিশ।	
—— ভি ক্ ক বিষণব,	— তিরপিত অন্তব	পুশ্পকবাহন	— বাসব স্থ্যপতি, —
—		বৃষবর বাহন ঈশ॥	
আশ্রমবতি-নিরবাণে॥		————————————————————————————————————	
—	—	"রে সতি অরে সবি	ত," কান্দিল পশুণতি,
"রে সতি রে সতি"	কান্দিল পশুপতি	—	—
বিক লি ত ক্ষ্ম পরাণে।		পাগল শিব প্রম্যেশ ' —	
— ভিকৃক বিষধব,	— ভিরপিত অস্তর,	ৰোগ-মগ্ন হর,	তাপস যত দিন,
— অশ্রেমবতি নিরবাণে।		— তত দিন নাছিল কেশ ∎ —	
	—	ভিকৃক আছেরম	ঘু 6িল অভ: পব ,
क्वनिर्धि महरन,	অমৃত উছ্লাল,		
—		তুব সহ মেলন শেষ ;	
যত সুর বাঁটিল তার্হে।		————————————————————————————————————	
—— ভিশা-ভাকত হর,	— হর্ষিত অন্তর,	জুটাধর শহব,	নবস্থ পাগব
— — গাদিল গরল প্রবাহে ॥		— পরিশেষ সংসারি-বেশ ॥ —	
—	—	—	হৃদয় উচাটিত
"রে সতি রে সতি"	কাদিল পশুপতি	হর্ম সুধাসম,	—
— ·		দ ম্প তি পবিণয় বাদে।	
বিকলিত কৃষ পরাণে।		—	
—	—	কত সুথে যাপন,	শ্বহ্রত ব ৎস ব,
ভিক্ষক বিষধর	হ্ববিত অ্ ন্তব		—
-	— তি নিরবাণে॥	দ ক্ষ-ত্	হিতা ছিল পাশে॥ — —
—	—-	—	সৃহস্থরটেম
কারণবারিপরে	হরি কমলাসন	(যাগ-ধরমপর	
—		—— —	
দ্বুণা করি বে ক্ষণ হেলে ।		নিষ্ঠান এখন শভু ;	

কি হেতু তেয়াগিলি কেনই সমাপিলি. সবহি আগিম পান-পিয়াসরত, দে সাধ এক দিন পরে॥ চারিবেদ সাগর অম্ব। "রে সভি অরে সভি কাদিল পশুপতি, "রে সতি অরে সতি" পাগল শিব প্রমথেশ।" , , পাগল প্রমথেশ শস্তু॥ ভাপস ৰত দিন, মৃর্তি-প্রকটন. বোগ-মগন হর কভবিধ খেলন. ভভ দিন না ছিল কেশ। ভূলাইতে শহর ভোলা. থাকিবে চিবদিন হদিপটে অঙ্কৰ নারদের গান। ধীরললিত ত্রিপদী। সে সব বিলসিত লীলা॥ আনন্দ ধ্বনি করি মুখে বলি হরি ই কুশাকেশিনীয়পে, রাজিলাবেই দিন, নারদ ঋষি রত স্থল**লি**ত নটনে। প্রবেশিল হেন কালে, বিভেন্নী বাবে তাং চারি হাতে বাদন ধরি, বিচেত বিভূগানে ত্রিভূবন-ভ্রমণে॥ "কেবা হেন মতিমান কে ধরে সেই জ শহা ডমূর বীণা কানিবে সুগভীর কগদীশ মরমে ॥ निनामरन नाहिरम. অনন্ত পরমাণু বিকট বিহ্যুদ্ভ ত্রিভ্বন চেতন হরি। উদ্ভব কোথা হ'তে কি হইবে চরমে। হর হরি ব্লন্ **সচেতন জী**বং আদিতে ছিল কিবা জনমিল কারণে ? দ্রব হ'ল বাসব, দেবী অমর সব মানব কিরূপ ধন জডেই কি বিশে অভসনে সঞ্চারে কিবা বিধি মননে ? অদ্ৰব বিধি প্ৰধীকেশ। স্থ কি জীবিতমানে ? কিবা অর্থ নির্বাণে বিসরিতে নারিব সেই দিন কাহিনী. কা হ'তে জনমিল জগতের যাতনা ? অভভ ক্ৰম কার? নির্মিল বিধাত সে কাল রবে চিতলেশ। মানস হ'তে কি এ মলিনতা রচনা ? কিতি অপ তেজ: নভ: ভিন্ন কি এ সা "রে সতি অরে সতি" কাদিল পশুপতি, পঞ্জ কৈ আদিভত অগণন গণনা ? সেই ভল্ নিরপণ করিবারে কোন্ড পাগল শিব প্রমথেশ। সমর্থ দেব ঋষি মানবের ভাবনা 🎖 হ**লভি সেই** গ গাও বীণা ছবি-গান কি হেতু ঘুচাইলে নিক্ষণ মানি ভারে পরিহর মানসে। সেই যোগ-সাধন প্রকাশ মনস্থবে হরিনাম লিখি সেই জানে জীবনোকে প্রকটিত হর্ষে। ভিকুকে বৃসাইলি ঘরে।

দ্ৰগৎ কি সুথধাম মধুর কি বিভূনাম গাও রে প্রেম্ভরে মনোহর বদনে। ক**রার ঝন্তা**র উল্লাসে বল আর ष्यास्ताम मना किया माधुक्रम-क्रीयरम ॥ ধ্ব**ম ধ্রমপুর** আপন ক্রিয়াক ব সংযত নিয়ম করি তাঁহাদেরি নিয়মে। মোক্ষপ্রদ সার বাণী শুনা রে জাগায়ে প্রাণী স্থবে নাদ করি রঞ্জিয়া পর্মে॥ ত্রিণ্ডণে বে গুণময় ষাহ'তে এ সমুদয় উচ্ছাদে ডাক বীণা অবিরত তাঁহারে। দিবানিশি নাহি আন, সপ্তমে তুলি তান নারদ-মনোমত ধ্বনি বীণা বাজা রে "

> नांतरमत वीशांवाम । जन्मभनी भग्नात ।*

আগন-ল-গদগদ নারদ মাতিল। তন্ত্রী তুলিয়া তার মার্জিড করিল। मृद्भृद् ख्झान कश्रु नि-स्तृद्रत्। সরিৎ প্রবাহিলা মুন্দর বাদনে॥ কণুকণুনিকণ কোমলে মিলিয়া। ক্রমে গুরু গর্জন সপ্রমে ছটিয়া॥ মিশ্রিত নানামুরে কভু উতরোল। স্বর-সরিতে যেন থেলিছে হিল্লোল। চেত্ৰ আমজি বেন ঋষিবর হাতে। বাণী ভাষিণ ধ্বনি মধুব ভাষাতে॥ রাগরাগিণী যত জাগ্রত হইল। রূপ প্রকাশিয়া ত্রিভূবন রাঞ্চিল। গ্রহ আদি ভাস্কর ছিল যত ভূবনে। বোধিল নিজ গতি সঙ্গীত প্রবৰে॥ স্ত্ৰলোক মোহিত মোহন কুহকে। স্তম্ভিত বীণাপাণি সুর্তান পুলকে॥ কৈলাস-ভাষ্য বির্ভিত নিমিষে। মধ্ঝত ভাতিল মনের হরিষে॥ আনন্দে তক্কুল মঞ্জরী হাসিল। আনন্দে তক্ল-ডালে বিহল সাজিল।

 হসস্ত চিহ্ন না থাকিলে অকারান্ত পদের হিংহত অল এবং শুকুবর্ণ মথাবথ উচ্চারিত ইবে। শিব-শিবাবাহন বৃষভ কেশরী।
চঞ্চল চিত উঠে হববেতে শিহরি ॥
দে ধানি গশিল শিবহাদি ভেদিরা।
জাগিল পশুপতি ঈবং চেতিরা॥
বববম্ শবদ নিনাদি সদানন।
মেলিরা ত্রিলোচন মুত্ মৃত্ মন্দ॥
নির্থিলা নারদে প্রমন্ত বাদনে।
বৈহল শক্ষর ভকতের সাধনে॥
সাদরে তৃবি তাঁরে কাছে দিলা হান।
ভোর হইল ভোলা শুনে বীণাগান॥

শিবনারদ-সংবাদ।

লভিকাপদী।

চেত্ৰ পাইয়া চেত্ৰানৰ নারদ-সঙ্গীত প্রবণে। ঈষৎ হাসিতে অধর মণ্ডিত কছেন স্বধীব বচনে॥ "অহে ভক্তিমান ভ্রান্তি-বিলাদে শিবের প্রমাদ ঘটনা। অনাগ্ৰুপিণী ভবপ্ৰদ্বিনী সতীরে নানবী ভাবনা ! আমারি এ ভ্রম ক্লেহেতে বখন না জানি তথন ভুবনে ; ভালবাদাময় জগতনিখিলে যমবাথা কত জীবনে! মমতা মায়াতে জগতেব লীলা খেলিছে আপনা শাপনি। মুমুভা মারাভে স্কুলি স্থানর প্তপ্কীনর অবনী ॥ ' জীবনে জীবন এ ডোববন্ধন ষদি না থাকিত জগতে। বিভ বিভাকর সকলি আঁধাব হইত অসার মরতে॥ বৃঝি তথ্য সার কুহকেব হাব नातांत्रव कीर-भागतन । রচেন কৌশলে সোনার শিক্লে

পরাণী বান্ধিতে বন্ধনে ঃ

অন তে নারদ সে প্রমাদ নাই তোমার গভীর বাদনে। ১৯৯৯ কপিণী সভীরে আবার নির্থিতে পাই নয়নে। প্রমা প্রকৃতি প্রমাণুমূল কারণ-কলাপ-মালিনী। চেত্ৰা ভাবনা মুমতা কামনা নিথিল অঙ্গুরক্ষপিণী॥ निवृषि आवात नीनाविनातिनी ব্ৰহ্মাণ্ড জড়ায়ে বপুতে। ক্রীড়ারকে রত প্রমন্ত মহিলা নিবিড রহস্তমধুতে ॥" বলি বিশ্বনাথ জাহুবী-প্ৰপাত জটা হ'তে দিলা খুলিয়া। ব্বব্য-ধ্বনি উঠিল তথ্ন কৈলাস আকাশ পুরিয়া। হেরি মহাদেবে এ হেন প্রকৃতি নারদ চকিত মানসে। किकांतिल इत्त कि मृत्रि ध'रित, দক্ষতা এবে নিবাসে॥ "হে শিব শকর মম ছঃথ হর কুপাতে কহ গো তনয়ে। দয়াময়ী শিবা প্রকাশিলা দিবা উদিয়া কিবা সে আলয়ে ॥ জননীর স্বেহ না জানি ভবেশ নাপশি কথন জঠেরে। ব্ৰহ্মার মানদে জনমে নারদ জননী কভুনা আদরে॥ সে কোভ আমার ছিল না দেবেশ দাক্ষ।রণী-স্বেহ-স্থাতে। জননী পেয়েছি যথনি কেঁদেছি প্রাণের পিপাদা ক্ষাতে। কহি ত্রিপুরারি, কোথা গেলে তারি, দরশন পুন: লভিব। সে রাজা চরণ মনের মতন. সাধনে আবার পুঞ্জিব॥ নারদে কাতর হেরি কন হর "অধীর হইও না ঋষি। (मथिए अथिन महामात्राकात्रा-ছারা আছে বিখে মিশি॥

বিশ্ব-আবরণ হবে নিবারণ
দেখিবে এখনি নিমিবে।
বিশ্বরূপধবা বিশ্বরূপহরা
ধেলেন আপন হরিবে॥
দেখিবে এখনি অন্ত মূরতি
আপনার আনন্দে মাতিয়া।
বিভারপ দশ ভ্বন পরশ
করেছে আকাশ ভূজিয়া॥
মহাবোগী যায় দেখিতে না পায়
দে রূপ দেখিবে নয়নে।
এই ভবলীলা যেবা বিরচিলা
দেখিবে সে আদি কারণে॥"

শিবকর্ত্ত্বক স্থৃষ্টি-আচ্ছাদন অপসারিত। ত্তিপদী পমার। *

> মহাদেব মহাবেশ ক্ষণকাল ধবিল। ভীমরূপ ব্যোমকেশ পরকাশ করিল। বিদারিত রসাতল পদ্যুগে ঠেকিল। থোর ঘটা ভীম জটা আকাশেতে উঠিল। ছড়াইল खंडाेेेंकांन मिरक मिरक ছूটिया। দীপু যেন তামশলা ভাতুকরে ফুটিয়া। হিমময় ধবলেব গিরি যেন উঠেছে। শৃন্তপুরী শিরে কবি বিশ্বপরে ধরেছে। মৌলিদেশে কলকল তর্গিণী জাহনী। ঝরিতেছে ঝবঝর শতধারা প্রসবি॥ শশিধও ধাক্ধাক্জলিতেছে কপালে। ত্রিনয়নে তিন ভামু জলে যেন সকালে। ব্ৰহ্ম-অণ্ড যেন খণ্ড মেকদণ্ড পডিয়া। বিশ্বনাথ উদ্ধৃহাত কৌতুহলে পূরিয়া । ওঁকার তিনবার উচ্চারিয়া হরবে। ব্যোমকেশ বিশ্বতমু ধীরে ধীরে পরশে শাসরোধ করি ভীম শুনিলেন অচিতে। বিশ্ব অঙ্গ লুকাইল মহাকাল শরীরে।

প্রত্যেক পংক্তিতে তিন তিন পদ; প্রার্থ পদে আট অক্ষরের পর মধ্য বভি এবং শেষ প্রে সর্ক্সানের পূর্ব বিত। শেব পদ কিছু ক্রত উলাবিত

একৈ একে জগতের আবরণ ধ্রিল।		*
চন্দ্ৰ-ভারা-রশি মে দ অ ভসনে ড্বিল ৷	পরতেক মণ্ডলে	ষহাকপ-ধারিণী।
গিরি নদ পারাবার ছিল যত ভ্বনে।		_
অমুক্ষণ অদর্শন মহাদেব-শোষণে ।	লীলানিরত সতী	শ্বরহর-ভামিনী॥
স্বৰ্গপুৰী ৰুষাতল হিমালয় ছুটিল।		
ধারাহারা বস্তব্ধরা শিব-অঙ্গে নিশিল।	5ক্রজঠর-ভাগে	নীলবৰ্ণ আকালে।
ঘুরে ঘুরে শৃক্তপথে বিশ্বকায়া ধায় রে।	-	_
ঝ ড বেন অ রণ্যের পল্লবেতে ছায় রে 🛙	শত শত স্কোর	ব্যোমরথ বিকাশে॥
জ গতেব আ ববণ নিবারণ পলকে।		
দাঁডাইলা মহাদেব বিভাসিত পু ল কে॥	খেলিছে কতদিকে	কতমত ক্রীডনে।
বিশ্বময় ঘোরতর অন্ধকার ঢাকিল। -		
শিবভালে প্ৰজলিত হতাশন জলিল।	দামিনীলভ। ধেন	ঘনঘটা-মিলনে॥
দীড়াইলা মহেশব করপুট পাভিয়া।	_	
ধরিলেন বিশ্বরাজ প্রমাণু ভূলিয়া॥	চক্ৰগতিতে রেখা	গগনেতে পড়িছে।
গরাসিলা বীজমালা গণ্ডুষেতে ভ্রিয়া।		_
দাঁড়াইলা মহেশার ভ্তুফার ছাড়িয়া।	বক্র কিরণ ঋজু	কিরণেতে কাটিছে॥
মহাকাশ পরকাশ বিশ্বশৃক্ত ভবনে।	_	
শৃষ্ঠময় ব্যোমগর্ভ নীল অত্রবরণে।।	পূৰ্ণ বৰ্জুলাকার	কভুডিয়শোভনা।
অ তি স্বচ্ছ পরিস্কৃত পারদের মণ্ডলী!	` "	_
ছডাইয়া আছে বেন দিক্ চক্র উক্লি ॥	স্থল্য নানাগতি	নানারেখা চালনা ॥
ভবদেব বিশ্বকায় আবরণ থুলিয়া !	-	_
कश्टिनन नांत्ररमद्य "८ र दम्य हाश्या॥"	কৃণু কৃণু গুঞ্ন	রথগতি স্বননে।
ব্যোমকেশরপ ত্যব্ধি মহাদেব বসিল।		
মহাঝৰি চ মকিত পুলকেতে পুরিল।	কোটি নক্ষত্ৰ যেন	বিহারিছে ভ্রমণে॥
7,111		_
,	অনস্ত পথে গতি	ষ্মনস্ত গণনা।
নারদের মহাকাশ দর্শন।		
ক্ৰতশলিত পয়ার।∗	মঞ্র মনোহর	ব্যোমধান খেলনা॥
4 - 11 10 14(4.1)	_	
	নির্থিলা নার্দ	বিক্সিভ মানসে।
মহাঋষি নারদ পুলকিত হরুষে।		
	অক্ত ক্র য তারা	সে গগন পরশেঃ
অনিমেষ লোচনে নির্থিছে অবশে ॥		
	কিবা আলো উজ্জল	त्मरे ५४ ज्वत्न।
চক্রদেরপাতে খুরি সারি সারি সাঞ্জিরা।	1111 11011 0141	
	स्वतः कारिक (म. फारिक	া নাহি জানে খপনে॥
দশদিকে শোভিছে দশপুরী হাসিয়া॥		'
* প্রভ্যেক পংক্তিতে হুই চরণ, প্রত্যেক চরণ	দিনমণি হেথা বায়	সেধা তার র জনী ।
* প্রভোগ প্রতিত ছুহ চর্মা, প্রভোগ চর্মা উত পাঠ্য। (—) চিহ্নিত স্থানে দীর্ঘ উচ্চারণ এবং	144411 6441 414	ऽारा शाम मणना। ——
	বাজিছে দশপুরী	—— নিকিয়া অবনী॥
শ্লারাস্ত শব্দের অস্তেন্থিত (অ) উচ্চারিত হইবে।	नामध्य गण्या	(नाम्बा ज्यन्।

	3. C
পরাণী কন্তই থেলে	দশপুরী-ভিতরে।
	- (-
মধ্র কভই ধ্বনি	कौवकर्छ विरुद्ध ।
বাযুপথে শিঞ্জিত	প্রাণিগণ-ভাষাতে।
_	
ভাসিছে তারা শশী	মধুকণ্ঠ ধারাতে॥
	_
নারদ ঋষিবর	শক্ষরে কহিলা।
"হে শিব, দাসাহুজে	কুপা যদি করিলা।
६५ । १५, माना ३५५	\$ 17 ACA ACA ATA
বাসনা মম দেব	কাছে গিয়া নেহারি।
মোহন মায়া ইহ বে	•বা আছে বিধারি ॥ "
মুজ্ হাসি রঞ্জিল	মহাদেব-বৰ্দনে।
বিচলিত কৈলাস	মৃত্মৃত্চলনে 🛙
ধীর মৃত্লগতি	रेकनाम ठनिन
মধ্য গগনভাগে	শিবপুরী বসিল।
-	
uniform mas	দশপুরী রা জি ত।
न्मनिटक ञ्चत	गणपूत्रा प्राप्तका
কেন্দ্ৰ নিমক্ষিত	কৈলাস স্থাপিত॥
	_
দেথিল ঋষিবর	श्रमिरमय नम्रत्न ।
-	
ম্রতি অপরপ	সেই দশ ভূবনে 🛭

মহাশূন্যে দশব্রক্ষাণ্ডের স্থান-নির্দেশ। দীর্ঘ দলিতবিগদী।

নিরখি নারদ ঝবি কতই আনন্দেরে। নবীন ভূবন এক প্রভাজালে কড়িত। র্জনীতে তারকায় ষেধানে গগন-গাঃ সিংহের আকার ধরি রাশিচক্রে ফিরিড. সেই থানে মনোহর, অভিনব শোভাধন নবীন ভূবন এক-প্রভাঞ্চালে জডিত-বিশাল জগতভাল দে গগনে ভাসিছে। कानक्रिभि कानौ तम ज्वत्म शामित्छ। নির্থে নারদ ঋষি আনন্দে বিভোর রে! উদয় গগনগায় মানবক্সার রূপে ধেখানেতে থাকিত, সে ভূবন বামদেশে ব্ৰহ্মাণ্ড নবীন বেং উদয় হয়েছে শুদ্তে দিক্চক্র শোভিত !— কলারাশি কোলে এবৈ ভবশোভা শোভিছে ! তারা রূপিণী বামা সে ভবন শাসিছে। নেহারি নারদ ঋষি কুতৃহলে মাতিল। মনোহর নভপটে আকাশের সেই ডটে আগে যেথা ধমুরূপে তারারাজি আছিল, সেইথানে মহাঝৰি কুতুৰলে দেখিল। ভীম ব্ৰহ্মাণ্ডকায়া এবে দেখা ভাগিছে। ষোডনী-রূপে বামা সে ভুবন হাসিছে। পুলকিত মহাঋষি পুনঃ হেরে প্রমাদে! বারিকুক্ত কাঁধে করি সেধানে গগনোপরি তারকাদ্ধপিণী যত স্থীগণে থেলিত. সেধানে সে রাশি নাই খেরেছে তাহার ঠাই-নিথিল ব্রহ্মাণ্ড এক কিরণেতে ভাসিত। অপরূপ প্রভামর বিশ্ব সেথা ফুটেছে।

বামা ভূবনেশ্বরী-রূপ তাহে সেক্তে

নেহারি নিকটে তার নারদ উন্মনা রে।

ফুটেছে অনম্ভ শোভা কিবা ভার তুলনা,

(नहादा खिमिछ हरत, नात्रम **खेन्**यना !"

অনস্ত ধরেছে 🕬

বিচিত্ৰ জগত-কাম্বা

রাশি-চক্রেতে ধথা মকর ভাসিত।

ভীমা ভৈরবী বিশ্ব দেখানে উদিত।

মহাঝৰি নির্থিল উচাটিত প্রাণে—

গুবু গগনকোলে বিপুল ব্রহ্মাও দোলে

মহাকালা বিথারিলা দেইমত বিধানে।

মহাঝৰি নেহারিল উচাটিভ প্রাণে!—

মিথুন ডুবিছে শ্জে দে ভ্বন ছালাতে,

ভগৎ ছলিছে বেগে ছিল্ল-ম্বান্মালাতে॥

স্তম্ভিত মহাশ্ববি সহামারা-নটনে! নবপে ভূবন আর ঘোরতর রূপ তার, তারার কর্কট শোভা ছিল যথা গগনে, সেথানে সে রাশি নাই মহামারা-নটনে।— সেই ঠাঁই একণে সেই রাশি ডুবেছে।

ধুমাবতী-ক্লপিনী সে ভূবনে বসেছে।

মহামূনি নির্থিলা সে ভ্রন-পারশে, নহারিতে মনোহর সে মহা গগন'পর, স্থানর শোভাযুক্ত মঙল ঝলসে, মহামূনি নির্থিলা সে ভ্রন-পারশে !—

বাশিচক্রেতে বৃষ যেইখানে থাকিত।

ভীমা বগলাবিশ্ব এবে সেথা উদিত।

বিশোহিত অন্তরে মহাঝবি নেহারে, বিপুল একাণ্ডকারা কাছে তার বিহারে। ^{ক্}বা মনোহর বেশ ধরেছে গগনদেশ, নহাশৃশ্ভ বিভাদিত দে ভূবন আকারে। নহাঝবি নির্থিলা বিমোহিত অন্তরে॥—

মাত্ৰী ভুবৰ এবে বে আকাশে ফুটেছে।

খানরাশি মজ্জিত কোন্থানে ডুবেছে।

नांत्रम निद्विशा वन वन नद्रता।

মণ্ডিতাকার থির মন্ত্র গগনে !---

नित्रिथिला नात्रम.

कोठुक शमशम,

রমাপুরী বঞ্জিত স্থলর ববণে,

नांत्रम नित्रशिला यन यन नम्रत्न॥

থেত বারণ চারি বারি ক্তে ঢালিছে।

ক্ষলাত্মিকাবির, মহাশূরে শোভিছে॥

শিব-নারদ-বার্তা। ললিত পয়ার।

मोर्ग ।---

নাবদ কাতর হেবি আছাশক্তি রকিয়া।
শিবে কন, এ কি দেব, কিবা দেখি মহিমা॥
তত্তিয়া করি দিবি ভবপুবি ভিতরে।
না দেখিত্ব হেন রূপ কোন ঠাই বিহরে॥
এ কি মায়া মহামায়া শুডাইল স্থগতে।
এ দশ ভ্বন-মান্ত্রেলহ দেব ভকতে॥
কুত্হলে বিকলিত প্রাণ উতলা।
হেরিব নিকটে গিয়া অনাছা মদলা॥

ভানি শিব কন ঋষি নিকটে না যাও রে।
কৌতৃকে বিলাস বেগে এখানে জ্ডাও রে॥
বৃঝিতে নিগৃত তব শিব বার্থ-বাসনা।
সে রহস্ত বৃঝিবারে কেন চিত্তে কামনা॥
নারিবে হেবিতে সর্ব্ধ হেবিলে যা সেধানে।
মনোবাথা পাবে বুথা ও তৃবন-সন্ধানে॥
ভন্নকরী মান্নালীলা অসহ সে সহনে।
বিধি বিষ্ণু পরাজিত নাহি সহে ক্লনে এ
সে রহস্তা নির্বিতে নিকটে না যাও।
এখানে যা পাও তাহে বাসনা মিটাও॥

बाब्रम ।-

পাব না কি সতীনাথ, সংস্ক্রপা হেরিতে ? ভক্তিমালা পায়ে দিয়ে জগদমা পৃজিতে ? হে হর শঙ্কর, পূরিল না বাসনা ! नांत्रत्वत्र दुशा क्या दुशा धर्मा-यानना !

শিব ।---

হবে নাহবে না ঋষি বৃথা তব সাধনা। ভক্তে কি রে ভক্তাধীন পারে দিতে বেদনা ? ভববেল এই স্থানে জানিও রে গেয়ানী। দিবাসদ্ধ্যা এইখানে সদা প্রাণি-মেলানি ॥ মহাবিভাদশপুরী নাকরি প্রবেশ। ৰগতের জটিলতা বুঝহ বিশেষ।

ললিত দীর্ঘ-ত্রিপদী।

দেখিলা গগন-গায় নারদ আনন্দ তায় আকাশ উপ্লল করি প্রাণিগণ চলেছে। মানব-নয়ন গাঁধে বসন ভূষণ ছাদে বরণ অঙ্গের আভা জ্যোৎসা বেন ধরেছে! ष्याकां में डेकन कित्र ल्यानिशन हरनरह । কঠোর মধুর ভাব প্ৰনে উভিছে বাস কঠোর মধুব রঙ্গে রসনাতে ভরেছে, হৃদর দর্পণচহারা বদনেতে পড়েছে। আকাশ উজল করি প্রাণিগণ চলেছে। যেন বা শিরীষ-ফুগ নানাবাকে বাধা চুল কিরণে কাহারও কেশ বিধরিয়া পড়েছে। विदिध-वद्रव श्रानी मृत्रभर्ध हरनाइ । নির্থিলা তপোধন ভার মাঝে অগণন িমানেতে প্রাণিগণ বায়ুপথে চলেছে। হ্বদয়-দৰ্পণক্ৰায়া বদনেতে ফুটেছে। हारम हारम अक्षात প্রতিজনে জনে তার নানাপাশ নানাফাঁসে গগদেশে পরেছে। বিবিধ শৃষ্টালহার করপদ বেঁধেছে— কত প্রাণী হেন রূপে বায়ুপথে চলেছে!

बार्ष ।-

श्रीय कन महारमय था कि रमिश योजना। কারা এরা কহ হেন সহে এত বাড়না ? এরপে শৃথলে বাধা, কে ইছারা কহ গো। ভবনাথ, তব দাসে ভবখোরে রাথ গো 🛭

শিব ৷--

জ্ঞানময় যত জীব সদানৰ কন। সকল হইতে হৃঃখী এই প্রাণিগণ। মাটার শরীর ধরে দেবের বাদনা। बिटिना मत्नत्र माथ श्रमत्त्रत्र (वमना । আমাধভাঙ্গা দাধ যত পরাণে জড়ায়। অনুথে কতই ছঃথে জীবনে থেলার। দেবতুল্য বাসনাম উর্দ্ধদিকে গতি। পশুহুল্য শিপাদায় দদা দথ্মতি ॥— मानद्वत नाम ध्वता जोवदनादक श्दत द्व, আবেখী পরাণী যত জগৎ ভিতরে রে।

নারদ।---

দয়াময় হর তবে দেই সব বন্ধনী। মানবের পীড়া যায়, সদা দিবা-রজনী॥ হর তবে তাহাদের দেহরূপ পিঞ্জে। হন-শিখা বাঁধা যাহে ধরা হেন বিবরে। ফেল তবে ষড়রিপু-রজ্জুমালা ছিঁড়িয়া। আশানল লহ, দেব হৃদি হ'তে তুলিয়া। হর তবে অন্ধকার জীবনের যামিনী ! হর গোকুহকজাল আলোকর অবনী। मानत्वत्र हिख्मात्य ८ रूपमत्र मन्तिद्र । ক্টিকের মৃতি যত চুৰ্ণ হয় অচিরে । निवात कारनरत, रमव, ভानिराठ रम मव ধরাতে তবে গো স্থা ইইবে মানব। M4 1-

শিব কন হের ঋষি অই সব ভূবনে। त्मथारन थ्रल रव कौर कोर-तिश-रक्ता ।! মহাবিভা-দশপুৰী হের অই আকাশে। আভাশক্তিরূপে সভী লীগা যাহে প্রকাশে।

নারদের মহাকালীর ব্রহ্মাণ্ড দর্শন। ननिङ जिन्ही।

নারদ তথ্য

भिव-वाटका अवि (इतिम अनखराने! त्म (मन प्रवर्ग হেৰিলা গগন অপূর্ক নবীন বেশ। অলে দশগুরী ৰুড়ি দুল্দিক

অভ্ত আভা তার।

অনস্থ উজল *নে* আলো-ছটাডে অনল নিবিয়া যায়॥ দেব-কাষিবর আভাশক্তি-দীলা দেখিতে তৃলিয়া আঁখি। স্থির নেত্রতারা গলক না পডে ক্ষণমাত্র শূন্তে দেখি॥ বিশ্ব অন্ধকার দেখে তপোধন দৃষ্টিহারাচকুদহে। গুরুন্ত কিরণে কাতর নারদ অন্ধের বাতনা সহে। বঝিয়ামহেশ ইবিতে তথন ললাট বিক্ষার করি। বাথিলেন নিজ **দে বিষম তেজ** ननाउ-तनाहरम धति॥ নিত্তেজ যধন সে ঘোর কিরণ নার্দে করেন হব। "অই দেখ ঋষি অনাদি ভূবনে **শক্তিলীলা নির্ভর**॥" অভয় জনয়ে হেরিলা নারদ শিব-বরে চক্ লভি। দেখিলা শৃষ্ণেতে ত্লিছে স্বনে ভীষণ ব্ৰহ্মাণ্ডচ্ছবি ॥ তাদ্ৰবৰ্থ যথা দিবাকর-কায়া ডুবিলে রাহর গ্রাসে। দেখিতে তেমতি দে ভীম ব্ৰহ্মাণ্ড অঙ্গে আভা পরকাশে॥ ফ্ধিবের ধারা চারি ধারে বঙ্গে বশ্বধারা যেন ধার। জীবে নির্থিলে সে খোর জগৎ ञ्चमञ् अकारत्र सात्र ॥ ংহিছে উচছাৰ, দে জগৎ পুরি অম্বর বিদার করি। প্রণয়ের শ্বড বহে যেন দূরে অর্ণানিখাস ভরি। লক তুরীনাদ ^{কিং}বা ষেন হয় প্রিয়া শোকের তানে— েমনি প্রচণ্ড দারুণ উচছাস নিনাদে গ্ৰহির কানে॥ িনিদারুণ ধ্বনি विश्व श्री खंबरन विवास खारन।

মৃৰ্চ্ছাগত হৰে পড়ে শিবপদে कौरवृत्म-(नाक-शांदन ॥ চেতন পাইয়া চেত্ৰ-আনন্দ শিববরে পুনর্কার। নয়নে গলিত দব অশ্রধারা হৃদয়ে বেদনাভার। নিরানন্দ-চিত্তে সদানন্দ ঋষি কহেন কাতর মন। জীবে দয়াকর "হে শিব শঙ্কর নিবার ভব-ক্রন্দন॥ ঝবিদেহ ধরি জীবের ক্রন্সনে হৃদয়ে বেদনা পাই। ত্ত্রিলোক-ভিতরে না কাঁদে পরাণী নাহি কি এমন ঠাঁই ? ত্ৰি আভতোষ তব ভক্ত আমি গৃঢ়তজ নাহি জানি। জীব-তু:থ দেব বোগ কিংবা শোক নিয়ত কাঁদে পরাণী। নারদের ঠাই ত্রিভুবনে তাই কোন থানে নাহি মিলে। বেড়াই ঘূরিয়া ত্রৈলোক্য যুডিয়া বিভূগান করি নিখিলে ৷ দতী শুভর্মী জননী আমার তুমি দেব পিতা সম। ঐ দীন পরাণে তব কি কারণ এরূপে আঘাতে মম।" দেব-ঋষীশর শুনিয়া কাত্ত্ব মহেশ্বর কন বাণী।---"ভন তপোধন না কাঁদে পরাণে নাহিক এমন প্রাণী॥ ব্রহ্মাও-ভিতর किंवा (मव नव कीवरमह भरत (यह । রিপুর গাতনা ৰমের ভাড়না क्षमस्त्र शस्त्र रह रहे ॥ সে দৃঢ়বন্ধন ় कोरवत्र कीवन দেখিতে বাসনা বার। সমূহ যাভনা জ্বর-বেদনা পরাণে জাগিবে ভার।

হেমচন্দ্রের গ্রন্থাবলী

আভাশজিবলে বে নিরম চলে জনাদি বাহার মূল। নিরথিবে বদি হের দশরূপ ভবাণবে পাবে কুল॥"

মহাকালীর ব্রহ্মাণ্ড। লঘ্ডদ পরার।

মহাঝবি নির্থিলা কালিকার জগতী। মহাশুলে খুরিতেছে ভয়কর মুরতি॥ मलमल देलमल আপনার ভ্রমণে। ছলে বেন চক্রনেমি অতি ক্ৰত গমনে। হেন বেগে বিশ্ব ঘরে নাহি ঘুরে কল্পনা। ধুমকেত ভীমগতি নহে তার তুলনা॥ আপনার বেগে ন্তিব মেরুদণ্ড উপরি। স্রোতোরপে থেলে ভাচে বেগধারা লহরী॥ সচেত্তন অচেত্তন ষত আছে নিধিলে। কৃমি কীট প্রাণিকায়া क्रमा म काला । বিশ্বরূপ প্রাণী জড় জন্মে যত সেথানে। ঘোররূপী মহাকালী शांटम यूथवरामांटन ॥ অঞ্চ হ'তে বেগে পুন: বেগধারা বিহারে। করাল বদনা কালী নতা করে ভন্নার ঃ পুরে ঘুরে শৃক্তদেশে বিশ্বকায়া ফিরিল। বিভীষণ চিত্ৰ এক নেত্রপথে ধরিল ॥ অন্তহীন হিমরাশি হিমালর আকারে। ধবলের চূড়া ধেন ধৃ বৃ ক্রে তুষারে ॥ নির্থিলা মহাঋ্ষি বিধারিত নয়নে। প্রলয়ের ঘোর বহিন হিম দহে দহনে॥ খণ্ড হ'লে হিমবাশি চণ্ডমৃর্ণ্ডি ধরিয়া। ভীমশব্দে পড়িতেচে মহাশ্রে থসিয়া ৷ ব্রহ্মাতের লয় যেন कानारखत्र निनारमः। বিশ্বকেন্দ্রে বিশ্বনাথ পুরি কাঁপে শবদে। অভিধানি খনখোর মহাকাশে ছটিল। ममिरिक मम विश ঘন ্থন ছলিল।

(১) কালী মূর্ত্তি। জত বনপদীক্ষণ। *

নারদ থবিবর

বিশ বিদারণ হুছ্কার প্রবণে।

মানস বিচলিত নেত্র বিকশিত

সংযুত প্রতিপথ নির্বিখনা গগনে ॥

নির্বিখন অগরে অন্ত মুর্বিভ ধবে

চণ্ডিকা মহাপুরী পুনরণি ফিরিল।

শ্বরণি তুংসহ দৃজ ভন্নাবং

শক্তি কেলিক্রমে প্রকটিত করিল।

দেখিল প্রোভোমর খেলিছে বীচিয়া

শোণিত অর্থব কলকল ভাকিছে।

ভজ্জি শস্ক শাঁথ মূথ বাাদান কাৰ — — — — রক্তজনধিদেহ হেলি তেলি চলেছে।

পল্লগ স্তভীষণ ফণা প্ৰসাক

. উৎকট গৰ্জন তরঙ্গে ত্লিচে।

কুৰ্ম কমঠিকুট উৰ্মিতে ২৪গাঁ

--লোহিত ভ্যাত্য সংপুট খুলিছে ৪

— — — — — — শাপ্র শাক্লার

লোলরসনা তিমি সিন্ধতে ভাগিছে

* (—) এইরূপ চিহ্নিত স্থানে দীর্ঘ উচ্চারণ পদের অত্যেষিত 'অ' স্পষ্ট উচ্চারিত হইবে। উদভিশ্বপ তাহে

বক্তপিপামু হ'মে শোণিত শুবিছে ॥

ক্ৰিচন্তা শীলা সেহ না বুঝে মানব কেহ

ক্ৰিয়া প্ৰকৃতিক্ৰপ সে জগতে ফুটিছে।

সংহার সংহার' ভিন্ন নাহি আর

রক্ষিতে নিজ নিজ এ উহারে গ্রাসিছে॥

ললিত পয়ার।

নাবদ। দ্যাক্তিত অধি মহাদেবে কহিলা। এ কি দেব ঈশ্বর, মা আমার মহিলা॥ উৎকট ইহলীলা তাঁহাবে কি সম্ভবে ? সতী কি অশিব শিব, আছিলেন এ ভবে ? জীব-ছঃখ তবে কি গো অনাভারি রচনা? অদম্য তবে কি দেব পরাণীব ধাতনা ? জগৎ-স্জন-লীলা তঃল দিতে প্রাণীরে ১ না জানি কি ধর্ম তবে ধর দেবশরীরে। প্রচণ্ড বিভাত-ভাতি কেন দিয়ে পরাণে। কাদাইছ জীবলোক মায়াডোর বন্ধনে ? তত্ত্বাতত্ত্ব নাহি বুঝি তব ভক্ত ঈশ্বব। না বুঝি ভোমায় দেব কি কঠোর অন্তর॥ ভক্তগণে দিয়ে কেশ নিজে কর ভঞ্চিমা। না জ্বানি জগদৃদ্ধ এ কি তব মহিমা।" **শিব। শারহর শ**ঞ্চর কহিলেন নারদে---সর্ব্যন্তঃথ দমনীয় মৃক্তি আছে বিপদে॥ জানিবি রে নির্থিবি যবে অক্ত ভূবনে। বিরাজিতা সভী যাহে জীবছঃ ব হরণে।।

ললিত-পয়াব।

হেন কালে স্থবিমল মহাঋষি নির্থিপ কালরূপিণী চণ্ডী কালিকার ভূবনে। বিথাতিত নরদেহ পড়ে পচা শব সত ক্ষিরে মুধলধারা ধরা, বেন আবিণে॥

জনমিছে পুন: তায় পশু পকী নৱকার সংগ্রামে পুনরায় এ উহারে বৃধিছে। শীবন-ধারণ হেতৃ ভবের **কলঙ্কতেত** কাহারও নাসিকা নাই কাহারও মুগু ঝুলিছে॥ কেহ নিজ মুণ্ড কাটে कोरत्र शुनः त्रक ठाएँ শাকিনীরূপিণী খোবা কালিকাবে ঘেরিয়া। অন্তি ঝরিছে অঙ্গে. মাংস ঝরিছে সকে কাঁদে জীব উচ্চনাদে তারা নাম ডাকিয়া॥ কালীব সন্ধিনী বঙ্গে ছুটিছে তাদেব সঙ্গে খিলি খিলি হাসি মথে কি বিকট ভঙ্গিমা। মুখে মুগু চিবাইয়া করে করতালি দিয়া ডাকিনী ধাইছে কত---স্কণী রক্তিমা। চলিছে ডাকিনীরুন্দ ৰুগতে ষতেক হৃদ্ ললাটে ঘোর ছটা উৎকট ছটিছে। কুধির-বদনা বামা তিনয়না ঘোৰ ভাষা বহিং-বরুণ-বায় সঙ্গে সঙ্গে ঘূরিছে। ব্দুডপ্রকৃতির চলে শবদেহ পদতলে---নুষ্ওমালিনী ধনী ভত্তাবি নাচিছে। বদনেতে বিদারণ । সংহার নিরূপণ শিশুকর কডমডি চর্ববে গিলিছে ।

লতিকাপদী।

নাবদ ৷-- সদানন্দ ঋষি নিবানন্দ-মন

কহেন তথন শদ্ধৰে।

"দেব আশুতোৰ, নিবাৰ এ লীলা,
ব্যথা বড বাজে অস্তরে॥
এ বোৰ রহস্ত পাবি না সহিতে,
দেধাও আমারে জননী।
বিনি সতীকপে সংসাব-পালিক।
সর্কাজীবহুংগহারিনী॥
শিব।—না হও নিবাশ, অবে ভক্তিমান্
ভূতেশ কহেন নাবদে।
তথেরি কাবণ নহে জীবলীলা,
মোচন আছে যে আপদে॥
কণামাত্র ভাব হেরিলে নম্বনে,
শ্রান্তার আদি জগতে।
পূর্ব-ত্যগ ইহ-জগত-ভাণ্ডাবে,
দেখিতে পারিবে পশ্চাতে॥

200

चटक्क वक्तत्व मनन्त्री, ক্ৰমে জীব পূৰ্ণ কামনা। শোক জঃৰ তাপ সকলি দমন, এমনি বিধানে বোজনা। পর পর পর এ দশ জগতে জীবের উন্নতি কেবলি। অনস্ত অসীম কাল আছে আগে. অনম্ভ জীবিতমগুলী। নারদ।—ভনিয়া নারদ কহিলা শঙ্করে, নারিব হেরিতে নম্বনে। প্রচণ্ড প্রভাবে আতাশক্তিলীলা নিগৃড় এ সব ভ্বনে ॥ कह (क्रमंबत, मारम क्रमा दिति, বচনে জুড়ায় পরাণী। কোন বিশ্বমাঝে কিবা রূপ ধরি ক্রাড়।তে নিরতা ভবানী॥

"অধ্বরে দেখ রে নেহারি। পরে পরে পরে জগতীমওল রংলছে গগনে বিধারি॥ ভিন্ন ভিন্ন রূপ ধরি শক্তিরূপা জীবের নিতার কারণে। হের ঝবি অই তারার ভ্বন উঞ্জিছে কিবা গগনে।

শিব।—দেব আশুতোষ কহিলা ঋষিরে

(২) তারামূর্ত্তি। ধীর ধনপদীক্ষল।

इक्षिम द्रविक्ति पृत्र जिनदरन ।

আনত চিতামাঝে প্রে বিপদ সাজে

শোলরদনা বামা খোর হাসি বদনে ॥—

আানের অস্কুর ধরি জীবহুদর ভরি

---বিরাজেন শত্তরী সতী অই ভূবনে ॥

(৩) ষোড়শী।

(८) ज्वरनध्री।

তা জিনি স্কর উন্নত শোভাধর

——
ভ্বনেশ্বরী শ্ববি, হের তার নিকটে।

পীনত্তনী বাষা প্রত্না তিনহনা

প্রভাত-আভা দেহে, ইক্ল্-ভাতি কিরীটে।

অঙ্গাভয়বর পাশ-সম্মিত কর

সর্বাহললা সতী জীবতুংথ বিনাশে।

সদা স্হাস্তব্তা এখানে বিরাজিতা—

সেহ জাগারে ভবে সতী ষম বিকাশে॥

(৫) ভৈরবী-মূর্ত্তি।

ভার উপর স্থার নেহার ঋবিবর
কিবা শোভা স্থলর ভৈর ী-ভূবনে।
নাল্যে স্থলাভিত মন্তক বিভূবিত,
রক্ত-লেপিত তান, বুচা রক্ত বদনে।
কান-অভর-দাত্রী জীব-উদ্ধারবর্ত্তী—
সহস্র মিহির তুল্য শোভা দেহে ধারিণী।
রক্ত-কিরীটমর চন্দ্র উদর হয়
ভক্তি-বিধারিনী ভৈরবী-ক্রপিণী।
(৬) মাতঙ্গী মূর্ত্তি।

তে) মাতস্পা মৃতি।

স্থান মনোহর, হের নিকটে ভার

স্থান কিবা দোহল্য গগনে—
বীণা বাজিছে করে বাদন থরে থরে

ক্রল দলমল স্থার বদনে॥

কলহংস শোভা সম স্থান মাল্য নিরুপম

জামাদী শন্থের মালা ছই করে পরেছে।

থীতি ভবতলে সর্বজীবহুঃখ দলে

মাতদীর রূপে স্থী পদতলে বংসছে।

(৭) ধুমাবতী।

কাছে ভার দলমল যে ভূবন উজ্জ্বল আরও স্থনির্মণ জিনি অন্ত ভ্রনে।— मीर्घ। विज्ञन ज्ञम, কৃটিলনয়না বামা ধ্যাবভী ধরণে ॥ লম্বিত-পয়োধরা কুৎপিপাসাতুরা विभूक्टक मी वामा की व-ए: थ विजारम । শ্ম ক্লান্তি প্রাণি কেশ যুচাইতে কৃক্ষ বেশ বিধবার ব্লপে নিতা সতী হেথা বিকাশে। বিবর্ণা, অতি চঞ্চলা হল্ডে স্থাপিত কুলা, রথধ্বজোপরি কাকচিছ প্রকাশে। (৮।৯) বগলা ও ছিন্নমস্তা। শীব-নিন্তারে সভী ঐ হের চিন্তাবভী দারিড্যদলনীরূপ বগলার শরীরে। टब्र व्यात छक्षामाल मन्द्रमात्राजात द्वाल ছিল্লমন্ত। ভরত্বী স্থাত নিজ ক্ধিরে। বিকট উৎকট শৃষ্টি বিপরীত রতিমূর্টি জগতের সর্বাপাপ নিজ অংক ধরিয়া p আপনার মুণাকর নগ্রবেশ বোরতার विश्वयव रम्थारेट्ड निववक छविवा ।

(১০) মহালক্ষী।

নেহার তাবপরি শোডে কমলার পুরী

রোগ শোক তাপ হরি, জীবিতের জীবনে ॥

কিবা বেশ স্থমোহন লীলারসে নিমগন

পরমাপ্রকৃতি সভী সর্মশেষ ভূবনে ॥

স্বর্ণ বর্গোত্তম কটিতে পিদ্ধন কৌম

স্বর্ণ-ঘটে চারি করী শিরে নীর ঢালিছে।

পদ্মাসনা, করে পদ্ম সভীসর্মস্থসন্ম

সম্মাতে ভূবারে ভব জীব হুঃখ হরিছে॥

ললিত-দার্ঘ ত্রিপদী। मित्यक्षि वौषा धति আনন্দে হৃদয় ভরি তারে তারে মিলাইয়া ঝকার তুলিলা। পানে জুড়াইয়া ক্ধা নিবিড রহস্ত-স্থগ মধুর সঙ্গীতস্রোতে মহাঝ্যি ভূবিলা। ছুটিছে যেন নিঝর ছুটিল বীণার স্বর হৃদর প্লাবন করি স্থগভীর বাদনে। প্রকৃতির আদি লীলা ভবে কেবা নির্বিশী মহাঋষি গাইলেন বিকলিত বচনে॥ কালেতে হইবে লয় "জগৎ অশুভ নয় জীবদুঃখ সমুদয় ত্রিগুণার ভজনে। এই কথা বুঝে সার আ্বানন্দে নিনাদ তার সত্যপথে রাখি মন অনাত্যের শ্বরণে। লিখি বুকে মোক্ষ নাম পুরা জীব মনস্কাম 'নিধিল নিস্তার পাবে' শিব কৈল আপনি। শক্ষা করি তারি পথ চল নিতা মনোরথ

জীবজন্ম ভর কি রে ?— লগদখা জননী।

তাক্ বীণা উচ্চেম্বরে তাক্ রে আনন্দভরে

নারদ ভূকে না খেন সে তত্ত এ জীবনে।

সকলের মূলাধার সকল মলল সার

নারদের চিত্ত খেন থাকে সেই চরণে।

জভ জীবে দেহ মন যা ইততে প্রকটন

অমুক্ষণ সেই রূপ হদিমাঝে জাগা রে।

পাই যেন পুনরায় প্রিভে সে রালা পায়

জগৎ মধুব কবি তারা নাম শুনারে!

ভঙ্গদী পয়ার।

নারদের গানে শিব শক্কর মোহিল। বিদীর্থ রসাতলে পদতল পশিল। ধীরে বিপুল দেহ ক্রমে বাডে সঘনে। ধৰ্জটি জটাজট পুন: ছুটে গগনে॥ চ্ছ প্রকৃতি-লীলা মিলাইয়া চকিতে। **অম্বে বায়ু মে**ঘে ছড়া**ইল অ**রিতে॥ উজ্জ্বল দিনমণি পুন: পেয়ে কিরণে। দেখা দিল ফুন্দর জগতের নয়নে। পুনঃ সে ঘাদশরাশি নিজ নিজ আলরে। মনোহর বেগ ধরে জগতের উদয়ে। ধীরে মলম্ববায় প্রবাহিত স্বপনে। ধরণী ধরিল শোভা সহাস্ত-বদনে॥ ক্সে ফুটিল লভা ভরুকুল হর্ষে। ছুটিতে লাগিল পুনঃ স্লোতোধারা তর্গে পতঙ্গ কীট পভ পুনঃ পেয়ে চেডনে। গুঞ্জিল চিতসুথে প্ৰাকটিত জীবনে॥ মিলাইয়া দশরূপ উমারূপ ধরিল। হরগৌরীরূপে সভী হিমালয় উদিল 🛚 ভাগিল কৈলাসপুরী উমা হেরি নয়নে। কেশরী বৃষক্ত ছুটি লুটাইল চরণে॥ 'ব্বৰ্ম্বৰ্বম্' ধ্বনি শিব ধ্রিল। মহাঋষি পুলকিত শিবশিবা পুজিল।

কবিতাবলী

ভারত বিষয়ক

ভারত-ভিক্ষা। 🕳

(আরম্ভ)

কি শুনি রে আন্ধ পুরি আব্যাদেশ
এ আনন্দ ধ্বনি কেন রে হয় ?
বৃটিশ-শাসিত ভারত ভিতরে
কেন সবে আন্ধি বলিছে 'ক্সম্ন' ?
গভীর গরকে ছুটিছে কামান
কিনি বজ্ঞনাদ, গিরি কম্পনান
বিদ্ধা-হিমালয় চূড়াতে নিশান

"রূল বৃটানির।" বলি উড়ার। শত শত শত উড়িছে পতাকা, ভূবন-বিথ্যাত ঠিহু অঙ্গে আহা, নগরে নগরে কোটি অটাণিকা

শোভিয়া, হুচারু অনস্তকার। ভাসিছে আনন্দে ভারত বেড়িয়া দেব-অট্রানিকা সদৃশ শোভিয়া,

ষ্মৰ্থ-ছন্নশী কেন্তনে সাজিয়া ফুঞা, গোদাবন্ধী, গলাব গায়।

নদীনদকুল কেতনে সজ্জিত, কোটি কোটি প্রাণী পুলকে পৃরিত, বিবিধ বসন-মুষণে ভৃষিত,

চাতকের স্থায় তীরে **দাঁ**ড়ায়।

ম্কা-**অ**স্তরীপ হ'তে হিমালয়

কেন রে আজি এ আনন্দমর ?
(শাখা)

গা**গিছে ভা**রতে বৃটন-কুমার,

ত্তন হে উঠিছে গভীয় বাণী;

১৮৭৫ সালের ভিসেম্বর মাদে প্রিক্ত আফ বিঃস্কলিকাভার আগমন করেন। তত্পলক্ষে টি বিতা লিখিত হয়।

রাজবাজেধ**ী**, ভারতরাণী।" যেই বুটানিয়া কটাক্ষে শাসিয়া व्यवाद्य म्बिट्ड क्लिसि-क्ल. অত্র জিনিয়া পৃথিবী ব্যাপিয়া অমিছে যাহার সেনানীদল; সে বুটনবাসী আসি এ ভারতে कांगात कांगिन राख्यत निथा. ষার দর্পতেজ ভারত-অঙ্গেতে অনল-অক্ষরে রয়েছে লিখা. বিনিল সমর যে ভীম-প্রহরী ক্ষরিরাক্ত ভারত-গড়ু মুদকি, মুলভান করি থান থান. শিখ-গলে দিল দুঢ় নিগড়; रंगात उर्जनी नरेना परगाना वांट्याबावा यात्र कहांटक कांट्रा, প্রচণ্ড দিপাহী-বিপ্লবে যে বহি নিবাইণ ভীত্র প্রচত দাপে। যার ভয়ে মাথা না পাবি তুলিতে हिमगिति (इँ विष्कात थात. পডিয়া বাহার চরণ নথরে ভারত ভুবন আজি দুটায়— সেই বুটনের রাঞ্কুল-চূডা क्रमात्र चानिष्ड क्लावि-नात्व, নির্থিয়া তায় জুড়াইতে আঁ।বি,

গগন ভেদিয়া, "জয় ভিক্টোরিয়া

(পূর্ণ কোরস্)

ভারতবাদীরা দ।ড়ায়ে পথে।

वांका दत च्यानत्म गडीत मुम्ब, भूतनी मधुत स्त्रत्व मात्रव, বীণা পাথোয়াজ মৃত্ করতাল, মৃত্ল এফ্রান্স লালিত রসাল, ব্যহ্ম সপ্তস্বরা যন্ত্রী মনোহরা, ভ্রমব গঞ্জিয়া বাজা রে সেতারা,

বেহাগ খাম্বাজে প্রিয়া তান।

বুটনকুমার আসিছে হেথার সাজ পেশোরাজে পরীর শোভার, জ্জল-রঙ্গিনী মোহিনী যতেক, কিল্লর নিন্দিয়া শুনাও বারেক — শুনাও বারেক মধুর সন্ধীত, আজি এ ভারতে ভূপতি অতিথ, তান-লয়-রাগে প্রাও গান।

(আরম্ভ)

চারিদিক যুডি বাজিল বাদন,
বাজিল বুটিশ দামামা কাঁডা,
অপ্কভ্মণ্ডল করি কোলপাড
ভারত-ভ্বনে পড়িল সাডা—

"কোথা নূপকূল নবাব আমমীর, রাজ দববারে হও রে হাজিব, করিয়া সেলাম নোয়াইয়া মাথা ছাডি সাঁচচা জুভা চূদি পালা গাঁথা বিলাতী বুটেতে পদ সাজাও।

"জাফু পাতি ভূষে হইয়া হবিষ প্রশি সন্ত্রমে কুমার বৃটিশ, ববাভয়প্রদ চাফু কর্ডল, তুলিয়া তুঙ্গেতে হইয়া বিহ্বল অধ্ব-মত্যেতে ধীরে হোঁয়াও।

"ভবে মোক্ষকণ বাজ-দরশন, ভারতে দেবভা বুটন এখন, সেই দেবজাত মহিয়া-নন্দন দর্শনে পূর্ব্ধ-পাপ ঘুচাও।

"কোথা কাশীরাজ কোথা হে নিদ্ধিলা ? কোথা হোলকার রাণী ভোপালিরা মানী উদিপুর বোধ মহীপাল ? হিন্দু ত্রিবাঙ্ক্ব শিথ পাতিরাল ? মহত্মল রাজা কোথা হে নিজাম ? কোথা বিকানীর কোথা বা হে জাম্ ? ধোলপুর রাণা; জাঠের রাও ? "পর শীত্র পর চারু পরিছেদ,
অর্বোতে সাজাবে আজি রাজ্পদ॥
কর দিব্য বেশ হীবা মুকুতার,
ভাবত-নক্ষর বাধিরা গলার
রাজধানী-মূবে ধাবিত হও।
"বোটকে চডিয়া ফের পাছে পাছে
কিরণ ছড়ারে থাক কাছে কাছে,
ভারাপর যথা নিশাপতি কাতে

ছারাপথ যথা নিশাপতি কাতে,
বেরি চারিধার শোভা বাড়াও।

ক্রের রাজতেট নবাব, আমীর,
রাজদরবারে হও হে হাজির—"
বাজিল বুটিশ দামামা কাডা,
করি ভোলপাড নগর পাহাড,
ভারত-ভ্বনে পড়িল সাডা।

(배 ()

মেদিনী উজাডি ছটিন উল্লাসে গ্ৰাজেন্দ্ৰ কেশরী যত. দাভাইতে পাশে, পারিষদ-বেশে শিরোগ্রাবা করি নত , দেপ রে ইক্সিতে ছটিল পাঠান আফগানস্থান ছাডি. ক্ষত্রিয় ভূপতি ছটিল কাশার হিমালয়ে দিয়া পাডি: দ্রাবিড, কম্বণ ভোট মালোবার. মহারাষ্ট্র, মহীশুর, মিথিলা, মগধ, কলিক, উৎকল,

অবোধ্যা, হতিনাপুর .
বুলেলা, ভোপাল, পঞ্চনদত্তন,
কচছ কোঠা, সিকুদেশ,
চাখা, কাভিয়ার, ইন্দোর, বিটোর,
অরবিল-গিরিশেষ,
ছাতি রাঞ্চগণ ছুটিল উন্নাদে,

রাজধানী-দিকে ধায়, পালে পালে পালে পতজের ম[্] নির্থি দীপশোভার;

ছুটিল জুবেংতে, রাজপুরুর্গ চন্দ্র-স্থানবংশ-বীর। জুলধি—বন্দর, হিমাজি ভ্^ধ

–বন্দর, হিমান্তি ভ্^ধ দাপটে হয় অভির ! কোথা বা পাণ্ডব কৈলা রাজ্ত্র হাপরে হজিনা-মাঝে। রাজত্য বজ্ঞ দেগ একবার করিতে করে ইংরাজে!

(পূর্ণ কোরস্)

অপ্র স্বন্ধ মোহন সাজ সাজে কলিকাতা পরিল ৽াজ ; দাবে দাবে দাবে গবাক্ষ-গায় বঞ্জিত বসন চাক শোভায়. দ্বাবে থাবে থাবে গৰাক-কোলে তরুণ পল্লব প্রনে দোলে: ধ্বজ। উডে চুডে বিচিত্ৰকায় ঝক ঝক্ ঝলে কলস ভার , কোটি ভাবা ষেন একত্রে উঠে. (मोध-इएड-इएड न्याइ मृत्रे ; গহ, পথ, মাঠ কিরণময়---নিশিতে ধেন বা ভাত্ন উদয়। উঠিছে আত্সবাজী আকাণে---সব ভাবা **ৰে**ন গগনে ভাসে। পতাক লিকাত। কলি বাজধানী। স্থবপুৰী আজি প্ৰাজিলে মানি--হাদে দেখ নিশি লাজে প্ৰায়।

দেখ দেখ দেখ চত্ৰদ্দ দলে
বাজীপুঠে সাজি, বাণ পুজ চলে;
পাছে পাছে কাছে বেটকপৰ
চলে বাজ্যৰ জলে জহব
শিব শোভা কবি উজলি ভাজ,
ভবকে ভবকে পৃথিব মাঝ,
নগব দশনে কবে গমন,
ঝমকে ঝমকে বালে বাদন,
বুটিশেব ভেবী শমন-দমনে,
জল বুটানিয়া, জল দি ওয়েভস্
সঞ্চীত ভবকে নিনাদ ধায়।

(আবেল)

ঠ মা উঠ মা ভাবত-জ-নী মহিনীনন্দন কোলেতে এল; াধার রন্ধনী এবাব ডোমাব বিধির প্রসঃদে ঘূচিয়া গেল।

আদিবে ধব মা ক্যারে স্স্তাধি व्यानीकीन वांगे डेकावि मध्य. বছ দিন হাবা হয়েছি আপন তন্যে না পাও ধবিতে বুকে; তাজ শ্যা মাত: অবণ উঠিল কিবৰ ছড়াতে তোমাৰ ভূমে. কেঁদোনা কেঁদোনা আব গোজননী আ চেচর হইয়া শোকে ব ধুমে । চিবছঃখী তমি চিব-প্ৰদীনা. পবেব পালিতা আশ্রিত সদা. তুমি মাঅভাগী. অনাথা, চকালা, ভজন-প্রন-যোগ-মুগধ্।। মহিধী তোমাব য়াহার আশ্রয়ে জগতে এগন(ও) আছে মাজিয়ে, পাঠাইলা তব দু:খ ঘুণাইতে আপন তন্ত্রে বিদায় দিয়ে . দেখাও জননী. ধবিলা গো ষত বিপু-পদ চিছ ললাট-ভাগে. দেপাও চিবিয়া. ক্ত বকঃস্থ দিবানিশি সেথা কি শোক জাগে। रिक्रमा उक्रमा ভাবত-জননী. প্রসন্ন-বদনে বাবেক কেব. **महिशोन**कत्न কোলেতে কবিয়া প্রাতে শুক্রতারা উদিল, ঙেব !

(শাখা)

ভাজি শহ্যাভল ডাকি উতৈঃ ধ্বে নিবিড কুকল সরাথে অন্তবে, গভীর পাণুব বদনমণ্ডল, আলোক প্রকাশি, নেত্রে অশুগুল, "কেন বে এথানে আসিছে কুমান ?

ভাবতের মূগ এবে অন্ধকাব।
কি দেগিবে আছে— খাছে কি গে দিন ?
জ্বন্ধী কবিয়া ছটিত যে দিন
ভাৱত-সন্ধান নৈক্তি দশান,
মুখে জন্মদনি তুলিলা নিশান,
কালায়ে মেদিনী গাহিত গাণা।

ভারত-কিরণে জগত কিরণ, ভারত জীবনে জগত জীবন, আছিল বধন শাক্ত-আলোচন,
আছিল বধন বড় দর্শন—
ভারতের বেদ ভারতের কথা,
ভারতের বিধি, ভারতের প্রথা,
খুঁজিত সকলে পৃঞ্জিত সকলে,
ফিনিক, দিরীয়, যুনানী-মণ্ডলে,
ভাবিত অমূদ্য মাণিক যথা।

ছিল যবে পরা কির ট কুণ্ডল,
ছিল যবে দণ্ড অথণ্ড প্রবল—
আছিল রুধির আর্য্যের বিরাম,
অলস্ত অনল-সদৃশ শিখার,
অগতে না ছিল এ হেন সাহসী
ঘাইত চলিয়া এ দেহ পরনি ,
ডাক্তি যথন 'জননী' বলিয়া
কেন্দ্রে কেন্দ্রে ধনি ছুটত উঠিয়া,
ছিলাম তথন অগধ-মাতা।

পূৰ্ব্ব-সহচত্ৰী হোষ দে আমার মরিরা বাঁচিয়া উঠিল আবার— গিরিশেরও দেবি জীবন-সঞ্চার। আমি কি একাই পড়িয়া রব ?

কি হেন পাতক করেছি তোমার ? বল্ ওরে বিধি বল্ রে আমার ? চিরকাল এই ভগ্লতও ধরি. চিরকাল এই ভগ্লচ্চা পরি, দাস-মাতা বলি বিণাাত হ'ব।

হা রোম,—তুই বড ভাগ্যবতী !
করিল যধন বর্কারে তুর্গতি,
ছিম কৈল তোর কীর্প্তিন্ত যড,
করি ভয়শেষ রেপু সমাবৃত
দেউল, মনির, রদ, নাট্যশালা,
গৃহ, দর্ঘ্য, পথ, সেতু, পরোনালা,
ধরা হ'তে বেন মুছিরা নিল।

মম ভাগ্যদোৰে মম জেত্গণ,
কক, বকঃ, ভাবে পদায় স্থাপন
করিয়া আমার, তুর্গ নিকেতন,
রাধিয়া মহীতে—কলহ-মতিত,
কানী, গ্রাক্ষেত্র চণ্ডাল স্থণিত,
(শরীরে কালিয়া—দীনতা প্রতিমা)
ধরণীর অক্ষেবেন প্রাধিল

হার পাণিপথ দারুণ প্রান্তর,
কেন ভাগ্য সনে হলি নে অন্তর ?
কেন রে, চিডোর তোর হুথ নিশি
পোহাইল ঘনে, ধরণীতে মিশি
অচিহ্ন না হ'লি — কেন রে রহিলি
ক্রান্তে ঘণিত ভারত নাম

নিবিছে দেউটি বারাণদী তোর, কেন তবে আর এ কলক ঘোর, লেপিয়া শরীবে এখন বয়েছ পূর্বকথা কি রে সকলি ভূলেছ [।] আরে অগ্রবন্, সঃযু পাতকী রাহ-গ্রাস-চিক্ সর্ব-অলে মাধি, কেন প্রকালিছ অবোধ্যাধাম

নাহি কি সলিল, হে বমুনে গলে, তো(মা)দের শরীরে—উথনিরা রলে, কর অপস্ত এ কলঙ্করাশি, তরকে তরকে অক বক গ্রাসি, তারত-ভ্রন ভাসাও জলে

হে বিপুল সিদ্ধ করিবা গর্জন ভুবাইলে কত রাঞ্চ, গিরি বন, নাহি কি দলিল ভুবাতে আশ্রর প আছের করিবা বিন্যা, হিমালস,

পুকারে রাধিতে অতল জলে ?
(পুধ কোরদ্)
কৌদ না কেঁদ না, আর গো জন-

মহিবীনন্দন কোলেতে এল,
তাঁধার রজনী এবার ভোমা
বিধির প্রদাদে ঘৃতিয়৷ গেল,
মহিবী ভোমার, বাহার আঞানে
এ শোক সহিরে মাছ মা ঐবে,
পাঠাইলা তব অঞা মৃহাইনে
স্মাপন নম্মনে বিহার ধিরে,

ত্যজ শ্ব্যা মাত:, অরুণ উঠিল কিরণ ছড়াতে তোমার ভূমে; কেঁদ না—কেঁদ না আর গো জননি আছেল হইরা শোকের ধ্যে।

(আরম্ভ)

"এলো কি নিকটে — এলো কি কুমার ?" বলিল ভারত-জননী আবার, "কই, কোথা, বংস, আয় কোলে আয়, অন্তর অলিছে দারুণ শিথায়—

পরশি বারেক শীজন কর, ডাক্ একবার, ডাকিস্ যে ভাবে

আপেনার মারে ঘ্টা সে অভাবে— শতবর্বে বাছা নহিল পুরণ, (ভারতের চির-আশা-আকঞ্চন) ভূলিয়া বারেক বুটিশ গ্র্জুন,

ভারত-দক্তানে ক্রোভেতে ধর।
কৃষ্ণবর্ণ বলি তৃচ্ছ নাহি কর ,
নহে তৃক্ষ কীট—এদের অস্তর
দরা, মারা, স্বেহ, বাৎসন্য, প্রণর,
মান, অভিমান, জ্ঞান শক্তিমর—
এদেরও শরীরে শিরার শিবার
বহে রক্তপ্রোত,—বাসনা তৃঞ্যর

দ্বণা, লজ্জা, ক্লোভে হ্বনর দতে , এই ক্লফবর্ণ জাতি পূর্বের ববে, মধুমাথা গীত শুনাইল ভবে, শুক্ত বস্ত্রকরা শুনি দেব-গান অসাড় শরীরে পাইল পরাণ, পৃথিবীর লোক বিশ্বরে প্রিয়া, উৎসাহ-হিলোলে সে ধ্বনি শুনিয়া

দেবতা ভাবিরা অন্তিত রহে।
এই কৃষ্ণবর্গ জাতি সে যথন,
উৎসবে মাতিয়া কবিত ভ্রমণ,
শিধরে শিধরে জলধির জলে,
পদার জাতিত করি ভূমগুলে
জগত ব্রমাণ্ড নথর-দর্শণে
খ্লিয়া দেধাত মহল-সন্তানে,
সমর-ভ্রাবে কাঁপিত অনল,
নক্ষত্র অর্থ আকাশমণ্ডল—

তথন তাহারা ছণিত নতে;

বধন জৈমিনি, গর্গ, পতপ্তলি,
মম অকস্থন শোভায় উজ্জিন,
ভানাইল বীর নিগৃত বচন,
গাইল বধন ক্ষেইবপায়ন,
জগতেব তৃঃধে স্তক্পিলবভো
শাকাসিংহ ববে তাজিলা গার্হস্থা,

ভথন(ও) ভাহারা ঘণিত নচে।
ভাদেরই ক্ষিত্রে জনম এদেব,
দে পূর্ব্ব-গোবব সৌবভের ফের
ক্ষায়ে ধমনী নাচার,
দেই পূর্ব্ব পানে কভ্ গর্ব্বে চার---

এ জাতি কখন জবন্ধ নহে;
হে কুমাব মনে রেখো এট কথা,
যে ভারতে তুমি ভ্রমিতেছ হেখা,
পবিত্র সে দেশ—পূত-কলেবর
কোটি কোটি প্রাণী ঝিষি পুনাগর
কোটি কোটি জন শ্র বীর নব
কবি কোটি কোটি মধুর অন্তর,
রেপুতে ভারার মিশাঘে বতে দ

ন্তন হে বাজন্। বনের বিহঙ্গে— পুরিলে ভাহারে যতনেব সঙ্গে, পিঞ্জেবে থাদিয়া সেই সুথ পায়। প্রাণের স্থানন্দে কড়গীত গায়।

বনের মাতক যতনে বশ ,
কোকিলেব কবে আগৎ তৃই,
বায়সের ববে কেন বা কট ?
কি ধন বল সে কোকিলে দেয়,
কি ধন বল বা বায়সে নেয় ?
একে মিইভাষা — হ্বন্য সরল,
অন্যে তীর কর পরাণে গ্ৰল,

ধরা চাম্ব সবল হাদয়-বস।

আমি বংদ তোর জননীর দাসী, দাদীর সন্তান এ ভাব কবাসী, ঘৃচাও চুংথের যাত্না তাদেব, ঘুচাও ভ্রের যাত্না মাহের,

শুনারে আবাস মধুর করে। কি কব কুমার ক্রনি-বক্ষ কাটে মনের বেদন। মুখে নাছি ফুটে, দেখ দিবানিশি নয়ন করে। বৃটিশ-সিংহের বিকট বদন, না পারি নির্ভয়ে করিতে দর্শন. কি বাণিজ্যকারী অথবা প্রহরী, बाहाको शोताक, किःवा (छक्शाती, সমাট ভাবিয়া পূঞ্জিব সবারে।

এ প্রচণ্ড তেজ নিবার কুমার. নয়নের জল মুছারে আমার, ভারতসন্থানে লয়ে একবার.

ভাই বলে ডাক হৃদি জুড়ায়। দেখ বৎস. দেখ কি উল্লাস আৰু. নির্ম্থি তোমারে এ ভ্রন্মাঝ. কোটি কোটি প্রাণী করি উর্দ্ধহাত ষ্ক্রিছে স্থনে আজি সুপ্রভাত--

তপ্ত অশ্রধারা নয়নে ধার। ফিরিবে ধথন জননী-নিকটে, বলো বাছা তারে বলো অকপটে ভারত-ব্রহ্মাণ্ড-প্রাণী এককালে ডাকে তাঁরে নাম প্রাত:-সন্ধ্যাকালে. তাদের পরাণ যেন জভার।"

(শাথা)

বলিয়া ভারত মুছিয়া নয়ন, ত্ৰি আশীৰ্কাদে মহিষী-নন্দন

ঢাকিয়াবদন অদৃশ্য হয়।

(পূর্ণ কোরস)

ভারতে আজি বে বিরাজে কুমার ভারতে অরুণ উদিল আবার. वांकिन वृष्टिम-भिना घटन घटन, "জন্ম ভিকটোরিয়া-কুমাব জন্ন" !

ভারত-বিলাপ। ভাত্ৰ অন্ত গেল, গোধলি আইল, রবি-কর জাল আকাশে উঠিল, মেঘ হতে মেঘে থেলিতে লাগিল, গপন শোভিল কিরণজালে: --কোথা বা সুন্দর ঘন কলেবর সিম্পুরে লেপিয়া রাখে থরে থর, কোথা ঝিকি ঝিকি হীরার ঝালর, বেন বা ঝুলার গগন-ভালে। সোনার বরণ মাথিয়া কোথায় জলধর জলে, নয়ন জডার, আবার কোথায় তুলারাশি প্রায় শোভে বালি রাশি মেঘের মালা। হেনকালে একা গিয়ে গন্ধাতীরে. হেরি মনোহর সে তট উপরে রাজধানী এক, নব শোভা ধ'রে রয়েছে কিরণে হয়ে উজলা বিতলা, ত্রিতলা, চৌতলা ভবন স্থন্যর স্থন্যর বিচিত্র গঠন

গোধলি রাগেতে বঞ্জিত কায়। অদ্রে তুর্জন তুর্গ গড়খাই প্রকাও মবতি, জাগিছে সদাই, বিপক্ষ পশিবে হেন স্থান নাই:

চবণ প্ৰকালি জাহুবী ধার ৷ গডের সমীপে আনন্দ উন্থান. যতনে বক্ষিত অতি রমাস্থান. প্রদোষে প্রত্যহ হয় বাজগান,

নয়ন, শ্ৰাবণ, ততু জুড়ায়। জাহ্নবী-সলিলে ওদিকে আবার দেখ জল্যান কাতারে কাতার ভাসে দিবানিশি--গুণবৃক্ষ যার, শালবৃক ছাপি ধ্বজাউডায়ে৷

অহে বঙ্গবাসী, জান কি তোমরা অলকাজিনিয়াহেন মনোহরা কার রাজধানী, কি স্বাতি ইহাবা,—

এ স্থধ-সৌভাগ্য ভোগে ধরায়। নাহি যদি জান এস এইখানে, চলেছে দেখিবে বিচিত্র বিমানে রাজপুক্ষেরা বিবিধ বিধানে -शंद्रद्य (मिननी टिंग्टिक ना शांव।

অদুরে বাজিছে "রল ব্রিটানিয়া" শকটে শকটে মেদিনী ছাইয়া চলেছে দাপটে ব্রিটনবাদীরা---

ইন্দ্রের ইক্তরে আছে কোথায় ? হায় রে কপাল, ওদেরি মতন, আমরাও কেন করিতে গমন. না পারি সতেজে--বলিতে আপন (व प्राटन क्रम व प्राटन वाम।

ভরে ভরে বাই, ভরে ভরে চাই, গৌরাজ দেখিলে ভূতলে লুটাই. ফুটিয়া ফুকারি বলিতে না পাই--

এমনি সদাই কৃদরে আস। কি হবে বিলাপ করিলে এপন, স্বাধীনতা-ধন গিরাতে যথন, মনের মাহাস্যা হরেছে নিধন

তথনি সে সাধ গিরাছে মুচে। সাজে না এখন অভিলাব কবা আমাদের কাজ সূধু পারে ধরা, মস্তকে ধরিয়া দাস্ত্রে ভরা

ছুটিতে হইবে ওদেরি পাছে। হায়, বস্কুদ্ধরা, তোমার কপালে এই কি ছিল মা, পড়ে কালে কালে বিদেশীর পদে জীবন গোঁয়ালে

প্রাতে নারিলে মনের আশা। রূপে অফুপম নিখিল ধরায়, করিয়া বিধাতা হালিলা তোমায়, দিলা সাজাইয়া অতুল ভ্যায়--

তোর কি না আজি এ হেন দশা। হার রে বিধাতা কেন দিয়াছিলি হেন অলভার , কেন না গঠিলি মকভূমি ক'রে অরণো রাখিলি.

এ হেন যাজনা হতো না ভাষ। তা হ'লে এখানে করিত না গতি পাঠান, মোগল, পাবজ্ঞ, দুর্ঘতি, হরিতে ভারত-কিরীটের ভাতি,

অভাগা হিন্দুরে দলিতে পার। এই বে দেখিছ পুরী মনোহর শত গুণ আবো শোভিত স্বন্ধর,

যাইত তপন কতই সাথে। গান্বিত তথন কতই স্থবে, এই সব পাথী তক্ত শোভা ক'রে, কতই কুমুম-পরিমল ভরে

এই ভাগীরথী করে থর থর

ফুটিরা থাকিত কত আহলাদে। আগেকার মত উঠিত তপন, আগেকার মত চাঁদের কিরণ ভাবিত গগনে গ্রহ-তারাগণ

্ ঘুরিত আননেদ ধরিয়াধ্রা। ষ্ঠন ভারতে অয়তের কণা হতো বরিষণ বাজাইত বীণা বাস বাল্মীকি বিপুল বাসনা

নাং ক্ৰেয় আনন। ভারত-হদয়ে আছিল ভরা।

ষপন ক্ষত্রির অভীব সাহদে বাইত সমরে মাতি ধীররদে হিমালর চূড়া গগন প্রশে

গায়িত ধথন ভারত নাম।

ভাবতবাদীরা প্রতি ঘরে ঘরে গাইত যথন স্বাধীন অন্তরে স্বদেশ মহিমা পুলকিত স্বরে

ৰূপতে ভাৱত অতুল ধাম ! ধন্ম ব্ৰিটানিয়া ধন্ম তোর বল এ হেন ভূভাগ ক'রে করতল, বাজত্ম করিছ ইলিতে কেবল — তোমার ভেজের নাহি উপনা।

এখন কিঙ্কব হয়েছি ভোমার মনের বাসনা কি কহিব আর ? এই ভিক্কা চাই কর গো বিচার অথর্ব্ব দাসেরে কর গো ক্ষমা।

দেখ চেয়ে দেখ প্রাচীন বয়সে, তোর পদতলে পড়িয়ে কি বেশে কাদিছে দে ভূমি পূজিত যে দেশে, কত জ্বপদ গাহে মহিমা।

আগে ছিল রাণী ধরা-রাজধানী
ন্মরণে বেন গো থাকে সে কাহিনী,
এবে সে কিস্করী হয়েছে তুঃথিনী
বলিয়ে দন্ত করো না গরিমা!

ভোমারো ত বৃকে কত শত বার রিপু-পদাবাত কবেছে প্রহার, কালেতে না জানি কি হবে আবার— এই কথা সদা করিও ধ্যান !

ভরে ভরে লিখি কি লিখিব আর, নহিলে শুনিতে এ বীণা-ঝকার, বাজিত গরজে--উধলি আবার উঠিত ভারত বাধিত প্রাণ।

ভারত-সঙ্গীত।

(ভারতবর্ধে বথন মোগল বাদসাহদিপের

অত্যন্ত প্রায়ুভাব এবং মোগল সৈত্ব গণ ক্রমে ক্রমে
ভারতভূমি আক্রম করিয়া মহারাট্ট অঞ্চল আক্রমণ
করে, তথন মাধবাচার্য্য নামে এক জন মহারাট্টার
ব্রাহ্মণ অন্দেশের হীনতার একান্ত হুংখিত হইরা
অন্দেশের স্বাধীনতা রক্ষার নিমিত্ত নগরে নগরে
এবং পর্বতে পর্বতে ক্রমণ করিয়া বীরম্ব এবং উৎসাহ-প্রথক্ত গান করিয়া বেড়াইতেন। শিবাজীর
সময় হইতে তাঁহার প্রণীত সনীত মহারাট্টারদিপের
মধ্যে সর্বত্ত প্রতিলত এবং অত্যন্ত আদর্শীর হয়।
মাধবাচার্য্যের মৃত্যুর পর অন্তান্ত গারকেরা দেশে
দেশে সেই গান করিয়া বেড়াইতেন। এই প্রবাদ
অবলম্বন করিয়া ভারত-স্বাত লিখিত হইয়াছে।)

"আর ঘুনাইও না দেখ চকু মেলি
দেখ দেখ চেয়ে অবনীমগুলী,
কিবা অসজ্ভিত কিবা কুত্হনী,
বিবিধ-মানব-জাতিরে লয়ে।
মনের উল্লাসে, প্রবল আখাদে,

প্রচণ্ড বেগেতে, গভীর বিশ্বাদে, বিজয়ী পতাকা উড়ায়ে আকাশে,

দেখ হে ধাইছে অকুতোভরে।
কোৰা আমেরিকা নব অভ্নেম,
পূথিবী গ্রাসিতে করিছে আশ্র,
হয়েছে অথৈঠা নিজ বীর্ত্তবলে,
ছাড়ে হুহুজার, ভূমণ্ডল টলে,
বেম বা টানিয়া ছিডিয়া ভূতবে,

ন্তন কৰিয়া গড়িতে চায়।
মধ্যছলে হেথা আজ্মপুজিতা
চিদ্ৰ-বীৰ্যবতী বীদ প্ৰস্বিতা,
অনস্তহে বিনা যুনানী-মণ্ডনী,
মহিদা-ছটাতে জগৎ উজ্লি

কৌতৃকে ভাসিরা চলিরা বার।
আর্বা, মিসর, পারস্ত, তুরকী,
তাতার, তিব্বত—অন্ত কব কি ?
চীন, বন্ধদেশ, নবীন জাপান,
ভারাও খাবীন তারাও প্রধান,
লাসত্ব করিতে করে হেরজান,
ভারত শুর্মই খ্যারে রব !

বাল রে শিলা বাল্ এই রবে, সবাই স্বাধীন এ বিপুল ভবে, সবাই জাগ্রত মানের গৌরবে, ভারত শুধুই মুমানে রল।"

এই কথা বলি মূথে নিলা তুনি শিখরে দাঁড়ায়ে গারে নামাবলী, নয়ন-জোতিতে হানিয়ে বিজ্ঞী,

গারিতে লাগিল জনেক যুবা । আয়তলোচন উন্নত ললাট, স্থগোরাক তহু সন্মানীর ঠাট নিধরে দীড়ায়ে গায়ে নামাবলী, নয়নজ্যোতিতে হানিল বিজ্নী,

বদনে ভঃতিল অতুল আংভা। নিনাদিল শৃক কৰিলা উচ্ছুাস, "বিংশতি কোটি মানবেৰ বাস, এ ভারতভূমি যবনের দাস ?

রবেছে পড়িয়া শৃক্ষলে বাঁধা। অর্থাবর্তজ্ঞী পুরুষ যাহার। সেই বংশোত্তর জাতি কি ইহার। দ জন কত তথু প্রহয়ী পাহার। দেখিয়া নয়নে লেগেছে ধাঁধা। দ

ধিক্ হিন্দুক্লে! বীরণম ভূলে আংআ, অভিমান ভূবায়ে সলিলে দিয়াছে সঁপিয়া শক্ত-করতলে

সে,নার ভারত করিতে ছার।

হীনবীর্যা সম হয়ে কুডাঞ্জলি মন্তকে ধরিতে বৈরি-পদধূলি, হালে দেখ ধার মহাকুত্হলী ভারতনিবাসী যত কুলালার।

এসেছিল ববে আর্যান্তভ্যে দিক্ অন্ধকার করি তেজাধুমে, রণ-রদ্ধ মন্ত পূর্ব পিতৃগণ . বথন তাহারা করেছিলা রণ, করেছিলা জন্ম পঞ্চনদুগণ,

তখন তাহারা ক'জন ছিল

আবার বংন জাফ্বীর ক্লে, এসেছিলা ভারা জয়ডয়া তুলে, য়য়না কাবেরী, নর্মদা পুলিনে, ন্ত্ৰাবিড়, তৈলঙ্গ, দাকিণাত্য বনে, অসংখ্য বিপক পরাজন্মিরণে,

তখন তাহারা ক'জন ছিল ? এখন তোরা যে শত কোটি তার, খদেশ উদ্ধার করা কোন্ ছার, পারিদ্ শাসিতে হাসিতে হাসিতে, মুমেক অবধি ক্ষেক হইতে, বিজয়ী পতাকা ধরার তুলিতে,

বারেক জাগিয়া করিলে পণ।

তবে ভিএগোতি শক্রপদতলে, কেন রে পডিয়া থাকিস্ সকলে ? কেন না ছিঁডিয়া বন্ধন-শৃঙ্খলে,

স্বাধীন হতে করিস্না মন ?
আই দেখ সেই মাথার উপরে,
রবি, শশী, তারা, দিন দিন ঘোরে,
ঘরিত যেরপে দিক শোভা ক'রে

ভারত বধন স্বাধীন ছিল। সেই আর্যাবর্ত এথন(ও) বিস্তৃত, দেই বিক্যাগিরি এথন(ও) উন্নত, সেই ভাগীরথী এথন(ও) ধাবিত,

প্রাকালে ভারা বেরপ ছিল।

কোথাসে উজ্জ্বল হতাশন সম হিনুবীরদর্প বৃদ্ধি-পরাক্রম, কাঁপিত বাহাতে স্থাবর জ্বম,

গান্ধার অবধি জলধি-দীমা? দকলি ত আছে দে দাহদ কই ? দে গন্তীর জ্ঞান নিপুণতা কই ? প্রেবল তরন্ধ দে উন্নতি কই ?

বল তরঙ্গ সে উন্নতি কই ? কোথারে আজি সে জাতি-মহিমা!

হরেছে শাশান এ ভারতভূমি, কারে উল্লেখনে ডাকিতেছি আমি ? গোলামের জাতি শিণেছে গোলামি!—

আবুকি ভারত সঞ্জীব আছে ?

দশীব থাকিলে এখনি উঠিত, বীরপদভরে মেনিনী ছলিত, ভারতের নিশি প্রভাত হইত,

হায় রে সে দিন ঘূচিয়া গেছে।" এই কথা বলি অঞ্চিন্দু ফেলি, কণমাক্ষ্যৰা শুলনাদ ভূলি, পুনর্কার শৃদ্ধ মুখে নিল তুলি,
গজ্জিয়৷ উঠিল গঞ্জীর স্বরে,
"এখন(ও) জাগিয়৷ উঠ রে দবে,
এখন(ও) সৌভাগা উদয় হবে,
রবি-কর-সম দ্বিগুণ প্রভাবে,

ভারতের মূপ উচ্ছল ক'রে। একবার শুধু নাতিভেদ তৃলে, কব্রিন, বান্দণ, বৈশু, শুদ্র মিলে কর দৃচ পণ এ মধীমণ্ডলে

তুলিতে আগণন মহিমা-ধরজা। জপ তপ আর যোগ আরোধনা, পূজা, হোম, যাগ, প্রতিমা-ফার্চনা এ সকলে এবে কিছুই হবে না,

ত্ণীব কপাণে কর পঞা। ধাও সিদ্ধনীয়ে ভ্ধর-শিখবে গগনের এই তম তম ক'রে, বাযু উকাপাত বজুশিখা ধ'রে

স্বকার্য্য সাধনে প্রবৃত্ত হও। তবে সে পারিবে বিপক্ষ নাশিতে প্রতিষ্দী সহ সমক্ষ হ'তে, স্বাধীনতারূপ রতনে মণ্ডিতে,

বে শিরে এক্ষণে পাছকা বও ছিল বটে আগে তপস্থাব বলে, কার্য্যদিদ্ধি হ'ত এ মহীমণ্ডলে, আপনি আদিয়া ভক্ত-রণস্থলে

সংগ্রাম করিত অমরগণ। এখন সে দিন নাহিক রে আবে, দেব-আরাধনে ভারত উদ্ধার হবে না—হবে না—থোল ভরবার,

এ সব দৈত্য নহে ডেমন। অন্ত্ৰ-প্ৰাক্ৰমে হও বিশাবদ রণ-বৃদ-বৃদে হও রে উন্মাদ— তবে দে বাঁচিবে ঘূচিবে বিপদ

ৰূপতে যথপি থাকিতে চাও। কিসের লাগিয়া হলি নিশেহাবা, সেই হিন্দুজাতি সেই বস্ক্ষরা, জ্ঞানবুদ্ধিজ্যোতি: ভেমতি প্রথমা,

তবে কেন ভূমে প'ছে দুটাও। জাই দেখ সেই মাথার উপরে, দ্ববি, শুনী, তারা, নিন দিন বোরে, দুরিত বেরূপে দিক শোভা ক'রে,
ভারত যথন স্বাধীন ছিল।
সেই আধ্যাবর্ত্ত এখন(ও) বিস্তৃত
সেই কাহুনী-বারি এখন(ও) ধাবিত,
কেন সে মহন্ত হবে না উজ্জল ?
বাজ রে নিলা বাজ্ এই ববে,
ভানিয়া ভারতে জাগুক সবে,
সুবাই স্বাধীন এ বিপুল ভবে
সুবাই জাগুত মানের গৌরবে
ভারত ভথু কি মুমাধ্য রবে।

ভারত কামিনী।

অবে কুলালার হিন্দু গুরাচার— এই কি ভোদের দয়া—সদাচার ? হয়ে আর্য্যবংশ অবনীর সার—

রমণী ৰধিছ পিশাচ হয়ে ? এখনও ফিরিয়া দেখ না চাহিয়া, জগতের গতি—অমেতে ড্বিয়া চরণে দলিয়া মাতা স্থতা জায়া,

এখনও রুষেছ্ উন্মন্ত হরেছ্ বাধিয়া রেখেছ বামা রাশি রাশি, অনাথা করিয়া গলে দিয়া ফাঁদী, কাড়িয়া লয়েছ্ কবড়ী কন্তণ, হার বাজু বালা, দেহের ভ্রণ;

অনন্ত ছংখিনী বিধবা নারী।
দেখ বে নিষ্ঠুর হাতে লয়ে মাণা
ক্লীন-কুমারী অন্চা অবলা
আছে পথ চেয়ে পতির উদ্দেশে
অসংখা রমণী পাগদিনী-বেশে
কেহ বা করিছে বর্মাল্য দান,
মুমুর্র গলে হয়ে ফ্রিয়াণ,

নয়নে মৃছিয়া গলিত বারি।
চারিদিকে হেথা ভারত বৃড়িয়া
সরদীক্ষল বেন রে ছি ডিয়া—
কামিনীমওলী রেথেছ তুলিয়া
কোমল হৃদয় করেছ হতাল,
না দেখিতে দাও অবনী আকাল,
ভারে কারবাস ক্লগতে রয়ে।

আরে কুলাকার হিন্দু ছরাচার,
এই কি ভোদের দ্বা সদাচার ?
হয়ে আর্য্যবংশ অবনীর সার

রমণী বধিছ পিশাচ হয়ে ? এখন(ও) ফিরিয়া দেব না চাহিয়া জগতের গতি—ভ্রমেতে ডুবিয়া চরবে দগিছ মাতা, স্থতা, জায়া—

ছড়ারে কলঙ্ক পৃথিবীমাঝে। দেথ না কি চেরে জগৎ উজ্জ্বল এই সে ভারত হিমানী অচল, এই সে গোমুখী যমুনার জল

সিন্ধু গোদাবতী সরযু সাজে। জান না কি সেই অবোধ্যা কোশল এইখানে ছিল কলিক পাঞাল মগধ কনৌজ—স্থপবিত্র ধাম সেই উজ্জিনিনী নিলে বার নাম

घूट प्रमुखान कन्य हरत्र अहे द्रष्ट्रम करतिह्न कीना, चारत्वत्री, कानकी, रजीनी, जुनीना, चना, नीनां रजी व्यक्तिना महिना

সাবিত্রী ভারত পবিত্র করে;
এই আর্যাভূমে বাঁধিয়া কৃষ্ণল
ধরিয়া কুণাণ কামিনী সকল,
প্রাকুর বাধীন পবিত্র অন্তরে
নিঃশঙ্করণরে ছুটিত সমরে
ধুলে কেশপাশ দিত পরাইয়া
ধৃদ্ধতে ছিলা আনন্দে ভাসিয়া

সমর-উল্লাসে অথৈব্য হয়ে।
কোথা সে এখন অসিভল্লধারী
মহারাষ্ট্র-বামা রাজ্যেরারা-নারী
অরাতি-বিক্রমে পরাজিত হ'লে
চিতানলে যারা তম্থ দিত ঢেলে

পতি পিতা মৃত সংহতি লগে।
বীরমাতা যারা বীরাদনা ছিল,
মহিমা-কিরণে জগৎ ভাতিল,
কোথা এবে তারা—কোথা সে কিবৰ
আনন্দ-কানন ছিল বে ভূবন

নিবিড় অটবী হয়েছে এবে ।
আন কি বাজে দে বীণা সপ্তথমা
বিজয়-নিনাদে বস্তম্ম ভাষা

আর কি আছে মনের উল্লাস আনের মর্য্যাদা সাহস-বিভাগ

সে সব রমণী কোথা রে এবে
পি দিন গিয়াছে পশুর অধন
হরেছে ভারতে নারীর জনম
নুশংস আচার নীচ হুরাচার
ভারত-ভিত্রে যত কুলালার

পিশাচের হের হরেছে সবে।
তবে কেন আজও আছে ঐ গিরি
নাম হিমালর শৃদ উচ্চে ধরি ?
তবে কেন আজ(ও) করিছে হরার,
ভারত বেষ্টিয়া জলধি তুর্কার ?
কেন তবে আজ(ও) ভারত-ভিতরে,
হিন্দুরংশাবলী শুনে সমাদরে
বাাস বাল্লীকি ? বারিধারা মরে.

সীতাদময়তী সাবিতী রবে ? গভীর নিনাদে করিয়া ঝঙার বাজ্বে বীণা বাজ্একবার

ভারতবাসীরে তনায়ে সবে। দেখ চেয়ে দেখ হেথা একবার প্রফুল কোমল কুমুম আকার মুনানী মহিলা হয় পারাপার

অক্ল জলবি অকুতোভরে ! ধার অধপুঠে অশক্তি চিতে, কানন, কলর উন্নত গিরিতে অপ্যরা-আরতি পুক্রদেবিতা সাহিত্য বিজ্ঞান সধীতে ভূম্বিতা

স্থাধীন প্রভাতে পবিত্র হয়ে। আবার ভারতে ওরুপে আবার হবে রে অঙ্গনা-মহিমা প্রাচার পেয়ে নিজ্ঞ মান পরি নিজ বেশ জান দস্ত তেজে পুরে নিজ দেশ,

বীর-বংশাবলী প্রস্তি হবে ? এ হেন প্রকাও মহীপওমাবে নাহি কি রে কোন বীরাআ বিবাজে, এখনি উটিয়া করে ৭ও থও, নমাজের জাল করাল প্রচ্ত

স্বন্ধাতি উজ্জ্বল করিয়া ভবে। ১৩ন্তম গৌতম নাহি কি রে আর গায়ত-সৌভাগ্য করিতে উন্ধার ? ঋৰি বিখামিতা রাঘৰ পাণ্ডব, কেন জমেছিলা মহাআ সে সব, ভারত যদি না উন্নত হবে ?

ভারত যাদ না উন্নত হবে |
বিক্ হিন্দুজাতি হরে আহাবংশ
নরকঠহার নারী কর ধ্বংস !
ভূলে সদাচার দ্রা সদাশয়.
কর আহাত্তিমি প্তিগন্ধমঃ,

ছড়ার কলঙ্ক পৃথিবীমানে । দেখ না কি চেতে লগৎ উজ্জ্বল, এই দে ভারত হিমানী স্ফচল, এই দে গোমুখী যমুনার জল,

দিন্ধু, গোদাবরী, সব্যু সাজে ।
জান না কি দেই অবোধাা কৌশল,
এইথানে ছিল কলিগ পাঞাল ।
মগধ কনৌজ—সুপবিত্র ধাম,
দেই উজ্জ্বিনী—নিলে যার নাম,

ষ্চে মনভাপ কল্ম হরে ? এই রক্ত্মে করেছিল লীলা, আত্রেয়ী, কানকী, ডৌপদী, স্বীলা, ধনা, লীলাবভী প্রাচীন মহিলা সাবিত্রী ভারত প্ৰিত্র ক'রে।

অনে কুলালার হিন্দু ত্রাচার, এই কি তোদের দয়া, সদাচার, হয়ে আর্থ্যবংশ অবনীর সার, রুমন্ত্রী বধিছ দিশাচ হয়ে?

এখন(ও) ফিরিয়া দেখ না চাহিয়া, জগতের গতি—ল্লমেতে ডুবিয়া চরণে দলিয়া মাতা, স্থতা, জায়া, এখন(ও) বয়েছ—উন্মত্ত হয়ে?

বিধবা রমণী।

ভারতের পতিহীনা নারী বুঝি আই রে।
না হলে এমন দশা নাবী আবে কই রে?
মলিন বসনগানি আদে আচ্ছাদন,
আহা দেও আদে নাই অদের ভ্রণ।
রুম্বীর চিরসাধ চিক্র-বন্ধন,
ফাদে দেও দে সাধেও বিধি বিজ্পন।

আহা কি চাঁচর কেশ পডেচে এলারে। আহা কি রূপের ছটা গিরাছে বিলারে। কি নিডম, কিবা উক. কিবাচক কিবাভক. कि योवन मति मति (भारक मध इम्र दत्र। কুমুম-চন্দনে আর নাহি অভিনায, তামৃল-কপুরে আর নাছি সে বিলাস, ৰদনে সে হাসি নাই নয়নে সে জ্যোতিঃ. সে আনন্দ নাই আরু মরি কি চুর্গতি। হরিষ বিষাদ এবে তল্য চিরদিন বসন্ত শরৎ ঋতু সকলি মলিন ! দিবানিশি এ কি বেশ. বারমাস সেই কেশ. বিধবার প্রাণে হায় এতই কি সয় রে ৷ হার রে নিষ্ঠর জাতি পাষাণ-হৃদয়, দেখে ভানে এ বছণা তবু অন্ধ হয়; বালিকা যুবতী ভেদ করে না বিচার. नात्री वध क'त्र कृष्टे कत्त्र तम्भानात्र. এই যদি হয় হিন্দশাসের লিখন. এ দেশে রমণী ভবে জনোকি কারণ গ পুরুষ তদিন পরে. আবাৰ বিবাহ করে. অবলারমণী ব'লে এতই কি সয়রে। **टकॅरनिছ** ज्यानक निम कॅनिय ना कांव ; পুরাইব হৃদয়ের কামনা এবার ৷---ঈশ্বর থাকেন যদি, করেন বিচার, করিবেন দৌরাত্ম সমূলে সংহার. অবিলয়ে হিন্দুধর্ম ছারথার হবে। হিন্দুলে বাতি দিতে কেহ নাহি ৰবে! দেখ রে চর্মতি যত. চিরমেচ্ছ-পদানত, বিধবার শাপে হায় এ তুর্গতি হয় বে। হায় রে আমার যদি থাকিত সম্পদ, মিটাভাম চির্দিন মনের যে সাধ: সোনার প্রতিমা গ'ডে বিধবা নারীর রাথিতাল স্থানে স্থানে ভারতভূমির; विरम्दान श्री भूक्ष এ म्हान चानिछ. পতিব্রতা ব'লে তারে নয়নে ছেরিভ। • "कि श्रामाम कि चिरमाम লিখিভাম নিমুদেশে রুষণী এমন আর ধরাতলে নাহি রে।" (म धन भव्लान नाई पत्रिप्त कालान, व्यमाथा विश्वा-छःथ ब्रद्ध विद्वकान ! আমার অন্তরে গাঁথা বথনই দেখিব, স্থান্ধ কুম্বমে কীট, তথনই কান্দিব,

রাছগ্রাসে শশধর নক্ষত্ত-পতন, যথন দেথিব, হার করিব ব্যরণ, বিধবা নারীর মুখ হার বে বিদরে বৃং ইচ্ছা করে ভগ্মশোধ দেশত্যাধী হই রে। ভারতের পতিহীনা নারী বৃধি অই রে॥

> ভারতে কালের ভেরী। [১২৮০ সালের হুভিক্ষ উপদক্ষে]

> > (3)

ভারতে কালের ভেরী বাজিল আবার !—
আই তান ঘোর খন ভীমনাদ তার !
ছটিছে তুম্ল রলে, আকুল অধীর বং
উঠিছে পুবিয়া দিক প্রাণি হাহাকার !
বাজিল অকাল-ভেরী বাজিল আবার !
(২)

চলেছে প্রাণীর কুল হের চারিধার;
চলে বেন প্রপাল করিয়। আঁধাব—
স্থবির বালক নারী, হা অন্ন হা অনু বাদ বলিতে বলিতে ধার চকে নীরধার!
ধ্রাতলে চলে ধীবে কালীর আকার।
(৩)

দেথ রে চলেছে আহা শিশু কও জন,
গীৰ্ণদৈহ চাহি আছে জননী-বদন ,
আফুল জননী তার, মুধ চাহি বাব বা অনিবার বারিধারা করে বরিষণ— ভ্রমে বেন উন্মাদিনী অনের কারণ!
(8)

হের দেখ পথিধারে বসিরা ওখানে,
পতির চরণে দুটি আকুল পরাণে
বলিছে কামিনী কেহ, "কই নাথ জঃ শে
কালি আর চাহিব না রাথ আজ প্রাণে"—
বলিয়া ত্যঞ্জিল প্রাণ চাহি পতিপানে।
(৫)

ছুটিছে যুৰতী কন্তা কেলিয়া পিতায়;
মা বলি ভাকিছে বৃদ্ধ সকলি বুথায়!
কোবা কন্তা কোবা পিতা, কে অননী কেবি মাৰ্চ অৱলাতা পিতা মাতা আজি বলালয়— হের হেন কত জন আজি এ দশার! '(%)

হের কত জন আহা উদর-জালায়— জননী ফেলিয়া শিশু ছুটিয়া পলায়, লিয়া যুগল পানি, শিশু ডাকে মা' মা' বাণী কুধায় জননী তার ফিরিয়া না চায়— একাকী পড়িয়া শিশু পরাণে শুকায়॥

(9)

চলেছে প্রাণীর কূল এরপে আকুল, নৃত্য করে অনশন, মৃক্ত কবি চুল, ত্য করে ভেরী-নাদে কল্পাল তৃলিয়া কাঁদে, ধর্পর ধরিয়া করে করিছে ভ্রমণ— দেথ ব্দ্বাসী দেখ মৃত্তি কি ভীষণ।

(b)

ছুটিছে নয়নে বহি ফ্লিক সমান,
কিবিছে উমার ভাব উলার প্রমাণ;
ত-বরষণে শক্ত,
করাল বিকট প্রাস মুখের ব্যাদান,
আাকাশে উঠিছে সচ্চে কালের নিশান।
(১)

কতেই উৎসবপূর্ণ গৃহস্থ-আলর,
নদ্দিনী নদ্দন রূপ প্রথপুপামর,
নাজি পূর্ণ কলরবে, অচিবে নীরব হবে,
শকুনি বারদ কিংবা পেচক আাশ্রয়—
ধবিবে শাশান-:বশ মৃত অভিময়।
(১০)

ফত সে জনভাপ্ৰ পণাবীথি হায়,

এ রাক্ষস অনাচাবে হবে মকপ্রায়। গীষণ গহন সাজ, ধরিবে পুরীর মাঝ, পুরিবে বনের গুল-পাদপ-লতায়। জ্রমিবে শার্ফি,ল শিবা আননন্দে সেগায়।

(>>)

আবি হাসিভর। মুধ প্রক্র যে সব, আবি সুধপূর্ণ কুজাশার পল্লব, গলি আবে নাহি রবে, শবদেহ হবে সবে, শৃগাল-কুকুরে মিলি করিবে উৎসব— কর্ণমূলে গুঞ্জ বসি শুনাইবে রব।

(><)

কেমনে হে বলবাসীনিতা যাও অবে ু? ভাবিয়া এ ভাব, চিত্ত ভরে নাকি হুথে ? নক স্বৃত পরিবার, নাকানিছে জনাহার, ভাবিয়ে না চাহ কি ২ে অভ্জের ম্থে— অজাতি-শোকের শেল বিদ্ধে না কি বৃকে ?

(30)

প্রিয়ে থলি গৃহে আবসি ধব মবে কব, হয় নাউদয় কি বে জদয়-ভিতব,— কত সতী অনাথিনী, পণে পথে কালালিনী, অমিছে হতাশ হয়ে তাজি শুজু ঘর,— নাহি লজ্জা কুলমান, কুধায় কাতর।

()8)

কোডে ধবি চেব যবে কয়া-পুলগণ,
ভাবিয়া জগৎ-মানে অমূল্য রতন—
কভুকি পডে না মনে, সেই সব শিশুগণে,
অন্ন বিনে মরে যায়া কবিয়া বোদন ?
ভাহাবাও অইন্প নয়ন-বয়ন।

() ()

হে বস্থ-ক্লকামিনি আব্যা যত জন
জান যার পতি পুত্র পিতা সে কেমন--ভাবি দেখ একবাব, বদন সে স্বাকাব,
ঘরে যার। প্রতিঃসন্ধা কবে দ্বশন,
নির্ম্ন বিধ্র পতি, জনক, নন্দন।

(55)

এক দিন অনশনে দিন যদি যায়।
জান নাকি বছবাসীকি বাতনা তায়।
আগজি সেই অনশনে, দায়ণ হতাশ মনে,
লক্ষ নরনারীশিশুকরে হায় হায়।
তবুও চেডনাকি হে নাহি হয় তায় ?

(>9)

ভাৰ ওহে বধনাগী ভাব একবাব
কি কাল-রাক্স আদি গেরিয়াছে ধার—
নাশিতে সে ভ্রাচার, বৃটনের ভ্রুমাণ, বৃটশ-কেশরিনাদ তন একবাব,
ঘুমাণ্ড না বদ্ধাগী, ঘুমাণ্ড না আণ,
ভারতে কালেব ভেবী বাজিল আবার।

চিন্তাকুমুম

মন্ত্রদাধন।

সুধন্ত ইংরাজ তোমার মহিমা, সুধন্ত ভোমার স্থাবীর্য্য গরিমা, স্ফাতি-গৌরব সাহস-ভক্ষিমা,

জসীম ভোমার হৃদয়-বন। নির্ভীক হৃদয়—জ-নতগ্রাবার কর পদাঘাত ধ্বণী-মাধার ও ভৃজ-প্রতাপে না প্রশ যার

ধবাতে এ হেন নাহিক স্থল। জগৎবিজয়ী রোমক সন্তান জ্বতলে ভ্রমিক তুলে যে নিশান, তেজোগর্কাশিখা যাহে মূর্ত্তিমান

ভোমাদেব(ই) স্কম্মে ধবেছ ভার ! নিক্ষপ নিশ্চল (অচল মুবজি) সম্ভ্রমদৃত্তা, একতার গতি, অনিবার্থ্য বেগ যেন স্রোত্ত্যতী

উৎসাচ সাহস প্রলম্মে ধায়। সে ভূজ-বিক্রম কিবা ভরত্বর, সে সাহস-বেগ কডই প্রথর, একতা-বন্ধন কিবা দচতর

ভোমরাই আগে শিথালে সবে, শিথালে খদেশে কিবা সে প্রকারে প্রজাতে নিবারে রাজ-অত্যাচারে, বিদ্যোহ-অনল জালিয়া হরারে

রাজমৃগুপাত করিলে ববে—

শিধালে আবার অলান্ত প্রথার

অস্থ্ পীড়নে উন্মাদের প্রার
প্রজারা যথন, কিরূপে রাজার

নিক্ষেপে তথ্য চবণ্ডালে।

ানকেপে তথন চরণত ৰে দর্পে কাটিলে প্রথম চালসে ধে দর্পে ভাড়ালে হিতীয় জেম্সে † বে তেজাগর্কেতে আজিও খদেশে
রাজত্ব করিছ আশন বলে পূত্তলিকামত রাজ সিংহাসনে
সাজায়ে রেথেছ রাজা এক জনে,
খদেশে এখর্যা দেখাতে নয়নে

করিতে উজ্জল আপন মান, সেই দর্প তেজ নির্ভন্ন অন্তরে দেখাইলে আজ জগন্ত অক্ষতে রাজ-প্রতিনিধি পদপিট ক'রে

শিখালে ভারতে গৃঢ় সন্ধান .
দিলে শিক্ষাদান ভারত-নন্দনে
দিব্যচক্ষ্ দিয়া—কি মন্ত্রমাগনে
পরাধীন জ্ঞাতি, পরাধীন জনে
বাসনা সকল করিতে পার।
শিখিবে ভারত—শিখিবে এ কথা
চির্লিন তরে, স্বি

এক দিকে কোটি প্রাণি-কাতরতা খেতাদ কজন বিপক্ষ তার.

তব্ও কজনে চরণে দলিল রাজপ্রতিনিধি, রাজমন্ত্রিদল— অঞাতি-গৌরব অক্র রাধিল

এমন তাদের অমিত বল। শেখ রে এখন ভারত-সন্তান, খে চাঙ্গ-নিকটো তদের সমান— সমগ্র ভারত জাতি-কুলমান,

রাজস্বতি গান সব বিফল। যে মন্ত্র-সাধনে স্থপটু উহারা, সেই বীরব্রত—একতার ধারা, সে সাহস-উৎস— সে উৎসাহ-ধারা,

হৃদর-কন্দরে গাঁথিয়া রাখো— তবে অগ্রসর হৈও কভু আর করিতে এরূপে স্কাতি উদ্ধার প্রে যদি দাও প্রাণ আপনার --

নতুবা যা আছে তাহাই থাকো। শুন হে বিপণ—ভারতের লাট আর নাহি ক'রো এ তাওব নাট বিষময় কল বিষম বিরাট

মহ্য্য-হৃদয় সহিত খেলা।

উৎপীড়িত হইরা ইংরাজেরা তাঁহাকে রাজ্যচাত করিরা ভাভাইয়া দিয়াছিল।

ইং ১৬৪৯ সালে ইংলওের ভৃণতি ১ম চাললের দৌরাজ্যে উত্তেজিত হটয়া বিলোধী প্রজাধর্ম তাঁহার মন্তক্তেদন করিয়াছিল। ইংলওের
ইতিহাস দেও।

^{🖟 🛉} हेर ১৬৮৮-৮> नाटन विजीव स्वस्त कर्ष्क

অতি হীনবল—ঘোর ক্লফকার সে হাতিও যদি আশার দোলায় হলে বছক্ষণ-- আশানা ভড়ার সে নিরাশাঘাত রোধে না বেলা। সুধাচছলে তুলে দিলে হলাহল সম্প্রীতি করিলে সহ নিজ দল বাড়ালে তাদের শত গুণ বল "পুটোরীয় গার্ড" (১) রোমেতে যথা। ছিল কি অতুল প্রতাপ(ই) তাদের সে তেকোগরিমা কোথা অসুরের। পরিণামে ভার(ই) কি হইল ফের ভূলোনারে কেহ সে গুঢ় কথা। না হৈও নিরাশ—ভাবত-সন্তান, সাহস উৎসাহে সে গ্ৰাফ নিৰ্কাণ কবিলে অনাৰ্য্যে – আজও সে বিধান এ মহামল্লের সাধন-প্রথা।

জয়মঙ্গল গীত

অভিষেক

(অর্দ্ধ কোরস্)

কাছে এস ভাই করি আশীর্মাদ চিরস্থে হর কাল। তোমার কলাাণে ভারত বিপিনে উদিল চক্রিকাজাল॥

(পূ**র্ণ কো**রস্)

উল্লেশ আজি হে বালালীর নাম
উল্লেশ ভারত-ভূমি।
বলের প্রধান বিচার-ম্মাসনে
আজি হে প্রধান ভূমি॥
কাছে এস ভাই করি মাণীর্কাদ
বিপুল ভারত যুড়ে,
জন্ম জন্ম কর ধ্রনি ছভাইরা
তব কার্টি-ধ্বলা উড়ে।

(অর্দ্ধ কোরস্)

আৰি রে এ রবে কে বা ঘরে রবে আনন্দে বাজিছে ভেগী। ঋষিতৃলা নর ভারত-ভিতর এত দিন পর হেবি॥ চল সবে ধাই দিয়া করতালি নিকটে তাঁহারে ঘেরি। "রিপণের জয় রিপণেয় জয়" আনন্দে বাজিছে ভেবী॥ বটিশের বেশে अधि ठूला नद **এ দেশে উদয় যবে**। ফিবিবে আবার ভারতের লক্ষী ভারতে উদয় হবে॥ আননে বাজ্রে युनक युत्रको আনন্দে বাজ্রে ভেরী। "রিপণের জয় রমেশের জয়" मध्दन निर्मात कति॥

(পূর্ণ কোরস্)

ফুলদাজ আমজ পরাব।

আনো আনো আনো

কৈ বরণ-ডালা

আগে দিব তুলে রিপণের গলে পরে প্রিয়জনে সাজাব। (পূর্ণ কোরস) আনো বরণডালা বাটি বাটি বাটি সুগন্ধ তাহাতে থাকিবে, গোটা গোটা ফুল ভোর-বেলা তুলি পরিপাটী কোরে রাখিবে, ছিটা দিয়া ভার অগুরু-চন্দনে माञ्चलाविशास्त्र श्रिद्ध । আনো বরণভালা, আনো আনো আনো ফুল সাজে আজ সাজাব। আগে দিব তুলে রমেশের গলে পরে রিপণেরে পরাব। মানো বরণডালা মানো আনো আনো ফুলসাজে আজ সাজাব॥

(সকলে একতা)

আরদা চলর ঈশর সারথ। দেরিল চৌধর দেশী বিলাতী।

⁽১) রোমক সম্প্রদায়ের পতনদশার ইংরাই নর্কেস্কা হইয়া উটিয়ছিলেন! ইংরা অতি নল্লান্তবংশোদ্ভব এবং প্রথমে সমাটদিনেগর দেহ-বক্ষকস্বরূপ ছিলেন।

"টুইডেল" সঙ্গে আৰ্মাণি "গ্ৰিগৰি" কৌতুক রঙ্গে। মিলিল সকলে অন্বরে রামা। স্থারতি হেরিয়া স্থনরী বামা॥ ছৰুধ্বনি দিল ঈশ্বর সার্থি। অরদা চন্দর দেশী বিলাভী 🛭 চৌদিকে খেরিল চন্দন ভাবে, দিল স্থুথে সবে দিল স্থথে সবে দূর্কার দলে তত্তে গাঙ্গের চালি। অভিষেক দিল হোমভাশতে ननारहे (हामार प्रानि॥ (অর্দ কোরস্) আ ওয়ল স্থাগ্ৰ গাওয়ল পেয়ারে। ভাগ লছ্মী আজু বাঢ়ল জোয়ারে। তৃষা সবে মো সবে বেবি বেরি মেলি। পাঠ পচছ কৈতি কতনহি খেলি॥ অবহু তুহারে চাহি প্রীত ভগবান্। হাম সৰ আশিসে তুয়া ভগবান্। कनर करूजन कराजाति वानी। করল সেলাম কন্ত পরশর পাণি 🛭 হিন্দী পারসিক আংবেজি ভাষা। খৎ ভেজল কন্ত চনদন মাথা॥ হলাহল ঢাকল ত্ৰমন যেহি। ক্ষীর উগাল পদবজ: শেহি। ভেটল স্থাগণ গাওল পেয়ারে। ভাগ লছমী আজু বাঢ়ল জোয়ারে॥ **ठमम जारण** ; সভে দেল স্থং কুস্থুমমালে সভে দে**ল হ**পে ভণুলে গালেম বারি। ष्यভिষেক দেল হোম ভদ্মে কপালে ছোঁৱাই ভারি ॥ মালভীমাল (অর্ক্ক) তুলিল সঙ্গী গস্কে মোদি**ল দেহ**। (百春春) (অর্দ্ধ) তুলিল মল্লিকা যুথিকা-জাল পরাণি জাগিল স্নেহ॥ (একক) (একক) মোদিল দেহ মালতী মাল মলিকাজাল মোদিল দেহ भाषिन निम भूदत ! ুরিপণের জয় রিপণের জয়," त्रभी वाकिष्ट मृत्र ॥

(व्यर्क) ठूनिन मधी স্গন্ধা শিউলী (একক) সোহাগে হদদে দেশ। (আর্দ্ধ) তুলিল যতনে রজনীগন্ধা প্ৰনা মাতিয়া গে**ল** ॥ (একক) (অর্দ্ধ) আমাননে তুলিল গুলাব-ওচ্ছ চিকণ গাঁথনি হারে রুমেশের জয়," "রিপণের জয় বংশী বা**জিছে** দূরে। (পূর্ণ কোরস্) भाषिण भूत्री দেঁ উতি হার কামিনী ভার भाषिण श्री গুলাব-গুচ্ছ মোদিল পুরী চিকণ গাঁথনি হারে। রমেশের জয়" "রমেশের **জ**র বংশী বাজিছে দূরে॥ (সকলে একতা) বংশী বাজিছে রমেশের জয় আৰু রে হৃদয়ে বড় সুথোদয়— করি অশীর্কাদ কাছে আয় ভাই চিরস্থে হর কাল,

উদিল চন্দ্রিকা-জাল।

উল্ল আদি হে বাঙ্গানার নাম

উজ্ল ভারতভূমি।
বন্দের প্রধান বিচার-আসনে

আজি হে প্রধান তুমি॥

আনন্দে বাজ্ রে মুদল মুরলী

আনন্দে বাজ্ রে ডেরী,
জন্ধ জন্ধ সহনে নিনাদ করি।

তোমার কল্যাণে

বাজ্রে আৰন্দে

ভারত-বিপিনে

मृतक मूजली

মদন-প্রজা।

আনন্দে বাজ্রে ভেরী॥

কি দিরে বদন, পৃজিব তোমার অনল তুহারি নাম। বসক-সমীর, নিশোরাস তোর, কুসুম লাবণ্য-ঠাম।

শ্ববাগ্য-এখার. সঙ্গীত-উছ্বাস, বচন তুহার মানি, হিয়ার মাঝারে, প্রেমেব নিঝ'ব. তুহাবি পরাণ জানি। কেমনে মদন. পূজিব জোমারে, তুহারি ধন্তর ভয়ে, নয়ন-দিঠিতে. দিঠি জডাইয়া. দাঁডাই অগীব হয়ে। বলি বলি বলি. ভনি ভনি ভনি, থমকে চমকে চাই. জাগি দিবানিশি. তুহারি তরাদে, জুড়াতে নাহিক পাই। পূজিব কিন্ধপে. তোমায় মদন, তুহার পূজার প্রথা, কেহ নাজানিল, কেহনা শিথিল, সে গৃঢ় রহস্য-কথা। মুনির ধ্যানে, জানীর জানে, তুহার আকার-ভেদ, মুজন প্ৰেমিক. আঁখিতে কেবলি, প্রকাশ তুহাব বেদ। পুজিব তুহাবে, ভাহারি বিধানে, নাজানি নামানি আনন, একদেব বাণী. বদনে উচারি, তুয়া পদে দিব প্রাণ। পূজিব তুহারে, বিহানে মধ্যাহ্নে, পূজিব সাঁজেরই বেলা, আঁধার ডুবাতে, रे**ड्रिय-क**†न्दन প্রেমের জোছনা খেলা। পূজিব তুহারে— চরণে বিথারি, জীবন-জাহ্বী-জল. পূজিৰ তুহারে— মানস-ব্ৰহ্মাণ্ড, করিয়া তীরথস্ল। কুল পদ মান, তুহারি পূজাতে, অবনী উৎসর্গ দিয়া, दिवये व्यानत्म, তুয়া ধ্যান ধবি, হিয়াতে প্রতিমানিয়া। সে দেহ গঠনে, মৃরতি গঠিব, সে হছ নয়নে আঁথি। ভুক্যুগে টান, তেমতি স্থটানে দেখিব মানসে আঁকি।

বলন চলন. कि छेक्टरम স্কলি তেমতি ঠাম, দিব সাজাইয়া. অনঙ্গ তুহারে, সেই নামে তথা নাম। ठॅरिनव चारमारक, আবতি করিব, পরাব বাসনা-ফল, অনক তুহারি, বদন হেবিব, নিখিলে নাহিক ভুল। পুজাপাঠবিধি এই সে তৃহার, একহি প্রেমিক জানে. নাহি কালাকাল, (मन श्रामन, তুষা বেদ এহি মানে। কি দিয়া পূজিব. মদন তোমায়----আর না আনিব মুখে, শিথিজ শিথাব, তৃগা পূজাবিধি. কিয়া ত্রথ কিয়া ছথে। এ বিধি বিধানে, যে জানে পূজিতে তৃগা দবশনে উেহ. কঁহু নাহি জানে, কি তাহে প্রভেদ निर्मि, पिया, यम, श्र्यः। চিনেছি এখন যদন তোমায় অনঙ্গ কেবলি নাম. বসন্ত-সমীর, তুয়া নিশোয়াদ, ক্সুম লাবণ্য ঠাম। সুবাত্য-ঝন্ধাব, দলীত-উছাদ, ৰচন তুহারি মানি, অনগ তৃহারে অবহি পুজিব তৃহ সে প্ৰম প্ৰাণী।

চিন্তা।

হে চিছা উদয় তোর কেন বে ?

কি হেতু মানব-মনে,
এসো যাও কণে কণে হেন রে ?
কোথা হ'তে এসো, বল, ফিবে কোথা যাও ?
মানব কাদরে তুমি কভই বেলাও।

বেলার দামিনীলতা আকাশে যেমন,
চকিত মেঘের কোলে চিকণ-চরণে দোলে
মানবের হদিতলে তুমিও তেমন!

কি থেলা থেলাতে এন কি থেলায়ে যাও থেলা সাক হ'লে পুনঃ কোথায় লুকাও ? দুকাতে কতই ধেন আনন্দে মগন। থেলে যথা প্ৰীত মনে বালক বালক সনে তুমিও মানব-মনে ধেলাও তেমন! এই আছ, এই নেই, ফিরে ক্পকাল ঈষৎ চঞ্চল-ভাবে থাকিয়া আডাল. চুপি চুপি দেখা দিয়ে **ठक्षण कतिया हिट्य.** আবার দুকাও কোথা তব লীলা-জাল! মেথাও কতই রঙ্গ লহরী তুলিয়া, কত বেশে দেখা দাও ভুলায়ে ভূলিয়া। উধাও গগন-কোলে উঠিয়া কথন। সঙ্গে করি ল'য়ে চল দেখাও কত উজ্জ্বল কতই নক্ষত্ৰ-মালা কতই ভূবন। এই দীপ্ত-প্রভাকালে জড়িত করিয়া चनस्र शुरुकत्व चनस्य जुनिया, দেখাও কতই লীলা কতই লহরী। ভূবন ঘূরিয়া রঙ্গে তপনের সঙ্গে সঙ্গে কত ভঙ্গিবার ডঙ্গে, হে চিস্তা স্থলরী। আবার ধরণীধামে নামায়ে, চপলে ঘুরায়ে পৃথিবীময় সাগর অচলে কভরূপ ধরি চিস্তা কর রে ভ্রমণ--নগর তটিনী বন কান্তার মঙ্গ ভূবন চিত্রিত করিয়া চিত্তে কর রে রঞ্জন ! নিশাকালে পুনরায় উল্লাসে অবশা নিদ্রাগত ভাববুন্দে জাগায়ে সহসা বিরাজ হাদয়কেত্রে, ওলো সুরঞ্জিণি কথনও উজ্জল হাস কথনও বা পরকাশ ভয়ন্তরী কালিমার ঘোর কলন্ধিনী ! কথনও বা দিবাভাগে জাগ্রতে স্বপনে সজ্জন পদান্ধ-লেখা লিখিয়া কিরণে আনন্দে নাচায়ে মন, ছুটিয়া বেড়াও। ভথনি মুছিয়া ভায় কুপথের দোলনার ইন্দ্রিয়-থেলন ল'য়ে আনন্দে খেলাও। কথনও নৃপতিভাবে বসাও আসনে কথনও-স্থশোষাল্য সহাক্ষ বদৰে গ্রীবাতে পরায়ে দাও—পুন: কভক্ষণে। ধীরে ধীরে পান্ন পান্ন সজে করি নিরাশায় আসিয়া দেখাও ভয় ওলো কুলকণে।

কথনও সহসা আসি হও লো উদয় লইয়া শাসন-ব্লীতি নানা লীলাময় কত ভবিষ্যের পট প্রসারিত রয়, উৎস্থক নয়ন-পথে তোল কভ মনো াথে ৰডিত কভই আশা কত খেদ ভয়। কার রাজ্য কেন হয় কিসে হয় যায়। উদয় অন্তের গতি কিন্নপে কোথায়. কভবার কানে কানে শুনাইলে হায়. হে চিস্তা তরকবন্তী. মানবের ছঃথ-গতি ফেরে না কি ফিরাইলে নৃতন প্রথার ? কত জান ও সুন্দরী, খেলার ভঙ্গিমা----কত নৃত্য, বান্ত, গীত, কতই রঙ্গিমা---ভূলাতে ধর গো তুমি কতই মহিমা। এই আপনার তরে পরাণে কেমন ক'রে স্থাবার হৃদয়পরে পরের প্রতিমা। শুধু কি আমার চিত্তে এরূপে খেলাও কিংবা সকলেরি মন এমনি তুলাও বাঁধি স্ক্রতম ডোরে---হাসাও কাঁদাও ? বল লীলাময়ী চিক্তে সবারি কি মন-এরে এমন ভাবন-ফুল নিয়ত ফুটাও ? অন্ধকারে আততান্ত্রি লুকায়ে যথন আপন নিরীক্য জনে করে দর্শন যথন সে ভীম অস্ত্র করে উত্তোলন, থাক তুমি সেইক্র তথনও কি ভার মনে শুনাও তাহার কানে তোমার ক্রন্দন ? কি বল রে, চিস্তা, তুমি তাহার শ্রবণে নন্দন শুইয়া যার মৃত্যুর শয়নে হেরে পিভামাতা-মূথ যেন বা অপনে কি বল রে সে পিতার, সে মারেরে কি প্রথা দেখা দাও বছরপী, কি রূপ ধারণে 🕈 किक्राल वा प्रथा मां वनवीन क्षान्त्री मञ्जि निकारे जुमि, बार मात्रामत्री ক্ষপের লহয়ীচলে মৃত্মনদ বহি। অথবা নিকটে যবে শিশু আসে হাসুর্বে হে চিম্বা, তথন তুমি কিবা শীলাময়ী ? অনস্ত আকাশ প্রায় অনস্ত তৃই রে চিন্তা অকৃল কালের মত বহ তুমি অবির্গ স্বাদি কোণা কে জানে রে তের্বি

অনস্ভ আকাৰ প্ৰায় অনস্ত তুই রে চিস্তা ? জানি নারে কভ কাল ধরার স্জন. জানি নাকভই যুগ মন্থ্যজীবন চলেছে এ ধরাতলে- কিরূপে কেন বা চলে জানি কিছু চিন্তা তুই করিস ভ্রমণ, এইরপে চিরকাল মনের মন্দিরে. शामात्त्र कामात्त्र ताका किया तम वसीत्तः না জানিস জাতিভেদ, না মানিস বেদাবেদ কাফের, মোগল, হিন্দু সবে তোর বন্দী রে ! কালাকাল নাহি তোর, স্থানাপ্থান জ্ঞান পৃথিবী, পর্বাত, নদ, আকাশ, গীর্বাণ দক্দি আভায় তোর নিশি, সন্ধ্যা, দিবা, ভোর চপলার মত খেলা প্রদীপ্ত নির্ব্বাণ। ट्रिक्डा, देक्टकथी निकटि यद आणि मनद्रथ পূর্ব কৈল সভ্যব্রত পরি মনোবর্থ, চিল করি মারাদামে অরণ্যে প্রেরিলা রামে তখনও যেমন তুমি এখনও তেমন ? কুষ্ণের মায়ার জালে পাণ্ডব-মহিলা সভাতে আইলা যবে ভীতা লজ্জাশীলা, (क्रिना (न एवर क्रम कैनिए श्रेष्ट्रक তখনও যেমন তুমি এখনও তেমন ! ষ্থন "কার্থেজ ভব্মে" বসি "মেয়ারস" * হেরিলা অভল-তলে অস্থগত যশ আশাইচচাতিরোভাব বোমক ব্ৰহ্মাণ্ড লাভ তথনও যেমন তুমি এখনও তেমন!

• সল্লা এবং মেয়ারস্ একসময়ে রোমক-এলাওের
সর্পনিম্নস্তা ছিলেন । উহাদের প্রস্পাবের প্রতিবোগিতানিবন্ধন মেয়ারস্ রোম হইতে পলাইয়া
বান এবং ভত্মীভূত কার্থেল নগরীর ভত্মরাশির্ম
যংগ উপবেশন করিয়া আপনার বিলুপ্ত এত্থর্গা ও
কার্থেলের অন্তগত তেল এবং এত্থর্গা পর্প্যালোচনা
করিয়া ক্ষর আন্তঃকরণকে শান্ত করিভেছিলেন,
এমন সময়ে প্রদেশীয় পীটের অর্থাং সর্ব্বপ্রধান
শাসনকর্তার প্রেরিত এক জন চর তাহাকে ধরিবার নিমিন্ত দেখানে উপস্থিত হওয়ায় মেয়ারস
তাহাকে এইয়প উত্তর করেন—ভোমার প্রভৃকে
এইমাল বলিও বে, তুমি মেয়ারসকে কার্থেলের
ভগ্রাশিতে উপবিষ্ট দেখিয়া আসিয়ায়।

ববে "এটারিনেট" + ভূলি রাজস্ব-স্থপন এক ত্রিজামার কালে ত্রন্ত উবেগজালে বৌবনে পলিত কেশ করিলা ধারণ !

হে চিতা, অনন্ত অভূত তোর লীলার বিভক্ত কণকাল নহ কাত্ত মূহত্তিক নহ প্রান্ত মানব-হ্রদয়-ভটে ধেলায়ে তরক -ব্যুক্তিশী রূপ ধবি করিতেছ রুদ ।

ইউরোপ এবং আদিয়া।

আবার উঠিছে অই রণবাজ লোষণা।
শোন হে ভাবতবাসী কি উল্লাস পরকাশি
ছিন্দুকুশ † চুডে আজি বুটিশের বাজনা॥
এ.নর দামামা ভকা ঝাঝবির ঝন্ঝনা
আতকে "আসিয়া কাঁপে, বাজিছে সমর দাপে—
নাচারে বীরের পদ চালিয়া উৎসাহ মদ
বাজিছে 'বুটিশ বাাঙে' বিজ্ঞাবে বাজনা।

উড়িল পাঠান রাজ্য ইংরাজের দুৎকারে —
সমভূম শুস্থাহার অদ্দেক 'বালাহিদার'
"মুত্রগর্জান"—লিবে "হাইলন্দর" বিহারে।
"মের আলি" "ইয়াকুব" "দোরাণী" আফগান
"থিলিজি" "হেরাটী" দল পদে দলি ছোটে বল—
অখারোহী, পদাতিক "আইরিশ" গুর্থা, নিথ,
পাহাড় পর্বত ছিঁড়ে দৌডে তোপথানা।
ইংরাজ আফগানে থালি নহে এই যোঝনা!
আনিহ ভারতবানী "ইউরোপ" "আসিহা" আসি
এ বণ-তবদে ভাসি কৈল শক্তি তুলনা।

* অষ্টাদশ শতান্ধীর রাজবিপ্রবের সময় বিজ্ঞোষী প্রজাবা তথনকাব ফরাদীনুপতি "বোড়শ লুয়ের" এবং উাহার লাবণ্যবতী যুবতী ভার্য্যা "মেরি এউয়িনেটের" শিরশেছদন করে, মৃত্যুর পূর্বে তাহারা ছই জনেই কাবারুদ্ধ হন। কারাবাদেব সময় রাজা এটয়িনেট এরপ উৎকট ভিতার দয় ইইয়াছিলেন যে, এক রাজেব মধ্যেই তাহার কেশকলাপ জরাজীবের লাম অরুবর্ণ হয়। শুলাক্রানস্থানের উত্তরসীমান্তিত পর্বক্তপ্রের।

তুলনা করিল শক্তি পুনরায় ছ'জনে "প্লেভানা" হুৰ্গ (১) যেথায় হের তুরস্কের গায় नित्र रांधि यत्नांब्जन চকমকি ধরণীতল লুটাইল "আবাসমান" (২) ক্রসিয়ার চরণে। লুটাইল "জুলুরাজ" (৩) পশুরাজ বিক্রমে। তৃৰ্জ্জন্ব সমর-পণে ব্ৰিয়া ইংরাজ সনে ঘুচাইল বক্তজাতি 'আফ্রিকার' বিভ্রমে ! লুটে "গোলন্দাজ" পায় এখনও "সভায়"(৪) "আচিনী" (৫) সমর প্রিয় হারায়ে স্বর্কায় সীয় লুটিয়াছে বার বার ব্ৰন্ধ, পারশিক আর চীন, ভাম, আরবীয়, ইউরোপের পায়। পূৰ্কে যথা হিমালয় অধিবাদী দেবতা ঐশবিক প্রতিভায় কবিল অসুরে জয় ষার তরে আর্য্যক্ষাতি-খ্যাতি আৰুও কাগ্রত। সেই ঐশবিক তেজে, এ ধরণীমণ্ডলে উন্নত উন্নতি-পথে. সদা সিদ্ধ মনোবথে হৰ্জয় হ্যতি **প্ৰকাশে,** বিজ্ঞান বিহ্যতাভাগে চলেছে ইউবোপবাদী উপহা**দি অচ**লে। বেঁধেছে পৃথিবী-অঙ্গ লৌহপাত প্রসারি প্ৰনে শকটে বাধি हत्तरह छेजार व्यामि ফেলেছে ধরণী-পৃষ্ঠে লভা যেন বিথারি। শৃক্ত হ'তে টানি আনি উন্নাদিনী দামিনী আজাবহা কবি তায় ঘুরাইছে বস্থায় থেলাইছে দে লভায় কিবা দিবা যামিনী। খুলিতে বাণিজ্যপথ মিলাইছে সাগরে অন্ত সাগরেব জল ভেদ করি মহীতল ভূধর বালুকামাঠ- দূর করি অন্তরে। নদীর উপরে নদী সশরীরে তুলিয়া চলেছে দেখায়ে পথ কোথা বাসে ভগীরও! উপরে অর্থবেপাত ধারাবাহী বহে শ্রোত জঠরে প্রশন্ত পথ ছুই কৃল খুরিয়া।

(১) পূর্বে ক্ষিয়ার ও তৃকিদিপের সহিত এই-থানে শেষ যুক্ষ হয়। (২) তৃর্কিসেনাপতি। (৩) দক্ষিণ আফ্রেকার "জুলু" নামক অসভ্য জাতির রাজ-থিতাব। (৪) বর্ষীপ। (৫) বহকাল বাবত গোলন্দাজদিগের সহিত যুক্ষ করিয়া সম্প্রতি পরা-জিত হইরাছে।

কি গড়েছ. হে বিশাই, এ সবের তুলনা দেবতার শিল্পী তুমি হের দেখ মন্ত্যভূমি নির্ভয়ে চলেছে তব স্বর্গে দিতে লাঞ্না। শোন হে গৰ্বিত বাণী কি বলিছে ৰদনে শৃক্ত পথে বাযু স্রোতে চালাবে মাক্ত-পোতে करन ४था कनशान শৃন্তে তথা ভ্ৰাম্যমাণ कर्गछ পाल जुलि गगरन गहरन। না দিবে থাকিতে বোদ ধরাতল আকাণে না কাটি "পানেমা" চল (১) সসজ্জ তরণীদল **"অতনন্ত" সিন্ধু (২) হ'তে উর্দ্ধে তুলি** বাতানে নামায়ে "শান্তদাগরে" পুৰ্বভাবে ভাগাং স্থির করি চপলায়. নগর-নগৰী কায় ফুটায়ে স্থ্য-আকারে, घुडारम निभि खाँगवारत, ইচ্ছামত ক্ষণপ্রভা দামিনীরে হাগাবে। বল হে "আসিয়া থণ্ড" অধিবাদী যাহাব অর্দ্ধভাগ ধরাতল তোমানের বাদস্থ--কোনু পথে—কি উদ্দেশে চলেছ হে তোমবা। "ইউরোপ" ত্রন্ধাণ্ডভ্রমী যে বীর্য্যের ধারণে শবীরে কিবা অন্তবে কোন অংশ তার ধ'বে বিরাঞ্চিত এ জগতে ? সাধিতে কোন্ ব্ৰতে ? চ'লেছ কালের সঙ্গে কি চিন্তার মগনে ১ অদৃষ্টে নির্ভর করি নামিতেছে পাতালে। "ইউরোপ" বাঁধিতেছে সিঁডি আকাশ ভূধর ছিডি---কেবল উদ্ধেতে গতি দিবা সন্ধ্যা সকালে।

⁽১) উত্তর দক্ষিণ আমামেরিকার ^হ যোজক।

⁽২) ইউরোপ এবং উত্তর আমেরিক। বন্ধ মহাসাগর। (৩) আসিরা এবং উত্তর আমেবি মধ্যক্ত মহাসাগর।

তোমাদের দিবা সন্ধ্যা প্রাত:কাল রজনী সকলি সমান জ্ঞান ৷---আছে কি না আছে প্ৰাণ. অন্ধ অথর্কোর প্রায় ডাক থালি বিধান্তায়, विनित्न अमरहे दर्भाषी जुहे इदव ज्यनि ! কি দোষ রে বিধাতাব—কিবা দোষাপ্রাক্তনে. কি নাবল, দিলাবিধি গ করিতে ধরাব নিধি বিধাকার সাধ্য যাহা দিয়াছে এ ভুবনে। দিয়াছে এতই এরে কথন স্বপনে "ইউরোপ" না হেরে তায় বল হে কোথা সেগায় এমন পৰ্বাত নদ. এমন দাক, নীরদ, এত থনি-জাত গাতু, এত শস্য বতনে? কোথায় সেখানে হায়, হেন বশ্মি পতনে ? এত জাতি ফুল ফল এমন নিশি শীতল. দেখেছে পাশ্চাত্য কোথা হেন শশি-কিবণে গ সকলি দিয়াছে বিধি অভাব যা কেবলি---আমাদের জদিতলে দে স্থোত নাহিক চলে আমাতার করিয়া যায় পাশ্চাতা আগুনে ধায়---ঠানিতে- মবিতে হায়, ঞানি না রে কেবলি। অই দেখ জানে যারা করিতেছে ঘোষণা— শোন তে "আ'সিয়া" বাসী কি উল্লাস প্ৰকাশি "হিন্দুৰ্শ"-চডে বাজে বৃটিশেব বাজনা। এ নয় দামামা ডল্লা ঝাঁঝরির ঝননা, আতত্তে মেদিনী কাঁপে--বাজিছে সমব-দাপে-নাচায়ে বীরের পদ ঢালিয়া উৎসাহ-মদ --वाक्षित्इ "वृष्टिम वृष्टा विकासिव वांक्रमा ।

য্যুনাতটে। (5)

আহা কি স্থন্দর নিশি, চল্রমা উদয়,

কৌমূদীরাশিতে যেন ধৌত ধরাতল সমীরণ মৃত্যুত ফুলমধ বয়, কল কল করে ধীরে তর্মিণী-জল। কুমুম,পল্লব, লভা নিশাব ত্যারে শীতল কবিয়া প্রাণ শবীব জভায়, জোনাকির পাঁতি শোভে ভক্তশাখাপরে নিবিবিলি ঝি ঝি ডাকে জগত গ্ৰায় .--হেন নিশি একা আসি. ষমনাব তটে বৃসি, হেরি শশী দুলে চলে জলে ভাসি যায়। (>)

কে আছে এ ভমগুলে, যথন প্ৰাণ জীবন-পিল্পরে কাঁদে ধ্যেব তাডনে. যথন পাগল মন ভাঙে এ খাশান ধার মলোদিবানিশি প্রাণ অভেষণে. তথন বিজন বন, শাত বিভাববী, শান্ত নিশানাথজ্যোতি বিমল আকাশে. প্রশক্তনদীর ওই পর্বত-উপবি, কার নাতাপিত মন জ্ডায় বাতাসে। কি সুথ যে ছেনকালে, গৃহ ছাডি বহুন গেলে, সেই জানে প্রাণ যাব পুডেছে ছতাৰে। (0)

ভাসায়ে অকল নীবে ভবের সাগবে জীবনেৰ ফ্ৰডাৰা ড্ৰেছে যাগাৰ, নিবেছে স্থের দীপ থোব অন্ধকারে, হুত ক'রে দিবানিশি প্রাণ কাঁদে যাব, সেই জানে প্রকৃতির প্রাঞ্জল মৃবতি, হেরিলে বিরলে বসি গভীব নিশাথে. শুনিলে গভীর ধ্বনি প্রনের গতি. কি সাত্না হয় মনে মধুর ভাবেতে। হয় হেন কি কাবণ নাজানি মানব-মন. অন্স্ত চিন্তাব গামী বিজন ভূমিতে। (8)

হায় রে প্রকৃতি দলে মানবের মন বাঁধা আছে কি বন্ধনে বুকিতে না পারি, নতবা যামিনী দিবা প্রভেদে এমন, কেন হেন উঠে মনে চিস্তার লংগী?

কেন দিবসেতে ভূলি থাকি সে সকলে শমন করিয়া চুরি নিয়াছে যাহায় ? কেন রজনীতে পুনঃ প্রাণ উঠে জলে, প্রাণের দোসর ভাই প্রিয়ার ব্যথার ? কেন বা উৎসবে মাতি থাকি কভু দিবারাতি আবার নির্জ্জনে কেন কাঁদি পুনরার ? (4) বসিয়া যম্নাতটে হেবিয়া গগন. কণে কণে হলো মনে কত যে ভাৰনা. मानष, तालष, धर्म चाजावकुलन. ব্বরা, মৃত্যু, পরকাল, ধ্মের ভাভনা। কত আশা, কত ভয়, কতই আহলাদ. কতই বিষাদ আসি হৃদয় পূরিল, কত ভাকি, কত গড়ি, কত করি সাধ, কত হাসি কত কাঁদি প্রাণ জুড়াইল। **রজনীতে কি** আহলাদ, কি মধুর রসাম্বাদ, বুস্কভাঙা মন ধার দেই দে ব্ঝিল।

হতাশের আক্ষেপ।

()

অধবার গগনে কেন স্থধাংশু উদয় রে।
কাদাইতে অভাগারে, কেন হেন বারে বারে,
গগনমাঝারে শশী আসি দেখা দেয় রে।
ভারে যে পাবার নগ, তবু কেন মনে হয়,
অশিল যে শোকানল, কেমনে নিবাই রে।
আবার গগনে কেন স্থাংশু উদর রে!

()

আই আশা আইথানে এই স্থানে তৃই জনে, কত আশা মনে মনে কত দিন করেছি। কতবার প্রমদার মুখ্চন্দ্র হেরেছি। পরে সে হইল কার. এখন কি দশা তার, আমারি কি দশা এবে কি আখাদের রয়েছি।

(0)

কৌমার যখন তার বলিত সে বারংবার, সে আমার আমি তার, কন্ত কারো হবো না। ওবে ইট দেশাচার কি করিলি অবলার কার ধন কারে দিলি, আমার সে হলো না। (8)

লোক-লজ্জা-মান-ভয়ে, মা বাপ নিলয় হয়ে আমার হলর-নিধি অক্ত কারে সঁপিল। অভাগার যত আশা জন্মশোধ ঘৃটিল।

()

হারাইছ প্রমদার ত্বিত চাতক-প্রায়,
ধাইতে অমৃত আদে বুকে বক্স বাজিল—
স্থাপান ক্ষতিলার অভিলায(ই) থাকিল।
চিন্তা হলো প্রাণাধার প্রাণতুল্য প্রতিমার
প্রতিবিদ্ধ চিত্রপটে চিনাহিত রহিল,
হায় কি বিজ্বেদ-বাণ ক্রনহেতে বিধিল।

(6)

হান্ন, সরমের কথা, আমারার স্বেহের লডা, পতিভাবে অন্তলনে প্রাণনাথ বলিল; মরমের ব্যথা মন মরমেই রহিল।

(1)

তদবধি ধরাদনে, এই স্থানে শৃষ্টমনে থাকি প'ড়ে ভাবি সেই স্থাহের ভাবনা , কি যে ভাবি দিবানিশি তাও কিছু জানি না । সেই ধ্যান, সেই জ্ঞান, সেই মান অপমান— স্থাহের বিধি তারে কি রে জন্মান্তরে পাব না গ

(b)

এ ষন্ত্ৰণা ছিল ভালো, কেন পুনঃ দেখা হলো দেখে বুক বিদাবিল, কেন ভাবে দেখিলাম। ভাবিতাম ক্ষামি হুংখে প্ৰেঃদী থাকিত হুং দে শ্ৰম ঘুচিল, হায়, কেন চকে দেখিলাম।

(8)

এইরূপে চন্দ্রোদর, গগন তারক ন্র নীরব মলিনমূখী অই তরুতলে রে; একদৃষ্টে মূখপানে, চেরে দেখে চন্দ্রানান অবিরল বারিধাবা নরনেতে করে রে; কেন দে দিনের কথা পুনঃ মনে পড়ে বে ?

(> •)

সে দেখে আমার পানে, আমি দেখি তার পারে ভিতহারা হুই জনে বাক্য নাহি সরে তে . কতক্ষণে অক্ষাং "বিধ্বা হয়েছি না (33)

ধনন চ্থন ক'বে .রাখিলাম ক্রোড়ে ধ'রে, ভানিলাম মৃত্ বরে ধীরে ধীরে বলে রে— "ছিলাম তোমারি আদি, তুমিই আমার খামী, কিরে কলে প্রাণনাথ, পাই যেন তোমারে।" আবার গগনে কেন স্থাংত উদয় বে!

কালচক্র।

বারেক এখনও কি রে দেখিবি না চাহিয়া—
উন্নত গগন'পরে
ব্রহ্মাও উজ্জল ক'রে
উঠেছে নক্ষত্র কত নব জ্যোতিঃ ধরিয়া!
মানবে দেখায়ে পথ
চলেছে ভড়িতবং
প্রভাতিয়া ভবিষ্যৎ ভূমগুল ভাতিয়া।

হেরে সে নক্ষত্র-ভাতি দেথ রে মানজাতি ছুটেছে তাদের সনে আনন্দ-উৎসাহ-মনে

নিজ নিজ উন্নতির জয়পত্র বাধিয়া।

চলেছে চাহিয়াদেথ বোদ্ধাযোদ্ধাএক এক কাল প্রাক্তয় করি দেবমুঠি ধরিয়া।

জলধি, পৃথিবী, মেক্স, প্রভাপে হয়েছে ভীক্স, অবাধে পরিছে পাশ পদতলে পড়িয়া।

চলেছে ব্ধনগুলী নবে করি কুত্হলী, চক্ত কুৰ্য্য গ্রহ তারা ইিডিরা আনিছে তারা শুক্ত হ'তে ধরাতলে জ্ঞান-ডোরে বাঁধিরা।

আকাশ পাতাৰ গত পঞ্চত্ত আদি বত প্ৰকৃতি ভৱেতে ক্ৰত দেথাইছে ধ্লিয়া। দেবতা অস্থরগণ ক্রুমে হয় নিদর্শন ঈশ্বরের সিংহাসন উঠিতেছে কাঁপিয়া।

সরস্থতী কুতৃহলা, সাহিত্য-দর্শন কলা বহুতে সহস্রমালা দিতেছেন তৃলিয়া,

কমলা অজ্ঞ ধারে ভাঙ্গিয়া নিজ ভাণ্ডারে ধনরাশি অুপাকারে দিতেছেন ঢালিয়া।

কবিকুল কোলাহলে মূথে জয়ধননি ব'লে উএতি তর্ক সদে ছুটিছে অশেষ রঙ্গে, অজাতি-সাহস কীর্তি উচৈঃখবের গাহিয়া।

অই দেখ অগ্রে তার পরিয়া মহিমা-হাব চলেছে ফরাসীঞ্চাতি ধরা শুদ্ধ করিয়া।

অস্থির বাসনাবলে— স্থাপিত অবনী তলে সমাজ শৃদ্ধলমালা নবস্ত্রে গাঁথিয়া।

চলেছে রে দেখ চেরে শতবাহ প্রসারিরে অর্দ্ধ সদাগরা ধরা অলফারে ভূষিয়া।

আমেরিকাবাসীগণ নদ গিরি প্রস্রবণ জলনিধি, উপকূল লৌহজালে বাঁধিয়া।

অই শোন গোরনাদে প্রাতে মনের সাধে পুরুষিয়া মল্লবেশে উঠিতেছে গর্জিরা।

বিনতা-নন্দন সম ধ'রে নিজ পরাক্রম দেধ রে আসিছে ক্লস বস্তমতী গ্রাসিয়া !,

ইভালি উত্তৰা হলে ' স্ব-কিনীট শিৱে লৱে আবার কাগিছে দেখ হহকার ছাড়িয়া। বিভারিরা তে**জো**রাশি দেথ বে বুটনবাসী আচ্চন করেছে ধরা, মক্ষীপ সদাগবা, বত দুর প্রভাকর-কর আহে ব্যাপিয়া।

প্রকাশি অসীম বল, শাসিছে জলধিতুল, শিরে কোহিত্র বাঁধা মদগর্কে মাতিলা। তবুও বাবেক কি রে দেখিবি না চাহিলা—

হতভাগ্য হিন্দুশ্বতি ? শোভে কি নক্ষত্ৰ ভাতি উন্নত গগনপৰে ধৰাতল ভাতিয়া ?

ছিল সাধ বড মনে ভারত(ও) ওদেবি সনে চলিবে উজলি মহী করে কর বাঁধিয়া;

স্বাবাব-উজ্জ্বল হবে নব প্রজ্ঞানত ভাবে ভারত উন্নতি-স্রোতে চলিবে রে ভাসিয়া।

জ্বনিবে পুক্ষগণ, বীব যোদ্ধা অগণন, রাথিবে ভাবত নাম ক্ষিতিপৃষ্ঠে আঁকিয়া।

দে আশা হইল দ্ব. নীরব ভারতপুব; এক জন (ও) কাঁদে না রে পুর্বকথা ভাবিয়া।

এ ফিতিমওলমাঝ, আর্য্য কি রে নাহি আজ ভুনায় সে রব কেই উচৈঃখরে ডাকিয়া।

সে সাধ খুচেছে হার। আর মা জননী আয়, লরে তোর মৃতকার মিটাই মনের সাধ মনে মনে কাঁদিরা।



डेमामिनौ।

.

আদে মাথা ছাই, বলিহাবি বাই,
কে রমণী অই পথে পথে গাই,
চলেছে মধুর কাকলী ক'রে।
কিথা উষাকাল, দিবা বিপ্রহর,
বীণা ধ'রে করে ফিরে ঘরে ঘর,
পরাণে বাঁধিয়া মিলায়ে স্তান,
গায় উচ্চস্থরে সুললিত ভান.

উতলা করিয়া কামিনী নরে। অংকে মাথা ছাই বলিহারি যাই, কে রমণী অই পথে পথে গাই,

চলেছে মধ্ব কাকলী ক'রে।
নয়নের কোণে চপলা থেলিছে,
নিত্তথেব নীচে চিকুর ছলিছে,
ককণা মাধান বদনের ছাদ ধেন অভিনব অবনীর চাঁদ,
কটি, কর, পদে ছভান মাধ্বী
গেকুলা বসনে তস্থা আবিব

চলেছে সুন্দরী ভাবনা-ভরে। বলি হারি যাই। অলে মাথা ছাই, কে রমণী অই পথে পথে গাই, চলেছে মধুর কাকলী ক'রে।

()

আই শুন গার, প্রাণের জালার —

"পাব না, পাব না, পাব না কি ভার,
নাহি কি বিশাল ধরণী-ভিত্তবে,

যেখানে বিদিয়া সেহের নিম্ন কৈ,

মিটাই পিপাদা জুডাই পরাণ,

দেখাই কিরূপ নারীর পরাণ,

প্রণবের দান হৃদ্ধ পরে!

বেথানে বহে না কলকের খাস,
কাদাতে প্রণরী খুচাতে উল্লাস,
বাযুতে, তরুতে, মাটাতে, আকালে,
বেথানে মনের সৌরভ প্রকালে,
খরের, পরের, মানের ভাবনা,
লোকের গঞ্জনা, প্রাণের বাতনা,
বেথানে থাকে না স্থার তবে!

(0)

*কিবা সে বসন্ত, শরৎ, নিদাব, নরনে নয়নে নব অন্তরাগ ওঠে নিতি নিতি ফোটে অভিলাব, নিশিতে বেমন কাননে প্রকাশ,

কলিকা-কম্বমে ফটাতে শনী॥ দিবা, দণ্ড, পল, প্রভাত, যামিনী বাব, তিথি, মাদ, নক্ষত্ৰ, মেদিনী, থাকে না প্রতেদ, প্রণয়-প্রমাদে হেরি পরম্পর মনেব অবাধে. জীবনে পরাণে মিশিয়া চুক্তনে নেহাবি আনন্দে স্বথের স্বপনে---নয়নে নয়ন, গণ্ডে গণ্ডতল, করে কব্যুগ, কণ্ঠে কণ্ঠস্থল, যেন প্ৰিমল প্ৰন-ভিল্লোলে. যেন ভক-লতা তক্ল-শাপা কোলে. ষেমন বেণতে বাণীব স্থার. ষেমন শশীব কিরণে অন্বর. তেমনি অভেদ তজনে মিশিবা. ততুমন প্রাণ, ততুমনে দিয়া, ডলে বাহজান তাজে নিদ্ৰা কুধা, পান করি স্থাথে আনন্দের স্থা, অগাধ প্রেমেব সাগরে বসি।

(8)

"ত্যুক্ত গৃহবাস হয়ে সন্নাদিনী,
ন্দ্ৰিমি পথে পথে দিবস-যামিনী,
আকাশের দিকে অবনীর পানে,
দেখি অনিমিয়ে আক্র পরাণে,
করাসম রবি, খেত সুধাকর,
মৃত্ মৃত্ আভা তাবকা সুনর,
তক্ত, সরোবব, সিরি, বনস্থল,
বিহল, পতল, নদ, নদী, জল,
যদি কিছু পাই খুঁজিয়া তাহাতে,
স্মেহেব অমিয়া হ্লারে মাধাতে,
মেহিক নয়নে করিতে শ্রণ,

দেবতা মানব নারী কি নরে। স্থা থাকে তারা স্থাপ থাকে ঘরে, পতি-পদতল ৰক্ষান্তলে ধ'বে, বিবাহিতা নারী — দধ্বের বেলনা,
ধার দার পরে নাহিক ভাবনা,
জানে না, ভাবে না প্রণয় কেমন,
প্রাণের বল্লভ পতি কিবা ধন,
ইহারাই সভী — বিঘত-প্রমাণ
আশা, কচি, লেহ ইহাদেব প্রাণ—
নারীর মাহাত্ম্য রম্পীর মন
কত যে গভীব ভাবে কত জন,
প্রণয় কি ধন নারীব তরে হ

(4)

"আমি মরি ঘূবে পৃথিবী-ভিতবে,
প্রাণের মতন প্রাণেনাথ তরে ,
কই—কই পাই প্রাতে বাসনা
পূপেরে নাহি পাই হাব কি বাতনা!
আবে মত্ত মন, সে অনিতা আশা
ত্যক্ষ, ধৈর্যা ধর মূপে ভালবাস।
প'রে সৃহ কর ক'বে পবিণয়
না থাকিবে আর কলকেব ভয়,
পাবি অনায়াসে পতি কোন জন,
পাবি অনায়াসে অয় আছোদন,

তবে মিছে কেন এত বিষাদ ?
জালতে না হয় পুজিয়া পুডিরা,
পরাণ হৃদয় প্রথম স্বরিয়া,
সাহারাব মক তপনে বেমন,
কিংবা আগ্রিগিবি-গর্ভে হুতাশন,
জ'লে জ'লে পুডে উঠিবে যথন,
হৃদর পাষাণে রাগিব চাপিয়া,
মবিব না হার মবমে ফাটিয়া,

তবুত প্রিবে লোকের সাধ। স্বথে থাকে তারা জানে না কেমন প্রোণের বস্তুত স্থা কিবা ধন,

মনের সুথেতে থাকে রে বরে !"
বলিতে বলিতে কাঁদিরা কাঁদিরা,
চলিল সুন্দরী নয়ন মুছিয়া,

গাহিয়ামধ্ব মূহ**ল করে !**

(%)

"কেনই থাকিব কিসের তরে, তহু বাধা দিয়ে গৃহের ভিতরে ? কারাবনী সম চিব-হতামাস, কেনই তাজিব এমন বাতাস, এমন আকাশ রবির কিরণ, বিশাল শরণী, রসাল কানন, প্রাণি-কোলাছল বিহলের গান, সাধের প্রমাদ—স্বাধীন পরাণ;

কেনই তাজিব ? কাহার তরে ?
তাজিতাম যদি পেতাম তাহায়,
যারে খুঁজে প্রাণ ত্বন বেড়ায়,
বাহার কারণে নারীর বাজার
করেছি বর্জন, কলকের হার

পরেছি হৃদরে বাসনা ক'রে।
"কোধা প্রাণেখর, কই সে আমার
কিসের কলক—সুধার আধার—
সুধার মণ্ডলে সুধারই শশাক,
এসো প্রাণনাধ—নতে ও কলক

তোমা লরে সুথে থাকি হে কাছে।
তবুও এলে না ?—বুমেছি বুথেছি;
এ জীবনে আর পাব না জেনেছি;
বখন তাজিব মাটীর শিকণ
ভামিব শুন্তেত হইয়া মুগল,
হরিহররপে তহু আধ আধ,
তথনি মিটিবে মনের এ সাধ,
ববির মওলে চাঁদেব আলোকে,
কৈলাস-শিথরে শিব-ত্রন্ধ লোকে,
কর্মের বারি, পবনের বায়্
এই বস্থন্ধরা প্রাণী, পরমায়,
হেরিব স্থেত্তে পুলকে শ্রমিয়া,
ভাধি মাটিবে মনের সাধ!—
ভখন পৃথিবী সাধিদ্ বাদ,

ज्लिम् कनक बजरें:बाह्य !"

এই কি আমার সেই জীবনতোষিণী ?

(১)
এই কি আমার সেই জীবনভোবিণী ?
বৌবনের স্থধাময়ী স্থধাতর জিণী ?
এই কি সে করতল শিরীব-কোমল,
ধরিতে হৃদরে বাহা হয়েছি পাগল ?
এই কি সে প্রাণহারা চোরা প্রিয় আঁবি ?
দাধ্য নাহি ছিল বারে ক্লণে ধ'রে রাধি।

এই কি রে সেই তমু খর্ণ জিনি বার

শাবণা ঝরিত অকে—এই সে আমার ?

শালক-উপরে নারী পার্যদেশে বসি তারি
ধীরে কোন প্রৌচ্জন বলে;

অলকার কেশগুলি ধীরে ধারে করে তুলি

খরে দীপ ধিকি ধিকি জলে।

(२)

সাধের সামগ্রী যত, সকলি হেথার
এইরপে কলম্বিত কালের মলার।
সোনার বিগ্রহে যদি পূজ এক দিন,
সেও রে পরশ-দোহে হ্র রে মলিন!
হীরকে কাটিরা কর চিকণ দর্পণ,
তাতেও কালের ছায়া কালেতে পতন!
কত শোভা পল্মদলে জলে যবে তাসে,
পরশ বাবেক তারে—ভারো শোভা হাসে।
সংসারের সুথপদ্ম নারীও শুকার সঘ
পুরুষেব দরশ পরশে।
বলে আার ফিরে ফিরে নেহারে নেহারে ধীরে

নারী-আভা নিজার সরসে। (৩)

প্রবেশি সংসারে যবে— কি স্থেপর কাল।
প্রকৃতির বুকে যেন স্ববর্ণর জাল
যতনে ছডান ছিল, জড়ান তাহাতে
কত মোহকর চিত্র নমন জুড়াতে।
কিবা নিজা কি যণন কিবা সে জাগিয়া,
সকলি নির্থি বুক উঠিত নাচিয়া,
ছুটিয়া বেড়াত প্রাণ আশার থেলায়,
ভাবিয়া মানসে এই তরুণী লতায়,
কেবেছিল্ সম্প্র

নবতক রোপেছি আনিরা। সে নবীন তক এই হার রে আমিও সেই কোথা গেল সে আশা ভাসিরা।

(8)

"কেন নাথ কেন কেন" বলিয়া তথন উঠিল রমণী দেই তাজিয়া শহন ; তুলিলা পরিয়া গলে বিগলিত হার বলে "নাথ হের দেখ এখনও বাহার, চারা গাছে পাতা ছিল এবে কুল তার কুটেছে কেমন দেখ পাতার পাতার, কে বলেছে ফ্রায়েছে সে সাধের আশা,
সেই তৃমি সেই আমি সেই ভালবাসা।
মন দিয়ে থেল নাথ ফিরে হবে বাজি মাত
সেই থেলা আবার থেলিব,
সেই পুঁজি, সেই পণ, সেই প্রাণ, দেই মন,
প্রাণনাথ সকলি সে দিব।"

(t)

'কি দিবি রে পাগলিনি, পাবি কি কোথার ?
সাধের বাগান ভাকা চেয়ে দেথ হার!
হারা ক'রে ছিল তাহে হেই তৃটি তক,
বসিতাম তলে যার যবে ভার গুক,
একটি তাহার হার, সমূলে ভাকিয়া
গিয়াহে কোথার চ'লে সদিনী হাডিয়া।
বিল্লীকেতে জরজর নীবস শরীর
সেও হার গত-প্রার বজাহত শির!
রোপিন্থ যে এত সাধে ফল-তক কাঁধে কাঁধে
ক'টি তক আছে বল তার ?
ক'টি বল কৃটে আছে দাঙাইলে কার কাছে
সেই স্থাণ ছুটে পুনর্কার!

()

পাগলিন কোথা পাবি দে শোভা আবার ?

দে ফুলের মধু, বাস, এখন আবার !"

"কোথা পাব ? এস নাথ দর্পণের কাছে,
দেখাই সে শোভা তব, এবে কোথা আছে ।
কেন নাথ নাই কি হে ?—এই ত সে সব
সেই চাক চাদম্থ, প্রাণের বল্লভ,
দেই ত অমিয়মাধা এখন(ও) তোমার,
নয়ন, বচন, হাসি—দর্শণ মায়ার !

সেই বাছলতা এই

তথনও বা ছিল নাথ, এখনও ত সেই,

বেই আমি দেই প্রাণ, হুণদ্বেতে সেই গান,
তথন এখন কই প্রভেচ ত নেই।"

(9)

"প্রজেদ কি নাই,—হার হার রে কণ্টা— দেখ দেখি একবার নরন পালটি। বৌধনের কুঞ্জবন কত ছিল তার গারী, ভাষা, শুক শিক পাতার পাতার। বতনে ডাকিলে কাছে হরিবে আসিরা, বদরে মাধার, কোলে পড়িত লুটিয়া. এখন(ও) কি সেই পাণী আছে কি সে সব ?
সেইন্ধপে কাছে এদে কৰে কি নে বব ?
কত উড়ে গেছে তাব উড় উড় কত আর্ম্ন
কত হাম নীবৰে বদিয়া.
অস্থে শাখীতে লুটে, ডাকিলে আদে না ছুটে
কাদে বিদি সম্বীত ভূলিখা।

(b)

এখন বাজে না জার সে কুহক বানী।
মোহিনী মারার মুখে—সকলি রে বাসী
নির্গন্ধ জগতে এবে, নির্গদ্ধ স্তুদ্ধ,
বসন্তের বাসশুন্ত ফণীব আলর।
বা ছিল স্বেহের মণি দিয়াছি বিলায়ে,
এখন ভিখারী কাচ না পাই কুডায়ে।
ভেদেছে প্রেয়সি, সেই আলাব আরমী!
হাসিয়া, কাদি, খেলি বটে তব্ও উদাসী।"
"তব্ও উদাসী নাথ, কর দেখি দৃষ্টিপাত
বারেক এ শিশুর বদন।"
ববে তুলে আনি স্বথে বাবিল হামীর বৃক্
পুনঃ মারা-নিগতে বদ্ধন।

কামিনী-কুস্থম।
(১) ·

কে খোঁজে সরস মধু বিনা বন্ধ-কুন্মমে ? কোথায় এমন আব কোমল-কুস্থম হার পরিতে দেখিতে ছুঁইতে আছে এ নিধিল ভূমে 🕇 কোথা হেন শুভদল হদে পূরি পরিমল, वांटक व्यवस्थ ८ हरत्र मधुमांथ। नतरम ? বঙ্গনারী-পুষ্প বিনা মধু কোথা কুমুমে ? () কি ফুলে তুলনা দিব, বল চূতম্ক্লে ? কোথায় এমন স্থল খুঁজিতে এ ধরাতল সেখানে এমন মুছ মৃত ঝবে রসালে ? বেখানে এমন বাস, নব রুসে পরকাশ, **নবীন** যৌবনকালে মধু ওঠে উথলে ।

ৰক্কুলবালা বিনা মধু কোথা মুকুলে ?

(0)

মধ্ব সৌরভমর ভাব দেখি চামেলি
চালে কি অতুল বাস,
ফ্লম্থে মৃত্ হাস
তরুকোলে তহু বেথে, অলিকুলে আক্লি।
কি জাতি বিদেশীফ্ল
আছে তার সমতুল,
রাখিতে হৃদয়-মাঝে প'রে চিত্তপুত্লি ?
বঙ্গকুলনারী এর তুলনাই কেবলি !

(8)

কি আছে জগতে বেল-মতিযার ত্লনা !
সরল মধুব প্রাণ,
স্থগতে মিশারে দ্রাণ
ত্লায় মূনির মন নাহি জানে ছলনা,
না জানে বেশ-বিক্যাস,—
প্রস্থাটিত মূথে হাস
অবরে অমিয়া ধরি হলে পূরি বাসনা—
বলের বিধবা সম কোথা পাব লদনা ?
(৫)

কে দেখ বিলাতী 'লিলি' নলিনীতে উপমা ?
দেশে যে কম্দ আছে
আম্ক তাহারি কাছে
তথন দেখিব বুঝে কার কত গরিমা।
বিধুর কিরণ-কোলে
কুম্দ খণন দোলে,
কি মাধুরী মরি তার কে বুঝে দে মহিমা ?
কোণায় বিলাতী "লিলি" নলিনীর উপমা ?

(৬)
কি ফুলে তুলনা তুলি বল দেখি চাপাতে ?
প্রকাদ স্থান বার
প্রেমের পুলকাগার,
ক্রমানী রঙ্গবদে মত্ত আছে বাহাতে।
কেথার ঈরাণী 'গুল,'
এ স্থলের সমতুল ?

কোৰা ফিকে 'ভায়োলেট' গন্ধ নাহি ভাহাতে। কি ফ্ল তুলনা দিতে আহে ৰল চাঁপাতে ? (१)

কৃতই কুমুম আবো আছে বদ-আগাৱে— মানতী, কেতকী, জাতি, হাদ্দুনী, কাৰিনী পাতি, টগর মল্লিকা নাগ নিশিগন্ধা শোভে রে,
কে করে গণনা তার—
অশোক, আতস আর,
কত শত ফ্লকুল দোটে নিশি ত্যারে—
সুধার সহরী বালা বন্ধগৃহ-মাঝারে।

(৮)
কিবা সে অপরাজিতা নীলিমাব লহরী!
লতায়ে লতায়ে বায়,
অমরে তৃষি সুধায়,
লাজে অবনতমুখী, তহুথানি আবিবি,
তাই এত ভালবাদি,
মেবেতে চপলা হাদি—
কে খোঁজে বে প্রজাপতি, পেলে হেন লমরী,
মরি কি অপরাজিতা নীলিমার লহরী।

(১)

এ মাধুরী স্থধারদ কোথা পাব ক্সমে,
কোথায় এমন স্থার,
কোমল কুস্ম-হার,
পরিতে, দেখিতে, ছুঁতে, আছে এ নিগিল ভূমে
কোথা হেন শতদল
স্থদে পুরি পরিমল,
থাকে প্রিসম্থ চাহি মধুমাথা সরমে—
বন্ধনারী-পুশা বিনা মধুকোথা ক্সমে ?

চাতক পক্ষীর প্রতি।

(১)
কে তুমি রে বল পাখী,
সোনার বরণ মাধি,
গগনে উধাও হলে,
মেবেডে মিনিয়া রলে,
এত মুধে মধ্মাধা সদীত শুনাও দ

()

বিহৰণ নহ তুনি;
তুজ্ঞ কৰি মন্ত্যজ্ঞি;
জ্ঞানত আনৰ প্ৰাৰ,
উঠিবা দেখেব গায়,
স্কুটিবা জনলপ্ৰে অ্বাৰ হড়াও দু

(0) দৌরভে লুকায়ে বয়, व्यक्श-जेनम्-कारन যথন প্ৰন্বয়, সন্ধ্যার কিরণজালে স্থান্ধ উথলি উঠি বাণুরে কেপার। দূর-গগনেতে উঠি (> •) গাও মুখে ছুটি ছুটি, সেইরপ তুমি পাখী, স্থের ভরকে যেন ভাসিয়া বেড়াও ? অদৃত্য গগনে থাকি (8) কর স্থথে বরিষণ আকাশের তারা সহ সুধাস্বব অমুক্ষণ মধ্যাহে লুকায়ে রহ, ভাসাইতে ভূমওল স্থার ধারায়। কিন্তু শুনি উচ্চৈ:শ্বরে (>>) শূকেতে সঙ্গীত ঝরে. কেবা তুমি জানি নাই, **ষ্মানন্দ প্ৰ**বাহ ঢেলে পৃথিবী জুডাও। তুলনা কোথায় পাই, (a)व्यवसङ्ग हुर्व इरम्र, একাকী তোমাব স্ববে পড়েষদি শৃক্ত ব'য়ে, জগৎ প্লাবিত করে, তাহাও অপ্কা, হেন নাহিক দেখায়। শরতেব পূর্ণ-শূশী (><) বিমল আকাশে বসি, ষ গ কিছুভূমণ্ডলে কৌম্দী ঢালিরা যথা ব্রহ্মাণ্ড ভাসার, স্থলর মধুব বলে---(.) নবীন মেধের ঞ্ল— कवि यथा नुकाहेर४ মৃকো-মাথা তৃণদল---क्षतस्य किञ्चन लास्य, তোমার মধুর স্ববে পরাঞ্চিত হয়। উন্মন্ত হইম্বে গায়, (50) পৃথিবী মাতিয়ে তায় পাখী কিংবা হও পরী, ব্দাশা, মোহ, মায়া, ভয়, অফেরে জ্ডায়। বল রে প্রকাশ করি, কি সুথ চিন্তায় তোর (9) রাজাব কুমারী যথা আনন্দে হয়েছে ভোর ? এমন আহলাদ আহা ধ্বরে দেখি নাই। পেয়ে প্রণয়ের ব্যথা, (38) গোপনে প্রাসাদ'পবে সুধা প্রণশ্বেব গীত বিরহ সাত্রা করে, মধুর প্রেমের মত মধুব গাথায়। প্রাণ করে পুলকিভ— ভারো স্থললিত পর, () নহে এত মনোহৰ, যেমন থড়োৎ জলে এত সুধাময় কিছু না হেরি কোথায়। বিরল বিপিনতলে, (50) ক্ষুম ভূণের মাঝে বিবাহ-উৎসব রব, আত্সী আলোক সাজে, বিজয়াব জয়-স্তব— ভिक्तिश निभित्र-नीत्त्र छाँथात्र तिभाग्न। তোর খব তুলনায় ष्मात (पश्चित जाह-भाकाम निक्क गांधा व्यक्ति मा मरमद नाथ शूर्व माहि इत ।

6गानान जन्छ रवा

(>6)

তোর এ আনন্দমর স্থ-উৎস কোথা রর, বন কিংবা মাঠ গিরি গগন হিল্লোলে হেরি— কারে ভালবেদে এত ভুল সমুদর ?

()1)

তুমিই থাক রৈ স্থাধ জান না ঔলাজ তুথে বিরক্তি কাহারে বলে, জান না বে কোন কালে, প্রেমের অফচি ভোগে হলাহল কত।

(36)

আমরা এ মস্ত্যবাসী কভ্ কাঁদি কভ্ হাসি, আন্তোপাছে দেখে বাই, যদি কিছু নাহি পাই, অমনি হতাশ হয়ে ভাবি অবিরত।

(50)

ৰত হাসি প্ৰাণ ড'বে, যাতনা থাকে ভিতরে, এ ডঃথের ভূমগুলে শোকে পরিপূর্ব হ'লে মধুব সঞ্চীত হয় কতই মধুর।

(२)

স্থপা ভর অংহকার প্রে ক'রে পরিহার পাথীরে ভোমার মত যদি নাকাদিতে হ'ত নাকানি পেতাম কত আনক প্রচুর।

(22)

গহনবিহারী পাধী জগতে নাহি রে দেধি গীতবাজ মধুপ্রর হেন কিছু মনোহব তুদনা হইতে পারে তোমার বাহায়।

(২২) বে আনন্দে আছি ভোৱে আনহাত জিলেক ত্যালে পাথী তৃমি কর দান, তা হ'লে উন্মন্ত প্রাণ কবিতা-তরকে ঢালি দেখাই ধবার।

প্রকার। *

(3)

কিবে কি আদিছে প্রলম্বের কাল নাশিতে পৃথিবী ? কিবে কি করাল, বাশিবে বিষাণ ভীষণ নিনাদে ? অলম্ভ আকাশে বিপুল প্রমাদে ফিবে কি উঠিবে ঘাদশ রবি ?

()

ভর্মর কথা—ব্রন্ধাও-বিনাশ করিতে আদিছে প্রচণ্ড হতাশ— ভাস্থ্য মণ্ডলে তাডিতের শিধা, গিরি-চূড়াক্তি, বাযুপথে দেধা,

দিয়াছে অত্ত অনলছবি।
স্থির বার্ ভেদি তডিত-কিবণরাশি তুপাকার করিছে গমন,
পৃথিবীর দিকে—আফতি ভীষণ
দেখিতে অত্ত অনলছবি।
অলস্ত আকাশে বিপুল প্রমাদে

(0)

किरत कि छेडिर बाम्भ विव ?

আসিছে অনল ব্ৰহ্মাণ্ড উজলি,
(দেখেছে শৃক্ষেতে পণ্ডিতমণ্ডলী)
জগত-ব্ৰহ্মাণ্ড করিবে গ্রাস।
একি ভয়কর—বিখচবাচর,
দোম, শুক্র, বুধ, মহী, শীনশ্চর,
বিহ্যুৎ-অনলে হবে বিনাশ।

* ১২৮২ সালে সম্পূর্ণ স্থাগ্রহণকালে ইউ রোপীর পণ্ডিতেরা দেধিরাছিলেন বে, স্থাস্তর্গ ইইতে এক অভ্ত বিদ্যাভাক্তি স্বোতীর্থে নির্গত হইরা পৃথিবীর দিকে আসিতেছে, ার অর্দ্ধেক পথ অভিক্রম করিরা আসিরাছে বং যেরপ বেগে আসিতেছে, তাহাতে অনতিবি বি পৃথিবীকে আছের করা সম্ভব। সেই উপান্ধি আকাশের গ্রহ, নক্তরমগুলী অনলে পুডিয়া পড়িবে সকলি , অধিল ত্রন্ধান্ত হবে শৃত্তমন্ত্র, সমূত্র, পবন, প্রাণী সমূদ্য,— এমন পুথিবী হবে বিনাশ ।

(8)

হইবে বিনাশ এমন পৃথিবী ? অথবা যেমন চন্দ্রমার ছবি, প্রাণিশৃক্ত মক্ষ হয়ে চিরকাল, ভ্রমিবে শৃক্তেত হিমানীর তাল—

মানব বিহল কিছুনা রবে ৽ না রবে জলধি, নদনদীজ্ঞল, অগাধ সাগর হবে মক্তল, শীত, গ্রীম ঋতু জুরাবে সকল,

মানব পতক কিছু না রবে ?
না রবে মানব—বিপূল মহীতে,
মানবের মুথ না পাব দেখিতে,
পাব না দেখিতে জগতের সার
রূপের প্রতিমা, অ্থের আধাব
রুমণীর মুথ—ভবের ভূষণ
বিধাতার চাক মানস-স্ঞান—

6ित्रमिन जरत विनीन श्रव ? (c)

বিহলের খর, তবল-নিঝ'র,
কুমুনের আভা খ্রাণ মনোহর,
বালকের হাদি, আধ আধ বোল,
ঘনষ্টাক্টো জলের কলোল,
টাদের কিরণ, তডিতের থেলা,
ভাহর উদয় ভ্ধরের মেলা,

দেখিতে ভনিতে পাব না আর ?

এত বে সাধের এত বে বাসনা
আশা অভিলাষ, কিছুই রবে না,
আনন্দ বিষাদ, ভাবনাকলাপ,
প্রাণ্টের সুথ প্রতাপের তাপ,
ধনের মর্য্যাদা, মানের গৌরব,
আনের আখাদ, প্রথমর নৌরত,

কিছু কি রবে না রবে না তার ? (৬)

বিরলে বসিরা এ মহীমগুলে, উলানে ভাসিয়া কালের হিলোলে, আব কি পাব না সে ভাবে ভাবিতে, আর কি পাব না দে সব দেখিতে, নয়নে কাঁদিয়া অপনে ড্বিয়া, মানসে ভাগিয়া প্লকে প্রিয়া,

বে সবৈ দেখিতে বাসনা হয়।
শিশু-বাল্যকাল, হোগন সরল,
(কথন অয়ত কথন গরল,)
ক্টিল প্রবীণ মানব জীবন,
লহরী লুকায়ে হবে অদর্শন,

अोव প্রবাহ—
 इत्व প্রলয়
 १

(9 '

এত যে সহস্ৰ জীবের বতন—
দেবের সদৃশ মহামতিগণ,
মৃগে যুগে যুগে প্রাণ স'পিরা
আকাশ, জলধি, পৃথিবী বুঁজিরা
জ্ঞান সঞ্চারিল, মানবজাতিতে,
আননদ নিঝর অজস্র করিতে,

সকলি কি হার বুধার থাবে ? তবে কি কারণ বুধা এ সকল, এ মানবজাতি, এ মহীমওল, এমন তপন, তারা, শশধর, এত সুথ, তুঃথ, রূপ মনোহর

বিধির স্ঞান কেন কি ভাবে 🕈

(+)

নাহি কি কোন অভিসন্ধি তাঁর, জীবাত্মা, জীবন, সকলি অসার, এত যে যাতনা ধাতনাই সার—

শুধুই বিধির সাধের পেলা ? তবে ভশ্মদাৎ লোক্রে এথনি, দেহ, পরমানু, আকাশ, অবনী, আধারে তুবিয়া হোক ছারধার, কিবা এ এজাও জীবজন্ধ আর—

চিবদিন তরে যাক এই বেলা। এ মানব-ল্লাতি, এ মহীমগুল, বুধা এ সকল – সকলি নিম্ফল—

এই কি বিধির সাধের থেলা! বিধাতা হে আব করো না স্থলন, দ এমন পৃথিবী, এমন জীবন— কর যদি প্রভু, ধরা প্নকারি মানব স্থল করো না'কো আর, আর বেন দেব, না হয় ভূগিতে এই দেহ, মন ধারণ করিতে, এরপ মহীতে কথন আর।

আমায় কেন পাগল বলে পাগলে ?

লোকে করে যা আমি করি না,
লোকে ভাবে যা আমি ভাবি না,
পাঁচের মতনই হ'তে পাবি না,
পাবিলাম(ও) না এ ভ্তলে।
আর যত সবে কত স্থপে ধায়,
কত আশা ক'রে কত দিকে চায়,
ছথ-শূলে বাঁগা—তবু স্থময়
ভাবে সকলে।
ভারা জানে না—পরবেদনা,
কভ্ ভাবে না—নিজে যাতনা—

ভাৱা ভাবে না—সর্বেদনা, কভু ভাবে না—নিজে যাতনা— ফুদি তাডনা—সহে বাসনা— কু-ছলে।

আমি হেরি যত চাহি তত পথ, হেবি ছায়াময় সব মনোরথ, যত আশাচ্যত কিছু মনোমত নহে ভৃতলে।

সবি ত্থময় সদাজভান হয়, ভব সমূদয় যেন ঢাকা রয়,

হেডা—জরা আঁচলে।

যত খুঁজি আমি খুঁজি কতবার(ই),
খুঁজি পাই কট কিবা নরনারী

যত পরিবার নাম জানি তার,
ভাবে নিজ নিজ ভোর বেবা থার
আমি যে ভিথারী আশা-মূলি সার
আমা—ভ্তলে।

আন্ধ—ভ্তবে।
তেবে ভেবে হিয়া হাদে মনে,
ভবে দেখে যত তব-ক্ষেপ। জনে,
পাচে কাদে খেলে মিশে ভব-সণে
আমি কাদি বনে অচলে।
আমায় কেন পাগল বলে পাগলে ?
কিবা শিশু যুবা—কিবা সদাচারী
হেন নির্মলে?

নাহি ছাঝা-বেথা যার হিয়াপরি,
যারে হাদিনাঝে পুরে পুঞা করি,
হিয়া-মুকুরেতে যারে দিলে ধরি
সদা উজ্জলে!
কোথা পাই হেন ভব-চরাচরে
হিয়া দিলে বারে হিয়া দেয় পরে,
যিনি কোন ছলে।
স্থা স্থা বলি কত সাথে বলি,
দিছি কতবাব(ই) হিয়াতলে দলি,
শৃষ্ঠ তবু প্রাণ জীর্থ আশা-কলি

দূর-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে।

শীতাংশু ঢালিছে সুথে সুধাংশু গগন-বুফে জগৎ শীতল হয়ে দে আলোকে ভিজিছে, সুধীর সমীর বয় ত্ৰিছে পল্লবচয় উভানে রজনীগন্ধা নিশিমুথে ফুটছে। দূর-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে। স্বপনে ছুটিছে জোর স্বভাবের ভাবে ভোর পরাণ জ্বার মম কত স্রোতে ডুবিছে, বিশ্বপ্রাণে যুক্ত প্রাণ অসাড ইন্তিয়-জ্ঞান, মধুর মুরলী গানে বেন শুধু শুনিছে। দূর-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে। সহসাভূলি তথনি त्म चन्न भूतनी-ध्तनि রুমণী-কণ্ঠের স্থর কানে যেন পশিল--এবে দে ব্রত উদ্ধার, "শেষ দেখা এইবার, এখন বৈরাগ্য-পথে স্থি তব চলিল।" রমণীর ছায়া এক তকতলে পডিল। কোথা বা কিরণ ইন্ मग्रत्न अजिन विस् (बोरन-नोनांत्र निक् चुलिन्ए स्थिनन, এইরূপে চক্রোদয় মনে হ'লে সম্দর ষবে এই তরুতলে আমারে সে বলিল— দূর-কাননের কোলে পাখী এক ডাকিল। इत्व भूनः इत्व (प्रथा, विनन "कर्नारन रम्भा, चांकि इ'टा तनिव अहे" व'टन किटत हिनन। যত **থেদ তত** হ^ব ফুরায়েছে যত বর্ষ সে দিন--সে সব(ই) আজ শ্বতিপথে জলিল; मृत-कानत्नत्र कारण भाषी अक छाक्ति !

াছবি জনহৈ ধ'ৱে ফিরেছি ভবন'পরে. এসেছি বদেছি বরে ক'টি তার জাগিছে ? কা**শার মোহের ছল.** বাহতে দিয়েছে বল এবে তার কাছে ক'টি—ক'টি তারা ফুটিছে গ দুর-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে। ট্রদা**সে দেথিয় ভাষ, সে কান্তি কোথা** রে হায়, সে কান্তি কল্পনাপথ আলো ক'রে শোভিছে. এই কি সে নিক্লপমা. প্রতিমাজিনিয়ারমা কিংবা এ তকর(ই) **ছাম্বা—প্রতিবিম্ব ছলিছে**। সে যে এই - বিধা হৃদে কিছুতে না ঘুচিছে। চেয়ে দেখ যতবার. হিয়া কাঁদে ভতবার সে মুখেব সনে ধেন কত যুগ(ই) ফিরিছে। দাও" বলিবারে তাবে, রসনা জ্বড়াতে নারে, कि रगन काथां अर्थिक कर्ष आति द्योशिए । দূর-কাননের কোলে পাথা এক ডাকিছে! াপ প্রাণীর প্রায় "বাও" শেষ দিকু সায়, অমনি নয়ন-তটে বারিধারা বহিল, ংগেক নাথাকে আবার "এই শেষে"—শেষবাব ব'লে অপাঙ্গের কোণে একবার চাহিল— थीरत थीरत तक्तीत छात्रा मरन मिलिन। াক্ষ রমণী ছাঁচে. প্রভেদ কি এত আছে? এ কি সাধ ছু'জনার হৃদিত্ব মথিছে, ক বাঁচে, মরে আরে. এ কি লীলা বিধাতার পাৰাণে কুন্তম হায় কেন বিধি গাঁথিছে ? দুর-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে। ব ময়ে দীকা নিয়ে. জগতের স্থা পিয়ে, জেগেছি জগতীতলে--্সে কোথায় কাঁদিছে ? ভ্ৰমি সেই ভ্ৰমছলে ামি সেই তক্তলে. হিয়া-মাঝে তার ছায়া কতবার বসিছে ? দুর-কাননের কোলে পাখী এক ডাকিছে। মুধাংশু উঠিছে মুথে ারার গগন-বকে जन् भेजन इस तम चारमारक जिल्हा, ধীব সমীর বয়, তুলিছে প্লবচয়, উভানে রজনীগন্ধা নিশিমুথে ফুটছে; .কঠিন পুরুষ-প্রাণ সকলি ত সহিছে! ।র-কাননের কোলে পাথী এক ডাকিছে।

কাশী-মাহাত্ম্য

গঙ্গ |

কোথার চলেছ তুমি গদে
শাল পিয়ালা তাল
তমাল তক রসাল
বততী-বল্পরী জটা
ফলোল-ঝালর-ঘটা
ছারা কবি স্থলীতল
চেকেছে তোমাব জল
চলেছে অচলবাজি মীর-ধাবা আলে,
কোথার চলেছ তুমি সেন রূপে গদে
দু

কল-কল-কল স্বব

গারা-জলে নিরস্তর

বিশাল বিস্কৃত ধাবা

সমতল তৃণ-হারা

ধরণী চলেছে রঙ্গে

হধারে নিবিড রঙ্গে

বট বেল নালিকেল

শালি ভামা ইকু বেল

অরণ্য নগর হাট

গবাদি রাখাল মাঠ

প্রস্কুল কবেছে কুল নীবধারা সংক—

কোথায় চলেছ তৃথি বেল ক্লে গবেল দ

পাটকেলে হথ্য পট
কুলগারে সারি সারি
ধারাঞ্চালে নর-নারী
ঢাকিয়ে সোপানক্ল—
ঘাটে ঘাটে কুটে ফুল ?
কল কল নর-ভাগা
হুদিকোর-পরকাশা
হাজ্যর স্পতি-গানে
তুলেছে ভোমার কানে
নগর পানীর রূপ বিমল তরকে

মন্দির দেউল মঠ

ৰাণিজ্য বেসাতি পোত
ভাসারে চলেছে স্সোত
ভরি ডিঙা ডোঙা ভেলা
বৃক্তে করি করে থেলা
নাচারে চলেছে ক্ষক
ধবল ধীরে তরক
ছলিয়া ছলিয়া স্থেধ
নর, নারী গ্রাবা মুধে
ছড়ারে চিকুর-কাল ভ্রমিডেছে রকে,
কোবার চলছ ভূমি হেন রূপে গকে দ

কুলদাম ফুলথর,
বীপরাজি কৃদিপর
আকাশ অলকমালা
কৃদ্য-মুক্রে ঢালা
অকণ কিরণ-ভাতি,
শশ্বর, জ্যোৎস্থা-পাতি,
বাযুগন্ধ পরিমল,
পানিবক, মীনদল,
শৃধ্য, শুক্তি কোণো বাও রংশ,
কোধায় চলেছ তুমি বেগবতী গঙ্গে দু

वाषानात श्रांगी नारे श्रांगि-द्रमध्याग नारे श्राह्म नारे, मित्रा नारे, द्रमम नारे, मञ्जा नारे, श्राह्म निष्ठा नारे, श्राह्म नार्वाह्म न

কে ব্রিবে বিফুপনী
প্থাতোরা তুমি নদী
কেন ছাড়ি নিজ ফল
নামিলে এ ধরাতল ?
বিজ্ঞারি গভীর জল
কেন কর কল কল্?
কি পাপে তারিতে এলে,
কি পাপ তারিরে গেলে,
কোব্রিবে দ্রবায়ি, সে মহিমা-রজে,

ভাগীরথে দিয়ে কুল
উদ্ধারিলে পিতৃক্ল
এই কি শিথালে গতি
ভবে এসে ভাগীরথি ?—
দিয়ে তিল তব জলে
চালিলে অমৃত ব'লে
দেহাল্লন নাহি বহ
সর্কপাপে মৃক হয়
পতি পুত্র পিতা মাতা—তিলোদক সঙ্গে,
এই কি শিথালে তুমি, ভবে এসে—গঙ্গে ?

পরহিতত্ত্রত করি,

দ্রব হ'লে দেহ হরি,
বারিরূপে হুমঙ্গলে,
শিধাইছে প্রতিফল—
ত্যাগ-শিকা পুণ্যকল,
দরা-করুণার রেথা
তোমার শরীরে লেথা,
পরহিত-চিন্তা-ত্রত
তরন্দিলী তোমাগত,
তাই পুণ্যমর ধারা
হে গলে, পাতক হ্রা!
পতিতপাবনী তোমা সবে বলে রলে,
কোধার চলেছ তুমি হেলক্লপে গলে ?

পবিত্র তোমার জ্বল,
পবিত্র ভারততল;
সর্বহঃখবিনাশিনী,
সর্ব্বপোপশংহারিণী,
সর্ব্বশোকতাপহরা,
মৃক্তিগতি নীরধারা,
নিভারিণী ভাগীরথী
স্থপা মোক্ষণা সতী
"গবৈষ্ব পর্ম। গতি" উদ্ধার পো বলৈ,
কোথার চলেছ তুমি হেন রূপে গলে?

উদ্ধার বঙ্গেরে মাতা শিপাইয়া এই কথা তাজে স্বার্থ আরাধনা
সাধুক নিজ-সাধনা;
তাজে জ্ল তিল ফল
তুলুক তোমাব জ্ঞল
হলম অজন করি
তোমার দীকালহরী,
চলুক তোমার গতি—
শ্রোত্মতী—বেগবতী
বদেব চিস্কার ধারা,
ঘূচুক চিত্রের কারা;
উক্কার উরোর ধগেন গীব দিয়া বঙ্গে,
কোধার চল্ছ তুমি হে পাবনী গঙ্গে,

গঙ্গার মূর্ত্তি।#

শ্বেতবরণা শ্বেতভূষণা কাহার বচিতা মূরতি অই গ চন্দ-বিভাস বদন-মণ্ডলে কর্পূরে ষেন শণী খেলই ? ণান্ত-নয়নে শান্তি উথলে ওঠ অধরে হিসুল-রাগ, শঙ্খ-লাঞ্ছিত শুভ্ৰ কণ্ঠেতে ঈষৎ বেখাতে ত্রিবলদাগ, দক্ষিণ বামেতে উৰ্দ্ধ বিভূঞ স্বৰ্ণ-কল্স কমল ভাগ, 'সধঃ হুই ভূজে দক্ষিণ বামেতে করতলে ধৃত বর শভয়; রক্ত-রাজীব চরণ-প্রতিমা শুত্র মকরে আসীনা স্থাপ, শান্ত-নয়না শাস্তবদনা প্রসাদ-প্রতিমা শরীরে মৃথে !--কে তুমি বরদে বরাজ-ধারিণি ? কোথা হ'তে এলে মরত'পরে ? কে গোবসিয়া ওভাবে ওথানে কাহারে দিতেছ অভয়-ববে ?

েরামনগরে কাশীরাজভবংন খেত-প্রথব ^{ছি} ও র'টি স্থান্তর মূর্টি স্থাপিত কাছে।

আছ কত কাল এ মর-ভবনে কিরপে কোথায় পাতকী ভার ? भौरङ भीरत যে জালা পরাণে দে জালা তুমি কি জ্ডাতে পার <u>?</u> পরকালে যদি পাতকী তবাবে তবে কেন এলে অবনীপবে. কত পাপি-প্রাণ পাপের জরাতে ধবাতে তাপিয়া জবিয়া মবে। মানবের ব্যথা ব্যথে কি ও হৃদি 🔊 তবে কেন এত প্ৰশাস্ত মুখ ? দেবের প্রাণে পশে কি কথনও কলুষে তাপিত মানব ছথ ? বল গো বরদে বল গো সে কথা, হৃদয়-মণিতে পাঁথিয়া বাখি, না জানি কথন শমন ডাকিবে कथन् উড়িবে পরাণ-পাখী। সান্থনা বিলাতে দেবের স্ঞ্ন ना विन विनाद--- किक्राप उद्य, চপল-হাদয় মানব-মণ্ডলী পাপের পীড়নে ধরাতে রবে 🏾 কেন নিক্লন্তর ? হে বববর্ণিনি, পীড়িত প্রাণীবে নিদয়া হও ? বল বল যেন মুখেব ভক্ষিমা তবুকেন মৌন ধবিয়া রও ? অথবা তুমি সে কেবলি পাধাণী অসাড অস্তুদি মুমতা-হীন, সদা অচেতন বাবি বাযুমত জ্বান না চেতন প্রাণীর ঋণা 🎙 কালেব প্ৰভাবে কিবা সে এখন অভীব হয়েছ— অজীব যথা— শবীয়ী পৰাণী সৌন্দৰ্য্য-ভূষিত দেহেতে হড়ালে বিনাশলতা। মৃত বদি তুমি তবে কেন এত ও মুখমওলে লাবণ্য-মাঝা---জীবন-চন্দ্রমা এগনও ধেন দে স্ক্র-অঙ্গেরে করেছে রাকা। শ্বতির ধারণায় নাহি কি ভোমার -নাহি কি তোমাব বিনাশগতি የ নাহি কি পবাণে ভত-কালজায়া माहि मिर्द्धामान खरिया गांजि १

হার বে পাবাণী পারিতাম বদি
দিতে এ পবাণী ও দেহ-মাঝ,
কানিতে তা হ'লে এ ভ্রমণ্ডলে
কিবা সে পার্থিব মানবরাজ।

कानी मणा।

আই দেখ বাবাণসী বিবাজিছে গগনে বিশাল সলিলবাশি সম্মুখে চলেছে ভাগি জাহ্নবী-কোলেতে যেন হাসিতেছে খপনে ! (मांकिएक मनिवादकारन मानि मानि मानिमां, শত সৌধ চূড়া মালা কপালে কিবণ ঢালা অস্তপতে অস্তবন গ্ৰাক গ্ৰাক্পর কাঁধে কাঁধে বাঁধা যেন শ্রুদেশ যুড়িয়া । **उटिहरू मिल-१८७ वादिमर्ग निवादि** কত শিলাময় মঠ. কত অট্রালিকাপট. জ্জ্বা. কটি, স্বন্ধদেশ অর্দ্ধনীবে প্রসারি ! শোভিছে পাষাণময়ী কাশী হের সোপানে-विवादीश उत्व कत्व সোপানের শ্রেণী চলে. উर्फाएए त्रोधत्यनी নিয়ে সোপানের বেণী **চলেছে সলিলবুকে সরীস্প-বিধানে।** না উঠিতে ববিচ্চবি প্রাচীতের আকাশে. কলববে কলকল কবে জাহনীর জল দিগন্ধ সে কলবৰ উঠে নিশি ৰাভাবে। প্রাণিময় যেন কুল নরদেকে চিত্রিত। ঘাটে ঘাটে ছত্তলে. পরে মাঠে হলে, জলে, কত বেশে নারী নর আ'দে বার নিরস্তব, কোলাহলে কাশী ধেন দিবানিশি কাগ্ৰত।

ওই দেখ উডিতেছে "মাধোনীর ধরারা" শুক্ত ভেদি কাছে তার অট দেখ উঠে আর ৰিচ্ছা মদকীদ * অই. আলমগীৰ পাহারা।। জ্বই দিলীখরচ্চায়া—তলে এই নগ্ৰী. এই উচ্চ শিলা ঘাট এই পাহাডের পাঁট, শতচ্ছা ঋট্টালিকা. কুদ্ৰ যেন পিপীলিকা, অগাধ সলিলে কিংবা ক্ষত্র যেন সফরী। হের হে দক্ষিণে তার আনকো বর্তমান. হিন্দুব উন্নতিচ্ছায়া মানমন্দিরের কারা, মানদিংহ-রাজ-কীত্তি থ্যাত সর্বস্থান। অঙ্কিত কত্ই রূপ দেহেতে উহাব. গ্ৰহাদি-নক্ত-গতি গণনার স্থপছতি গ্ৰহণ-অয়ন-চক্ৰ পূৰ্ব ও রেখা বক্র. ভারতের "গ্রীনউইচ" অই আগেকার।

বস্তুতঃ চারিচ্ডা, কিন্তু ছুইটি অব্যাচ্চ, ই
 শক্ষ্য এবং সহসা দৃষ্টি আকর্ষণ করে।

পডেছে সূর্য্যের আলো সুবর্ণের কলনে.

স্থবর্ণ-মণ্ডিত চূড়া দেউলের পরশে।

ঝকিছে দেখ রে তার বেন সূর্য্য শত-কার.

া গুর্দান্ত মোগল-সমাট্ আওপদজীব কাই
আনেক হিন্দুমনির বিনই কবিরা তাহাব স্থান ক জীদ নির্মাণ কবাইরাছিলেন। তল্লধ্যে এই কা প্রধান মস্জীদ এখনও দেদীপ্যমান আছে।
স্থানে পূর্বে হিন্দুদিগেব এক মন্দির ছিল। ই জীদের অতি নিকটে একণে আর এক মন্দি স্থাপনা হইরাছে, তাহাকে "মাধোজীর বা বলে। যেখানে এখন মস্জীদ, পূর্বে ধা মাধোজীর ধরাবা ছিল, সেই জন্ত কেহ সেই মস্জীদকেই মাধোজীর ধরারা বলিরা বি কাশী-মধ্যস্থলে অই স্থবর্ণের দেউটি।
অই বিশেখর-ধাম,
ভারতে জাগ্রত নাম,
হিন্দুর ধর্মের শিথা
অই নন্দিরেতে লেথা,
খনস্থ কালের কোলে অই দেউটি।

চলেছে তাহাব তলে বনরান্ধি-উপরে অন্ধবপু উর্দ্ধ ক'রে যেন বাযুক্তর ধ'রে হুর্গা-মন্দিরের চুড়া বিরান্ধিছে অস্তরে।

চলেছে ভাষাৰ তলে বনবাদ্ধি-কালিমা--শৃল কোলে বেগা মত
তকশ্রেণী সারি বত,
স্বভাবের চিত্রকরা,
স্বভাবের শোভাধরা
হবিত বরণে ঢাকা স্বভাবের প্রতিমা।

উঠেছে অদ্ৰে তাৱ এবমন্ত্ৰী সলিলে স্থানাকার সৌধরাশি, যেন সলিলেতে ভাসি, কোলেতে গন্ধার মৃত্তি নিন্দা করে ধবলে।

পুরাণের ব্যাসকাশী ছলে অই ভ্বনে,
অই চইতের গড় । †
ব্রুজ-গম্জ-ধর
স্থান প্রতরে ঢাকা,
ব্যাসমৃত্তি চিত্তো আঁকা
কাশীরাজ-নিকেতন অই "দিংহ" ভবনে !

হে তুর্গে তুর্গভিত্রা, কাশীখব-শুহিণী ভিগারী শিবের তরে ভাপিলে কি মর্ত্ত্যপরে এ স্থব্দর বারাগ্যী, ওগো শিব-মোহিনি ?

∗রামনগব ত্র্গামন্দির।

† কাশীবাজ চইত সিংহ লাট ওয়ারিণ হেষ্টিং-সের শাসনকালে ইংরাজদেব সহিত যুদ্ধ কবেন এবং যুদ্ধে পরাজিত হইর। সশস্ত্র অন্তরবর্গপরি-বেষ্টিত হইয়। নিজ-ভবন এই গড় পরিত্যাগ করিয়া বান। এই কেলা বর্তমান কাশীরাজের নিকেতন। বিশাই গঠিল কি না জানি না এ নগবে,
দেখি নাহি দু াসিপুৰী,
পোবিস' বলাপ্ৰদাৰী,
কিন্ধ বা দেখেছি চণ্ডে
এ ভ্ৰনে—কাবো ৰণে
এত শোভা দেখি নাই—নিন্দা কৰে ইছাৰে!
ঘাই থাক্ তব মনে, ৮ে নগেন্দ্ৰবালিকে,
মনোবাঞ্ছা পূৰ্ব তব,
একত্ৰ ক্রিলা ভব
কাশীতলে দ্বামথী দীনহু:খিপালিকে।
হিমালি ভ্ৰৱ হ'তে ক্যাৱিকা ভিতরে
নাহিক এমন প্রাণী,
হেন জ্যাতি নাহি জানি,

হেন জাতি নাহি জানি,
কি বাপিজা ব্যবসার
ভক্তি মুক্তি কি বিজাব
আশা ক'রে যে না আসে অএপর্ণ-নগরে।
আমিও ভিথারী এই ভব বাজ্য-ভিতরে,
কে দিবে আমারে ভিজা
পাব কি আমার দীকা।
প্রবেশিলে অই পুবে অন্তর্নী বারাণ্মী,
বিরাকে গদাব কুলে প্রজা তুলে অধরে।

মণিকণিকা। 🕸

কোনকালে— এই কথা শুনি লোকমুখে— শিব শিবা তপস্থায় ভ্ৰমিছেন বনে, এক দিন শিবা আদি দাঁডায়ে সল্পে বলিলেন গীবে ধীবে মধ্ব-বচনে —

* কাশীব 'মণিকণিক।" কুণ্ড সন্থান নামাপ্রকার প্রবাদ প্রচলিত আছে। ইহাতে যে বিবরণ নিথিছ হইগ,তাহা এক জন পাণ্ডাব নিকট শুনিয়াছিলাম, তাহা অবিকল গ্রহণ কবি নাই, তুলভাগটিমার গ্রহণ কবিবাছি। পাণ্ডাব নিকট গে বিবরণ শুনিয়াছিলাম, তাহা এই:—মহাদেব শিবানীর সহিত ভপভাগ নিবত ছিলেন। এই দিন শিবানী তাহাকে বিজ্ঞানা কবিলেন বে, মান্ত্রী

হেমচক্রের গ্রন্থাবলী

"বিবেখর, তব পুরী ধরা ধক্ত কাশী
মানবের মোক্ষধাম তোমার কথার,
বল,দেব, কিবা মোক্ষ লভে কাশীবাসী
কাল পূর্ব করি ভবে মরিলে সেথার
দেখেছি জান্মতে প্রাণী, দেখি নাই কভ্

দেখেছি জানতে প্রাণী, দেখি নাই কভ্ মরিলে কি হয় পরে, কোথায় নিবাস, অনস্ত কালের কোলে কিবা করে, প্রভ্, মোকপ্রাপ্ত জীব যত—মনে কি উল্লাস ?

জীবরূপে কাল-সঙ্গে খেলে কি তাহারা, ধেলে যথা প্রাণিরূপে থাকিয়া ধরায়, অথবা মুক্তির ফল—ত্যজে দেহ-কায়া "লান হয় প্রাণিগণ তোমার প্রভায় ?"

শুনিয়া শিবাব বাণী কহিলা ভবেশ "হে প্রকৃতি, মানবের পরকাল-প্রথা ভূর্ব্বোধ—ভূজের্ম অতি অপার—অশেষ। দে কথা শ্রবণে, শিবে, মনে পাবে ব্যথা,

জপ কর, তপ কর, শঙর-সাধন, নিত্যত্রত শুদ্ধচিত্রে কর মহামায়া, দূরগত পরকাল-প্রণালী কেমন, বাসনা করে। না চিতে ধরিতে সে ছায়া;

স্থাবের অবনীতল তৃ:ধ যত তায়---ভাবিলেই তৃ:ধে সুধ, সুথে তৃ:ধ হয়।

মরিলে পর কি হয় ? শিব উত্তর করিলেন, সে কথা স্থীলোকের শুনিবার ঘোগ্য নহে, তাদের পকে তপঅপ-অতাদি বিধেয়। তাহাতে মহাদেবী ক্রুছ
হওরার শিব উাহাকে সাহ্বনা করিবার জন্ত কাশীতে
আসিয়া, পূর্কে যেথানে চক্রতীর্থ নামে বিফুর তীর্থছান ছিল, সেইখানে মণিকর্ধিকা স্থাপন করেন।
শিবশিবা ছই জনেই দবিজবেশে মান্থ্যের রূপ ধারন
করিয়াছিলেন। শিবানীব কুষ্ঠাপ্রিত পদন্বর দর্শনে
গঙ্গাপ্রত ও পাণ্ডারা তাহাদিগকে প্রথমে কৃপে
আন করিতে দের নাই: পরে লক্ষ্মী আসিরা মহাদেবীর পাদোদক পান করিলে সকলে চমৎক্ত হইরা
ক্রীহাদিগকে কৃপে নামিতে দিল। আনের সময়
শ্রেষানীর কর্প হইতে কর্ণিকাভ্রণ এবং শিবের
বিজ্বত হইতে মণি ক্র কুণের সলিকে পত্তিছ হর,

স্ক্রীর্থার মার্ক্তিবিকা ছর্মান্তে।

স্কাৎ স্থানিত, শিবে সরল প্রথায় সরল ভাবিলে ভব সর্বাস্থ্যময়।

মৃত্যু শোক বলি লোকে হুঃধ করে চিতে, দেখে না ভাবিয়া তত আহলাদের ভাগ— মানবের মৃত্যু শোক মানবেরি চিতে, আগে হুথ—হুঃথ পরে জগতে সজাগ।

দিবানিশি কাল-অংক অভিত বেমন, আসে বায় লীলাময় তুলিয়া লহয়ী এই দিবা, এই নিশি, আবার তপন, কে আগে—কে পরে, কেহ না পায় বিচারি:

কে জানে নরের মাঝে সে নিগৃত কথা কিন্তু শিবে, না থাকিলে ধরাতে শর্বরী দিবার আদর এত হতো না কো সেথা — সেইরূপ স্থুথ তৃঃথ বুঝহ শঙ্করি!"

শুনিয়া শিবের বাক্য নগেন্দ্রবালিকা হাসিলা ঈষৎ মৃত্ত, কহিলা তথন— "ব্যিলাম বুঝাবে না বিধির সে লিথা, তপক্তায় থাক, প্রভূ, যাই অক্ত বন।"

"হয়ে না মলিনমনা নগরাজবালে। তপত্যা নহিলে শেষ সে গৃঢ বচন ব্ঝিবে না ক্ষেমজরি—ব্ঝাইব কালে, এখন চল লো, শিবে, আলেরে আপন—

ধরাধক্ত কাশীধামে চল সিরিবালা, স্থাপিয়া পুণোর কুপ পুবাও বাসনা, স্থপথে লইতে নবে নাশি চিন্তুজালা, ভবের মঞ্ল-সেতু করহ স্থাপনা,

রত যাতে থাকে জীব নিতা সদাকাল ভক্তির স্থপথে থাকি ভূলে শোক-ভাপ, ঘূচায়ে মনের মলা মারাব জঞাল, পরমার্থ-পথে পশি কবে সদালাপ।"

এত বলি শিব-শিবা ছাড়ি তপোরপ, উপনাত কাশীক্ষেত্রে চক্রতীর্থ নামে বিষ্ণুর চক্রে অন্ধিত হেথা শুদ্ধ কুপ দ্বাহেন মুক্ত গোক যাহে শুদ্ধি মানে। গিবিশ গিবিশ-জারা আসিরা সেথার বসিলেন কুপপার্থে ধরি নরক্লণ— শিবের ভিক্কবেশ, শিবানী মারার ধরিলেন জরা-দেহ যেথা সিদ্ধ ক্প দ

কটিব উপরিভাগ অভি মনোহর নাসিকা নয়ন ভূক স্থচাক গঠন— পরিধানে চীরবাস উবস উপব চর৭-যুগল কুঠে কুৎসিত-দর্শন,

ক্ষত-গল্পে মফিকায় করিছে বিত্রত, অক্ষেতে দারিদ্রা-মলা ঢেকেছে কিবণ, নিকটে বসিয়া শিব চিস্তায় নিরত মক্ষিকুল চুই করে কবেন ভাডন।

অতি কটে উঠি ধীরে চলিলা কুপেতে কুণ্ডের পবিত্র জলে করিবারে স্থান, সোপানে চ্বণতল স্থাপন নহিতে নিবারিলা রক্ষকেরা করি অস্থান,

"অপবিত্র হবে কুও না টোবে অপরে দূষিত হইবে বারি কহিলা সকলে • ত্বণিত করিয়া কত ত্বণা তুচ্ছ করে;— ছঃধে নিবা চাছিলেন শিব-মুথ তুলে,

ভিক্নেণী বিশ্বনাথ বলেন স্বায়—
"চক্রতীর্থ শুনি ইহা—এ কুণ্ডের জলে
সকলেরি অধিকার শাস্ত্রের কথায়; কি্দরিদ্র, কিবা বোগী বলিষ্ঠ তুর্বলে।

কেন নিবাবিছ এবে ? পুণ্য-হস্তারক বে হয়, তাহার নাই পরকালে গভি, অসজ্জন দেই জন পরণে পাতক ছঃবিত পতিত নিত্য দেই পাপমতি;

দরিত এ নারী এবে, রাজার হুহিতা ছিল আগে হিমালয় যেথানে উদয় নূপতি, ফুপণ ধনী স্বার সেবিতা ও চরণ-সরোজিনী স্বরের আপ্রয়,

পবিত্র হবে এ কুণ্ড ও অনপরশে আর্য্য-মান্ত ধীর ধন্ত আসিবে সকলে ভরিবে ভারতত্বল এ কুপের বশে নামিতে ইহারে দাও এই কুণ্ড-মলে।" ভিৰাবীর বাক্যে সবে কৈলা উপহাস, বাতৃল বলিয়া করে কতই লাঞ্চনা, ধূলি ভম ছডাইয়া পূবে জটাপাশ বঙ্গী লয়ে অবশেষে কবিল ডাডনা।

তথন কাতর খবে যাচিলা মহেনা বিনয় মিনতি কবি স্ততি কৈলা কত, দরিন্ত ক্রন্দন করে প্রচিত-৫়েনা উড়াইলা উপহাদে শিবা বলে যত।

বিশুর কাকুতি স্বতি বিনয়ের পর বিরক্ত হইরা পথ ছাডি দিলা শেষে, শিব-শিবা প্রবেশিল কুণ্ডের গহরর, স্থান করি স্থপবিত্র কৈলা কুপদেশে।

উঠিলে কুণ্ডের তীরে আবার তথন থেবে চারিধারে লোভী আকাঞ্চী আদ্দণ, বলে "মানে নাহি ফল পাইবে কথন, মানের দক্ষিণা দান নহে যতক্ষণ।"

"কি দিব দক্ষিণা, কাছে নাহি কপ্দিক," বলিলা শিবানী চাহি শিবের বদন ; "ষা ছিল শ্রবণে 'কবি' ভাত্রের ঘালক কুপের স্থালগতে হ্যেছে পতন।"

বলিলা ভিক্কবেণী দেবদেব ঈশ, "আমারও মাথার মণি পডেছে সলিলে খুলিফু যথন মানে জটার বডিশ",— শুনে বাদ করে সর্বা বাচকেরা মিলে।

দেখি বিধনাথ ধরিলেন নিজ বেশ "রজত-গিরি-সমিভ" শরীরের ছটা, কপালে চক্রমা-ভাতি, গলদেশে শেব, শিরে কলোলিনী গদা বিভাসিত জটা।

ধরিলেন বিধবমা মৃর্ত্তি আপনার মস্তকে মৃক্টছটো সুচারু শোভন, শ্রবণে কুওল, গলে মণিমর হার, চারু রশ্মিমর মূধে ভাসে তিনরন।

চাহিরা যাচকর্লে সর্কাশিবধাম কহিলেন সদানল বিক্রপাক্ষরণ— "আজি হইতে ঘ্চে এর চক্রতীর্থ নাম 'মণিক্রণিকার' নামে থ্যাত হবে কুপ_ু। 姚

এত বলি প্রবেশিকা মন্দির্বাভতরে অদৃশু করিয়া রূপ ভবেশ ভবানী; ভদবধি ভক্ত যত পবিত্র অন্তরে, স্নান করে দেই কুণ্ডে মহাতীর্থ মানি।

বিধেশ্বরের আরতি ।

শোকারাদি দার্থ স্বর্বর্ণের প্রক্নতন্ত্রণ উচ্চারণ
এবং অকারান্ত পদের শেব 'অ' উচ্চারণ
কবা আবখ্যক]

শিব, মণিময় আলায়ে বসিয়া হর নিকটে গৌরী অতি স্ববিতা হেরি ত্বণ-ভূবিত নিজ ঈশে হেরি ভূবিতা নিজ ঈশে সেবে বন্ধা আদি দেবতা

শিব, চরণ ধ**রি শি**রসে ॥৩

* কাশার শীগুক্ত প্রদেশচন্দ্র চৌগুরী কোং কর্তৃক বিধেশবের আরতি বাদালা অকরে মৃদ্যিত ও প্রকাশিত ইয়াছে। তদবলগনে এবং বে সকল আন্দর্পের আরতি করিয়া থাকেন, তাঁহানের মধ্যে এক জনের সাহাযে এই অন্তর্গাক করিয়াছি। প্রায় অনেক স্থলেই মৃলের শলগুলি ঠিক ঠিক আছে। তবে বাদালা ভাষায় পঠন ও ভাবগুহন হইতে পারে, তজ্জ্ঞ্জ বেখানে বেরূপ পরিবর্ত্তন আকশ্যুক ইইয়াছে, ভাহাই করিয়াছি। হিন্দাভাষাতেও বিধেশবের আরতি মৃদ্যিত হইয়া বিক্রম্ব হইতেছে। কিন্ধু শীষ্ক্র পরিকল্প নহে। এই সকলনকার্য্যে কলিকাতা লোভাষাজ্বের ভ্রাধাকান্ত্র দেব বাহাত্রের জ্লামাতা পরলোক-প্রাপ্ত অমৃত্রলাল মিত্র মহেশাক্র স্থানাত্য পরলোক-প্রাপ্ত অমৃত্রলাল মিত্র মহেশাক্র স্থানাত্য পরলোক-প্রাপ্ত অমৃত্রলাল মিত্র মহেশাক্র স্থানাত্য পরলোক-প্রাপ্ত অমৃত্রলাল মিত্র মহেশাক্র বিয়াছিলেন।

জয় দেব জয় দেব নাচয়ে সুর্বনিতা স্ত্রদর্যে অতি স্থবিত শিব, হৃদয়ে অতি স্থতি। কিন্নর করমে গীতি সংখ্যার সহিত रेथ रेथ नामरम मनक निव, नामरत मुक्क जाःविक जाःधिक : जाः नवरम. বীণা বাদৰে অতে ললিত কণু কণু কণ নিনাদে॥ 9 क्ष (न र क्ष प्र (नव । कृश्युन् कृश्युन् कृश्युन् हत्र्र नित, नुभूत ममुद्धन जयात्र मछान मछान শিব, মণ্ডলে মণ্ডলে তাং ধিক তাং তাং ধিকতা চথচ্থ লুপুচুপু লুপুচু চথচ্থ তালধ্বনি করতালে निय, जोनध्यनि कंत्रजातन अञ्चल अञ्चल अञ्चल पन नारमाव अप्र त्नव अप्र तनव. नान्त्य मञ्च निनान्त्य ब्रह्म वौ শিব, নিনাদয়ে ঝল্লবী আরতি করয়ে বন্ধ। বেদধ্বনি পাঠে ধরি জদি-কমলে তব মত চরণ-সবোজ অবলোকয়ে তব রূপ শিব, অবলোকয়ে তব রূপ নিজ পরমেশ্বর জ্ঞানে ॥৬ ক্ষয় দেব জয় দেব কর্পবজ্যতি গৌর ধারণ আনন পঞ শিব, আমানন পঞ বিষ কঠে গ্ৰহিত সুন্দর জটাকলাণ শিব, পাবকয়ত ভাল পাৰক্ষত ভাল, বাম বিভাগে গিরিকা তব রূপ অতি ললিত॥৭ कांत्र (मय कांत्र (मय ত্রিশল বজ্র থপা ধাবণ পর্ভ শিব, ধারণ পর্ভ পাশ বরাভয় অঙ্গশ নাদয়ে ঘন ঘন ঘণ্টা মন্তকে শোভয়ে গৰা উপনীত স্বরতটিনী শিব, শিরে উপনীত স্থরতটিনী উপবীত পরগ ক্রাকালয়ত ব্রব্দে **৷** জায় দেব জয় দেব মনসিঞ্জভত্মবিভৃষিত আংক শি ভশ্ববিভূষিত অঙ্গ ত্রিভাপনাশন সাযুজ্যপ্রাপণ ধ্যানে ধারণ করে যে ভকার করে যে ভকতে ধারণ শ্রুতিতে

করে বে ভকতে ধারণ ঐততে এই তব বুষভধ্যক রূপ ৷
ওঁ জয় দেব অয় দেব অয় জয় গলাধর ৼ অয় নিব অয় গিরিজাপতি দাসে পালহ নিতা নিব. পালহ দাসে নিতা অগনীশ রূপা কর হে ঃ

भिव भिव भएका ॥

বিষ্ক্যগিরি।

উঠ উঠ গিরিবর—জগন্তা কিরেছে;
ভারতে ইংরাজরাজ মধ্যাহে দেলেছে;
দে দিন নাহি এখন,
ভারত নহে মগন
অজান-তিমির-নীরে,
ভারত জাগিছে ফিরে,—
তুমি এখনও শুয়ে দেখিছ স্থপন।
উঠ উঠ গিরিবর, করো না শগন।

উডেছে নব নিশান, ছুটেছে আলো-তুফান, পুন: তেজে তোল মাথা পুন: বল দেই কথা, সে কালে লাগায়ে নাম ভুনালে বেমন, উঠ উঠ গিরিবর, করো না শুনা।

সে দিন নাহি এখন, ভারত নহে মগন অজ্ঞান-তিমির-নীরে ভারত জাগিছে ফিরে, তুমি কেন বিদ্ধাচন থাকিবে অমন,— নীল-অজগর-কায়া কর উত্তোলন।

সুৰ্ব্যপথ রোধিবারে উঠেছিলে অংকারে, দেশক্তি আছে কি আর ? ধর দেথি একবার যে সূর্ব্য ভারতাকাশে উদ্য এখন!

এই রূপ প্রাচীন প্রবাদ আছে, বিদ্যাপর্বত

ইত ইইবা এককালে এত উচ্চ ইইমাছিল বে,

নিরি গতিরোধ আশকার দেবতাদিগকে তাহার

ফগন্ত্য ক্ষির শর্পাপর ইতেে ইইমাছিল।

ইতি অগন্তা বিদ্যোর নিকটে উপস্থিত ইইলোন।

ইইলে ক্ষি কহিলেন,—যাবৎ আমি দক্ষিণ
ইইতে না আসি, তাবৎ তুমি এই ভাবে

ই তিনি আর ফিরিলেন না, এবং গুরুর

প্রতিশ্রুত ইইমাছিল বলিয়া বিদ্যা তদবধি

প্রপত অবস্থাতেই আছে। অগন্তাযারা বলিয়া

ইপা প্রচলিত আছে, তাহাও এ প্রবাদ-মূলক।

**

অর্দ্ধপে উঠ তার
তবে বৃথি অহলার !
এ আলো সে আলো নয়,
এ ববি সে ববি নয়,
এ ববি সে ববি নয়,
এ আলোভি: ভারতে কতু হয় নি পতন !
এই জ্যোভি: ধর গিরি
ভারতে প্রভাত করি,
ধরক ন্তন জ্ঞান,
ধরক ন্তন প্রাণ
ন্তন স্পনে সবে দেণ্ক স্পন।
নীল অলগরকায়া কর উত্তোলন।
উঠ উঠ গিরিবর অগন্তা ফিরেছে,
উডেছে নব নিশান,
ছুটেছে আলো-তৃকান
নবরবিছেবি দেখ গগন ধরেছে।

কে বলেছে এই ভাবে তারতের দিন যাবে ? 'নিশির প্রভাত নাই যে বলে সে জানে নাই, ভারতের ভাবী বেদ শড়ে নি কথন,—

জানে না দে জগতের কিবা গড়ি, কিবা ফের , ফের এ ভারতবাসী জানের তরঙ্গে ভাগি হাসিবে অপুর্ব হাসি গভিয়৷ জীবন—

চলিবে ন্তন পথে সাধিবে ন্তন ব্তে, ফিবাতে নাবিবে তায এ তবল নাহি বায় একবার জ্বিতটে খেলিলে কিরণ—

যাবে আগে— যাবে সদা অঞ্জা নহিবে কথা, চিরদিন এই বীতি, জীবনের এই নীতি, জাবিলের এই নীতি,

> দিয়াছে সে রশ্মিতেজ ভারতে আসি ইংরেজ:

ধ'রে তাপ পথ ছারা
ভাবার ভোল রে কারা,
ভাবার শিথরে শৃত্ত কর রে ধারণ—
উঠ উঠ গিরিবর কোরো না শরন।
এই সে জীবনারস্ক

এই সে জীবনারস্থ উদদের মৃশক্তঞ্জ— কত না জালিতে হবে কত বা ভাবিতে হবে দে জালা—দে বেগ—কেবা জানিবে এখন!

> ভূলিতে হবে স্থাপন, ভূলিতে হবে স্থপন, জাগাতে হবে জীবন তবে দে পারিবে;

ছুটতে ওদের সঙ্গে, লিখিতে কালেব অঙ্গে, খেলাইতে এ তরঙ্গে তবে সে পারিবে:

জ্ঞানের শক্তি লভে, জগতে বুঝিতে হবে তবে সে আপন পাবে, সফল্ল সাবিবে।

জেনো সত্য জেনো কথা ইংরাজ-শিকিত প্রথা ভারত উদ্ধার-পথ, ত্যজ ক্ষক্ত মনোরথ— ভূলে যাও আগেকার পূরান কথন।

না থাকিলে এ ইংরাজ ভারত অরণ্য আজ, কে দেখাত, কে শিথাত, কেবা পথে লয়ে ষে'ত— যে পথ অনেক দিন করেছ বর্জন !

মূথে বল জর জর, ধর থাজা শিলামর, ছিড়ে ফেল পূর্ববেদ ভোলো সে প্রাচীন ভেদ— জাই—ভারতের গতি রেখো রে শ্বরণ— হে ভারতবাপী গিরি, রেণো রে শ্রুণ,
ভবিষ্যৎ পারাবার
পার হ'তে অক্ত আর
ভারতে নাহি ভেলা,
ভাবত জীবন ধেলা
একতা ওদেরি সঙ্গে—উজার, পতন!

বল হে গুরুর শ্বর,
ভোল মাথা বিদ্ধানির,
ভোল সে পুরান কথা
ধর নর গুরু-প্রথা—
নীল অঞ্চলবকায়া কর উত্তোলন,
উঠ উঠ গিরিবর করো না শ্বন।

কুন্তজনা বে অগন্তা ⇒ দে কি তোমা কৈলা জন্ত অই ভাবে থাকিবাবে, বলিলা কি দে তোমাবে চির-তবে থাকিবাবে শৃত্যজ দে বচন!

আমি তোমা দিল বব পুন: উঠ গিবিবর, ভাবত-সভান নাম জাহক এ ধ্যাধাম মুত ভারতের নাম জানিত যেমন !

উঠ উঠ বিদ্যাগিরি অগন্তঃ ফিরেছে, ভারতে ইংরাজ-রাজ মধ্যাহে দেজেছে,—
দে দিন নাহি এখন,
ভারত নহে মগন
অঞ্জান-ভিমির-নীরে,
ভারত সাগিছে ফিরে;
উভেছে নব নিশান,
উঠিছে আলো-ভূফান,
ভূমি কেন বিদ্যাচন থাকিবে অমন ?

জাগাতে তোমারে হের অগন্ত্য ফিরেছে, ভারতে ইংরাজ-রাজ মধ্যাহে সেজেছে।

নীল অঞ্গরকায়া কর উত্তোলন!

প্রবাদ আছে, অগতা কৃত হইতে উৎপদ ?

গঙ্গার উৎপত্তি।		সহত্র বৎসর	অক্র অমর
		অনা দি ঈথব-মহিমা গায়।	
(>)		(a)	
হরিনামামৃত	পানে বিমোহিত	সেই হিমগিরি	শিখব-উপরি
সদা আনন্দিত নারদ ঋষি,		অদিরাদি যত মহর্ধিগণ	
গান্বিতে গান্বিতে	অ মরাবতীতে	শাসিত প্রত্যহ	ভক্তির সৃহ
স্বাইল একদা উজলি দিশি।		ভ ঞ্চিতে ব্ৰহ্ম	াণ্ড-আদিকারণ।
(२)		(>•)	
रुद्रथ व्यष्टरद्र	মহা সমাদবে	হেরিত উপরে	নীলকান্তি ধরে
	তি অমবপতি।	শ্কু ধৃধ্ক	র ছড়ায়েকায়,
করি গাতোখান		হেরিত অযুত	কাযুত কাড়ত
সাদর সস্তামে তোমে অতিথি।		নক্ষত্র ফুটিয়া ছুটিছে তায়।	
(•)		(>>)	
পাত অৰ্ঘ দিয়া	ম্নিরে প্রিয়া	मछान मछान	শনি-চক্র চলে
চন্দ্রাগ্নি প্রভৃতি	ত অম বগ্ণ;	যুরিয়া বেরিয়	া আংকাশময়,
ক্রিয়া মিন্তি		হেরিত চন্দ্রমা	অতুব উপমা
কহ কুপা করি, করি শ্রণ,—		আংতুল উপমা ভাতু উদয়।	
(8)		(>২)	
	হলো ভাগীরখী	চারিদিকে স্থিত	দিগস্ক-বিস্থৃত
গাও তপোধন			ৰ তুষাররাশি ;
দেবের উক্তি		বিশ্বয়ে প্লাবিত	বিশ্বয়ে ভাবিত
অমৃত-ল হরী-সদৃশ গাথা ৷"		व्यनांति श्रृङ्ख व्यानत्म ভाति।"	
(a)		(>0)	
	ম্নি সে নারদ	বলিতে বলিতে	
ললিত পঞ্চমে		দেবৰ্ষি হইল স	
আনন্দে ডুবিয়া	নয়ন মৃদিয়া	ঘন খন খর	গভীর প্রথর
তুষ বাজাইয়াধরিল গান।		তানপ্বা-ধ্বনি বাজিল তায় ।	
(🗞)		(>8)	
*হিমাজি অচল	দেবলীলাস্থল	গায়িল নারদ	ভাবে গদগদ
যোগীন্দ্ৰ বাস্থিত '	পবিত স্থান ;	"এমন ভজন ন	
অমর কিলর	যাহার উপর	ভূধর-শিধরে	ডাকিয়া ঈশবে
নিসর্গ নির্থি জ্ডায় প্রাণ।		গারিতে অনস্থ মহিমা তাঁর।	
()		(>¢)	
	সদাশোভাকরে	ইহার সমান	ভঞ্নের স্থান
অসমী অনস্ভ তুং	ারর াশি ,	কি আছে মন্দির	
শাহার কটিতে		व्यवप-१९६५ न	তর্গ-পত্ন
জলদ-কদম্ব জুড়ায় আসি !		विलाक हमिक (स्थारन वारक।	
()		(58)	\\
	মহীকৃহ ণ্ড	কিবা সে কৈলাস	বৈকুণ্ঠ-নিবাস
প্রণত উন্নত শিধর কার;		অলকা আমরা নাহিক চাই,	

स्य नोवांसन বলিয়া বেমন नहनही-छन श्हेन चाहन ভূবনে ভূবনে ভ্রমিতে পাই।" नियाति ना यदि पृथते कृषि । 🌁 ()9) (२৫) নারদের বাণী ভনি অভিযানী দেখিতে দেখিতে পুনঃ আচম্বিতে व्यमत्र-मञ्जूणी विभवं रुष्ठः गगत्न इहेन किंद्रत्नां नग्न , আবার আহলাদে গভীর নিনাদে ঝলকে ঝলকে অপূর্ব আলোকে প্রিল চকিতে ভ্বনত্র। সন্ধীত-তরক বেগেতে বয়। (36) (२७) ঋষি কয়জন শক্তে দিল দেখা কিরণেয় রেথা সন্ধ্যা সমাপন कत्रि এक मिन विभागी शास्त्र; তাহাতে আকাশে প্রকাশ পায়; দেবী বস্থন্ধরা মলিন কাতরা অতুল-চরণ ব্ৰহ্ম স্নাত্ন কহিতে লাগিল আসি সেধানে। সলিলনিঝ'র বহিছে তায়। (64) (२१) বিন্দু বিন্দু বারি পড়ে সারি সারি "রাথ ঋষিগণ সমূলে নিধন ধরিয়া সহস্র সহস্র বেণী। মানব-সংসার হলো এবার. কমণ্ডলু করে দাড়ায়ে অংরে হলো ছারখার ভূবন আমার আনন্দে ধরিছে কমল ফেণী। অনাবৃষ্টি তাপ সহে না আর।" (२৮) (२०) হায় কি অপার আনন্দ আমার শুনে ঋষিগণ করি দৃঢ়পণ ব্ৰহ্মসনাতন চরণ হ'তে, বোগে দিল মন একান্ত-চিতে, ব্ৰহ্ম-কমুণ্ডলে জাহুৱী উথলে কঠোর সাধনা ব্ৰহ্ম-আরাধন, পড়িছে দেখিত্ব বিমান-পথে। করিতে লাগিলা মানব-হিতে। (<>) (<>) গভীর গর্জনে দেখিস্গগনে মানব-মঞ্চল ঋষিরা সকলে ব্ৰহ্মজনওলু হ'তে আবার কাতরে ডাকিছে করণামর, জলযন্ত্ৰ ধার রজতের কাম মানবে রাখিতে নারায়ণ চিত্তে মহাবেগে বায়ু করি বিদায়। रहेन चनीम कक्टलान्य। (२२) (00) ভীম কোলাহলে मिथिट पिथिट হলো আচ্হিতে নগেন্দ্র অচলে সেই বারিরাশি পড়িল আসি, গগনমগুল ডিমিরময়. মিহির নক্ষত্র তিমিরে একত ভূধর শিথর সাঞ্জিয়া সুন্দর मुक्टि धतिन मनिनदानि। অনল বিহাৎ অব্য হয়। (%) (२७) ব্ৰহ্মাণ্ড ভিতর নাহি কোন খর রব্বত-বরণ স্বভের গঠন অবনী অম্বর শুন্তিতপ্রায়; অনন্ত গগন ধরেছে শিরে, . নিবিড আধার জলধিছকার হিমানী-আবুত হিমাদ্রি পর্বত চরণে পড়িরা রয়েছে ধীরে। বায়ু বজ্ঞনাদ নাহি শুনার। (88) (৩২) গ্রহদলপতি রাশি স্ত,পাকার নাহি করে গতি চারিদিকে ভার भवनीयथन नाहिक हुटि, प्रेंडिया क्रुडिटक् थवन क्या,

ঢাকি গিরিচডা হিমানীর গুঁডা সদৃশ থসিছে সলিল কণা ! (00) ভীষণ আকার ধরিরা আবার তরক ধাইছে অচল-কায়: নীলিম গিরিতে হিমানীরাশিতে ঘরিরা ফিরিয়া মিশায়ে যায়। (98) रहेन ४४० न হিমাদ্রি অচল বেগেতে বহিল সহস্রধারা, পাহাডে পাহাডে তরক আছাডে ত্রিলোক কাঁপিল আতক্তে সাডা। (00) ছটিল পর্ব্বতে গোমুখী পর্বতে তবঙ্গ সহস্র একত্র হয়ে. গভীব ডাকিয়া আকাশ ভালিয়া পডিতে লাগিল **পাষাণ** লয়ে। (05) ছিঁডিয়া পৰ্ব্বত পালকের মত কদিয়া চলিল ভাঙ্গিয়া বাঁধ; পৃথিবী কাঁপিল তরঙ্গ ছটিল ডাকিয়া অসংথ্য কেশবিনাদ। (09) বেগে বক্রকায় শ্ৰোতম্বস্ত ধায় যোজন অন্তবে পড়িছে নীচে; ঘেরিয়া ভাহার নক্ষত্রের প্রায় শ্বেত ফেনরাশি পড়িছে পিছে। (40) তরজ-নির্গত বারিকণা ষ্চ হিমানী চূর্ণিত আকার ধরে; ঢাকিয়া ভাহায় ধুমরাশি প্রায় জ্বলধন্য-শোভা বিচিত্র করে। (৩৯) জলের নির্ঘোষ শত শত কোশ मियम-त्रक्रनी कतिरह श्वनि, প্রতিধ্বনি দিয়া অধীর হইয়া পাষাণ থদিয়া পডে অমনি। (80) শেষেতে আবার ছাডি হরিবার

इकारंब अफिल विमल शाहा,

শেত সুশীতল শ্রোত্যতী-জল
বহিল তবল পাবাব পারা।
(৪১)
অবনীনমওলে সে পবিত্র জলে
হইল সকলে আনন্দে ভোর,
"জর সনাতনী পতিতপাবনী"
ঘন ঘন ধানি উঠিল ঘোর।

অন্নদার নিবপূজা। গীতি।

> (আবারস্ত) (১)

দাও করতানি "জর জর" বলি
প্রিরা অঞ্জলি কুম্ম লং;
আই বে প্রাচীতে গাসিতে হাসিতে
উদয় অরুণ উবার সহ।
বল সবে "জয়" বিভূবনমর,
অন্দা আসিছে পুলিতে হরে;
মর্জ্যে শিবধাম মোক্ষ ঠীর্থ নাম
কালী বারাণ্দী অবনীপরে।

(শাখা)

(?)

নামে স্থী জয়া আকাশ হইতে
হাতে হেম-থালা ভূদার জল,
মকরল-মাথা কূম্মের থর,
আননেদ বিবেষ দেবের দল,
প্রস্ন-নিখাদে পুরিল আকাশ,
ম্বাভ-নিজণ বিমানপথে,
ত্যাজিয়া কৈলাদ কৈলাদ-কামিনী
উরিলা মুদ্রর পূপ্তক-রবে।

(পূৰ্ব কোবস)

(0)

দাও করতালি "জয় জয়" বলি
প্রিয়া অঞ্চলি ক্রম লহ;
*হাসিতে হাসিতে অই যে প্রাচীতে
উদিল অফণ, উষার সহ।

(আরম্ভ)

(;)

चारे (य मन्दित মুছল গম্ভীরে जानस्य अरदस्य जानसम्बी, কোথা কাশীবাসী শঙ্খ ঘণ্টা কাঁসী थवनी बांचित्री वांगती करें ? বাৰা রে উল্লাসে নিৰুণ উচ্ছাদে ত্রৈলোক্য-ভূবন মোহিত কর, "হর হর হর" वन निद्रसद "वम् वम् वम्" मधुत चत्रः। ভক্তি উচ্ছাদে বাজা রে উল্লাসে मिन्द्र अदिर्भ चानक्ष्मश्री। শহা ঘণ্টা কাঁসী কোথা কাশীবাসী थक्षनी वाँचित्री वानती करें ?

(শাখা)

(२)

প্রবেশে মন্দিরে জগত-জননী গললগ্রবাস যুডিয়া কর; প্রণত হইগ্না মূদিত নগ্ধনে চরণে অর্পিনা প্রস্থন-থর। আনন্দ-শরীরে "থয়ডু" বলিগ্না ডাকিল আনন্দে জগতমাতা, দেব সিদ্ধ নব ত্রিলোকপুরীতে উঠিল উচ্ছান আনন্দ-গাধা।

(পূর্ণ কোরস্)

(0)

জয় জয় জয় জয় नाि क संत ড়য় বিখনাথ ব্রহ্ম পরাৎপর, জয় মৃত্যুঞ্জয় ব্রহ্মাও-ধারী; জয় সর্বরূপ জয় গুণময়, জয় দীননাথ জয় দয়ায়য়, জয় জয় দেব পাতকহারী; শকর হর জয় ব্যোমকেশ, পিনাকনিনাদী অনাদি মহেশ, বোগীক্র চিয়য় নিতারকারী।

(আরম্ভ)

সাচিমা নাচিমা "অরভু" বলিমা ৾ দেবদল-দলে গগনতল ;

করে সিকুম্ম ; জন্ম শস্কু শুনি উথলে গভীর অতল জল; স্বয়ন্তু সঙ্গীতে षानम-स्रनिए७ জীমৃত মন্ত্রে গগনপরে, পৰ্ব্বত কানন উচ্ছাদে প্ৰন স্বঃজুকীর্ত্তন আনন্দস্বরে। "अन्त्र अन्त्र अन्त्र জন্ন বিশ্বনাথ ব্ৰহ্মাণ্ডধারী, জন্ম ব্যোমকেশ শঙ্কর হর যোগীল চিনায় নিস্তারকারী।" বলিয়া নাচিয়া শ্বন্তু ডাকিয়া দেবদল-দলে গগনতল; জয় শভু শুনি গায় সিন্ধুমণি উথলে গভীর অতল-জল।

(শাথা)

(२)

"আহে বিশ্বনাথ প্রাও বাসনা" বলিয়া অগ্রদা অঞ্জাক করে; ফ্রিলা যে দিন জগত-একাও দেখিতে সে দিন বাসনা করে, নিধিল ব্রক্ষাও সকলি স্থলর, দেব যক্ষ নর আনন্দে ভরা; পীডা ব্যাধি শোক ষাতনা কেমন জানিত না কেহ মরণ জরা; অপুর্ব মাধুরী জীবন প্রকাশ জীবের বদনে অপার স্থ, নব চাকু মৃত্ লাবণ্য-লেপিত মধুর স্থলর প্রকৃতি-মুধ্।

(পূৰ্ব কোরস্)

(0)

"দেখাও আবার বাসনা আমার
তেমতি তরুণ অরুণ কার,
সেই মনোহর চারু স্থাকর
ফুটিছে নবীন গগন-গার,
ছুটিছে পবন ফুটিছে কানন
তেমতি নবীন হিলোপ বাসে.
তেমতি করিয়া উল্লাসে তরিয়া
প্রাণিবৃন্দ সহ অগৎ হানে;

তেমতি করিরা ব্রহ্মাও জুড়ির।
পশুপকী সুথে ছুটিরা ধার,
তেমতি করিরা প্রথমেদে মাতিরা
সকলে তোমার মহিমা গার।

(আরম্ভ)

(5)

জর জর জর অনাদি এক্ষন্
জর বিধনাথ সত্য সনাতন,
জয় বিধরপ এক্ষাওধারী;
শকর হর জর ব্যোমকেশ,
পিনাকনিনাদী অনাদি মহেশ,
ধোগী চিন্মর নিস্তারকারী।

(শাথা)

(२)

"আহে বিখনাথ তব বিখধামে
কত দিন আর শমনেব নামে
শমনের দৃত দেখাবে ভয়;
কত দিন ভবে হা হা রব
নরকুল আদি পশুপক্ষী সব,
কাঁদিয়ে জীবন করিবে কয়;
আরু থপ্প প্রাণী আর কত দিন
জগতের শোভা করিবে মলিন—
জীবন থাকিতে জীবিত নয়!
দরিদ্র কাশাল কত দিন আর
জঠর-আনলে করে হাহাকার,
করিবে জগৎ কলহময়?
করেবে বিখনাথ ভবে সর্বজন
আবার তোমার মহিমা কীর্ত্তন

(পূৰ্ণ কোরস)

(0)

ল্পন্ন জন্ম জন্ম ত্রিপুর-ঈখর জন্ম বিখনাথ ব্রহ্মপরাৎপর জন্ম বিখন্ধপ-ব্রহ্মাওধারী; জন্ম মৃত্যুঞ্জন্ম জন্ম গুণমন জন্ম দীননাথ জন্ম দরামন জন্ম জন্ম জন্ম পাতকহারী। (আরম্ভ)

(5)

বিষল তরকে আহমাগজে कानीशास चानि उनग्र २७: কলকল-নাদে এ শুভ সংবাদে জগৎ-সংসাৱে আৰুদে কও---জগৎ-জননী আবি গোআপনি জগতের হৃঃথ বলিছে শিবে পুরিবে বাসনা আর কি ভাবনা রোগ শোক তাপ ঘচিবে জীবে: গিয়া ঘাটে ঘাটে বল নাটে নাটে কাশীমাঝে আজি এ শুভ বাণী: আবার ভন না 'প্ৰাও বাসনা' গাইছে ওই যে ভবের রাণী।

(শাখা)

(२)

"প্রাও বাসনা ওহে বিশ্বনাথ
জীবের বাতনা ঘুচাও দুরে
তেমতি করিয়া শুজিলে যে দিন,
দেখাও আবার জগৎ পুরে;
ভেমতি পবনে ছুটিছে কাননে
তেমতি নবীন হিলোল-বাসে,
তেমতি করিয়া উল্লাসে ভবিয়া
প্রাণিবৃদ্দ সহ জগৎ হাসে।

(পূৰ্ণ কোবদ্)

(0)

আনল-ধ্নিতে আরদা-বাণীতে
গারিতে গারিতে জাহ্বী ধার,
আর কি ভাবনা প্বিবে বাসনা
জগত-জননী আপনি গার।
"জর শস্তু" ব'লে দাও করতালি,
লও রে অসুলী প্রিয়া পানি,
ত্রিত্বনময় সবে বলে জর
"শক্ষর হর" মধুর বাণী।

রহস্য-বিষয়

বিশ্ব-বিন্তালয়ে।

(বঙ্গরমণীর উপাধিপ্রাপ্তি উপলক্ষে)

()

কে বলে রে—বালালীর জীবন অসার ?
সৌরতে আনমোদ দেধ আজ কিবা তার।
বালালীর হৃদয়ের যতনের ধন,
তার মাঝে দেধ অই চুইটি রতন,
রজনী করিতে ভোর উজলি গগন,
আশার আকাশে উঠি জলিছে কেমন!
ধক্ত বলনারী ধন্ত সাবাসি তৃহারে!
ভাসিল আনল-ভেলা কালের জুয়ারে!

(२)

কি ক্ল ক্টিল আজি বদের মকতে
কোটে কি রে হেন ক্ল কোন সে ওকতে গু
কোন নদী, কোন হুদ, পাহাড় উপরে
ক্টন্ত ক্স্ম হেন আনল বিতরে গু
রে বামিনী তারা-হারা কিবা আভরণ
আছে বল তার বুকে দেখিতে এমন ?
এত দিনে বুজিলাম সে নহে খপন,
ভারত-বিপিনে বীজ হয়েছে বপন ।
ধন্ত বলনারী ধন্ত সাবাসি তুহারে !
ভাসিল আনল-ভেলা কালের জ্রারে !

(0)

এত দিনে কাগিল রে জীবনে বিখাস,

স্টিল রদয় হ'তে কালের হতাশ।

বালালীর কামিনীর রদয়-কমলে

গালাত্য সাহিত্য-রূপ দিনমণি জলে।

সমপাঠে সহযোগী কুরল-নয়নী,

ছুটেছে যুবক সলে যুবতী রমনী।

পরেছে উপাধি-হার স্থনীল বসন

সেক্লেছে অবেতে কিবা চারু দয়শন!

ধস্ত বঙ্গনারী ধস্ত সাবাসি তুহারে!
ভাসিল আনন্দ-ভেলা কালের জুয়ারে!

(8

কবে রে দেখিব বল এ বিপিন মাঝে, আর(ও) হেন কুরকিণী এ মোহন সাজে ? সে দিন হবে কি ফিরে এ দেশে আবার,
নারী হবে পুরুষের জীবন-আধার ?
গৃহত্বপ কমলের কমলা-আকারে,
ছড়াইবে স্থরানি চাহিয়া সবারে।
হবে কি সে দিন ফিরে যবে এ বাদালী
অলকা পাইবে হাতে অভাগা বাদালী!—
কি আশা জাগালি হদে কে আর নিবারে,
ধক্ত বদনারী ধক্ত সাবাদি তুহাবে!

(৫)
হরিণ-নয়না শুন কাদখিনী বালা,
শুন ওগো চন্দ্রম্থী কৌমুদীর মালা,
ভোমাদের অগ্রণাঠী আমি এক জন,
অই বেশ ও উপাধি করেছি ধারণ।
যে ধিকারে লিধিয়াছি "বাদালীর মেয়ে"
ভারি মত সুধ আজি ভোমা দোহে পেয়ে।
বৈচে থাক স্থেথ থাক চিরস্থথে আর।
কে বলে রে বাদালীর জীবন অসার ?
কি আশা জাগালি হুদে কে আর নিবারে?
ভাসিল আনন্দ-ভেলা কালের জুয়ারে!
ধন্ত বদনারী ধক্ত সাবাসি তুহারে।

সাবাদ হুজুগ আজব দহরে।

(इनाम, टिम्लन् ठाठा, च्याव्हा मका निर्दा। ভোঞ্চং দিয়ে ভোটীং খুলে মিউনিসিপাল বিলে। ফ্যাক্ট বলি, সহর যুড়ে ভারী আডম্বর। আয়াক্ট জারি হবে নৃতন পয়লা সেপ্টেম্বর 🛭 বলি হারি স্থবেদারী স্থদভ্য কেতায়। ভেলকিবাজি ইংরেজের হন্দ মজা হায়॥ ফুরার আগষ্ট নিশি একত্রিশা বাসরে। সহরে পড়িল চকা, পর্কাঘরে ঘরে ॥ শব্যা ছাড়ি রাতারাতি না হইতে ভোর। বাসাড়ে বাসিন। বেওয়া, বেখা করে সোর। প্রাতঃকালে জারি হবে নৃতন আইন। ফ্ৰেম বাঁধা "ক্ৰান্চাইদে" নেটিব স্বাধীন ॥ কেরাণী, কারিনা ক্লার্ক, মৃচ্চুদী দেওয়ান। মোলা, মৃদি, মিউনিসিপাল বেঞ্চে পাবে স্থান। সহর খোঁড়া কলের কাঠী নেটিব প্রজার হাতে দেশ্বো জারী বাহাছরী কলা দিবা প্রাতে।

দর্শ ক'রে হপুর রেতে "ক্যাঞ্চিডেট" বড।
বাজ হ'রে বজা খুলে, সজ্জা করে কজ।
বনেদী বাবুর বাড়া টোটাবাজি জলে।
গ্যাস লাইটে ফাইন আলো আধুনী মহলে॥
উকীল এটনী মুনি পোলারের ঘরে।
রেডির ডেলে আলো জলে,

ি পিরান পোষাক পরে ॥ থোষ পোষাকে সজ্জ। করি বাহাল ভবিয়ং। স্বৰ্ণ চাঁপা স্মরণ করেন, সভা তরিবং॥ তুৰ্গা. কাণী. শিব নাম শিকেয় তুলে রাখি। সিদ্ধ হ'ন ফুলকুমারী, কিরগ্রথী ভাকি॥ বিশ্বপত্র বিনিময়ে "বটন" হোলে আঁটা ? শ্রীমতীর কুন্তলের বাসী ফুলের বোটা। হদ জপ পদামূথে গন্ধ ভাঁক স্থা। মদ যান "মৌনী শিশাল" হ'তে, ছাতি ঠুকে ॥ কোন বা বাবুজী, বালা-সহিত বাগানে। চক্ষ রাঙ্গা, ওঠেন ঝেডে ভোরের কামানে॥ চোগা, ঘড়ী, টুপি, টাকিয়া চাপকান! গড়াগড়ি পায়ে ধরি, নাছোড় বিবিজ্ঞান ৷ ছাদন দ্ড়ী বাহুশতা. ছেদন ক3িন। বাৰজী ভয়েতে ভেকে। বদন মলিন॥ ছঃৰ দেখে মায়াবিনী বাঁধন দিল খুলে। টপ্পা গেপ্নে তেরিয়ান উঠিলেন ফুলে॥ ক্ষালে মৃছিয়া মুথ আডিয়া চাপকান। "দেহি পদ পল্ল**ে"—-বলিয়া প্রে**ভান ॥ কোথাও কর্কশ কথা বিষম ব্যাপার। কর্ত্তাটি বলেন, "কেপি, তলব রাজার॥ প্রত্যুবে হাজির যদি না হইতে পারি। সর্বনাশ হবে, ক্ষেপি, পর্ব্ব আজি ভারি॥ म्ब्रांण माना 'तम्राण' ह'एए याएक ट्रकारत काँक। ক্ষ্বকৃতি ওক্ত গেলো, তক্ত যাবে ফাঁক॥" वल, खाँहन भूल এक नाभरहे

পগার হলো পার।
বোষজা খুড়ী অবাক তেবে ভোটের ব্যাপার চ
পাববক্স, রামগোবিল নব্য ভোটর ষত।
"নান্চাইসের" ফ জানে না হর বৃদ্ধিহত ॥
শাবারাত্রি ব'সে জাগে ভোটের রগড়ে।
ইন্স তরিবৎ পার মশার কামড়ে॥
ইন্সের তকুম শক্ত, সমর যদি বর।
গাবুকে করিবে লাল, সদা প্রাণে ভর।

পরিবার পুত্র কন্তা হাহাকার করে।
সাবাস হন্ত্রক আজ আজন সহরে।
সবাই তৃফান ভাবে ভয়ে হবু গুবু—
কবি বলে, "সাধন" বিনে সভ্যতা কি কড়ু ?

"ভোটীং হলে" মিটীং এবার যোটে কত লো**ক।** কেহ গোরা, কেহ ছুধে, কেহ ক্লফ ভোঁকে 🛭 বাঁকা টেরি, হাতে ছড়ি একমেটে গড়ন। কামিজ আটা নধরবার নাগর কোন জন। कह वा लाखिए शाना, कह व्यं हेबाबा। माथाइंछि। (मर्रेनि (कर. (कर निम्न जान ॥ গাড়ী গাড়ী নামে বাব বণিক কেরানী। কাঁডি কাঁড়ি ক্যাণ্ডিডেট ফ্রেণ্ডের কোম্পানী। কেই চড়ে জুভি কেটীন কেই আঞ্চিন ধানে। কেরাঞ্চি কাহারো ভাগে কাবো বা ঠনঠনে॥ কেছ বা আডানি তোলা "ব্লাকবুটের" **ছাল**। কারো শিরে "প্যারাসল" বিবিয়ানা চাল। 'अनरवा' (ठेरन 'इरन' ट्रांटक ट्रमर्था नरम मार। ইংরেজী ধরণে গতি সাবাস ক্যাবাৎ॥ 'মার্চ্চ' করে পিছে পিছে, 'ভোটর' টায়ারা। আগে আগে যষ্টিধারী ফুলিস্ পাহারা। কেঁদে বলে হু সিয়াব ভোটব-সে কোনো। ছেছে দেও দণ্ডবিধি কাণ্ড কি তা শোনো। বরে আছে পাঁচটি ছেলে একা রোজগারী। আমার ওপর বিনি দোষে

'পত্তব' কেন জারি ?'
'ফরেণ চীজ' চাই না বাবা ছেডে দেও যাই।
ঘবের থেয়ে, বনেব মোষ কি হেতু ডাড়াই n
তার সদে অন্ত কেহ বলে কিল্ক হয়ে।
মমের ঘরে আমাদের কেন যাও ল'য়ে॥
আমীর উজীর ওরা, কেহ বা মনিব।
ওদের সাথে পার্ব কিসে আমরা গরিব n
ভোটের লড়াই এমন ধারা আগে জানে কেটা।
তা হ'লে কি ধরা দিয়ে ভূগি এত লেটা ?
কায়াকাটি অটাপটী, কত করে সোর!
'হগের' পুণ্যে কত পিতি পুনিসের জোর॥
'বাটন' ওঁতোর চোটে ভোলে ভোটের কলোঁ
মর্ম 'হীটে' চর্ম ফাটে, তাসে ঘর্ম-জলে॥
বার থাড়া হুই দল "হলেব" ছ্ধারে।
মধান্থলে মধ্যবর্তী 'পাইন' ইাকারে॥

'ইলেক্টব' ক্যান্তিভেট হবে ক্লোকার্জোকি।
পলীবাস ফ্রেন্ডদের গাত্র ভূঁকাভূঁকি।
কোথার ঈশর গুরু তুমি এ সমস।
চতুব রসিকরাজ চির-রসময়।
দেখিলে না চর্ম্চচ্চে হেন চমৎকার।
বঙ্গের গোগৃহ-রুপ ব্যাসের বাজার॥
কিছুকাল যদি আর থাকিতে হে বেঁচে।
'লিবার্টিব' জন্ম দেখে কমল নিতে কেঁচে।
সাজাতে কতেই বঙ্গে নবা তন্ত্র সঙ্৷
তুসর, গ্রদ, গ্রেজ চাল্তে কত বঙ্৷
বল্তে কেমন পাকার্গোপে

কলপ শোডা পায়।
বিলহারি জরির টুপি বুডোর মাথায়॥
বুটীদার মোডাসার আহা কিবা ঘটা।
বায়ান্তরে শিরে ডাজ, কুরুক্জেন্তছটা॥
ঘূণধবা বনেদি বুডো শিরে ত্যান্ডা টুপি।
লেগ-বসানে: বেলাক্ ক্যাপে কোলে শিক্ত থুপী॥
অপরূপ শোতা, আহা বাবরি ছাটা চুলে।
আশানশামী কান্ত হেরি কালা যাবে ভূলে॥
সামলার স্কার্থিস মোডাসার ফেব।
মোগলাই ধুস্চিব মাথাধরা ঘের॥
র্যাক ফাট, 'ফেন্ট' টুপী, বোখারে লঠন।
লাইনবাধা সারি সারি 'জানই' কেমন॥
বাদ্যালী বাব্ব সাজ আমার চবে বালি।
নকলে মজবুৎ বহু আসালে কাহানী॥

কৰ্দ্ধ হাতে মধাস্থল মধাস্থ লাঁডায়।
মেশ্বর বাছনি জলে ব্যাটন হেলায়॥
ভোটর ধরে "আশ্ব" করে তৃমি কারে চাও ?
কোন জন বলে সাহেব ঐটি আমায় দাও॥
কেঁড়ে কেতার উডে কীঠি বগলে বাহার।
এলেমভরা, "ভি এল" মারা পছল আমার,
"রাইট" বলে "ব্যাটন" তুলে বাছলার চায়।
সে জন বলে পরিপ্র ধাসা কালোজাম।
"নিগারস্থলে" কালাটাদ ঐটি লেব হাম॥
এক তুরূপে টেকা মেরে

"বেয়াম" ক'রে বদেছে। "অবল" থেকে "অনারেবল"

আর কে অমন আছে ?

ट्टिम भून: "अकिमांत्र" "वार्षिन" श्रद्र कुटन 1 বৈষ্ণব স্থোটর বলে মনের কথা থুলে। আমি লবো রাজা অই মুরলী রুসিক। রসভরা মুথথানি, হাসি ফিক ফিক॥ মাথা খুরে পড়ে হেরে নয়নের ঠার। অমন ফুলর ছেলে কোণা পাব আর ? বলিছে ভোটর কেন অই যে ও সেরে। ছাঁটা গোঁপ কাঁচা পাকা ঘটা ক'রে ফেবে॥ (मार्शका ८० हाता थाना, ८०१०। विकाद । টাকার আতিল উটি 'দণ্ডের' ভাঁডার॥ দানাদার দাতা তবু 'পদ⁷' নহে "লুদ"। ঈ**শপের উপক্রাদে অই** সে "গোল্ড গুদ্**"।** গিনি কাটা খাঁটি দোনা আছে "টক বিং"। দেখে ভানে নিতে হশো, "ভাট ইছ দি থিং" ॥ কেহ বলে. আমি চাই আই সুব্ৰাহ্মণ। পাকা দাড়ী,— সাদা চুল ঋষিটি যেমন। বিভের আহাজ বুডো, বুদ্ধের নবীন। গ্রীষ্টানের মুখপাত, চোখানো সঙ্গিন্।। আমার পছন অট গৃই ভেকধারী। শাপোটে দিলাম ভোট, জিতি আর হারি॥ "হোরণ দিয়ে হেনকালে, ঢোকে দেখি "**হল"**। ভঙ্গীতে বুঝিত্ব তাবা উকীলের দল॥ চমকে চমকে ভাকে "টাণ্ট" হ'তে নামি। "এনট্রান্স" আটক ক'রে দাঁডাই গিয়ে **আ**মি॥ সকলের আগেে এক মর্দ্ধ দিল সাডা। দিগ্গঞ্জ ছ হাত যেন তালের কাঁডি খাড়া॥ আদ্পাকা চুলেতে তেড়ি, বুরুদে বাগানো। "পার্ফিউমে" ভগ কেশ রুমালে ছভানো॥ সথের প্রাণ, সাদাসিদে, বল্ছে যেন হাসি। **"দেলদারিতে" থ্যাতি আমার আর সকল বা**সি। "দেকেন" ক'রে ছাড়ি তারে অক্ত কথা নাই। হীরে বাঁধা জদয়ধানা ঐটি আমি চাই ॥ এবার টিকিট ছেরে হাসি নাহি ধরে। লেখা তাতে গোটা গোটা ছাপার অকরে। গণিত গায়ক, গাড়ী "চটকে মসুর"। হিন্দুয়ানি হেক্মত হদ্দ বাহাত্য॥ বারো মাসে তের পর্ব্ব বাই থেমটা নাচ। **"হেল্থ" ভাল 6িরকাল ঢালাই করা ছাঁ**চ 🛚 রাই যুড়ে "ফাই" খ্যাতি, ডকা মারা নাম। সর্বাঘটে অধিষ্ঠান বর্ণচোরা আম।

ছই "পাস" একেবাবে শৃত্যেতে উত্থান ॥ ওঁইবার রক্ষাকর মৃস্কিল আসোন ॥ ড়ই বাঙ্গালে এক সঙ্গে "হলে" যেতে চায়। কারে রাথি কারে ছাডি পডি ঘোর দায়। এক বাহাত্র 'হল্কে' ভারী ২ন্ধ ফাঁপা পেট। হাল্পা দেহ কঞ্চিকাটী অন্য ক্যাণ্ডিডেট॥ ছিপ ছিপে বাঙ্গাল বাবু রাগেতে ফেঁপায়। ফুদো পেটা ভূঁদো দাদা মজবৃৎ কথায়॥ রাকাডে বাকাডে ওঠে কোনলেব ঝড। হাঁকাহাঁকি চেঁচাটেচি বেহদ বেগড। বিধকুটে বাঙালে গোঁসা বড়ই বালাই। আহেলী বেলাতি বোল আনুকোরা ঢাকাই॥ গ্রম গ্রম আহাছে। বক্ম ইংরাজী ফোডন। ভাস্ছে তাতে সাধু ভাষা মিষ্ট বিলক্ষণ। ভোটিং গেল ভ্যান্ত। হয়ে 'ফ্রেন্সিপ কুল।' কবি বলে হজনাই "ডাউন রাইট ফুল"॥ 'অনর' বজার কত্তে হ'লে, ঘূদি সাফাই চাই। 'ভল্গাব' ব্যবস্থা কেন কথার লডাই ? আলিপুর জ্ড়ি যুড়ি গাডিতে ছঃলাপ। চোপদার, চাপরাশি, ভৃত্য, কটিকদা ছাপ। পেগম্বর জনিদাব, খোস্ক রদি রাজা। সিম্ব সাটিন, গ্ৰদ, চেলি চাপকানেতে ভাঁজা। গলবস্ত্র সেক্টোরী সাহেবানে থেরে। 'পাইমেন্ট' পাদ পাইতে দ্বারে দ্বারে ফেরে॥ কেহ বলে খোদাবন ছুই লক আয়। কেহ বলে 'ভারত-ভারা' আমার গলায়। কেহ বলে আনার 'ফনে' ব্যাক থাডা আনছে। ক্ষেত্ ংলে 'ফ্যামিন ফনে' অনেক টাকা গেছে। "মাবাপ' সাহেব তৃমি রক্ষা কর মান। रेनल घरत्र किरत रागल र्याका इरव कान ॥ **অ**তি বৃদ্ধ পিতামহের খেলাৎ তুলে কেহ। বলে সাহেব স্বাব আগে আমায় পাস দেহ 🛭 কেছ বলে কৃঞ্দাস আমাব প্রতিবাসী। খোদাবন ফেল কল্লে পাড়া শুদ্ধ হাসি। মৌলভী বলেন আমি মুসলমানের চাই। ছজুর যেন ইয়াদ থাকে, বান্দাব দোহাই ॥ নবাৰ বলেন আমি নম্¹দ উজার। হকিয়তে আমার ২ক্ভিদ্বিহাজির । ফেসাদ করে, কত সেধে মাথা কুটে কেঁদে। भरक करक (करवन मस्य व्यवभव्य (नैर्ध ।

বাঙালায় বন্দনীয় যত অবতাব। বলিহারি বঙ্গবাসী তাবিপ তোমাব॥

নগর ভিভরে হেথা নাগরীর হাট।
নবীন তরঙ্গে তুলে কবে কত নাট॥
বাছনি 'ভোটিং হলে' নাচনি পাছার।
বাঙ্গভরা বামানুবে প্রবণ জুডার॥
বিবিয়ানা তেভিকাটা তকণ তরুণী।
তেফেরা সাভীতে বেডা গাঙ্গের উডানি॥
'রুক্ল' মাথা মুথ্থানি পাথা নিয়ে হাতে।
গরবে গণ্ডেপ্রভি ঘুরিছেন ছাতে॥
উদ্দেশে কাহারে বলে ভাল বুকের পাটা।
মিউনিসিপেল ক্মিশনাব হবে আবার সেটা॥
মেগের হাতে বাঁডা কলি

বাগিচা বাগান বোট নাই একটি মালী। সে আবার হ'তে চায় ভোটেব মেমার। পোড়া কপাল কালামুগ, ধিকৃ ধিক্ ছার 🛭 বাডীর নিকট ছাতে সাড়ী কানাপেড়ে। আঁচলে চাবির থোবা ঝোলে গলা বেড়ে॥ বসিয়া জনেক বামা 'উলেন' বিনায়। সি^{*}থিতে সিন্দুর ছট। চাঁদেব শোভাষ । শুনে কথা মরালেব মত মাথা তুলে। বলে হার হাসি পায় যম আছে ভূলে। কডিতে কি জোটে মান বডিতে থিচুডি। গুডেতে কি থাকা হয় এক আঙ্গুলে তুডি। আঞ্চী ঘড়ীর চেন বানবে কি সাঙ্গে ? আমার ভাতার হ'লে পালাতাম লাজে। হরপের এক অক্ষর যার-পেটে নাই। সে হবে মেম্বর ? তাব মেগেব মূথে ছাই॥ কোন গ্রাক্ষের কাছে রুম্ণা আহলাদে। লক্ষ্য করি **অনু জ**নে কথা করে চাঁদে। কিপ্টে ভাতার কেয়াকাটা কুম্চা ব্লিদান। মুখমিষ্টি মধুপক সকলি সমান ॥ সে বলে তলানি জানি পুরুষ বড় দাতা। , লম্বা কোঁচা পরের কাছে ঘরে ছেঁড়া কাঁথা॥ বল্লে—পাল্টা গেয়ে আল্তা মাথা পা হ্থানি তু**লে**।

व्यावना टकरन कामना भिष्य हरता त्थाना हरन ।

कवि कहा किरमन बाह्या है इस यनि कथन। বাছনির বাহাত্রী দেখাব তথন। পোলিং শেষে হাজরে ডাকা পরক ভারী দড। বাছাই করা মেমরেরা কাউলেলে অড়। কাগল হাতে হগ বাবালী হাকিম ধরণ। একে একে ডাকেন সবে ত্যাডা উচ্চারণ॥ ৰবাব নমূদ আলী খানসামা গোলাম। রার রাজেন্দ্র শ্রীরাম যুগী ? উত্তর--সেলাম। কুমার ভেকেন্দ্র কুট কানাই নাঞ্জির। সাহেবজাদা দেকেন্দর ? উত্তর- হাজির। নাপিত নদেরটাদ পদা বাহাত্র. ছিদাম মালী শ্রীধর মৃতি ?—হাজির ছেজুর ॥ রামভন্ত চেত্রকী নবি বরকলাক। खनाद्ववन निष्ठेमात्र ? - 'श्रविव नशाक ॥' প্যাগদ্বর 'মি এস আই' পরেশ ভৈনৎ। 🏥 বাম মন্তপি 'হায়' ?—"সাহেব দণ্ডবৎ ॥" মৌশভী তাল্লিম মিয়া, ইন্দ্রের পিরাশী। ষড়েল সাবুই বাগ ?—হাজির ছজুরালী। ডিপুটী নফর বক্স সৈয়দ নবিজ্ঞে বো ছকুম শির পাঁগাচা ?—জ্বাপ কি ওয়ান্তে। হলা দিয়ে ছুটলো পাছে তাকই মাছের ঝোল। হাকরে ডেকে সাহেব গেল যাত্রাভন্ন গোল। (कामाकृष्णि भ्रमाश्रीण '(मरकरनद्र' ध्रम । মিউনিদিপেল মক্স দেখে আকেল গুড়ম।

হায় কি হলো ? (১)

হার কি হলো ?—কলম ছুতে হাসি এলো হুথে। তেবেছিলুম মনের কথা লিগবো ছাজি ঠুকে। এলো হাসি— হাসিই তবে ঢেউ থেলিয়া চ'লে। ছটাক্থানিক রসের কথা—"হার কি হলো ব'লে! (২)

হার কি হলো দেশের দশা রিপণ রাজার ভূরে ? নালাকালো সমান হবে—সবার মৃত্ বুরে ॥ আসদ কথা রইল কোথা কেউ না সেটা থোঁজে। কথার লড়াই কথার বড়াই—হওয়ার সলে বোঝে॥ পুর্বকেল-কালা মিশ থাবে না—সমান হওয়া পরে। নাচের পুতুল হর কি মাধুব তুলে উ চু ক'রে। (७)

হায় কি হলো—পেটের কথা বেরিরে গেল কড। ইন্ডক সে লাট টমসন্—বেরাল ইন্দুর বত — "রাষ্ট্র ক'রে ব'লে দিলে গুপ্ত প্রেমের কথা"॥ উচ্চপারা, নেটিভদিগের সেটা কথার কথা॥ ধর্মভাতু এদেশীর তাদের ভিতর ছিল! স্পষ্ট কথা ব'লে দিয়ে—"পুরস্কারী" দিল॥

(8)

হায় কি হলো —কত লোকের ভ্রমটা গেল ঘ্চে। বিলেত-ফেরা এ দেশীতে প্রভেদ নাইক ছুচে॥ বতই বলুন, যতই শিথুন, তাদের চলন-চাল— ইংরাজেরা ভোলে না তায—হার রে কলিকাল!

(c)

হার কি হলো—কপাল পোডা উমেদারের পেনা পড়লো চাপা জাতার তলে—সাহেব বড় গোঁসা। অন্ধ গেলো বাঙালীএই, আত কি হলো তায়। এ পোডা ছাই "ইলবার্ট বিল" কেন হায় হায়।

(9)

হায় কি হলো—দেশের দশা বিলাতে গেলে রবা তিন দিন না বেতে বেতে গ্রীষ্ট ভব্নে, ও মা। পুক্ষ পাছে মেয়ে আগে স্ফল তাতে ফল্বে না। চাই এ দেশে, আর কিছুদিন এ "দিশী জানানা"।

(9)

शम कि इत्ला-क्यांत्र लात्य

হার কি হলো?—বদদেশের কপাল গেলো ফিং গুলী পুরে গোরা ফউন্ধ দীড়িরে বারাকপুরে। আদ্যন্থ স্থারন বরে ফিরে এই কথা সাদা। এতেই এতে। আডম্বরি ? ইংরেন্ধ কি গাধা?

(2)

(वार्थ यात्रा "शत्र कि रुला"

ভাদের কাছেই আ "শ্লাসানেল কনের" ব্যাপারটা নর কি চলাচলি

পরের অধীন দাসের জাতি

"নেসেন" আবার তারা। তাদের আবার "এজিটেণন্"— নরুন উঁচু কবা॥

(>)

হার কি হলো - দলাদলি বাধলো ঘরে ঘরে। পার্টি থেলা চেউ ত্লেছে ভাবত রাজা'পরে॥ সবাই "লীডর"—কর্তা স্বয়ং—আপনি বাহাতুর। কতই দিকে তুলচে কতো কতই তরো সূর।

হার কি হলো---আকাল এলো আবাব ধ্বজা তুলে। রাজার পুণো প্রজার কুশল – লেপাই আছে মূলে! হার কি হলো ভাদেব আবাব — কম যাদের ঘরে ? জমীলারের গলা টিপে খড় চুরি করে। "টেনেন্দিবিল" নামে আইন হচেচ ভৈরার করা। গরা গলা গলাধর ভ্রামী প্রজাব।!

(><)

হায় কি হলো—'বদদর্শন' বৃদ্ধিম দেছে ছেডে, হায় কি হলো—দেশটা গেছে "সাপ্তাহিকে" জুড়ে ! হায় কি হলো—ভূদেব গেল ছেড়ে গুকুগিবা। হায় কি হলো--হেম,নবীনেব,নাইকো জাবিজুরি!

(>0)

সবার চেমে হায় কি হলো—ওই ষে হাসি পায়, "হেষ্টি-পিগট" মিষ্টি কথা—"মিষ্টিরি" তলায়। কি কাণ্ডটা ছি ছি ছি "ন"জ্বার কথা বড়! পাদরী হ'য়ে উদয় দলে—রগড় এত দড় ?

(38)

হার কি হলো আধথানা মাঠ জুবাট নেচে থেরে।
বিষয়টা কি, ব্যতে নাবি কাওথানা হেরে।
আদ্দেক বাড়ী সহবমাথে হ'চেচ মেরামং',—
তনতে ভালো "একজিবিসন"- একজনার কিসমং।
দেশের শিল্পী কারিগুরি শিথবে বিলাতীরা—
অন্নাভাবে হদিন বাদে মনুবে এদেশীরা ?
গাস্বা কত—"একজিবিসন" দেশের ভাল করে?
পেতে অন্ধ নাইক বাদের—এ কি তাদের তবে?

(>e)

গায় কি হলো দাঁড়াই কোথা p—ইংরেজে ইংবেজে, ড্মুল কাঁগু বেধে গেছে—সবাই হল্লসাজে! বলচে যত "কলোনিরা" আমরা হিস্তে চাই, 'মষ্ট্রেদিরা' ভাগ বসাবে অস্ক কথা নাই! এ দেশী ইংরাক্ক যত বাগছে স্বাই দল,
রাগবে ভারত নিজের হাতে—দেখিয়ের বাছবল ।

"ইংলিশমানের" ফবেল সাহের কচে — "ক্মাণডারী
পেছন থেকে পাইওনিয়াল হাকচে হা ওলারি।
বাপ রে বাপ কি চেহারা "ভলচিয়ারগণ,"

শাভিয়ে গেছে সন্দিন হাতে—কাপ্চে কলাবন ।
আর কি থাকে বানীর রাজা।—নালকর, চা-কর,
সাঙ্গিন থাবা নিজে সাড়া—উ চিয়ে হাতিয়ার।
ছেডে দিবে ছব্রা-ভবা—পাখী মাবা "গন্—"
উড়ে যাবে ছলাথ সেলাই— আার্থা—"কেলব"-গণ ।
ভাই ত বলি "হায় কি হলো"— রাজা আলমানিরি ।
একেই বলে দেশোয়তি—সাবাস বিশিহারি।
ব্রুবে যদি "হায় কি হলো"—প্রসা ক'টি দিও,
যত্ত ক'রে বস্পশ্ন' কাগ্রগণানি নিও।

"নেভার—নেভার"।

(3)

গেল রাজ্য. গেল মান. **डाकिल हैः निमगान.** ডাক ছাড়ে ব্রান্দন্ কেণ্ডয়িক-মিলার— "নেটবেৰ কাছে থাডা নেভাৱ—নেভাৱৃ!" "নে ছাব" সে অপমান—, হতনান বিবিহ্বান নেটিবে পাবে সন্ধান, আমাদের "জান না" ? বিবিজান! দেহে প্রাণ কথনও তা হবে না ॥ হিপ্হিপ্ হিপ্ ছৱে, হাট কোট বুট পরে, শরা ভাবে জগতেরে--তাদের বিচার त्निष्ठितत्र कार्छ १८४ १—त्ने छात्र (न छात्र ! "নেভার"—দে অপমান হতমাৰ বিবিজ্ঞান, নেটিবে পাবে সন্ধান আমাদের "জান না" 🕈 **८५८ छा**न विविद्यान । कथरना छ। इरद ना॥ (२)

কাপিল মেদিনা চল, পরা যায় বদাতল,
আন্তে কেলি উর্ন্ধাসে "ভলেন্টিরার" ছুটিছে,
কাগজ কলম ধ'বে কামিনাবা উঠেচে '
ভ্রে হিপ্ ভ্রে হো লিঙে বাজে ভোঁ ভোঁ ভোঁ
বুটন স্বাধীন সদা "ফ্রাডম্—এভার।"
(৩)

বিলাভী ব্যের বব কামিনা কেপিল সৰ্ব বল্পতের কাছে গিলা কানে দিল পাক, পুদ্ধ তুলে নৃত্য করে অতুল আননলভারে ভাকিল বৃটিশ-বৃহ পাক্ গাক্ ডাক এ ছরে হিপ্ ছরে হো, শিঙে বাজে ডোঁ ডোঁ ডোঁ বুটন স্বাধীন সদা— "ফ্রীডন্ এভার।" "নেভার"— সে অপমান, হতমান বিবিজান্ নেটিবে পাবে সন্ধান আমাদের "জানানা।" দেহে প্রাণ, বিবিজান, কথনো তা হবে না॥

(8)

আয় রে ফিরিলি ভাই সিন্ধপারে চ'লে ষাই সেখানে "লিবার্টি হল" আমাদের সভা। পাত্র মিত্র যত জন সকলেই গবা !--আছিলাম এতকাল ৰুঝাইব থাঁটি হাল হিন্দেশে ভালবেসে হিন্দুর সন্তানে, সিংহ যেন মৃগ কোলে অর্গের উভানে ॥ লাৰি কিল পটাপট জ্বতো চড় চটাচট "লিভার" পীলে ফটাফট আপনি যেতো ফেটে। মলম মাথায়ে গায় আমরাই করুণায় রাখিতাম কোলে ক'রে হিন্দুর সন্তানে সিংহ বেন মুগ রাথে অর্গের বাগানে! হুরে হিপ্হরে হো শিঙে বাজে ভোঁ ভোঁ ভোঁ বুটন স্বাধীন সদা "ফ্রীডম্ এভার"।

()

হঁ সিয়ার ইলবাট দেখ হে রিপণ লাট—
সাহেব-রক্ষণী সভা সংগঠিত হরেছে।
ছপোঁচ তেপোঁচ মিলে, লক্ষ টাকা দেছে ত্লে,
চামড়া কাটা কতগুলা "এক্ষিবিয়স্" যুটেছে —
ছিপ্ হিপ্ হিপ্, হরে— ছাট কোট বৃট পরে,
ভাদের বিচার করে এ কগতে কেটা ?
আর রে ফিরিলি ভাই, সবরাঙা ডাকে স্বাই—
দিল্পারে দেখে আসি ইংরাজের সভা।
পালে চুকে মিশে মাব, আকু পিজু নাহি রব
সিংহদলে স্থান ব্রেছে নেবে ক্বা।
ছরে হিপ্ হরে হো, শিঙে বাজে টো ভোঁ—
এ দিশী "বুটন" মোরা গোরাদের ব্যটা!

(৬)
ভাষত উদ্ধার হবে আমাদের "মিসনে।"
সোবাসনা বত কাল, পূর্ণ নহে তত কাল
আমারা আফিব হেথা কি করিবে রিপণে ?
ভাষত উদ্ধার হবে, আমাদেরই "মিসনে"!
বিশ্বিদ্ধার হৈব, আটা কোট বুট প'রে

বেড়াৰ শীকার ধর্ধরে যেখা পাব ভ্বনে—

কি করিবে জামাদের "টেবেটর বি রিপণে।

শক্র যদি করে গোল, ধরিব ব্রভ বোল,

উচ্চভানে ওনাইব নিছক থেউড়।

সাবাস ইংরেক জাতি সাবাস ব্কের ছাতি,

লাকুল বেংগছে ভাল সভ্যভা নেজুড়।

হরে হিপ হরে ১০ শিকে বাজে ভোঁ ভোঁ ভোঁ—

বুটন খাবীন সদা "জীড়ন্—এভার"

হরে হিপ্ হিপ্—হরে, হাট কোট বুট প'রে

সারা ভাবে অগতের তাদের বিচার.

নেটবের কাছে হবে ?—"নেভার—নেভাব্"

(1)

কলরবে কৃত্হলি নেটিবের দল।
স্বন্ব দেখাইল শিং ভালা কল।
দেখাইল বাড়ী গাড়ী জুড়ী বাছাৰাছা।
"ম্যালো কিশ" মনোহর স্বানন্দর ধাঁচা।
ছড়া ছড়া পরিপক তাজা মর্ত্রমান।
দেখিলৈ ইংরাজ যাহে সভা মুম্বপ্রাণ।
দেখাইল রড়গভা বালালার স্থা।
মান্তাজ বোখাই লেশ চক্লুমনোলোভা।
রত্ত্বমঞ্জ "রেসিডেন্সি" লেখাইল কত,
স্কলিছে ভারত জুড়ে মাণিক পর্বত!
চলেছে ভারার তলে এ দেশী রালারা,
পৃষ্ঠপরে বেডকার রাশীর প্রলারা!!
ভরে হিপ্—ছরে হো,শিঙে বালে ভোঁ ভোঁ ভোঁ
বুটন স্বাধীন সদা "ফ্রীডম্—এভার।"

(٢)

হঠাৎ পড়িল ডাক সামাল সামাল।
বলি শোন্ ওরে ভাই ইংরাল ছাবাল।
এ রাজিব ছেড়ে আর কোথা যাবি বলু ?
চ্রিনিকা বুটনের পৃথিবীর লুট—
ভারত ছাড়িয়া বাবো—টুট টুট টুট !!
ধ্পছায়া ভায়ায়া, সবে শোন তবে বলি,
আারমেনিয়া বাও হে কেহ—কেহ চুণাগলি।
ল্পুট কথা বলা ভাল বিছ বড় ভারি.
শ্রিলক্ কাউ" ইণ্ডিয়ারে ছেড়ে বেভে নাবি।
দ্বাই মিলে "আ্যা হেম" বলে প্রেট লানে চায়,
উক্লডারন বীরে ধীরে হাধা ছবে গাম—

তের হিপ—ছরে হো শিতেঁ বাইঞ্চ'রেডা টেন 🔊 রুটন স্বাধীন সদা—"বুহুগাংসকেডার"।। ডিপ্ হিপ্ – ডিপ্ ছরে, হৈথা ডেডে দাব কিবে, 🍍 "ড্যাম দি নুন্টিৰ বিল্" দোভাব নেডাফ্রাই

. বাজি-মাৎ।

াচে থাকে। মুখুয়ের পো, খেলে ভাল চটা। গমার খেলার নী॰ কপ্রে হয় গোলর শল্পে ফুটে 🛊 'কক্ষ' দানে, এক ভাডাতি, কলে প্রতিষ্ঠাই। ্ৰছ, কাড়বে ভেকো হলো কেয়াবাং কেয়াবাং। ্বাস ভবানীপুৰ সাব্যস্তানায়। -থালে **অভূত কীৰ্বিকু**লতলায়। ্ ्ध किन विदय त्योवं वीक्रानाक्रमात्मः। াৰা খুলে কুলবালা সম্ভাৱে ইংবাছে। া**পায় কৈশুবী দল ৷ বিভাগাগৰ কে**গথা ৮ ধ্যোৰ কাৰ্চুপিতে মূথ হৈল ভিতে।। বজ্র-নথেক্র পোটা সাকুব পিণালি ! **খায়ে বাঁক্ডাবাদী কৈল ঠাকুৱালি** চ ন্ত মুখুখ্যের বেটা বলিগাবি যাই। পো**দবে** য'ত **মজা** কিনে নিলে ছাই। 🤋 যতীন্ত্র, ক্লুঞ্দাস। একবার দেখু 🕻 চয়ে। ক্লডলায় প্ৰেব ধারে কটে শভ মেনে -গলো ফিকে, গৌর, সোনা হাতে ওয়া পান। এপৰ ভালি থুলে বৃদ্ধি পৈতেছে দৌকোন॥ शमस्य श्रेष्ट्रभावितम् माउँ माटहर ख स्टब्स-ার্বেল্ মার্রা গিল্টি হলো, একবার দেগ চেয়ে দে বলবেছুছেতে খান। ছিমে বেটে ছালে বুন। ্**মূপুরে** মির্ফোর দেখ ব'ক্টিজ টেলার ভিন ह ब्रार्टकर्स अन अभितन भूषे त्याँदि स्वति । শবে, আইনপেঞ্জীর পেঞ্জিরিট্রেড মানটা গেল বেঁট্রে ড'**হে মৃথ্বৈয় জীয়**া ব**লিঁহারি বা**ই। ^{ড়} **ষ্টুপ**টা দয়ে মাৎ করিলে থেতাপু "দি এস আই" ং**দ ও সহরবাসী,আন্ন কি হাসি ক্ল**সবে রেড়ো বলে দি না চেয়ে বকুক্তলীয়ে গাড়িখে রাণীব ছেটো। विष्कृतिक मतम क'तत्र क्वीमा त्यान दिव। ... िरिक्ति। (क्यांत मार्ट्य वातृर्व ने नार्यय ॥ गत रकुर्ने द्वा रचामजिल्हिशान करित्र कथा ब्राहुशा লাইটা লৈয়ে "বাইটা" হ'বে পার হওলো সন্ধান 🖂 কৈ তাতেই গৰ্মাকৈ তার কাল বদনবানি। 😹

কলা তুলে দেক্সির। 🔻 কিন্তু। ক'্রেমি দুর্ব দেশবে কুন্তী, কণ্ঠচার পিটে এই প্রা<u>র্টিক র</u> আর এয়োগণ কর্বি বরণ । চর্বাসিং — क् मिटवर विश्व नश्र टला रेश धरान जनका माना। " এগিয়ে এশ বছ ভাকরণ, সাতু পেচ বির **মা** । ভক পাবেন জৈ|ফাব ভিনি ভার জান কা**ন** শৈনিক পাৰে হীবেৰমালা ভাতে লকাই নৃ্তি, নজৰ দিয়ে, দেয়াও খুলে বউ বি**ন্ত্ৰী**না পুতি 🛭 বিভিনা বুক 🕟 বয়সে গলায় কাপড় কিছে: -বাজপুকাটি বাল ভাল, ফুলের মান্ধা নিয়ে 🗗 कान नारक कार्य ना वास्त्रक (भट्न क्ट्रा) বাজাব ছেলের পা শুজিবে ফলের সাজি ল'রে। এখন--দীড়াও স'বে বুড দিদি,হাসিশ তল কাজ 🖧 দেশবো আফি ভাল ক'তে আৰ এলেদৰ দাৰুনা আয় না লোনৰ একে এতে গোলাগা কাঞ্চন। দেশি জোনেৰ লগেন ভটা ঘটকালী কেমন। ভঃ কৰো না এক .। অংগি দেখতে নাহি চাই। রাজার ছেলের অবিড'লে 5 উ'কি মার্ব'**ভীই**র षाभि-यान्यवामी षात्रः। ८५८०

লক্ষ্য হ'তে পাৰে 🕯

বিদেশবাসী বাজান ভেলে কজা কি লো তারে ॥ ।
বল্তে কথা বাছা বাছা কদম দলেব কাছ।
লেকে আনি বাজক্যারে ছুইড্লো কবিব ঘাছ
ইবার ঝলন, সোনার কলন, হাত্রনকার বেলি।
হল্ ভল্ উল্র কেনি শাবের গীনগোল
বারাগদীন গদ্ধানি উঠলো মহাব্দ।

মার্বেলেতে মলের সদক বাজলো কনে কলো।
কবি বৈল হতভোষা হিচর পুনি ফাক।
গালিরে ঘেতে প্র পার্ব না ঘোরে জানুব চাক
বাজালাছ বিলে পুরা বিল মুন্দিন।

বাজালাছ বিলে পুরার বছ পুনালিন।

বাজালী কুলকামিনী ইবল বার্বিন।

বাজালী কুলকামিনী ইবল বার্বিন।

বিল্লিক বিল ক্রিকান স্বিন্তিন বার্বিন।

বিল্লিক বিল ক্রিকান বিল্লিকান বিল্লিকান বিল্লিকান কিন্তুবি বাল্লিকান বিল্লিকান বিল্লিক

সে নিশিতে জ্লিক্ষ্যের কিব্যু পরীপ্রায়েয়।
নিজা নাহি ধাব কেছ প্রথেব আবার্যে ।
গৃহিনী বাহার দরে ভাবি কার্যাকাট ।
বারানিশি গঞ্জনার চোটে ছাট্টে ঘাটা ॥
কহে কোন-বাজনারী বিনারে বিনারে ।
লয়ন-গৃহের পাশে পতিকে শুনারে ॥
ধাশি সাটানের গাল, দেটান হাঁকারো ।
কেবল সেলাম বালি, লেবিতে বেছানো ।

े ति स्वे क द्वि स्त प्रमुख ता ।

क्षित दोएक, इन्हेंस काम, भारता स्वृक्ष न ।

क्षित कार्यक स्वक्ष सक व व्यव्य दाना स्वि ।

क्षित क्षित कार्यक स्वक्ष सक कार्यक साम ।

क्षित कार्यक स्वक्ष सक सम्बद्ध साम ।

क्षित कार्यक सम्बद्ध साम ।

क्षित कार्यक साम कार्यक साम ।

क्षित कार्यक साम कार्यक साम ।

क्षित कार्यक साम कार्यक साम ।

ব্ৰিক এছাল এই।শ্ৰিকা ভেত্তাৰ আনাৱ মান-শ্রেমণ কোনে রফা কারের ১ছার ৪ ্^{ক্ষা}ৰে ক্ষকি প্ৰভু তেমুখ্যালা নাই মূখে। িকাৰে ভাৰুৰে লগে ভূটিৰ জ্ঞান্ত একে ইয়েছে। ্রিষ্টিণীর ভেতেশ লেখে গোল হারুদ মাধা হাত। 🎥 छ भुक्रम र का (भारा) इंटर्स अमीमणा ०॥ ব্ৰিষ্টাতে গাটো, এনতে পাৰি ইংগালী ভাষ্টা ট্রিক-স্যোদের আভাতে পর্কিইংরাকী প্রথায় । 🌋 🚉 सजा है हो न' स्वाह कार्य, कर्ता विवास यान । दिकामात्र ५८० छन्यनि साक्षात्म तम् भागः। भ्राय बुंडे, Cक्रश्यः श्रा य, भ्रमाय दमानाच ८६म (ampaniesia। আর্ধালিতেহন নাভগুলেম ॥ **ঞ্চিপ্ৰ পিতামোর নামে পাতি ১৪ নাকে। রাক্সতে**ওঁ ! টাইম পেয়ে বাচট নেলে ভিট চাই স্টেট । শ্বিক তে, যাবে বিভূ দে তোমার ধিরাল্ডবি বুক। ब्रुट किफिएते निरुद्ध त्क्यन लोशिए ब्रिटन स्ट्र **র্মাটা** বেল্ড জনোনুতে প**তি ভার** চায়। 🗱 🕶 शक्षकांत शाक्रानिनि यात्र व

ক্ষিকেন বদালের অভিযানী নারী।
ক্ষিনাম বছ আঁকি, বোঝা বৈছে জাবি।
ক্ষিত্র টেনে ফেল টাকা বিও পরে।
ক্ষিত্রে টাডালে না একটা বিছু হ'ছে।
বিক্রিসনাই আলো সব কি সেল কেনে।
ক্ষিত্রিয়ের নামটাও ছি, লা পাইলে পেনে।
ক্ষিত্রিয়ের ক্ষ্তো থাগুন নাম কলে লাবি।
ক্ষিত্র কেবল আত্যবাজি মন্দ তুমি ভাবি।

গৃহিনী কন ভ্যালা ৰূজিবতি। প্ৰবু অনাবেবল, গুৰুগবিলাকীত। ভোটদাটের স্থালোকারী জোনা হ'তে কেবি,
লক্ষ্প বহু লোক বদ দেবি আ কি ।

নিটি নিলে গাড়া ভেড়ে দাটেব পাড়ায়—
পোমার কোটের উকীল ভোমাকে কারার।
ছি, ছি, ছি, ছি, ছেড়ে দাও এবন গাকরি।
ছবু খালি মার্কা মারা পেবেদার 'লিবলি ছবাবজেম বৃধি কেইবেট ভূমি এক জন—
ছবাসিছা রাজা কিবো লজার গাবন '
ভূমা খামা পোড়া ভাগিনে, উকীলেব উচা।
ছাড়ারালি তে গ্রেন ালি এনে নাগ্র গোছা।
বালে, নোন্কা নেরে অভ্যাইনা গায়ালিরে বান
বিজ্ঞারার রাজি নের ভারতে তিওঁ মান।

পোলা পুঁটি বদনা সেনা পিনী আৰু ৰভ।
পাছায় গাঁএায় কেঁদে বেছান পে কক ।
ক্ষেত্ৰ নিল আমাত্ৰ কঠাটি দে নৃথপদি।
ফ্যাটা বেঁদে যান বালি এই বিলা বুলি॥
বাপেৰ কামানে টাকা বিশাকী ভাগকে।
ক্ষিয়া নিজে জুজু হ'বে ডোকেন কাটেছ।
ক্ষিয়া নিজে জুজু হ'বে ডোকেন কাটেছ।
ক্ষিয়া নিজে জুজু হ'বে ডোকেন কাটেছ।
মাক থেকে লুটি আৰু কুঠিব বলা ছিল।
কোপে যবে হোমে যায় ছু বজব পাত্ৰ।
কোলায় খেনার ইনি চোকেন ছিলালে॥
এই তো 'এলেম' ভান্ত হিছেন ভাগনে।
ভা হ তে আমার আরু কি হুটিব বোন্ হু"

বংগ দালালের মাগ 'গাখানি বাগিতে।
জামে বটে চের কভি নিত্র বেন্দেগারে।
পেক্টেমে কড়িটি ভোগ শাল শাহিত নাই।
সে কেনমে রাজপুল্ল আনে বল ভাই।"

কাণ্ডের অভিটারি ক'বে মরে যারা।
ভাষাদের কামিনীরা কেঁদে কেঁদে সারা"রাত্রি বিন এক খাটে হার লো কাছাব।
হপ্তায় মিনিট পাঁচ হয় না সাক্ষাব।
এক বিথে এক পড়ে এক ছাপা ছালে।
কর্পদ নাছি পার অভাগ্রির পাশে ॥"
কবি বলে কামিনীরা রঞ্জ মান্য কর।
ফিরিবে ভোবের ভাগা শুন অভাগর॥

ডিপুটির ভার্ম্য। কন "আমানের জিনি। চৌকিনারীর কাকে পটু, মকবলে "গিনি" । মহরে টাকার করে চলা বেথি ভার। । বলবো,কি কুলা ওলো বিদ্যু অনুষ্ঠ আমান। খুরে থুরে দেশে দেশে শ্বীর হ'ল কালি। সাতশো টাকা মাইনে হলে। হদ—ঠাকুবালী॥ মদ্ধ বড তব্ এতে চোকরাঙানি কত— ঘুঁটের চিপি ভাবে দিদি দেখিলে পর্সত॥ হতাম যজপি কোন উকিলেব নাগ! বাডিত আমাৰ আজ কত অভ্বাগ॥"

সে রুমণী বলে 'বোন এপিট ওপিট। একি ভাচে ঢালা ডুই সমান টিকিট॥ ছে টাকাটি মানে মানে কবে উপাৰ্জন। চৌদ্ধ ভতে প'ডে কবে অৰ্দ্ধেক ভোজন। কপালে প্রভাহ মুটি। এজলাসে এজলাসে। দিন তেবটি লাণি খেয়ে ঘবে ফিবে **আগে**॥ বেশাব বেহল পেশা কথা বেচে খায়। পদেৰ আবাৰ মান সহম কোথায় ॥ আমি উকীলের মাগ কথা শোন বোন। মধুযোৰ দঙ্গে আৰু কৰোনা ওজন ॥" "বটে বোন বটে বটে মানি তোব কথা।" are शीरत शौरत करू नांदी 'आरम रमशं 1 "আমাৰ কঠাটি দেখ সৰকাৰী উকীল। মধুষোব 'দিনিয়ব" উকীল দিবিল। বয়েসও হয়েছে কিছু বৃদ্ধিও পেকেছে। ছোট বড কৰ্ম কাজ অনেক কবেছে। পাকা হিন্দু, প্ৰতিদিন তুৰ্গানাম কৰে। তবও বাণীব ছেলে চকলো না লো ঘবে॥"

ভাক্তাবেৰ নাধী কহে "ভাৱী ত মন্ধানি। নাজী টিপে জাবি কত ঘৰেতে শাসানি॥ পাৱেন কেবল পাডায় পাডায় পিটিতে ধ্যন। মৱৰ কালে শৰণ "চিবৰ" পাৰ্টিজ স্থল॥ মৱেন ঘ্ৰে পথে পথে বোদে ধ্ৰে ধ্ৰে শ ঘৱে শুতে এলে এবাব পেশ্বা দিব বুকে॥"

কেরানীর নারী যত পাদাবে কোপার।
মার্টারের "মিস্ট্রেমেরা" গোসা ঘবে যায়॥
কবিব ফিবিতে ঘবে হৈল বড দায়।
আনক ভাবিয়া শেষে প্রবেশে সেথায়॥
কান্তা আসি হাজ্মুবে বলে কই দেবি!
কি পাইলে কাব্য লিগে সোনা কিংবা মেকি॥
বড জালাতন কর জেগে সারা রাতি।
জালি ফেলে কাগজ হিডে পুডিয়ে মোমেব বাতি॥
শবনে সোয়ান্তি নাই বিবাম নিতার।
শত রাকাড়ে সাড়া নাই রাত্রি ব'য়ে যায়॥

দেও দেখি গুণমণি কৈ পেলে শিরোপা।
বুলুবিবন, চাকি চাক্তি, কিংবা জরিব থোপা॥
কবি কহে পায় কিবা কি দেখাবে ধনী।—
না বলিতে বাদা ঠোঁট ফলায়ে তথনি॥
ধাকা দিয়ে গর্বিগী গর্গবিয়ে যায়।
কাঁদৰে পড়িয়া কবি ক্যাশ্ চায়॥

দেশালাইযের স্তব।

নমামি বিলাতী 'অগ্নি দেশালাই-রূপী,
দেহখানি চাঁচা ছোলা শিবে বাঁধা টুপী।
বেমন ভেপ্টা বাবু একহাবা চেচারা,
মাথায় শালেব বেড় বাগে দেহজ্রা।
নমামি গদ্ধকগদ্ধ মুখ্ড গোলালো,
দর্মজাতিপ্রিয় দেব গৃহ কব 'আলো।
শাক্ত সভ্য অতি ধার--চাপে যভ্তক্ব,
গাপে উঠে চ'টে লাল—গোৱাছ বেমন।

ন্মামি স্ক্রিগামা দাক অবভাব, रहोर्या-विध-विनासन कृष्टिक मिकात । নিদ্রিতের গুপ্সচর পাচিকার প্রাণ লপাদাডি কাবলীব শিবে যাব স্থান। নমামি থাজোংশিখা নয়নবঞ্জন. লালেতে নীলের আভা দিব্যদরশন। পোয়াতিব প্রিয়সথা বালকের অরি. বিবান্ধ হে কাষ্ঠদেন কত রূপ ধবি। প্রণমামি জালামণ শুত্র দেশালাই. সাহেব গোলাম তব কি কব বাদশাই। সোনাটিন রূপা ভাষা গায়ে বাঁধা দিতে. লাটের পকেটে ৭ঠো লেডীব ঝাঁপিতে। নমামি সহজ্ঞাল ব্বধাদমন, আঁচতে কিবৰ ধৰ সংখৰ জলন। আখা জলে বিনা ফুয়ে বিনা চ'থে জল. দিয়াকাটী তোব ত্তবে মাগাবা পাগ**ল।** নমামি কলিব কীন্তি কাণ্ঠেব চকমকি. ভোমাৰ চমকে বিশ্বকৰ্মা গেছে ঠকি। বিল, খাল, বন, জন, যেখানেই যাই, भिरत ভाটा मना भना पिथ (मेरे ग्रेंडि । ন্মামি ন্মামি দেব পাইন-নন্দন. তোমাব প্রসাদে হয় সাগবে বন্ধন।

সভ্য স্কগতের তুমি সোহাগের বাতি, চুকট-ভক্তেব মোক পদার্থ বিলাভী। ন্মামি ফফবিশকা নাসিকাপীডন. ধনীর নিকটে তৃচ্ছ কাঙ্গালের ধন ৷ সন্ধ্যার সোনার কাটা জোছনার ছবি, ব্ৰহ্মার পঞ্চম মধ ব্ৰাইয়ণ্টের রবি ! নমামি কিবণদও কোপন-স্থভাব. বাজগতে চালাবরে সমান প্রভাব। निकुक्तत्व, भरथ, भार्य, गांधी, रचांड़ा, रवरन, সকলে তোমায় পুজে স্থ্য শশী ফেলে। ভিথানী কটাবে স্থা, ভাঁকতে সাহসী, ত্তৰ বলে খোঁডা থাডা বুডিরা ষোডনী। বাঞ্চল্লভক তমি সাহস-ভারণ, দীনবন্ধ তব গুণ কে করে কীর্ত্তন ? প্রণমামি থকাদেহ অন্ধকারহারি! নমামি অংশেষ রূপ অবনী-বিহারি ! নমামি মোমের ডাটি "ফক্রে"তে মলা. উনবিংশ শতান্ধীর অনলের শলা। তব গুণে, গুপ্ত তাপ, তৃপ্ত লগজন, व्यवसामि (पनीलाहे (परवत्र हेसन।

বাঙ্গালীর মেয়ে

কে যায়, কে যায়, অই উ কি ফু কি চেরে ?
হাতে বালা পায়ে মল, কাকালেতে গোট,
তাম্বলে তামাকু রদ—বালা বালা ঠোট;
কলালে টিলেব ফোটা—থোপা বাষা চূল,
কেলেতে বদনা ভৱা—গালে ভবা গুল,
বলিহাবি কিবা গাটি ছক্লে বাহার,
কালাপেড়ে শান্তিপুরে কল্মে চ্ডিলাব,
অহলারে ফেটে পড়ে চলে যেন ধেয়ে—
হায় হায় এই যায় বালালীর মেয়ে!

হার হার অই বার বাঙ্গালীর মেয়ে—
মুথের সাপটে দড—বিপদে অজ্ঞান,
কোঁদলে ঝডের আগে কথার তৃকান,
বেহল স্থের সাধ—পা চডারে বসা,
আঁচলের খুঁটটি তৃলে অঙ্গমলা ঘষা!
নমন্ধার তার পার—পাডার বেডামী,
পেটটিভরা কুলডো কথা, পরনিলালান।

কথায় আকাশে তোলে হাতে দেয় চাঁদ,

ধার থায়, যার পবে, তারি নিন্দাবাদ,

বসনা কলেব গাড়ী চলে রাত্রি দিন,

বাড়েতে পড়েন যার—বিপদ সঙ্গীন,

থেরে যান, নিয়ে ধান, আর বান চেম্নে—

হায় হায় অই যায় বাদালীর মেরে।

হায় হায় অই যার বাদালীব মেরে—
ধারাপাতে মৃর্বিমান, চারুপাত পড়া.
পেটের ভিতরে গজে দাসুরায়ের ছড়া।
চিত্রিকাজে চিত্রগুপ্র—পিডিতে আলপনা।
হল বাহাত্বনী—"ছিবি" বিচিত্র কাবথানা,
অঙ্গপাস্থে বরকচি গ্যালিলো নিউটান,
গণ্ডা কড়ি গুন্তে হ'লে জানের বাড়ী মান,
পান্তাডে পড়োর মত অক্ষবের ছাদ,
কলাপাতে না এণ্ডতে গ্রন্থ লেখা সাধ;
ক্ষীরপুলি, পারেস, পীঠা মিরায়ের সীমা,
বলিহারি বন্ধনারী ভোনার মহিমা।
জলো তথে পুরদেহ ভেলে জলে নেয়ে—
হার হায় অই যায় বাদালীর মেরে।

হায় হায় অই বার বাদালীর মেরে—
স্মুথে ত্থের কড়া—কাটীতে বোটন,
বোলা চূলে চূলো জেলে পেঁয়াতে ক্রনন।
তপ্তভাতে ভবা হাড়ী, বেড়ী ধরে তোলা,
ঝাড়া বড়ী, শাক্ পাড়ালে বিলক্ষণ টান,
কালিরে কাবাব রেঁধে দেমাকে অজ্ঞান!
শাঁথেতে পাড়িতে ক্র চুডাল্প নিপুণ,
হুলুননি কোলাহলে চতুমুথি খুন।
রালাঘরে হাওয়া থাওয়া গাড়ী মূদে বাওয়া,
বেশভদ্ধ লোকের মাঝে গলাঘাটে নাওয়া।
বাসরঘরে ক্যুব কবি চোথের মাথা থেরে,
প্রভাত হ'লে পিসখাভাট়ী ঘোমটা মূথে চেরে

সাবাস্ সাবাস্ তোরে বালালীয় মেরে—
ব্রতকথা উপকথা সেঁজুতি পালন,
কালীবাটে যেতে পেলে খর্মে আরোহণ!
মেরে ছেলের বিয়ে পর্স্কে গান্ধনের গোল,
বাত্রা সঙে নিজাত্যাগ—ছেলে ভরা কোল,

ভ্ত পেরেতে দিনে ভর, অগ্নকারে কাঠ, শক্তরোগে রোজা ডাকা, অপ্তারন পাঠ, তীর্থহানে পা পড়িলে আফলাদে পুতৃল, হাটবাঞ্চারে লজ্জাহীন ঘরে কুঁড়িদল। ও ডিকাঠ মুডিশিলা ভক্তিপথে নেয়ে। হায় হায় অই যার বাদালীর মেরে।

হার হার অই যার বাদালীর মেয়ে।
রসের মরাল যেন জলটুক ছেডে —
তথ্টুকু টেনে স্থান আগে গিয়ে তেডে ,
চিনের পুত্লে সাধ, বাকস টিনে পেটা।
রয়াকেল বাধা ছবিগুলা থবে হোবে ঘাঁটা,
বেলায় দিগগ্জ কেঁছে, চোবের সন্ধার ,
শুকোচুরি যমের বাড়া—স্পাই করে ঠার।
আরেস থালি খোঁপা বাধা, নয় বিননো ঝারা
হন্দ হলো কচি ছেলে টেনে এনে মাবা।
কার্পেটে কার্চুপি কাজ, কাক নব্য চাল,
ঘ্রক্রায় জলাঞ্জিল ভাত বাঁবিতে ডাল!

নিজে বাটে, খন্তে দোবে মৃগদাপটে দড, হুজ্তে হাবিলে কেনে পাড়া কবে জড়, বাদালী মেৰেব ও৭ কে ফরাবে পেয়ে— হাম হাম অই বাম বাদালীর মেয়ে।

হায় হায় আই যায় বাঙ্গালীব মেথে—

মৃত্ মৃত্ হাসি টুক অধবে রঞ্জন,

সাবাস্ সাবাস্ নাক চোকের গছন,
কালো চুলে কিবা ঘটা চোথে কাল ভাবা,
দেখে নাই যারা কভু, দেখে যাক্ ভাবা।
ভাসা ভাসা বাসা চোগ তুলি দিয়ে শাকা,
তা উপরি কিবা সক ভুক্ষ্ণ বাকা।
ধমকে ধমকে থিব গতি কি ফুন্দর,
হাসি হাসি মুখ্যানি কিবা মনোহব!
আহা আহা লজ্ঞা ঘেন গায় ফটে আছে,
কোথা লজ্ঞাবতী তুই এ লভার কাছে

চুক্ যদি থাকে কাবো ভবে দেখ চেয়ে—

হায় হায় এই যায় বাগালীব মেয়ে।

অ-পূৰ্ব্ব প্ৰকাশিত কবিতা

পদাফুল

যতবার খেবি ভোবে কেন ভূলি বল.
থেরে শতদল পদা ?
কি আছে ও খেত বর্ণে
কি আছে ও নীলপর্ণে,
যথন নির্থি—আমি তথনি শীতল।
যতবার খেরি তোবে কেন ভূলি বল
ওবে প্রফ্টিত পদা গ

যথন হুৰ্বোর বৃত্তি মাথিয়া শারীবে, হাসিটি ছভারে মূথে ভাসো নীল বারি বুকে টল টল ভন্নথানি কভই এণী বে---ছেরিলে তথন কেন আমিও থাসিবে ওয়ে মোহকর পল ?

আমাৰও অধৰে হাসি অমনি মধুৰ কোটে ৱে আপনি আসি. তোমারি হাসিব হাগি প্রকাশে স্থানিত্যে— আহা কি মধুর ' কেন, বা না হেবে ভোবে হদম বিধুব ওরে স্ব শোভা প্ল ?

আবাৰ ষথন' আহা, শিশিৱেৰ জলে ভিজিগ্ন মনের থেদে. গোট করি কেঁদে কেঁদে, দলগুলি মোদ, ফুল গুঠনের তলে— তথন হেরিলে কেন মম হৃদি গলে ওরে রে মূদিত পদা।

দেখিকে তথন তোবে আমিও হৃদয়ে
পাই রে কতই ব্যথা
মনে পড়ে কত কথা
ফৃটিত হৃদয়ে যাহা জীবন উদয়ে—
থেলাত চঞ্চল মনে উন্যাদিত হয়ে।
ওবে আফোদিত পদা দ

কি যে কোমলভা ভোৰ থবে থবে থবে পত্ৰদলে, শতদল, ক্ষদি ভোৰ কি কোমল, সেই জানে কোমলভা ক্ষদে যাব ঝবে। জামি ভিন্ন কেহ আবি জানে কি অপরে চে কমলবাসী পদ্ম প্

কোটে ত বে এত ফ্ল তদাগের কোলে
তানীল লাল আভা,
কাহাব শ্বীর প্রা
কই ত আমাব মনে ওরপে না পোলে
এত স্থাবে চিত্ত কই দেখি না ত দোলে
ধে চিত্ত মাদক পদা ৮

দেখ্ছি ত পুপা ভোবে আংগতে কতই
সকালে থেলেছি যবে,
সথারা মিলিয়ে সবে,
তৃণময় হুদতীরে বিহললিত হই--তথম এ গাঢ়ভাবে তুবিনি ত কই
প্রে ভাবময় পুলু দ

এত যে লুকানো তোতে আগে ত জানিনে।

থৌবনেতে সুখোদয়,
হায় রে সকলে কয়—

থৌঢ়-মুথ কাছে আমি সে সুথ মানি নে!
পরিণত মুথ বিনা সুথ কি জানি নে

ওরে মনোহব পদ্ম •

যে বাস ভোমাতে, হায় সে বাস কি সার, আছে অন্ত কোন ফুলে १ অমন বাডাস ছুলে ছোটে কি স্থাভিগন্ধ মূই মন্লিকার ? তোরি বাসে কেন হৃদি মুগ্ধ রে আমার রে কুন্দলাঞ্চন পদ্ম ;

গোলাপ. কেডকী, টাপা, কামিনার থরে,
এডকি শোভে বে বন দ
এড কি মোছে বে মন দ
হৈরি যবে ডোবে ফুল্ল ইদেব লহবে
কি যেন পেলে বে বদে হৃদ্ধ-নিকবি
বে স্বোবজন প্রা

কথাটি ত নাহি মূথে - -জান নাত বাণী তব্ এবে শতদল, কেমনে প্রকাশে, বল্ যে কথা ফদয়ে তোব --কেমনে বা জানি ওৱে তথে চাষী পল ?

কেচ কি দেখে না আব এ তেবি সবল
মাধুরী-প্রতিমাখানি ?
কেচ কি শোনে না বাণী
তোব কমল-মূখে ? -আমিট পাগল দ আমিই একাকী মত পিধে ও গবল
তবে উন্যাদক পদ্ম গ

কেন বল এইএপে গুবি নিবত্য যেথানে তোমাৰ দল ফুটিয়া সাজায় জল, না দেখিলে কেন হয় একাপ অত্ব—-কেন দেখি শ্রু মহী যেন বা গ্রহ্ব বল ক্রদিগ্রাহী পদা গ

ঘুরি ত কতই স্থানে -- কড় দেগি হায়,
বাজগুহ, বন্ধ-গোহ,
পাইত কতই মেহ,
তবু কেন বল্, চিন্ত তোবি দিকে ধায়—
বল বে নিকটে তোৱ ধায় কি আশায়
তবে চিন্তচোৱ পলু ?

ধন, মান, বিভবেব সৌবভ-শোভায় এত ত মোহে না জদি থাকে না ত প্রাণে বিদি এমন সুরভি শোভা সংসার-কীলায়। অমেছি ত এতকাল থেলায়ে সেথায় কীড়াকুশল প্রা কতবার কবি মনে ভূনিব বে তোরে,
ধরিব সংসাবি সাজ
ভাজিয়া হৃদয় ভাজ
অন্ত সাদ হৃদে ধবি ঘূরি মন্ত্য-ঘোরে-—
ভূলে যাই শুরুবর্ণ—ভূলে যাই তোবে
হায় মোহকায় পুনা।

না পশিতে চিত্ততে সে করনা-মূল শুকায় সে সাধ-লতা ভূলি নে সে বৰ কথা, ভূলিতে না পাবি কিন্তু একমা এ ভূল — কি মাধুৱী-দোব তোব হায় বে, অভূল 'জৰে মধুময় পল।

সভ্য কি বে ভোবি দেগে এত শোভা বাস ? কিংবা সে স্বামাবি নন প্রমোদে হয় নগন, ভাবে আপনাব প্রভা ভো'তে প্রকাশ-— চেতন ভাবিয়া ভোবে শোনে নিঞ্ক ভাষ এবে জ্যুদেহ প্রা!

ষাই হোক, যে বিধানে আমাৰ জ্নয় বিভক্ত মাধুধ্য তোব, হ'লে জীবনেৰ ভোব, তবুও স্পনে তুই হবি বে উন্য— তুলিব না তবু ভোবে, বে সুষ্মাময় সুধকু-নিবাস প্ল !

ভাবি ঋধু কেন বিধি কবিনা এমন--এত শোভা বাস ধাব
পঙ্কেতে জনম তাব,
পঙ্কজ বলিয়া ভাবে ডাকে সাধুজন।
জানি না বিধিধ হায়, বহল কেমন
'পুৰে ঋুরচেতা পুলুণ

গাঁষ, বিধি, এ মনও কি তেমতি বিধানে, বাধিলা এ দেহ-পুটে ? কলুষ পঙ্কেতে ফটে, গাঁই এত কিপ্ত মন, ডোবে ভাগে বানে ? ংক্ষেতি বে শুতদল ক্ষজেন্ত-বৰ্মনে।

> তাই তুই আমি বাধা, এক সঙ্গে হাসা কাঁদা,

তাই ওবে পদাফল,—এ মিল তৃজনে। ভূলিব না তোৱে পদা, ভূলিব না—ভূলিব না—জীবনে মবণে।

দেব-নিদা।

(;)

কোন মহামতি মানব-স্থান,
বৃথিতে বিধিব শাসন, বিধান,
অথীৰ হুইলা বাসনানৰে , অথনী ত্যাজিয়া অসর আলয়ে
প্রবেশি দেখিবে দেবতানিচ্ছে -দেব প্রকর, ববি, ত্তাশন,
বাসু, হুবি, হুব, মবালবাহন,
দেখিবে ভাসিছে কাবশ-জলে ।
(২)

্ব)
দৈখিবে কাবণ-সলিবেন ভাসিয়া
চলেছে কিন্তুপে নাচিয়া প্ৰমাণু-বেণু সময় বছে।
দেখিবে কিন্তুপে বানৰ সংগাণ,
দেহেৰ প্ৰকৃতি, কালেৰ আকাৰ,
স্ক্লোভি: অনকাৰ, জগৎসকপ,
নিশ্বতি-শৃত্যাল দেখিবে কিন্তুপ—
ভাবিতে আজিলা অধীৰ হয়ে।
(৩)
শীআৰ বে মানব সহসা অমনি

"আর বে মানব" সহসা অমনি প্রি শৃক্তাদেশ হলো বৈবলানি— বাজিল জন্তি, নাদিল অশানি, খুলিল অমব-আলর দাব, ছুটাল আলোক বিলোক প্রিয়া অপুর্ব সৌবিত ব্লাও ব্যাপিয়া উচ্চুশাদে বহিল,— অবণ ভবিল, মুব্র অমব সঙ্গীতভার। (৪)

মান্ত্ৰন্দ্ৰ অন্ত্ৰ্তিক্ৰ প্ৰবেশি তথ্য পুলকিত্ৰন্দ্ৰ, দেখিল নিৰ্বাপ অম্বালয়, গগনমণ্ডলে অজ্ঞ কেবলি, মধুর নিমাদে জ্যোতিষ্মঞ্গী দেখিল ছুটিছে,—আদে পাশে তাব, পরীক্সাগণ করিয়া ঝঙ্কার সাধিছে বাদন মাধুরীময়।

তপনমণ্ডল গগনপ্ৰাকণে, কিরণ-সমুদ্র যেন বা শোভনে, শিখার তরঙ্গ ছুটিছে তার। দেখিল আনকে সে কিরণ উঠি, অনস্ত অনন্ত যোজনেতে ছুটি করিছে ভ্রমণ— পডিছে ভাতিয়া কিবণেব বজ্জু যেন বা গাঁথিয়া,

সহস্ৰ সহস্ৰ গ্ৰহেব প্ৰায় !

আনন্দে ভুঞ্জিছে মধুৰ মদ!

আদিত্য বেবিয়া চলেছে ঘুরিয়া, বিধুর মণ্ডল দেখিল আসিয়া, দেখিল ভাহাতে সুধাৰ হুদ; সে হল-মুধাতে পিপাসা মিটাতে, প্রণয়-বিধুর, হৃদয়-ব্যথাতে, অসংখ্য গরুকা, দানবমণ্ডলী, কুলেতে বৃদিয়া অতি কুতৃহলী,

(1)

স্থা নিদ্ৰাধায় দেবতা সকলে. গিরি, উপবন, কানন, কমলে, ত্রিদশ-মণ্ডলে সৌবভ বয়;—

অসর নীবব, নাহি কলবব, শৃক্তেতে কেবলি মধুব স্থরব। সঙ্গীত ঝরিছে, ত্রিদিব পুরিছে,— "শান্তি শান্তি শান্তি" শবদ হয়।

(b)

দেব অটালিকা চন্দ্রাতপতলে, দেব আখণ্ডল পারিজাত গলে, অতুল মহিমা বদনে ভাতি; অপুর্বে শয়নে সুথে নিদ্রা ধায়, পদতলে ইন্দ্রমাতক ঘুমায়, होि पिटक (घतिया मामिनी (थलाय. পুষর প্রভৃতি মেঘেতে ভাতি। (&)

মহা ভেজস্ব প্রচণ্ড ভাস্বর, घुशोग्र अवस्ति थुनिका युन्तत সহস্র কিরণ কিরীট-ভূষা !

অণু হ'তে ঝরে অপূর্বর সুষমা, क्रमधद-उन्न क्रिनिया উপমা, নিকটে স্থন্দন, অঙ্গণ উধা।

(> •)

থুলে মুগচিহ্ন, অতুলিত শোভা, অমল স্থূন্দ্ৰ তমু মনোলোভা,

শশাক্ষ ঘুমার কিবণজালে। দে তহু দেখিতে কিন্নব-কুমার কত শত দল, অপূৰ্ব্য আকার, বয়েছে দাঁডায়ে বিশ্বয়ে পুরিয়া-সুধার সুগন্ধে আনন্দে মাতিয়া, উড়িছে চকোর অযুত পালে ৷

())

শ্ৰিতমুক্তটা পডিছে উথলি, দেব-ক্রীডাবন নন্দন উজলি,

(भव, मन्तिनो, छक् हु छोध ; কৃত্ম-আকৃতি অপারা, কিল্লবী, কব, বন্ধ, ক্রোড়ে বাত্যন্ত্র ধরি, ভারে সারি সারি লতা-পুষ্পপবে, বিমল চন্দ্রমা-কিবণে বিহরে—

পারিজাত-ফুলে শচী ঘুমায়।

(><)

ত্রিদিব জুডিয়া দেবতা নিদ্রিত,— মাধ্ব-কুমার সভ্যে চ্কিত, শুনিল গঞীর জীমৃতনাদ। দেখিল আতিক্ষে নয়ন ফিরায়ে গগনপ্ৰান্তে একত জড়ায়ে, থেলিছে অসংখ্য বি**জলী-ছাদ**।

(00)

আধোদেশে ভার, অনস্ত বিস্তার कावन-क्वांधि श्रीत वी विश्वात.

উথলিছে রক্ষে প্রদারি ধারা, গহ্বরে গহ্ববে উপকৃল-ধারে প্র5ও হুকারে মারুত প্রহাবে ভাঙ্গিতে ধেন বা বন্ধন-কারা (58)

উপকুল ধাবে অনল কুণ্ডেতে, শিশ্বর প্রমাণ শিগার শুণ্ডেতে, অনল উঠিছে গগনভালে. বেন এরাবত ছটিয়া প্রনে যোর আকর্যণে গন্তীর গর্জনে.

জলশুভ ধবি শুণেতে উগানি. ফেলিছে তুলি**ছে अ**नम्बारन ॥

(> 0)

কাবণ-সাগবে প্রমাণ্-ক্রে অনাদিপক্ষ বসি গাানভবে ছাডিছে নিখাস—জন্মিয়া তায়. অসংখ্য অসংখ্য ব্ৰহ্মাণ্ড ফুটিয়া অসীম অনস্ক আকাশে উঠিয়া ছুটিছে অনল-ফলিল-প্রায়।

(39)

কত সূৰ্য্য তাবা কত বস্থমতী. স্বৰ্গ মন্ত্ৰ্য কন্ত অফুট-মুৱতি ভাসিয়া চলেছে কাবণ-জ্বলে---কন্ত বস্তব্ধরা রবি শশী ভাষা ব্দগতত্রকাও হয়ে রূপহারা থসিয়া পডিছে সলিলে ডুবিছে কাবণ-বারিধি-অতল তলে।

())

সে বারিধি হ'তে চলেছে ছটিয়া मिथिल मानव भूलाक भृतिशा. কালেব ভরঙ্গ বিপুলকায়, বহিছে দ্বিধারে বিবিধ প্রকারে এক ধারাপরে মানব-আকারে কভই পরাণী ভাসিয়াযার।

(34)

অমল কমলে ভাগিছে সকলে ধমুর্দ্ধারী কেহ, কার করতলে লেখনী পুস্তক বিস্তৃত রয়. জিদিব জুড়িয়া দেবতা নিদ্রিত ৰগতে শুধুই ইহারা জাগ্রত मारेज: मार्रेज:- गजीत डेक्ट्रारम, স্বজাতি ডাকিয়া চলেছে উল্লাসে— অকালে তরঙ্গ করিয়া জয় ! (66)

সে নরমণ্ডলে মান্ব ক্যাব. স্জাতি হেরিল কত আপনার.

পুলকে পূবিল মোহিত হয়ে --বাজিল হুনুভি সহসা অমনি, স্থদৰ-গগনে হলো দৈববানী,---

"দেখ বে মানব এ দিকে চেয়ে ।" (२ •)

मिथल हमिक खम्म शांता-छीत्त. গভীর চিন্তায় পদ ফেলি ধীবে.

ठत्नद्ध भद्रियां खेवांश-धाता. প্রাণী কয়জন প্লকিত-চিত্ত, 'মাতৈ" নিনাদ শুনিয়া শুদ্তিত,

(प्रविष्ट्टी (यन वर्षान छव।।

(25)

পশ্চাতে জাঁদেব করি জয়ধ্বনি. চলেছে কতই মানব প্ৰাণী ভেবী-শঙ্খনাদে কবি ঘোব ধ্বনি

দাগৰ হুমাৰে উথলে গীত. উথলে সঙ্গীত-নিনাদ গভীব— "হোক না কেন সে মাটীর শরীর. মানবেৰ জাতি কখনও লীন. হবে না সমূলে ক্ষিতি যত দিন—

তবে রে পরাণী, কেন ভাবিত ?" ডাকিছে আবার আনন্দ আরাবে---"সমব-বিজয়ী প্রাণী বারা সবে. গাও রে উল্লাসে অমব-গীত।"---

(२२)

"(प्रव-चार्य खन्म, श्रव (प्रव-माला, কৰ মৰ্ত্তাভূমি জগতে উজ্লো, দমুজাবি-তেজে অবনী-অঙ্কেতে, কর সিংহনাদ বিজয়-শভোতে,

জাওক অগতে মানব-নাম; জাগুক ত্রিদিবে দেবতামগুলী, দানৰ গৰুৰ্ব হয়ে কুতৃহলী, দেশক চাহিয়া ভবিষ্য শ্লিয়া.

> ত্রিলোক উজ্জল মানব-ধাম। (20)

সে গীতের সহ ঘন ঘোর স্বরে, বাজে শৃন্ধনাদ, শুনিল অস্তবে, দেখিল চাহিয়া নরকুমার- শত শত দলে প্রাণী সকলে কবি সিংহনাদ মহাগর্কে চলে. ताल जिरेकः सात भवनीय शाल--"একভার সম কি আছে আব ?"

(28)

"একতাব গুণে বিজিত অমরে, কত কাল দৈত্য যঝিলা সমবে। দৈতাকলে নাশ করি, মুওমালা পবে মহাকালী দত্তজারি-বালা,

নিদৈত্য কবিয়া অমর-বাস ! একজা সাধিতে এ মর-ভবনে. কত মহাজন প্রাণ দিয়া বণে. গেল সূর্বে চলি দিয়া নরবলি। অবনী-দানবে কবিয়া নাশ।"

(२ %)

°এ মন্ত্রপুরীতে সেই ধরু জাতি. একতাব জ্যোতিঃ বদনেতে ভাতি. তেজোগর্কা ধরি থাকে নিজ বাদে, হেরে পত্র দাবা প্রাণেব হবষে.

হাসিতে কাদিতে কবে না ভয়; করে নাকখন পাত অর্ঘ্য দান. পর-পদতলে হয়ে মিয়মাণ, কতাঞ্জলি-কবে ভীকতাব স্বরে, বলে নাকখন ঘাতকের জয়।"

(25)

"একডাই মর্ভো মানব স্থল, একতা বিহনে পরেরি সকল. দারা পুত্র গৃহ ধা আছে তোব, দে ধন বিহনে আলয়-বিপিনে. ক্ষীবন-আধাদ পাবিনে পাবিনে -क्रिकन-**मर्क्क**वी मक्**लि** (यात्र।"

(२१)

হর্ষিত-তমু কদম্বেব প্রায় মানব-নন্দন দেখে পুনরায়,

দেইরূপ জ্যোতিশ্য আকৃতি; প্রাণী কয় জন প্রফলনয়ন, প্রকৃতি-প্রতিমা করিয়া ধারণ. कतिया शांत्रण वायु. जनशांत्रां, শনি, শুক্র, বুধ, বুহম্পতি, তাবা,

বাস্ত, ববি, কেন্ড, শশীর পরিধি, অথবা পথিবী, অতল জল,--গায়িছে ব্ৰহ্মাণ্ড সম্প্ৰন-গীতি ! (25)

"তেজঃপিগুৰৎ ধ্ম-বাষ্প্ৰময়, ছিল এ ধরণী ধাতৃ-শভালয়, ক্রমেতে মুগ্ময়,মীন-কুর্ম্মবাস, তণ, তক, মৃগ, মন্ত্ৰ আবাস.—

সাজিল ধবণী অপূৰ্ব-কায়। চল চল যাই পৃথিবীর সনে দিবাকর-পাশে দেখিব গগনে. এই শশধন, আবো কত ক্ষিতি, চাবি চন্দ্ৰ-শোভা ঘোৰে বহস্পতি. কেলভিঃ-উপবীত প'বে মনোহর. ল'য়ে সথ শনী ভ্রমে শনৈশ্চব: ভূমে কেতমালা প্ৰনে বেডিয়া, অনস্থ গগনে পবিধি আঁকিয়া.--ভাবকা-সভম ছডান তায়।'

(\$\$)

"ফিবাৰ বেগেতে প্ৰনের গতি. ভৱল বাঘতে শ্বদ-শক্তি বাঝিব স্থাপিয়ে দেখিব খুলিয়া.

ববির কিবণ-গঠন প্রথা: আনিব নাবায়ে ভীষণ অশনি পৃথিবী উপবে-- বাসব-শিঞ্চিনী.

বাধিব হুন্দর দামিনী-লতা **इल इल याडे अशिवीय मत्न.** দিবাকর-পাশে দেখিব গগনে,

ভারকা-কুত্রম ছভান তায়! গাধিতে গায়িতে চলেছে সকলে এই মহাগীত, ভীম কোলাহলে — নিয়তি-শুখাল ছিডিয়া পায

(অসম্পূর্ণ)

সুহৃৎ-সমাগম।

aসক্ষ-পঞ্মী তিথি আজি বঙ্গে, वाक (मिथ दीना चानत्मव महम, ভাসা দেখি হৃদে স্থাের তবকে, নাচায়ে তাহাতে আশার ফুল ওনিয়া প্রাচীন "অফ গ্রস" গান পাইল চেতন অচল পাষাণ. খামের বাণীতে ধ্নুনা উজান বহিল উলাদে রসালে কুল।

তুই কি নারিবি চেতন পরাণে, অহৎ-সঙ্গমে এ অথের দিনে, উথলিয়া স্রোত ঈষৎ প্রমাণে ভিজাতে প্রণয়-তুকর মূল দ

"কোথা বাল্য-সথা"—বলি একবার ডাক্ দেখি স্থে মিলাইয়া তার, "এস হে শৈশব-সূত্ত আবার আশার কাননে থেলাতে থাই।"

গাও বীণা গাও "নবীন জীবনে থেলিতে আনন্দে যাহাদের দনে, হাসিলে, কাঁদিলে, ভেটিলে স্বপনে, আজ কি তাদেব স্বরণ নাই দ

'শ্ববণে কি নাই সে সৌরভমর, শৈশবের প্রিয় পাদপনিচয়, তডাগ, প্রাঙ্গণ, সেতু, শিক্ষালয়, জ্ঞা'লে যাহাতে শৈশবমায়া।

"ভূলিলে কি সেই উৎসাহ-লহন্ত্ৰী, ভাষাতে যাহাতে জীবনের তরী, তবঙ্গ কুফান হেয় জ্ঞান কবি, উভাতে নিশান বিচিত্ৰ-কায়া?

"পডে না কি মনে কত দিন, হার, 'মা' 'মা' ব'লে প্রবেশি আলয়, কত স্থথে থেতে স্থায় স্থায় জননী তুলিয়া দিতেন ধাহা,

"সেইরপে পুন: করিয়া উৎসব জীবন-মধ্যাহে সেই সথা সব লভি এক দিন—বে স্থপ ছুল্ভি সংসার-ডুফানে ভূবেছে আহা!

"নবীন প্রবীণ এস সবে মেলি পরাণে জড়াই পরাণ-পুতলী, যে ভাবে শৈশবে যৌবনেতে কেলি করেছি প্রাণেব কপাট খুলে। ''বপু আশা হায়, বন্ধু ত্বা লয়ে, শিশুকালে যদি উন্মন্ত হয়ে, বাধিতে পেরেছ গুদরে কুদরে স্বার্থ, হিংসা, ধেষ সকলি ভূলে,

"তবে কি এগন নারিবে মিলিতে ? গাঢ় চিন্তা, আশা, যথন হাদতে তুলেছে তর্প পবন-গতিতে— বাসনা-ঝটিকা বহিছে যবে ?

"কবিলে যে আগগে এত সে কল্পনা, ধরিলে যে হৃদে এতই বাসনা, শুধুকি সে সব প্রলাপ-কল্পনা---ছিল্ড ওপবং বিফল হবে ৮

"চেয়ে দেথ সথে রয়েছে তেমতি পাঠগৃহ, মাঠ, সরোবব, পথি, তেমতি স্থল্ব স্থঠাম নবতি দেই স্তথ্যশ্রেণী হাসিছে হার।

"আমবাও তবে না হাদিব কেন ? হাদিতাম স্তথে আগে সে যেমন অইথানে যবে করেছি ভ্রমণ ভালু, বৃষ্টিধারা ধবি মাথায়।

"অই গৃহ, মাঠ, পথ, সংবাবর, অংহে কত দিন হেব কত বাব, ভেবেছ কি ক'ভূ কত রড় তার কবাল ফুডান্ত কৰিল চুরি ?

'কোথা সে আজি রে ক্ষণজন্ম। ধীর অতুন্য 'থাবিক' বদেব মিহির। কোথা 'অফুক্ল' মলখ-সমীর। 'দীনবন্ধ' বদ-দাহিত্য-ফ্রী দ

'শ্ৰীমধুহদন কোথায় এখন। তার তবে আর কে করে ক্রন্দন সহপাঠা তাঁব ? এবে অদর্শন বঙ্গের প্রবীপ্র প্রভাত-ভারা।

"কিছু দিনে আবে আমরাও সবে, ক্রমে ক্রমে গাঁন হইব এ ভবে, নাম, গদ্ধ, শোভা কিছুই না রবে— কালেতে হইব সকলি হারা। "বাঁচি যত দিন, এস একবার সংবৎসবে স্থে মিলি হে আবাব, সহাস্তা-বদনে হৃদরেব দার

খ্লিয়া দেগাই দেখি আনন্দে। "আব কত কাল বাচিব তা বল— বাগালীব ক্ষুত্ৰ আীবনস্থল কৰে যে ছ্বাবে—ছাডিয়া সকল,

ভূলিতে হইবে এ মকবন্দে।

'এ শোকেব ছাগা হায় রে যথন — পছে নাই ঢাকি হণগ্ৰ-পূৰ্ণ, অথপূৰ্ণ মহী, অথপূৰ্ণ মন— স্কলি অলব মাধুৱীময়।

'দৰে সপ্যভাব—না ছিল বিচাব কিবা সে কাদাল, বাজপুত্ৰ আবি, একই আদন পঠন দবাব— সুদাই হুদুয় আনন্দময়।

"দেই সুধময় সূক্ধের মেলা, ৫প্যেছ আবার কর সবে পেলা, সুথেব সাগারে ভাগাইয়। ভেলা থেলাইতে ষথা শৈশবকালে।"

বাজ্বীণা আজ মিলে সৰ ভাব, ক্রিয়া মৃচল মৃছল ঝদ্ধাৰ, প্রণয়-ক্রম ফুটা বে সবাৰ,—

বাজ্বে মধুর জলদ-লালে।

বসত্ব পঞ্চমী তিথি আজি বজে, জ্বাগ্রীগা জাগ্ আনলের সঙ্গে, গেলাইয়া জনে অথেব তবঙে,

নাচায়ে তাহাতে আশার ফুল। ভনিয়া প্রাচীন 'অর্ফিবস' গান

উঠিল চেতিয়া অচল পাৰাণ , ভাষেব বাণীতে যমুন। উজান চটিল উলাসে বসায়ে কল।

ছুটিল উলাসে রুশায়ে কুল। ছুটিল উলাসে রুশায়ে কুল। তুই কি নারিবি চেতন-প্রাণে,

সুহাং-সন্থমে এ স্থাথের দিনে, উথলিয়া স্রোত জ্বলপ প্রমাণে

ভিজাতে প্রণয়-তকর মূল ?

হুৰ্গোৎসব।

()

সাল। বদে আজি রদে নান। জ।তি ফুলে;
তুলে আনু টাপা ফুল রতির প্রবণ হল
জবাদল রজিম ঠিখুলে;
কুম্দ তডাগ-শোভা আনু তুলে মনোলোভা
মনোলোভা মলিকা ফুলে

রসময়ী চিরস্লগী নিশিগদ্ধা মধুমুখী অর্বিন্দ অপুর্বে পাকলে,

সূত্র অপবাজিতা কৃষ্ণচ্চা **আনন্দি**তা অ∤ন্বদৰতীকেয়া-কু**লে**;

নানা কলে সাজা অফ আজি প্রস্টিত বন্ধ শাবদ পার্বাণে তথে ভূলে।

আর কলবধ যত মুকুতা কংলাব মত চামেলী গোলাপ বান্ধি চূলে;

প্র সাটা নীলাপ্রী. বুটা বেল, জ্বিলহ্বী—*

দিগ্ধরী ৷ চিত্র কবা ফলে;

স্কৃতিক্রব বাবাগ্দী কটিতে বান্ধিয়া কসি

ফুচিন্ধণ বাবাণদী কটিতে বান্ধিয়া কাস বাহ্যা কৰ অধ্যর তাগুলে; কচি মধ্যে অধ্য হাসি অবিৱল প্ৰকাশি

কচি মুখে স্তবা হাসি অবিরল প্রকাশি বিকাশিকা যৌবন-মুক্লে,

শরতে চাঁদের সথে বাংশ আলো কর রংগ ভাবুকের মন যাংহ ভূলে।— সাজা বঙে আজি রংগ নানা জাতি ফলে॥

(2)

আজি কি স্থেপের দিন শারদ পার্কাণ ,
এসো গো প্রাণীন যাবা, লয়ে কডি ফ্ল-ঝাবা,
কেটা ঝাঁপী চিকণী দপ্ণ;
সাঁথিতে দিশুর ভাঞ্জ ধর আরতির সাজ্প পর থুলে পাটের বসন ,
দির গুল নাছর ছানা চিনি থালা-ভরা ভিল-লাড়ু সুধা আখাদন ,
গুচুক চক্ষের পাপ গুচাও হংখীর তাপ ধই লাড়ু কর বিতরণ,
দাও স্থে হাতে তুলে চির-হংখ মাক্ ভূলে পুরাতন অজীব বসন।

* তেপেড়ে। কোপ।

রাঁধ অল্ল পালি পাতে দাও ঢালি ঢালি প্ৰিপাটী মধুৰ বন্ধন। "দেও আল দেও এন পেট পূবে খাই মেনে" আহা শোন বলে জঃখী জন . দ্বিদ্রের মনোব্য প্ৰাতে সহজ পগ হেন আব পাবে কদাচন , দেও অন দেও ঢালি এ স্থুখ ক্রেনা কালি দশভুজা তাজিলে ভবন।--শরতে স্থথের কাল আধিন কেমন। (0) হাস বে শবত-চাঁদ কিবণ বিস্তাবি। পথে. মাঠে কি বাছার চেয়ে দেখ একবাৰ পদত্রত্বে পথিকের মানি । ওই গৃহ দেখা যায় বলিতে বলিতে ধাৰ আশার কৃহকে বলিহারি। আশায় মানস সটে হাসিব তবল ছটে বঙ্গে আজি বস দেখি ভারী. হাসারে বিনোদ শ্লী বিনোদ গগনে বুদি প্রাচীন কিশোর গুরা ধনাত্য ভিথানী, বিপুল বন্ধের মাঝে স্থব-বিমোহন সাজে পাতিয়াছ ভাল গাহকবী। करल करल हरल उनी তবঙ্গ বিদাব কবি মনস্থৰে দেখি আঁথি ভবি. পুষ্প ধেন জলময আলোমাপা তবাচয় **उट्टा** यांडे नहीं-नामां शति . करत (थला मरन मरन ভাকই ভেচেদা গলে পড়ে শাঁচ বাপ বাপ করি. ধীরে তথী আব্দান উচ্চে হয় সাবিগান শ্রুতিমূলে প্রধার্থী কবি . আ'নলে বিহলল মন ভাগে জলে কত জন বদে আজি কি প্রথ-লহবী। হাস রে শবত চাঁদ কিবণ বিস্তাবি। (8) হাস রে আকাশে বসি ক্মুদ্রঞ্জন। ৰাণ ধুপ জাল ধুন। শভা-ঘটা-বৰ চনা কর বলবাদী যত জন। প্ড মন্ত্ৰ বিজ্ঞাণ জবা বিশ্ব অগণন वृष्टि कंद्र सांशार्य हल्लन , मंडिक्न मुर्कानन পঞ্চপ্ৰা সিদ্ধৰল স্বাহা সাহা বল অনুজণ;

টাল চক্ষ, টাল সুবা অঞ্চল অঞ্চল প্ৰা কর হোনে হব্য ব্যিষ্ণ ,— শার জঃখ-নিবারিণা আর্যাকল নিস্তারিণী বদে বামা উদ। এখন। নৌৰতে মনুৰ বোল, কাড়া বছ কড় বোল भौगीरिये मधुद्र भिक्रम, মুদ্দ গঞ্জীৰ ভাল করতাল স্থানাল বেণ্ডম ললিভবাদন, পার্প মূচল-প্রন বোৰ বৰ ভানপৰা এদ্বাজ মধুব-গ্রুন, বেহালা স্থপবিশাটী জল-তবন্দেব বাটি बीवाउदो त्वाकिववाक्षन. আজি রধে বাজা বধে গভীব দামামা সঙ্গে আজি বে প্রথের দিন শারদ-পার্বাণ।

প্রিয় বয়স্যের সূত্য।

গীবনের বন্ধ মম আবে এক জন কাল-রূপ মহাসিদ্ধ-সলিলে ভূবিল এত কাল ছিলে দখে ভতল-রতন,— এখন এ ভবে তব কি চিহ্ন রহিল। হায়। নাদেখিব আবি সে প্রিয় মুবতি। সে ভোলা পাগল মন আপনা বিশ্বতি, সে পাণ্ডিন্য একাগ্ৰহা সে প্ৰগাঢ় শ্বৃতি. খনত কালেব মত হয়েছে নিভত। প্রকৃতি, স্থা ফে তব কি ম্বর (ই) ছিল্ বংনি হেবিত হিয়া হব্যে ভাগিত, आनिएक ना शोवरनव अथा कि अंगि, অবিবত জ্ঞানপ্রনা-পানে বিমোঠিত। পভিলে কতই বর বিভাব ভাওারে। দে জ্ঞান-পিপাদা হায়, আছে ক'জনার ১ আজীবন প্রাটন বাণীর বিহাবে, ভক্ত চুড়ামণি দণা ছিলে শারদাব। হৃদয়ে বড়ই ব্যুগা বহিল আমার g'sica करला ना रमिथा द्यारव दम मिन, ছড়াইতে তব নেত্রে নিবিদ্র শাঁধার,

যে দিন শমন করে এ বিশ্ব মালন।

আঁধার এ ভব-রাজা তোমাব নধনে,
চিরদিন তবে রবি শশী দুকাইল ;
ভবের কি কিছু তবে ভেগেছিলে মনে ?
অথবা দে তমোজাল মান্দ (৩) ঢাকিল ?

কে পারে ছাডিতে এই প্রাক্তর অবনী— স্থলর রবিব কবে এ মহী মণ্ডিত ? মুম্র্ পরাণী নবে কে আছে এমনি, পরাণে না হয় যাব বাসনা উথিত ?

কোন্ প্রিষজন-বক্ষে নিবস রাথিতে, পরাণেব দাহ যত জ্ডাবার তবে ? কোন্ প্রিয়-জন হতে অঙ্গ মৃছাইতে,— উদ্ধানে বাহা গত মনে করে ?

মোহময় এ ধরায় মৃত্যুব (9) শ্বায় পারে কি ভূলিতে মোহ মানবেব মন ? বিন্দুমাত্ত খাস(9) ববে বতে ন।সিকায় তথ্নও এ দেহে রচে মায়ার এক।

হাদয়কলরে, সথে, কি ভাবিলে হায়, অনস্ত নিজায় ধবে নধন মূদিলে ? প্রিয়জন কার(ও) পানে কোন্বা স্থায় কটাক ক'রে কি অঞ্-কণা ফেলেছিলে ?

মনে কি পডিল স্থা সে দিনেব কথা, বিভাৱ সমরক্ষেত্রে যৌবন প্রথম, বুঝেছি কলনে য'ব — সম্পাঠি প্রথা পূ লভিতে বিজয়-কেতুকত বা উল্লম ৪

মনে কি পডিয়াছিল পূৰ্প্তব সে সব ? দরিদ্র-বাসনা যত হুদি হ'তে লীন ? আশার আখাসপূর্ণ বাঁশবীর রব। সুধূরে মধূব কিবা আকাজগব বীণ ?

মনে কি পড়িল, হার, সংদার-সোপানে উঠিতে কতই ক্লেশ—হবিষে বিষাদ; হাসি কারা সে কালের বাসিয়ে নির্জনে রহস্ত-কৌতুক কত অমৃত আধাদ।

দরবিগলিত অঞ্চ নরনে আমার সেই সব ভাব আ'লি হৃদয়ে উঠিছে , বিভাবনী-কোলে বেন পত তারকার মুদ্ধ রাম্মি গীরে গীরে জাঁগারে ছুটিছে ! কোথায় গিয়াছ ভাই কিছুই জানি না, অজ্ঞাত সে দেশ—নরে জানে না কেংই, প্রবেশিয়া কেহ তার কভু ত ফেরে না, প্রবেশ করিছে পান্থ অঙ্গস্ত কতই ? যেখানে থাক, সথে, থাক যেই ভাবে তমেব আঁধার ফিবা দিবার কিরণে, আমানের চিত্তমাঝে নিত্য বিবাঞ্জিবে चा किरन धवनी भरत (धक्म भवरन। সাক্ষ না হইল হায় জীবনের বত ডুবিল দেহেৰ তগী দুগাল সকলি ৷ ভাগিতে সাগর-নীরে তবঙ্গ ভাডিত, সমণাঠী এবে ছাট রহিন্ত কেবলি ? অবর জাগৎস্থা-- ধ্বণী-ভূষণ মানৰ যাহাৰা তাৰা তুল ক্যা মহীৰ ! ষ্শের কিবণ কবে মুক্টে ধারণ, চক্রী, চাটুকার, ভগু কত অবনীব ! অন্ধ এ জগৎ তোমা চিনিবে কি গ হায়, চিনি ত আমবা —ছিলে ভবের ভূষণ। আমিবাস্থাতে, স'ব পৃজিব ভোমায়. জদয়-মন্দিরে করি প্রতিমা স্থাপন। প্রাণের বিগ্রহ ছেন রাথিব যতনে, জ্ঞালি স্মৃতিদ্রপ দীপ কবিব অর্চন, প্রণয়ের ভক্তিসহ বিহ্বলিত মনে দিব অহাে প্রেম-পুজ্প সঞ্জল নগন।— মধুব পবিআহ ভাব বয়ূব স্মবণ !

ইক্রালয়ে সরস্বতীপূগ

(প্রয়োগ)

(7) 4

স্প্র-পশ্চিমে - ছাডিয়া গান্ধার, ছাডিয়া পারস্ত, আরব-কান্তাব — সাগর, ভ্ধর, নদী-নদ-ধাব, দেখি কি আনন্দে বসেছে থেরে;

(क) अधान विषय मध्यक अधान गांबरकत छैनि

বীণাষ্ম কবে বাণী-পুদ্ৰগণ ছাডিছে সঙ্গীত জড়ায়ে প্রারণ. প্ৰিছে অবনী প্ৰিছে গগন —

মধ্ব মধ্ব মধ্ব সংবে।

(취하) 장

অবে তম্বী তই – বীণাৰ অধ্য. ভইও ব†জিতে কব বে উভ্য_∗ বাঁশরী ষেমন বাগাল-অধাব। বাজ বে নীবৰ ভাৰত ভিতৰে— বাজ বে আনন্দ্যবিত স্বাব।

(পূৰ্ণ কোবদ) গ

প্ৰভাতে অবল-উলয় যুৱে, তথনি স্থক ঠ বিহণ সৰে. ৰঞ্জিত গগনে বিভাস কেবে. অপসিয়া শিথব পল্লব ছেবে , গাহিয়া ভাস্কব-বিমান-মাগে, স্থার লহণী ছড়ায়ে বাগে; গোপলি-আকাৰে তথমা-দেখা পড়িলে ভাদের না ষায় দেখা।— প্ৰভাত মকণ-উদয় যুৱে. তথনি বিহশ ড'কে বে সবে.

তথনি কানন পরে স্বরে।

(?)

(প্রায়োগ)

কবি-বঙ্গভূমি এই না সে দেশ ? ঝিষবাক্যরূপ লহনী অংশেষ বহিছে যেখানে — সেখানে দিনেশ **ञ**ङ्ग উवार्ट डेन्द्र इय १ (यशास्त्र मरमो कमरन निनी. যামিনী ভূলায় যেথা কুমুদিনী, যেগানে শবৎ চ দেব চাদিনী

গগনললাট ভাসায়ে বয় ? (খ) গাবক-সংশ্লিষ্ট ছুই কিংবা তিন জনেব

डेंकि। (গ) অন্তব হইতে অক কয়েক জন ভনিতে ^{খুনি}তে যেন আমাদিলের মনের ভাব প্রকাশ করি-(ডাটে, এইরূপ কাছভব করিতে হইবে ৷

(취임)

তবে মিছে ভয় তাজ রে সংশয়. গাও বে আননে, পরায়ে আশয়— যেরপে মাধের কম্প আসনে দিয়া শতদল বাতুলচবঁণে.

অমর পুজিলা নন্দন-বনে।

(পূর্ণ কোবস)

কেন রে সাজাবি কুল্লম-হার ? ভাবতে সারদা নাহিক আবে। ष्यत्यांशा नीवव वादक ना तम वौन. वां एक ना (म वांगी-नौवव डेकीन, নাহি সে বসত্ম ক্রভি-ছাণ্ গোকুলে নাছি সে কোকিল-গান, গৌড-নিক্ঞে স্থগন্ধ উঠে না. নীল অচলে মলর ছুটে না, নাহি পিক এক ভাবত-ানে, গিয়াছে সকল বাণীব সনে—

কেন রে সাজিবি ক্রম বনে ?

(0)

(প্রয়োগ) শ্বেত শতৰল তেমতি স্বৰূব বাধ গদে থবে মণাল-উপর. আমাবজ্ঞ কমল, নীল পদাথব,

মিশাও ভাহাতে চাতুৰী ক'বে, কাককার্য্য করি রাথ মঞ্চলে, কেওকী-কুন্মুম পারিস্কাতদলে, ঝালব কবিতে ঝলাও অঞ্ধে

রদাল মঞ্জবী গাঁথি লহুবে।

(mini)

ঘেৰি চাৰিধাৰ মাধ্বীলভায়. চামেলী গোলাপ বঁধ তাব গায়, क्छ बी-इन्हरन क्विया रिवन

মাতৃক স্বগন্ধে স্থ্ব-ভবন ।

(পূৰ্ব কোরদ)

বচিল আসেন অমরগণে;--কন্দৰ্প আইল ষডঝতু সনে; আপুনি হুমন্দ মল্য বায়, মুগন্ধ বৃহিদা হর্তম ধার,

ত্যঞ্জিয়া কৈলাস-ভূধৰ শৃপ্প,
মহেশ আইলা দেখিতে বদ,
শ্রীপতি আইলা কমলা সনে;
অমর-আলয়ে প্রদল্পনন,
দেবেক্স-উবনে আনন্দকায়
দেবিধি কিল্লৱ গল্পর ধায়,—

শাচী সহ ইন্দ্র সথে দাঁডায়। (৪)

(8)

(প্রয়োগ)

শোভিল ফুন্দব ক্ষম-আসন, মনেৰ আহ্লোদে বিধ'ত৷ তথন, তাজি একলোক কৰিলা গমন.

গ্যানেতে ব্যিপা আসন-পাশে ,
যথা প্রাধিকে — অকণ উদয়,
আক্ষমুন্ততি করে দিকু শিথাময়,
ক্রমে চতুর্থি সেইরূপ হয়—
দেহেতে অপুর্ক জোগতিঃ প্রকাশে।
(শাথা)

দেখিতে দেখিতে ব্ৰহ্ম ফুটে ব্ৰহ্মার লগাট হ'তে ক্সোতিঃ ছুটে, অপরূপ এক সুশুদ্ধ পা, অমরী উবিল হাতে কবি বীণা—

> মুথে নিত্যস্তথে বেদ-ঘোষণা। (পূৰ্ণ কোৱস্)

ফিবে কি আবার সে দিন হবে প
মূনিমতভেদ গৃহিবে যবে।
তানে বেদগান বাদীব হারে
হবে জয়বানি অমবাপুরে /—
নামে বে যথন তাপন রথ
মলিন গগনে কে রোবে পথ প
খদিলে গগনে — তারক। হায়,
পুনঃ কি উঠি স আবালে গায়,
উজানে কথনো ছুটে কি জল প
ফিরে কি যৌবন কবিলে বল প

বিহনে সামগ্য আশা বিফল।
(৫)

বেদমাত। বাণী অ।দন-উপবে, মনের এবিবে পুঞ্জিলা অমবে; উল্লাসে মহেশ উনাত্ত অভরে,

नक्षमूद्ध दबन कविना गान ;

আপনি বিধাতা ইইলা বিহ্নল, আনন্দে তুলিয়া খেত শতদল, দিলা খেতভূজে দেবতা সকল, ইইলা হেরিয়া মোহিত প্রাণ।

(취임)

পেব জ্বাধননি উঠিল অমনি, বেদেব সঙ্গীত মিশিয়া তথনি বীণাধ্বনি-সহ প্রবাহ বহিল— ভাবত আননেদ কতই শুনিল, কত স্থবতবী ভাসায়ে দিল।

(পূৰ্ণ কোবদ্)

কে বলিল পুন: পাবে না ভাষ ?
হারান মাণিক পাওয়া যায় কি না যায়?
হার, যায়, আসে নায়ার ভবে,
রাছগ্রহ-ছারা ক'দিন রবে ?
এ জগত-মান্ধে করো না ভয়,
সাহস যাহাব ভাহারি জয়,
দেখো না দেখো না দেখো না পাছে,
আগে দেখ চেয়ে কত দ্ব আছে,
অই দেগ দ্বে ভাবভী-মান্দরে
উভিছে নিশান ভারত-ভিমিরে—
আব কি উচারে পাব না ফিবে?

(4)

(প্রযোগ) ক্রমে যত কাল বহিতে লাগিল, সারদা পৃঞ্জিতে মানব ছুটিল কবি-নামে গাাত ধরাতে হইল

মধুব-রদম মানবগণ, আইল প্রথমে আগাকল-রবি, জগত-বিখ্যাত শ্রীবাল্যাকি কবি — দিলেন সারদা ককণার ছবি হাতে ত্লে ক্টার, প্রলুল মন।

(শাখা)

দে ছবি হেবিলা আৰু কত জন
আসিল পুজিতে মাগ্ৰের চৰণ,
আদিল হোমর যুনানী-নিৰাসী,
গুদে খৈপায়ন - নিৰ্থিল আসি
অপুৰ্ব কোনও, কুপাগ্ৰা

(পূৰ্ণ কোবস্)

বাজায়ে আনন্দে সমর-ত্রী,
বাও কবিষয় অবনী-পুরী
তনারে মধ্ব অমব-ভাষ,
ঘূচাও মানব মনেব আস;
দেগাও মানবে ভ্বনত্রয়
ভ্রমিয়া আনন্দে— করো না ভব।
না যায় কেবল প্রভাস্ত-গামে—
যোহানা মিল্টন ডানটি নামে,
আসিবে পশ্চাতে শ্ব ত্ই জন,
দেপুরী খুলিয়া দেখাবে তথন,
দেশাবে তাহার অনলময়
অসীয় বিয়োব অনল জয

হেবিবে আতঙ্কে ভূবনত্তয়।

(9)

(প্রয়োগ)

পৰে অদভূত প্ৰাণী গৃঠ জন
আইল পূজিতে সার্দাচরণ —
কৈতি, ব্যোম, তেজঃ, সমূদ, প্ৰন,
সকলি তাদেব কথায় বশ।
ভাকিয়া সার্দা আনন্দ ভূজনে,
বসাইলা নিজ ক্ষ্য-আসনে;
অম্ল্য বীণাটি দিলা এক জনে,
দিলা অক্স জনে ন্বধা বস।

(শাখা) যাতৃকব-বেশে চমকি ভুবন নিজ নিজ দেশে ফিরিলাতজন, এক জন তাব দে বীপার সরে, মেবে কবি দ্ত প্রিয়া-মন হবে, এক জন বসি এভনেব তীরে অমৃত বিতরে অমব-নয়ে।

(পূর্ণ কোরদ্)

বিজন মকতে সাজায়ে হেন

এ ফলমালিকা গাঁথিলে কেন দ

আার কি আছে সে স্বরতি প্রাণ,
আার কি আছে সে কোকিল-গান দ

' আব কি এপন স্বপ্তময়

পউড় নিকুস্থে মণ্ড বয় দ

মুকল, ভাবত, প্রসাদে শেষ,
ভাকায়ে গিয়াছে স্বগর লেণ,
আজি বে এ দেশ গহন বন,

পহন কাননে কেন বা এ ধন

রাধিলে ভুলাতে কাহার মন দ

(প্রযোগ)

दिकन वा बालिव, এই ना तम तम्म १
किंव-बश्र इसि — वश्यो व्यत्भव
विश्व दिवाल — त्यवाल मितनम व्यक्त उपाटन प्रतात मितनम व्यक्त उपाटन सेवाल प्रवात मुक्ताब त्या क्यूमिनी, व्यवाल मुक्ताब त्या क्यूमिनी, व्यवाल मुक्ताब त्या हे जानाल ब्यालनी,

বিবিধ কবিতা

(টেনিসনের অনুকরণ)

নববৰ্ষ।

প্ৰভাত নিশিতে ঐ বাজে হোরা বিগত বংসর তাম, নবীনে হেবিয়া किरव ८ एस ८ एस অতীতে মিশিতে যায়। তক্র-'শাঝ।'পবে ভরা মধু-ঋতু শোভে কচি পাতা-থব,---পুৰাতনে সবা ঐ বাজে হোরা নবীনে আদরে ধর। ঐ বাজে হোরা নিয়ে অশ্ধারা প্রাচীনে বিদায় দেও, আনি আনুঝারা বাজে স্থ্য-হোরা নৃতনে ডাকিয়ে নেও; গত-আযু প্ৰায় গত বৰ্ষ ধায় যাক--দেও গত হ'তে, অসত্য নিবারি क्षपत्र-मन्दिर শিখহ পূজিতে সতে। ঘুচাইতে ফিরে ঐ বাজে হোরা মান্স যাহাতে জরে, অবনী-ভিতরে নির্থিতে ফিরে कमिश्रूष्ण गांटर वादत ! ধনাত্য নিধৰ্ম ছোৱা বাজে ঘন কলহ করহ দূর, দৌরাত্ম্য আচার ধরণীর শেল ভাবিয়ে করহ চুর। ৰাজে সুধ-হোৱা, অসুধের ভরা ডুবা রে অতীত নীরে— সুরাগত ৰত মৃতকল্প—হত, কু-ব্রতে মানব ফিরে, কটু মতামত পুরাগত ষত কু-আচার আদি পালে---

আনি অভিনৰ ঘুচাবে সে সব ডুবায়ে অতীত কালে; স্থ-আচার আবো ধর সাধুতর জটিল কুবিধি হর ; ঐ বাজে হোরা পুবাতনে সরা नवौरन जामरत धव। কচিন্তা-পসরা ঐ বাজে হোৱা ভাগে বে কালেব জলে. অনাটন-তাপ, কলুষকলাপ, ত্যজ অলীকতা ছলে; সুথে বাজে হোবা ধবা হ'তে সরা এ মম ড্ঃথের গীতি, পূর্ণমধুময় নবীন গায়ক ডাকিয়ে কর অতিথি। পদ-দর্প হর, হোৱা বাজে খর, কলম্পদ্ধা কব ছেদ. সত্যে গেঁথে ডোব, সভ্যেরে পালিতে শিখহ নবীন বেদ। ধবণীর বিষ হব হিংসাবিষ, পর-ছঃথে কর থেদ; ঐ বাজে হোরা. পুবাতনে সরা चूठा दत्र च्यवनी-दङ्गन । বাজে সুথ হোৱা, কালে চেলে দেও कमर्या (वारशंत्र कांग्रा, ধরামাঝে নাশি কৃদ্ৰ ধনত্যা কুপণে শিখাও হায়া। উৎকট বিগ্ৰঃ সহস্র বৎসর উত্তাপে ধরণী ব্রা, শাস্তির সলি সহ<u>জ ব</u>ৎসর শীতল হউক ধরা। कृषि वौर्या-४८ ঐ বাজে হোরা অভয় পরাণী যেবা,

দয়ার শরীর শ্বভাবে উদাব কর বে তাদেরি সেবা। ঘুচায়ে আবাৰ পথিবী আঁধার জনুক তক্ষণ ভাতি, সুধর্ম প্রভায় নরকুল তায় পোহাক বিঘোর রাতি! ঐ বাজে হোরা প্রভাত-নিশিতে. বিগত বংসব ভার. নবীনে হেরিয়া किटव ८ इटम ८ इटम অতীতে মিশিতে বায়! তরুশাধাপরে ভরামধুঋতু, শোভে কচি পাতা-থর;--ঐ বাজে হোবা পুশ্বাতনে সরা नवीरन जानरत्र धव । यत्व शीरव शीरव দেখা দিও কাছে कौरत्नद्र आंत्नां जत्न, ধীরে ধীরে ফিরে যবে শিরে শিবে সভয়ে শোণিত চলে; म् भ म् भ ज्ञिल যবে ছায়ু-নলী শলা যেন ফুটে গায়, শিথিল হৰ্মল, যবে হাদিতল শরীর বিকল প্রায়। যবে যাতনায় দেখা দিও কাছে ভূতময় দেহ পেয়ে, আলক্ষ-পুঁটিতে কুঠার আঘাতি আখাদ-আধারে শোষে; উন্মন্ত করাল যবে ইহকাল टोनिटक छेड़ात्र श्री, রাক্ষদের পাশে জীবাযু হতাশে জ্ঞালায় যথন চুলি। জীবনেব আলো (मथा मिख कांट्ड यत बीदा थीदा खल, थीरत थीरत फिरत যবে শিরে শিবে সভয়ে শোণিত চলে। দপ দপ জলি যবে স্বায়্-নলী শলা যেন ফুটে গায়, निधिन पूर्वन, যবে হৃদিত্র শরীর বিকল প্রায়। পরাণেব শোক ছোট ছোট যত কথায় প্রকাশ হয়,

শত শত কৃদ ভাৰবাদারতে যে শোক পাঁথিয়া রয়। গ্ৰীর আপালয়ে দাস-দাসী বত যে শোক তাদেবই মত. প্রভূমবে যেই কথায় নিবারে মনের উদ্বেগ যত। মৃত জনে হেবে क्रिंप क्रिंप राज ঘুচাতে মনেব ভাব. থ্ঁজিলে আবাব পাব না কোথাও এ হেন চাকুবী আর! শোকেব লহরী লঘুত্ব ধৃত আমারো হৃদরে ধার, ভাদেরি মতন প্রবোধ-বচনে তেমনি সান্ত্ৰা পায়। শোক-বারিধারা কিছ গুকভাব বহে যাহা হৃদিতলে, নিঝ বের মৃথে তুষারেব মত নাঝবে নাপডে গ'লে। গৃহস্থ মবিলে গুহীৰ আবাদে পুত্ৰ-কলা জীব যথা---অদাত ইক্তিয় শ্যাপানে চেয়ে অসাড পবাণ তথা---না পায়ে ফেলিতে না পারে তুলিতে খাসবায় নাসামূলে, আ'দে ধায় ধেন প্রেত্যোনি প্রায় অশব্দে চবণ ফেলে। না কবে কথায় প্রকাশ আলাপ শূক্ত গৃহপানে চায়. মনে মনে ভাবে কি দয়া কি স্বেহ, ফুবায়ে গেছেন হায়। প্রাণের বেদনা বলিতে বলিতে পালেপৰ আশিকা হয়, আধ্থানি খোলা কথাস্টি ধথা আধথানি ঢাকা রয় ! সুড়াদ ভাষায় তব্ও—তবুও উতলা পরাণ মন, যথা সুস্থ ভাব, করে শান্তি লাভ, मान्दक (मह-द्वमन ! শোকে জরজর এ মম অস্তর তাই সে কথায় ঢাকি,

শীতে থরতর যথা বাঁচে নর
হীন বন্ধ গানে বাথি।
কিন্ধ যে বৃহৎ শোকের প্রমাদ
পরাদে উথলি ধায়,
লিথি থালি তার ছায়ার আকৃতি
ভাষাতে ধরে না তায়।

শিশুর হাদি।

कि मधु-माथारना, विधि, शामिष्ठि व्यमन দিয়াছ শিশুর মুখে ? মুর্গেতে আনছে কি ফুল মক্ত্যে যার নাহি তুল, তারি মধু দিয়ে, কি হে, করিলে সম্জন? . প্ৰিলে কি নিজ স্থপে ? কি বা, বিধি, নরছঃথে মনে ক'রে—ও হাসিটি কবেছ অমন ? জানি না তুমিই কি না আপনি ভুলিলে, স্জনের কালে, বিধি। গডেছ ত এত নিধি. উহার মতন, বল, কি আর গডিলে প নবনীর স্ব ছাকা, যুন্দর শরৎ-রাকা , তকণ প্রভাত কি হে কোমল অমন ? কাবে গডেছিলে আগে, কারে বেশী অম্ববার্গে एकन कविटन, विधि, एकिटन यथन १ ফলের লাবণ্য, বাস অথবা শিশুর হাস कारत, विधि, श्वारंग धारन कतिरन धात्र ? ছিল কি হে নরজাতি স্জনেব আগে, এ কল্পনা তব মনে ? অথবা শশি-কিরণে

কাবে, বিধি, আংগে ধ্যানে করিলে ধারণ ছিল কি হে নরজাতি স্ঞ্নেব আংগে, এ কল্পনা তব মনে ? অথবা শশি-কিরণে গড়িলে যথন—এরে গড় সেই রাগে ? দেখায়েছিলে কি উটি স্ফ্রিলে যথন, অমুড-পিপাস্থ দেবে, কি বলিল ভারা সবে দেখিল যথন অই হাসিটি মোহন ? অমৃত কি ওহে বিধি, ভাল ওর চেয়ে ? তবে কেন ছাড়ে ভাষা স্থা-অন্ধ দেবভারা— অমৃত অধিক মধুও হাসিটি পেয়ে ?

কিবা চেমেছিল তারা তুমিই না দিলে; দিয়াছ এতই, হায় চিরস্থবী দেবভায়, ছঃবী মানবের তবে ওটুকুবাথিলে?

দেখিলে শিশুর হাসি জীবিত যে জন, কে না ভাসে, কে না চায় আবার দেখিতে তায় ? একনাত্র আছে ওই অথিল মোহন—

জাতি-বেশ-বৰ্ণভেদ, ধৰ্মভেদ নাই, শিশুৰ হাসির কাছে, সবিপ'ডে থাকে পাছে, ধেথানে যথন দেখি তথনি জুডাই!

নাহি পর আপনাব, নাহি হৃঃথ স্থ^ৰ, দেখিলে তথনি মন মাধুরীতে নিমগন, কি খেন উথলি উঠে পূৰ্ব করে বুক।

আয় আয় আয়, শিশু, অধরে ফুটায়ে
অই অবগের উষা,
অই অমবের ভ্ষা
তুলিয়া য়ৢদয়ে—দে রে মানবে ভ্লায়ে।

হৈ বিধি, নিয়াছ সব, করেছ উদাসী
এক ফুদয়ের আলো,

উহারে ক'রোনা কালো, অতুলনা দাপ এটি—নিও নাও হাসি!

চাহি না শীতল বাযু মুকুল অমিন,
চন্দ্ৰকর বারি-কোলে
নাচিয়া নাচিয়া দোলে,
তাও নাহি চাই, বিধি,—ও হাসিটি দিও

ভাস রে চাদের কর—হাস রে প্রভাত, ডাক্ পাথী প্রিন্ন মূরে, দোল্ পাতা সুরে সুরে, পিঠে করি প্রভাকর-কিরণ-প্রপাত, উঠক মানব-কঠে লগিত সঞ্চীত, বাজ্ক 'অগান' বালী, তরল তালেব রালি, ছুটুক নর্ত্তকী পাল কৰিয়া মোহিত ,— কিছুই কিছুই নয় 'ও হাদির তুলনাল্ল, জগতে কিছুই নাই উহাব মতন। কি মধ্-মাথানো বিধি, হাদিটি অমন দিলাছ শিশুব মূথে ?

রেল-গাড়া।

এসো কে বেড়াতে যাবে –শীঘ কৰ সাজ। পৰাতে পুশকৰথ এনেছে ইংবাজ।

> শীন্ত্র উঠ – পথা কবি, বান্ধ: ব্যাগ, তগ্নি ধবি; এখনি বাজিবে বাশী ঠ° – ঠ' – ঠি কাসী

বাজিবে ইম্পাত বোলে,

ছাজিবে নিশান-দোলে, শীষ্ট উঠ--পড়ে গাক ঘড়ী, ছড়ি, ডাজ ;— ধরাতে পুশক্তবথ এনেছে ইংরাজ। অই শুন টিকিটেব ঘবে কিবা গোল। মান্তবের গানি যেন –ঠেকাঠেকি কোল।

টক্স টক্স্নাদে
বাব্ৰা টিকিট ছানে,
হাপাৱে হাপায়ে ছোটে,
সাড়ী, বৃত্তি, ফাট-কোটে
ঠেকাঠেকি —ছুটে যায়,
কেচ কাবে না ব্ধায়,

গাালো গ্যালো মূথে বোল , আয়ে, নে বে খোল তোল্ , ফেব চলে ফানাকানি

किवा लाउँ, वाञ्चा, बाना। अष्टै क्कांविल नाना, र्रु॰—र्रु॰ - स्मष्ट कैंग्नी,

গাড়ীতে পড়িল চাবি-- স্থাব নাহি গোল, ছলিল সবুজ-রঙা পতাকার দোল। চলিল পুষ্পক্ৰথ ফুকাৰে ফুকাৰে, এখন নিশ্বাস ছাডি দেখ হে ত্র্গাবে. গরিত-বরণ মঠি. थांक, नौल, हेक, शाहे. আকাশ চেকেছে যেলা দিগন্থে বিস্তৃত সেথা। (नश (इ फ्र'शांदित (हरम्र পশ্চাতে চলেছে ধেয়ে. সাবি সাবি নাবিকেল. তাল. বট. আম, বেল. জাঙ্গাল, পগাড, বাগ, বেড, বাড়ী, নানা ছাঁদ, (मोनाभिनो-नाम-जात. ছটেছে ভামার ভাব, উডিয়া চলেছে বথ বেগেতে কাপিছে পথ --

পক্ষী মৃগ দূৰে পতি মানিতেছে লাজ — ধরাতে পুপক্ষৰথ এনেছে ই রাজ। চলুক চলুক রথ — যে যাব ভাবনা ভাবো ব'সে নিক্ষেগে ছুটায়ে ক্রনা, বভাবেৰ প্রিয় যাবা

পভাবেৰ প্ৰিয় বারা
হেব গিৰি বাবিবাৰা,
নিবিভ ভ্ৰৱ-গায়
হেব থেলা ক্যাসায়,
নিশিতে নজ্ত-পাতি
হেৱ চন্দ্ৰাৰ ভাতি.

দেপ হে অনন্ধ দৃশ্য ছড়ান মাথায়— দেধ দিগতেব কোলে কি শোভা থেলায়। ঙেব হেব ভীথ-মনে চলেড়ে ফাগাবা, পথেব তুধাৰে ভীথ-শীঘ্নামো ভাৰা,

ব ভ্ৰপাৰে তাপ—শাস নামো ভাবা,
গোল চ'লে—গোল বথ,
আই বৈশ্বনাগ-প্থ,
গুছাতে সৰে না দেৱা,
কাজ নাই সন্ধী হৈবি,
দেখিতে দেখিতে মানে
সীভাক্ত আগো পাৰে,
কিছু দ্ব আগো ভাব
বানিপুর—গ্রাধাব,
দণ্ড কভ বাক যান,
পাৰে কাৰীতীৰ্যভান,

প্রাগ অবোধ্যা ছাড়ি পাবে অগ্রবন—
মথ্রা তাহার পরে হের বৃন্দাবন!
মানব-জনম হার সার্থক হে আব্দল—
সাবাস্ বাজ্পায় রথ—সাবাস্ ইংরাজ।

াদ্ বাপার রথ—সাবাদ্ ইংরাজ আবরা দ্বে থাবে থারা
শীল্র রথে উঠ তারা,
হরিবার, গলাঝবি,
পুকর, ঘারকা পুরী,
নর্মদা, কাবেরীনদ,
ক্ষণা-গোদাবরী-পদ
ইলোরা বৌদ-গহরর,
দেত্বর রামেখর,
ভ্রমিবে নক্ষরগতি,

হেরিবে বিমানে চড়ি— ত্রেতায় বেষন, সীজারামে ইন্দ্ররথে সিকু-দরশন। এসো হে কে যাবে চল ভারত-ভ্রমণে, ছয়ারে পুপাক রথ ছাভিছে নিধনে।

পর্বাত-শঙ্কেতে পথি,

আর কেন বছবাসী
পারে বেঁধে রাথ ফাঁসী,—
বাজালীব যে ত্নশিম,
ভূচারে সাধ হে কাম,
আর ঘেন স্থৈন ব'লে
বাজালীরে নাহি বলে,
এবে পরিকার পথ.

ষাও যথা মনোরথ, ৰোম্বাই কি॰বা কলিন্দ, শিলং, তুৰ্জন্মলিন্দ, শিমলা পাহাড়-পাট,

কাশীর মারহাট্টা ঘাট, যেথানে ক'রে গমন, সাধিতে পার হে পণ.

পুশ্পৰিমানে চ'ডে সেইথানে যাও, বাদালীর লজ্জাকর ছন্মি ঘুচাও। ভারত-অমণে চলো শীল্ল কর সাল, ছ্রারে পুশ্কর্থ বেঁধেছে ইংরাজ।

> ধক্ত রে বিমান ধক। ধক্ত হে ইংরাজ ধক্ত। কলো জিনিয়াছ কাল, অসারে জালায়ে জাল.

বহিরে বেঁধেছ রথে,
পবনের মনোরথে
তৃক্ষ করি, কর থেলা
কি নিশি মধ্যাহ্-বেলা,
বেঁধেছ ভারত-অঙ্গ —
পোইজালে করি রঙ্গ,
অস্ত্রর-অসাধ্য কাজ সাধিছ জগতে।
ভডে প্রাণ দিতে পার দেবের দর্পেতে,
পার না কি বাচাইতে নিজীব ভারতে ?

"রিপণ-উৎসব" ভারতের নিদ্রাভঙ্গ ।

ভাৰিল কি তবে---এত দিন পবে ভান্নিল কি ঘুম ভারত-মাতা ? জৱাজীৰ্ণ শীৰ্ণ শরীরে তোমার ফিরে কি জীবন দিল বিধাতা ? উঠ--উঠ মাত: ডাকিছে তোমায় তোমার সন্তান যে যেথা আৰু। কিবাবদ শিশু কিবা যুবজন কি দরিদ্র আর কিবা অধিবাজ। ডাকিছে তোমায় ডাকিছে পাবসী পঞ্জাবী শিখ. ভাকিছে তোমায় বীবপুত্রগণ রাজোয়ারাময় যত নিভীক। তোমার নক্র মহম্মদীগণ---বাছবলে যার ধ্বণী টলে. ডাকিছে তোমারে সবে একস্বরে জাগোমা ভারত—জাগোমাব'লে। একাবজ নয় হিমালর হ'তে কুমারীর প্রাস্ত যেখানে শেষ. আজি একপ্ৰাণ হিন্দু মুসলমান---কাগাতে তোমায় কেগেছে দেশ। "আর ঘুমা'ও না" ব'লে কত দিন কেঁদেছি—কেঁদেছে কত সে আর. আমাজি জন্মভূমি জীবন সার্থক তোমার কর্ছে এ মিলন-হার। কতবার মাত: উদাদীর মত দেখেছি তোমায় ভূবনময়।

স্থাবর জ্বস্ম কত দিকে কত অবেণ্ট যেমন ছডায়ে রয়। দেখেছি তোমার গিরি-উপত্যকা শস্তক্ষেত্র, ভূমি, নগর, দেশ, প্রাণিরন্দ যত ছায়ামাত্র ভার কালেব কালিতে ক'লিম-বেশ। জীবনের বিন্দু না হেরি কোথায় সব শৃন্তময়-সকলি থালি, চারিদিকে যত নৱান্তি-কন্ধাল চারিদিকে ধুধু করিছে বালি। উঠ গো জননি দেখো চক্ষ মেলি সেই অস্থিগুলি নডিছে ধীবে, মচল হিলোলে দেখে৷ কি নিশাস সে শব-পঞ্জবে বহিছে ফিরে। মিলিত ভাৰত একমাত্র খাদ---নাসিকারক্ষেতে ছাডিল বেই. কি মহা উৎসব বহিল উচ্ছাদে ভারতে যাহাব তুলনা নেই। "আবি ঘুমা'ও না" ডাকি মা আবাব ভাবী আশাদল ভাবিয়া দেখো, দোনাব অফবে "বিপণ উৎসন" क्रमस्यद्र भारतः निथिशं दरशो। নেমেছে প্ৰন শ্ভাতাল হ'তে বহিছে তোমার ভূবনময়, করিতে তোমাবে নব পল্পবিত ফুটাতে জীবন মঞ্জীচয়। বে বাযু উঠিছে এ ধীর হিলোলে কাব সাগ্য আর নিবারে তাবে. কেবা বোধে ভারে অগ্রদর গতি কেবা আর তাবে বাঁধিতে পারে ? নৰ প্ৰভাবাশি নৰ শিখাময় ভাবত ভস্মেতে মিশিছে ফেব, কাদিল ভারত যে অস্তি-কোলেতে সঙ্গীৰ হবে সে শিখাতে এব এ দহন শিখা জীবনদায়িনী ভারত অন্তরে ধরেছে ধীবে, হয়েছ উদ্ভৰ— নারায়ণ-মুখে ভারতের বুকে থাকিবে স্থিবে। যাবে কত কাল, ত্মলিবে আরো এ জ্ঞানের আলোক--বিহাৎছটা,

मटम ना नगटन. দমিলে বিগুণ ধরে থবতব তেজেব ঘটা। "বিপণ-উৎসব" ভূলো না ভাবত ছিডো না যে ডোবে মিলেছ আৰু. এক বাণী ধর ভারত-সন্তান ষেখানে যে থাকো –পবো যে সাজ। নিভতে -উৎদবে মনে ক'বো সবে "বিপণ-বিদায়" নহে এ খালি, ভাবত-অমুৱে সম আশাভয় এ মিলন ভাব প্রকাশ ডালি। নহে আক্ষিক দৈৰ স্থৰটনা বহুদিন হ'তে অস্ব এব, ৰুড়ায়ে ৰুড়ায়ে শিক্ষে শিক্ষে বেঁধেছে ফেব। আজি প্ৰকৃটিত श्रम भिष्ट (मर्था তক্ষুল কোন পল্লব্যয়, शेरव भीरत्र (वरफ ধবণীব গর্ডে ফলে ফলে শেষে সাঞ্জিয়া বয়। ভাৰতেৰ আশা ভারত-প্রত্যাশা — জীবন-উন্তি ইহাবই সাব। শ্ববাবি-সেচক দে সৰু লভায় "রিপণ" কেবল লক্ষ্য বে ভাব। সেই আশাপথে হবে অগ্রসর তিৰেক ভাহাতে নাহিক সংশয়. বে পথ উহাব দিয়াছে দেখায়ে হবে পরিসব কব নিশ্চয়। দেখায়ে সে আলো দিয়াছে যথন नियाटक यथन दिलाटम १४. আজি আবে কালি তাহাতে পশিব সাবধানে পুৰাবো স্থ-মনোবণ। পাবো বে সক্লি— আজি আর কালি আব এ ভারত নিদ্রিত নয়, সব পুত্ৰ ভাব **সম তৃ**ঞ্জুর এক(ই) পথ-পানে চাহিয়া বয়। চাহে মহারাই এক (ই) পথপানে bice (म शावमी-शाकावी-निय, বীরপুত্রগণ-চাহে ভারতের রাজোগাবাময় যত নিভীক। মহম্মণীগণ--, ভাবতনন্দন

তাহারাও আজি জাগে মা ব'লে;

একদন্তে চাহে সেই প্রপানে সাধনা সাধিতে সে পথে চলে। कार देश देश ডাকিছে তোমায় তোমার সন্তান যে যথা আজ, কিবা যবাদল কিবাবদ শিশু কি দরিদ্র আবার কিবা অধিরাজ। হিমালয় হ'ডে এক বিজন ম কুমারীর প্রাস্ত যেথানে শেষ, হিন্দ মুসলমান আজি একপ্ৰাণ জাগাতে তোমাবে জেগেছে দেশ। दिन्ने दिन्ने मोजः ছাডো নিদ্রা ঘোর পরিয়া নিখাস ফেল গো মাত:. দেখি কি নাহয় অকণ-উদয় — ত্তকণ চটাতে প্রভাত প্রাতঃ।

মদন-পারিজাত।

(একাদশ খুষ্টাব্যে ত্রাসীদেশে আবেলার্ড নামক একজন প্রসিদ্ধ পণ্ডিত ছিলেন। তিনি ভৰ্মাল অন্যাপনা ক্ৰাইয়া প্ৰভূত বৃশ্বী হন। আলোল শিষেৰে জাণুইলাইজা নায়ী এক স্থাক-রংশীয় কল। জাঁচাব নিকট অধায়ন কবিতেন। এই কামিনী অভাজ রপবতী ও বলিমতা ছিলেন। ক্রমে গুক-শিষ্যের ভাষান্তর হইয়া উভয়েব প্রতি উভয়ের আমেজি এলে এবং সেই কলফ দেশমধ্যে প্রচাবিত হয়। তাহাতে ইলাইজাব পিতব্য অস্ত্র বোষপর্তর হইয়াইলাইজাকে একটি কন-ভেন্টে আবদ্ধ কবিয়া বাথেন এবং আবেলাউকে ফকেদের কবিষা অবেমানিত কবেন। কাণ্লিকবিগের মধ্যে সংসার্থবাগী ধর্মাকাজ্ঞী স্ত্রী কি পুক্ষগণ যে আখ্ৰেম বাস কবেন, তাহাব নাম কনভেন্ট। ইলাইজা সেই আশ্রমে অবক্র ইইয়া বলকটে দিনপাত কবিত এব[্] আবেলার্ড প্রাঞ্জ-ক্রপে অবমানিত হইবাব প্র, সংসাব্ধিরাগা হইয়া অভয় এক আমৌমে প্রায়ান কবেন। ইহাদিগের প্রস্পবের প্রণয়ণ্টিত উপাধ্যান ইউবোপীয় নানা আন্তান ক্রিকি আছে। আলেকজন্দর পোপ নামক স্তপ্রসিদ্ধ ইংবাজ-কবি এই উপাথ্যান অবলম্বনে একটি কবিতা লেপেন, ভদ্নেট্ৰ "মদন-পাবিশ্বাত" নাম দিয়া নিমোক কবিকালিখিত হইয়াছে।)

জাজিয়ে সংসারগর্ম তপ্রিনী হয়েছি. মাধামোতে আশাত্তা বিস্কৃত্ন দিয়েছি। পরিয়ে বঙ্গল সাজ্ঞ কমণ্ডল কবে. ধবেচি কঠোৰ বত কানন ভিতৰে। দিবাস্ক্রা প্রাধান দেব-আবাধনা. কবি, তব মনে কেন হয় সে ভাবনা ? যাব জন্যে দেশত্যাগী, কেন পুনবায় অশান্ত জনয় ছেন তারি নিকে ধাব ? কেন বে উন্মাদ মন কেন দিলি তুলে. যে বাসনা এত দিন আছিলাম ভূলে ? জালাতে নির্মাণ-বহ্নি কেন দিলি দেখা অবে ভ্রধাময় লিপি, দ্যিতেব লেখা ! আয় তোৱে বকে বাখি বছদিন পৰে পেয়েছি নাথেব লেখা অমৃত অক্ষবে ৷ এ জগতে ভালবাদা ভলিবার নয়. মদনের পারিজাত রক্ষাও ঘোষয়। ক্ষমাকর যোগী ঋষি জিতে ক্রিয় জন. ক্ষাক্র সহী-সাধনীতপ্রিনীগণ। অভি শাকু অপ্ৰিল আ আইমম্ভল. তক বালি, লভা পত্র যথায় নির্মাল, নিজাপ নিজাম চিন্তা ষণায় নিয়ত. প্ৰমাৰ্থ-গানে মগ্ন আনন্দে জাগত, ক্ষাক্ব এ দাসীবে কল্য চিভায় কল্মিত কবিলাম তোমা স্বাকায়। আম্সিলান যবে হেথা ক'বে মহাবত. ভাবিলাম, হব শীঘু জোমাদেবি মত; ধবল শিলাব সম সেদ কেদহীন. প্রল শিলার সমুমুম্ভাবিহীন। কট হলো ৷ অসাধ্য সে পবিত্র কামনা ! জীবিত থাকিতে নাথ যাবে না বাসনা! অর্দ্ধেক দিনেছি প্রাণ ঈশ্বব সেবিতে. আর্থ্রিক বেথেচি হায়। নাথেরে পঞ্জিতে অনাভাবে জাগবণে হলো দেহক্ষ. ক্র দেখ সভাবের গতিবোধ নয়। কাটালাম এত কাল সমাপে সহাপে. সে নাম দেখিবামাত্র তব চিত্ত কাঁপে। কাপিতে কাপিতে নাগ ৷ খুলি এ লিখন. প্রতি ছবে করিছেছি অশ বিস্জন। ষেখাতে ভোমার নাম দেখি প্রাণেশ্ব, সেইখানে কেনে উঠে আমাব অন্তর।

কতই আনল আৰু কতই বিষাদ,
আছে ও মধুৰ নামে কে জানে আখাদ দ
কতবাৰ ধীৰে ধীৰে কৰি উচ্চাৱন,
কতবাৰ দিবে দিবে কৰি নিরীক্ষণ।
কেলি কত দীর্ঘদ্যান সে বৰ্ অৱিয়ে,
আহি হেখা একাকিনী যে সব তাজিয়ে।
যথানে আমাব নাম দেখিবাবে পাই.
সেইখানে আনাব নাম দেখিবাবে তাব,
আছে কোন অমদল সদে থাকে তাব,
আমদল হেতু নাথ, আমি হে তোমাৱ!
না পাৰি পডিতে আব, সহে না ধ্ৰদঃ;
শোকের সম্ভু হেবি চতদ্ধিক্ময়।

অদৃষ্টে কি এই ছিল, সেই ভালবাদা, এইরূপে হলো শেষে শেষ এই দশা। সে যশঃ-পিপাদা আর সে খেন প্রণয় পত্রেব কুটীরে হলো এইরূপে লয়।

ষত পার হেন লিপি লিখ, তবে নাথ, করিব ভোমার সধে শোক-অঞ্পাত . মিশাইৰ দীঘৱাদ তোমাৰ নিৱাদে. কাঁদিব তোমার সঙ্গে চিত্তেব উলাসে . ঘচাইতে এ ষন্ত্রণা সাধ্য নাই কার(ও), তাই নিবেদন করি, লিথ যত পার। অনাথা জঃখীর জঃখ কবিতে সাভনা. হয়েছে লিপিব সৃষ্টি বিধির বাসনা। বঝি কোন নির্বাসিত পুরুষ প্রেমিক, অথবা রমণী কোন প্রেমেব পথিক. ঘুচাতে বিচ্ছেদজালা আরাধন ক'বে. শিথেছিল এ কৌশল বিধাতার ববে। প্রাণ ভোৱে অন্তরের কথা প্রকাশিতে এমন উপায় আব নাই এ মহীতে। নাসা, কণ্ঠ, চক্ষ কিংবা ওঠে যাহা নয়, লিপিব অক্ষরে বাক্ত হয় সমুদয়। খুলে দেয় একেবাবে প্রাণেব কপাট. ধরে নালজ্জাব ধার থাকে নাঝগ্লাট।

উদয়-ভূধর হ'তে অন্তাচলে বায়, প্রণন্ত্রী জনের কথা গোপনে জানায়। জান ত হে প্রিয়ন্তম। প্রথমে কেমন স্থাভাবে কত ভক্তি করেছি যতন। জানি নাই, কথন দে প্রেমের সঞ্চার— ভাবিতাম যেন কোন দেবের কুমার.

ঈশ্বৰ আপনি যেন সভাৱে কবিয়া নিশাণ কবিলা তোমা নিজ-বশ্মি দিয়া: মুধাংশুর অংশু ধেন ক'বে একরিজ স্থাস্ত নয়নে তব কবিলা স্থাপিত। নেত্রে নেত্র মিলাইবা স্থিবদুঞ্চ হয়ে দেখিয়াছি কতবাৰ পৰিত্ৰ হৃদয়ে ৷ গায়িতে যথন তমি অমব শুনিক কি মধুর শাস্তালাপ বদনে ক্ষবিত। সে প্রস্তাবে কাব মনে নাহয় প্রতায়— প্রেমেতে নাহিক পাপ ভাবিল নিশ্চয়। ভক্তি ছিঁছে পড়িলাম ইন্দ্রিধ্রক্তকে ভজিও নাগৰ-ভাবে প্রাণেব পুলকে। দেবপুত্ৰ ভাবিতাম, তা হ'তে অধিক প্রিয়তম হ'লে নাথ হইয়ে প্রেমিক। তোষা চেন কান্ত যদি মতাভ্যে পাই শ্যি হয়ে স্বৰ্গস্থা ভঞ্জিতে না চাই। যে ভাবে অধিক স্থা সে যাক সেথানে। আমি ধেন তোমা লয়ে থাকি এ ভূবনে।

অঘি নাথ। কত দিন. আছে ত শাবণ. বলেছিলে পতিভাবে কবিতে বরণ. তথনি দিয়াছি শাপ হোক বজাঘাত. পরিণয়-সংশ্বাব ষাক রে নিপাত। হাতে হতা বেধে কভু প্রেমে বাঁধা যায়. বন্ধন দেখিলে প্রেম তথনি প্রার। স্বাধীন মকবকেত্ত স্বাধীন প্রবয়, না বঝে অবোধ লোক চাতে প্রিল্য। প্ৰিণয়ে ধন হয়, নাম হ্ৰুয়শু, প্রণয় নহেক ধন বিভবের বশ। ভমগুল-পতি যদি চবণে আমার ধ'বে দেয় ভ্ৰতল, সিংহাদন ভার, তচ্চ ক'রে দরে ফেলি মনে যদি ধরে ভিথারীৰ দাসা হয়ে থাকি ভাব ঘৰে ৷ যে বুমণী সে দোভাগ্য ভুঞ্চে চিবকাল. কত ভাগ্যবতী সেই হায় রে কপাল ? কিবা স্থময় সেই স্থথের সময়. স্থথের সাগব যেন উচ্চসিত হয়। পরাণে প্রাণ বাধা প্রণম্বের ভরে. প্রবিপর্ণ প্রিতোষ প্রেমীর অস্তরে। আশাৰ থাকে না কোভ, ভাষাৰ যোজনা, क्रमस्य क्रमस्य कथा প্रकारण ज्यावना ।

দেই স্বথ--স্বথ যদি থাকে মহীতলে--পাবিজাত মদনের ছিল কোন কালে।

সে ক্ষের দিন এবে কোথায় গিরাছে,
কোথা পারিজাত কোথা মদন রয়েছে!
কি হ'লো কি হ'লো হার, এ কি সর্কানাশ,
নাথের চুর্ফশা এত, ক'রে নরবাস,
কে করিল জ্বন্তালাত ? কোথায় তখন
ছিল দাসী পারিজাত জ্বভাগী চুর্জন ?
সেই দণ্ডে প্রাণনাথ, তীক্ষ জ্বন্ত্র ধ'রে
নিবারণ করিতাম পাষ্ও বর্করে।
ত্ত্তনে করেছি পাপ ত্তনে সহিব,
লক্ষা করে, প্রাণনাথ, কি জ্বার বলিব।
জ্ব্রু-বিশ্বন্ত্রিল থোর প্রমাদ!

আনিল আমায় হেথা যে বিষম দিনে. বসাইল ধরাতলে পবিত্র অভিনে. প্রাইল বৃক্ষছাল দণ্ড দিল হাতে. ভাব কি সে দিন আমি ভূলেছিত্ব নাথে ? পাৰেশ্ব চাবিদিকে ঝিষ্ঠাণ যত করে ময়উজারণ, আমি ভাবি কভ তোমার বদন-ইন্দ তোমার লোচন. মনে মনে করি তব গুণের কীর্ত্তন: নয়নের কোণে মাত্র দেবী-পানে চাই মনে শুধু কিসে পুনঃ ফিরে কাছে যাই। যৌবন রূপের ঘটা তখনো অতুল, হেরে চমৎকৃত হলো ষত ঋষিকুল সংশয় বিস্ময়ে ভাবে এ হেন বয়সে রমণীইচ্ছায় কভু আংশ্রমে কি আংসে ? সভ্য ভেবেছিল ভারা মিথ্যা কথা নয়— যুবতীর যোগধর্ম মিখ্যা সমূদয় ! যাই হোক নাই হবে গতি-মুক্তি মম, বারেক নিকটে এস অহে প্রিয়তম। সেইরূপে নয়নের বিষাক্ত অমুত করি পান মনসাধে হবে বিমোহিত. অধরে অধর দিয়ে হয়ে অচেতন মুচ্ছাভাবে বক্ষঃস্থলে দেখিব স্থপন।

না না না, ত্রন্ত আশা হও রে অন্তর ! এস নাথ, ধর্ম-পথে লও হে স্বর , পুণ্যধামে পুণ্ডান বে আনন্দ পায়, শিধাও এ অভাগীরে সিঞ্জি কর কার।

আহা এই শুদ্ধ শাস্ত আশ্রম-ভিতরে কত্ট প্ৰাতাজীৰ আনন্দে বিহবে: তক্ষ লতা আদি হেথা, সকলি নিৰ্মাল, সকলেই ভজিন্তমে সদাই বিহৰণ। পৰ্বত-শিখরগুলি সুন্দর কেমন উঠিয়াছে চারি ধারে মেঘের বরণ: শাল তাল তমালের তরু সারি সারি শুনাইছে মুচুম্বর দিবস-শর্কবী: পূৰ্যাকরে দীপ্তাহবে স্রোত:কল যত শিধরে শিখরে আহা ভ্রমে অবিবত , করে কল-কল ধ্বনি গিরিপ্রস্তরণ 'গুহাৰ ভিতরে আহা মধুৰ **প্ৰ**বণ। সান্ধ্য-সমীরণে এই হদের উপবে তবঙ্গ খেলায় যবে কিবা শোভা ধরে। হেন স্নিগ্ধ তপোবন-ভিতরে আমাব ঘচিল না এ জনমে ইন্দ্রি-বিকার। হে বিশ্ব-ত্রগ্রাও পতি ককণা-নিদান. করুণা-কটাক্ষপাতে কব পবিত্রাণ। দাও দেব দেখাইয়ে মুক্তির আংলয়, ভক্তিভাবে লইলাম তোমাব আশ্রয়।

কুলীন-মহিলা-বিলাপ।

ক্লীন-মহিলা-বিলাপ।
ক্লীতদাস তবে বেন হয় মা উদ্ধাব।
সে ভূমি পরশমাত্র—সরল অন্তরে
ছিঁভিয়া শৃত্তালমালা খাধীনতা ধরে।
তবে বেন বাজ্যেশ্বরি বাৎসলা তোমার
সমান সবার তবে অকুল অপার।
ভিরভাব নাহি ঘেন কল্পা-সত প্রতি,
নাহি ঘেন তব রাজ্যে নারীব দুর্গতি।
ভনেছি মা বুটনের শেতালী মহিলা
পুক্ষের সঙ্গে রঙ্গে সদা করে লীলা।
সন্তান ধরেছ গর্ভে জুমি মা আপনি,
আমাদেব প্রতি কেন নিদ্যা জননি?

শুকু ইশ্বরচল্ল বিভাসাগয় মহাশয় কৄ৽ান
দিগের বছবিবাহ নিবারণ অক্ত যে আইন লি ব
করাইবার উভোগ করেন, এই কবিভা সেই উপার্থ
লিবিত হয়।

কেন বল আমাদের হুর্গতি এমন ? এখনো মা ঘুচিল না অঞ্চবিদর্জন।"

আষ আষ সংচরি, ধবি গে বুটনেশ্বী, করি গে তাঁহার কাছে ত্বংথেব বোদন , এ জগতে আমানের কে আছে আপন দ বিম্থ নিষ্ঠর ধাতা, বিম্থ জনক ভ্রাতা বিম্থ নিষ্ঠর তিনি পতি নাম বার — আশ্রয় ভারতেখরী ভিঃ কেবা আর দ

আন্য আন্য সহচ্চি ধরি গে এটনেশ্বরী করি গে তাঁহার কাছে ত্রুথের রোদন; এ জগতে আমাদের কে আছে আপন ? "দাত শত বৰ্ষ, মাতঃ, পৃথিবী-ভিতবে এইরূপে অহরহঃ অঞ্ধার। ঝরে মাতা-মাতামহী-চকে জনাজনাক†ল . আমাদেরো সে ছর্দশা হায় রে কপাল। কত বাজা হলো গেল, কত ইন্দুগাত, নক্ষত্ৰ থসিল কত ভগব-নিপাত, হিন্দ বৌদ্ধ মদলমান খ্রেচ্ছ অধিকার শাস্ত্রধর্ম মতামত কতই প্রকার উঠিল ভাবত ভূমে হইল পুচন. আমাদের ড: ব আবে হ'ল না মোচন **দেই** দে দিনাতে ছটি প্ৰাঃ আহাৰ নিশিতে কাঁদিয়া পথ দেখি অনিবার।"

আর আর সহচবি ধরি গে বুটনেধরী
করি গে তাঁহাব কাছে জ্:থের বোদন
এ জগতে আমাদের কে আছে আপন
বিম্থ নিষ্ঠর ধাতা বিম্থ জনক ভাতা
বিম্থ নিষ্ঠর তিনি পতি নাম বাব—
আশ্রর ভাবতেখনী ভিন্ন কেবা আব ?
মার আর সহচরি, ধরি গে বুটনেধরী
করি গে তাঁহার কাছে জ্:থের বোদন ,
এ জগতে আমাদের কে আছে আপন ?

"ডেকেছি মা বিধাতারে কত শতবাব, পূজেছি কতই দেব, সংখ্যা নাহি তাব, তবু গো ঘুচিল না ভদমের শূল, অমরাবতীতে বুঝি নাহি দেবকুল! বাবেক বৃটনেখরী আয় মা দেপাই প্রাণের ভিতরে দাহ কিবা সে সদাই;

কাজ নাই দেখায়ে মা তুমি রাজ্যেষ্বী, হৃদয়ে বাঞ্চিবে তব বাথা ভয়ন্ববী। চিল ভাল বিধি যদি ৰিপ্ৰা কবিত. কাদিতে হতো না. পতি থাকিতে জীবিত. পতি, পিতা, ভ্রাতা, বন্ধু, ঠেলিয়াছে পায়, ठिटला ना मा राखमाछ। इ:शी बनाथाय।" শায় আয় শহচবি, ধরি গে বটনেশ্বরী করি গে তাহাব কাছে ছঃধেয় রোদন . এ জগতে আমাদের কে আছে আপন গ বিমুখ নিষ্ঠর ধাতা বিমুখ জনক ভ্ৰান্তা, বিমুখ নিষ্টুর তিনি, পতি নাম গাব— আশ্রম ভাবতেশ্বী ভিন্ন কেবা আর **?** "কি জানাব জননি গো ধ্রদয়ের ব্যথা---দাসীর(ও) এ হেন ভাগ্যনাহয় স্ক্রথা। कि स्वांजन ताला, किवा श्रवीला ब्रम्बी. প্রতিদিন কাঁদিছে মা দিন দণ্ড গ্রি। কেহ কাঁদে অন্নাভাবে আপনাব ভৱে. কাবো চক্ষে বারিধাবা শিশু কোলে ক'রে. কত পাপ-প্রোত মাতা প্রবাহিত হয়. ভাবিতে রোমাঞ্চ দেহ, বিদরে হানয়, হা নূশ স অভিমান, কৌলীক্ত আপ্রিত। হা নশংস দেশাচাব রাক্ষস-পালিত। আমাদেব যা হবাব হয়েছে জননি--কৰ ৰকা এই ভিকা, এ সৰ নদিনী।"

আয় স্বায় সহচবি, ধরি গে বৃটনেশ্বরী.
করি গে তাঁহার কাছে ছংগের রোদন,—
এ জগতে আসাদেব কে আছে আগন ?
বিমুথ নিষ্ঠব ধাতা, বিমুথ জনক লাতা,
বিমুথ নিষ্ঠব তিনি গতি নাম যাব —
আশ্রম ভাবতেথরী ভিন্ন কেবা আর।
আয় আয় সহচবি, ধরি গে বৃটনেশ্বরী,
কবি গে তাঁহার কাছে ছংগের রোদন—
এ জগতে আমাদের কে আছে স্থাপন ?

পরশ-মণি

()

কে বলে পরশমণি অলীক স্থপন ? স্থাই যে অবনীতলে, পরশমণিক জলে বিধাতা-নির্মিত চাক মানব-নয়ন। পরশমণিব সনে, লোহ-অদ প্রশন্ন সে লোহ কাঞ্চন হল প্রবাদ-বচন—
এ মণি প্রশোধার মাণিক ঝলসে ভার,
ববিষে কির্ণধারা নিবিল ভ্রন।
কবিব কল্লিভ নিধি, মানবে দিয়াছে বিধি,
ইহারি প্রশগুণে মানব-বদন
দেবতুল্য রূপ ধবি আছে ধরা আলো করি,
মানীব অলেতে মাথা সোনার কিবণ।

()

পরশ-মাণিক যদি অলীক হ**তৈ**,
কোথা বা এ শশবর, কোথা বা ভাহ্ ব কব,
কোথা বা নক্ষত্র শোভা গগনে ফটিত।
কে রাধিত চিত্র ক'বে চাঁদের জ্যোৎস্থা ধ'রে
তরতে মেঘেব অচে স্থেতে মাথারে
কোবা এই সুনীতল বিমল গগার জল
ভাবত ভূষণ কবি বাধিত ছভায়ে
প্রি দেগা'ত তককল নানা রঙ্গে নানা জুল
মবাল হবিন মুগে পৃথিবী শোভিয়া
ইন্ত্রধ্য আলো তুলে সাভায়ে বিহন্ধকূলে
ুক রুখিত শ্বিপুছে শশান্ধ আঁকিয়া
প

(0)

বিশ্বাছে বিপাতা যাই এ পরশমণি -হয়েছে এ মধীতল ন্ত্ৰেৰ উপমান্তল স্থাৰ আকৰ তাই হয়েছে ধরণী। নয়ন-মণির সংক কি আহে ধ্বণী-অঞ্চে. ना इब्र गानव-हिट्ड चाननमाविनी, বিট্পীতে পাতা হেলে ननीकाल भौन (थाल. চবেতে বালুকা ফটে তৃণেতে হিমানী. পিপীলি-শ্রেণীতে ধায় পক্ষিপাথা উচ্চে যায় কন্দরে ভুষাব পবে ঝিল্পকে চিরুণী। অরণ্য ক্জ্ঝটিময় তাতেও আনন্তয় জনস্ত বিভাৎলতা তমিসারজনী।

(8)

ইচাই প্রশম্পি পৃথিবী-ভিতৰে ইচারি প্রশ্ববে স্থায় স্থার গলে প্রায় প্রেমের হাব প্রায় অভারে, শিকাষে ক্রেমের বেদ গুচায় মনের ভেদ
প্রথম আহিক করে স্থাব সাগবে।
দক্ত এই ধরাতল, প্রেম ভোগবতী-জল
পবিত্র করেছে যারে খুলিয়া নিমারে,
য়ুগল নক্ষত্র ভূটি যে স্থানে বেডায় ছুটি,
স্থারূপে মন্ত্রে পথিবী-উপবে।
কোন্পুণো হেন নিধি মানবে পায় রে বিধি—
গেল চ'লে চিরদিন অই আশা গ'বে!

(**c**)

অন্পৰ্কামাণিক এই প্ৰশ-কাঞ্ন। ফুটায় মণি অতুল, স্থেক্সপ কভ দল ইছার প্রশেধবা আনি-৮-কানন মবি কি ককণা-সিন্ধ, জননী-বদন-ইন্দ দয়াল পিতার মুখ, জায়ার বদন, শত শশি-বশি-মাথা চাক ইন্দীবর আঁকা भारत यहार अहे नित्न यानन , স্বসা-মুথ নির্মল সোদরের স্বকোমল পবিত্র প্রাণয়পাত্র হীবক কাঞ্চন— এই মণি প্রশ্নে. হয় সুথ দ্বশ্নে. মান্ব-জনম দাব সফল জীবন।---কে বলে প্ৰশম্পি অলীক স্বপন ?

জীবন-মরীচিকা।

জীবন এমন ভ্ৰম আগে কে জানিত বে! হয়ে এত লাকায়িত কে ইহা যাচিত রে। প্রফল্ল যেমন হয়. প্রভাত্তে অকুণোদয় মনোহবা বশ্বরা কুহেলিকা আঁধাবে। ধরিয়ে অপূর্ব্ব বেশ. বারিদ ভ্ধর দেশ, বিতরে বিচিত্র শোভা ছায়াবাঞ্চী আকারে। ব্ৰহ্মাণ্ড ভবিষে বয়, কুমুমিত তক্লচয়ে. ভাবে মৃথ্য সমীবৰ মৃত্**মৃত্সঞ্জি।** প্রেমানদে অনর্গল, কলায়ে বিহল্পল. মধুময় কলনাদ করে কত প্রকারে। মন মুগ্র মায়াজালে, দেইরূপ বাল্যকালে, কত লুৱ আশা আসি, করে শ্লিগ্ধ আত্মাবে : নিতা স্থাে পরিপ্ল,ড" "পথিবী ললামভত হয় নিত্য এই গীত পঞ্চুত-মাঝারে !

ব্ৰগাও সৌবভ্যষ মঞ্কুল মনে ১য় भटन इत्र मगुम्य स्थामस मः मारत । ম্ব্যাকে তাহার প্র প্রচণ্ড রবির কর. থেমন দে মনোহর মধুরতা সংহারে। না থাকে কুহেলি সদ্ধ না থাকে কুন্ম-গন্ধ, না ডাকে বিহন্ধকল সমীরণ ঝঙ্কাবে। সেইরপ ক্রমে যুক্ত শৈশৰ যৌবন গত মনোমত দাধ তত ভাঞ্চে চিত্ত-বিকারে। স্তবৰ্ণ মেলেব মালা नए प्रोमाभिनौ जाना. আশার আকাশে আব নিতা নাহি বিহরে। ছিন্ন ত্যারের কায় वाला-वाङ्ग मृत्व यात्र. **जा**र्भमक्ष जीवटनव स्रक्षांवायु-श्रहादत्र । পড়ে থাকে দরগত জীৰ অভিলাণ যত. ছিল প্তাকাৰ মত ভগ্লগ্ৰাকাৰে। জীবনেতে প্রিণ্ড এইরপে হয় কত. মন্ত্র্যাদি-মনোবথ, গ নগ্ধ বিধাত বে। ধর্মনিষ্ঠাপর†ষণ সুচাক পবিত্র মন, বিমল স্বভাব সেই যুৱা এবে কোথা ৱে : অবস্ভাক লুষ্লেশ্ বিধিলে প্রবণদেশ, কলঙ্কিত ভাবিত ধে আপনাব আহাবে। বামাশজিক বামারার শুনিলে শত ধিকার জ্ঞলিত অথৱে যার সে তপদ্বী কোথা ৱে ৪ কোথা সে দয়া দ-চিত্ৰ সভল যাহার নিতা পরতঃথ-বিমোচন এ ছবত সংসারে ১ অভ্যাচাৰ উৎপাদন করিবারে সংযমন না কবিত যেই জন ভেদাভেদ কাহাবে। নামানিত অক্রোগ না জানিত ভোগামোদ. সে তপদ্বী মহোদয়-বাঞ্চা এবে কোথা রে। কত যুৱা যৌৱনেতে চডি আশা-বিমানেতে, ভাবে ছডাইবে ভবে যশঃপ্রভা-আনভাবে। ইশিবে কীৰ্নিব মঠ. স্থাপিবে মন্দলঘট প্রণত ধবণীতল দিবে নিতা পূজা বে। কেই বাজগতে ধল वीतवरम व्यश्नना হয়ে চাহে চনগেতে বাদিবাবে ধনা বে। यरनगहिरेख्यो त्कर, ভাবিয়ে অসীম স্নেহ. কত কবে প্রাণ দিতে স্বঞ্চির উন্ধারে। ারি চিত্রে অভিলাষ হয়ে সারদাব দাস. পিশে ক্লথে চিবদিন জমবুতা-সধা বে। ালের করাল থোতে. खारम गरव जीवर गरक **धरे** मर व्यागानुक शांगे थारक रकांशा रहा

কিশোৰ গাঞীবধাৰী व्यायमधा देन महावी. ক্ষদ্ৰ কালিদাস কত ডোৱে পাথাবে। কতই যুবতী বালা. গাঁথে মনোমত নালা পাজাইতে মনোমত প্রিয়তম স্বাবে। সদয় মাজিত ক'ৰে. মাচা কর প্রেমভবে. প্রিম্বদর্ভি-চিত্র ক'বে বাবে চিত্র-মাগারে। নববিবাহিত কত পেয়ে পতি মনোমত. ভাবে জগতেৰ স্থপ ভবিয়া ভাপাৰে। এই দ্ব অম্বলাব কিছ দিন পৰে আনৱ দেখ, মন্মভেদী শেন দেয় কত বাথ। রে। দেখ গে কেচ বা জাব হথেছে প্রসার. শুদ হয়ে মাল্যদাম শুন্তে আছে গাঁথা বে। মনোমত নচে পতি মবমে মবমে সঙা, উদ্যাপন কবিয়াছে পতি-স্থ আশা বে। কতালের আশৌলাদে দিবা-নিশি কেচ কাঁদে বিষম বৈধব্য-দশা-নিগ্নডেতে বাবা বে। দারুণ অপত্যতাপে, দেশ হে কেঃ বিলাপে আলাভাবে জননীৰ কোথা ৰক্ষ: বিদৰে। আব্ৰেণ্ডি জানিতাম পথিবী এমন ধাম. তা হ'লে কি পড়িতাম আনায়ের মাঝারে। কোথা গেল সে প্রবয় বাল্কোলে ন্ৰ্যয়, যে স্থাতা-পাশে মন বাধা ছিল সদা বে। সমপাঠা কেলিচক অভেদায়া হবিহব, এবে তাহাদেব সঙ্গে কতবাৰ দেখা বে। প্রস্পালের মত ক্ষাক্ষেত্রে অবিবত, স্বকার্য্যসাধনে রক্ত কেবা ভাবে কাছাবে। আহাপুন: কত জন, কবিয়াছে প্ৰায়ন, মউচভূমি প্রিহ্রি শুমনের প্রহারে ৷ ভাহাবাই সক্ষাৎ รรรสาสเราสาร প্রকাশে কচিৎ করু মুদ্রশ্যি মাথা রে। ८० वि८७ अर्विभा-छाप. আমারে চিল ক'ত সাধ. হেরিতে নক্ষ্য শোভা নালনভঃ-মাঝারে। গাগত নিধিতাকান, দিন দিন কতবার স্বপ্নে স্বপ্নে নমিতাম নদ ২দ-কাস্থাবে। বসন্ত ব্ৰহাকালে পিকবৰ, মেৰজালে, হেরিতে দামিনালতা, কি আনন্দ আহা রে। দে সাধ ভরত্বকল. এবে কোথা লকাইল. ্কে ঘচালে জীবনেব হেন বম্যধাধাবে। নিশ্বদ্ধ প্রিন্মন, স্বৰ্গবাদী সিংখাসন, পঞ্জিল করিল কে বে দয়টিতা অন্নারে দ

অশোক-তরু

(5)

কে তোমারে তক্বন, ক'রে এত মনোইর,
রাখিত এ ধরাতলে ধবা ধল ক'বে ?
এত শোভা আছে কি এ পৃথিবী-ভিত্বে ?
দেখ দেখ কি স্নার, পুপ্লপ্তচ্ছ থরে থর
বিবালে শাধাব পর সদা হাক্তভরে—
সিন্দ্রেব ঝাবা হেন বিটপী উপবে।
মরি কিবা মনোলোভা ভ্ভায়ে রয়েছে শোভা
আভা যেন উথলিয়া পভিছে অধ্বে।—
কে আনিল হেন তক পৃথিবী-ভিত্বে ?

()

বল বল তক্বর, তৃমি দে এত ফুন্সব
অন্ধবও তোমাব কি হে ইহাবি মতন
কিংবা শুধু নেত্র-শোভা মানন দেমন
আমি ছ:বী তক্বর, তথাপি মম অন্ধব
না জানি মনের স্থা, সংগোষ কেমন
তক্ষবর, তৃমি বৃজি না হবে তেমন
ব্ববীতে সদানক আছে এক জন—
না হয় সন্তাপে বাবে কবিতে ক্রন্সন।

(0)

জানিতাম তক্বব যদি হে তব জ্ঞান্তব দেখাতান একবার পৃথিবী তোমায়—
মানবেব মনভিত্রে কি আছে কোথায়।
কত মক, বাল্ঞুপ, কত কাঁটা কত কূপ,
ধুধ করে নিরবধি জন্ধ ঝটকায়—
সরসী নিঝার নদী কিছু নাহি তায়।
তা হ'লে ব্যিতে ত্মি, কেন তাজি বাসভ্যি,
নিত্য আসি কাঁদি বসি তোমাৰ গলায়।
তাজে নব ধরি কেন তোমার গলায়।

(8)

তুমি তক্ষ নিরন্তব আনন্দে অবনীপর, বিরাজ বন্ধুব মান্মে সঞ্জন-সোহাগে, তক্ষবর, কেই নাহি তোমাবে বিবাগে। পরশী করান পান, স্বরস স্থা সমান দিবানিশি বাবমাস সম অভ্বাতে— পবন তোমার ভবে যামিনীতে জাগে। স্রোভোধারা পরি পার, কল্কল্করি ধার, আাপনি বর্ষা নীরে ঢালে শিরোভাগে, ভক্রে বস্ফ ভোবে স্বেহ্করে আগে।

(1)

কলকণ্ঠ মধুমাদে, তোমাবি নিকটে আংদে শুনাতে আনন্দে ব'সে কৃত্ কন্ত্ বব;
তক্বন তোমার কি প্রথেব বিভব।
তলদেশে মথমল, তুণ কবে চল চল,
পতঞ্চ তাগাতে স্থেথ কেলি কবে সব,
কতই স্থেতে তক্ব শুন ঝিল্লীবব।
আসি স্থেপ পাতি পাতি, ছভাগে বিমল ভাতি,
থলোহ যথন তব সাজায় পলব—
কি আনন্দ তক্ব তোর ২গ অঞ্ভব।

('>)

তক বে আমাব মন, তাপদগ্ধ অহ্নগ,
কেহ নাই শোকানলে ঢালে বাবিধারা;
আমি তক জগতেব মেহস্থগাবা।
জায়া, বন্ধু, পরিবার, সকলি আছে আমাব,
তব্ এ সংসার যেন বিগত্ন্য কারা;
মনে ভাল কেহ মোরে বাদে না তাহাবা।
ও দোষ কাহাবো নয়, আমিই কলক্ষ্ম,
আমাব অন্তর হায়, কলংহতে ভ্রা—
আমি, তক, বভ পাপী, তাই ঠেলে তাবা।

(1)

বড় চংগী তক আমি, জানেন অন্তব্যামাঁ,
তোমার তলায় আসি ভাসি অক্ষনীবে,
দেখিয়া জীবেব স্থা ভবেন মন্দিরে।
এই ভিন্ন স্থা নাই, তক তাই ভিক্ষা চাল,
গাই যেন এই কপে কাদিতে গঞ্জীরে,
যত দিন নাহি যাই বৈতন্দী-তীরে।
এক ভিক্ষা আছে আব, অন্ধায়নি কেহ অ
আমাব মতন চংগী আবে এই ভাবে,

তক, তারে দয়া ক'বে তুমিও পরাণে।

নানা বিষয়

লজ্জাবতী লঙা।

(3)

ছ ৰো না ছ যো না উটি লজ্বাবতী লভা।

একাফ সঙ্কোচ ক'বে, এক ধাবে আছে স'বে
ছুঁয়ো না উহার দেহ, বাধ মোর কথা,
তকলতা যত আর, চেরে দেপ চারি ধাব,
বেরে আছে অহলাবে— উটি আছে কোলা ?
আহা, এইথানে থাক, দিও নাক ব্যথা।
ছুঁইলে নথের কোণে, বিষম বাজিবে প্রাণে,
ছুঁয়ো না ছুঁযো না উটি লজ্বাবতী লভা।
(২)

লজাবতী লতা উটি অতি মনোহব।

যদিও ফুলর শোভা, নহে তত মনোলোভা,
তব্ও মনিন নেশ মরি কি ফুলর।

যায় না কাহাবও পাশে, মান-মর্গাদাব আনে,
থাকে কাদালীব বেশে একা নিবন্ধন—
লজ্ঞাবতী লতা উটি মরি কি ফুলর।

নিখাদ লাগিলে গায়, অমনি শুকায়ে যায়,
না জানি কতই ওব কোমল অফব।
এ হেন লতার হায়, কে জানে আদির প্

হায় এই ভ্মজালে কত শত জন. দত্তে দত্তে ফুটে উঠে. व्यवनीय खल ल रहे. ভনায় কতই রূপ যশের কীর্ন। কিন্ত হেন গ্রিয়মাণ, সদা সক্ষচিত প্রাণ. বমণী পুক্ষগণে কে কৰে যতন ? পভাব মূচল ধীর. প্রকৃতিটি মুগস্তীব, वित्रत्न मधुवजायो मानमवञ्जन, কে জিজ্ঞাসি তাহাদেব কবে সন্থাবৰ ? সমাকের প্রাক্তাগে. তাৰিত অন্তবে লাগে. মেঘে ঢাকা আভাহীন নক্ষত্ৰ যেমন। ष्ट्रांचा ना উहात एमर कवि निवातन, লজ্জাবতীলতা উটি মানস-রখন :

জীবন-সঙ্গীত। ::

বলো না কাত্ৰ কৰে ব্যাজন এ সংসারে এ জীবন নিশার স্থপন, দারা পুত্র পরিবাব, তমি কার কে তোমাব. ব'লে জীব কৰোনাক্ৰন, মান্ত-জন্ম সাত এমন পাবে না আর. বাহৃদ্ভে ভূলোনারে মন: কাৰ যুদ্ধ হ'বে জায়. জীবাত্মা অনিতা নয়, অতে জীব কৰ আকিঞ্ন। কবোনাস্থের আশে, পরোনাচ্থেব ফাঁস, জীবনেব উদ্দেশ্য তা নয়. সংসারে সংসাধী সাজ, কবো নিতা নিজ কাজ, ভবের উপ্পতি যাতে হয়। দিন যায় ক্ষণ যায়. সময় কাহাবো নয়, বেগে ধায় নাতি রহে স্থির, সহায় সম্পদ বল. সকলি ঘুচায় কাল, আয়ু যেন শৈবালের নীর। যদ্ধ কৰ দুচ্পণে, সংসাব-সমবাঞ্চনে. ভয়ে ভীত হই(ও) না মানব; यात्र याद याक् श्राव, কৰ যদ্ধ ৰীৰ্ঘ্যৰান. মহিমাই জগতে জলভি। মনোহর মৃত্তি হেরে. ওচে জীব অন্ধকারে. ভবিষ্যতে ক'বো না নির্ভন্ন , ষ্পতীত স্থধের দিনে, পুন: আব ডেকে এনে, চিন্ধাক'রে হইও নাকাতব। श्रीध कार्या हु वह, সাধিতে আপন বৃহ, একমনে ডাক ভগবান. ধৰাতলে কীৰ্ত্তি ৰূপে, সকল সাধন হবে. সময়ের সাব বর্তমান। যে পথে ক'রে গমন. মহাজ্ঞানী মহাজন.

 ল°ফেলো-র্নিত "পাম আদক লাইফ"এর কাইকরণ।

হয়েছেন প্রাভঃম্মরণীয়,

শেই পথ লক্ষা ক'বে, স্থীয় কী ক্তি-প্ৰকা ধ'রে,
স্মান্ত্রাও হব বরণীয়।
সমন্ত্রাগর-তীরে, পদাস্ক অভিত ক'বে,
সামরাও হব হে অমর;
শেই চিহু লক্ষা ক'বে, অন্ত কোন জন পবে,
মংশাবাবে আসিবে সত্তব।
ক'বো না মানবগণ, বুণা ক্ষম এ জীবন,
সংসার-সমরাজন-মাঝে,
সঙ্গল করেছ যাহা, গাবন কবহ তাহা,
রত হয়ে নিজ কাজে।

পদোর মৃণাল।

())

পলেব মুগাল এক স্থনীল ভিগোলে ,
দেখিলাম সরোববে গন ঘন দোলে—
কথন ত্বায় কায়, কত্ ভাসে পুনবায়,
হেলে ছলে আন্সোধা তরত্বেব কোলে —
পলের মুগাল এক স্থনীল ভিলোলে।
খেত আভা স্থান্ন পাতা, পন শতদলে গাঁথা
উলটি পালটি বেগে স্বোতে ফেলে তোলে—
পদোর মুগাল এক স্থনীল ভিলোলে।
একদৃষ্টে কভক্ষণ, কৌত্কে আবশ মন
দেখিতে শোকের বেগ ছুটিল কলোলে—
পদোর মুগাল এক তর্দেব কোলে।

()

সহসা চিন্তাব বেগ উঠিল উপলি , প্র, জল, জলাশ্য ভলিয়াস্কলি, অদ্ধের নিবন্ধন, ভাবিয়া ব্যাক্ল মন. অই মূণালের মত হায় কি সকলি গ বাজা বাজমলিলাল रवरौरी (साठ:निवा সকলি কি ক্ৰম্বায়ী দেখিতে কেবলি গ অই মুণালের মত নিত্তে সকলি । व्यन्हे विद्यांशी यात्र. নাহিক নিস্তাব তার. কিবাপশুপকী আরে মানবমণ্ডলী ? লতাপত কীট সম মানবেরো প্রাক্তম कान त्कि यइ-वर्ण वीधा कि मक्षि ? . অই মূণালের মত হার কি সকলি ?

(0)

কোথা সে প্রাচীন ব্লাচি মানবের দল,
শাসন করিত যাবা অবনীমণ্ডল ?
বলবার্থ্য-পরাক্রমে ভবে অবলীলাক্রমে
ছডাইত মহিমার কিরণ উজ্জ্ল—
কোথা সে প্রাচীন ব্লাতি মানবের দল ?
বার্ধিয়ে পাষাপন্ত্রপ অবনীতে অপরূপ
দেখাইল মানবের কি কৌশল বল —
প্রাচীন মিসরবাসী --কোথা সে সকল ?
পড়িয়া বয়েছে ন্তুপ, অবনীতে অপরূপ
কোথা ভাবা, এবে কাবা হয়েছে প্রবল,
শাসন করিতে এই অবনীমণ্ডল ?

(s)

জগতের অলক্ষার আছিল যে জাতি,
জালিল উন্নতিদীপ অকণের ভাতি ,
অত্ল অবনীতলে, এখনও মহিমা জলে,
কে আছে দে নব বল্ল কুলে দিতে বাতি ?
এই কি কালেব গতি এই কি নিম্নতি ?
মাারাথন্ থাম পলি, হয়েছে আশান হলী,
গিবীশ বাধানে আজ পোএই কি নিম্নতি ?
যার পদচ্চিত্র থৈবে অল জাতি দ্য কবে,
আকাশ প্যোধিনীৰে ছভাইত ভাতি —
জগতের অলক্ষাব কোথায় দে জাতি ?

(a)

দোদিও প্রতাপ যার কোথার দে রোম ?
কাঁপিত যাহার তেন্ধে মহী দিল্ল রোম ?
ধরণীব দীমা যার, ছিল রাজ্য অধিকাব,
সহল বংশরাবদি একাদি নিয়ম—
দোদিও প্রতাপ আজিকোগার দে বোম।
সাহস ঐথ্যো যার ত্রিভ্বন চমৎকাব সে লাতি কোথার আজি কোথা দে বিক্রম,
এমনি অবার্থ কি বে কালেব নিঃম ?
কি চিক্র আছে রে তাব ? বাজপথ তুর্বে যাল
পৃথিবী বন্ধন ছিল কোথার সে বোম ?—
নিরতির কাছে নর এত কি অক্ষম ?
(৬)

আরবের পারফোর কি দশাএখন ৷ সে তেজ নাহিক আরে নাহি সে তর্জন! পৌভাগ্য কিবণজালে উচাবাই কোনকালে,
কবেছিল মহাতেক্তে পৃথিবী শাসন।
আরবের পাবস্তের কি দশা এগন।
বান্চিমে হিস্পানীশেষ পূর্কে সিদ্ধ হিন্দ্দশ কাক্ষের যবনরুনে করিল দমন, উভাসম অকলাৎ হইল পতন। বান ব'লে মহীতলে, যে কাণ্ড করিলা বলে, সে দিনেব কথা এবে হয়েছে স্থান।

(9)

আজি এ ভাবতে হায়, কেন হাহাপ্লনি
কলম্ব লিখিতে কাব কাঁদিছে লেখনী ?
১রজে তরঙ্গে নত পদ্মণালের মত
পভিষা পরের পায় লুটায় দরলী।
আজি এ ভাবতে কেন হাহাকারপ্লনি ?
৭গতেব চক্ষু ছিল, কত ব্যা ছভাইল,
সে দেশে নিবিড আজ থাঁধার বজনী –
পূর্বগ্রানে প্রভাকব নিস্তেজ যেমনি।
কি বীগ্য বাভবলে স্বধন্ত জগতীতলে,
ছিল যাবা আজি তারা অসাব তেমনি।
আজি এ ভাবতে কেন হাহাকাবন্দনি।

(b)

কোথা বা সে ইক্সালয় কোথা সে কৈলাস,
কোথা সে উন্নালয় কোথা সে উন্নাস

* প্রে বস্কুন্ত বাক্ত বিজ্ঞান কোথা সে উন্নাস
কোন্ত বাক্ত কাল্য কোন্ত কাল্য কি কাল্য
কোন্ত বাক্ত ক্লোলয় কোন্তা কোন্ত কি ক্লোলয়
কোন্ত বাক্ত ক্লোলয় কোন্তা কোন্ত কি ক্লোলয়
কোন্ত বাক্ত ক্লোলয় কোন্তা ক্লোলয়
কোন্ত বাক্ত ক্লোলয় কোন্তা ক্লোলয়
কোন্ত কাল্য কোন্ত কোন্ত কাল্য কোন্ত কোন্ত কাল্য কোন্ত কোন্ত কাল্য কোন্ত কাল্য কোন্ত কাল্য কোন্ত কাল্য কোন্ত কাল্য কাল্য বাক্ত কাল্য কাল্য কাল্য বাক্ত কাল্য কাল্য বাক্ত কাল্য বাক্ত

নিয়তির গতিরোগ হবে না কি আব ? উঠিবে না কেচ কি রে উজলি আবার ? দিবর পারস্থ ভাতি গিথীক রোমীয় জাতি ভারত থাকিবে কি বে চিব-অন্ধকাব ? শাপান জিলণ্ডে নিশি পোহাবে এবার ? মহ আশা প্ৰিশ্ৰমে, থাওয়া নিষ্ধতি ক্ৰে উঠিছা প্ৰবল হ'তে পাবে না কি আৰি, 'মই মুণালেৱ মত স্থিৱে প্ৰহাৱ ? না জানি কি আছে ভালে ভাই গোমা এ কাফালে মিশাইছে অঞ্পাৱা ভবেতে তোমাৰ, ভাৰত কিৱণময় হবে কি আবাৰ ?

()0)

তোৰ তবে বাদি আয় ফ্ৰামী-জননি, কোমলকুমুম-আভা প্রফল-বদ্নী। এত দিনে বৃঝি স্তি, দিবিল কালেব গভি হ'লে বঝি দশাগীন ভাবত যেমনি। সভাজাতি-মাঝে ত্যি সভাতার থনি। **ংলো** যবে মহীতলে রোম দগ্ধ কালানলে. তমিই উজ্জল ক'ণে আছিলে গ্রণী. বীবমাতা প্রভামনী স্রচিনযৌবনী। ঐশ্বৰ্যাভাগাৰ ছিলে কড়ই যে প্রস্বিলে. শিল্প নীতি এতাগীত চকিত অবনী— তোর তরে কাঁদি আয় ফ্রাদী জননি। বঝি বা পড়িলে এবে কালের হিলোলে, প্ৰান্ত মুণাল মুখা ভব্ৰের কোলো।

স্বৰ্গাবোহণ।::

(>)

"থোল থোল দাব পোল জন্তগতি হিরনায় জ্যোতি: যাব" বলিল কুডাল. ডাকি অস্কুচবে মুখেতে প্রীতিব ভাব। "সংবরি সংসার. লীলা আপনার. শামগস্দন আদে. সন্তায়ি আনেবে. লও রে ভাগাবে. বাণী-প্ৰস্তুগণ-পাশে। পবিত্র কান্ম. কবি-কঞ্জধাম, অমর-ভবনে ধাহা, নিবজন স্থান সদামধ্যর ' দেগাও উহাবে তাহা;--

মাইকেল মধুস্দন দত্তের মৃত্যু উপলকে।

ষাও যাও সবে শাও জভগতি স্থে বংশীধ্বনি কর, সুন্দ্ৰ মালিকা কুমুমে গাঁথিয়া মন্তক-উপরি ধর; সংসার-কারাতে ভুঞ্জি বহু হুঃপ শ্রীমধু ছঃথেতে আসে, যশোগীত গাও, ত্বাকবি যাও লও কবিকুজবাদে।" (२) উত্তর-তোরণ খুলিল ম্বরিতে স্কীত ঝন্ধারে ধায়, দেবদূত সঙ্গে দিগঙ্গনাগণ রঙ্গে যশোগীত গায়। "এস এস স্থংখ বাণী-বরপুত্র বক্ষের উজ্জল মণি, স্থাতে পালিত স্বভাবেব শিশু কল্পনা-হীবার ধনি , বাল্মীকি হোমর স্থমন্ত্রে দীক্ষিত श्यम मधुत्र श्रृञ्जीभात्री, स्वजन-जन्न অকাল-কোকিল অ-নীর দেশের বারি, কবিকুঞ্জ-ধামে এদ ভাগ্যবান্ চিরস্থে কাল হর, চির-আকাজ্ঞিত, চিরজীবী হয়ে জয়মাল্য শিরে পর।" ঘেরিয়া সকলে বলিতে **ব**লিতে মণ্ডলী করিয়া আসি, দিগক্ষাদল কুস্থমের দামে, শীৰ্য সাজাইল হাসি। (0) কবি-কুঞ্জবনে স্থীগ্ৰ চলে কলকণ্ঠ ঝরে স্থরে, কুস্থম-বাসিত यूभन भन्ध স্থগন্ধ বিতরে দূরে। ঘন-কুত্ধবনি ভ্রমর-ঝঙ্কার খামার হুন্দর তান , অফুট কাকলী বেণু∙বীণা-স্কত পুলকিত করে প্রাণ। ভূলে মর্ত্তাশোক ম মধুমত্ত কবি মধু সে আখাদ পায়,

অতুল আনন্দে নয়ন বিজারি কবি-কুঞ্জপানে চায়। কলকণ্ঠ সবে চাবিপাশে বামা মধুব কীর্ত্তন করে, ভ্রাণে স্থ্বাসিত আকাশে প্ৰনে মধ্র সঙ্গীত ঝরে। কবি-কুঞ্জ ধামে যবে উতরিলা শরীরে রোমাঞ্ধরি, শ্ৰীমধুস্দন" "কবি ধ্রুত্মি ধ্বনিল কানন ভরি। (s) ক্বিক্জ সেই স্দামধুময় সুমিষ্ট সকলি তায়, मक नि यू सद সভাবেব গুণে ক্ষণে রূপভেদ পায়,---তহু মনোহর এই ইন্দ্ৰসূ গগন উজ্জ্বল কবে, ক্ষণপরে এই ঝলাকে ঝেলকে বিজলী স্হাস ধরে। শরতের শশী সভত হৃদ্ব সুনীল অম্বরে ভাসে. কুন্মুমেব রাশি সভত সুনার ভক্-কোলে কোলে হাসে। কুস্থমের নীব স্বভাবের গুণে, কীর সম শোভা পায়, नमी नम वाबि অমৃত সঞ্চাবি, প্ৰবাহ ঢালিয়া যায় ; নিবথি **জগতে**, মধুময় যত नकलि (मथात कला, অশোক বাসনা, আতপ অনল, গিরি তক বাযুজলে। (c) লীলা দান্ধ করি হ'লে **অব**স অহে বঙ্গকুল-রবি, থাকিব বাঁচিয়া ষত দিন ভবে ভাবিব তোমার ছবি ;— আকৰ্ণ-পুরিত **সেই নে**এফ স্ত্রংরঞ্জন ভাণ, মধুর ভাও:া মধুচক্র সহ

সবল কোমল প্রাণ;

আ'নন-লহবী ভাষার নিঝ'ব শোভিত আশার ফলে. উৎসাহ-ভাগিত বদন-মণ্ডল পঞ্জ-বান্ধব কুলে; বীর অবয়ব. বীরভাবা-প্রিয় গউড়-সন্ততি-দার, প্রিয়ংবদা স্থা প্রণয়ের তক কামিনী-কণ্ঠের হার; স**াহিত্য-কল্ম**মে প্ৰমন্ত মধুপ. বঙ্গের উজ্জ্বল রবি: তোমার অভাবে দেশ অন্নকার শ্ৰীমধুস্দন কবি।

(15)

গেলে চলি মধ কাঁদায়ে অকালে পাইয়া বছল কেশ. ক্ষিপ্তগ্রহপ্রায় ধরাতে আংসিয়া জলিগাহইলাশেষ: ছিলে উদাসীন. रगरन डेमामीन. জন্মাল্য শিরে পরি. অনাথ ছটিরে কার কাছে বল গেলে সমর্পণ করি: ভেবেছিলা জানি তমি গত যবে গউড়-বাসীরা সবে. অনাথপালক. তোমার বালক অক্তে তুলিয়া লবে; इरव कि स्मि मिन এ গৌড-মাঝে পুরিবে তোমার আশা ৷ দিয়াছ ভাণ্ডারে. বুঝিবে 奪 ধন উজ্জল করিয়াভাষা। হার মাভারতী চিরদিন তোর কেন এ কুখ্যাতি ভবে। (व अन (मविदव ও পদযুগল (मई (म पत्रिक्त करत।

বিভাসাধর।

(রচয়িতা কর্ত্তক পরিবর্ত্তিত

(3)

ফুরাল বঙ্গের লীলা-মাহান্ত্য সকলি—
হরিল বিভাগাগরে কাল মহাবলী।
হারালে মা বসভূমি, পুলরত্বে আজ,
বিশীর্ণ বিমর্থ ভূংবে বঙ্গের সমাজ!
কি মহা প্রাণ ল'ঙ্গে জ্যোছিল ধীব,
কিবা বিভা—বুদ্ধি-প্রভা—ককণা গভীর।
বিভার সাগব গ্যাতি—আবো মনোহব
বিশাল উদাবিচিত্র দ্যার সাগর।—
তেমন সন্তান মা গো কে আর তোমাব গ্

কাঁদিছে হের গো তাঁবে করিয়া অরণ,
দরিজ কালাল হংবী কত শত জন;—
কেবা আর দিবে আরে—কে ঘৃচাবে হুণ,
দরিজ হংবীরে হেরে কে চাহিবে মুধ!
কত রাজা রাণী আছে এ রাজ্য-ভিত্তর,
কালালে করিবে আর কেবা সে আদর।
মানব-দেহেতে সেই দয়া মূর্তিমন্,
সার্থকৈ তাঁহারই জন্ম যশ: কীর্তিমান্—
প্রাতে নিত্য অরণীয় গাঁব গুণগান!

(৩)
আপনার বেশ-ভ্যা সামান্ত আকার,
দেখিলে পরের তুঃখ নেত্রে জলভার !
সমাজ-পীডিত জনে করিতে মোচন
জীবন উৎসর্গ নিজ করিল যে জন,
সমাজ-পীড়িত জনে করিতে উদ্ধার;
আপনি সহিলা নিলা কত তিরস্কার;
ঋণে বন্ধ অবশেষে তরু দৃঢ় পণ,
সঙ্কর-সাধন কিবো শরীর-পতন —
এ হেন স্বপুক্ষ-সিংহ জন্ম মা ক'জন ?

(৪)
অবিতীয় বাদালা-ভাষার শিক্ষা-গুরু —
বর্ণমালা হ'তে বদ-দাহিত্যের তরু অহন্ত-অজ্ঞিত ধার, বার প্রতিভাগ্ন উজ্ঞল বাদালা ভাষা প্রথর প্রভাগ। বালক বৃদ্ধের মূথে নাম ঘরে ঘরে, জীবন্ধ স্থাচির কীর্তিরবে যার পরে। উপাধি উল্লেখ যার নাম পরিচয়, ধন্ম বঙ্গমাতা গর্ভে ধর এ তন্য়!— কর্ডিফ্ কার এত কালবক্ষোময়? (৫)

খাধীন খন্তন্ত্ৰ চিত্ত কাহার তেমন ?
দর্প নির্জীকতা বীগ্য—বে কিছু লক্ষণ
তেজীয়ান পুরুষের দবই ছিল তীর।
তৃণজ্ঞান প্রদান অবজ্ঞা যেথার—
যেতাক-প্রদান (ও) গর্বের ঠেলিত হেলার!
হেন পুত্র হার মাতঃ, হারালে কোথার?
হারালে কোথার পুত্র হেন পুণ্যতম,
আাত্মা বীর সত্য আর সাধুতা-আশ্রম—
হদর বাহার দরা—সাগরের সম।

প্রচণ্ড উত্তাপ-দগ্ধ ভারত-গগন
সকলি অসাড তার নিম্পান বেমন,

হুর্জন্ন কলির দর্পে- ধন উপার্জন।
আর পদ-অবেষণ, শুধুই এখন
কার্য্য ভূ-ভাবতমানে — তব্ও বে আজ
তাহার ভিতরে দীপ্ত করিছে সমাজ,
মহাপ্রাণ— তুই এক—বিহাং বেমন
চকিতে চমকি দিক্ করায় দর্শন,

হে বিধাত: সে কি ওহে ভাবী ফুলক্ষণ ?

(৭)

এ হেন অদিনে জন্মি অতি হৃ:ধিকুলে,
আপনার কীর্ত্তিধজা নিজ হত্তে তুলে,
পবিত্র করিয়া তায় জগৎ-পূজায়,
স্থাপিলে শিশ্বর-পরে সমাজ-চূডায়,
অসামান্ত ধিজবর !—তব দেব-দেহ
মহণেও বঙ্গবাসী ভূলিবে না কেহ।
অমর তোমার সেই থর্ক দেহ-চাট,
সেই দয়াপ্র নেত্র—বিশাল ললাট!
বজের হৃদয়ে নিত্য করুণার পট!
দরিত্ত-সন্তান হ'য়ে জিনিলে স্মাই।

কোন একটি পাখীর **শু**তি।

ডাক্রে আমারর পাণী ডাক্রে মধুর। শুনিয়ে জুড়াক প্রাণ, তোর স্থলনিত গানু, অন্যতের ধারা সম পড়িছে প্রাচুর। আবাব ডাক বে পাণী ডাক রে মধ্র। বলিয়ে বদন জুলে, বসিয়ে রদাল-মূলে দেখিয় উপরে চেয়ে আশায় আত্র! ডাক্রে আবার ডাক্ স্মধ্ব স্থর।

(२)

কোধার ল্কায়েছিলি নিবিড় পাতার,
চকিত চঞ্চল আঁথি না পাই দেখিতে পাথী,
আবার শুনিতে পাই সনীত শুনার।
মনের আনননে ব'দে তকর শাধার।
কে তোরে শিধালে বল এ সদীত নিরমল?
আমার মনের কথা জানিলি কোধার
ডাক্ রে আবার ডাক্ পরাণ কুড়ার!

(0)

অমনি কোমল খবে দেও বে ডাকিত,
কথন আদৰ ক'বে কড় অভিমানভৱে,
অমনি ঝকার ক'বে লুকারে থাকিত,
কি জানিবি পাথী তুই কত দে জানিত!
নব অস্বরাগে যবে ডাকিত প্রাণবল্লভে
কেডে নিত মন প্রাণ পাগল করিত;
কি জানিবি পাথী তুই কত দে জানিত!

(8)

ধিক মোরে, ভাবি তারে আবার এখন!
ভূলিয়ে সে নব রাগ ভূলে গিয়ে প্রেমরাগ,
আমারে ককীর ক'রে আছে সে যথন,
ধিক্ মোরে ভাবি তারে আবার এখন!
ভূলিব ভূলিব করি ত্রু কি ভূলিতে পারি
না ভানি নারীর প্রেম মধুর কেমন;
তবে কেন সে আমারে ভাবে না এখন!

(()

ডাক্রে বিহণ তুই ডাক্রে চতুর,
ভাজে শুর্ দেই নাম, প্রা তোর মনস্থ দ
শিথেছিদ্ আর যত বোল স্থমগুর ,
ডাক্রে আবার ডাক্ মনোহর স্থর!
না শুনে আমার কথা, তাজে কুস্মিত ল:।
উড়িল গগন-পথে বিহণ চতুর;
কে আর শুনাবে মোরে দে নাম মধুর?

প্রিয়ত্তমার প্রতি।

প্রেম্বাস রে. অধীনেরে জনমে কি ত্যঞ্জিলে ? কত আশা ভালবাসা সকলি কি ভলিলে ? ष्यहे (मथ नवघन, গগনে আসিয়ে পন: মৃত্যুত্ত গরজন ওক ওক ডাকিছে. দেখ পুনঃ চাঁদ আঁকা. ম্যুর খুলিয়ে পাখা, কদম্বের ভালে ভালে কুতহলে নাচিছে। পুনঃ সেই ধরাতল, পেয়ে জল স্থাতিল. মেছ ক'বে তণদল বকে ক'বে রাখিছে. হের প্রিয়ে পুনরায়, পেয়ে প্রিয় ব্বধায়, যমনা-জাহ্নবী-কান্বা উথলিয়া উঠিছে। চাতক তাপিত-প্রাণ, পুলকে করিয়া গান. দেখ রে জলদ-কাছে পুনরায় ছটিছে। প্রেম্বসি রে স্থগোদয়. অধিল ব্ৰহ্মাণ্ডময় কেবলি মনের হঃথে এ পরাণ কাঁদিছে। ()

অই পুন: জলধরে বারিধারা ঝরিল। লতায় কুমুমদলে, পাতায় স্বসী-জলে. নবীন তুণের কোলে নেচে নেচে পডিল। ভামিল জন্দর ধরা. শোভা দিল মনোহবা. শীতল সৌরভ-ভরা বাসে বাযু ভরিল। মরাল আনন্দ-মনে. ছটিল কমল-বনে. **हक्षण मुनान पन शीरत धीरत छनिन.** বক হংস জলচর. ধৌত করি কলেবৰ কেলি-হেতু কলরবে জলাশয়ে নামিল। দামিনী মেখের কোলে বিলাসে বদন খোলে ঝলকে ঝলকে রূপ আংলোক'বে উঠিল। এ শোভা দেখাৰ কারে, দেখায়ে সস্তোষ যারে. হার সেই প্রিয়তমা অভাগারে ত্যজিল।

(0)

ত্যজিবে কি প্রাণস্থি তাজিতে কি পারিবে ?
কেমনে সে স্থেলতা এ জনমে ছিঁ ভিবে ?
সে বে স্থেম্মর বেরিরাছে সমুদ্র
প্রকৃতি পরাণ-মন কিনে তাহা তুলিবে ?
আবার শরৎ এলে, তেমতি কিরণ চেলে,
হিমাংও গগনে কি রে আর নাহি উঠিবে ?
বসস্তের আগমনে, সেরূপ সন্ধার সন্দ,
আর কি দক্ষিণ হঁতে বাগু নাহি বহিবে ?

আর কি রজনীভাগে, সেইরপ অহ্বাগে কামিনী রজনীগদা বেল নাহি দটেবে ? প্রাণেষরি ! পুনর্কার, নিনীথে নিজন আর ধরাভল সেইরপে নাহি কি রে থাকিবে ? জীবজন্ধ কেহ কবে কথন কি কোন রবে, ভূলে অভাগার নাম কঠেতে না আনিবে ? প্রেয়সি বে মুধাময় মেহ ভূলিবাল নয়, কাদালি কাদালি শুধু পরিণামে জানিবে ।

অই দেখ প্রিয়তমে বারিধারা ঝরিল। শরতে স্থন্দর মহী স্থপা মাথি বসিল। হরিৎ শক্তের কোলে मिथ (त मक्षती (मोरन তমুচ্ছটা তাহে কিবা শোভা দিয়ে পডেছে। বহিলে মুতল বায়. ঢালিয়া ঢালিয়া তায়. তটিনী তরঙ্গ-লীলা অবনীতে থেলিছে। গোঠে গাভী বুষ দনে, চবিছে আনন্দ-মনে হর্ষিত তরুলতা ফলে ফুলে সেক্তে; সরোবনে সবোকহ. কুমুদ কহলার সহ শরতে স্থল্য হ'য়ে শোভা দিয়ে ফটেছে। আচ্মিতে দর্শন. ঘন ঘন গরজন, উডিয়ে অম্বরে মেব ডেকে ডেকে চলেছে। প্রেয়সি রে মনোহরা এমন স্থাবের ধরা, বিহনে তোমার আজি অন্ধকার হয়েছে।

(**c**)

আহা কি স্থন্দর বেশ সন্ধ্যা অই আইল। ভাঙ্গা ভাঙ্গা মেঘগুলি ভামুর কিরণ তলি পশ্চিম-গগনে আসি ধীরে ধীরে ছাইল। বিচিত্র বরণ ধরি অন্তগিরি আলো করি. বিমল আকাশে ছটা উথলিয়া পডিল। গোধলি-কিরণ-মাথা গৃহচুড়া ভক্ষাথা প্রেম্বসি মে মনোহব মাধুবীতে পূরিল। কাদম্বিনী ধীরি ধীরি হয়, গজ, তক, গিরি আঁকিয়ে স্থন্দর করি ছডাইতে লাগিল। দেখ প্রিয়ে সূর্য্য-আভা গন্ধাজলে কিবা শোভা স্বর্ণের পাতা বেন ছড়াইয়া পড়িল। কুষক মঞ্চেব পরে, উঠিল আনন্দ-ভরে. চঞ্পুটে শস্তাধ'রে নভশ্চর ফিরিল। এ সুগ-সন্ধায় প্রিয়ে, मार्थ जनाक्षमि पिरम् শ্ন-মনে নিরাসনে এ অভাগার্হিল।

()

আজি এ পূর্ণিমা-নিশি প্রিয়ে কারে দেখাবে. কার সনে প্রিয়ভাষে দেহমন জুড়াবে ? পূর্ণবিম্ব মনোহর, এখনি বে সুধাকর, পুর্বাদিকে পবকাশি স্থারাশি ছড়াবে! শেতবর্ণ থরে থরে. এখনি যে নীলাম্বরে. আসিয়া মেথের মালা স্থাক্তে সাজাবে। তক গিরি মহীতল. শিশির আকাশ জল ठारात्र रकीमृतीमाथा कारत आजि रमशारत. প্রেম্বসি অঙ্গুলি তুলি কুমুম-কলিকাগুলি. শিশিরে ফুটিছে দেথ কারে আজি স্থবাবে— "অই দেখ চক্ৰবাক. ডাকে অমঙ্গল ডাক" ব'লে হুধাইবে কারে কে বাসনা পুরাবে ? करत्रिक्त (गरे सन. তহু মন সমর্পণ, তারে কাঁদাইলে, হায়, প্রণয় কি জুডাবে?

কুহুস্ব।

অই কুছরিল পিক ললিত উচ্চোদে। হিমশ্বতু অবসান, আকুল পাখীর প্রাণ হৃদয়ের বেগ তার হৃদি-তটে রয় না।— হায় বদ-হৃদি কেন অইরপে বয় না।

কি কৃছ ডাকিল পাথী বলিতে না পারি! প্রকৃতি কুন্তুল মারি, নব কিশলয়ে সারি, হাসির তরক ভোলে, অধ্রেতে ধরে না!— অমনি হাসিতে বদবাসী কেন হাসে না!

শুনিতে দে মধুময় কোকিল-কাকলী, অচেতন মলয়-বায় সেও বে ছুটিল হায়! ছুটিল কুকুম-বেগু, দেও ধৈগ্য মানে না। অমনি আবেগ-বোত বঙ্গে কেন ছোটে না?

তৃমিও কি সবোবর অই কুছখরে চলেছ লহরী তুলে, মুগুরিত তক্ষ্লে, উত্তলা প্রাণের কথা জানাতে তাহার ?— বঙ্গের নাহি কি আশা জানাতে কাহার ?—

কল কল কল খবে তুমি, প্রবাহিণি, ছুটেছ সাগর-পাশে, মাতিয়া কি অই ভাবে, বলোনা লোকি আখাসে ? বলোসে কাহিনী, শুনায়ে আচল বলে কর চিরঞ্জী। জডে চেতনের ভাষা বুঝিয়া চেতিলু—
কি বলিছে কুছমরে কে বুঝায়ে দিবে নুরে,
ধরণী চঞ্চল করে কি কথা এমন বুল্লের
বনের পাথীব খরে চকিত ভুবন
নাহি কি এ বঙ্গে হেন কোন প্রা
স্থারি আশায় লতা, শুনায় অম
অমনি নিগ্ডভাবে ?— নাহি কি
ক্রাম-ক্রেণানো কথা কাহার(ও)
হাসি কালা কি উলাস নাহি কি
কাহার (ও) হুগরমাঝে, অমনি ধানিতৈ বাা
বঙ্গের অন্তর ভেনি উচ্ছাস তুলিলা ?
হাসে, কানে, ভাসে বন্ধ উৎসাহে ভুবিষ
কে আছে হে ক্বিকুলে গভীর-নুদ্র :

কে আছে হে ক্ৰিকুলে গভীর-নুদ্ধ: গাও একবার শুনি, জীবন মার্থক গা অমনি মধুর স্বরে গভীর উচ্ছাুস, ঘুচায়ে এ গউডের প্রাণের হুতাশ!

উচ্চতানে বদপ্রাণে মিশাইয়া প্রাণ, প্রাচীন যুবক জনে, লও হে আশার <mark>বুর্ম</mark> উন্মত্ত করিয়া গানে কুহক দেখাও;—— প্রভাতের জ্যোতি বদ্ধ-নিশিতে বিশাও।

বধির বলের শ্রুতি শুনাও বিদায়ি,—
পরম্পারে রাখি ভর পাষাণে পারাণ ব
কিরুপে "মিশর-স্তন্ত" মিলনের জোবে
বিরাজে অনন্ত-কোলে বিনা অস্থা ভোগে

ভ্ধর করিছে চূর্ব সিন্ধুর সলিল ক্রিটি বল হে কিসের বলে, সে সলিল্লুই চিলে, দিন দিন পলে পলে—না হয় শিথিব। জলে জলকণা বাধে কি গড়ীর শিলা!

কার হৃদে বঙ্গে হেন তরক থেলায় ? ু
দেপাও হৃদয় পুলে, গউড় ঘাউক পুলি,
দে তরক শ্রোত মিলে তাহ্নক তেনা
তিন ও কোকিলগুনি প্রকৃতি বেনা

না যদি ভাসাতে পার উৎসাতে বৈ হাসাও হে বলে তবে, নিগৃঢ় বছু দ বস-হদ্যের নিলা করি উল্লোচন দিন হাসিলে পাসরে ব্যথা গোলামেন ধে রদে হাসাতে পার হাসাও উচ্চেতে;
বেন সে হাসিব সনে, হাসে সব দুলাননে
হাসে যথা সক্তম্বরে মহী পাগলিনী—
কে জানো হে বঙ্গ-কবি, গাও সে কাহিনী।
বে হাসি-মণ্ডে নাই বাসির আঘাণ,
সৌরভে পরাণ ভবি, হোটে জীবনের তরী
বে হাসি-ডবলে ভাসি কালের পাথাবে।—
ভাসিত বে হাসি "বোম" "হ্রেসের" তারে।

বে হাসিতে প্রভাকর উজলি গগন, প্রাবৃটের কাল ঘন করে প্রিয়দরশন করে চাক গুলা তক গহরে কানন— তেমতি হাসিতে ফুল কর বল-জন।

না য'দ হাদাতে পার সে গভীর বেগে, গাহিলা করুণ রবে, পরাণে কাঁদাও সবে বঙ্গবালার বৃদ্ধ যুবা শিথ্ক কাঁদিতে— হুদি ভ'রে জীবনের উচ্ছাদ তুলিতে।

ভেবো না হে বঙ্গনারি নিবারি তোমায়
পাতিতে দে চাক্লাদ—নেত্র-কোণে অর্দ্ধ-ছাদ
অন্ত অর্দ্ধ ওষ্ঠাধরে মধুব মেলানি!
দে হাসির অমিয়তা ভেবো না না জানি।
ভেবো না তকণ মুবা কিবা হে প্রাচীন,

নিবারি ভোমায় ভাহা নিতা তুমি হাস যাহা সে হাসি হাসিয়া তব পরাণ জ্ডাও, যুবতী প্রবীণা কিবা কিশোবে ভ্লাও।

ভেব না জ্বানি না জ্বামি কিবা সে মধুব শিশু, অধরতলে হাসিব অমিয়া ছলে ঢালে যাহা ধরাতলে জীবন জীয়াতে। ঢেলেছি সে সুধারাশি ভাগিত হিয়াতে।

ভেবো না জানি না বদ্দ কাঁদে নিরস্তর। আপান আপন তরে ক্ষুদ্র শোক-ভাপভরে ব্যুব ব্যুব ভাদা ভাদা কত নীর-হার! বঙ্গেতে আছে হে জানি শোকের সঞ্চার।

া না চাহি সে কারা হাসি সে উৎসব রোলে, মাদকতা নাহি তার বহুগার না চলার স্কুদয়-পাথার তার উথলিত হয় না! দেবথাতে বিনা গ্রীমে স্লিঞ্চ নীর বয় না। অসার নিঃথোত এই বদের হৃদয়! হাসিতে কাদিতে প্রাণে গভীরতা নাহি **জা**নে না জানে উৎসাহবাণে প্রাণের প্রলয়। জগৎ-ভাসানো বেগ বঙ্গেতে কোথায়?

বহে যদি সে তরণ কাহারও দৃধ্যে, গাও হে তবে সে গীত ভনায়ে কর জীবিত, নি:মোত বদের স্থাদি মোতেতে ডুবাও— বহস্ত রোদন কিংবা উৎসাহে ভাষাও।

এস ভ্রাতঃ কবিকুলে আছ কোন্জন!
ভন হে গণ্ডীর খর কি ঝরিছে মনোহর
কোকিলের কুত্রবে!— অমনি কীর্ত্তন
না শিধিবে ধত দিন ছেডোনা বাদন।

হে কামিনীকুল, মৃত ব**দের পী**য্য ! কব পণ শিথাবারে পতি-পুত্র <mark>তনয়ারে</mark> সফল করিতে এই কবির স্বপন— রেখো মনে ভৌপদীর বেণী-ধাধা পণ।

তুলো না ও রুহ্বর তুলো না আমার ! হুদরে সাথিয়া মালা দিলাম বৈশাথী ডালা বাদি ব'লে অনাঘাত ফেলো না ইহায়।— হায় বে নবীন দাম বঙ্গেতে কোথায়!

হে বদদর্শন-প্রিয় ভাষিনী বতেক ! কারে সম্বোধিব জার লইতে এ উপহার বাকা টাদ থাকা যার হৃদয়-রাকায় সমর্পিব ভাবই করে শ্রিয়া স্বায় — ভূলো না ও কুত্রব—ভূলো না জামায় !

কমল-বিলাদী।
আহা মরি কিবা দেখিত হন্দর
মধুর স্থপন-লহরী!
নবীন প্রদেশে নবীন গগন,
মধুব মধুব শীতল পবন,
সরসে সরসে নীরদ-বরণ,
সবিদে ভ্রিছির।

কত সরোজিনী সরোবরপবে, পরিমলময় সদা নৃত্য করে, ফুটে ফুটে জলে শত থরে থবে, অপুর্বা সুবাস বিতরি।

হেমচক্রের গ্রন্থাবলী

সবোবর-তীরে ভাগেতে বিহ্নল, ভ্রমে কত প্রাণী হেরে সে কমল, পরাণ শরীর স্থবাদে শীতল বাজায়ে বাজায়ে বাঁশরী।

ল্মে কন্ত স্থাথ কন্ত সে আনন্দ, নেন মান্তোগারা লভিগ্না স্থান্ধ, স্বোব্যে পশি পিনে মকরন্দ— চিন্তা শোক তাপ পাস্রি।

ভালে পদাকলি ভালে পদানাল, ঢালে পদামধু পূর্ণ করি গাল ; ভধ্যে সুরুস নবীন মুণাল কতই যতনে আহরি।

জানন্দে বিঘোর মধুমত মন ভ্যন্তে বারি পুন: উঠে কতক্ষণ ভীরে বসি ধীরে সেবে সমীরণ— হ্যদয়ে স্থের লহরী।

পুন: গিয়া জলে ভোলে পন্দল, কোরক বিকচ নলিনী অমল; মক্রন্দ ল'য়ে ঢালে অবিরল প্রিয়া প্রিয়া গাগরী।

পুন: উঠে তীরে মৃত্মন্দ বার, ধীরে ধীরে সব তঙ্গতলে ধার নিকুঞ্জ ছাডিয়ে তথন সেথান প্রবেশে কতই সুন্দরী।

মধুমাথা হাসি বদনে বিকাশ, পদামধু বাসে পরাণ উল্লাস, পদামধু পিয়ে মিটায়ে পিলাস— কুবলন্তে বান্ধে কবরী।

বিছায়ে কোমল কমল-পাডাগ, ফুশীতল শয়্যা ভূতলে সাজাথ, চাকু মনোহর উপধান তার গ্রথিত নলিমী-মঞ্জরী।

ভক্তলে ভলে হেন মনোহর কমলের শ্যা কোমল স্থলর; হুগ্ধকেনমিভ স্থচার অপর বেন রে মেদিমী-পরি। এরপে পাতিয়া কুম্ম-শ্যন, হাসিয়া হাসিয়া বিলাসিনীগণ, হৃদয়বলভ পারশে তথন ছডায় বিলাস-ল**ছর**ী'

र्यात्र । प्रणाणान्यु**र्**प्र

কেহ বা ধুলিয়া গ্রীবার ভূষণ, হেমময় মালা জড়িত রতন, পরায়ে প্রিয়েরে করিয়া যতন, থেলাগ নগন-মুক্র

অলকার চুল কেহ বা খুলিখ জড়ায়ে জড়াযে বিননি গাঁথিয়া, বঁধুরে বাধ্যে সোহাগে গলিয়া, অধ্যে হাসির মাধুরী;

কেহ বা আপন নয়ন অঞ্জন ু তুলিয়া বিলাসে করে বিলেপন প্রিয়-আধিপরে— সলজ্জ বদন, চঞ্চল বসনে সংবরি:

কোন বা ললনা ছলিয়া চাতরে, রাদা পদ তুলি প্রিযুদিপরে, অলক্তলাগুনে দেহে চিগ্রু করে, জানাতে প্রেমের চাকরী।

একপে বসিয়া যভেক ললমা হাব ভাব হাসি প্রকাশে ছল**রী,** কেহ বা শিব**রে কোন বা অসমা,** চরণ-পারশে প্রহরী।

বসিলা এ ভাবে বতেক স্থলবী মধ্র ললিত মধ্র বাশরী স্থরেতে বাধিয়া আলাপ আ প্রিছে পল্ল

সে স্থৱতৱন্দ মিলিয়া তথম উঠিল সঙ্গীত পুরিয়া কানম শ্রামা কলকণ্ঠ শারী অগণম "বউ কথা কওক্ট

উঠিল ডাকিয়া প্রি চারিদিক জগৎ সংসার করিল অলীক, বেণু-বাণা-রব হ'তে সমধিক মধুব গীতের ক্লছা বালতে বাজিছে—"কিবা সে সংসাব" কোকিবা ভাষিছে—"সে সব মিছার" "শ্ৰম আশা অম—সকলি অসায়" প্ৰতিধানি উঠে কুহরি;—

"কি হবে জীবনে প্রেমের আধানানে, পরাণ যদি না মাতে। রসের বাগান — সথের ফেনিনী— নারীকুল কুটে তাতে।

বে জন মথিবে এ স্থ-জলধি সেই সে পীযূহ পায়, সংধ্য বাগান— স্থাথের মেদিনী রসের বেয়াতি তার।

"হার সে পীযুগ! কিবা তার সম
ভাব রে ভারক মনে!
হার, ধন, মান, ধশ—প্রাণেব নিগড়,
কণ্টক আমাশাব বনে।

এ যে স্থের ধরণী! ভাবনা হতাশ ইহাতে নাহিক সাজে, হেথা প্রাণের সাবস, প্রমোদে মাজিলে তবে দে আনন্দে বাজে।

ভধু রসিক যে জ্বন রসের ধরার দেই দে হরব পাল, ভূবে নারীফ্ধাকুপে, লভে প্রেমফ্ধা, বিজ্ঞ এই গীত গাল।"

> বিহণ, বিটপী, বাঁশরী, বীণাতে , এই গীত শুধু বরিষে প্রপাতে ; প্রকৃতি বা যেন মাতিল তাহাতে বিক্লাসি বেশের চাতুরী।

চাক কিশলন হইল বিকাশ; তক্ষরাজি-কোলে মৃত্ মৃত্ শ্বাদ কুম্ম-চূধিত মলন্ত্ৰাতাদ লতিকা উঠিল শিহরি;

তুনিয়া কলাপ মদন-বিধুর নাচিতে লাগিল উন্মন্ত ময়ুর; নবীন জলদ নিনাদি মধুর গগন রাথিল আাবরি। গাঢ়তর আবো বাজিল বাদন, গাঢ়তর আবো গীত বরিষণ, গাঢ়তর বেশ আবো দে ভূবন— আঁধারিল ষেন শর্মবী।

यण ज्या हिल পড़िल लूकिश, विकेटल विकेटल लगा विनाईशा, कदिल मछल, कुष्टरन छूविश वीटन नोटल गुरु मर्पादि।

মওপে মওপে বৃগল বৃগল, স্বতন্ত্রা অলমে শরীর নিচল, পড়িল পরাণী—অসাড সকল – র্মিল চেতনা সংবরি 1

একাকী তথন ভ্রমিস্থ সে দেশ; চারিদিকে থালি হেরি চাক বেশ কমল-সরসী, কোমল প্রদেশ রাজিছে ভতল-উপরি।

পাতিয়া নলিনী যত প্রাণিগণ সরোবরতীরে স্থপে নিমগন, কেবল নির্ধি, যতই ভ্রমণ ক্রি সে অপূর্ক নগরী।

यज्ञक् भीदत जारम आंदम योग-প্রাবৃটের কোলে নিদাঘ জ্ডায়, প্রাবৃট আবার শবতে লুকায়, হাসিল শারদ শর্করী।

শিশিরের কোলে হিম-ঋতু আদে, নিশি-অঞ্জলে তেকদল ভাসে , তংন(ও) উন্মন্ত অচেত বিলাসে যতেক নাগ্ৰ নাগ্রী।

বত দিন কুধা জঠবে না জবে সেইভাবে তারা পডিয়া ভূতলে অচেতন-চিতে থাকয়ে বিহ্যলে জগত-সংসার পাসরি।

বসন্ত ফিবিয়া আইলে আবার, জাগিয়া করত্বে মূণাল আহার, কমল-পীযুব পিরে পুনর্কার গড়মে চেতনা সংবরি। কত যে আনন্দে প্রকৃতি থেলায ঋতুতে ঋতুতে ঘটনাছলায়।— নাহি জানে তারা—দিবস নিশায খভাবের কত চাতুরী।

মাহি জানে কিবা ঘোরতর স্থা! ঘোরতর মবে প্রকৃতির মুথ ঘনঘটাজালে—পতন উমুধ বিজ্ঞাী বেডায় বিচরি।

না বৃষিতে পারে কি তেজ তথন। গগনের কোলে যবে প্রভঞ্জন চলে দম্ভ করি ছাডিয়া গর্জন— নাচায়ে প্রকৃতি সুন্দরী।

তথন হৃদয়ে সে ভাব গভীর করে আন্দোলন, অধীর শরীর,— না জানে তাহারা, না ভাবে মহীর কত সে ঐষ্য্য-লংৱী।

যে ভাষ প্রশে প্রাণে পূপ্প ফুটে থাকে চিরকাল প্রাণিচিত্তপুটে নিত্য পরিমল নিত্য বাহে উঠে জগতে সঞ্চারি মাধুরী;—

ষে ভাব পরশে মানবের মন, বেড়ায় জগৎ করি বিদারণ, করে তেজোজালে পৃথিবী দাহন, মৃত্যুর মূরতি বিশ্ববি;—

না পরশে কভু তাদের পরাণ, জীবন কাটায় করি মধুপান , নারীগত মান— নারীগত প্রাণ— নারী-পাব ধরা চাকরী।

এইরপে হেরি সে চারু অঞ্চল; গেল কত কাল ভ্রমেতে কেবল, শেষে যেন প্রাণ হইল বিকল ভাবিয়া সে ঘোর শর্কারী।

ভাবিষা হৃদয়ে উদয় ধিকার নরজাতি বৃষ্ণি নাহি হেন আর ? ধৃধৃ করে শৃল্পে পুরাবৃত্ত ধার— হেরে উঠে প্রাণ শিহরি। কালচিত্ৰপটে যদি ফিরে চাষ গুফুৰত্ত ধন কি দেখিতে পার ? কিবা সে সম্ভেক্ত আছে বে কোথায় ভ্রমিতে সংসার-ভি∰ি

পিতৃকুলগত কোন্ মহাভাগে দিয়েছে স্মন্ত্র শুনে অনুরাগে পুন: জীয়ে প্রাণ, পুন: ছুটে আক্টে: ভবিষ্য তরকে উঠিরি

নরজাতি যত হেব ধরামাঝে সকলেব চিহ্ন কালবংক সাজে নির্ধিংলে তায় হৃদি তন্ত্রী বাজে, কুধা তৃষ্ণা যায় পাস্থি 🎉

এ ছার জাতির কি আছে তেমন, কালেব কণালে সঙ্গেত লিথন ? অপূর্ব্ব কিবা সে নৃতন কেতন উড়িছে ভবিষা-উপদ্ধ

ভাবিতে ভাবিতে কত দূর(ই) যাই বি পুরী-প্রান্তভাগ নির্থিতে পাই— তেমতি সরস কোমল সে ঠাই, সজ্জিত পল্লবেল্লরী :

প্রাণিগণ সেথা করিয়া বিলাস, তেমতি আকৃতি প্রকৃতি আভাস, সেই নিলা ঘোর ওরতলে বাসকু সেইরপে নারীষ্ট্রপ্রভাসী

সেখানে রমণী আবো অনুত্রা, । জানে কত আবো ছলা মধুরা, সদা মনে ভয় পাছে সে বঁগুরা ছাড়িয়া পলায় নাগ্রা।

কাছে কাছে আছে দোনার পিঞ্জ, সুবর্ধ-শিকলি শতেক লহর, বদি কেহ উঠে ওনে অন্ত খব বিলাস-প্রমোদ

তথনি তাহারে বাধিরা শৃষ্থলে, ক্র অমনি পিঞ্জরে প্রে কত ছলে, কত কাদে প্রাণ ভাসে চকু অবে, ক্র তবু নাহি ছাড়ে স্বলে দেশ কাঁপে প্রাণ ভেবে সে প্রথার, ভাবি কেন হার প্রবেশি কোথার, কিব্রুপে বাঁচিব করি কি উপায়, কিব্রুপে ছাড়ি সে নগরী।

হেন কালে দেখি বিজ্ঞারি নয়ন, বিজ্ঞারে বিষয়া সেই প্রাণিগণ, আমারি খদেশী— নহে সে খপন !— ধেলিছে বঙ্গের উপরি !— আহা মরি কিবা দেখিত স্থলার অপুর্বা খণ্য-লহরী ।

সংগার

সংসার, তোবে বে আমি ভাবি কি প্রথায় ? সংসার অসার এই সংসাবে কিছুই নেই সংসার বিবের তক হুংখঘলমর ! কেহ বলে এই সার এই ছাড়া নাই আর এই কয় অক্ষরেই লগত জুড়ায়! সংসার, তোবে বে আমি ভাবি কি প্রথায় ?

গোর সকলি তুল সংসার পাণের মূল সংসার ত্যজিলে জীব মুক্তিপদ পায়; নি কোন শালুমুথে, কোন বা শালের বুকে, সংসার, প্রথব লেখা সোনার পাতায়! সংসার ভোবে রে আমি ভাবি কি প্রথায় ?

ধাতার বত লীলা, তোরই কোলে ছডাইলা তুই নাথাকিলে কৃষ্টি জডণিওময়। ধিনা এ আকাশ শৃত থালি পরকাশ এ কুর্যানক্ষত টাদ প্রাণশৃত হয়। ৪০ পুরানক্ষত টাদ প্রাণশৃত হয়।

ানে রে তোর ঘটা সেথানেই দেখি ছটা এই মাঠ এই বন এই মর-গাম! রে নগরতলে, তোরই সে তুফান চলে নর-করালের কামা কত ভাসে ভার. ংসার, তোরে রে বল্ ভাবি কি প্রথাম? তোরই বড় রস-জলে ধবনী ভাদিয়া চলে
তোবই ফ্লে ফ্লমন আকাশ ভ্রন।
তুই বে মোহন বানী তুই বে প্রকৃতি-হাদি
তুই বে একাই এই জীবন-সংল!
কি ভাবে সংগার তোবে স্থাই রে বল
তুই নরকের পথ তুই পুন: মর্গপথ
তুই নরকের পথ তুই পুন: মর্গপথ
ইং-পরলোকে তুই নিত্যের স্বরূপ,
সদসং যত আর
তুই বে স্থার হল তুই বিদক্প।
সংসার, ভোবে রে সামি ভাবিব কিরূপ
ভাজিরে সংসার ভোবে কি নিয়ে এ ভববোরে
হাসিবে কাদিবে প্রাণী হেরিবে কি আর
গ

ভাজিয়ে সংসার তোরে কি নিয়ে এ ভবংঘারে হাসিবে কাঁদিবে প্রাণী হেরিবে কি আরে ? হাসি কালা নাহি যায় কি লাভ হেরিয়ে তায় সংসার বিহনে এক্ষরপই নিরাকার! জীব-জগতের চক্ষু তুই রে সংসার।

আমারে চবণতলে মধিদ যতই বলে যতই গবল তুই করিদ্ উন্পার, সংসার, তোরই ও মুখে চাহিল্লা থাকিব সুখে তোমা ছাড়ি এ জগতে কি দেধিব আর দ তুই এ একাও মাঝে সতোর সাকাব।

সংসার তোরই ও মূথে, হেবিব আবার স্থথে
হেবিব যেরণ ভাবি আশাপথ চাই।
"আমি বার সে আমার" এই বাক্য যবে সার
হবে এই ভবতলে সবার সবাই।
সংসার হোতেই আমি এনরপ পাই।

ইন্দের সুধাপান

(3)

এক দিন দেবদেব প্রক্ষব
বামে শচীসতী নন্দন-ভিতর
বালন গক্ররসথারে ডাকি;—
যাও চিত্রবথ, স্থাভাও ভরি
আন স্থবা কবি পীযুষ-সহরী
আনহ বাদিত্রবাদকে ডাকি;
আনি বাদিত্র স্থাভরঙে
যত দেবগণ বসিল রঙ্গে
অমর মাতিল সুরেশ গলে।

(२)

সুবৰ্ণ-মঞ্চেতে সুর আথওল
চারিদিকে যত অমরের দল
বিজ্ঞলীর মত করে ঝলমল
শোডে পারিজাত-হার গ্রীবাতে,
বামে দৈত্যবালা রূপে কবে আলো,
কোথা সে চঞ্চল তড়িৎ উজ্জল ?
কোথা বা উমাব রূপ নির্মল ?
পলকে পারে জগতে ভূলাতে।
আহা মরি মরি কিবা ভাগ্যধন,
যার কোলে হেন নাবী মনোহন,
কত মুধ ভার হন্ন রে।
বীর বিনা আহা রমনী-রতন
কারে আর শোভা পার রে?

(চিতেন)

আহা মরি মরি কিবা ভাগ্যধর গান্ত্রিল যতেক কিল্লরী কিন্তুব কত স্থপ তার হয় রে। বীর বিনা আহা রমণী-রতন বীর বই আর রমণী রতন বীর বিনা আর রমণী-রতন কারে আর শোভা পায় রে ?

(0)

এলো চিত্রবধ মনোরথ গতি
অর্থা, সদ্দে বিভারথী
উঠিল সু-রব "জর শচীপতি"
অমরমণ্ডলী মাঝেতে,
দেব প্রন্ধর দেবদল সহ
মুধা সোমরদ পিরে মুংমূহ,
গল্পে আমোদিত মাক্ত-প্রবাহ
গগন কাঁপিল বেগেতে –
বায়ু মাতোয়ারা রবি শশী তারা,
অক্ল বরুণ দিক্পাল যারা
সবে মাতোয়ারা মুধাণানেতে।
হলো ভয়য়র কাঁপে চরাচর,
আকাশ পাতাল মহী মহীধর,
অল্পিধ হয়ারে বেগেতে।

(চিতেন)

বায়ু মাতোরারা রবি শশী তারা, অকণ বরুণ দিক্পাল মারা সবে মাতোরারা স্থাপাত্রিক।

(8)

বসিয়ে উন্নত আসন-উপরে
তথী বিধাবস্থ বীণা নিল করে
মেবের গরজে গভীর ঝন্ধারে
মোহিত করিল অম্বর্গণে।
দেবাস্থর-রণ গায়িতে লাগিল,

দেবাস্থ্য-রণ গান্নিতে লাগিল, কিরপে অস্থরে অমবে নাশিল, কিরপে বাস্ব দেববাজ হলো,

ভনাইল বীণা বাজায়ে বন্ধে

"পুলোম-তৃহিতা তোমারি গৃহীত

অহে দেবরাজ তৃষিই দেবতা

রূপে পরাজর করি বাত্বলে

অমবপুরী নিলে করতলে

সমৃত্ত মথিয়া অমৃত লভিলে

সুত্ত মুক্তি

সুত্ত মথিয়া অমৃত লভিলে

সুত্ত মুক্তি

স্থান

সুত্ত মুক্তি

সুত

जरह रमन छन जमांग क्रिका ।" हरना श्रिक्सिन — "भूरनाम में हैंजो, जरह रमननोज राजामीत गृहैं चन पन रमान क्रमजीन चरन हैं कोनरन, विभिरन, नमी, मरनोबस्त्र,

উঠিল নিনাদি যতেক দেবতা' ভাবে গদগদ ম্দিয়া নম্বন, 🐉 উঠিয়া পরজি গরজি সম্বন

ছাড়িল হুকার দ**র্জ্বা**তা। (চিতেন)

হলো প্রভিন্ধনি, "প্লোম-ত্রহিন্তা। আহে দেবরাজ ভোমারি গুরীতা" খন খন খোর অগভীর খরে কাননে, বিপিনে, নদী, সরোজী উঠিল নিনাদি খতেক ক্ষিক্ত

(a)

অতি অগণিত মৃত্ মধুপরে,
আবার গায়ক বীণা নিল কর্ম দু
সাজাইল অগণনা ।
বেধ দেধ চেয়ে নাগরের েবশে,
চোধ চূলু চুলু আসে হেংগ হেংস,

আড়ে আড়ে কথা, নাহি অভিমান, সদা আন্ততোষ ধুলে দেয় প্রাণ, পরে সুধা ভোর নাই তুলনা। সদা সেবে বারা দোমরস সুণা, ক্ষোভ, লোভ, শোক, থাকে নাক কুধা, রণজয়ী ঘেই সুধাপারী সেই, শুর বিনে সুধাধাদ জানে না!

(চিতেন)
"স্থধার প্রেমেতে বাজ্বে বীণা,
বল্ স্থা বই ধন চাহি না,
অমন মগুর নাই পিপাসা!
স্থা কিবাধন স্থাসে কেমন,
সাধক বিনে কি জানিবে চাষা?"

দৈত্য-অৱিদল দত্তে কোলাহল, করে আফালন করি কত বল, মত্ত মধুপানে দিভিস্তভগণে, কিরপে কোথায় করেছে হত ! তথন আবার বীণা-বাত্তকর শানিল করে, সক্রণ স্বর,

অমর দর্প করিল চ্ব,
ারক্ত লোচন ঘন গরজন,
ক্রমে ক্রমে সব হ'লো অদর্শন,
তর্জ হইল অমরপুর!
সকরণ খরে বীপা করে ধ'বে
গাইল, "ঘণন প্রলম্ন হবে,
যথন ঈশান হর হর বোলে
বাজাবে বিষাণ ঘন ঘোর রোলে,
ক্রলে জলময় হবে ক্রিভ্বন,
না রবে তপন-শনীর কিরণ,
অগত-মণ্ডল কারণ-বারিতে,
হিডিয়া পভিবে ক্রিলোক সহিতে,

তখন কোথ। এ বিভব রবে ? এই স্থরপুরী এ সব ফুলরী, এ বিপুল ভোগ কোথার বাবে!" অতি ক্ল-মন যত দেবগণ, ঘন ঘন শাস করে বিসর্জন,

ভাবিয়ে অধীর প্রলয় যবে, এই সূরপুরী এ সব স্থলরী, এ বিপুল ভোগ কোধায় রবে! (চিতেন)

এ বিপুল ভোগ কোথায় রবে, বলিয়া কিল্লর গাইল সবে, জগত-মণ্ডল কারণ-বাবিতে ছিড়িয়া পড়িবে ত্রিলোক সহিতে, তথন কোথা এ বিভব রবে !

(१)

গুণী বিধাবত্ব সদীতের পতি,
বীণা-যত্ত্বে পূন: মধুব ভারতী,
গাহিতে লাগিল প্রেমের গাথা,
বিলাপ ঘৃচিল প্রেম উপজিল,
রুদে ডগমগ তম্থ শিংহিল,
এক(ই) হত্ত্বে প্রেম করুণা পাথা!
মহল মহল ডাজ বে তাজঃ
মহল মহল নও বে-নও,
বাজিতে লাগিল মধুর বোলে,
শ্রবণে শীতল বতেক খোতা।
"সংগ্রামে কি হ্রথ সকলি অহুথ
দিন-রাত নাই প্রাণ ধুক্ ধুক্,
মান-মর্য্যাদা কথার কথা।

বাদ-মব্যাদা কথার কথা।
বোড়া-দড়বড়ি, অসি-খন্থনি,
কাটাকাটি, গোল, তীব-খন্থনি,
কানে লাগে তালা করে ঝালাপানা,
দেহ হর আলা সমর-প্রেংডে;

গতি অবিরাম নাহিক বিবাম,
সমরে কি স্থথ নাবি বুঝিতে!
তিরদিন আরে দফজ সংহার
ক'রে কত ভার সহিবে দেব;
বামে শটীগতি, হের স্বরণতি,

কর স্বথভোগ রাথ ব্কেতে।"
বাথানিল যত কিন্নর-কিন্নরী,
বাথানিল যত হুর্গ-বিভাগরী,
বাথানিল দেবগণ পুলকে।
রতিপতি-জন্ম হলো স্বপুরে,

ললিত মধুর বীপার স্থরে; সঙ্গীতের জয় হলো ত্রিলোকে।

 দেবভারাই সঙ্গীতের স্টেকর্ডা, স্থভরাং লক্ষোই স্থর দেবভাদিগের মধ্যে প্রচলিত থাকা সন্তব । শ্ব রে জরজর দেহ থব থব,
হেরে ঘন ঘন দেব পুরন্দর,
হুদরে বামারে রাখিতে চার;
নিমেবে হেরিছে নিমেবে ফিরিছে,
নিমেবে নিখাস বহিছে তায়।
শেষে পরাজিত অচেতন চিত,
শচী-বক্ষ:হুলে ঘুমায়ে বর।

(চিতেন)

গারিল কিরর,—"শ্বরে জরজর,
দেব পুরন্দর হলো পরাজর,
নিমেবে হেরিছে নিমেবে ফিরিছে,
নিমেবে নিখাস বহিছে তার।
শেবে পরাজিত অচেতন-চিত
শচী-বক্ষঃহলে ঘুমারে রধ।"

(٢)

"বাজ রে বীণা বাজ রে আবার, ঘন ঘোর রবে বাজ এইবার, আবো উচ্চতর গভীর স্বরে, যাক দ্রে যাক কামের সুহক ; মেশের ডাকে ডাক্রে প্রে । "আহে সুবরাক ছি ছি এ কি বাজ,
দেখ দেখ আই দহজ-সমাজ,
রণসাজ ক'রে আসিছে ফিরে,
শিরে কণী বাধা করে উল্লাপাত,
কর সুরনাথ দহজ-নিপাত,
দেখ চরাচর কাঁপিছে ডরে।
জলদ-নিনাদে করে হুহুলার,
এ অমরপুরী করে ছারথার;
পূরণ আহতি করিতে এবে।
কর দন্ত চুর, বজ্ঞ ধর, শ্র,
রাথ হে বজ্ঞান, বাচাও দেবে।"
শুনে বজ্ঞার বেগে বজ্ঞা ধরে,
কড কড ধরনি গ্রজে অথবে,

ভয়ে হিমপিরি টলিল : তথন উল্লাসে, বিভাগরী হেলে, বীণাষন্ত পাশে রাথিল। (চিতেন) বেগে বজুধর গারিল কিল্লুর,

"ক্ড কড় নাদে গর**লে অহ**র, ভয়ে হিমপিরি টাগল। তথন উল্লাসে বিদ্যাধরী হেসে বীধাযন্ত্র পাশে রাখিল।

গ্ৰন্থাবনী সম্পূৰ্ব।



Recd. on. 3. 6. 80 R. R. No. 78 20. G. R. No. 28 9 20

